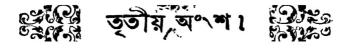


# পুরাণপ্রকাশ।

-80E-11-308-v

# বিষ্ণুপুরাণ।

প্রীধরস্বামি-কৃত চীকা ও বিষ্ণুর্থ-বৈদ্যনাথ নামক বাঙ্গালা অনুবাদ সমেত।



শ্রীবরদাপ্রসাদ বসাক কর্তৃক প্রকাশিত।

#### কলিকাতা

নিম্নিয়া-হেড্য়া দীঘীর পূর্ব্ব হরিপালের লেন ৭ নং ভবনে কাব্যপ্রকাশ যত্ত্বে শ্রীকালীকুমার চক্রবর্তী কর্তৃক মুজিত।

১২৭৭ সাল

# निर्घणे।

# তৃতীয়াংশ।

#### ১ অধ্যার।

| মন্বস্তুর শ্রবণার্থ ইমজেয়ের প্রশ্ন…        | •••               | >   |
|---|-------------------|-----|
| অভীত ছয় মনুর ন†ম                           | •••               | ર   |
| স্বরোচিষ নামক দ্বিতীয় মনুর স্বিকারে যাঁহার | া দেবতা           |     |
| যাঁহারা সপ্তর্ষি, যিনি ইন্দ্র ও যাঁহারা     | মনুপুত্ৰ          |     |
| ছিলেন, তাহার বিবরণ                          | •••               | خ   |
| প্রত্তমি নামক তৃতীয় মনুর অধিকারে যাঁহারা   | দেবতা,            |     |
| ইন্দ্র, সপ্তর্ষি ও মনুপুত্র ছিলেন, তাহার বি | বরণ               | 9   |
| ঐ রূপ তামদ নামক চতুর্থ মন্বস্তুরের বিবরণ    | ••                | 8   |
| ঐ রূপ ইরবত নামক পঞ্চম মন্বন্তুর বিবরণ       | •••               | الم |
| ঐ রূপ চাক্ষুষ নামক ষষ্ঠ মন্বস্তুর বিবরণ     | •••               | B   |
| ঐ রূপ বর্ত্তমান বৈবস্থত নামক সপ্তম মনুর অধি | কার-              |     |
| বিবরণ                                       | •                 | \$  |
| বর্ত্তমান মনুর নয়টী পুত্তের নাম            | •••               | 9   |
| ২ অধ্যায়।                                  |                   |     |
| ভবিষ্য মন্বস্তুর বিবরণ জিজ্ঞাসা             | •••               | 22  |
| স্থ্যপত্নী সংজ্ঞার বিবরণ                    | •••               | ۵   |
| হুৰ্য্যতেজ সহ্য করিতে না পারিয়া আপনার প    | <b>ারিবর্ত্তে</b> |     |
| ছায়াকে রাখিয়া সংজ্ঞার তপস্যার্থ গমন       | •••               | ١   |

| ছায়ার গর্ভে শইনক্ষর প্রভৃতির জন্ম                        | 25       |
|---|----------|
| সংজ্ঞাগর্ভজাত যমের প্রতি ছায়ার শাপ                       | ঐ        |
| সংজ্ঞা বড়বারূপে তপস্যা করিতেছেন, জানিয়া                 |          |
| স্থ্যের তথায় <mark>গমন ও অশ্বরূপ ধারণপূর্বক</mark>       |          |
| অশ্বিনী-কুমারন্বয়ের উৎপাদন                               |          |
| বিশ্বকর্মা কর্তৃক স্থর্য্যের ভেজেণবিশাতন                  |          |
| স্থ্যের তেজ চাঁচিয়া ত্রিশূল চক্র প্রভৃতি দেবান্ত নির্মাণ |          |
| সাবর্ণি নামক অফীম মনুর অধিকারে যাঁহারা দেবভা,             |          |
| সপ্তর্ষি, দেবরাজ ও মনুপুত্ত হইবেন, তাঁহাদের নাম           | 28       |
| ঐ রূপ দক্ষসাবর্ণ নামক মনুর অধিকার বিবরণ                   | 24       |
| ঐ রূপ ত্রেলসাবর্ণি নামক দশম মনুর বিবরণ                    | ১৫       |
| ঐ রূপ ধর্মাবর্ণ নামক একাদশ মনুর বিবরণ                     | ঠ        |
| ঐ রূপ সাবর্ণনামক দাদশ মন্বস্তুর                           | 39       |
| ঐ রূপ ইরব্য নামক ভ্রয়োদশ মনুর অধিকার বিবরণ               | 24       |
| ঐ রপ ভেত্যি নামক চতুর্দশ মরস্তর                           | 79       |
| প্রত্যেক সত্যযুগের প্রারম্ভে সপ্তর্ষিগণ কর্তৃক বেদ-       |          |
| প্রকাশ  | ঠ        |
| প্রত্যেক মনু সভ্যযুগে স্মৃতিশক্তি প্রণয়ন করেন            | २०       |
| কম্প পরিমাণ   | <b>S</b> |
| প্রলয়কাল পরিমাণ  | ঠ        |
| কম্প প্রারম্ভে যে রূপে সৃষ্টি হয়                         | २ऽ       |
| বিষ্ণু সত্য যুগে কপিলাদি রূপে জ্ঞানদান করেন               | ঐ        |
| বিঞ্ ত্রেতা যুগে চক্রবর্ত্তি স্বরূপে হুফ দমন করেন         | २१       |
| বিষ্ণু দ্বাপর যুগে বেৰব্যান রূপে বেদবিভাগ করেন            | à        |
| বিষ্ণু কলিয়ুগে কল্কিরূপে ধর্মস্থাপন করেন                 | ھي       |

# নিৰ্ঘন্ট

#### ৩ ভাধ্যায়।

| বেদব্যাস কর্তৃক বেদ বিভাগ বিষয়ক প্রশ্ন              | •             | ₹8        |
|--|---------------|-----------|
| বিষ্ণু প্রত্যেক দ্বাপর যুগে বেদব্যাস রূপে বেদ ি      | বৈভাগ         |           |
| করেন   | •••           | 34        |
| <b>ইববস্বত মন্বস্তরে অফাবিংশতি বেদব্যাস কর্তৃক</b> য | <b>ক্</b> ড   |           |
| অফীবিংশতি বার বেদ বিভাগ                              | •••           | 24        |
| অফাবিংশতি বেদব্যাসের নাম                             | •••           | २७        |
| 8 व्यक्षांत्र ।                                      |               |           |
| ক্ষট্দ্বপায়নের মাহাত্মা                             |               | ૭ર        |
| ক্ফ'দ্বপায়ন বেদকে চারি ভাগ করিয়া চারি ব            | <b>ज</b> ्ञ न |           |
| শিষ্যকে অধ্যয়ন করাইলেন                              | •••           |           |
| ব্যাসশিষ্য পৈল ঋধেদ ছুইভাগ ছুই সংহিতা করি            | রয়া          |           |
| ইন্দ্রপ্রমতি ও বাঙ্গলকে অধ্যয়ন করান                 | •••           | <b>08</b> |
| বান্থল, অধীত সংহিতা ঢারি ভাগ করিয়া চারি ব           | জন            |           |
| শিষ্যকে দেন  | •••           | <b>08</b> |
| ইন্দ্রপ্রমতি কর্তৃক অধীত সংহিতার একাংশ               | বেদ-          |           |
| মিত্র কর্তৃক পাঁচ ভাগে বিভক্ত হয়                    | •••           | Ot        |
| ইন্দ্রপ্রমতির দ্বিতীয় শিষ্য শাকপূর্ণি স্বীয় সংহি   | ভা            |           |
| তিনভাগ করিয়া তিনজন শিষ্যকে দেন                      | •••           | à         |
| নিৰুক্তের বিবরণ                                      | •••           | 4         |
| বাক্ষলি কৃত ঋষেদের অপর তিন শাখা                      | •••           | <b>V</b>  |
| e অধ্যায়।<br>ঃ                                      |               |           |
| যজুর্বেদ শাখা বিভাগ                                  | •••           | 90        |
| महाराक नामक खारन श्विनिरात मङ्किरियमन .              | ••            | 90        |

| বৈশশায়ন, সভায় উপা             | হুত না হ          | এয়াতে ×           | ণ <b>া</b> পগ্ৰস্ত |     |
|---------------------------------|-------------------|--------------------|--------------------|-----|
| হইয়া ভাগিনেয়কে বি             | নাশ ক             | রন                 | •••                | 96  |
| ত্ৰন্মহত্যা-জনিত পাপক্          | য় <b>র জ</b> ন্য | শিষ্যগণে           | ার প্রতি           | •   |
| বৈশস্পায়নের আজ্ঞা              |                   | •••                | •••                | 9   |
| যাজ্ঞবলক্য নামক শিষ্যের         | প্রতি বৈ          | ণ <b>ম্পা</b> য়নে | র ক্রোধ            |     |
| ও শিষ্য ভ্যাগ                   | •••               | •••                | • •••              | 9   |
| যাজ্ঞবল্কা কর্তৃক গুৰু ত্যা     | গ ও যজু           | (दर्ग डेम          | <b>নীর</b> ণ       | SO. |
| যজুর্বেদের তৈতিলীয় শাখ         | ার উৎপ            | ত্তি               | • • •              | SC. |
| যাজ্ঞবল্ক্য ক্নত সূর্য্যস্তব    |                   | •••                | •••                | 8 0 |
| ष्यां ज्यां मार्य व जूर्वर प    | র উৎপর্বি         | g                  | •••                | 80  |
| যাজ্ঞবল্ক্য প্রবর্ত্তিত যজুর্বে | দের কাণ্          | প্রভৃতি প          | কিনশ শাখা          | 80  |
|                                 |                   |                    |                    |     |
|                                 | ৬ অধ্যায়         | ı                  |                    |     |
| সামবেদের শাখা বিভাগ             |                   | •••                | •••                | 88  |
| অথর্ম-বেদের শাখাবিভাগ           | nt                | •••                | •••                | 81  |
| বেদব্যাস পুরাণ প্রণয়ন          | করিয়া (          | লামহর্ধণ           | क व्यधा-           |     |
| यन कड़ांहें लिन                 | • • •             | •••                | •••                | 89  |
| লোমহর্ষণের বৈতন শিষ্য,          | ব্যাস প্রণী       | ত পুরাণ            | অবলম্বন            |     |
| করিয়া তিনখানি পুর              | াণ প্রাণয়ৰ       | न करतन             | ***                | 84  |
| বিফুপুরাণ ঐ পুরাণচতুষ্টা        | য়ের সারে         | াদার               | •••                | 84  |
| অফাদশ পুরাণের নাম               | •••               | •••                | •••                | 85  |
| পুরাণের লক্ষণ                   | •••               | •••                | •••                | 85  |
| চতুৰ্দশ বিদ্যা                  | •••               | •••                | <b>D</b> .         | 85  |
| ष्यकीमण विमा                    | •••               | •••                | •••                | 85  |
| শ্বিতায়                        |                   |                    |                    | ħ c |

| निर्यंगे ।                                |           | ¢           |
|---|-----------|-------------|
| १ व्यक्षांत्र ।                           |           |             |
| কিরূপে যমের অধীন হইতে না হয় এই প্রশ্ন    | •••       | æ 5         |
| কাঁলিঙ্গিক ত্রান্ধণ ও ভীম্মের সংবাদ       | • •       | 62          |
| যম ও যমদূতের কথোপকথন                      | •••       | ¢8          |
| যমগীতা সমাপ্তি                            | • •       | ७३          |
| ৮ অধ্যায়।                                |           |             |
| বিষ্ণুর আরাধনা বিষয়ক প্রশ্ন              | •••       | હ૭          |
| ঔর্ম ও সগরের কথোপক্ষন                     | •••       | 48          |
| বিফুর আরাধনার ফল                          | •••       | 68          |
| বিফুর আরাধনার উপায়                       | • •       | <b>U</b> C  |
| ত্রাক্ষণ ক্ষত্রিয় প্রভৃতি বর্ণের ধর্ম    | •••       | 69          |
| ৯ অধ্যায়।                                |           |             |
| ত্রন্দাহর্য ও গুৰুকুলে বাস বিবরণ          | • •       | 99          |
| शृहरू धर्म                                | ••        | 98          |
| বানপ্রস্থ ধর্ম                            | •••       | 96          |
| ভিকু নামে চতুর্থ আশ্রমের ধর্ম             | •••       | 99          |
| ১০ অধ্যায়।                               |           |             |
| নিভ্য, টনমিভিক ও কাম্য কর্ম শ্রবণার্থ সগত | রর প্রশ্ন | ٢٧          |
| বালকের জাতকর্ম ও আভ্যুদয়িক শ্রাদ         | •••       | ৮২          |
| নামকরণ                                    | •••       | ٢٤          |
| উপনয়ন ও বিদ্যাভ্যাস                      | • •       | 40          |
| বিবাহ                                     | ***       | ₽8          |
| বিবাহার্থ কন্যার লক্ষণ পারীক্ষা           | •••       | ₽8          |
| অট প্রকার বিবাহবিধি                       | ••        | <b>3-16</b> |

ţ

# নিৰ্ঘণ্ট

#### ১১ অধ্যায়।

| ममोर्डाटतत लक्कन                             | •••                                     | ЬЬ          |
|--|---|-------------|
| সদাচারের মধ্যে প্রাতঃক্ত্য                   | •••                                     | P.0         |
| মৃত্তপুরীষোৎসর্গের নিয়ম                     | •••                                     | <b>४</b> व  |
| মৃত্তিকাশোচনিয়ম                             | •••                                     | 55          |
| ধনোপাৰ্জ্জন বিধি                             | •••                                     | ৯২          |
| শ্বান বিধি                                   | •••                                     | ৯৩          |
| ভর্পণ বিধি                                   | •••                                     | 20          |
| স্থ্যাৰ্ঘ বিধি                               | •••                                     | 24          |
| ইফদৈবতা পূজাবিধি                             | •••                                     | અહ          |
| অগ্নিহোত্র ও দারদেবতা পূজাবিধি               |   | 5'5         |
| দিক্পাল পূজা বিধি                            | •••                                     | ৯৭          |
| বিশ্বদেব প্রভৃতির পূজাবিধি                   | •••                                     | ঐ           |
| ভূভগণকে অন্দান করিবার বিধি                   | •••                                     | \$          |
| অভিথির অাগমন প্রতীক্ষা 🔐                     | •••                                     | <b>ক</b> ক  |
| অভিথিসৎকার                                   | •••                                     | 200         |
| অভ্যাগত পরিজ্ঞ <sup>া</sup> ত ব্যক্তির সৎকার | •••                                     | 202         |
| অতিথি নিরাশ হইয়া যাইলে পাপ                  | •••                                     | 202         |
| পরিজনের ভৌজন দান                             | •••                                     | <b>५०</b> २ |
| গৃহস্থের ভৌজননিয়ম                           | • • •                                   | 200         |
| আচমন প্রভৃতি                                 | •••                                     | ३०७         |
| ভোজনাস্তে মন্ত্রপাঠ ও উদর পরিমার্জ্বন        | •••                                     |             |
| ভোজনান্তে সংশাস্ত্রালোচনা প্রভৃত্তি          | ••                                      | 20F         |
| সায়ংসদ্ব্যোপাসনা বিধি                       | • | 4           |
| সায়ংকালে অভিথি সেবা                         | •••                                     | 300         |

| শয়ন নিয়ম                            | •••                | ••• | >>0         |
|---------------------------------------|--------------------|-----|-------------|
| পত্নীগমন বিধি                         |                    | ••• | 222         |
| পর্মাদিবদে পত্নীগমন                   | <b>िनि</b> रुष     | ••• | 225         |
| ন্ত্ৰী সহবাদের স্থান 1                | নিয়ম              |     | do do       |
| পরন্ত্রীগমনে দোষ                      |                    |     | 330         |
|                                       | ১২ অধ্যায়।        |     |             |
| গৃহস্থের বিবিধ সদ্যা                  | চার বিধি           | ••• | >>¢         |
|                                       | ১৩ অধ্যায়।        |     |             |
| পুত্তের জাতকর্ম ও স                   | শাভ্যদয়িক শ্ৰাদ্ধ | ••• | ३२६         |
| প্ৰেত কৃত্য বিধি                      | •••                | 4++ | ३२७         |
| প্ৰেত দাহ বিধি                        | •••                | ••• | ঐ           |
| প্ৰেভ ভৰ্পণ বিধি                      | • • •              | ••• | ঐ           |
| প্ৰেত দাহান্তে গৃহ এ                  | প্ত্যাগমন নিয়ম    | ••• | <b>३</b> २१ |
| ममिथि मान                             | •••                | ••• | ত্র         |
| ভশ্মান্থি চয়ন                        | •••                | ••• | ঐ           |
| অশেচি ব্যবস্থা                        | •••                | ••• | 254         |
| প্ৰেভশ্ৰাদ্ধে ত্ৰাক্ষণ গে             | ভাজন বিধি          | ••• | 255         |
| একোদিউ শ্ৰাদ্ধ বি                     | ર્ષ                | ••• | D           |
| সপিণ্ডীকরণ বিধি                       | •••                | ••• | 300         |
|                                       | ১৪ অধ্যায়।        |     |             |
| শ্রাদ্ধ করণের ফল                      | •••                | ••• | 300         |
| নবান্ন প্রভৃতি                        |                    |     | <u>\$</u>   |
| এণদ্ধের বিশেষ বিশে                    | য় কাল             |     | \$08        |
| সনৎকুমার কর্থিত <b>শ্রা</b>           |                    | ••• |             |
| সন্ধরুষার কাষ্ড আ<br><b>পিত্</b> গীতা | क्षी प्राप्ती      | *** | 308         |
| ीं स <b>र्वेगाला</b>                  | •••                | *** | 704         |

#### **b**

#### ১৫ অধ্যায়।

| প্রাক্ষভোজী ত্রান্ধণের ল       | <b>ক</b> ণাদি | • •       | 282         |
|--------------------------------|---------------|-----------|-------------|
| প্রান্ধে নিষিদ্ধ ত্রান্ধণ      | •••           | • •       | 785         |
| শ্ৰাদ্ধান্তে স্ত্ৰীসহবাস নিয়ে | स्थ           | ••        | 280         |
| শ্ৰাদ্ধ বাদ্ধণ সঞ্জ্যা         | • •           | •••       | 288         |
| মাতামহ আদ্ধ বিধি               | •••           | •••       | 4           |
| শ্রাদ্ধ প্রকরণ                 | ••••          | •••       | 784         |
| শ্ৰাদ্ধকালে অতিথি সেবা         | •••           | • • •     | 284         |
| পিত্ধ্যান ও প্রার্থনা          | •••           | •••       | 284         |
| দক্ষিণা দান বিধি               | ***           | •••       | 285         |
| পিতৃপিওদান নিয়ম               | •••           | •••       | آه          |
| ত্রান্ধণগণের নিকট আশী          | साम आर्थना    | •••       | 200         |
| ত্রান্ধণ বিসর্জ্তন বিধি        | •••           | •••       | 262         |
| শ্রাদ্ধাবদানে বন্ধুগণের সা     | হিত একত্র ডে  | াজন       | >৫२         |
| যোগি প্রশংসা                   | •••           | •••       | 260         |
|                                | ১৬ অধ্যায়।   |           |             |
| প্রান্ধে মৎস্য মাংসাদি দা      | নের ফল        | •••       | <b>३</b> ৫8 |
| প্রাদ্ধের উপযুক্ত ধান্যাদি     | •••           | •••       | 344         |
| ষণ্ড অপবিদ্ধ প্রভৃতি কর্তৃব    | क खोक मर्गाट  | া দোষ কথন | >৫ ७        |
| শ্রাদ্ধের উপযুক্ত অন           | •••           | •••       | >৫ १        |
| কলাপোপবনে ইক্ষাকুর বি          | নকট পিতৃগ     | ণর উক্তি  | 3¢ b        |
|                                | ১৭ অধ্যায়।   |           |             |
| নগু লক্ষণ                      | •••           |           | 360         |
| ভীন্ম ও বসিষ্ঠের সংবাদ         | •••           | •         | <b>a</b> .  |

| অহ্রগণের নিকট পরাজিত দেবগণের বিফুর নিকট     |             |
|---|-------------|
| গমন ও স্তব                                  | 232         |
| নেয়ামোহের উৎপত্তি                          | 335         |
| ১৮ অধ্যায় 1                                |             |
| অহ্রগণের নিক্ট মায়ানোহের গমন               | 390         |
| অন্ত্রগণের প্রতি মায়ামোহের উপদেশ ও অনৎ     |             |
| পথে আনয়ন                                   | 242         |
| আর্হত দর্শনের উৎপত্তি                       | 392         |
| বেছি ধর্মের প্রথম উৎপত্তি                   | 590         |
| অন্ত্রগণের বৈদিক ধর্মভ্যাগ                  | 395         |
| অন্তরদিগের পরাজয়                           | 599         |
| নগুরে লক্ষণ                                 | ক্র         |
| নগ্নাদি সংসর্গে দোষ                         | 396         |
| শতধনু নামক রাজার উপাখ্যান                   | 350         |
| রাজার ও তৎপত্নীর পাষও দর্শন                 | 227         |
| রাজার মৃত্যু                                | >>>         |
| মহিষী বৈশবগের সহমরণ                         | ঐ           |
| রাজার কুকুর যোনিতে উৎপত্তি                  | <b>B</b>    |
| শৈব্যার কাশীরাজের মহিষীর গর্ডে জন্ম         | <b>B</b>    |
| কাশীরাজহুহিতার বিবাহোদ্যোগ                  | ১৮৩         |
| কাশীরাজ হুহিভার কুরুরযোনি-প্রাপ্ত পতি দর্শন | <b>३</b> ४७ |
| রাজার শৃগালযোনিতে জন্ম                      | >>8         |
| রাজার রুকযোনিতে জন্ম                        | ንራ৫         |
| রাজার গৃশুযোনিতে জন্ম                       | 226         |
| বাকার কাক্যোবিকে জন্ম                       |             |

| রাজার ময়ূরবোনিতে জন্ম                           | 329 |
|--|-----|
| জনকরাজার অগ্নেধ যজ্ঞে ময়ুরের সহিত শৈব্যার স্থান | \$  |
| রাজা শতধনুর জনকের পুত্ররূপে উৎপত্তি              | うとか |
| জনক-পুত্রের সহিত শৈব্যার পরিণয়                  | Ž.  |
| জনক-পুত্তের বিদেহ রাজ্য প্রাপ্তি                 | ক্র |
| জনকতনয়ের সংগ্রামে মৃত্যু, বৈশব্যার সহমরণ ও      |     |
| ম্বৰ্গ প্ৰাপ্তি                                  | 546 |
| নগ্ন পাৰণ্ডাদির সহিত কিন্ধপ ব্যবহার কর্ত্তব্য    | 330 |

তৃতীয়াংশের নির্ঘন্ট সমাপ্ত

# विक्यूत्रागग्।

তৃতীয়াংশঃ। প্রথমাধ্যায়ঃ।

#### মৈত্রেয় উবাচ।

কথিতা গুরুণা সম্যক্ ভূসমুদ্রাদিসং স্থিতিঃ।
সূর্য্যাদীনাঞ্চ সংস্থানং জ্যোতিষামপি বিস্তরাৎ ॥ ১॥
দেবাদীনাংতথা স্ফিশ্ব বীণামপি বর্ণিতা।
চাতুর্বর্ণ্যম্য চোৎপত্তিস্থিয়গ্যোনিগতস্য চ॥ ২॥
দ্রুবপ্রস্লাদচরিতং বিস্তরাক্ত ত্বয়োদিতম্।
মন্তরাণ্যশেষাণি শ্রোতুমিচ্ছাম্যন্ত্রমাৎ \*॥ ৩॥
মন্তরাধিপাং শৈচব শত্রদেবপুরোগমান্।
ভবতা কথিতানেতান্ শ্রোতুমিচ্ছাম্যহং গুরো!॥।।
স্বিতা কথিতানেতান্ শ্রোতুমিচ্ছাম্যহং গুরো!॥।।।।

নৈত্রের কহিলেন। আপনি আমার গুরু। আপনি আমার নিকট পৃথিবী সমুদ্র প্রভৃতির সন্নিবেশ, সূর্যাদির সংস্থান ও জ্যোতির্মপ্রলের বিষয় বিস্তারিত রূপে বলিয়াছেন। দেব দানব প্রভৃতির স্ফা, ঝ্যিগণের স্ফা, চাতুর্বর্ণার উৎপত্তি, তির্যাক্-যোনি-গত জীবগণের উৎপত্তি,। গ্রুবচরিত ও প্রস্তাদচরিত, এ সমুদায়ও আপনি বিস্তারিত রাপে কীর্ত্তন করিয়াছেন। প্রস্কুণে আমার ইছা যে, আপনি সমুদায় মন্বন্তর ও শক্র প্রভৃতি সমুদায় সন্বন্তরাধিপের বিবরণ আনুপূর্ব্বিক বলেন, আমি শ্রবণ করি 1°

† এোতুমিঞ্চান্যনেষতঃ ইতি বা পঠনীয়ম্।
( ১ )

পরাশর উবাচ।
অতীতানাগতানীই যানি মন্তরানি বৈ।
তান্যহং ভবতে সমাক্ কথয়ামি যথাক্রমন্॥ ৫॥
আয়য়ৢবো ময়ঃ পূর্বো \* ময়ঃ আরোচিবস্তথা।
উত্তমিস্তামসনৈচন বৈরততচাক্রম্তথা॥ ৬॥
বড়েতে মনবোহতীতাঃ সাম্পুতন্ত রবেঃ স্কতঃ।
বৈরম্বতোহয়ং যসৈতেৎ সপ্তমং বর্ততেহন্তরম্॥ ৭॥
আয়য়ৢবন্ত কথিতং কপোদাবন্তরং ময়া।
দেবাস্তর্থয়নৈচন যথাবং কথিতা ময়া॥ ৮॥
অত উদ্ধং প্রবক্ষ্যামি মনোঃ আরোচিন্স্য তু।
মন্তরাধিপান্ সমাক্ দেব্যীংত্তপ্রতাংত্তথা॥ ৯॥
পারাবতাঃ সত্বিতা দেবাঃ সারোচিন্যহন্তরে।

পরাশর কহিলেন। যে সকল মন্ত্র গত ইইয়াছে, যে সকল বিদ্বন্তর পরে উপস্থিত ইইবে, সেই সমুদায় জানি তোনার নিকট যথাক্রনে বলিতেছি, শ্রবণ কর। প্রথম স্বায়স্ত্র্ব মন্ত্র, দিতীয় বারোচিব মনু, তৃতীয় উদ্ধান নামক মনু, চতুর্থ তানস নামে মনু, পঞ্চন বৈবতনামক মনু ও ষঠ চাক্ষুব নামে মনু। এই ছয় জন মনু অতীত ইইয়াছেন। একণে রবিস্থত বৈবস্থতনামক সপ্তম মনুর অবিকার চলিতেছে। কল্পের প্রথমে স্বায়স্ত্র্বনামক যে প্রথম মনু ইইয়াছিলেন, তদ্ধিকারের বিষয় এবং তৎসময়ে যাহার। দেব ও ক্ষবি ইইয়াছিলেন, তাহাও যথাক্রমে আনি বলিয়াছি। আভঃপর স্বারোচিষ মনুর অস্তর ও তৎকালীয় মন্তরাধিপ দেব-গণ, ক্ষবিগণ এবং তৎপুক্রাদির বিবরণ বলিতেছি।

<sup>\*</sup> সারভূবে। মন্ত্রঃ পুকাম্ ইতে অপরপুত্তক্স। পাঠ।।

বিপশ্চিটেচ্চব দেবেন্দ্রো\* মৈত্রেরাসীমহাবলঃ ॥ ১০ ॥
উর্জঃ স্তরম্বর্থা প্রাণো † দত্তোলিখা বভস্তথা।
'নিশ্বরশ্চেধরীবাংশ্চ ‡ তত্র সপ্তর্ম রোহভবন্ ॥ ১১ ॥
টৈত্রকিম্পারুষাদ্যাশ্চ স্থতাঃ স্বারোচিষ্য্য তু।
দ্বিতীয়মেতৎ কথিত্যন্তরং শৃণু চোত্ত্যম্ভ ॥ ১২ ॥
তৃতীয়ে বস্তরে ব্রহ্মন্থ উত্ত্যির্নাম যো মনুঃ।
স্থানাত্রনাম ত্রেন্দ্রো মৈত্রেয়াসীৎ স্থরেশ্বরঃ ॥ ১৩ ॥
স্থামানস্তথা সত্যাঃ শিবাশ্চাসন্ প্রতর্দ্ধনাঃ (॥)।
বশ্বর্ত্তিনশ্চ পর্ক্ষিতে গণা দ্বাদশকাঃ স্কৃতাঃ ॥ ১৪ ॥

মৈত্রেয়! স্বাংরােচিষ মন্বন্তরকালে পারাব্তর্গণ ও তুষিতর্গণ দেবতা ছিলেন এবং মহাবল বিপশ্চিৎ দেবরার হইয়াছিলেন।' তৎকালে, উর্জ্জ, শুন্থ, প্রাণ, দন্তোলি, ঋষভ, নিশ্বর ও উর্মরীবান্, ই-হারা সপ্তর্ষি ছিলেন।' স্বারােচিষের পুত্রগণের নাম চৈত্র, কিম্পুরুষ প্রভৃতি। এই তােমার নিকট দিতীয় মন্বন্তরের বিবরণ কহিলাম। এক্ষণে উৎকৃষ্ট (তৃতীয় মন্বন্তরের বিবরণ বলিতেছি) শ্রাণ কর।' এক্ষন্! তৃতীয় মন্বন্তরে প্রভাম নামে মনু ছিলেন। মৈত্রেয়! তৎকালে স্থানিত্ত নামে ইন্দ্র দেবতাদিগের রাজা হইয়াছিলেন।' সেম্বর্ম স্থামগণ, মত্যাগণ, শিবগণ, প্রতর্জনগণ ও বশবর্ভিগণ এই পঞ্চাণ ছিলেন। এই পঞ্চাণ প্রত্যেকেই দ্বাদ্যান্তক।' এই

<sup>\*</sup> বিপশ্চিত্তত্ত দেবেক্সঃ ইতি ভিন্নগ্ৰন্থ পাঠঃ।

<sup>🕇</sup> উৰ্জান্তভত্তথা প্ৰানঃ ইতি বা পঠনীয়ন্।

<sup>🛨 ।</sup> মরণচশ্চাক্রবীবাংশ্চ অথবা নিশ্চলশ্চাক্ররীবাংশ্চ ইতি পাঠ্যম্।

ওঁ দিভীয়মেতদ্ব্যাপ।তিম-অক্ষবং শৃণু চৌত্মিম, ইভাপি পঠনীয়ম।

कुछोरग्रशाखरत तक्षम् सं र व्यक्तिः भोजि ।

<sup>&</sup>quot; শিৰাকাসন্ প্ৰশ্না ইভি বা পাঠঃ।

বশিষ্ঠতনয়াস্তত্ত্ব সপ্ত সপ্তর্ষয়োহতবন্।

অজঃ পরশুদিব্যাদ্যাস্তম্যোত্তিমিমনোঃ সুতাঃ॥ ১৫॥
তামসদ্যান্তরে দেবাঃ স্করপা হরয়ন্তথা\*।

সত্যাশ্চ স্থিয়শৈচব † সপ্তবিংশতিকা গণাঃ॥ ১৬॥
শোবিরিক্ত্রপা চাসীচ্ছত্যজ্ঞোপলক্ষণঃ।

সপ্তর্ষয়শ্চ যে তেবাং তত্ত্র নামানি মে শৃণু॥ ১৭॥

জ্যোতির্দ্ধামা পৃথুঃ কাব্যশৈচত্তোহ্মির্বনকন্তথা ‡।
পীবরশ্চর্মা হ্যেতে সপ্ত ত্ত্রাপি চান্তরে॥ ১৮॥
নরঃ খ্যান্তিঃ শান্তহ্যো জানুজজ্ঞাদয়ন্তথা।
পুত্রাস্ত তামসদ্যাসন্ রাজানঃ সুমহাবলাঃ॥ ১৯॥
পঞ্চমে চাপি মৈতেয়! রৈবতো নাম নামতঃ।

মন্বন্তরে বশিষ্টের সাতটা পুত্র সপ্তর্ষি হইয়াছিলেন। এই ঔত্তমি সনুর পুত্রদিগের নাম অজ, পরশু, দিব্য প্রভৃতি। ১৫

তামসনামক মন্তর সময়ে হরিগণ স্থরপগণ সত্যগণ ও সুধীগণ দেবতা হইয়াছিলেন। ই হারা প্রত্যেকে সপ্তবিংশতিসংখ্য । ত এই সময় শিবিনামক রাজা শত যক্ত করিয়া ইক্ত হইয়াছিলেন। এই তামস মন্তরে বাঁহারা সপ্তর্ষি হইয়াছিলেন, তাঁহাদের নাম বলিতেছি, প্রবণ কর । ত জ্যোতির্দ্ধামা, পৃথু, কাব্য, টৈত্র, অগ্নি, বনক ও পীবর, ই হারা তৎকালে সপ্তর্ষি হন। ত নর, খ্যাতি, শান্তহয়, জানুজন্ম প্রভৃতি তামস মনুর পুক্রেরা, মহাবল পরাক্রান্ত রাজা হইয়াছিলেন। ত

<sup>\*</sup> শরপা হবরত্তথা ইতি কেচিৎ পঠস্কি।

<sup>🕈</sup> স্তত্যান্ত প্ৰাণিয়ানৈত্ব জতি বা পাঠনায়স্।

र्रे हेराज्ञाञ्चलंत्रमञ्जा, हाँ हे व. आहेर १

মর্বিভূশ্চ তত্ত্রেরা দেবাং শৈচবান্তরে শৃণু\*॥ ২০॥
অমিতাভা ভূতরজো-বৈকুণ্ঠাঃ সন্থমেধসঃ †।

এতে দেবগণাস্ত্রত চতুর্দশ চতুর্দশ ॥ ২১॥
হিরণ্যরোমা বেদজ্ঞীরের্দ্ধবাহস্তথাপরঃ।
বেদবাহুঃ স্থধামা চ পর্জন্যশ্চ মহামুনিঃ॥ ২২॥
এতে সপ্তর্ষয়ো বিপ্র! তত্রাসন্ রৈবতেহস্তরে।
বলবন্ধঃ স্থমস্থারুঃ‡ সত্যকাদ্যাশ্চ তৎস্কৃতাঃ॥ ২৩॥
নরেন্দ্রাঃ স্থমহাবীর্যা বভূরুমু নিসত্তম!॥ ২৪॥
স্বারোচিবশ্চোত্তমিশ্চ তামসো রৈবতস্তথা।
প্রিয়ত্রতান্ত্রা হ্যেতে চত্বারো মনবস্তথা॥ ২৫॥

নৈত্রেয়! পঞ্চন মন্বতরে রৈবত নামে মনু ছিলেন। তৎকালে বিভু ইত্রন্থপদ প্রাপ্ত হন এবং তখন ঘাঁহারা দেবগণ হইয়াছিলন, তাঁহাদের নাম বলিতেছি, শ্রাবণ কর। "আমতাভগণ, ভূতরজোগণ, বৈকুপ্তগণ, স্থমেধোগণ, ইঁহারা দেবগণ ছিলেন। ইঁহাদের মধ্যে প্রত্যেক গণে চতুর্দ্দশ দেবতা। "ইইরণ্যরোমা, বেদ্লী, উদ্ধ্ বাহু, বেদবাহু, স্থামা, পর্জন্য ও মহাম্নি। "ইবৈত মন্ত্র পুত্রগণের নাম বলক্র, সুসন্তারু ও সত্যক প্রভৃতি। বৈত মনুর পুত্রগণের নাম বলক্র, সুসন্তারু ও সত্যক প্রভৃতি। "মুনিশ্রেষ্ঠ! ইঁহারা মহাপরাক্রমশালী রাজা ছিলেন। "ই স্বারোচিষ, ঔন্তমি, তামস ও বৈবত, এই চারি জন মনু প্রিয়ন্তর বংশে জন্ম পরিশ্রহ করেন। "বাজ্বি প্রিয়ন্ত্রত তপসাা দ্বাবা বিষ্কৃর আরাধনা করিয়া

<sup>\*</sup> দেবাদৈচবান্তবে শৃণু ইতি কেচিৎ পঠন্তি।

ক অমিতাভা ভুভরমা বৈরুঠাঃ সপ্তমেধন ইতি ক্টিং পাঠঃ।

<sup>🗜</sup> ৰলবদ্ধা সুষ্ঠাৰ্যঃ ইতি ৰা পাঠে।

বিষ্ণুশারাধ্য তপদা স রাজর্ষিঃ প্রিয়ন্ততঃ।

মন্বভরাধিপানেতান্ লক্কবানাত্মবংশজান্॥ ২৬॥

মতে মন্বভরে চাদীচ্চাক্ষ্যাখ্যস্তথা মন্তঃ।

মনোজবস্তথৈবেক্রো দেবানপি নিবোধ মে॥ ২৭॥

আদ্যাঃ প্রস্তা ভব্যাশ্চ পৃথুগাশ্চ দিবৌকসঃ।

মহান্মভাবা লেখাশ্চ পঞ্চৈতেহপ্যইকা গণাঃ \*॥ ২৮।

স্থেমধা বিরজাশ্চৈব হবিয়ান্মভ্রমো মধুঃ।

অতিনামা সহিষ্ণুশ্চ সপ্তাসন্নিতি চর্ষয়ঃ॥ ২৯॥

উরঃ পুরঃ শতদুয় প্রমুখাঃ স্থমহাবলাঃ †।

চাক্ষ্য্য মনোঃ পুত্রাঃ পৃথিবীপতয়োহভবন্॥ ৩০॥

বিবস্বতঃ সুতো বিপ্র! প্রাদ্ধাদেবো মহাদ্যুতিঃ।

মন্বভরের অধিপতি এই সমুদায় মন্তান লাভ করিয়াছিলেন। শক্ষ বর্চ মন্বভর কালে ঢাক্কুষ নামে মনু হইয়াছিলেন। চাক্ষ্য মনুর অধিকারকালে মনোজব ইক্রন্থপদ প্রাপ্ত হন, এবং ঘাঁহারা তখন দেবতা হইয়াছিলেন, তাঁহাদের নাম বলিতেছি, এবণ কর। ১০ আদ্যাগণ, প্রসূত্যণ, ভব্যগণ, পৃথুগগণ ও লেখগণ, এই মহানুভব পঞ্চগণ তখন দেবন্ধ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। ইঁহাদের আট আট ব্যক্তিতে এক এক গণ হইয়াছে। ১৮ তৎকালে মুমেধা, বিরন্ধা, হবিমান্, উন্তম, মধু, অতিনামা ও সহিষ্কু, ইঁহারা সপ্তর্ষি ছিলেন। ১০ চাক্ষ্য মনুর পুক্রগণের নাম উরু, পুরু, শতদাম প্রভৃতি। ইঁহারা মহাবল পরাক্রান্ত রাজা হইয়াছিলেন। ১০

বিপ্র! এক্ষণে সপ্তম মন্বস্তর চলিতেছে। অধুনা সূর্যোর পুত্র

শে টেচডেহতাক্টকা গণাঃ ইতি বহবঃ পঠিত।
 শিক্ষাণ্ট সংগ্ৰহণ: ইতাপারপুত্তক্যা পাঠিং।

#### তৃতীয়াংশঃ। ১ আ

মরঃ সংবর্ততে \* ধীমান্ সাম্প্রতং সপ্তমেইন্তরে ॥ ৩১ ॥
আদিত্য-বস্থ-রুদ্রাদ্যা দেবাশ্চাত্র মহামুনে ! ।
পরন্দরন্তবৈধাত্র মৈত্রেয় ! ত্রিদ্শেশ্বরঃ ॥ ৩২ ॥
বশিষ্ঠঃ কাশ্যপোইথাত্রির্জমদ্মিঃ সর্গোতমঃ।
বিশ্বামিত্রো ভরদ্বাজঃ সপ্ত সপ্তর্বয়োইভবন্ † ॥ ৩৩ ॥
ইক্ষুাকুশ্বেন নাভাগো ধৃষ্টঃ শর্যাতিরের চ।
নরিব্যন্তশ্চ বিখ্যাতো নাভ উদ্দিষ্ট এব চ ॥ ৩৪ ।
করুবশ্চ প্রথ্রশ্চ বস্থমান্ লোকবিশ্রুতঃ ।
মনোবৈব্স্বত্বৈয়তে নব পুত্রাশ্চ ধার্ম্মিকাঃ ॥ ৩৫ ॥
বিফুশক্তিরনোপম্যা সম্বোদিক্তা স্থিতো স্থিতা।
মনন্তরেমৃশেবেষু দেবত্বনাধিভিষ্ঠতি ॥ ৩৬ ॥

শ্রাদ্ধদেব মনু হইয়াছেন। ইনি অতীব দীপ্তিশালী ও বুদ্ধিমান্।" মহামুনে! এই বৈবস্বত মন্তব্যকালে আদিত্যগণ, বস্থাণ ও ক্রুজাণ দেবতা আছেন। মৈত্রেয়! এইক্ষণে পুরন্দর দেবগণের অধিপতি হইয়াছেন। " অধুনাতন সপ্তর্ষিগণের নাম—বশিষ্ঠ, কাশ্যপ, অত্রি, জমদ্বি, গৌতম, বিশ্বানিত্র ও তর্ম্বাক্ত। ই ফ্রাক্ত, নাভাগ, ধৃষ্ট, শর্মাতি, বিশ্বাত নরিষান্ত, নাভ, " করুষ, পৃষ্ধু ও লোকবিশ্রুত বস্থমান্, বৈবস্বত মনুর এই নয়্টী পুত্র। ই হারা পরম ধার্ম্মিক। " বিষ্ণুশক্তি, সম্বোদ্রিক ও অসীম। বিষ্ণুশক্তি হইতেই লোক সকল রক্ষিত হইতেছে এবং বিষ্ণুশক্তিই প্রত্যেক মন্তব্যে দেবরূপে আবিভূতি হন। " এই স্বায়ন্ত্রুব মন্তব্যক্ষালে

শ মহামতিঃ। মন্ত্র স বর্ত্ততে ইতি কেচিৎ পঠিত।
 া বিশামিত্রভর্বাকো সপ্ত সপ্তর্যয়োধত্র চ ইতি পুত্রকান্ত্রসং পাঠ:।

অংশেন তায় যজেহদৌ যজাঃ স্বায়স্ত্বেহন্তরে।
আকৃত্যাং মানসাে দেব উৎপন্নঃ প্রথমেহন্তরে॥ ৩৭॥
ততঃ পুনঃ দ বৈ দেবঃ প্রাপ্তে স্বারাচিষেহন্তরে।
তুষিভায়াং সমুৎপােরা হাজিতস্তবিতঃ দহ॥ ৩৮॥
ঔত্তমে অন্তরে চৈব\* তুষিভস্ত পুনঃ দ বৈ।
সত্যাারামভবৎ সভাঃ দতাৈঃ সহ স্বরোত্তিয়ঃ॥ ৩৯॥
তামসম্যান্তরে চৈব সম্প্রাপ্তে পুনরেব হি।
হর্ষাায়াং হরিভিঃ সার্দ্ধং হরিরেব বভূব হ॥ ৪০॥
বৈরবতেহপ্যন্তরে দেবঃ † সম্ভূত্যাং মানসােহভবৎ।
সংস্তাে রাজসৈঃ সার্দ্ধং‡ দেবৈদেবিবরাে হরিঃ॥ ৪১॥

বিষ্ণুর অংশে আকৃতির গর্ভে যজ্ঞ উৎপন্ন হইয়াছেন। এই যজ্ঞই প্রথম মন্বন্তরকালে মানসদেব রূপে জন্মপরিগ্রহ করিয়াছিলেন। " অনস্তর স্বারোচিষ মন্বন্তর উপস্থিত হইলে উক্ত দুর্দ্ধর্ব মানসদেব তুষিতগণের সহিত তুষিতার গর্ভে জন্ম পরিগ্রহ করিলেন। " তৎকালে তিনি তুষিত নামে বিখ্যাত হন। পরে যখন ঔস্তম মন্বন্তর উপস্থিত হয়, সে সময় ঐ তুষিত, মুরোক্তম সত্যগণের সহিত সত্যার গর্ভে পুনর্বার জন্মগ্রহণ করেন এবং তথন তিনি সত্য নামে বিখ্যাত হন। " পরে যখন তামস মন্বন্তর উপস্থিত হইল, তখন ঐ সত্য হরিগণের সহিত হরি নাম গ্রহণপূর্ব্বক হর্যার গর্ভে পুনর্বার উৎপন্ন হইলেন 18০ এই দেবতা শ্রেষ্ঠ হরি, রৈবত মন্বতর সময়ে রাজসগণের সহিত সম্ভূতির গর্ভে জন্মগ্রহণ করেন। তখন তিনি দানস নামে বিখ্যাত হন। " চাক্ষুব মন্তরে উক্ত পুরুষোত্তম

ওঁত্তনে হস্তরে চাপি ইতি বা পঠাতাম।

<sup>🛧</sup> देववज्यास्टरव दमवः व्यंत्र व्यात्मा भवेस्त्र ।

靠 नष्ड त्छ। बानरेमः मार्कम् ३ 🕞 द्विधि श्रेशि।

চাক্ষ্যে চান্তরে দেবো বৈকুণ্ঠঃ পুরুষোত্মঃ।
বিকুণ্ঠায়ামসো যদ্তে বৈকুণ্ঠেদেবতৈঃ সহ॥ ৪২॥
মন্বন্তরে তু সংপ্রাপ্তে তথা বৈবস্তে দিজ!।
বামনঃ কশ্যপাদ্বিফুরদিত্যাং সম্বভূব হ॥ ৪৩॥
বিভিঃ ক্রমৈরিমান লোকান্ জিত্বা যেন মহাত্মনা।
পুরন্দরায় ত্রৈলোক্যং দত্তং নিহতকল্টকম্॥ ৪৪॥
ইত্যেতাস্তনবস্তম্য সপ্তমন্বন্তরেমু বৈ।
সপ্তাথবাত্বন্ বিপ্তা \*! যাভিঃ সংরক্ষিতাঃ প্রজাঃ॥৪৫॥
যাদ্বিশ্বমিদং সর্বাং তস্য শক্ত্যা মহাত্মনঃ।
তন্মাৎ স প্রোচ্যতে † বিফুর্বিশের্ঘাতোঃ প্রবেশনাৎ ॥৪৬॥
সর্বের্চ দেবা মনবঃ সমস্তাঃ
সপ্তর্যা যে মনুস্থনবন্ধ।

বৈকুণ্ঠনামক দেশেগণের সহিত বিকুণ্ঠার গর্ভে বৈকুণ্ঠনাম গ্রহণ পূর্বক জন্মিলেন। <sup>৪২</sup>

ব্রহ্মন্! অনন্তর বৈবস্বত মন্বন্তর উপস্থিত হইলে ঐ বৈকুণ্ঠ
বিঞ্, কশাপ হইতে অদিতির গর্ভে বাননরূপে জন্ম পরিগ্রহ করিলেন। ১০ সেই মহাত্মা ত্রিপদ দারা ত্রিলোক জয়করণপূর্ব্যক্ত্র
নিক্ষণ্টক করিয়া দেবরাজকে প্রদান করিয়াছিলেন। ১৯ ব্রহ্মন্ !
সপ্ত মন্বস্তরে বিষ্কুর এই সপ্ত মুর্ত্তি আবিভূতি হইয়া প্রজা পালন
করিয়াছেন। ১৯ মহাত্মা বিষ্কুর শক্তি সমুদায় জগতে অনুপ্রবিষ্ট
হইতেছে, এই কারণে যৌগিক বিষ্কুলাম বিখ্যাত হইয়াছে, কারণ
বিশ্বাতুর অর্থ প্রবেশ। ১৯ সকল দেবতা, সমস্ত মনু, সমস্ত সপ্তর্ধি,

<sup>\*</sup> मखरवरा वन विश्व ! होंछ वा त्रवेमीयम्।

<sup>🛊</sup> জন্মাং সংজ্ঞোচ্যতে ইতি ৰা পাঠঃ।

ইক্রশ্চ যো যন্তিদশেশভূতো বিষ্ণোরশেষাস্ত বিভূতয়স্তাঃ॥ ৪৭

# ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২° শে! প্রথমো ২ ধ্যায়ঃ 1

সমুদায় মনুপুত্র, সমুদায় দেবরাজ ইব্র, ই হারা সকলেই বিষ্কুর বিভৃতি। "

> বিষ্ণুপুরাণ তৃতীয় অংশ প্রথম অধ্যায় সমাপ্ত।

# বিষ্ণুপুরাণম্।

তৃতীয়াংশঃ।

ভিতীয়াধ্যায়ঃ।

-

#### বৈত্রেয় উবাচ।

প্রোক্তান্যেতানি ভবতা সপ্ত মন্বন্তরাণি বৈ। ভবিষ্যাণ্যপি বিপ্রহেষ ! মমাখ্যাতুং ত্বমর্হসি \* ॥ ১॥ পরাশর উবাচ॥

সূর্য্যস্য পত্নী সংজ্ঞাভূৎ তনয়া বিশ্বকর্মণঃ।
মনুর্যমো যমী চৈব তদপত্যানি বৈ মুনে।॥২॥
অসহন্তী তু সা ভর্ত্তুজশ্ছায়াং যুযোজ বৈ।
ভর্ত্তুঃ শুক্রবণেইরণ্যং স্বয়ঞ্চ তপদে যথো॥ ৩॥

মৈত্রেয় কহিলেন, ব্রহ্মর্যে! আপনি আমার নিকট গত সপ্ত সহাস্তর বিবরণ কহিলেন, একণে কুপা করিয়া ভবিষ্য সপ্ত মন্থস্তরের বিবরণ বর্ণন করুন।

পরাশর কহিলেন। বিশ্বকর্মার একটা কন্যা হইয়ছিল। ঐ কন্যার নাম সংস্থা। ভগবান্ সূর্য্য সংজ্ঞাকে বিবাহ করিয়াছিলেন। মনে! সূর্য্য হইতে সংজ্ঞার গর্ভে তিনটা পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল। উক্ত তিন পুত্রের মধ্যে প্রথটার নাম শ্রাদ্ধদেন (মনু) দ্বিতীয়টার নাম যম ও ভৃতীয়টার নাম যমী। অনস্তর সংজ্ঞা ভর্তার ভেল সহ করিতে না পারিয়া (আপনার সম্ভূশ) ছায়ানামী একটা কন্যার স্থিটি করিলেন এবং ঐ ছায়াকে স্থামিশুক্রাষায় নিযুক্ত করিয়া স্বয়ং

<sup>\*</sup> छविवः। वि १ विश्वर्ष ! वः नुभाषा छुनई नि देखि प्राप्ता शवेखि ।

সংজ্যেমিত্যথাকঁশ্চ চ্ছায়ায়ামাত্মজত্রম্।
শানৈশ্চরং মনুঞ্চানাং তপতীং চাপ্যজ্ঞীজনং ॥ ৪ ॥
ছায়াসংজ্ঞা দদৌ শাপং যমায় কুপিতা যদা।
তদান্যেমসৌ বুদ্ধিরিত্যাসীদ্যমস্থ্যয়োঃ ॥ ৫ ॥
ততো বিবস্থানাখ্যাতে তয়ৈবারণ্যশংস্থিতাম্।
সমাধিদ্ফ্যা দদৃশে তামশ্বাং তপদি স্থিতাম্॥ ৬ ॥
বাজিরপধরঃ সোহপি ত্যাং দেবাবথাশ্বিনৌ।

তপস্যার্থ হারণ্যে গমন করিলেন। দিবাকর ঐ ছায়ানামী কন্যাকে সংজ্ঞা বোধ করিয়া তাহার গর্ভে দুইটা পুত্র ও একটা কন্যা উৎপাদন করিলেন। প্রথম পুত্রটার নাম শনৈশ্চর, দিতীয়-টার নাম সাবর্ণি (মনু)। কন্যাটার নাম তপতী। (সংবর্ণনামক রাজা এই কন্যার পাণিগ্রহণ করেন।) °

অনন্তর একদা ছারা কুপিতা হইয়া (পানপ্রহারোদ্যত যমকে )
শাপ দিলেন (যে তোমার পা খসিয়া যাউক্) তথন (নির্দ্যতা
হেতু) যম ও সূর্যা উভয়েই বুঝিতে পারিলেন যে, তিনি যমজননী
সংজ্ঞা নহেন, আর কোন নারী হইবেন (কারণ জননী কথন
স্থায় গর্জসন্তুত পুজের প্রতি এতদূর নির্দ্য হইতে পারেন না)।

তেখন সূর্য্য নির্বন্ধাতিশয় সহকারে তাঁহাকে জিজ্ঞানা করিলেন, তুমি কে? সত্য করিয়াবল।) ছায়া কহিলেন, (আমি সংজ্ঞানহি, আমার নাম ছায়া। সংজ্ঞা আমাকে আপনকার শুক্রারার নিমুক্ত রাখিয়া গিয়াছেন।) সূর্য্য (এই কথা শ্রাণ করিয়া) সমাধি-ছাই ছারা দেখিলেন যে, সংজ্ঞা অরণাগমন পূর্বাক ঘোটকীরূপ ধারণ করিয়া তপস্যা করিতেছেন। তখন দিবাকরও অশ্বরূপ ধারণপূর্বাক সেই অশ্বরূপিনী সংজ্ঞাতে তিনটী পুত্র উৎপাদন করিলেন। তথাগ্যে দুইটা পুত্র দেশ আশ্বনীকুমার নামে বিখ্যাত

জনয়ামাস রেবন্তং রেতসোহন্তে চ ভাক্ষরঃ॥ १॥
আনিন্যে চ পুনঃ সংজ্ঞাং স্বস্থানং ভগবান্ রবিঃ।
ভেজসঃ শমনপ্রাস্য বিশ্বকর্মা চকার হ॥ ৮॥
ভ্রমিমারোপ্য স্থান্ত তস্য তেজোবিশাতনম্।
ক্রতবানফমং ভাগং ন ব্যশাত্যতাব্যয়ম্॥ ৯॥
বৎস্থ্যাদ্বৈষ্ণবং তেজঃ শাতিতং বিশ্বকর্মণা।
জাজ্ব্যমানমপতৎ ভদ্ধুমো মুনিসভ্তম!॥ ১০॥
স্বিট্ব তেজসা তেন বিক্ষোশ্চক্রমকশ্পায়ৎ।
ত্রিশূল্পের ক্রন্তম্য \* শিবিকাং ধনদস্য চ॥ ১১॥
শক্তিং গুহুস্য দেবানামন্যেয়াঞ্চ মদায়ধ্ম।

হইলেন, তৃতীয়টী রেতের অবসানকালে জন্ম পরিপ্রহ করাতে রেবস্ত নাম ধারণ করিলেন। তাগান্ রবি সংজ্ঞাকে পুনর্বার সম্থানে আন্মন করিলেন। বিশ্বকর্মা (কন্যার সমূল ক্লেশ দেখিয়া) সূর্য্যের তেজের স্থানতা করিয়া দিলেন। তিনি সূর্য্যকে ধরিয়া ভ্রমি যন্ত্রে আরোপণপূর্মক তাঁহার তেজ চাঁচিয়া ফেলিতে লাগিলেন, পরস্তু স্র্যাতেজের অইনাংশ অক্ষয় বলিয়া যাহা আর চাঁচিয়া ফেলিতে পারিলেন না। মুনিশ্রেষ্ঠ! বিশ্বকর্মা সূর্য্য হইতে যে বৈষ্ণব তেজ চাঁচিতে লাগিলেন, তাহা জ্বলতে জ্বলে প্রতিত হইল। আনস্তর বিশ্বকর্মা ভূপতিত সেই সূর্যাতেজ প্রহণ করিয়া বিষ্ণুর চক্র, ক্রুদ্রের ক্রিশুল, ক্রেরের শিবিকা নামে অস্ত্র প্রত্তর করিলেন আরু প্রস্তুত করিলেন বিশ্বতার বিশেষ বিশেষ অস্ত্র নির্মাণ করিয়া দিলেন। তাহা প্রবিশেষ বিশেষ অস্ত্র নির্মাণ করিয়া দিলেন।

<sup>\*</sup> जिल्लेटिक गर्नन। ইতি कहिए भार्रः।

তৎ সর্বং তেজসা তেন বিশ্বকর্মা বাবর্দ্ধরং॥ ১২॥
ছারাসংজ্ঞাস্পতো যোহসো দিতীয়ঃ কথিতো মরঃ।
পূর্বজন্য স্বরণাহসো সাবর্ণস্তেন চোচ্যতে \*॥ ১৩॥
তস্য মন্বন্তবং হ্যেতং সাবর্ণক্ষথাউমম্।
তৎ শৃণুদ্ব মহাভাগ! ভবিষ্যং কথয়ামি তে॥ ১৪॥
সাবর্ণিস্ত মন্তর্গোহসো মৈত্রেয়! ভবিতা ততঃ।
স্থতপাশ্চামিতাভাশ্চ মুখ্যাশ্চাপি তদা স্বরাঃ।॥ ১৫॥
তেষাং গণস্ত দেবানামেকৈকো বিংশকঃ স্মৃতঃ।
সপ্রবীনপি বক্ষ্যামি ভবিষ্যামানিস্তুম। ১৬॥
দীপ্তিমান্ গালবো রামঃ ক্লপো দ্রোণিস্তথাপরঃ।
মৎপুত্রস্ত তথা ব্যাস ঋষ্যশৃক্ষ্ণ সপ্তমঃ॥ ১৭॥

আমি পূর্বের ভোমার নিকট বলিয়াছি যে, ছায়ার গর্ভে দিবা-করের যে দিতীয় পূব্দ উৎপন্ন হইয়াছিল। ঐ পুক্র, জ্যোষ্ঠের সমান বর্ণ হওয়াতে, সাবর্ণি নামে বিখ্যাত হইয়াছেন। ইনিই অফীম মনু।'° এই সাবর্ণি মনুর অন্তরের নাম সাবর্ণক মন্থন্তর ও আফীম মন্থার । মহাভাগা! ভাবী এই জাফীম মন্থন্তরের বিবরণ বলিতেছি, শ্বেণ কর।'°

নৈত্রে ! তাহার পর অর্থাৎ সপ্তম মন্তরের অবসান হইলে ।
সাবর্ণি নামে মনু হইবেন । তৎকালে সূতপোগণ, অমিতাভগণ ও
মুখ্যগণ দেবতা হইবেন । ই হাদের প্রত্যেক গণে একবিংশতি
দেবতা থাকিবেন । মুনিশ্রেষ্ঠ ! এ সময় ঘাঁহারা সপ্তর্ধি হইবেন,
তাঁহাদের নাম বলিতেছি, প্রবণ কর । ই দীপ্তিমান্ গালব, রাম,
কুপ, ডোণপুত্র অক্থামা, মৎপুত্র বেদব্যাস ও ঋ্যাপুক্ত। শতাল-

<sup>\*</sup> मार्वार्वपञ्चम कथाएक ठाउँ वा भारः।

<sup>া</sup> মুখণশচাপি ওথ। প্রথাঃ ইতি পুন্ধকান্তর্ম। পাঠঃ।

বিষ্ণুপ্রসাদাদনঘঃ পাতালান্তরগোচরঃ।
বিরোচনস্থতন্তেষাং বলিরিন্দ্রো ভবিষ্যতি ॥ ১৮ ॥
বিরজাশ্চার্করীবাংশ্চ নির্মোহাদ্যান্তথাপরে।
সাবর্ণস্য মনোঃ পুজা ভবিষ্যন্তি নরেশ্বরাঃ॥ ১৯ ॥
নবমো দক্ষসাবর্ণো মৈত্রেয়! ভবিতা মন্ত্রঃ।
পারা মরীচিগর্ভাশ্চ স্থধ্যানস্তথা ত্রিধা॥ ২০ ॥
ভবিষ্যন্তি তদা দেবা একৈকো দ্বাদশো গণঃ।
তেষামিন্দ্রো বহাবীর্য্যো ভবিষ্যন্তান্ত্র তো দিল !॥ ২১ ॥
সবলো দ্যুতিমান্ ভব্যো বস্ত্রম্বো ধৃতিন্তথা\*।
জ্যোতিয়ান্ সপ্তমঃ সত্যন্তবৈতে চ মহর্ষয়ঃ॥ ২২ ॥
ধৃতকেতুদীপ্তিকেতুঃ পঞ্চক্তো নিরাময়ঃ।
পৃথুশ্রবাদ্যাশ্চ তথা দক্ষসাবর্ণকাত্মজাঃ॥ ২৩ ॥

তলবাদী বিরোধ এতনয় নিজ্পাপ বলি, বিষণুর রূপায় এই সময় ইক্সত্বপদ পাইবেন। 'দ বিরক্তা আর্বরীবান্ও নির্মোহ প্রভৃতিরা, সাবর্ণ মনুর পুত্র রূপে জন্মগ্রহণ করিয়া ভূপতি হইবেন। 'ই

মৈত্রেয়! দক্ষণাবর্ণ নবম মনু হইবেন। পারগণ মরীচিগর্জগণ ও মুধর্মগণ, এই ত্রিবিধ গণ<sup>২</sup> তৎকালে দেবতা হইবেন।
ই হাদের প্রত্যেক গণে দাদশ দেবতা থাকিবেন। ব্রহ্মনৃ! এই
সময় মহাবীর্যাশালী অন্তুত, ইক্রত্বপদ প্রাপ্ত হইবেন।<sup>২১</sup> এই মন্থন্তবের সবল, দ্যুতিমান্ ভব্য, বসু, মেধা, ধৃতি, জ্যোতিয়ান্ ও সত্য,
ই হারা সপ্তর্বি হইবেন।<sup>২১</sup> ধৃতকেতু, দীপ্তিকেতু, পঞ্চহন্ত, নিরাময় ও পৃধুশ্রবা প্রভৃতি, ই হারা দক্ষসাবর্ণের পুত্র হইবেন।<sup>২৩</sup>

<sup>\*</sup> इत्या बङ्करमभाष्टिशिष्ठशा देखि वा अवेमीयम्।

দশমো ব্রহ্মাবণিভিবিষ্যতি মুনে! মন্তঃ।
স্থামানো বিরুদ্ধাশ্চ শতসন্তায়ন্তথা সুরাঃ॥ ২৪॥
তেষামিক্রশ্চ ভবিতা শান্তির্নাম মহাবলঃ।
সপ্তর্ষয়ো ভবিষ্যন্তি যে তদা তান্ শৃণুষ চ॥ ২৫॥
হবিষ্যান্ সুরুতিঃ সত্যো হ্যপাংমূর্ত্তিতথাপরঃ।
নাভাগোহপ্রতিয়োজাশ্চ সত্যকেতুন্তথৈব চ॥ ২৬॥
স্থাক্ষেত্রশ্চোভযোজাশ্চ হরিসেনাদয়ো দশ \*।
ব্রহ্মাবর্ণপুল্রান্ত রক্ষিষ্যন্তি বস্কারাম্॥ ২৭॥
একাদশশ্চ ভবিতা ধর্মাবাবিকো মন্তঃ।
বিহ্ন্মাঃ কাম্যমা নির্মাণ্রত্যন্তথা॥ ২৮॥
গণান্ত্রেতে তদা মুখ্যা দেবানাঞ্চ ভবিষ্যতাম্।
একৈকস্তিংশকন্তেষাং গণশ্চক্রশ্চ বৈ ব্যঃ॥ ২৯॥

মুনে! যিনি দশম মনু হইবেন, তাঁহার নাম ব্রহ্মসাবর্ণি। এই সময় স্থামগণ ও বিরুদ্ধগণ দেবতা হইবেন। ইঁহাদের প্রত্যেক গণের সংখ্যা এক শত। ই মহাবল পরাক্রাস্ত শান্তি, দেবগণের রাজা হইবেন। এই সময় যাঁহারা সপ্তর্ধি হইবেন, তাঁহাদের নাম কার্ত্তন করিতেছি, শ্রুবণ কর । ই হিবেয়ান্ স্কুতি সভ্য অপামূর্ত্তি নাভাগ অপ্রতিমোলা ও সভ্যকেতু। ই স্কুক্তে উদ্ভব্যাকা ও হরিসেন প্রভৃতি ব্রহ্মসাবর্ণের দশ্টী পুল্ল পৃথিবী পালন করিবেন। ই

ধর্মসাবর্ণি একাদশ মনু হইবেন। বিহঙ্কমগণ কামগমগণ ও নির্ম্মণরভিগণ হঁহারা তৎকালভাবী দেবগণের মধ্যে প্রধান হইবেন। এই সমুদায় দেবগণের মধ্যে প্রভোক গণে ত্রিশটা

<sup>\*</sup> श्विटम्नापटमा पन इंडि भागेखियम्।

নিশ্চরশ্চামিতেজাশ্চ বপুয়ান্ বিষ্ণুরারুণিঃ \*।
হবিয়াননঘলৈতে ভাবদঃ সপ্তর্যস্ত্রপাণ ॥ ৩০ ॥
সর্ব্বগঃ সর্ব্বর্মা চ ‡ দেবানীকাদয়ন্তর্পা।
ভবিষ্যন্তি মনোস্তম্য তনয়াঃ পৃথিবীশ্বরাঃ ॥ ৩১ ॥
রুত্রপুত্রস্তু সাবর্ণো ভবিতা দ্বাদশো মন্তঃ।
ঋতধামা চ তত্রেজাে ভবিতা শ্ণুমে সুরান্ ॥ ৩২ ॥
হরিতা লােহিতা দেবাস্তথা স্থমনসাে দিজ!।
সুকর্মাণশ্চ তারাশ্চ ও দশকাঃ পঞ্চ বৈ গণাঃ॥ ৩০ ॥
তপস্বী সুত্রপাশ্চেব ত্রোমূর্ভিন্তুপােরতিঃ।

করিয়া দেবতা থাকিবেন। এই সময় রুষ ইন্দ্রত্ব পদ প্রাপ্ত হই-বেন। ১৯ এতন্মস্বস্তরে নিশ্চর, অগ্নিডেজা, বপুয়ান্, বিষ্ণু, আরুণি, হবিয়ান্ ও অন্য, ইঁহারা সপ্তর্ষি হইবেন। ১৯ এই মনুর সন্তান নর্মান কর্মশ্বা ও দেবানীক প্রভৃতি ভূপতি হইবেন। ১৯

অনস্তর সাবর্ণ নামে রুত্রপুত্র দ্বাদশ মনু হইবেন। সে সময় 

#তধানা ইন্দ্রবদ পাইবেন এবং যাঁহারা দেবতা হইবেন, তাঁহাদের নাম কীর্ত্তন করিতেছি, শ্রবণ কর। 

শের নাম কীর্ত্তন করিতেছি, শ্রবণ কর। 

শের বিদ্যাদির করিব করিতে 

শের বিদ্যাদির বিদ্যাদির বিদ্যাদির বিদ্যাদির সংখ্য 

শ্রত্বাদ গণেই দশ জন করিয়া দেবতা থাকিবেন। 

তপস্থী, 

শ্রত্বাদ, তপোমূর্ত্তি, তপোরতি, তপোধৃতি, দ্যুতি ও তপোধন

<sup>\*</sup> রুঞ্জারুণিঃ ইতি কটিৎ পাঠঃ।

<sup>🛧</sup> ভব্য: সপ্তর্যস্ত্রথা ইতি পুস্তকান্তরস্য পাঠ:।

<sup>🕇</sup> সর্বত্রগঃ সধন্মান্ত। ইতি বা পাঠঃ।

<sup>🤇</sup> সুকর্মানঃ সুরাপান্চ ইতি অন্যে পঠন্তি।

তপোধৃতিদুঁ তিশ্চান্য: সপ্তমস্ত তপোধনঃ ॥ ৩৪ ॥
দেববানুপদেবশ্চ \* দেবত্রেষ্ঠাদরস্তথা .
মনোস্তম্য মহাবীর্য্যা ভবিষ্যন্তি স্কৃতা নূপাঃ † ॥ ৩৫ ॥
ত্রয়োদশো রৌব্যনামা ‡ ভবিষ্যতি মুনে ! মনুঃ ।
সূত্রামানঃ স্বর্ধ্মাণঃ স্কর্মাণস্তথাপরাঃ ॥ ৩৬ ॥
ত্রয়স্তিংশদিভেদাস্তে ও দেবানাং যে তু বৈ গণাঃ ।
দিবস্পতির্মহাবীর্যা প স্তেষামিক্রো ভবিষ্যতি ॥ ৩৭ ॥
নির্মোহস্তবৃদ্দী চ নিষ্পু কম্পো নির্মণস্কঃ ।
ধৃতিমানব্যরশ্চান্যঃ সপ্তমঃ স্কৃতপা মুনিঃ ॥ ৩৮ ॥
সপ্তর্মস্তিবৃষ্যে তদ্য পুত্রানপি নিবাধ মে ।

(ই হারা সপ্তর্ষি হইবেন)। ত দেববান্, উপদেব ও দেবশ্রেষ্ঠ প্রভৃতি উক্ত মনুর পুত্রেরা পৃথিবীপতি হইয়া অতুলবিক্রমশালী হইবেন। ত

মূনে! যিনি ত্রয়োদশ মনু হইবেন, তাঁহার নাম রৌব্য। এই
সমরে সূত্রামগণ, সুকর্মগণ ও স্থধর্মগণ দেবতা হইবেন। ৩০ এই
সকল দেবগণের প্রত্যেক গণে তেত্রিশ জন দেবতা থাকিবেন।
যিনি ই হাদের ইক্র হইবেন তাঁহার নাম দিবদপতি। ৩০ নির্মোহ,
তত্ত্বদর্শী, নিত্পুকদপ, নিরুৎস্কক, ধৃতিমান্, অব্যয় ও মহর্ষি
সূত্রপা। ৩৮ ই হারা সপ্তর্ষি হইবেন। যাঁহারা এই মনুর পুত্র হই

<sup>\* (</sup>म्बन्धान्यभारम्बन्ध इंडि द्यांष्ट्र भोगेस ।

ক ভবিব্যক্তি মনোজস্য মহাৰীৰ্ঘ্যাঃ হুতা দুপাঃ ইতি বা পঠ্যতাম ।

<sup>‡</sup> खरगामरना (बीठामांगा डांड प्रारम् भेरेखि।

S दश्तिः नमर अमारच हेडि वा शाहे:।

शु (नवमः जि महाबीर्यतः हेकि व्विष्टि शहे खि।

চিত্রদেনবিচিত্রাদ্যা ভবিষ্যন্তি মহীক্ষিতঃ ॥ ৩৯ ॥
ভৌত্যকতুর্দশকাত্র মৈত্রেয় ! ভবিতা মন্তঃ ।
ভটিরিন্দ্রঃ স্থরগণাস্তত্র পঞ্চ শৃণুষু তান্ ॥ ৪০ ॥
চাক্ষাক্ষ পবিত্রাক্ষ কনিষ্ঠা ভাজিরাস্তথা ।
বচোর্দ্ধাক্ষ বৈ দেবাঃ সপ্তর্মীনপি মে শৃণু ॥ ৪০ ॥
অধিবাহুঃ শুচিঃ শুকো মাগধোহগ্রিপ্ত এব চ \* ।
যুক্তস্তথা জিতকান্যো মনুপুল্রানতঃ শৃণু † ॥ ৪২ ॥
উরুর্গভীরত্রধাদ্যা মনোস্তম্য স্থতা নৃপাঃ ।
কথিতা মুনিশার্দ্দৃল ! পাল্যিষ্যন্তি যে মহীম্ ॥ ৪০ ॥
চতুর্গাত্তে বেদানাং জায়তে কিল বিপ্লবঃ ।

বেন, তাঁহাদের নাম বলিতেছি, প্রবণ কর। চিত্রসেন ও বিচিত্র প্রভৃতি। রৌব্য মন্থন্তরে এই সকল মনুপুত্রেরা ভূপাল হইবেন। ৩১

মৈত্রেয়! যিনি চতুর্দশ মনু হইবেন, ঠোঁহার নাম ভৌত্য।
এই চতুর্দশ মন্থন্তরে শুচি দেবরাজ হইবেন। এই সময় যে পঞ্চগণ দেবতা হইবেন, তাহা বলিতেছি, শ্রেবণ কর। °° চাকুষগণ,
পবিত্রগণ, কনিষ্ঠগণ, লাজিরগণ ও বচোরজ্বগণ, ইঁহারা দেবত্বপদ
পাইবেন। এই মন্থন্তরে ঘাঁহারা সপ্তর্ষি হইবেন, তাঁহাদের নাম
বলিতেছি। °° অগ্রিবাহু, শুচি, শুক্র, মাগধ, অগ্নিপ্ত, যুক্ত ও
অজিত। এই মন্থন্তরে ঘাঁহারা মনুপুত্র হইবেন, তাঁহাদের নাম
বলিতেছি, শ্রেণ কর। °° মুনিশ্রেষ্ঠ। উরু, গভীর, ব্রধু প্রভৃতি
মনুপুত্রেরা পৃথিবী পালন করিবেন। °°

<sup>\*</sup> মাগ্রেদা গুল্ল এব ৮ ই:ত অপরপুস্তক্ষা পাঠ:।

ተ মুক্তপ্তথাজিত কান্যো মহপুত্রান্ততঃ শুণু ইতি কেচিৎ পঠিতি

প্রবর্ত্তরি তানেত্য ভুবি সপ্তর্ধয়ে। দিবঃ ॥ ৪৪ ॥ কতে কতে স্ভেবিপ্র! প্রণেতা জায়তে মনুঃ। দেবা যজ্ঞভুজন্তে তু যাবমায়ন্তরম্ভ তৎ ॥ ৪৫ ॥ ভবন্তি যে মনোঃ পুত্রা যাবমায়ন্তরম্ভ তৈঃ। তদম্বয়োদ্ভবৈশৈচব তাবজ্ঞঃ পরিপাল্যতে ॥ ৪৬ ॥ মনুঃ সপ্তর্ধয়ো দেবা ভূপালাশ্চ মনোঃ স্কৃতাঃ। মন্তরে ভবন্তোতে শক্রশৈচবাধিকারিণঃ \* ॥ ৪৭ ॥ চতুর্দশভিরেতৈন্ত গতৈর্ময়ন্তরৈ দ্বিশা । সহস্রম্গপর্যান্তঃ কল্পো নিঃশেষ উচ্যতে ॥ ৪৮ ॥ তাবৎপ্রমাণা চ নিশা ততো ভবতি সত্তম!।

প্রত্যেক চতুর্যুগাবসানে বেদবিপ্লাব হইয়া থাকে, অর্ধাৎ কলি—
যুগে বেদের লোপ হয় (পরে সত্যযুগপ্রারম্ভে) সপ্তর্ষিগণ ভূতলে
অবতীর্ণ হইয়া পুনর্মার বেদ প্রচার করেন। । । । বিপ্রে! মনু প্রত্যেক
সভাযুগে মাৃতিশাস্ত্রপায়নকর্ত্তা হইয়া থাকেন, এবং এক এক
মন্থার কাল পর্যান্ত যজ্জভাগী দেবভারা স্বর্গে বাদ করেন। । । ।

যাঁহারা মনুপুত্র ভাঁহারা সম্পূর্ণ এক মন্থার কাল অবন্থিতি করিয়া
থাকেন। যাঁহারা মনুর বংশক্রাভ ভাঁহারাও তত কাল পৃথিনী
পালন করেন। । । । মনু সপ্তর্ষি দেবরাজ দেবগণ ও মনুপুত্র ভূপালগণ, ই হারা প্রত্যেক মন্থার্যের উৎপন্ন হন ও লয় পাইয়া থাকেন। । ।

ব্রহ্মন্। এইরূপ চতুর্গ মন্থার স্থাৎ সহস্র চতুর্গ অভাত
হইলে এক কম্পা হইয়া থাকে। । । অনন্তর ঐরূপ পরিমিত সময়
রাত্রি হয়। সাধুশ্রেষ্ঠ। ঐ রাত্রিকালে ব্রহ্মর্ন্যী হির সমুদ্রমধ্যে

<sup>\*</sup> लकानाव्यापिकातिमः इति श्रुष्ठकास्त्रमः भाष्टेः।

ব্রহ্মরপধর: শেতে শেষাহাবয়ুসংপ্লবেশ ॥ ৪৯॥
ব্রৈলোক্যমখিলং গ্রন্থা ভগবানাদিক্দিভুঃ।
স্বায়াসংস্থিতো বিপ্রা! সর্বভূতো জনার্দনঃ॥ ৫০॥
ততঃ প্রবুদ্ধো ভগবান্ যথা পূর্বং তথা পূনঃ।
স্ফিং করোত্যরাল্মাকশেপ কলেপ রজোগুণঃ॥৫১॥
মনবো ভূভুজঃ সেন্দ্রা দেবাঃ সপ্তর্যস্তথা।
সালিকোহংশঃ স্থিতিকরো জগতো দিজসভ্ম!॥৫২॥
চতুর্গুগেহপাসৌ বিজ্ঞুঃ স্থিতিব্যাপারলক্ষণঃ।
যুগব্যবস্থাং কুরুতে যথা মৈত্রেয়! তৎ শৃণু॥৫৩॥
ক্তে যুগে পরং জ্ঞানং কপিলাদিস্বরূপধৃক্।
দদাতি সর্ব্রভ্রানাং সর্ব্রভ্তহিতে রতঃ॥৫৪॥

শেষশযায় শয়ন করিয়া থাকেন। " ব্রহ্মন্! ভগবান্ আদি বিভু সর্বভৃতাত্মা জনার্দ্দন কপ্পান্তে সমুদায় তৈলোকা সংহার করিয়া আপনার মায়াতে অবস্থিতি করেন। " অবায়াত্মা ভগবান্ হরি প্রত্যেক কপ্পারন্তেই প্রবৃদ্ধ ইয়া রজোগুণ অবলম্বন পূর্ব্বক পূর্ব্বের নাায় পুনর্বার কৃষ্ণি করেন। " ব্রহ্মন্! মনুগণ, মনুপুত্র ভূপালগণ, ইত্রগণ, দেবগণ ও সপ্তর্বিগণ, ই হারা বিষ্ণুর সাজ্বিক অংশ এবং ই হারাই জগথ পালন করিয়া থাকেন। " মৈত্রেয়! জগতের রক্ষার নিমিন্ত বিষ্ণু, চারি যুগে বেপ্রকার যুগানুসারী ব্যবস্থা করেন, তাহা বলিতেছি, তাবণ কর। " তিনি প্রথমতঃ সত্যযুগে সর্বভূতহিতার্থে মহর্ষি কপিলাদিরূপ ধারণপূর্ব্বক সকল প্রাণাকে পরম সত্য জ্ঞান দান করেন। " তেতাযুগে সেই প্রভূ

<sup>\*</sup> শেষাহাৰতু:পপ্লৱে ইতি বহবঃ পঠন্তি।

### বিষ্পুরাণম্।

তৃতীয়াংশঃ। ভৃতীয়াধ্যায়ঃ।

-

#### रेमटज्य छेवाह।

জ্ঞাতনেতমায়া ত্তো যথাপুর্বনিদং জগং।
বিফুর্বিফো বিফুরুল্চ ন পরং বিদ্যুতে ততঃ॥ >॥
এতং তু শ্রোতুনিজ্ঞানি ব্যস্তা বেদা মহাত্মনা।
বেদব্যাসস্য রূপেণ যথা তেন যুগে যুগে॥ ২॥
যিমান্ যিমান্ যুগে ব্যাসো যো য আসীমহামুনে!।
তং তমাচক্ষ্ ভগবন্! শাখাভেদাংশ্চ মে বদ॥ ৩॥
পরাশার উবাচ।

বেদক্রমস্য মৈত্রেয়। শাখাভেদিঃ সহস্রশঃ। ন শক্যো বিস্তরো বক্তুং সংক্ষেপেণ শৃণুষু তম্॥ ৪॥

নৈত্রেয় কহিলেন। এই জগৎ যে বিষ্ণুস্কলপ ও বিষ্ণুতই যে এই জগৎ অবস্থিতি করিতেছে এবং সেই বিষণু হইতে ভিন্ন যে আর কোন পদার্থই নাই, তাহা পূর্বের আপনকার নিকট জ্ঞাত হইয়াছি, পরস্কু ভগবান্ বেদব্যাস যে ক্লপে যুগে যুগে বেদবিভাগ করেন, তাহা শ্রাণ করিতে ইচ্ছা করি। ভগবন্ মহামুনে! যে যে যুগে যিনি যিনি বেদব্যাস হন ও যেক্লপ শাখায় বেদবিভক্ত হয়, তাহা আমার নিকট বলুন।

পরাশর কহিলেন। বৈত্তের! বেদরূপ রক্ষের সহস্রটী ভিন্ন ভিন্ন শার্থা আছে। সেই সমুদায় শার্থার বিবরণ বিস্তারিত রূপে বর্ণন করা দুঃসাধ্য, অভএব সংক্ষেপে বলিতেছি, শ্রেণ কর। দ্বাপরে দ্বাপরে বিফুর্ব্যাসরূপী মহামুনে !।

বৈদমেকং স বহুধা কুরুতে জগতো হিতঃ ॥ ৫ ॥

বীর্যাং তেজো বলঞ্চালপং মন্ত্র্যাণামবেক্ষ্য বৈ ।

হিতায় সর্বভূতানাং বেদভেদান্ করোতি সঃ ॥ ৬ ॥

যয়া স কুরুতে তয়া বেদমেকং পৃথক্ প্রভূঃ ।

বেদব্যাসাভিধানা তু সা মূর্ত্তির্মপুবিদ্বিয়ঃ ॥ ৭ ॥

যশান্ মন্বভরে যে যে ব্যাসান্তাংস্তান্ নিবোধ মে ।

যথা চ ভেদঃ শাখানাং ব্যাদেন ক্রিয়তে মুনে ! ॥ ৮ ॥

অফাবিংশতি কৃত্বা বৈ বেদা ব্যস্তা মহর্ষিভিঃ ।

বৈবস্বতেহন্তরে হ্যামিন্ \* দ্বাপরেষু পুনঃ পুনঃ ॥ ৯ ॥

বেদব্যাসা ব্যতীতা যে অফাবিংশতি সন্তম ! ।

চতুর্দ্ধা যৈঃ কুতো বেদো দ্বাপরেষু পুনঃ পুনঃ ॥ ১ ॥

ৰ শমনে! বৃণসরূপী ভগবান্ বিষণু জগতের হিতসাধনের জন্য প্রত্যেক দ্বাপর যুগে এক বেদ বহু অংশে বিভক্ত করেন। তিনি সনুষ্যের বীর্য্য তেজ ও বলের ন্যুনতা দেখিয়া সর্ব প্রাণীর হিতসাধনের জন্য বেদ বিভাগ করিয়া থাকেন। সেই প্রভু বিষণু যে মুর্ত্তি অবলম্বনপূর্বক বেদ বিভাগ করেন, সেই মুর্ত্তির নামই বেদব্যাস। মুনে! যে যে মন্তত্তরে যিনি যিনি বেদব্যাস হন ও যে রূপে তিনি বেদের শাখাভেদ করেন, তাহা বলিতেছি, শ্রাবণ কর।

এই বৈশস্বত মন্মন্তরের প্রত্যেক দাপর যুগে মহর্ষিরা পুনঃপুন অর্থাৎ অক্টাবিংশতিবার বেদ বিভাগ করিয়াছিলেন। সাধুশ্রেষ্ঠ! বে অক্টাবিংশতিসম্খ্য বেদব্যাস অতীত হইয়াছেন, তাঁহারা প্রত্যেকে

ইবরশতেংশ্বরে তাশান্ইতি পাঠাতরম্।

দাপরে প্রথমে ব্যস্তাঃ স্বয়ং বেদাঃ স্বয়ন্ত্রবা।
দ্বিতীয়ে দাপরে চৈব বেদবাসঃ প্রজাপতিঃ॥ ১১॥
ভৃতীয়ে চোশনা ব্যাসশ্চতুর্থে চ রহস্পতিঃ।
সবিতা পঞ্চমে ব্যাসো সৃত্যুঃ ষষ্ঠে স্মৃতঃ প্রস্তুঃ॥ ১২॥
সপ্তমে চ তথৈবেন্দো বিশিষ্ঠশ্চাইমে স্মৃতঃ।
সারস্বতশ্চ নবমে ত্রিধামা দশমে স্মৃতঃ॥ ১৩॥
একাদশে তু ত্রির্যা ভরদ্বাজন্ততঃ পরম্।
ত্রোদশে চান্তরীক্ষো বল্লী চাপি চতুর্দশে \*॥ ১৪॥
ত্র্যারুণঃ † পঞ্চদশে বোড়শে তু ধনঞ্জয়ঃ।
ক্রতঞ্জয়ঃ সপ্তদশে খাণজ্যোইন্টাদশে স্মৃতঃ॥ ১৫॥
ততো ব্যাসো ভরদ্বাজা ভরদ্বাজাৎ তু গৌতমঃ।
গৌতমাদুত্রমো ব্যাসো হ্যাাল্যা যোহভিধীয়তে॥ ১৬।

প্রত্যেক দাপর যুগে বেদকে চারি ভাগে বিভাগ করিয়াছিলেন। তথান এই সম্বন্ধরের দাপর যুগে ভগবান্ স্বয়স্তু স্বয়ং বেদ বিভাগ করেন। দ্বিভীয় দ্বাপরে প্রজ্ঞাপতি সনু বেদব্যাস হন। তইরূপ তৃতীয় দ্বাপরে উশনাঃ, চতুর্থ দ্বাপরে রহস্পতি, পঞ্চম দ্বাপরে সবিভা, ষষ্ঠ দ্বাপরে সৃত্যু, তাল দ্বাপরে ইন্দ্র, অইন দ্বাপরে বশিষ্ঠ, নবম দ্বাপরে সারস্বত, দশন দ্বাপরে তিধামা, ত একাদশ দ্বাপরে তির্ধা, দাদশ দ্বাপরে ভরদ্বাক, ত্যোদশ দ্বাপরে অস্তরীক্ষ, চতুর্দশ দ্বাপরে বপ্রী। তাল পঞ্চদশ দ্বাপরে ত্যার্কণ, ব্যোড়শ দ্বাপরে ধনপ্রয়, সপ্তদশ দ্বাপরে কৃতপ্রয়, অইটাদশ দ্বাপরে ক্ষাত্যা ত্বা তির্ধা দ্বাপরে ভরদ্বাক, বিংশ দ্বাপরে গৌতম, এক-

<sup>\*</sup> রত্রী চাপি চতুর্দণে ইতি ৰণাকবিকিতপুস্তকস্য পাঠঃ।

<sup>🛊</sup> ज्ञाकि निर्दिष्टि वा श्रीमीसम्।

অথ হর্যাত্মনো বেণঃ স্থৃতো রাজশ্রবাশ্বয়ঃ।
সোমশুয়ায়নশুমাৎ\* তৃণবিন্দুরিতি স্মৃতঃ॥ ১৭॥
ঋক্ষোইভূদ্ভার্গবস্তমাৎ বাল্মীকির্যোইভিধীয়তে।
তমাদমৎপিতা শক্ত্রির্যাসন্তমাদহং মুনে!॥ ১৮॥
জাতৃকর্নোইভবন্মতঃ † ক্ষাইদ্বপায়নশুতঃ।
অফাবিংশতিরিত্যেতে বেদব্যাসাঃ পুরাতনাঃ॥ ১৯॥
একো বেদশ্চপুর্যা তু থৈঃ ক্রতো দ্বাপরাদিশু ‡।
ভবিষ্যে দ্বাপরে চাপি দ্বৌনির্যাসো ভবিষ্যতি॥ ২০॥
ব্যতীতে মম পুত্রেংমিন্ ক্ষাইদ্বপায়নে মুনো।
শ্রব্যেকাক্ষরং ব্রদ্ধ ওমিত্যেবং ব্যবস্থিতম্।

বিংশ দ্বাপরে তদপেক্ষা শ্রেষ্ঠ হর্যাত্মা, " দ্বাবিংশ দ্বাপরে রাজশ্রার বংশীয় বেণ, ত্রয়েবিংশ দ্বাপরে সোমগুরার পুত্র কৃণবিন্দু,"
চতুর্বিংশ দ্বাপরে ভার্গবান্ধয় গুক্ষ—যিনি বাল্মীকি শব্দে অভিহিত
হইয়া থাকেন, পঞ্চবিংশ দ্বাপরে মংশিতা শক্তি, বড়বিংশ দ্বাপর
যুগে আমি, " সপ্তবিংশ দ্বাপর যুগে জাতুকর্ন, অটাবিংশ দ্বাপর
যুগে ক্ষুইদ্বপায়ন। এই অটাবিংশতি মহর্ষি প্রাচীন বেদব্যাস
অর্থাৎ ইঁহারা পূর্বে বেদ বিভাগ করিয়াছিলেন।" ইঁহার।
প্রত্যেক দ্বাপর যুগের প্রথমে এক বেদকে চারিভাগ করেন। ভবিষ্য
দ্বাপর যুগে ডোণপুত্র অশ্ব্যামা বেদব্যাস হইবেন।"

এই অফাবিংশ বেদব্যাস মৎপুত্র কৃষ্ণদৈপায়ন অতীত হ**ইলে** বেদাদির প্রকৃতি নিত্য একাকর ব্রহ্মস্বরূপ ওস্কারমাত্র অবস্থিতি

<sup>\*</sup> সোমঃ শুলাপনস্কুন্মাৎ ইতি বা পাঠঃ।

<sup>†</sup> खाडूकर्त्या छरवन्नल देखि वा शाठी खत्रम्।

<sup>🛊</sup> এटका दबम्कडूध । देव कृटका देवद ाभनामियु हैकि व्यदमा भवेति ।

বৃহত্ত্বাদৃংহণত্বাচ্চ তছুকোত্যভিধীয়তে॥২১॥
প্রাণিবাস্থিতং নিত্যং ভূভুবিঃ স্বরিতীর্যাতে।
ক্ষান্যজ্ঃসামাথব্বাণং যথ তলৈ ব্রহ্মণে নমঃ॥২২॥
কাব্যঃ প্রমং গুহুং তলৈ স্ব্রহ্মণে নমঃ॥২৩॥
মহতঃ পরমং গুহুং তলৈ স্ব্রহ্মণে নমঃ॥২৩॥
আগাধাপারমক্ষয়ং জগৎসংমোহনালয়ম্।
সংপ্রকাশপ্রতিভাগং পুরুষার্থপ্রেগজনম্॥২৪॥
সাজ্যজ্ঞানবভাং নিষ্ঠা গভিঃ শমদমাত্মনাম্।
যথতদ্ব্যক্তমমূভং প্রক্তং ব্রহ্ম সাশ্বতম্॥২৫॥

করিবে। অপরিচ্ছিন্ন ব্রহ্মস্বরূপতা হেতু ও বেদাদির কারণতা হেতু এই ওন্ধার ব্রহ্ম শব্দে অভিহিত হইয়া থাকে 125 ভূর্লোক ভুনর্লোক ও স্বর্লোক, প্রণবরূপ ব্রহ্মতে অবস্থিতি করিতেছে। ওস্কারই ঋক্ যজু সাম ও অথব বেদস্ত্রপ, অতএব ওঙ্কারস্ত্রপ ব্দ্রকে নমস্কার।<sup>২২</sup> যিনি জগতের হৃষ্টি স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ, যিনি মহৎ হইতেও মহৎ ও পরম গুহা, সেই ওঙ্কারস্বরূপ পরম ব্রহ্মকে নমস্কার।<sup>২৬</sup> তিনি অগাধ অর্থাৎ কালাসুসারে আদান্তরহিত, তিনি অপার অর্থাৎ সর্ব্বগত, তাঁহার ক্ষয় নাই, তিনি জগতের সম্মোহন অর্থাৎ তমোগুণের আশ্রয়, তিনি সংকাশ (সত্ত্বপুণ) ও প্রবৃত্তি (রজোম্রণ) দারা জগতের ভোগ ও অপবর্গ রূপ প্রয়োজন সং-সাধন করিতেছেন। ১° তিনি সাম্বাদর্শনজ্ঞ ব্যক্তিদিগের প্রাপ্য জ্ঞানস্বরূপ, তিনি শম অর্থাৎ অন্তঃকরণ-ব্যাপারোপম, দম অর্থাৎ বাহ্যেক্রিয়-ব্যাপারোপম, তৎস্বভাবাপম ব্যক্তিদিগের গতি অর্থাৎ আত্ম-অনাত্ম-বিবেক-কারণ হইয়াছেন। তিনি অতীক্রিয়, তিনি অমৃত অর্থাৎ অবিনাশী, তিনি কার্য্যে প্রস্তু হইয়াও পরিণাম-রহিত নিত্য ব্রহ্ম ৷<sup>১৫</sup> তিনি বিশের আধার ও প্রকৃতি, তিনি স্বতঃ-

প্রধানমাত্মবানিশ্চ গুহাসত্ম্প শাস্তে।

অবিভাগং তথা শুক্লমক্ষরং বহুধাত্মকম্॥ ২৬॥
পরমত্রন্ধনে তথা নিত্যমেব নমো নমঃ।

যজপং বাস্তদেবদ্য পরমাত্মস্বরূপিণঃ ॥ ২৭॥

এতদুক্ষ ত্রিধাভেদমভেদমপি স প্রভুঃ।

সর্বভূতেমৃভেদোহসোঁ ভিদ্যতে ভিন্নবৃদ্ধিভিঃ॥ ২৮॥

স ঋঙাুয়ঃ সামময়ঃ স চাত্মা স মজুর্ময়ঃ †।

ঋগ্যজ্ঃসামসারাত্মা ‡ স এবাত্মা শারীরিণাম্॥ ২৯॥

স ভিদ্যতে বেদময়ঃ স বেদং ৪

সিদ্ধি অর্থাৎ, উৎপত্তি-রহিত, তিনি গুহা অর্থাৎ হাদয়-কন্দরে প্রকাশসান, তিনি অর্থণ্ড, তিনি দীপ্রিশালী ও মলিনভারহিত, তিনি ব্যয়শূন্য, বেদে তাঁহাকে নানা-উপাধি-বিশিষ্ট বলিয়া প্রকাশ করিয়া থাকে। ১৯ পরমাআস্বরূপ বাস্থদেশের যে রূপ সেই পরমার্র্রেকে নিত্য নমার্কার করি। ১৭ এই ওক্ষাররূপ ব্রহ্ম ভেদরহিত হইয়াও গুণত্রয় বিভাগ দ্বারা ভেদত্রয়ের ন্যায় প্রতীয়মান হইয়া থাকেন। সেই প্রভু অভিন্ন ভাবে সর্ব্ব ভূতে অবস্থান করিতেছেন, পরস্তু ভিন্ন ভিন্ন বুদ্ধি দ্বারা ভিন্ন ভিন্ন ব্যক্তির ন্যায় প্রতীয়মান হন। ১৮ তিনি খাক্বেদময়, তিনি সামবেদময়, তিনি যজুর্বেদময়, তিনি খাক্র, যজুই ও সামবেদের সারস্করূপ যে ওক্ষার, তৎস্বরূপ, তিনি বিদ্বিভাগকারীদিণ্যের আত্মান্ত্রপ, তিনি সমুদায় জীবের আত্মা স্বরূপ। ১৯ তিনি একমাত্র বেদময় হইয়াও বহুসঞ্খ্য-শাথাদি-

প্রমার্থয়য়পেণ ইতি বা পটিতব্যম্।

<sup>া</sup> সক্ৰান্তা স যজুম য় ইতি বা পাঠাম্।

<sup>🕏</sup> श्रात्यकुः नामाथन्ताचा इंडि वा अठेनीग्रम्।

<sup>্</sup>ণ ভেদম্ ইতি বা পঠ্যতাম।

করোতি ভেদৈর্বহুভিঃ সশাখম্।
শাখাপ্রণেতা স সমস্তশাখা
জ্ঞানস্বরূপো ভগবাননন্তঃ ॥ ৩০ ॥

ইতি ঐবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২° শে তৃতীয়ো ২ধ্যায়ঃ ।

ভেদে ভিন্ন ভিন্ন প্রকারে বিভক্ত হইয়া থাকেন। তিনিই বেদকে বছ শাখায় বিভক্ত করেন। তিনিই বেদের শাখাপ্রণেতা, তিনিই বেদের সমস্ত শাখাস্বরূপ। তিনি জ্ঞানস্বরূপ ভগবান্ ও অনস্ত ।°°

বিষ্ণুবাণ তৃতীয় অংশ তৃতীয় অধ্যায় সমাপ্ত।

# বিষ্ণুপুরাণম্। ভূতীয়াংশঃ।

#### চতুর্ধাধ্যায়ঃ।

আদ্যো বেদশ্চতুজ্পাদঃ শতসাহস্রসংমিতঃ।
ততো দশগুণঃ ক্রৎস্নো যজ্ঞোহয়ং সর্বকামধুক্॥ ১॥
ততোহত্র মৎস্কতো ব্যাসোহফাবিংশতিমেহন্তরে॥
বেদমেকং চতুজ্পাদং চতুর্দ্ধা ব্যভজৎ প্রভুঃ॥ ২॥
যথা তু তেন বৈ ব্যস্তা বেদব্যাসেন ধীমতা।
বেদাস্তথা সমস্তৈত্তির্ব্যস্তা ব্যাসেত্তধা ময়া॥ ৩॥
তদনেনৈব বেদানাং শাখাভেদান্ দ্বিজ্ঞোত্তম!।

পরাশর কহিলেন। ঈশ্বর হইতে প্রকাশিত আদি বেদ একলক্ষ-স্লোকাত্মক। এই বেদ চারি ভাগে বিভক্ত হইয়াছে। এই
চতুম্পাদ বেদ হইতেই সমস্ত কামনাসিদ্ধিকারী অগ্নিহোত্র প্রভৃতি
সমুদায় দশ যক্ত অনুষ্ঠিত হইয়া থাকে। এই অফাবিংশতিতন দ্বাপর যুগে মদীয়পুত্র প্রভাবশালী ব্যাস ক্ষেট্রপায়ন, চতুম্পাদ বেদকে একীভূত হইতে দেখিয়া পুনর্ফার চারি ভাগে বিভক্ত
করিলেন। বসই ধামান্ ক্ষেট্রপায়ন-নামক বেদব্যাস যেরূপে
বেদ বিভাগ করিয়াছেন, সেইরূপ অন্যান্য সমস্ত বেদব্যাস যুনিগণ এবং আমিও বেদ বিভাগ করিয়াছিলাম। ছিজোক্তম! এই
প্রকারে বেদের শাখাভেদ হয় এবং সমস্ত চতুর্বুগের লোকেরা

চতুরু গৈষু বিচিতান্ সমতেষ্বধারয়॥৪॥
রক্ষ দৈপায়নং বাংসং বিদ্ধি নারায়নং প্রভুম্ ।
কোহন্যো হি ভুবি † মৈত্রেয়! মহাভারতরুদ্ধবেৎ॥৫॥
তেন ব্যস্তা যথা বেদা মৎপুত্রেণ মহাত্মনা।
ঘাপরে হাত্র মৈত্রেয়! তক্ষে শৃণু যথার্থতঃ॥৬॥
ত্রহ্মণা চোদিতো বাংসো বেদান্ ব্যস্তং প্রচক্রমে।
তথা শিষ্যান্ স জ্ঞাহ চতুরো বেদপারগান্॥१॥
ঋথেদ শ্রাবকং ‡ পৈলং জ্ঞাহ স মহামুনিঃ।
বৈশম্পায়ননামানং যজুবেদ্স্য চাগ্রহীৎ॥৮॥
জৈমিনিং সামবেদ্স্য তথৈবাথর্কবেদ্বিৎ।
ত্র্মন্ত্র্ম্য শিষ্যোহভূদ্দেব্যাস্স্য ধীমতঃ॥৯॥

তদমুসারে যজ্ঞাদির অনুষ্ঠান করিয়া থাকেন। শৈতের ! এক্ষণ-কার বেদব্যাস ক্ষণ্টেপায়নকে সাক্ষাৎ প্রভু নারায়ণ বলিয়া বিবেচনা করিবে। তাহা না হইলে অন্য কোন্ ব্যক্তি মহাভারত প্রথমন করিতে পারে ? নৈতেয় ! বর্ত্তিমান দাপর যুগে মদীয় পুত্র মহাত্মা ব্যাস, যে রূপে বেদ বিভাগ করিয়াছেন, তাহা যথাযথ বলিতেছি, শ্রণ কর।

বেদব্যাস ব্রহ্মা কর্ত্বক আজ্ঞগু হইয়া বেদ বিভাগ করিতে আরম্ভ করেন। তিনি প্রথমতঃ বেদপারগ চারি জন শিষ্য গ্রহণ করিলেন। সেই মহামুনি পৈলকে ঋক্বেদের বিশম্পায়নকে যজুর্বেদের প এবং জৈমিনিকে সামবেদের শিষ্য করেন। অথর্ব-বেদ্জ সুমন্ত্ব সেই ধীমান্ বেদব্যাদের নিকট অথ্কবিদের শিষ্য

<sup>\*</sup> বিভুষ্ ইতি কেচিং পঠন্তি।

<sup>🛧</sup> কোংলেয়াণভি ভূবি ইভি বাুপঠ।

<sup>🛨</sup> अध्यमधाहरू म् हेडि वा अठेमी ग्रम् ।

রোমহর্ষণনামানং মহারুদ্ধিং মহামুনিম্।

সূতং জ্ঞাহ শিষ্যং স ইতিহাসপুরাণয়োঃ॥ ১০॥

এক আসীদ্যজুর্বেদক্তং চতুদ্ধা ব্যকপারৎ।

চাতুর্হোত্রমভূদ্যিশিংস্তেন যজ্ঞমধাকরোৎ॥ ১১॥

আধর্যাবং যজুর্ভিস্ত ঋণ্ভির্হোত্রং তথা মুনিঃ।

উদ্যোত্রং সামভিশ্বকে ব্রহ্মত্বাধ্বিভিঃ॥ ১২॥

ততঃ স ঋচমুদ্ধৃত্য ঋষেদং ক্রতবান্ মুনিঃ।

যজুংবি চ যজুর্বেদং সামবেদঞ্চ সামভিঃ॥ ১৩॥

রাজ্ঞস্ব্থব্ববেদেন স্ব্বক্র্মাণি স প্রভুঃ।

হইলেন। বনস্তর তিনি সৃতজাতীয় মহাবুদ্ধি মহামুনি রোম—
হর্ষণকে ইতিহাস ও পুরাণপাচের শিষ্য করিলেন। পুর্বে যজুরেদ অর্থাৎ আধ্বর্যাব-ক্রিয়া-প্রধান বেদ \* একপ্রকার ছিল। বেদব্যাস ঐ যজুঃপ্রধান বেদকে চারি ভাগ করিলেন। তাহাতে চাতুহোত্র † হইল। তিনি তদ্ধারা যজ্ঞানুষ্ঠানের বিধি করিলেন। প এই
চাতুর্হোত্রের মধ্যে তিনি যজুর্বেদ দারা আধ্বর্যাব, অক্বেদ, দারা
হোত্র, সামবেদ দারা উদ্বোত্র ও অর্থক্বেদ দারা ব্রহ্মন্থ সংস্থাপন
করেন। শ অনস্তর তিনি অক্ সমুদায় উদ্ধার করিয়া অক্বেদসংহিতা, যজুঃ সমুদায় উদ্ধার করিয়া যজুর্বেদসংহিতা, ও গীতা—
আক সাম সমুদায় উদ্ধার করিয়া সামবেদসংহিতা প্রণয়ন করিলেন। তিনি অর্থক্বিদে দারা যথাবিধানে ব্রহ্মন্থ আপ্রবিদ এবং ক্ষিত্রাদ্রের শাস্তি পুষ্টিপ্রভৃতি সমুদায় টেবন
কর্ম ঐ অর্থক্বিদেদ দারাই করাইলেন। শ

<sup>\*</sup> ৰায়পুরাণে কবিত আছে খে, যজুরে দে যে সমুদার শাখা আছে, তদ্মারা যজ্ঞা-সুপ্তান হইরা থাকে। যাজন হেতু ভাহার নাম যজুর্বেদ হইয়াছে। ১১

<sup>্ 1</sup> চারিজন ঋষিক্ ও চারিজন হোতা কর্তৃক্ অসুষ্ঠিত কর্মের নাম চাতুর্ছোত্ত। ১১

কারয়ামাস মৈতের! ব্রহ্মত্বশ্ব যথান্থিতি ॥ ১৪ ॥

মোহয়মেকে। মহাবেদ-তরুন্তেন পৃথক্রতঃ।

চতুর্দ্ধা তু ততো জাতং\* বেদপাদপকানন্য ॥ ১৫ ॥

বিভেদ প্রথমং বিপ্র! পৈল-ঋর্মেদ-পাদপন্।

ইন্দ্রথমতয়ে প্রাদাদ্ বাক্ষলায় চ সংহিতে ॥ ১৬ ॥

চতুর্দ্ধা স বিভেদাথ বাক্ষলিদ্ধি জ! সংহিতাম্।

বৌধ্যাদিভ্যো দদৌ তাস্ত শিষ্যেভ্যঃ স মহামুনিঃ ॥১৭॥

বৌধ্যামিমাঠয়ৌ ভদ্দ্যাজ্ঞবক্ষ্যপরাশরৌ ॥

প্রতিশাথাস্ত শাখায়াস্তম্যাস্তে † জগৃত্মুনে!॥ ১৮ ॥

ইন্দ্রথমতিরেকাংতু সংহিতাং স্বস্তুতং ততঃ।

মাণ্ডুকেয়ং মহাত্মানং ‡ মৈতেয়াধ্যাপয়ৎ তদা ॥ ১৯ ॥

এই রূপে বেদরূপ মহার্ক্ষ বেদব্যাস কর্তৃক বিভক্ত হইয়া বেদ-রুক্ষের কানন রূপে বিস্তার্গ হইল। ° °

ব্রহ্মন্! প্রথমতঃ পৈল ঝর্থেদরূপ রক্ষ দুই ভাগে বিভক্ত করিয়া ইব্রপ্রমতি ও বাহনে নামক শিষ্যদ্বাকে দুই সংহিত। অধ্যান করাইলেন। ' বিজ ! মহামুনি বাহ্মলিও গুরুর নিকট অধীত ঋর্পেদ-সংহিতার প্রথম শাখা চারি ভাগ করিয়া বৌধ্য প্রভৃতি শিষ্যগণকে দিলেন । ' বৌধ্য, আগ্রিমাট্র, যাজ্ঞবল্কা ও পরশেরনামক শিষ্যচতু্টয়ও উক্ত শাখার প্রত্যেক প্রশাখা অধ্যয়ন করিলেন। 'দ

দৈত্রেয়! ইন্দ্রপ্রমতি যে সংহিতা এহণ করিয়াছিলেন, তিনি তাহার একাংশ স্থীয় পুত্র মহাত্মা মাণ্ডকেয়কে অধ্যয়ন করাই-

চতুদ্ধাথ ততো জাত্ম ইত্পরপুঁওক্স্পাঠঃ।

<sup>+</sup> बाबाग्राख्याद एड इंडि कहिर शांतेः।

<sup>🛊</sup> मन्टकग्रः महासामम् हेजि क्विंटि शहेखि।

তস্য শিষ্যপ্রশিষ্যভাঃ পুত্রশিষ্যান্ ক্রমান্দ্রযো ।
বেদমিত্রস্ত সাকল্পঃ\* সংহিতাং তামধীতবান্ ॥ ২০ ॥
চকার সংহিতাঃ পঞ্চ শিষ্যেভাঃ প্রদর্গে চ তাঃ ।
তস্য শিষ্যাস্ত যে পঞ্চ তেষাং নামানি মে শৃণু ॥ ২১ ॥
মুদ্দালো গালবদৈচব † বাৎস্যঃ শালীয় এব চ ।
শিশিরঃ পঞ্চমশ্চাসীয়েত্রেয় ! স্থমহামুনিঃ ॥ ২২ ॥
সংহিতাত্রিতয়ঞ্চত্রে শাকপুর্ণিরপেতরম্।
নিরুক্তমকরোৎতদ্বৎ চতুর্থং মুনিসভ্রম ! ॥ ২৩ ॥
ক্রোঞ্চো বেতালিকস্তদ্বৎ ‡ বলাক্ষ্য মহাম্তিঃ ।

লেন। ' পৈল গৃহীত ঋগেদসংহিতা এই রূপে শিষ্য প্রশিষ্যে ও পুরাশিষ্যে সঞ্চারিত হইল। বেদমিত্রনামক সাকল্প, উক্ত ইন্দ্রপ্রতির সংহিতা অধ্যয়ন করিলেন। ' পরে তিনি ঐ শাখা হইতে পাঁচখানি সংহিতা করিয়া পাঁচ জন শিষ্যকৈ পৃথক পৃথক অধ্যয়ন করাইলেন। ইঁহার পঞ্চ শিষ্যের নাম বলিতেছি, অবণ কর। ' মুদ্দাল, গালব, বাৎস্য, শালীয় ও শিশির। এই পাঁচ জন মহর্ষি বেদমিত্রের শিষ্য। ' ইন্দ্রপ্রশাতির দ্বিতীয় শিষ্য শাকপূর্ণি অধীত ঋক্ বিভাগ করিয়া তিনটী সংহিতা করিলেন। পরে তিনি বেদ-শন্ধ্য-নির্বাচন-রূপ একখানি নিরুক্ত প্রশ্যন করেন। ' ক্রোঞ্চ, বেতালিক ও মহামতি বলাক এই তিন মহর্ষি উক্ত সংহিতাত্রয় অধ্যয়ন করিলেন। যিনি চতুর্থ অর্থাৎ যিনি নিরুক্ত অধ্যয়ন করেন, তিনি নিরুক্ত কহং-নামে বিখ্যাত হইলেন।

<sup>\*</sup> বেদমিত্রস্ত লাকল্য ইতি পুস্তকান্তরস্য পাঠ:

क् भूम्मारमा त्याचनरेन्छव इंडि वा भार्रः।

<sup>🛨</sup> कोटका देवजालकश्वय इंजि वा भाग्रेम ।

নিরুক্তরুচতুর্থোহভূৎ বেদবেদান্দপারগঃ॥ ২৪॥ ইত্যেতাঃ প্রতিশাখাভ্যোহপারুশাখা দ্বিজ্ঞান্তম!। বান্ধলিশ্চাপরান্তিত্রঃ সংহিতা রুতবান্ দ্বিজ!॥ ২৫॥ শিষ্যঃ কালায়নির্গার্গুতীয়শ্চ কথাজ্বঃ। ইত্যেতে বছধা প্রোক্তাঃ\* সংহিতা থৈঃ প্রবর্ত্তিয়ঃ॥ ২৬॥

# ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২° শে চতুর্থো ২ ধ্যায়ঃ।

ইনি বেদ ও বেদাকে উক্তম পারদর্শী ছিলেন। ১° ব্রহ্মন্ ! এই রূপে বেদরকের শাখা হইতে প্রশাখা ও অনুশাখা নির্গত হইতে লাগিল।

ছিজ! বাস্কলিও অধীত ৠথেদ হইতে অপর তিনটী সংহিত।
করিলেন। বাং তিনি কালায়নি, গার্গ্য কথাজন নামক তিন জন
শিষ্যকে ঐ তিন সংহিতা অধ্যয়ন করাইলেন। এই রূপে অনেক
সহর্ষি অনেক প্রকারে বেদের সংহিতা প্রবর্ত্তিত করিয়াছেন। বাং

বিষ্ণুপুরাণ তৃতীয় অংশ শাখা-ভেদ-নামক চতুর্থ অধ্যায় সমাপ্ত।

<sup>\*</sup> ইভে;তে বছর্চ: এোকা ইভি পাঠান্তরম্।

# বিষ্ণুপুরাণম্ ।

তৃতীয়াংশ: । পঞ্চমাঽধায়ঃ।

#### পরাশর উবাচ।

যজুর্বেদতরোঃ শাখাঃ সপ্তবিংশয়হামতিঃ।
বৈশস্পায়ননামানো ব্যাসশিষ্যশ্চকার বৈ ॥ ১ ॥
শিষ্যেভ্যঃ প্রদদৌ তাশ্চ জগৃহস্তে২প্যন্ত্রক্রমাৎ।
যাজ্ঞবল্ক্যস্ত তদ্যাভূৎ ব্রহ্মরাভস্কতো দ্বিজঃ ॥
শিষ্যঃ পরমধর্মজ্যো গুরুর্ভিপরঃ দদা ॥ ২ ॥
ঋষির্যোহদ্য মহামেরৌ সমাজে নাগমিষ্যতি।

পরাশর কহিলেন। মহামতি ব্যাসশিষ্য বৈশশ্পায়ন, যজুর্বেদরূপ রক্ষের সপ্তবিংশতি শাখা \* প্রকাশ করিলেন। ' তিনি
সেই সমুদায় শাখা ভিন্ন ভিন্ন শিষ্যকে প্রদান করেন। শিষ্যগণও
যথাক্রমে উহা গ্রহণ করিলেন। ব্রহ্মাছলেন। এই শিষ্য সর্বন্দ।
শুরুশুন্দ্রমা করিতেন। '

ব্ৰহ্মন্! (একদা ঋষিগণের একটা সমান্ধাধিবেশনের আবশ্যকতা হওয়াতে) সমুদায় ঋষি পূর্ব্বে প্রতিজ্ঞা করেন যে, মহামেরুনামক

<sup>\*</sup> বজুর্বেদের প্রধান শাখাই সপ্তবিংশতিস্থা। বলাগুপুরাণে কথিত আছে, আপদ্ব, অধ্বযুর্বি একণত এক শাখা প্রকাশ করিয়াছেন॥ ১॥

তস্য বৈ সপ্তরাত্তাত্ত্ ব্রহ্মহত্যা ভবিষ্যতি॥ ৩॥
পূর্ব্বমেবং মুনিগণৈঃ সময়েহিভূৎ ক্তো দ্বিজ!।
বৈশম্পায়ন একস্ত তং ব্যতিক্রান্তবাংস্তদা॥ ৪॥
স্বস্রীয়ং বালকং সোহথ পদাস্পৃষ্ঠমঘাতয়ৎ॥ ৫॥
শিষ্যানাহ চ ভোঃ শিষ্যাঃ! ব্রহ্মহত্যাপহং ব্রত্ম।
চরধ্বং মৎক্রতে সর্ব্বেন বিচার্যামিদং তথা॥ ৬॥
অথাহ যাজ্ঞবলক্যস্তং কিমেভির্ভগবন্ দ্বিটিলঃ।
ক্রেশিতৈরশ্পতেজোভিশ্চরিষ্যেইহমিদং ব্রহ্ম॥ ৭।
ততঃ ক্রুদ্ধো গুরুঃ প্রাহ্ যাজ্ঞবলক্যং মহামতিঃ।
মুচ্যতাং যৎ স্বয়াধীতং মত্যে বিপ্রাব্যন্যক!॥ ৮॥

স্থানে প্রতিষ্ঠিত সমাজের অদ্যকার অধিবেশনে যে ঋষি উপস্থিত না হইবেন, তিনি সপ্ত রাত্রির মধ্যে ব্রহ্মহত্যাপতিকে পাত্রুকা হইবেন। (অনন্তর সকল ঋষি সমাজে গমন করিলেন) কেবল একাকী বৈশস্পায়ন উপস্থিত হইতে পারিলেন না, স্কুতরাং তাঁহার এই নিয়ম অতিক্রম করা হইল। পরে তিনি ঐ শাপ বশত আপনার ভাগিনেয় বালককে মাড়াইয়া বিনাশ করিলেন। তথন তিনি শিষ্যগণকে কহিলেন, শিষ্যগণ ! তোমরা সকলে আমার নিমিন্ত ব্রহ্ম-হত্যা-কনিত-পাপ-নাশক ব্রত অনুষ্ঠান কর, বিচার করিও না এই কথা শুনিয়া ষাজ্ঞবল্ক্য কহিলেন, ভগবন্! এই সকল ব্রাহ্মণ অধিক তেজস্বী নহেন, অতএব ই হাদিগকে রথা ক্রেশ দিবার আবশ্যকতা নাই। আমিই একাকী এই ব্রভাচরণ করিব। মহামতি শুরু বৈশস্পায়ন (এই কথা শ্রেবণ মাত্র) ক্রেক্ক হুইয়া যাজ্ঞবল্ক্যকে কহিলেন, রে ব্রাহ্মণাব্যাননাকারিন্! তুমি আমার নিকট যাহা অধ্যয়ন করিয়াছ, সমুদায় পরিত্যাগ কর। দ

নিস্তেজসো বদস্যেতান্ যস্ত্র বান্ধাপুক্রবান্।
তেন শিব্যেণ নার্থোইস্তি মমাজ্ঞাভক্রকারিণা \* ॥ ৯ ॥
যাজ্ঞ্বল্ডাস্ত ও প্রাহ্ ভক্ত্যৈত তে ময়োদিভম্।
মমাপ্যলং অয়াধীতং যন্ময়া তদিদং দ্বিক ! † ॥ ১০ ॥
প্রাশ্র উবাচ ।

ইত্যুক্ত্বা রুধিরাক্তানি সরূপাণি যজুংষি সঃ। ছর্দিয়িত্বা দদৌ তস্মৈ যথৌ চ স্বেচ্ছয়া মুনিঃ॥ ১১॥ যজুংব্যথ বিস্ফানি যাজ্ঞবল্ক্যেন বৈ দ্বিজাঃ। জগৃহস্তিত্তিরা ভূত্বা ‡ তৈতিরীয়াস্ত তে ততঃ॥ ১২॥

(তোমার এত দূর আক্ষান্ধা!) যে, তুমি এই সকল প্রধান ব্রাহ্মণকৈ নিজেজ বলিতেছ! যে ব্যক্তি আমার আজ্ঞা লজ্ঞ্বন করে, এরপ শিষ্যে আমার প্রয়োজন নাই। অনস্তর ষাজ্ঞবল্কা কহিলেন, ব্রহ্মন্! আপনার প্রতি ভক্তি প্রযুক্তই আমি আপনাকে ঈছশ কথা কহিয়াছি। এক্ষণে আমারও আপনকার মত গুরুতে প্রয়োজন নাই। আপনকার নিকট আমি যহো অধ্যয়ন করিয়াছি, এই (উদ্গারণ করিয়া দিতেছি) লউন। "

পরাশর কহিলেন। অনস্তর মহর্ষি বাজ্ঞবল্ক্য এই কথা বলিয়া ক্রবিরলিপ্ত সাকার যজুর্বেদ উদ্গীরণ করিয়া দিয়া যথাভিল্যিত স্থানে গমন করিলেন। ' যাজ্ঞবল্ক্য যখন যজুর্বেদ পরিত্যাগ করেন, তখন ব্রাহ্মণেরা তিন্তির পক্ষা হইয়া তাহা গ্রহণ করিতে লাগিলেন। এই জন্য উক্ত যজুর্বেদ-শাখা তৈন্তিরীয় নামে বিখ্যাত হইয়াছে। '

<sup>\*</sup> সমাজ্ঞাভদকারিণা ইভঃপরে পঠান্ত।

<sup>🕇</sup> তৰ্মা ভদিদং দ্বিজ ! ইতি বা পাঠ: ।

<sup>🛊</sup> স্বপৃষ্ঠিতিবীপূহা ইতি অন্যে পঠছি।

বৃদ্ধাব প্রয়তঃ সুর্যাং যজুংষ্যভিলষংস্ততঃ ॥ ১৪ ॥

যাজ্ঞবল্ক্যাইপি মৈত্রেয় ! প্রাণায়াম-পরায়ণঃ ।

সুষ্টাব প্রয়তঃ সুর্যাং যজুংষ্যভিলষংস্ততঃ ॥ ১৪ ॥

যাজ্ঞবল্ক্য উবাচ।

নমঃ দবিত্রে দ্বারায় বিমুক্তেঃ সিততেজদে।
ঋগ্যজুঃসামভূতার ত্ররীধামবতে নমঃ॥ ১৫॥
নমোহ্যীযোমভূতার ‡ জগতঃ কারণাত্মনে।
ভাক্ষরায় পরং ভেজঃ সৌযুমমুক্র বিভ্রতে॥ ১৬॥
কলা-কাষ্ঠা-নিমেধাদি-কাল-জ্ঞানাত্মনে নমঃ।

মুনিশ্রেষ্ঠ ! যাঁহারা শুরুর আজ্ঞানুসারে ব্রহ্মহত্যা-জনিত-পাপনাশক ব্রত আচরণ করিয়াছিলেন, আচরণ হেতু তাঁহাদের অবলব্বিত শাখা চরকাধার্মু নামে খ্যাত হইল। ° মৈত্রেয় ! অনন্তর
যাজ্ঞান্ক্যও বজুর্দি পাইবার অভিলাষে প্রাণায়ামপূর্বক প্রযত
হইয়া সুর্যোর স্তব করিতে লাগিলেন। °

যাজ্ঞবন্দ্য কহিলেন। মুজ্জির দ্বারস্থরপ শুক্লতেজাঃ সবিতাকে নমস্কার। তারী অর্থাৎ বেদ ঘাঁহার তেজঃস্বরূপ সেই ঋক্
যজুঃ ও সামময় সূর্য্যকে নমস্কার। ° যিনি অগ্লীযোমীয় যাগস্বরূপ
এবং আতপ র্ফি দ্বারা জগতের কারণস্বরূপ, যিনি নিশাকরের
পুঞ্জির মুর্ম্নামক পরম তেজ ধারণ করেন, সেই ভাস্করকে নমস্কার। ° যিনি কলা কাঠা নিমেষ প্রভৃতি কাল্জ্ঞানের কারণ,
যিনি সকলের চিন্তনীয়, যিনি পরম অবায় ব্রহ্ম, সেই বিফ্রুপী

<sup>\*</sup> বৰহত্যাবতং ভীৰ্ণমু ইতি কচিৎ পাঠ: ।

<sup>🛧</sup> চক্রুরধর্যাবত্তে তু চরণাৰ নিসত্যা: ইভি বা পাঠ:।

<sup>🗅</sup> নমোৎগিলোমভূতায় ইত্যপরে পঠন্তি।

ধ্যেয়ায় বিষ্ণুরূপায় পরমাক্ষররূপিণে ॥ ১৭ ॥
বিভর্ত্তি যঃ সুরগণান্ আপ্যায্যেন্দুং স্বরশ্মিভিঃ।
স্থাম্তেন চ পিতৄন তলৈ তৃপ্তাত্মনে নমঃ \* ॥ ১৮ ॥
হিমায়ু ঘর্মার্ফীনাং কর্তা হর্তা চ যঃ প্রভুঃ।
তলৈ ত্রিকালরূপায় নমঃ স্থ্যায় বেধনে ॥ ১৯ ॥
যো হত্তি তিমিরাণ্যেকো জগতোহ্স্য জগৎপতিঃ।
সত্রধামধরে দেবো † নমস্তলৈ বিবস্বতে ॥ ২০ ॥
সহকর্মযোগ্যে ন জনো নৈবাপঃ শৌচকারণম্।
যিমান্ত্রদিতে তলৈ নমো দেবায় বেধনে ‡ ॥ ২১ ॥
স্পৃটো যদংশুভির্লোকঃ ক্রিয়াযোগ্যাইভিজায়তে।

<sup>\*</sup> মমোধগিলোমভূতার পর্বাসন্থিকরার চ, ইডাধিকঃ পাঠে। বশাকরক্ষিত-পুত্তক এব সভাতে।

<sup>🛨</sup> সভাধানধরো দেব ইভি বা পটিভবাম্।

<sup>় 📫</sup> নমো দেবায় শাখতে ইতি বা পাঠাম্।

ইত্যেবমাদিভিস্তেন স্তুয়মানঃ স্তবৈরবিঃ। বাজিরূপধরঃ প্রাহ ব্রিয়তামিতি বাঞ্চিত্য্ ‡॥২৫॥ যাজ্ঞবল্ক্যস্তদা প্রাহ প্রণিপত্য দিবাকরম্। যজূংবি তানি মে দেহি যানি সন্তিন মে গুরো॥২৬

জাত্মা দেই ভাস্করকে নমস্কার। <sup>১২</sup> সবিতাকে নমস্কার, সূর্য্যকে নমস্কার, ভাস্করকে নমস্কার, বিবস্থান্কে নমস্কার, দেবগণের আণি আদিতাকে নমস্কার। <sup>১৯</sup> যাঁহার চক্ষুঃ সমুদায় ভুবন অবলোকন করিতেছে, ঘাঁহার রথ হিরপায় অর্থাৎ ভোকোময়, যাঁহার অমৃত্যায়ী বেদক্ষণ বাহন সর্মদা ধাবমান হইতেছে, ( ঘাঁহার কিরণ নিরস্তর জগতের রস আকর্ষণ করিতেছে) সেই মার্ভিথকে নমস্কার। <sup>১৯</sup>

পরাশর কহিলেন। ভগবান্রবি, যাজ্ঞবল্কা কর্ত্বক এইর প নানাপ্রকার স্তুতি দারা স্তৃত্মান হইয়া বাজিরপ ধারণপূর্বক কহি-লেন, (মহর্ষে! আমি তোমার স্তবে পরিতৃষ্ট হইয়াছি, একণে) অভিল্যিত বর প্রার্থনা কর। ১৫ তথান যাজ্ঞবল্কা সেই দিবাকরকে

<sup>\*</sup> হিরপুর্ণ বথা যদ। ইতি বা পঠনীয়দ্।

<sup>†</sup> বহন্তি ভূৰনালোকে চক্ষত্তম্ইতি বা পঠ্যভাম.।

<sup>‡</sup> বিষ্তাদভিবাঞ্ভিম্ ইতি আনো পঠতি।

# পরাশর উবাচ। বিষ্ণুত্রে দদে তথৈ যজুংষি ভগবান্ রবিঃ। অযাত্যামসংজ্ঞানি যানি বেতি ন তদ্গুরুঃ॥ ২৭॥ যজুংষি যৈরধীতানি তানি বিপ্রৈদ্ধি জোত্তম!। বাজিনস্তে সমাখ্যাতাঃ দুর্যাশ্বঃ সোহভবদ্বতঃ॥ ২৮॥ শাখাভেদাস্ত তেষাং বৈ দশ পঞ্চ চ বাজিনাম্। কাণ্যান্যান্ত মহাভাগ! যাজ্ঞবন্ক্যপ্রবর্ত্তিতাঃ॥ ২৯॥ ইতি শ্রীবিষ্ণুব্রাণে তৃতীয়েহ ° শো বাজিশাখা

নমস্কারপূর্বক কহিলেন, (ভগগন্!) আমার গুরুও যাহা জ্ঞাত হইতে পারেন নাই, ঈদ্ভশ যজুর্বেদ আমাকে দান কর। ১°

নাম পঞ্জোইধ্যায়ঃ।

পরাশর কহিলেন। ভগবান্রবি যাজ্ঞবল্কা কর্তৃক এইরূপ প্রার্থিত হইয়া যাহা যাজ্ঞবল্কা-শুরু বৈশম্পায়নও জ্ঞাত নহেন ভাদৃশ অ্যাত-যাম-নামক \* যকুর্বেদ তাঁহাকে দান করিলেন। ১৭

দ্বিজ্ঞেষ্ঠ! যে সকল ব্রাহ্মণ এই অযাত-যাম-নামক যজুর্বেদ্
অধ্যয়ন করেন, তাঁহারা বাজিরপ-সূর্য্য-প্রোক্ত সংহিতাধ্যায়িতা
হেত্ বাজিশন্দে অভিহিত হইয়া থাকেন, কারণ এই বেদ্দান
করিবার নিমিক্ত ভগবান্ প্রভাকর স্বয়ং বাজিরূপ ধারণ করিয়াছিলেন। মহাভাগ! এই বাজি-প্রোক্ত যজুর্বেদের কাণুপ্রভৃতি
ভিন্ন ভিন্ন পঞ্চদশ শাখা আছে। এই সমুদায় শাখা মহর্ষি যাজ্ঞবল্ক্য হইভেই প্রবর্ত্তিত হইয়াছে। ম

বিষ্ণুপুরাণ তৃতীয় অংশ বাজি-শাখা-প্রবর্তন-নামক পঞ্চম অধ্যায় সমাপ্ত।

<sup>🛊</sup> মাহ¦ অন্য কেই অভ্যাস করে নাই, ভাহার নাম অবাত্যাম॥ ২৭॥

# विक्यूश्रवागम् ।

তৃতীয়াংশঃ। যঠো২ধ্যায়ঃ।

#### পরাশর উবাচ।

সামবেদ-তরোঃ শাখাঃ ব্যাসশিষ্যঃ সজৈমিনিঃ।
ক্রমেণ যেন মৈত্রেয়! বিভেদ শৃণু তল্পম ॥ ১ ॥
স্থমন্তক্তম্য পুত্রোহভূৎ স্থকর্মাস্যাপ্যভূৎ স্থতঃ।
অধীতবন্তাবেকৈকাং সংহিতাং তৌ মহামুনী ॥ ২ ॥
সাহস্রং সংহিতাভেদং স্থকর্মা তৎস্পতন্ততঃ।
চকার তঞ্চ তৎচ্ছিয়ো জগৃহাতে মহামতী ॥ ৩ ॥
হিরণ্নোভঃ কৌশল্যঃ পৌষ্পিঞ্জিন্চ দ্বিজোত্ম ! \* ।

পরাশর কহিলেন। মৈত্রেয় ! ব্যাসশিষ্য জৈমিনি যে প্রকারে
সামবেদরূপ রক্ষের শাখা বিভাগ করিয়াছেন, তাহা (বলিতেছি)
প্রবণ কর। কৈমিনির স্থমস্ক নামে এক পুত্র ও স্থকর্মা নামে
এক পৌত্র ছিলেন। মহামুনি এই দুই জনকে সামবেদের এক
এক শাখা অধ্যয়ন করাইলেন। স্থমস্কপুত্র সুকর্মা যে সামবেদসংহিতা অধ্যয়ন করেন, তাহা ক্রমশং সহস্র শাখায় বিভক্ত হই—
য়াছে। এ স্থকর্মা প্রথমতঃ উক্তম বুদ্ধিমান্ দুই জন ছাত্র গ্রহণ
করিলেন। এই দুই জন ছাত্রের নাম কৌশলা হিরণানাভ

<sup>\*</sup> পে:লিপ অশ্ব ধিজোক্তম ইতি বশাক্র ক্ষিতপুস্কক্ষ্য পাঠ:

উদীচ্য-সামগাঃ শিষান্তেভ্যঃ পঞ্চদশ স্তাঃ ॥ ৪ ॥
হিরণ্যনাভাৎতাবত্যঃ সংহিতা যৈদ্ধি জোত্তৈয়ঃ ।
গৃহীভান্তেহপি চোচ্যন্তে পণ্ডিতৈঃ প্রাচ্যসামগাঃ ॥ ৫ ॥
লোকান্দিঃ কুথুমিন্চেব কুসীদির্লাক্ষলিন্তথা \* ।
পৌশিঞ্জিশিষ্যান্তন্তেদৈঃ সংহিতা বহুলীকৃতাঃ ॥ ৬ ॥
হিরণ্যনাভশিষ্যন্চ চতুর্বিংশতিসংহিতাঃ ।
প্রোবাচ কৃতিনামাসো শিষ্যেভ্যঃ স মহামতিঃ ॥ ৭ ॥
তৈশ্চাপি সামনেদোহসো শাখাভিবহুলীকৃতঃ ॥ ৮ ॥
অথর্বাণামখো বক্ষ্যে সংহিতানাং সমুক্ষয়ম্ ।
অথর্ববিদং স মুনিঃ সুমন্তর্মিভদ্যুতিঃ ॥ ৯ ॥

ও পৌজিঞ্জি। দিজশ্রেষ্ঠ ! হিরণ নাডের পঞ্চদশস্থা শিষ্য ছিলেন। এই পঞ্চদশ শিষ্য হইতে ।ঞ্চদশ সংহিতা হইয়াছে। ই হারা উদীচ্য সামগ নামে বিখ্যাত । এইরূপ ঐ হিরণ্যনাভের অপর পঞ্চদশ শিষ্য ছিলেন। ঐ শিষ্যেরাও পঞ্চদশ সংহিতা গ্রহণ করেন। পশুতেরা এই পঞ্চদশ শিষ্যকে প্রাচ্য সামগ্র বিলয়। নির্দেশ করিয়া থাকেন।

লোকাক্ষি, কুথুমি, কুসীদি ও লাক্ষলি, ইঁহারা পৌষ্পিঞ্জির শিষা। ইঁহাদের হইতে ভিন্ন ভিন্ন সংহিত! হইয়াছে এবং ইঁহাদের শিষ্যেরা বহুসঞ্চা সংহিতা করিয়াছেন। কৈতি নামে হিরণ্যনাভের এক জন মহাবুদ্ধিমান্ শিষা ছিলেন। তিনি চতুর্বিংশতি শিষ্যকে চতুর্বিংশতি সংহিতা বলেন। কৃতির এই সকল শিষ্য হইতেও সামবেদের অনেক শাখার বিস্তার হয়।

এकर्ण अर्थस्टराम् त भाषा मकल वाक कति। अभीम-मीश्व-

<sup>্</sup>কুচো দিলাললিভথ। ইতি পাঠাবরম্

শিষ্যমধ্যপিয়ামাস কবন্ধং সোহপি তদ্ দ্বিধা।
ক্ষত্বাতু দেবদর্শায় তথা পথ্যায় দত্তবান্॥ ১০॥
দেবদর্শন্য শিষ্যাস্ত মৌদোনা ব্রহ্মবলিস্তথা।
শৌক্রায়নিঃ \* পিপ্পলাদস্তথান্যো মুনিসন্তম!॥ ১১॥
পথ্যস্যাপি ব্রয়ঃ শিষ্যাঃ ক্রতা হৈছি জ ! সংহিতাঃ।
জাজলিঃ কুমুদাদিশ্চ তৃতীয়ঃ শৌনকো দ্বিজঃ॥ ১২॥
শৌনকস্ত দ্বিধা কৃত্বা দদাবেকাস্ত বজবে।
দ্বিতীয়াং সংহিতাং প্রাদাৎ সৈম্ববায়নসংজ্ঞিনে †॥১৩॥
দৈম্ববা মুপ্তকেশাশ্চ ভিন্না বেদা দ্বিধা পুনঃ।
নক্ষত্রকপ্রেণা বেদানাং সংহিতানাং তথৈব চ॥ ১৪॥
চতুর্থঃ স্যাদাক্ষিরসঃ শান্তিকপ্রশন্ত পঞ্চমঃ।

শালী মহর্ষি সুমন্ত্র, কবন্ধনামক শিষ্যকে অথর্মবেদ অধ্যয়ন করাই-লেন। কবন্ধও অথর্মবেদকে দুই ভাগ করিয়া দেবদর্শ ও পথ্য নামক দুই জন শিষ্যকে দিলেন। ' মৌদা, ব্রহ্মবলি, শৌজায়নিও পিঞ্চালাদ, ই হারা দেবদর্শের শিষ্য হন। ' পথ্যের তিনটী শিষ্য—আজলি, কুমুদাদি ও শৌনক। পথ্য এই তিন শিষ্যকে পৃথক্ পৃথক্ সংহিতাত্রয় দান করেন। ' শৌনক আপনার অধীত সংহিতা দুই ভাগ করিয়া একটা শাখা বক্তকে ও একটা শাখা বৈদ্ধবায়নকে অধ্যয়ন করাইলেন। ' বৈদ্ধব অর্থাৎ সৈম্ববায়ন-শিষ্য, মুঞ্জকেশ অর্থাৎ বক্তর শিষ্য, ই হারা স্ব সংহিতা দুই দুই শাখায় বিভক্ত করিলেন। নক্ষত্রকণ্যে, বেদকণ্য, সংহিতা-

পৌক্তার্মিরিভি কেচিৎ পঠন্তি।

<sup>🕆</sup> भोधवाग्रनमः क्रिट्स ३ जि वा भारेः

শ্রেষ্ঠান্ত্র থর্বনামেতে সংহিতানাং বিকপ্পকাঃ॥ ১৫॥
আখ্যানৈন্চাপু:পাখ্যানৈর্গাথাতিঃ কম্পশুদ্ধিতিঃ।
পুরাণসংহিতাং চক্রে পুরাণার্থবিশারদঃ॥ ১৬॥
প্রথ্যাতো ব্যাসশিষ্যোহভূৎ সূতো বৈ রোমহর্ষণঃ।
পুরাণসংহিতাং তবৈম দদৌ ব্যাসো মহামুনিঃ॥ ১৭॥
স্থমতিশ্চাঘিবর্চাশ্চ মিত্রমুঃ শাংশপায়নঃ \*।

কিপা, `° আ†ঙ্গিরসকিপা ও শ†স্তিকিপা,↑এই পাঁচ অংশ, সংহিত†-সমুদ†মের বিকিপাক ও অথর্কবেদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ। °°

অনন্তর পুরাণার্থ-বিশারদ ভগবান্ বেদবাাস, আখ্যান, উপাথান, গাণা ও কল্পগুজির ‡ সহিত পুরাণসংহিতা প্রণয়ন করিলেন। ত বেদবাসের অপর এক জন শিষ্য ছিলেন। তিনি
সূতজাতীয় § ও রোমহর্ষণ নামে বিখ্যাত। ॥ মহামুনি ব্যাস তাঁহাকে
পুরাণসংহিতা অধ্যয়ন করাইলেন। ত লোমহর্ষণের ছয় জন শিষ্য
ছিলেন। তাঁহাদের নাম—স্থমতি, অগ্নিবর্চা, মিত্রয়ু, শাংশ-

<sup>\*</sup> সাংশপায়ন ইত্যপি পাঠঃ।

<sup>♠</sup> নক্ষত্রকল্পে নক্ষত্রপুজার বিধি আছে। বেদকল্পে বৈতালিক ব্রক্ষ প্রভৃতিব
বিববণ রহিয়াছে। সংহিতাকল্পে সংহিতার বিবরণ আছে। আজিরসকল্পে
অভিচার বিধি নিবন্ধ রহিয়াছে। শাস্তিকল্পে অশ্বগঞ্চাদির অন্টাদশ মহাশাস্ত্যাদি
বিধি আছে॥ > ৫॥

<sup>‡</sup> আগ্যান অগাৎ প্রধান বর্ণনীয় রাজানির চবিত। উপাধ্যান অর্থাৎ প্রসল ক্রমে উপস্থিত ব্যক্তিবিলেষের বিবরণ। নাথা অর্থাৎ ব্যন্যীতা পিতৃনীতা পৃথী-নীতা প্রভৃতি। করুত্তি অর্থাৎ বারাহাদি কল্পনির। ১৯॥

<sup>§</sup> বায়পুরাবে পুডজাতির উৎপাত্তবিবরণ কথিত হইয়াছে যে, বেণপুত্র পৃথু-রাজাব যজ্ঞে ইন্সের আহবনীয় মৃতের সহিত রুহম্পতির মৃত মিলিত হইয়া বর্ণসন্ধর সূতজাতিব উৎপত্তি হয়। মহর্ষি যাজ্ঞবন্ধা বলেম যে, ব্রাশ্বণীর গর্ভে ক্তিনুমের ঔবসে সূতজাতির উৎপত্তি হইয়াছে॥ ১৭ ॥

<sup>||</sup> যিনি মধুববচনবিন্যাস দ্বারা শ্রোতৃবর্গেব লোমহর্ষণ অর্থাৎ লোমাঞ করিয়া
দিতেন, উঃহার বৌগক নাম লোমহর্ষণ ॥ > १ ॥

অক্তত্ত্তে পাবর্ণিঃ ষট্ শিষ্যান্তদ্য চাভবন্॥ ১৮
কাশ্যপঃ সংহিতাকর্ত্তা সাবর্ণিঃ শাংশপায়নঃ।
রোমহর্ষণিকা চান্যা তিস্ণাং মূলসংহিতা॥ ১৯ ॥
চতুন্টয়েনাপ্যেতেন সংহিতানামিদং মুনে ! ॥ ২০ ।
আদ্যং সর্বপুরাণানাং পুরাণং ত্রাক্ষমুচ্যতে ।
অফাদশ পুরাণানি পুরাণজ্জাঃ প্রচক্ষতে॥ ২১ ॥
ত্রাক্ষং পাত্তং বৈষ্ণবঞ্চ শৈবং ভাগবতং তথা।
অথান্যং নারদীয়ঞ্চ মার্কণ্ডেয়ঞ্চ সপ্তমম্।
আথ্যেয়মন্টম্বৈণ্ডব ভবিষ্যং নবমং তথা॥ ২২ ॥
দশমং ত্রক্ষবৈর্ত্তং লৈক্ষমেকাদশং স্মৃত্য্।
বারাহং দ্বাদশক্ষৈব ক্ষান্দ্পাত্র ত্রেয়েদশ্য॥ ২৩ ॥

কথিত আছে, ব্রাহ্মপুরাণ সমুদায় পুরাণের আদি । পুরাণবিথ ব্যক্তিরা বলেন, পুরাণ সমুদায়ে অফীদশস্থ্য। ১০ তথ্যপ্র প্রথম ব্রাহ্মপুরাণ, দিতীয় পদ্মপুরাণ, তৃতীয় বৈষ্ণবপুরাণ বা বিষ্ণুপুরাণ, চতুর্থ শৈবপুরাণ বা শিবপুরাণ, পঞ্চম ভাগবত পুরাণ, বন্ধ নারদীয় পুরাণ, সপ্তম মার্কণ্ডেয় পুরাণ, অফম আংগ্রয় পুরাণ বা অগ্নিপুরাণ, নবম ভবিষ্য পুরাণ, ১০ দশম ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণ, একাদশ লৈক্ষপুরাণ বা লিক্ষপুরাণ, দাদশ বারাহ পুরাণ বা বরাহ পুরাণ, অয়োদশ স্কান্দ পুরাণ বা স্কন্দপুরাণ, ১০ চতুর্দশ বামন চতুর্দশং বামনঞ্চ কৌর্মং পঞ্চদশং শৃতম্।
মাৎস্তঞ্চ পারুড় ইঞ্চব ব্রহ্মাণ্ডঞ্চ ততঃ পরম্ ॥ ২৪ ॥
সর্গশ্চ প্রতিসর্গশ্চ \* বংশো মন্বন্তরাণি চ।
সর্কেদেতেরু কথ্যন্তে বংশারুচরিতঞ্চ যৎ ॥ ২৫ ॥
যদেতৎ তব মৈত্রেয়! পুরাণং কথ্যতে ময়া।
এতদৈঞ্চবসংজ্ঞং বৈ পাল্মস্য সমনন্তরম্ ॥ ২৬ ॥
সর্গে চ প্রতিসর্গে চ বংশমন্বন্তরাদিয়ু।
কথ্যতে ভগবান্ বিফুরশেষেধ্বে সভ্যা! ২৭ ॥
জঙ্গানি চতুরো বেদা মীমাংসা ন্যায়বিস্তরঃ।
পুরাণং ধর্মাশাস্তঞ্চ বিদ্যা হ্যেতাশ্চতুর্দশ্য ॥ ২৮ ॥
আয়ুর্বেদো ধন্মর্বেদা গান্ধবিশ্বের তে ত্রয়ঃ।

পুরাণ, পঞ্চশ কৌর্ম পুরাণ বা ক্র্মপুরাণ, বোড়শ মাৎস্যপুরাণ বা মৎস্যপুরাণ, সপ্তদশ গারুড় পুরাণ বা গরুড়পুরাণ, অফীদশ ব্রহ্মাঞ্পুরাণ। ১৪

এই সমুদায় পুরাণেই সর্গ, প্রতিসর্গ, বংশ মন্বন্তর ও বংশানুচরিত, এই পঞ্চ বিষয় কথিত হইয়াছে । মৈত্রেয়! এই
আমি ভোমার নিকট যে পুরাণ কীর্ত্তন করিতেছি, ইহার নাম
বিষ্ণুপুরাণ। ইহা পদ্মপুরাণের পরেই প্রণীত হইয়াছে । শাধাে!
এই বিষ্ণুপুরাণে সর্গ, প্রতিসর্গ, বংশ ও মন্বন্তর প্রভৃতি বর্ণনে
সমুদায় অংশেই ভগবান্ বিষ্ণুর মাহাত্ম্য আছে। শারে বেদ,
ছয় বেদাঙ্ক, শ মীমাংসা, ন্যায়, পুরাণ ও ধর্মাশান্ত, বিদ্যা এই
চতুর্দশ প্রকার। শ আয়ুর্বেদ অর্থাৎ চিকিৎসাশান্ত, ধনুর্বেদ

<sup>\*</sup> দর্মত প্রতিদর্শত ইতি পাঠান্তর**ম্।** 

<sup>🛧</sup> শিক্ষা, কল্প, ব্যাকরণ, মিরুক্তন, জ্যোতিঃশাজ ও ছদ্দঃ। বেদাল এই ছয়প্রকার।

অর্থশাস্ত্রং চতুর্থন্ত বিদ্যা হ্যন্টাদলৈব তাঃ॥ ২৯॥
জ্ঞেয়া ব্রন্ধয়ঃ পূর্কং তেভ্যো দেবর্ধয়ঃ পুনঃ
রাজর্ধয়ঃ পুনস্তেভ্য ঋষিপ্রক্ তয়স্তয়ঃ॥ ৩০॥
ইতি শাখাঃ প্রসম্ভ্যাতা শাখাভেদাস্তবৈব চ।
কর্ত্তারশৈচব শাখানাং ভেদহেতুন্তথোদিতঃ॥ ৩১॥
সর্কমন্বত্তরেশ্বেব শাখাভেদাঃ সমাঃ স্মৃতাঃ।
প্রাজাপত্যা শ্রুতির্নিত্যা তদ্বিকপান্তিমে দ্বিজ!॥৩২॥
এতৎ ত্বোদিতং সর্কং যৎ প্র্যোহ্রমহ ত্বয়।
মৈত্রেয়! বেদসম্বদ্ধং কিমন্যৎ কথয়ামি তে॥ ৩৩॥
ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়েহ্ণ শো শাখাভেদো নাম ষ্রেষ্ঠাহ্বায়ঃ।

অর্থাৎ যুদ্ধবিদ্যা, গন্ধর্মবেদ অর্থাৎ সঙ্গীতবিদ্যা, অর্থশাস্ত্র অর্থাৎ নীতিশাস্ত্র, এই বিদ্যাচতুষ্টয় লইয়া অষ্টাদশ বিদ্যা হয়। ১৯ ক্ষি তিনপ্রকার; প্রথম ব্রহ্মর্যি, দ্বিতীয় দেব্যি, তৃতীয় রাজ্যি। ১৯

এই তোমার নিকট বেদের শাখা, সম্থা, শাখাভেদ, শাখা-কর্ত্তা ও শাখাভেদের কারণ বর্ণন করিলাম। ত সমুদায় মন্বস্তরেই এই প্রকার বেদের শাখাভেদ হইয়া থাকে। প্রাজাপত্য শ্রুতি অর্থাৎ কল্পের প্রারম্ভে ব্রহ্মা থে বেদ ব্যক্ত করেন, তাহা নিত্য। এই সমুদায় শাখাদিভেদ তাহার বিকল্পমাত্র অর্থাৎ কোন্ প্রতিকোন্ সম্প্রদায়ের কোন্ সময়ে যে অবলম্বনীয় হইবে, তরিরপণই শাখাভেদের কারণ হইয়াছে। ত মৈত্রেয়! তুমি বেদসম্বন্ধে আমার নিকট যাহা জিজ্ঞাসা করিয়াছিলে তৎসমুদায় কহিলাম, এক্ষণে আর কি প্রবণ করিতে বাসনা কর, বল। ত

বিষ্ণুপুরাণ তৃতীয় অংশ ষষ্ঠ অধ্যায় সমাপ্ত।

## विक्यूत्रानम् ।

তৃতীয়াংশঃ।

मश्रामाक्षामाः।

#### মৈত্রেয় উবাচ।

যথাবৎ কথিতং সর্কাং যৎ পৃষ্টোহিস ময়া দ্বিজ !।
শ্রোতুমিচ্ছামাহং ত্বেকং ভদ্ভবান্ প্রব্রীতু মে॥ ১॥
সপ্ত দ্বাকা পাতালবীথ্যক \* স্ক্মহামুনে !।
সপ্ত লোকা যেহন্তরক্ষা † ব্রহ্মাগুদ্যাস্য সর্ক্বতঃ॥ ২॥
স্থূলৈঃ সূক্মন্তথা স্ক্রাৎ স্ক্রেঃ স্ক্রন্তরৈত্তথা।
স্থূলৈঃ স্থূলতরৈকৈতৎ সর্কাং প্রাণিভিরার্তম্॥ ৩॥
অস্কুলস্যাইটভাগোহিপ ন সোহস্তি মুনিসভ্ম!।
ন সন্তি প্রাণিনো যত্র কর্মবন্ধনিবন্ধনাঃ॥ ৪॥

মৈত্রেয় কহিলেন। ব্রহ্মনৃ! আমি আপনকার নিকট যাহা

যাহা জিজ্ঞাসা করিয়াছি, আপনি তৎসমুদায় যথাযথ বলিয়াছেন ।

এক্ষণে আমি একটা বিষয় জানিতে ইক্ছা করি, আপনি অনুগ্রহ করিয়া বলুন্। মহর্ষে! সপ্তন্ধীপ, পাতাল, বীথি, স্বর্গাদি

সপ্তলোক প্রভৃতি ব্রহ্মাপ্তর্গত সমুদায় স্থানই আপস্ক্রা,
সূক্ষ্মতর, সূক্ষানুস্ক্রা, স্থুল ও স্থুলতর প্রাণিগণ কর্ম্কক সমারত
রহিয়াছে। মুনিশ্রেষ্ঠ! যেখানে প্রাণিগণ স্ব স্ব অন্তটের ফলভোগের নিমিক্ত বিচরণ না করে ইন্থা যবোদ্রমাত্র স্থানও

<sup>\*</sup> পাতালবাথেন্চ ইতি ক্ষচিং পাঠঃ। শুসপুলোকান্চ যেংক্তম্ভ ইতি আমো পঠকি।

সর্বে হৈতে বশং যান্তি যমস্য ভগবন্! কিল।
আয়ুষোহতে ততো যান্তি যাতনান্তৎপ্রচোদিতাঃ ॥৫॥
যাতনাভ্যঃ পরিভ্রুটা দেবাদ্যাস্থ্থ যোনিয়ু \*।
জন্তবং পরিবর্ত্তে শাস্ত্রাণামেষ নির্ণয়ঃ॥৬॥
সোহহমিচ্ছামি তৎ শ্রোভুং যমস্য বশবর্তিনঃ।
ন ভবন্তি নরা যেন তৎ কর্ম কথয়ামলম্॥ ৭॥
পরাশর উবাচ।

অয়নেৰ মুনে ! প্ৰশ্নো নকুলেন মহাত্মনা। পৃষ্টঃ পিতামহঃ প্ৰাহ ভীয়ো যৎ তৎ শৃণুষ্ মে॥৮॥ ভীয়া উবাচ।

পুরা সমাগতো বৎস! সখা কালিক্সকো দ্বিজঃ। স মামুবাচ পৃষ্টো বৈ ময়া জাতিকারো মুনিঃ॥ २॥

কোপাও নাই। তগবন্! আয়ুঃশেষ হইলে এই সমুদায় প্রাণীই যমের অধীন হয়, পরে যমের আজ্ঞানুসারে নরক্যন্ত্রণা ভোগ করিয়া থাকে। পপরে যখন তাহাদের পাপভোগ শেষ হয়, তখন তাহারো দেব মনুষ্য প্রভৃতি রূপে জন্ম পরিগ্রহ করে। শাস্ত্রে এই রূপই নিরূপিত আছে। অভ্ঞাব কিরূপ নির্মণ করিলে মনুষ্যগণকে যমের বশতাপর হইতে না হয়, আপনি (অনুগ্রহ করিয়া) বলুন, আমার প্রবণ করিতে ইচ্ছা হইয়াছে।

পরাশর কহিলেন। মুনে! মহাত্মা নকুল, পিতামহ ভীয়ের নিকট এই প্রশ্ন করিয়াছিলেন। তাহাতে ভীয়া যাহা বলিয়াছি-লেন, তাহা কহিতেছি, শ্রবণ কর।

ভীয়া কহিলেন, বৎস! কলিঙ্গদেশীয় কোন ব্রাহ্মণ আমার

<sup>\*</sup> বাতনাভ্যঃ প্রাবলটা দেবাদ্যাঃ প্রখনোনিয় ইতি বা পাঠঃ :

তেনাখ্যাতমিদঞ্চেন্য ইপ্টেণ্ডন্ডবিষাতি।
তথাচ তদভূদ্বন ! যথোক্তং তেন ধীমতা॥ ১০॥
স পৃষ্টশ্চ ময়া ভূয়ঃ শ্রদ্ধানবতা দ্বিজঃ ।
যদ্যদাহ ন তদ্ধুম্ অন্যথা হি ময়া কচিৎ॥ ১১॥
একদা ভু ময়া পৃষ্টং যদেতদ্ভবতোদিতম্।
প্রাহ কালিন্সকো বিপ্রঃ স্মৃত্বা তদ্য মুনের্বচঃ॥ ১২॥
জাতিস্বারেণ কথিতো রহ্দ্যঃ পরমো মম।
যমকিক্ষরয়োর্যোহভূৎ সংবাদন্তং ব্রবীমি তে॥ ১৩॥

কালিন্দ উবাচ। স্বপুরুষমভিবীক্ষ্য \* পাশহস্তং

বদতি যমঃ কিল তগ্য কর্ণমূলে।

নথা ছিলেন। একদা তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ হইলে তিনি আমাকে কহিয়াছিলেন যে, আমি কোন জাতিমার মুনিকে জিজ্ঞাসা করাতে তিনি কহিলেন, ইহা বর্ত্তমানে এইরপ আছে, ভবিষ্যৎকালে এইরপ হইবে। কলতঃ সেই জ্ঞানী ব্যক্তি যাহা বলিয়াছিলেন, তাহাই হইল। তাঁহাকে কিঞ্চিৎ জিজ্ঞাসা করিয়াছিলাম। তিনি যাহা যাহা বলিয়াছিলেন, তাহার কোন অংশ অন্যথা হইতে দেখি নাই। তা একণে তুমি যে কথা জিজ্ঞাসা করিতেছ, একদা আমি এ কথা জিজ্ঞাসা করাতে কালিক্ষক ব্রাহ্মণ সেই মুনির বাক্য মারণ করিয়া কহিলেন। তাহা অক্যান্ত গোপনীয়। সেই বিষয় জাতিমার ব্রাহ্মণ আমাকে বলিয়াছিলেন। একণে আমি তাহা বলিতেছি, শ্রবণ কর। তাহা বলিতেছি, শ্রবণ কর। তাহা বলিতেছি, শ্রবণ কর।

<sup>\*</sup> अश्रान्यमाश बोक्ता देखि वा शाठेः।

পরিহর মধুস্থদনপ্রপন্নান্
প্রভ্রহমন্যন্গাং ন বৈষ্ণবানাম্॥ ১৪॥
অহমমরগণার্চিতেন ধাত্রা
যম ইতি লোকহিতাহিতে নিযুক্তঃ।
হরিগুরুবশগোহিমা ন স্বতন্তঃ
প্রভবতি সংযমনে মমাপি বিষ্ণুঃ॥ ১৫॥
কটক-মুকুট-কর্ণিকাদিভেদেঃ
কনকমভেদমপীয়তে যথৈকম্।
স্থর-পশু-মনুজাদি-কম্পনাভিঃ
হরিরথিলাভিরুদীর্যুতে তথৈকঃ॥ ১৬॥
ক্ষিতিজলপরমাণবোহনিলান্তে
পুনরপি যান্তি যথৈকতাং ধরিত্র্যা।

কালিক্ষ কহিলেন। যম পাশহন্ত সীয় দুতকে সমীপন্থ দেখিয়া তাহার কর্নমূলে কহিলেন, মধুসূদনের শরণাপন্ন ব্যক্তিকে কখনই আনমন করিও না, কারণ আমি সমুদায় প্রেতের প্রভু, কিন্তু বৈশুব প্রেতের প্রভু নহি। অমরগণ কর্ত্তক পূজিত বিধাতা লোকের পাপ-পুণ্য-বিচারের জন্য 'যম' এই নাম দিয়া আমাকে নিযুক্ত করিয়াছেন। হরিই আমার শুরু, আমি স্বাধীন নহি, কারণ হরি আমারও দশু বিধান করিতে পারেন। ' স্থবর্গ যেমন এক-রূপ ইয়াও বলয় মুক্ট কর্নভূষণ প্রভৃতি অলক্ষারতেদে তিন্ন করেপে নির্দিষ্ট হইয়া থাকে, তাহার ন্যায়, একমাত্র হরি দেব মনুষ্য পশু প্রভৃতি সমুদায় কল্পিত রূপভেদে নানারূপ প্রতীয়নান হন। ' বায়ুর ধ্বসময়ে পুথিবীর সহিত পার্থিব পরমাণু ও জলীয় পরমাণু থেমন তাহাতে লান হয়, তাহার নায়, গুণক্ষোভ

সুরপশুমরুজাদয়ন্তথান্তে
গুণকলুষেণ সনাতনেন তেন ॥ ১৭ ॥
হরিমমরগণার্চ্চিতাজ্মিপদ্
প্রণমতি যঃ পরমার্থতা হি মর্ত্যঃ।
তমপগতসমন্তপাপবন্ধং
ব্রজ পরিহৃত্য যথাগ্রিমাজ্য দিক্তম্ ॥ ১৮ ॥
ইতি যমবচনং নিশম্য পাশী
যমপুরুষন্তমুবাচ ধর্মরাজম।
কথয় মম বিভো! সমন্তথাতুভবিতি হরেঃ খলু যাদৃশোহস্য ভক্তঃ ॥ ১৯ ॥
যম উবাচ।

ন চলতি নিজবর্ণধর্মতে। যঃ
সমমতিরাত্মস্ক্রিপিক্ষপকে।
ন হরতি ন চ হন্তি কিঞ্চিদুকৈঃ
সিতমনসং তবৈহি বিফুভক্তম্॥ ২০॥

দারা উৎপন্ন দেব দর্য্য পশু প্রভৃতি, শুণকোভ-নির্ভি-কালে দনাতন বিশ্বুতেই বিলীন হইয়া থাকে। নিরেগণ যাঁহার পাদপদ্ম
পূজা করিয়া থাকেন, সেই হরিকে যিনি ভক্তিপূর্বক নমকার
করেন, তাঁহার কোন পাপই থাকে না। অভএব ঈদৃশ পুণাআকে ম্তাভিষিক্ত হুতাশনের ন্যায় পরিত্যাগ করিবে। প্রপাশহস্ত যমকিন্ধর ধর্মারাজ যমের এই বাক্য প্রবেগ করিয়া তাঁহাকে
কহিলেন, বিভো! কিরেপে কিরেপ ব্যক্তিকে, নিখিল বিধাতা
হরির ভক্ত বলিয়া জানিতে পারিব? প্র

यम कहिरलन । यिनि निक वर्षित निर्मिष्ठ धर्म इहेरछ विष-

কলিকলুষমলেন যদ্য নাজা
বিমলমতেমলিনীক্তোহস্তমোহে \* ।
মনসি ক্লতজনার্দ্দনং মনুষ্যং
সততমবৈহি হরেরতীব ভক্তম্ ॥ ২১ ॥
কনকমপি রহ্ম্যবেক্ষ্য ব্রদ্ধা
তৃণমিব যঃ সমবৈতি বৈ পরস্থা।
ভবতি চ ভগবত্যনন্চেতাঃ
পুরুষবরং তমবৈহি বিষ্ণুভক্তম্ ॥ ২২ ॥
স্ফটিকগিরিশিলামলঃ ক বিষ্ণুর্মনিস নৃণাং ক চ মৎসরাদিদোষঃ ।
ন হি তুহিনময়ূখরশ্মিপুঞ্জে
ভবতি ভ্তাশনদীপ্তিজঃ প্রতাপঃ ॥ ২৩ ॥

লিভ না হন, যিনি নিজের প্রতি, স্বহ্রদর্গের প্রতি ও বিপক্ষ পক্ষের প্রতি সমান ছফি রাখেন, যিনি কাছারো কিছু হরণ করেন না, কোন জীব হিংসা করেন না, যাঁহার অন্তঃকরণ রাগাদিশূনা ও সাতিশয় বিশুদ্ধ, তাঁহাকেই বিষ্ণুভক্ত বলিয়া বিবেচনা করিবে। বি ঘাঁহার নির্মল অন্তঃকরণ কলিকলুব দারা মলিন না হয়, যিনি মোহশূন্য মনে সর্বদা জনাদ্নকে ধারণ করেন, তাঁহাকেই হরির পরম ভক্ত বলিয়া বিবেচনা করিবে। বি ঘিনি নির্জনে পরস্থ স্থবর্ণ দেখিয়াও ভূণবৎ জ্ঞান করেন, যিনি অনন্যচেতা হইয়া ভগ-বানের চিন্তা করেন, সেই পুরুষশ্রেষ্ঠকে বিষ্ণুভক্ত বলিয়া বিবে-চনা করিবে। বি ক্ষাটক গিরির ন্যায় নির্মল অর্থাৎ দোষ-ক্ষাদি-শূন্য বিষ্ণু ও মনুবার মাৎস্থ্যাদি দোষ, এ উভ্যের অনেক

भ मिनीकृष्ठचरमनम् इडाभदत अठेखि।

বিমলমতিবিমৎসরঁঃ প্রশান্তঃ
শুচিরিতোইখিলসত্মিত্রভূতঃ \*।
প্রিয়হিতবচনোইস্তমানমায়ে
বসতি সদা হৃদি তদ্য বাস্থদেবঃ ॥ ২৪ ॥
বসতি হৃদি সনাতনে চ তিমান্
ভবতি পুমান্ জগতোইস্ত দৌম্যরূপঃ।
ক্ষিতিরসমতিরম্যমাত্মনোইস্তঃ
কথয়তি চারুতিয়েব শালপোতঃ ॥ ২৫ ॥
যমনিয়মবিধূতকল্মবাণাম্
অরুদিনমচ্যুতসক্তমানসানাম্।
অপাত্মদমানমৎসরাণাং
বজ্পতি ! দূরতরেণ মানবানাম্॥ ২৬ ॥

অন্তর। হিমাংশু-কিরণ-সমুহে কথন অগ্নির উষ্ণতা থাকিতে পারে না। ইহার তাৎপর্য্য এই বৈ, মাৎসর্য্যযুক্ত মনে কথনই হরি অবস্থান করেন না, সূত্রাং মৎসরী ব্যক্তিকে বিষ্ণৃভক্ত বলা যায় না। <sup>২৩</sup> যে ব্যক্তি নির্মলচিক্ত, মাৎসর্য্যরহিত, প্রশাস্ত, বিশুক্তচিরত, নিথিল প্রাণীর মিত্রস্বরূপ, প্রিয়বাদী ও হিতবাদী, যাঁহার অভিমান ও মায়া নাই, তাঁহার অন্তঃকরণেই বাস্থদেব বাস করেন। <sup>২৬</sup> সেই সনাতন বিষ্ণৃ স্থদের বাস করিলে মনুষ্য সকলের নিকটেই সৌমামুর্জি হয়। দেখ, রমণীয় শালরক্ষের চারা দেখিলেই লোকে বুঝিতে পারে যে, ইহার অভ্যন্তরে রমণীয় পার্থিব রস আছে। <sup>২০</sup> দৃত! যম ও নিয়ম দারা যাঁহাদের পাপ-রাশি ধংস হইয়াছে, যাঁহাদের অন্তঃকরণ নিরস্তর অচ্যুতেই

<sup>\*</sup> ভভচবিভোংখিলপদ্দিত্ত ইতি বা পঠনীয়ম্।

হারি সিশ্বাপদাধরোহব্যয়াত্মা \*
তদ্যম্যবিঘাতকর্তৃভিন্নং
ভবতি কথং সতি চান্ধকারমর্কে॥ ২৭॥
হরতি পরধনং নিহন্তি জন্তুন্
বদতি তথান্তনিষ্ঠুরাণি যক।
অশুভজনিভদুর্মদ্য্য পুংসঃ
কলুষমতেহাদি তম্য নাস্ত্যনন্তঃ॥ ২৮॥
ন সহতি পরসম্পদং বিনিন্দাং
কলুষমতিঃ কুরুতে সভাম্যাপুঃ।
ন যজতি ন দদাতি যক্ষ সন্তং †

আসক্ত থাকে, যাঁহাদের অভিমান অহঙ্কার ও মাৎসর্য্য নাই, ঈছুশ
মনুষ্যের নিকটেও যাইও না। । শ শ খ-খড়র – গদাধারী অব্যয়
অনাদি ভগবান্ হরি যদি হৃদয়ে অবস্থান করেন, তাহা হইলে
অশেষ-পাপ-নাশক সেই ভগবান্ই সমুদায় পাপ ধ্বংস করেন,
কারণ সূর্য্যে কথন অশ্বকার থাকিতে পারে না। । ১০

যিনি পরধন হরণ করেন, যিনি জীবহিংসায় প্রবৃত্ত হন, যিনি মিপা কথা কহেন, যিনি নিষ্ঠুর বাক্য প্রয়োগ করেন, যাঁহার মন নির্মল নহে, অশুভ কার্যো যাঁহার মন আসক্ত হইয়াছে, ঈভুশ ব্যক্তির হৃদয়ে অনন্ত বাস করেন না। ২৮ যিনি পরের সম্পদ্সহ্য করিতে পারেন না, যাঁহার অন্তঃকরণ কলুষিত, যিনি সাধুদিগের নিন্দা করেন, যে অসাধু ব্যক্তি যাগ করেন না, সাধুকে দান করিতে

হরিবপি এখনদাধরোহব্যয়াআ ইতি বা পঠ।
 ক ফর্চ ইতি পাঠান্তবয়।

মনসি ন তক্ত জনার্দ্দনোহধ্যক্ত ॥ ২৯॥
পরমক্ষদি বান্ধবে কলত্রে
ক্রততনয়াপিত্যাতৃভ্তাবর্গে।
শঠমতিরুপযাতি যোহর্থতৃক্ষাং
তমধমচেইমবেহি নাক্ত ভক্তম্॥ ৩০॥
অশুভমতিরসৎপ্রবৃত্তিসক্তঃ
সতত্যনার্য্যবিশালসক্ষতঃ।
অনুদিনকৃতপাপবন্ধযত্তঃ
পুরুষপশুন্হি বাক্ষদেবভক্তঃ॥ ৩১॥
সকলমিদমহঞ্চ বাক্ষদেবঃ
পরমপুমান্ পরমেশ্বরঃ স একঃ।

প্রস্ত হন না, ঈদৃশ অধম ব্যক্তির মনে জনার্দ্দন বাস করেন না। তথাকি প্রিয় সুহদের নিমিন্ত, বন্ধুর নিমিন্ত, স্ত্রীর নিমিন্ত, পূত্র কন্যার নিমিন্ত, পিতামাতার নিমিন্ত বা ভৃত্যবর্গের নিমিন্ত শঠতা অবলম্বন করিয়া অন্যায়পূর্বাক ধনোপার্চ্জন করে, সেই নীচ-চেন্টা-দ্বিত ব্যক্তি বিষ্ণুভক্ত নহে, বিবেচনা করিবে \* 1°° যে ব্যক্তির অন্তঃকরণ অসৎ কার্য্যে রত থাকে, বে ব্যক্তি সতত অসৎ কার্য্যে প্রান্ত হয়, যে ব্যক্তি দীর্ঘকাল নীচ সংসর্গে মন্ত থাকে, যে ব্যক্তি নিয়ত পাপরাশিতেই লিপ্ত হইবার যত্ন করে. সেই পুরুষপশু বাস্থ্র-দেবভক্ত নহে। °°

ভগবান বাস্ত্রের পরমপুরুষ পরমেশ্বর অদিতীয়। এই সমুদায়

<sup>\*</sup> যে ব্যক্তি প্রিয় সুক্ষের নিকট, বন্ধুর নিকট, জী পুত্র কন্যা পিছা যাত। ভূত্য প্রভৃতির নিকট শঠতা অবলবন করিয়া অন্যায়পুর্বক ধন লোভ করে, সেই অধম-চেন্ট ব্যক্তি প্রভুত্তক্ত নহে, বিবেচনা করিবে। ০ (কেহ কেহ এইরূপ অর্থ করেন)।

ইতি মতিরচলা\* ভবত্যনত্তে
ক্রদয়গতে ব্রজ তান্ বিহায় দূরাৎ ॥ ৩২ ॥
কমলনয়ন !† বাস্কদেব ! বিশ্বো !
ধরণিধরাচ্যত ! শস্কচক্রপাণে ! ।
ভব শরণমিতীরয়ন্তি যে বৈ
ত্যজ ভট ! দূরতরেণ তানপাপান্ ॥ ৩৩ ॥
বসতি মনসি যস্ত্র সোহব্যয়াত্মা
পুরুষবরস্ত্র ন তস্ত্র দৃষ্টিপাতে ।
ভব গতিরথবা মমান্তি চক্রপ্রতিহতবীর্যবলস্ত্র সোহন্যলোকাঃ ॥ ৩৪ ॥

জগৎ এবং আমিও বামুদের হইতে ভিন্ন নহি। ছদয়ন্থিত সেই অনস্তদেবের প্রতি যাহার এইরূপ নির্মল জ্ঞান হয়, ঈদৃশ মনুষ্যের নিকটেও যাইও না। <sup>৩২</sup>

হে কমলনয়ন! হে বাস্থদেব! হে বিফো! হে ধরণীধর!
হে অচ্যুত! হে শঙ্কচক্রপাণে! আমাকে পরিত্রাণ কর। যে সকল
ব্যক্তি এইরপ বাক্য বলেন, তাঁহারা নিজ্পাপ, অভএব সে
সকল ব্যক্তির নিকটে গমন করিও না। ত যে সৎপুরুষের অন্তঃকরণে সেই অব্যয় হরি বাস করেন, সেই পুরুষ যত চূর পর্যান্ত
দ্বাধ্যিত করিবেন, তত দূর পর্যান্ত বিফ্কুচক্রপ্রভাবে তোমার ও
আমার বল বার্ষ্য প্রতিহত হইবে, স্থতরাং তুমি বা আমি উদৃশ
পুণাস্মার নিকটেও যাইতে পারিব না, কারণ সেই ব্যক্তি আমাদের অধিকৃত নহেন। তিনি বৈকুপ্রধানে বাস করিবার উপযুক্ত। ত গ

<sup>\*</sup> ইতি মতিরমলা ইতি কচিৎ পাঠঃ।
† বিমলময়ন! ইতি আন্যোপঠতিঃ।

### কালিক উবাচ।

ইতি নিজভটশাসনায় দেবে। রবিতনয়ং স কিলাহ ধর্মরাজঃ। মম কথিতমিদঞ্চ তেন তুভ্যং কুরুবর! সম্যাগিদং ময়াপি চোক্তম্॥ ৩৫॥

### ভীয়া উবাচ।

নকুলৈতন্মনাখ্যাতং পূর্বেং তেন দ্বিজনা।
কলিন্ধদেশাদভ্যেত্য প্রীয়তা স্থমহাত্মনা ॥ ৩৬ ॥
ময়াপ্যেতদ্যথান্যায়ং সম্যাগ্বংস ! তবাদিতম্।
যথা বিষ্ণুমৃতে নান্যং ত্রাণং সংসারসাগরে॥ ৩৭ ॥
কিন্ধরা দশুপাশো বা ন যমোন চ যাতনাঃ।
সমর্থাস্থস্য যস্যাত্মা কেশ্বালম্বনঃ সদা॥ ৩৮ ॥

কালিক্ষ কহিলেন। কৌরবশ্রেষ্ঠ! দেব ধর্মরাজ রবিতনয়, নিজ দূতকে এইরূপ আজা দিয়াছিলেন। যমদূতও আমাকে ঐ কথা বলিয়াছিল। এক্ষণে আমি তোমার নিকট কহিলাম। ৩°

ভীমু কহিলেন, নকুল! পূর্ব্বে কলিঙ্গদেশ হইতে অভাগত মহাত্মা ব্রাহ্মণ প্রীত মনে আমাকে এই র্স্তান্ত বলিয়াছিলেন। ত বৎস! অধুনা আমি সেই র্স্তান্ত যথাবিধানে তোমার নিকুট্ট কহিলাম। এক্ষণে জানিবে, এই সংসার সাগরে বিষ্ণু ব্যতীত পরিত্রান নাই। ত যে যে ব্যক্তির অন্তঃকরণ সর্বাদা কেশবে আস্ত রহিয়াছে, তাঁহাদিগের যম, যম-কিঙ্কর, যম-দশু, যম-পাশ বা যমযাতনার ভং নাই। ত দ

### পরাশর উবাচ।

এতন্মনে ! ভবাখ্যাতং গীতং বৈবস্বতেন যথ। তৎপ্রশার্গতং সম্যক্ কিমন্যৎ শ্রোতৃমিছ্সি ॥ ৩৯ ॥

## ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২ শে যমগীত। নাম সপ্তমোহধ্যায়: 1

যমগীত† সমাপ্তা।

পরাশর কহিলেন। মুনে ! এই তোমার নিকট যমগীতা কহি-লাম। ইহা ব্যাসের প্রশানুসারে কলিঙ্গদেশীয় ব্রাহ্মণ ব্যাসের নিকট কহিয়াছিলেন। এক্ষণে কি শ্রবণ করিতে বাসনা কর, বল।

বিষ্ণুপুরাণ ভৃতীয় অংশ সপ্তম অধ্যায় সমাপ্ত।

## विक्शूश्रवानम् ।

তৃতীয়াংশঃ। অটুমো২ধ্যায়ঃ।

## মৈত্রেয় উবাচ।

ভগবন্! ভগবান্ দেবঃ সংসারবিজ্ঞিগীষুভিঃ।
মামাখ্যাহি \* জগল্লাথো বিফুরারাধ্যতে যথা॥ ১॥
আরাধিতাক গোবিন্দাদারাধনপরেন রৈঃ।
যৎ প্রাপ্যতে কলং শ্রোতুং তবেচ্ছামি মহামুনে! ॥২॥
পরাশ্র উবাচ।

যৎপৃচ্ছতি ভবানেতৎ দগরেণ মহাত্মনা। উর্ব্ব আহ যথা পৃষ্টস্তমে কথয়তঃ শৃণু॥ ৩॥

নৈত্রের কহিলেন। ভগবন্! ঘাঁহারা সংসার-সাগরের পারে গমন করিতে অভিলাষ করেন, তাঁহাদিগকে কি রূপে ভগবান্ দেব জগলাথ বিষ্ণুর আরাধনা করিতে হইবে, বলুন। মহামুনে! ভগবান্ বিষ্ণুর আরাধনা করিলে কিরূপ ফল প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহাও আপনকার নিকট প্রবণ করিতে বাসনা করি।

পরাশর কহিলেন। তুমি যে কথা জিজ্ঞাসা করিতেছ, মহান্মা সগর ঔর্বকে এই কথা জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন। তাহাতে ঔর্ব যেরূপ উন্তর করেন, তাহা তোমাকে বলিতেছি, শ্রবণ কর।

সমাঝাহি ইত্যপরে পঠত্তি।
 তচেচছামি নহামুনে! ইতিবা পাঠঃ।

সগরঃ প্রনিপত্যেদমোর্কং পপ্রচ্ছ ভার্গবম্। বিফোরারাধনোপায়সম্বদ্ধং মুনিসত্তম ! ॥ ৪ ॥ ফলঞ্চারাধিতে বিষ্ণো যৎ পুংসামভিজায়তে। স চাহ পৃষ্টো যতেন তক্ষৈত্রেয়াখিলং শৃণু॥ ৫ ॥

ঔৰ্ব্ব উবাচ।

ভৌমান মনোরথান স্বর্গান স্বর্গিবন্ধং তথাস্পদম্ \*।
প্রাপ্রোত্যারাধিতে বিষ্ণো নির্বাণমপি চোত্তমম্ ॥ ৬ ॥
যদ্যদিচ্ছতি যাবচ্চ ফলমারাধিতেইচ্যুতে।
তৎ তদাপ্রোতি রাজেন্দ্র! ভূরি স্বর্ণসম্থাপি বা ॥ ৭ ॥
যৎ তু পৃচ্ছিদি ভূপাল! কথমারাধ্যতে হি সঃ।
তদহং সকলং তুভ্যং কথয়ামি নিবোধ মে ॥ ৮ ॥

সগর ভৃগুবংশীয় ঔর্মকে নমস্কার করিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, মুনি-শ্রেষ্ঠ! কি উপায়ে বিফুর আরাধনা হইতে পারে ? এবং বিফুর আরাধনা করিলে মসুষ্টোর কি ফল হয় ? মৈত্রেয়! ঔর্ম এইরূপ জিজ্ঞাসিত হইয়া যেরূপ উত্তর করিয়াছিলেন, তাহা তোমার নিকট বলিতেছি, শ্রবণ কর ।

ঔর্ব কহিলেন, বিষ্ণুর আরাধনা করিলে সমুদায় ঐহিক কামনা পূর্ণ হয়, স্বর্গ ও ব্রহ্মলোকাদি প্রাপ্তি হয় এবং নির্বাণ মুজিও লাভ হইয়া থাকে 1° রাজেক্স! যে যে ফল যে পরিমাণে কামনা করা যায়, তাহা অপ্পই হউক্ আর অধিকই হউক্, অচ্যুতের আরাধনা করিলে অবশাই প্রাপ্ত হওয়া যায়। বাজন্! কি রূপে বিষ্ণুর আরাধনা করিতে পারা যায়? এই কথা যে তুমি জিজ্ঞাসা করিয়াছ, তরিষয়ে আমি সমন্ত বলিতেভি, প্রাবণ কর।

স্বাধিকাণ ওথাস্থান্য অথবা স্বাধিকাং ওথাস্থান্য ইতি বা পঠনীয়মৃ।

বর্ণাশ্রমানারবতা পুরুষেণ পরঃ পুমান্।
বিষুদ্ধারাধ্যতে, পন্থা নান্যৎ তত্তোষকারণম্॥ ৯॥
যজন্ যজান্ যজত্যেনং জপত্যেনং জপন্ নৃপ!।
অংস্তর্থান্যং হিনস্ত্যেনং সর্বভূতো যতো হরিঃ॥ ১০॥
তথ্যাৎ সদাচারবতা পুরুষেণ জনার্দ্দিঃ।
আরাধ্যতে স্বর্ণোক্ত-ধর্মানুষ্ঠানকারিণা॥ ১১॥
ব্রাহ্মণঃ ক্ষজ্রিয়ো বৈশ্যঃ শৃদ্দেচ ধরণীপতে!।
স্বর্ধ্মতৎপরো বিষ্ণুম্ আরাধ্য়তি নান্যধা॥ ১২॥
পরাপবাদং পৈশুন্যম্ অনৃতঞ্চ ন ভাষতে।
অন্যোদ্ধাকরঞ্চাপি \* তোষ্যতে তেন কেশবঃ॥ ১০॥

যিনি ব্রাহ্মণ ক্ষজিয় প্রভৃতি বর্ণ সমুদায়ের ও ব্রহ্মচর্য্য প্রভৃতি আশ্রম চতুইয়ের ধর্ম ও আচার যথারীতি পালন করেন, তাঁহারই সেই পরম পুরুষ বিষণুর আরাধনা করা হয়, এতদ্বাতীত বিষণুর পরিতোষ দনক অন্য পথ কিছুই নাই। বিনি যজ্ঞানুষ্ঠান করেন, তাঁহার দেই বিষণুর যাজন করা হয়, যিনি ক্ষপ করেন, তাঁহার দেই বিষণুরই জপ করা হয়, যিনি কাব করিব হিংসা করেন, তাঁহার দেই বিষণুরই জপে করা হয়, যিনি কোন জীব হিংসা করেন, তাঁহার দেই বিষণুরই হিংসা করা হয়, কারণ বিষণু সর্বভৃতময়। তাহা হইলেই ভগবান্ জনার্দ্দনের আরাধনা করা হইবে। তাহা হইলেই ভগবান্ জনার্দ্দনের আরাধনা করা হয় ধর্মে রভ থাকিলেই বিষণুর আরাধনা করা হয়, সন্দেহ নাই। তামিন সমক্ষে বা পরোক্ষে পরনিন্দা বা খলতা না করেন, যিনি মিথ্যা কথা না করেন, যিনি মিথ্যা কথা না কহেন, যিনি স্কন্থা কোন কার্য্য না করেন, যেনি তথা না করেন, যেনি স্কন্থা কোন কার্য্য না করেন যে, তদ্ধারা

<sup>\*</sup> অন্তবেগকরকাপি ইত্যপরে পঠিত্তি

পরপত্নী-পরদ্রত্য পরহিং সাস্ত্র যো মতিম্।
ন করোতি পুমান্ ভূপ! তোষ্যতে তেন কেশবঃ॥ ১৪॥
ন তাড়য়তি নো হত্তি প্রাণিনোহন্যাংশ্চ দেহিনঃ।
যো মন্ত্র্যো মন্ত্র্যক্রণ! ভোষ্যতে তেন কেশবঃ॥ ১৫॥
দেবদ্বিজগুরুলাং যো \* শুক্রামান্ত্র সদোদ্যতঃ।
তোষ্যতে তেন গোবিনদঃ পুরুষেণ নরেশ্বর!॥ ১৬॥
যথাত্মনি চ পুত্রে চ সর্ব্বভূতেরু যন্ত্রথা।
হিতকামো হরিস্তেন সর্ব্বদা তোষ্যতে স্রথম্॥ ১৭॥
যস্য রাগাদিদোষণে ন দুইং নূপ! মানসম্†।
বিশুদ্ধচেত্রসা বিফুস্থোষ্যতে তেন সর্ব্বদা॥ ১৮॥
বর্ণাশ্রমেরু যে ধর্মাঃ শাস্ত্রোক্তা নূপত্রম!।

কোন জীবের উদ্বেগ জনিতে পারে, তাঁহার প্রতিই ভগবান্ বিষ্ণু পরিতৃষ্ট হন। তাঁ রাজন্! যিনি পরপদ্ধী-হরণে পরদ্রব্য-গ্রহণে বা পরহিংদা-করণে মতি না করেন, তাঁহার প্রতিই ভগবান্ বিষণু পরিতৃষ্ট হন। তাঁ যিনি কোন জাবকে বা উদ্ভিদ্কে বিনষ্ট না করেন বা প্রহার না করেন, তাঁহার প্রতিই ভগবান্ বিষণু পরিতৃষ্ট হন। তাঁ রাজন্! যিনি দেবতা, ব্রাক্ষণ ও গুরুর শুক্রাই সর্বাদা উদ্যুক্ত থাকেন, তাঁহার প্রতিই ভগবান্ বিষণু পরিতৃষ্ট হন। তাঁহার প্রতির সর্বাদাই উদ্ভাবরণ পরিতৃষ্ট থাকেন। তাবে করেন, তাঁহার প্রতি হরি সর্বাদাই উদ্ভাবরণ পরিতৃষ্ট থাকেন। তাবে দ্বিত নহে, সেই বিশুদ্ধ-

<sup>\* (</sup>मर्वाचयक्तक्रांशक इंडि वा श्रे।

<sup>🕈</sup> ন তুইং দুপ ! মানসন্ ইতি পাঠাকরম্।

তেষু তিষ্ঠন্ নরে। বিষ্ণুমারাধয়তি নান্যথা॥ ১৯॥ সগর উবাচ।

তদহং শ্রোতুমিচ্ছামি বর্ণধর্মানশেষতঃ। তথৈবাশ্রমধর্মাংশ্চ \* দ্বিজবর্যা! ব্রবীহি তান ॥ ২০ ॥ শুর্বে উবাচ।

বান্ধান্ধ জিয়বিশাং শূড়াণাঞ্চ যথাক্রমন্।
ত্বমকার্থমনা ভূত্বা শৃণু ধর্মান্ ময়োদিতান্॥ ২১॥
দানং দদােৎ যজেদ্ দেবান্ যজৈঃ স্বাধ্যায়তৎপরঃ।
নিত্যোদকী ভবেদ্বিগ্রঃ কুর্যাচ্চাগ্রিপরিগ্রহম্॥ ২২॥
বৃত্ত্যর্থং যাজ্যেক্ষান্যান্ অন্যানধ্যাপয়েৎ তথা।

শাস্ত্রে যে সমুদায় বর্ণাশ্রমের ধর্ম নির্দিষ্ট আছে, যে ব্যক্তিতাহাতে রত থাকেন অর্থাৎ যে মনুষা স্বীয় বর্ণের ও স্বীয় আশ্র-মের বিহিত ধর্ম অতিক্রম না করেন, বিষণু তাঁহার প্রতিই পরি-তুষ্ট হন, তাহার জন্যথা হয় না 1°

সগর কহিলেন, দ্বিজশ্রেষ্ঠ! এক্ষণে আমি আশ্রমধর্ম ও বর্ণধর্ম শ্রবণ করিতে বাসনা করি, অনুগ্রহ করিয়া সমুদায় বলুন। ১°

ন্তবি কহিলেন। আমি ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশা ও শুক্রদিগের ধর্ম যথাক্রমে বলিতেছি, তুমি একাঞ্চিন্ত হইয়া শ্রেবণ কর। ১০ ব্রাহ্মণের কর্ত্তব্য এই যে, দান করিবে, যজ্ঞ দারা দেবতার আরাধনায় নিযুক্ত থাকিবে, বেদাদি অধ্যয়ন করিবে, নিত্য স্থান-তর্পণাদিতে রত হইবে এবং অগ্নিপরিগ্রহ করিবে। ১০ ব্রাহ্মণজাতি জীবিকার নিমিন্ত কাহারো যাজন করিবে, কাহাকেও বা অধ্যয়ন করাইবে, শুরুতর কার্য্য উপস্থিত হইলে বা গুরুদক্ষিণার আবশ্যক হইলে

কুর্যাৎ প্রতিগ্রহাদানং শুর্বর্থং ন্যায়তো দ্বিজঃ ॥ ২৩ ॥
সর্বভূতহিতং কুর্যাৎ নাহিতং কস্সচিদ্বিজঃ ।
নৈত্রী সমস্তভূতেরু \* ব্রাহ্মণস্যোত্তমং ধন্য ॥ ২৪ ॥
আবে রত্নে চ পারক্যে সমরুদ্ধির্ভবেদ্বিজঃ ।
ঋতাবভিগনঃ পত্ন্যাং শস্যতে চাস্য পার্থিব ! ॥ ২৫ ॥
দানানি দদ্যাদিচ্ছাতো দ্বিজেভ্যঃ ক্ষব্রিয়োহিপি হি ।
যজেচ্চ বিবিধৈর্যজ্ঞৈরধীয়ীত চ পার্থিব ! ॥ ২৬ ॥
শক্রাজীবো মহীরক্ষা প্রবরা তস্য জীবিকা ।
তস্যাপি প্রথমে কম্পে পৃথিবীপরিপালন্য ॥ ২৭ ॥
ধরিত্রীপালনেনৈর ক্রতক্ত্যো নরাধিপঃ ।
ভবন্তি নৃপতেরংশা যভো যজ্ঞাদিকর্মণায় ॥ ২৮ ॥

ন্যায়ানুসারে প্রতিগ্রহ করিবে। ১° ব্রাহ্মণের কর্ত্তন্য এই যে, সর্ব্ব প্রাণীর হিতসাধনে নিযুক্ত থাকিবে, কখন কাহারে। অনিষ্টাচরণ করিবে না, কারণ সর্ব্ব প্রাণীর প্রতি সদয় ব্যবহারই ব্রাহ্মণের পরম ধন। ১° ব্রাহ্মণের কর্ত্তন্য এই যে, পরকীয় রত্ন ও প্রস্তার সমান দেখিবে। রাজন্! ঋতুকালে পত্নীগমন করাও ব্রাহ্মণের প্রশংস-নীয়। ১°

ক্ষজ্রিয়ের কর্ত্তব্য এই যে, ইচ্ছানুসারে ব্রাক্ষণকে দানাদি করিবে, বিবিধ যজ্ঞ দারা বিষ্ণুর আরাধনায় প্রবৃত্ত হইবে এবং শুরুর নিকট অধ্যয়ন করিবে। ' যুদ্ধ উপস্থিত হইলে শস্ত্রধারণ করা ও পৃথিবী রক্ষা করাই ক্ষজ্রিয়ের প্রধান জীবিকা। ইহার মধ্যে পৃথিবী পালন দারাই ক্ষত-কৃত্য হন, কারণ পৃথিবীতে যে সমুদায় যজ্ঞানুষ্ঠান হয়, রক্ষাকর্ত্তা

<sup>\*</sup> নৈত্ৰী সমস্থসত্বেমু ইভি বা পাঠ:।

দুষ্টানাং ত্রাসনাজাজা \* শিষ্টানাং পরিপালনাও।
প্রাপ্সোত্যভিষতান্ লোকান্ বর্ণসংস্থাকরো নৃপঃ † ২৯॥
পাশুপাল্যং বণিজ্যঞ্চ ক্রিঞ্চ মনুজেশ্বর!।
বৈশ্যায় জীবিকাং ত্রন্ধা দদৌ লোকপিতামহঃ॥ ৬০॥
তস্যাপ্যধ্যয়নং যজ্ঞো দানং ধর্মন্চ শস্যতে।
নিত্যনৈমিত্তিকাদীনাম্ অনুষ্ঠানঞ্চ কর্মণাম্॥ ৬১॥
দিজাতিসংশ্রয়ং কর্ম তাদর্থ্যং তেন পোষণম্।
ক্রয়বিক্রয়জৈর্কাপি ধনৈঃ কার্দ্ধবেন বা॥ ৬২॥
দানঞ্চ দদ্যাৎ শৃদ্রোহপি পাক্যক্তৈর্যজ্ঞেত চ।

রাজা তদীয় ফলের অংশভাগী হইয়া থাকেন। বিদ রাজা বদি বর্ণ সংস্থাপন পূর্বক দুষ্টের দমন ও শিষ্টের পালন করেন, তাহা হইলে আপনার অভীষ্ট স্বর্গাদি লোকে গমন করিয়া থাকেন। বি

ভূপতে! লোকপিতামহ ব্রহ্মা বৈশ্যজাতির এই ক্লপ জীবিকা স্থির করিয়াছেন যে, তাহারা পশুপালনে নিযুক্ত থাকিবে, বাণিজ্যে প্রস্তুত্ত হইবে ও কৃষিকর্ম করিবে ।°° অধ্যয়ন, যজ্ঞ, দান, এই বিতয়ও বৈশ্যের ধর্মা বলিয়া নির্দ্ধিট আছে। এতদ্বাতীত তাহার। অন্যান্য নিত্য নৈমিস্তিক ক্রিয়াকলাপও যথাবিধানে করিবে।°°

শূদ্রের কর্ত্ব্য এই যে, দ্বিজগণের শুক্রাৰা করিবে, তাঁহাদের অধীন হইয়া থাকিবে। শুক্রাৰা-লন্ধ-বেতনাদি দ্বারা জীবিকা নির্মাহ করিবে। এ সমুদায়ের অভাবে বাণিক্সা দ্বারা বা কারু-করের ব্যবসায় দ্বারা জীবিকা নির্মাহে প্রয়ন্ত হইবে। ২২ এত-

<sup>\*</sup> সুষ্টানাং শাসনাদ্রাজা অথবা দুষ্টানাং মাশনাদ্রাজা ইতি বা পঠনীয়ম্।

<sup>+</sup> বর্ণসংস্কারকো নৃপঃ ইতি বা পাঠঃ।

<sup>🕇</sup> বনিজ্ঞাণ অথবা বাণিজ্যক ইতি বা পাঠঃ।

পিত্র্যাদিকঞ্চ বৈ সর্ব্ধং শৃদ্রঃ কুর্ব্বীত তেন বৈ ॥ ৩৩ ॥
ভূত্যাদিভরণার্থায় সর্ব্বেষাঞ্চ পরিগ্রহঃ ।
ঋতুকালাভিগমনং \* স্থদারেয়ু মহীয়তে ! ॥ ৩৪ ॥
দয়া সমস্তভূতেয়ু তিতিক্ষানভিয়ানিতা ।
সত্যং শৌচমনায়াসো মঙ্গল্যং প্রিয়বাদিতা † ॥ ৩৫ ॥
বৈত্রস্থহা তথা তত্বৎ অকার্পণ্যং নরেশ্বর! ।
অনস্থ্যা চ সামান্যা বর্ণানাং কথিতা গুণাঃ ॥ ৩৬ ॥

দ্বাতীত শূত্রেরা দিল শুশ্রমাদিলক ধন দারা বৈশ্বদেব নামক যজ্ঞ অনুষ্ঠান করিবে, দানাদি সংকার্য্যে রত থাকিবে এবং পিতৃশ্রাদ্ধাদি সমুদায় নৈমিস্তিক ক্রিয়া কলাপ করিতেও প্রব্লুহু ইবে। ১৩

মহীপতে! ভ্তাদির ভরণ পোষণের নিমিন্ত সমুদায় বর্ণেরই অর্থোপার্জ্জন করা কর্ত্তিয়। সকল জাতিরই ধর্ম এই যে, ঋতুকালে স্বস্ত্রীতে গমন করিবে। " সমস্ত প্রাণীর প্রতি দয়া (পরদৃঃখনিবারণেছা) তিতিক্ষা (শীতোফাদি দ্বন্দ্র জনিত ক্লেশসহিষ্কৃতা) অনভিমানিতা (আত্মশ্রেষ্ঠ তারূপ অভিমানস্ন্যতা) সত্য (যথার্থ কথন ও যথার্থ ব্যবহার) শৌচ (সৃত্তিকা জলাদি দ্বারা বাহ্য শুদ্ধি ও ধর্মপ্রস্তি দ্বারা অন্তঃশুদ্ধি) অনায়াস ( যাহাতে শরীর পীড়িত না হয়, এরূপ পরিমিত পরিশ্রম) মঙ্গল (মাঙ্গলিক শেশভূষা ও চিহ্ন ধারণ) প্রিয়বাদিতা (সকলের প্রতি প্রিয় বাক্য প্রয়োগ) " নৈত্রী (সকলের প্রতি বন্ধুব্র ব্যবহার) অস্পৃহা ( যাহাতে সংসার যাত্রা নির্কাহ হয়, ভদ্বাতীত অধিক লোভ না করা) অকার্পণ্য (যথা-শক্তি দানাদি) অনস্থা (পরস্তুণে দোষাব্রাপ না করা) রাজন্!

<sup>🛊</sup> খাতুকালেহভিগমনন্ ইতি বা পাঠঃ।

<sup>🕈</sup> मलमः श्रियुवाषितः ইতি পাঠास्त्रम् ।

আশ্রমাণাঞ্চ সর্ক্রেষায় এতে সামান্যলক্ষণাঃ।
গুণাং স্তথাপদ্ধর্মাংশ্চ বিপ্রাদীনামিমান্ শৃণু॥ ৩৭॥
ক্ষাত্রং কর্ম দিজস্যোক্তং বৈশ্যকর্ম তথাপদি।
রাজন্যস্য চ বৈশ্যোক্তং শৃদ্ধকর্ম ন বৈ তয়েঃ॥ ৩৮॥
সামর্থ্যে সভি তৎ ত্যাজ্যম্ উভাভ্যামপি পার্থিব!।
তদেবাপদি কর্ত্বয়ং ন কুর্য্যাৎ কর্মসঙ্কর্ম॥ ৩৯॥

এই সম্দায় সমস্ত বর্ণেরই, গুণ বলিয়া কথিত হইয়া থাকে। \*\*
এই শুণশুলি আশ্রম চতুষ্টায়েরই সাধারণ লক্ষণ। অতঃপর ব্রাহ্মণ
প্রভৃতি চতুর্বর্ণের আপদ্ধর্ম অর্থাৎ স্ব স্ব ব্রস্তি দারা জীবিকা
নির্বাহ না হইলে কিরূপ ব্রস্তি অবলম্বন করা কর্ত্ব্যা, তাহা বলিতেছি, শ্রবণ কর। \*\*

যজন যাজন অধ্যয়ন অধ্যাপন প্রভৃতি ব্রাহ্মণ রুক্তি দারা জীবিকা নির্বাহ না হইলে ব্রাহ্মণ, ক্ষজ্রিয়ের ব্যবসায় অর্থাৎ প্রজ্ঞান শস্ত্র ধারণ প্রভৃতি দারা জীবিকা নির্বাহ করিবে। তদভাবে বৈশাকর্মে অর্থাৎ পশুপালন কৃষি বাণিজ্যাদিতে প্রস্তু হইবে। ক্ষজ্রিয়ও আপৎকালে বৈশ্য ব্যবসায় অবলম্বন করিতে পারিবে, পরস্তু ব্রাহ্মণ ক্ষজ্রিয় ও বৈশ্য কদাপি শূদ্রের ব্যবসায়ে অর্থাৎ দাসর্ক্তিতে প্রবৃত্ত হইবে না। দ্যান্তন্ ! যদি কোন রূপে কোন উপায় থাকে, তাহা হইলে ব্রাহ্মণ ক্ষজ্রিয় এবং বৈশ্য, শূদ্রের কর্ম্ম অবলম্বন করিবে না কিন্তু বিপৎকালে উপায়ান্তর না থাকিলে অগত্যা তাহাও অবলম্বন করিতে পারিবে। যাহাতে চতুর্বর্ণের রুক্তির পরস্পার সাহ্মর্য্য না হয়, তদ্বিষয়ে সকলেই স্ক্রতোভাবে যত্নবান্ থাকিবে। ভাবে যত্নবান্ থাকিবে।

ইভ্যেতে কথিতা রাজন্। বর্ণধর্মা ম্য়া তব। ধর্মমাশ্রমিণাং সম্যক্ ব্রুবতো মে নিশাময়॥ ৪০॥

# ইতি বিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২°শে বর্ণ-ধর্মো নাম অফমো ২ধ্যায়ঃ।

ভূপতে! এই আমি তোমার নিকট বর্ণচতুটীয়ের ধর্ম কহি-লাম। একণে আশ্রম চতুটীয়ের ধর্ম বলিতেছি, শ্রবণ কর <sup>১০</sup>

> বিষ্ণুপুরাণ ভৃতীয় অংশ বর্ণ-ধর্ম্ম-নামক অফম অধ্যায় সমাপ্ত।

বিষ্ণুপুরাণম্।
ভৃতীয়োহংশঃ।
নবমাধ্যায়ঃ।

### প্ৰবৰ্ষ উবাচ।

বালঃ ক্নতোপনয়নো বেদাহরণতৎপরঃ।
শুরুণেহে বসেজূপ! ব্রহ্মচারী সমাহিতঃ॥ ১॥
শৌচাচারবতা তত্র কার্যাং শুরুষণং গুরোঃ।
ব্রতানি চরতা গ্রাহ্যো বেদশ্চ ক্নতবুদ্ধিনা॥ ২॥
উত্তে সম্ব্যে রবিং ভূপ! তথৈবাগ্নিং সমাহিতঃ।
উপতিষ্ঠেৎ তথা কুর্যাৎ গুরোরপ্যভিবাদনম্॥ ৩॥
ছিতে তিষ্ঠেৎ ব্রজেদ্ যাতি নীচৈরাসীৎ তথা সতি।
শিষ্যো গুরো নৃপ্রেষ্ঠ! প্রতিকূলং ন সম্বজেৎ॥ ৪

উর্ব কহিলেন। রাজন্! বাল্যকালে যথন উপনয়ন হইবে তথন ব্রহ্মচারী হইয়া সমাহিতচিত্তে বেদ অধ্যয়নার্থ গুরুপ্থ বাস করিবে। বিধানে শুচিও বিশুজাচার হইয়া গুরুশুশ্রামান নিমুক্ত থাকিবে এবং নিভা প্রাজ্ঞাপত্যাদি-ব্রভানুষ্ঠান-পূর্বাক বুজি স্থির করিয়া গুরুর নিকট বেদ অধ্যয়ন করিবে। রাজন্! দুই সন্ধাণ সমাহিত হইয়া অয়ির উপাসনা ও স্থর্যের উপাসনা করিতে থাকিবে এবং ঐ উপাসনার পর গুরুকে নমস্কার করিবে। স্থপ-শ্রেষ্ঠ! গুরু দণ্ডায়মান হইলে দণ্ডায়মান হইবে, গুরু গমন করিলে গমন করিলে, গুরু উপবেশন করিলে হীন ব্যক্তির ন্যায় উপ-

ভেনৈবাক্তঃ পঠেদ্বেদং নান্যচিত্তঃ পুরঃস্থিতঃ।
অনুজ্ঞাতঞ্চ ভিক্ষান্ত্রমন্ত্রীয়াদ্যুক্রণা ততঃ॥ ৫॥
অবগাহেদপঃ পুর্বমাচার্য্যেণাবগাহিতাঃ।
সমিজ্ঞলাদিকঞ্চাস্য কলাং কল্যমুপানয়েৎ॥ ৬॥
গৃহীভগ্রাহ্যবেদশ্চ ততোহসুজ্ঞামবাপ্য বৈ।
গার্হস্থাবসেৎ প্রাজ্ঞো নিষ্পন্নগুক্তনিষ্কৃতিঃ॥ १॥
বিধিনাবাপ্তদারস্তঃ ধনং প্রাপ্য স্বকর্মণা।
গৃহস্থকার্য্যমথিলং কুর্যাদ্ ভূপাল! শক্তিতঃ॥ ৮॥
নিবাপেন পিতৃনর্চ্চেৎ যইজ্ঞেদেবাংস্তথাতিথীন্।

বিষ্ট হইবে, কথন প্রতিকূলাচরণ করিবে না। । গুরু ষতটুকু বেদ অধ্যয়ন করাইবেন, তাঁহার সমীপবন্তী হইয়া অনন্যচিন্তে ততটুকু অধ্যয়ন করিবে। গুরুর অনুজ্ঞা অনুসারে ভিক্ষা করিয়া সেই ভিক্ষায় ভোক্তনপূর্বক জীবন ধারণ করিবে। গ

স্নানের সময় আচার্যা অথে স্নান করিলে শিষ্য পশ্চাৎ স্নানে প্রেক্ত হইবে এবং প্রতিদিন প্রাতঃকালে কুশ জল পুষ্পা আহরণ করিয়া শুকুকে প্রদান করিবে। শিষ্য এই ক্লপে আপনার অধ্যেতব্য বেদ অধ্যয়ন করিয়া কৃতবিদ্য হইয়া শুকুকে দক্ষিণা প্রদানপূর্বক শুকুর অনুষতি লইয়া গৃহস্থাশ্রমে প্রবেশ করিবে।

রাজন্! (জ্ঞানী ব্যক্তি এই রূপে গৃহস্থাশ্রমে প্রবেশপূর্বক)
যথাবিধানে দারপরিগ্রহ করিবে। পরে স্বর্ক্ম অর্থাৎ যাজন
অধ্যাপন প্রভৃতি দারা ধনোপার্জন করিয়া যথাশক্তি সমুদায়
গৃহদ্-কার্য্য নির্বাহ করিতে থাকিবে। পিশুদানাদিদারা পিতৃগণকে, যজ্ঞদারা দেবগণকে, অন্তদারা অতিথিগণকে স্বাধ্যায়দারা

<sup>\*</sup> বিধিমা চাঞ্ডবারস্ত ইতি বা পাঠঃ।

অনৈ মুনীংশ্চ স্বাধ্যায়ৈরপত্যেন প্রজাপতিম্। ৯। বলিকর্মণা চ ভূতানি বাক্সত্যেনাথিলং জগৎ\*। প্রাপ্রোতি লোকান্ পুরুষো নিজকর্মসমর্জ্জিতান্।। ১০॥ তিক্ষাভুজশ্চ যে কেচিৎ পরিব্রাট্-ব্রন্মচারিণঃ। তেইপ্যবৈর প্রতিষ্ঠত্তে গার্হস্থাং তেন বৈ পরম্। ১১॥ বেদাহরণকার্যোণ তীর্থস্নানার চ প্রভো!। অটন্তি বস্থধাং বিপ্রাঃ পৃথিবীদর্শনার চ॥ ১২॥ অনিকেতা হ্যনাহারা যে তু সায়ংগৃহাশ্চ তে। তেষাং গৃহস্থঃ সর্কেষাং প্রতিষ্ঠাযোনিরেব চ॥ ১৩॥ তেষাং স্কৃত্যঃ সর্কেষাং প্রতিষ্ঠাযোনিরেব চ॥ ১৩॥

ঋষিগণকে, সন্তান উৎপাদন দ্বারা প্রজ্ঞাপতিকে, বলিকর্ম অর্থাৎ ভূতোপহার-প্রদান-দ্বারা ভূতগণকে, এবং সত্য বাক্য দ্বারা সমুদায় লোককে অর্চিত করিবে। লোকে এইরপ ব্যবহার করিলে স্বীয়-কর্মদ্বারা উপার্জিত পুণ্যলোকে গমন করে। ' যে সকল পরিব্রাক্তক বা ব্রহ্মদ্বারা ভিক্ষাদ্বারা জীবন ধারণ করেন, গৃহস্থই তাঁহাদ্বের অবলম্বন, স্থতরাং গার্হস্থ্য আশ্রমই শ্রেষ্ঠ। ' ব্রাক্ষণেরা বেদসংগ্রহের নিমিক্ত অথবা পৃথিবী-দর্শনের নিমিক্ত পৃথিবী পরিত্রমণ করিয়া থাকেন। ' ইহাদ্বের মধ্যে অনেকেই আহার—আহরণে বিরত ও গৃহ-রহিত। তাঁহারা ভ্রমণক্রমে সায়ংকালে বেখানে উপস্থিত হন তাহাই তাঁহাদের আবাস। গৃহস্থ এই সকল ব্যক্তির আশ্রম্বরূপ। ' রাজন্ ! এই সকল ব্যক্তির যথন গৃহত্ব জাগমন করিবে তথন গৃহস্থ, কুশল জিজ্ঞাসা করিয়া মধুর বাক্য কহিবে

<sup>\*</sup> বাক্সভোনাখিলং জনম্ ইতি পঠিছিবম্।

न बक्तवार मधूबर बठ: इंडि वा श्रवेमीयम्।

গৃহাগতানাং দদ্যাক্ত শায়নাসনভোজনম্॥ ১৪॥
অতিথির্ঘস্য ভ্যাশো গৃহাৎ প্রতিনিবর্ত্ত।
স তথ্য দুক্তং দত্ত্বা\* পুণ্যমাদায় গচ্ছতি॥ ১৫॥
অবজ্ঞানমহন্ধারো দস্তশ্চৈব গৃহে সতঃ।
পরিতাপোপখাতো চ পারুষ্যঞ্চ ন শাস্তে॥ ১৬॥
যস্ত সম্যক্ করোত্যেবং গৃহস্থঃ পরমং বিধিম্।
সর্কবিন্দ্রিত্তা † লোকানাপ্রোত্যস্ত্রমান্॥ ১৭॥
বয়ঃপরিণতো রাজন্! রুত্রুত্যো গৃহাশ্রমী।
পুত্রেষু ভার্যাং নিঃক্ষিপ্য‡ বনং গচ্ছেৎ সইহব বা॥১৮॥
পর্ণমূলফলাহারঃ কেশশাশুজ্জটাধরঃ।

এবং যথাশক্তি আহার আসন ও শযা। প্রদান করিবে। ই অতিথি যদি হতাশ হইয়া গৃহ হইতে ফিরিয়া যায়, তাহা হইলে, সে স্বীয় দুষ্কৃত প্রদানপূর্বক গৃহস্থের সঞ্চিত পুণ্য লইয়া গমন করে। ই অতিথির প্রতি অবজ্ঞা, অহঙ্কার-প্রকাশ, দম্ভ, দান করিয়া পরি-তাপ, প্রত্যাখ্যান ও নিষ্ঠুরতা, এই সমুদায় করিলে গৃহস্থের অখ্যাতি হয়। ই বে গৃহস্থ এই সমুদায় উস্তম বিধি অনুসারে কার্য্য করেন, তিনি সমুদায় সংসার-বন্ধন হইতে মুক্ত হইয়া পরকালে উস্তম লোকে গমন করিয়া থাকেন। ই ব

রাজন ! গৃহস্থ এইরপে সমুদায় গৃহস্থের কর্ত্তব্য কর্ম সমাধান করিয়া বয়ঃপরিণতি হইলে পত্নীকে পুত্রের নিকট অর্পণ করিয়া অথবা পত্নীর সহিত বনগমন করিবে। ১৮ ভূপাল ! অনন্তর বনে বাস করিয়া, কেশ শাশ্রু ও জটাধারী হইয়া, ফল মূল ও রক্ষের পত্র

<sup>\*</sup> স पद्मा पूक्षा उत्य हे जि वा পঠাতাম।

প্ৰক্ৰিমুক্তোহসে ইতি বা পঠিতবায়।

<sup>🕽</sup> পুত্রে শভার্ন্যাং মিঃকিপ্য ইতি পাঠান্তরম্।

ভূমিশায়ী তবেৎ তত্র মুনিঃ সর্ব্বাভিধিন্প!॥ ১৯॥
চর্মকাশকুলৈঃ কুর্য্যাৎ পরিধানোন্তরীয়কে।
তদ্বৎ ত্রিসবনং স্থানং শস্তমস্য নরেশ্বর !॥ ২০॥
দেবতাভ্যর্চনং হোমঃ সর্ব্বাভ্যাগতপুজনম্।
ভিক্ষা বলিপ্রদানঞ্চ শস্তমস্য নরেশ্বর \*॥ ২১॥
বন্যমেহেন গাত্রাণামভ্যক্ষলাস্য শস্যতে।
তপস্যতক্ষ রাজেন্দ্র! শীতোফাদিসহিফুভা॥ ২২॥
যন্তেভাং নিহিতক্ষর্যাং † বানপ্রস্থশ্চরেম্মুনিঃ।
স দহত্যগ্রিবদ্ দোধান্ জয়েলোকাংশ্চ শাশ্বভান্॥২৩॥
চতুর্থশ্চাশ্রমে। ভিক্ষোঃ প্রোচ্যতে যো মনীবিভিঃ।

আহারপূর্মক ভূমিতে শয়ন করিবেন। এবং মুনিরুদ্ধি অবলম্বনপূর্মক সকলের প্রতিই সাধু ব্যবহার ও পূজা করিতে প্রস্কু হইবেন। তর্ম, কাশ বা কুশ দ্বারা পরিধেয় ও উদ্ভরীয় বস্ত্র করিবেন। নরেশ্বর! এইরপ ত্রিসদ্ধ্যা স্নান করাও বনবাসীর পক্ষে প্রশন্ত । বর্মার হিলে পূজা করা হোম করা অভ্যাগত ব্যক্তি সমুদায়ের যথাবিহিত পূজা করা ভিক্কুককে ভিক্ষা দান করা দেবভাদ্দেশে পূজোপহার প্রদান করা গৃহস্থের কর্ত্ববা । বর্মার প্রায় প্রদান করা গৃহস্থের কর্ত্ববা । বর্মার ও প্রীয় সহ্য করিয়া তপস্যা করিতে থাকিবে । বর্মার তব্যার তব্যার করেন, তিনি ভ্তাশনের ন্যায় আত্মদোষ সমুদায় দক্ষা করিতে থাকেন এবং শাশ্বত লোক অর্থাৎ ব্রহ্মালোক প্রাপ্ত হন। বর্মান বরং শাশ্বত লোক অর্থাৎ ব্রহ্মালোক প্রাপ্ত হন। বর্মান বরং শাশ্বত লোক অর্থাৎ ব্রহ্মানের প্রাপ্ত হন। বর্মান করেণ প্রাণ্ড হন। ব্যক্তিন প্রাণ্ড হেনা । ব্যক্তিন প্রাণ্ড হেনা । ব্যক্তিন প্রাণ্ড হেনা । ব্যক্তিন প্রাণ্ড হেনা । ব্যক্তিন প্রাণ্ড হেনা হার হার হেনাক প্রাণ্ড হন। ব্যক্তিন প্রাণ্ড হেনাক প্রাণ্ড হেনাক প্রাণ্ড হন। ব্যক্তিন প্রস্তান প

<sup>\*</sup> ডচ্চ ত্ৰিৰবণস্থানং ইতি বা পাঠায়।

ተ যতে ভাং নিয়ত কৰ্মাণ্ ইতি ৰা পাঠ:

তস্য স্থরপং গদতো নম শ্রোতুং নৃপার্হসি॥ ২৪॥
পুত্রদ্বাকলত্ত্বে ভাক্ত স্থে নে নরাধিপ।।
চতুর্থমাশ্রমং স্থানং গচ্ছেরিপূ ত্মৎসরঃ॥ ২৫॥
তৈবর্গিকাংস্তাজেৎ সর্কানারন্তানবনীপতে।।
মিত্রাদিরু সমো মৈত্রঃ সমস্তেদেব জন্তমু॥ ২৬॥
জরায়ুজাওজাদীনাং বাঙ্মনঃকর্মভিঃ কচিৎ।
যুক্তঃ কুর্বী ত ন দ্রোহং সর্বস্থাংশ্চ বর্জ্জয়েৎ॥ ২৭॥
একরাত্রন্থিতিপ্রামে পঞ্চরাত্রন্থিতিঃ পুরে।
তথা তিঠেদ্যথা প্রীতিদ্বো বাস্য ন জায়তে \*॥২৮॥

স্থপ! পশ্তিতেরা; চতুর্থ আশ্রেমকে ভিক্কুর আশ্রেম বলিয়া।
থাকেন। একণে ভিক্কুর আশ্রেমের স্বরূপ বলিডেছি, শ্রেব।
কর। বি নরাধিপ! বানপ্রস্থ-মুনি, পুত্র কলত্র ও সমুদায় দ্রেবের
মমতারহিত হইয়া মাৎসর্য্য পরিভ্যাগপূর্বক চতুর্থ আশ্রেমে
প্রবেশ করিবে। বি অবনীপতে! ভিক্কু ব্যক্তি ধর্ম অর্থ ও কামরূপ
ত্রিবর্গসাধন সমুদায় আরম্ভ অর্থাৎ বেদবিহিত যাগাদির অনুষ্ঠান
পরিভ্যাগ করিয়া (ব্রন্ধনিষ্ঠ হইবেন) এবং শক্রু, মিত্র ও ক্ষুদ্রে
ইহৎ সমুদায় প্রাণীর প্রভিই সমান সদয় ব্যবহার করিবেন। বি
বাক্য, মন বা কর্ম্ম দ্বারা করায়ুক্ত অন্তক্ত প্রেভিবন প্রাণীরই
কর্মন অনিষ্টাচরণ করিবেন না। সর্বাদা যোগস্কুক্ত থাকিবেন ও
সকলের সংসর্গ পরিভ্যাগ করিবেন। বি কোন প্রাণির
অধিক ও কোন নগরে পঞ্চ রাত্রির অধিক বাস করিবেন না। ইহার
মধ্যেও যেখানে মনের প্রীতি ক্রম্মে ও দ্বেহংসাদির উদ্রেক
না হয়, এরপ স্থানে পাকিবেন। বি মে সময় গৃহত্বের পাকাদির

स्वत्वा वा मात्रा कावरक के कि वा भोतीयम् ।

প্রাণযাত্রানিমিত্তঞ্চ ব্যঙ্গারে ভুক্তবজ্জনে।
কালে প্রশস্তবর্ণানাং ভিক্ষার্থং পর্যটেদ্ গৃহান্॥ ২৯॥
কামঃ ক্রোধস্তথা দর্প-মোছ-লোভাদয়ক্ষ যে।
তাংস্ত দোষান্ পরিত্যজ্ঞা পরিব্রাট্ নির্ম্মমোভবেৎ॥৩০॥
অভয়ং সর্ব্রসত্ত্যো দত্ত্বা যক্ষরতে মুনিঃ।
ন তদ্য সর্ব্রসত্ত্যো ভয়মুৎপদ্যতে ক্ষ্যিৎ॥ ৩১॥

কৃত্বাশ্বিহোত্রং স্বশরীরসংস্থং
শারীরম্থিং সমুখে জুহোতি।
বিপ্রস্তু ভিকোপগতৈর্হবির্ভিঃ
চিতাগ্রিনা স ব্রজতি স্ম লোকান্॥ ৩২॥
মোক্ষাপ্রমং যশ্চরতে যথোক্তং
শুচিঃ স্বসঙ্কাপ্পিতবুদ্ধিযুক্তঃ।

অগ্নি নির্বাণ হইবে, যে সময় সকলেই আহার করিবে, ঈতৃশ সময়ে প্রাণযাত্রা নির্বাহের নিমিন্ত ভিক্ষার উদ্দেশে প্রশস্ত বর্ণের অর্থাৎ ব্রাক্ষণাদির গ্রহে পর্যাটন করিবে। ১০ পরিব্রাট্ ব্যক্তি কাম ক্রোধ লোভ মোহ অহঙ্কার প্রভৃতি সমুদায় দোব পরিভ্যাগ পূর্বক নির্মান হইবে। ১০ থে মুনি সর্বপ্রাণীকে অভয় দান করিয়া বিচরণ করেন, কোন প্রাণী হইতে উাহার ভয়ের সম্ভাবনা থাকে না। ১০ থে ব্রাক্ষণ চতুর্থ আশ্রমে শারীরিক অগ্নিকে অগ্নিহোত্রস্বরূপ স্থানীরে সংস্থাপন করিয়া ভিক্ষান্ত্রপ হব্য হারা আস্মুর্থে হোম করেন, তিনি সাগ্লিক ব্রাক্ষণদিগের প্রাণ্য উদ্ভেম লোকে গমন করিয়া থাকেন। ১০ যে ব্রাক্ষণ, ব্রক্ষভিন্ন সমুদায় মিথাা, সমুদায় জগৎ ব্রক্ষেরই সম্বন্সাত্ত, এইরপ জ্ঞানযুক্ত হইয়া, যথোক্ত বিধানে পরম পবিত্র মুক্তির সাধন চতুর্থ আশ্রমের

অনিস্কানং জ্যোতিরিব প্রশান্তং স ব্রহ্মলোকং জয়তি দ্বিশ্বাতিঃ॥ ৩৩॥

# ইতি এবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়েহ পশে যতিপর্দ্যো নাম নবমোহধ্যায়ঃ।

অনুষ্ঠান করিবেন, তিনি অনিস্কান জ্যোতিঃস্থান ও প্রশাস্ত অর্থাৎ শোকমোহাদি-বিবর্জিত শাস্তির আশ্রয় ব্রহ্মলোকে গমন করিবেন। ত

> বিষ্ণুপ্রাণ তৃতীয় অংশ যতিধর্ম-নামক নবম অধ্যায় সমাপ্ত।

বিষ্পুরাণম্।

তৃতীয়োহংশঃ।

मन्याशायः।

সগর উবাচ।

কথিতঞ্চাতুরাশ্রম্যং চাতুর্বর্ণ্যক্রিয়া তথা।
পূংসঃ ক্রিয়ামহং শ্রোতুমিচ্ছামি দিজসন্তম!॥>॥
নিত্যাং নৈমিত্তিকীং কাম্যাং ক্রিয়াং পুংসামশেষতঃ।
সমাখ্যাহি ভ্গুশ্রেষ্ঠ! সর্বজ্যো হাসি মে মতঃ॥২॥
ভর্বি উবাচ।

ষদেতদুক্তং ভবতা নিজনৈমিত্তিকাঞ্চিত্ম।

সগর কহিলেন, দিজশ্রেষ্ঠ ! আপনি আশ্রম-চতুষ্টয়ের ধর্ম ও
চতুর্বর্নের ক্রিয়া সমুদয় বলিলেন, এক্ষণে আপনার নিকট মনুষ্যের
জাতকর্মপ্রভৃতি ক্রিয়াকলাপ শ্রবণ করিতে বাসনা করি। ভৃষশ্রেষ্ঠ ! আমি অবগত আছি যে, আপনি সর্বজ্ঞ, অতএব আপনি
মানবগণের নিত্য নৈমিস্তিক ও কাম্য কর্ম সমুদায় বিশেষ রূপে
বিলুন। ব

ঔর্ক কহিলেন, রাজন্! আপনি আমার নিকট যে নিত্য-নৈমিভিক-ক্রিয়াকলাপ-বিষয়ক প্রশ্ন করিলেন, তাহা আনুপূর্কিক

নিতা কৰ্ম-প্ৰভাৰায়-পরিহারাদি-জন্য প্রতিদিন ক্রিয়মাণ সন্ধাৰন্দন শেইচ আচমন প্রভৃতি। নৈমিন্তিক কর্ম-গ্রহণকালাদিতে অবশ্যকর্ভবা স্থান দান প্রভৃতি। কাম্য কর্ম-ন্থাতোগাদিরপ্ৰকলমক দান পুন্ধা বাগ প্রভৃতি।

তদহং কথয়িব্যামি শৃণুষ্কেমনা নৃপ! \*॥ ৩॥
জাতস্য জাতকর্মাদিক্রিয়াকাগুমশেষতঃ।
পুত্রস্য কুর্কীত পিতা শ্রাদ্ধপাত্যুদয়াত্মক্য ॥ ৪॥
যুখাংস্ত প্রাঙ্মুখান্ বিপ্রান্ ভোজয়েম্ময়জেশ্বর!।
যথাবৃত্তি তথা কুর্যাৎ দৈবং পিত্রাং† দিজম্মনাম্॥ ৫॥
দ্বা যবৈঃ সবদরৈমিশ্রান্ পিগুান্ মুদা যুতঃ।
নান্দীমুখেভ্যন্তীর্থেন দদ্যাদ্দৈবেন পার্থিব!॥ ৬॥
প্রাজাপত্যেন বা সর্ব্যমুপচারং প্রদক্ষিণম্।
কুর্কীত তত্তপাহশেষ-বৃদ্ধিকালেয়ু ‡ ভূপতে!॥ ৭॥
ততশ্চ নাম কুর্কীত পিতৈব দশ্যেষ্ট্নি।

বলিতেছি, একমনা হইরা শ্রবণ করন। পুত্র জানিবামাত্র পিতা তাহার জাতকর্ম প্রভৃতি সমুদায় ক্রিয়াকাপ্ত ও আভ্যুদ্যিক শ্রাদ্ধ করিবেন। পাত্যুদ্যিক-শ্রাদ্ধ-কালে দুই জন ব্রাহ্মণকে পূর্ম মুখে বসাইয়া ব্যবহার ও কুলাচার অনুসারে দেবপক্ষের ও পিতৃ— পক্ষের শ্রাদ্ধকর্ম সম্পাদন করিতে হইবে। বাজন্! সম্ভৃত চিত্তে দ্ধি থম ও বদর মিশ্রিত পিপ্ত প্রস্তুত করিয়া অঙ্গুলির অগ্রভাগ-ছারা বা অঙ্গুলি-মূল্ছারা নাদ্দীমুখ পিতৃগণকে প্রদান করিবে। প্রথবা কনিষ্ঠান্ধ লিমুল্ছারাই সমুদায় উপচারদ্রব্য প্রদান করিতে পারিবে। ভূপতে! সমুদায় র্জিশ্রাদ্ধকালেই প্রদক্ষিণ করা আ

অনস্তর পুরোৎপত্তির দশম দিবসে পিতা নামকরণ করিবেন।

আদি পদ থাকাতে পিতাকেই গর্ভাধান পুংসবন প্রস্তৃতি কর্ম করিতে হইবে।।

<sup>\*</sup> পুণু চৈক্ষমা দুপ ! ইভি বা পঠিঃ।

<sup>†</sup> বৰাবিধি ভৰা কুৰ্ব্যাৎ বৈৰং গৈজ্যম্ ইতি পাঠান্তরম্। ভথাপেৰং বৃধিকালের ইতি বা পঠাতাম্।

দেবপূর্কাং নরাখ্যং হি শর্মবর্মাদিসংযুত্ম । ৮।
শর্মেতি ব্রাহ্মণস্থ্যেতং বর্মেতি ক্ষল্রসংশ্রম্।
শুপুদাসাত্মকং নাম প্রশস্তং বৈশ্যশূদ্রোঃ। ৯।
নার্থহীনং নবাশস্তং নাপশন্ত্যং তথা।
নামলল্যং জুগুপাং বা নাম কুর্যাৎ সমাক্ষরম্।। ১০।
নাতিদীর্ঘং ন হ্রং বা নাভিগুর্কক্ষরাশ্বিতম্।
সুখোচ্চার্যন্ত তন্নাম কুর্যাদ্ যথ প্রবশক্ষরম্। ১১।
ততোহনন্তরসংক্ষারসংক্ষতো গুরুবেশ্যনি।

(পুরুষের নাম) পুরুষ-বাচক হইবে। নামের প্রথম দেবতার নামও শেষে শর্মা বর্দ্ধা প্রভৃতি পাকিবে । ব্রাক্ষণের নামের অন্তে শর্মা, ক্ষত্রিয়ের নামের অন্তে বর্মা ও বৈশ্য শূদ্রের নামের অন্তে শুপ্ত দাস প্রভৃতি বিনান্ত করা প্রশন্ত কম্প। অর্থহীন অপ্রশন্ত অপত্রংশ-শব্দ-যুক্ত অমঙ্গলা ও জুপ্তক্ষিত নাম ব্যবহার করিবে না। নামের অক্ষরগুলি বিষম না হয়। "পিতা, অনতিদীর্ঘ অনতি হুস্থ অনতি-সংযুক্তাক্ষর-বিশিষ্ট সুখোচ্চার্য্য কোমল অক্ষর যুক্ত নাম নির্দেশ করিবেন। "

ছুৰ্গাদান শৰ্মা এ স্থলে দান শব্দটী পুক্ৰবৰাচক, ছুৰ্গা কুলদেৰভাৱ নাম, শৰ্মা এই পদ শেষে বিন্যুম্ভ ইইয়াছে। অথবা জ্ৰীজ্ঞানেজনাথ শৰ্মা ইজ্ঞাদি স্থলে জ্ৰী এইটী দেবভার নাম প্ৰথমে থাকিল।৮

পুর্বের পর্দা বর্দা প্রভৃতি নাষেরই অংশ ছিল, বথা—সোম শর্দা,বিশু শর্দা, ইজ∸ বর্দা, চল্ল ঋগু, পিব দাস ইত্যাবি। একতে ঐগুলি বাম হইতে পৃথক হইরা উপাধিবরূপ হইরাছে; বথা—সোমনাথ শর্দা, ইল্লমারারণ বর্দা, চল্লকুমার ঋগু, বিবনাথ দাস ইত্যাবি।>

অর্থহীন—ছাতু, লাটু, হরু, ছুমো, থোপন প্রভৃতি। অপ্রশস্ত—নিগছর, রসিক্ষ-লাল প্রভৃতি। অপঞ্র-শন্ধ-যুক্ত—বলাইচাল, কানাইলাল, ভিনক্তি, নদের চাল, গুয়ে, গোবরা ইডাালি। অমলল্য—ছুজ্ঞনাথ, খালামপতি, রাছ, শনি প্রভৃতি। কুঞ্জিত—বালগোপাল, প্রাণমাথ ইড্যালি। বিষয় সাক্ষর—মহেন্তানাথ প্রভৃতি।১০ যথোক্তং বিধিমাঞ্জ্য কুর্যাদ্ বিদ্যাপরিএইম্॥ ১২॥
গৃহীতবিদ্যা গুরবে দল্পা চ গুরুদক্ষিণাম্।
গার্হ্যমিচ্ছন্ ভূপাল! কুর্যাদ্যরপরিএইম্॥ ১৩॥
ব্রহ্মচর্যোণ বা কালং কুর্যাৎ সঙ্কম্পপূর্বকম্।
গুরোঃ শুক্রমণং কুর্যাৎ তৎপুত্রাদেরপাপি বা॥ ১৪॥ .
বৈধানদো বাপি ভবেৎ প্রভ্রেদ্যা মথেছয়।
পূর্বসঙ্কম্পিতং যাদৃক্ তাদৃক্ কুর্য্যামহীপতে!॥ ১৫॥
বর্ষিরেকগুণাং ভার্যামুদ্ধেৎ ত্রিগুণঃ শ্বয়ন্।

অনস্তর বালক তৎপরবর্ত্তী সংস্কারে সংস্কৃত হইয়া গুরুগৃহে
গমনপূর্বক যথাবিধানে বিদ্যাভ্যাস করিতে প্রবৃত্ত হইরা গুরুদ্দিণা
রাজন্! (গুরুকুলে অবস্থানপূর্বক) কৃতবিদ্য হইয়া গুরুদ্দিণা
প্রদান করিবে। পরে গৃহছাশ্রমে প্রবেশ করিবার অভিলাবে
দারপরিগ্রহ করিবে ' অথবা ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বনপূর্বক জীবন
ভাতিবাহন করিবার সংকশ্প করিয়া যাবজ্জীবন গুরুর বা গুরুপুত্রাদির সেবা করিতে থাকিবে।' কিংবা ঐক্রপ সংকশ্পপূর্বক
খনবাসী হইবে অথবা প্রব্রক্তা অবলম্বন করিয়া যথা ইচ্ছা ভ্রমণ
করিয়া বেড়াইবে। মহীপতে! যিনি যেরূপ কর্মন্ পূর্বের্ম সংকশ্প

যিনি গৃহস্থাশ্রমে প্রবিষ্ট হইবেন, তিনি যে করা। বিবাহ করি-বেন, তাহার বয়ক্তমে আপনার বয়ক্তমের তৃতীয়াংশ হইবে। ' অতিকেশা বা অপ্যকেশা, অতিক্ষাবর্ণা বা অতিপিক্সবর্ণা কন্যা

তৎপরবর্ত্তী সংকার—মিজুসণ, অন্নপ্রোশন, চূড়াকরণ ও উপনয়ন। ১২
বস্থু বলিয়াছেন বে, ব্রিংশৎ বর্ষ বন্ধ:ক্রমকালে গুক্তকুল হইতে প্রতিনিত্বত হইয়া
ভাদনবর্ষীয়া কন্যা বিবাহ করিবে, অথবা চতুর্বিংশতিবর্ষ বয়সের সময় অইবর্ষীয়া
ক্রমার পাণিগ্রহণ করিবে; ইহার পুর্বেষ বিবাহ করিলে ধর্মহানি হয়। চতুর্বিংশতি
বর্ষ বয়কেমে গুলুষাগ্রমে প্রবেশ করাই বিশুপুরাণের অভিপ্রেত। ১৬

নাতিকেশানকেশাং বা নাতিক্ষণং ন পিকলান্॥১৬॥
নিদর্গতো বিকলাকীমধিকাকীং চ নোছছে ।
নাবিশুদ্ধাং সরোগাং বা কুলজাং বাতিরোগিণীন্॥১৭॥
ন দুউাং দুউবাচাটাং\* ব্যক্তিনীং পিতৃমাতৃতঃ।
ন শুশ্রুব্যঞ্জনবতীং নচৈব পুরুষাক্ষতিন্॥ ১৮॥
ন ঘর্ষরশং ক্ষামবাক্যাং কাকস্বরাং ন চ †।
নানিবদ্ধেক্ষণাং তত্তৎ বৃত্তাক্ষীং নোছছে ক্রিয়ন্॥১৯॥
যস্তাশ্চ লোমশে জজ্জে গুল্ফৌ যস্তাস্তধানতে।
গগুরোঃ কুপকৌ যস্তা হসন্ত্যান্তাঞ্চ নোছছে ॥ ২০॥
নোছছে তাদৃশীং কন্যাং প্রাক্তঃ কার্যবিশারদঃ।

(বিবাহ করা বিধেয় নহে।) ° সভাবতঃ গ্রাব্ছায় বিকলাজী অধিকালী অবিশুদ্ধা অধিৎ মহাপতকাদি-জনিত-রোগ-লক্ষণাক্রাস্তা রুগ্রশরীরা উৎকট-রোগবতী দৃদ্ধুল-সম্ভূতা (কন্যার পাণিগ্রহণ করিবে না।) শুদ্রাদি কর্ভৃক পরিপালিতা কটুভাষিণী পিতা মাতা অনুসারে বিকলাজী শ্রাশ্র-চিছ্-বিশিষ্টা পুরুষাকারা শর্মবিস্বরা সভাবতঃ অভিক্রীণ-বচনা কাকস্বরা পক্ষরহিতনয়না বহুপক্ষদারা সমাহ্রাদিভনয়না ললনাকে বিবাহ করা অনুচিত। শ্বাহার জঞ্জাদ্ব লোমযুক্ত, যাহার গুল্ফ উন্নত, হাস্য করিবার কালে যাহার গণ্ডদ্বরে গর্ভ হয়, এরপ রমণীকে কখনই বিবাহ করিবে না। বিশ্বাহার আকার কোমল নহে, যাহার নথ পাঞ্বর্ণ; যাহার

म ছক্তাং ছক্টবাচাং বা ইতি কেচিৎ পঠিছ।
 কাকুবরাং ম চ ইতি পুস্ককান্তরস্য পাঠঃ।

কাকুৰরা এরপ পাঠে যে জী কথা কহিবার সময় পুর্ব্ধ-বলদেশীয়দিগের ম্যায় লবু উচ্চার্য্য কথা শুরু উচ্চারণ বা শুরু উচ্চার্য্য কথা লবু উচ্চারণ করে ভাহার দাম কাকুৰরা 122

নাতিরুক্কছবিং পাণ্ডুকরজামরুণেক্ষণাম্॥ ২১॥
আপীনহন্তপাদাঞ্চ ন কন্যামুদ্বহেদুধঃ।
ন বামনাং নাতিদীর্ঘাং নোদ্বহেৎ সংহতক্রবম্॥ ২২॥
ন চাতিচ্ছিদ্রদশনাং ন করালমুখীং নরঃ।
পঞ্চমীং মাতৃপক্ষাক্ত পিতৃপক্ষাক্ত সপ্তমীম্॥ ২৩॥
গৃহস্কভূদহেৎ কন্যাং ন্যায্যেন \* বিধিনা নূপ!।
ভাক্ষো দৈবন্তথৈবার্যঃ প্রাক্ষাপত্যন্তথাসুরঃ।

নয়ন রক্তবর্ণ ঈদৃশ কন্যাকে কার্যাদক্ষ বিজ্ঞ ব্যক্তির বিবাহ করা অকর্ত্তব্য । বাহার হস্ত পদ স্থল, যাহার চক্ষু টেরা, যাহার শরীর অভিদীর্ঘ, যাহার জ্রমুগল পরস্পার মিলিড, পণ্ডিভের। ঈদৃশ কন্যা বিবাহ করিবেন না। বাহার দন্তমধ্যে অধিক ছিদ্র আছে, যাহার মুখ বিভীষণ, ঈদৃশ কন্যাকেও বিবাহ করা উচিড নহে। বাজন্! গৃহত্ব ব্যক্তি ন্যায়ানুগত বিধি অনুসারে মাড্পক্ষে পঞ্চমী ও পিতৃপক্ষে সপ্তমী কন্যা বিবাহ করিবে। বাজ দৈব আর্থি প্রাজাপত্য আসুর গান্ধর্ম রাক্ষম ও সর্মাধ্য বিপাচ, এই

<sup>\*</sup> शृश्य छेन्ट्र कनार मादिसम देखि वा श्रवेतीयम ।

উপযুক্ত পাত্র আছান করিয়া বথাশক্তি অলক্ষ্ডা কম্যা দান করাকে ব্রাপ্ত বিবাহ বলে। স্বজ্ঞান্ত গাঁক পুরেছিলকে দক্ষিণাল্পক কম্যা দান করিলে তার্ম বিবাহ বলা থার। গাঁদর প্রকাশন করা দান করিলে আর্ম বিবাহ হয়। তেনারা উভরে একর ধর্মাচরণ কর, এই বলিয়া কম্যা সমর্পণ করিলে প্রাক্তাপত্য বিবাহ বলা খার। তক্ত গ্রহণ করিয়া কম্যা দান করিলে আক্রর বিবাহ হয়। ও যুবা ও যুবতী মির্ক্তমে যিলিভ চইরা প্রশার মম: সমর্পণ করিলে গাঁক্ষার বিবাহ হর্মা থাকে। স্থাক্ষ কম্যা হরণ করিয়া বিবাহ করিলে রাক্ষার বিবাহ বলা থার। জীবেশে অন্তঃপুরে প্রবেশ করিয়া বিবাহ করাকে পোলাচ বিবাহ বলে। দ্বেল বলেম, প্রথম চারিপ্রকার বিবাহ রাক্ষণের পক্ষে ধ্যা দ্বিনাহ বিবাহ বলাও খুল্লের পক্ষে প্রামান বিবাহ বলাও খুল্লের পক্ষে প্রামান বিবাহ করিয়া বিবাহ করিয়া কর্মার বিবাহ করিয়া কর্মান করিয়া কর্মান বিবাহ করাত্ব প্রামান করিয়া বিবাহ বলাও খুল্লের পক্ষে আক্র্য বিবাহ করা কর্মান বিবাহ বলাও খুল্লের পক্ষে আক্রর বিবাহ করা কর্মান বিবাহ বলাও খুল্লের পক্ষে আক্রয় বিবাহ করা কর্মান স্কর্মাণেক্ষা অধ্যম ও পাপাবহ। ২০

গান্ধর্বরাক্ষনো চান্যে পৈশাচশ্চাই মোহধমঃ ॥ ২৫॥
এতেষাং যস্য যো ধর্মো বর্ণস্যোত্তো মহর্ষিভিঃ।
কুর্বীত দারাহরণং তেনান্ত্যং পরিবর্জ্জয়েৎ॥ ২৬॥
সধর্মচারিণীং প্রাপ্য গার্হস্থাং সহিতন্তরা\*।
সমূদ্ধহেদ্ দদাত্যেষা সম্যুট্য মহাকলম্॥ ২৭॥

## ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়েহ্^শে দশমোহ্ধ্যায়ঃ 1

আটপ্রকার বিবাহ নির্দিষ্ট আছে। এই সকল বিবাহের মধ্যে যে বর্ণের যে বিবাহ ধর্মা বলিয়া মহর্ষিরা বলিয়াছেন তদনুসারে দার পরিগ্রহ করিবে এবং পৈশাচ বিবাহ করা বিধেয় নহে। ১৬ এই রূপে গার্হস্থা আশ্রমে প্রবেশপূর্বক সহধর্মচারিণী পত্নী পরি-গ্রহ করিলে সেই বিবাহিতা নারী মহাফল প্রদান করে। ১৭

রিফুপুরাণ তৃতীয় অংশ দশম অধ্যায় সমাপ্ত।

\* অধৰ্মচারিণীং প্রাপ্য গাহ স্থাং সহিতম্বথা ইতি বা পাঠ:।

विक्शुत्रानम्।

তৃতীয়ে† १ भः।

একাদশাধ্যায়ঃ।

### সগর উবাচ।

গৃহস্থস্য সদাচারং শ্রোত্মিচ্ছাম্যহং মুনে !। লোকাদসাৎ পরসাচ্চ যমাতিষ্ঠন্ন হীয়তে॥ ১॥

### ঔৰ্ব্ব উবাচ।

শ্রারতাং পৃথিবীপাল! সদাচারস্য লক্ষণম্।
সদাচারবতা পুংসা জিতো লোকাবুভাবপি।
সাধবঃ ক্ষীণদোষাস্ত, সচ্ছকঃ সাধুবাচকঃ।
তেষামাচরণং যতু সদাচারঃ স উচ্যতে॥ ২॥
সপ্তর্ষরোহধ মনবঃ প্রজানাং পতর্ত্তথা।
সদাচারস্য বক্তারঃ কর্তারশ্চ মহীপতে!॥ ৩॥

সগর কহিলেন, মুনে! যান্তপ অনুষ্ঠান করিলে ইছলোকে ও পরলোকে ধর্মহানি না হয়, গৃহত্তের তান্তপ সদাচার প্রবণ করিতে ইছো করি।

ঔর্ক কহিলেন, মহারাজ! সদাচারের লক্ষণ বলিতেছি, প্রবণ করুন। সদা সদাচারশীল মনুষ্য ইহলোকে ও পরলোকে পুজিত হন। সং-শব্দের অর্থ সাধু। ঘাঁহারা দোকস্পর্শ-পরিশূন্য তাঁহা-দিগকেই সাধু বলা যায়। সং অর্থাৎ সাধুদিগের যে আচারী রাক্ষে মুহূর্ত্তে সুস্থে চ মানসে মতিমান্ নৃপ।
বিবুদ্ধশ্চিত্তয়েদ্ধর্ম্ অর্থপান্তাবিরোধিন্য।। ৫ ॥
অপীড়য়া তয়োঃ কামমুভয়োরপি চিত্তয়েৎ।
দৃষ্টাদৃষ্টবিনাশায় ত্রিবর্গে সমদর্শিতা ॥ ৬ ॥
গরিত্যজেদর্থকামৌ ধর্মপীড়াকরে নৃপ।।
ধ্র্মমপ্যস্থাদকং লোকবিদ্বিত্তমেব চ \* ॥ ৭ ॥
তঃ কল্যং সমুস্থায় কুর্যাব্যেত্রং নরেশ্বর !।
ন্ম ত্যামিরুবিক্ষেপমতীত্যাভ্যধিকং ভুবঃ ॥ ৮ ॥

আ াদিবস্থামূত্রং পুরীষ্ণ সমূৎস্কেৎ।

যে । ব্যবহার তাহার নাম সদাচার। মহীপতে! সপ্তর্ষিগণ দ'গণ প্রজাপতিগণ, ই হারাই সদাচারের বন্ধা ও কর্তা। কর্তাণ প্রজাপতিগণ, ই হারাই সদাচারের বন্ধা ও কর্তা। অইন্দান ব্যক্তি সেই সমর জাগরিত হইরা ধর্মচন্তাও ধর্মের নিরোধে অর্থচিন্তা করিবে। ধর্ম ও অর্থ উভ্রের অবিরোধে দাম চিন্তা করাও কর্ত্ব্য। ধর্ম অর্থ ও কামের মধ্যে কোনটারই প্রতক্ষে বা অপ্রত্যক্ষ রূপে হানি না হয়, এই জন্য ত্রিবর্গের প্রতিই দমান দৃষ্টি রাখিবে। ভুপতে! বাহাতে ধর্ম হানি হয়, ঈদ্ধা অর্থ ও কাম পরিত্যাগ করিবে। যে ধর্মানার অন্তর্থ ইতে পারে, যে ধর্মা সমাজবিক্ষক তান্ধা ধর্মেরও অনুষ্ঠান করা বিধের নহে। বা ধর্মা সমাজবিক্ষক তান্ধা গাতোখানপুর্বক প্রামের নৈশ্বতি কোণে

দ্ধান্ত প্রতিপ্রত্যুধে গাতোখানপুরক প্রামের নৈশ্ব ত কোণে বাণ বিক্ষেপের সীমা অভিক্রম করিয়া অথবা যথাসাধ্য কিঞ্চিৎ দূরে মলত্যাগ করিবে। দ্ধানতঃ বাসস্থান হইতে দূরতর প্রদেশে

লোকৰিজুইটনেৰ চ ইজি বা পঠিতব্যস্।

পুৰ্বকালে প্ৰায় সমুদায় বাসকেই প্ৰভূত্বে বাণশিক্ষা করিত। বাণের গতি ১৫০ তা বাস স্থান হইতে ১৫০ হক দূরে শহুৎ পরিভাগোর্থ উপৰিষ্ট হইলে বাণবিক্ষ ইবার সম্ভাবনা থাকে না ৮

পাদাবসৈচনোচ্ছিটে প্রক্রিপেন্ন গৃহান্ধনে ॥ ৯॥ আত্মন্থায়াং তরুচ্ছারাং গোৰ্গ্যাগ্র্যানিলাংশুথা। গুরুদ্ধিলাতীংশ্চ বুধাে ন মেহেত কদাচন॥ ১০॥ ন রুটে শাস্মধ্যে বা গোত্রকে জনসংসদি। ন বর্জানি ন নদ্যাদি তীর্থেষ্ পুরুষর্যভ !॥ ১১॥ নাপ্সু ন বাস্ত্রসন্তীরে ন শাশানে স্বাচরেৎ। উৎসর্গং বৈ পুরীষদ্য মুক্রস্য চ বিস্ক্রনম্॥ ১২॥ উদ্জ্বুধাে দিবােৎসর্গং বিপরীত্যুধাে নিশি।

মল মূত্র পরিত্যাগ করাই বিধেয়। যে হুলে পদ্চিত্ন থাকাতে (সনুষোর গতিবিধির পথ অনুভূত হয়) তাদৃশ হানে বা গ্রহ-প্রাঙ্গণে মূত্র বা পুরীষ ত্যাগ করা কোন মতেই কর্ত্বনা নহে। আক্রছোয়ার উপর গৃহছায়ার উপর এবং গো ব্রাক্ষণ ও তরুছায়ার উপর, বায়ু বা অগ্নির সন্ধৃধে, অধবা স্থ্যাতিমুখে, প্রস্রাব ত্যাগ করা জ্ঞানী ব্যক্তির কখনই কর্ত্বনা নহে। "পুরুষপ্রেণ্ড! হলাদিছারা কৃট ভূমিতে শন্যযুক্ত ক্ষেত্রে গোষ্ঠ ও গোপ্রচারহ্বানে জনসমাজে পথিমধ্যে নদ্যাদির গর্ভে তীর্ধহ্বানে "জনমধ্যে জলাশয়ের তীরে অথবা শ্বাশানে মূত্র ও পুরীষ পরিত্যাগ করা
অকর্ত্বনা । "বাজন্! যদি কোন ব্যাঘাত না জন্মে তাহা হইলে
পশ্তিতেরা দিবাভাগে উক্তরমুখ হইয়া রাত্রিকালে দ্ফিলমুখ হইয়া

কৃষ্ট ভূমিতে মূত্র ত্যাগ করিলে ভূমধান্তিত বৃশ্চিকালি নির্গত হইয়া দংশন করিতে পারে, শদ্যের বীজ মন্ট হইবারও সম্ভাবন। ১১

জনাশর প্রাকৃতিতে বনমুত্রভাগে করিনে জন শ্বিত হইয়া স্বাস্থ্যভগ করিতে গারে।১২

বান্ধণের। প্রথমতঃ সরস্থতী ও দ্যরতী মদীর মধ্যবন্তী স্থাম অর্থাৎ ব্রন্ধাবর্ত অধিকার ক রয়। বাস করেন। আধিম নিবাসী অসন্ত্যেরা কতক বন্দী হয়, কতক-স্থানি পলায়ম করিয়া দান্দিশাতা প্রবেশে অর্থাৎ বিদ্যাপর্বতের দক্ষিণ তানে মহারণ্যে প্রবেশ করে। ক্রমণঃ বিদ্যাপর্বত পগিন্ত আগি জাতির বস্তি বিস্তার হও-

কুর্মীতানাপন্য প্রাজ্ঞা মুত্রোৎসর্গঞ্চ পার্থিব॥ ১৩॥ তৃণৈরাজীর্য্য বস্থধাং বস্ত্রপ্রার্তমন্তকঃ।
তিষ্ঠেলাতিচিরং তত্র নৈব কিঞ্চিদুদীরয়ে ॥ ১৪॥ বল্মীকমূবিকোৎখাতাং মৃদমন্তর্জ্ঞলাং তথা \*।
শৌচাবলিন্টাং গেছাক্ত নাদদ্যালেপসন্তবাম্॥ ১৫॥ অন্তঃপ্রাণ্যবপন্নাঞ্চ হলোৎখাতাঞ্চ ভূমিপ †।
পরিত্যক্রেমূদকৈতাঃ সকলাঃ শৌচসাধনম্॥ ১৬॥ একা লিক্তে গুলে তিব্রস্তথা বামকরে দশ।
হস্তদ্বে চ সপ্তান্যা হলঃ শৌচোপপাদিকাঃ॥ ১৭॥

মলমূত্র পরিত্যাগ করিবেন। " সৃক্তিকার উপর কতকশুলি তৃণ বিছাইয়া বস্ত্রদারা মন্তক আরত করিয়া (পুরীবোৎসর্গ করিবে) কিন্তু সে স্থানে অধিক সময় বসিয়া থাকিবে না, তাহার মধ্যে কথাও কহিবে না। " অনন্তর (হন্তমৃদ্ধিকার জন্য) বল্মীক মূষিকমৃদ্ধিকা আর্দ্রে মৃদ্ধিকা শৌচাবশিষ্ট সৃন্তিকা ও গৃহলেপ মৃদ্ধিকা গ্রহণ করা বিধেয় নহে। " কীট্যুক্ত মৃদ্ধিকা এবং হলোৎখাত মৃদ্ধিকাও পরি-ত্যাগ করিবে। এতদ্বাতীত সমুদায় মৃদ্ধিকাই শৌচসাধন হইতে পারে। " লিক্ষে একবার শুহাদেশে তিনবার বাম হন্তে দশবার

য়াতে হিনালয় অবধি বিদ্ধা পৰ্বত পৰ্যান্ত স্থানকে আৰ্যান্ত বলে। বিদ্ধাপৰ্বতের প্রান্তবন্তী অরণে মুনিগণ তপদ্যা করিতেন। আদিম অদভ্যেরা (রাক্সনেরা) মধ্যে মধ্যে দাক্ষিণাত্য হইতে রাজিকালে আদিয়া মুনিগণের উপর দৌরান্ত্য করেত। তাহাতেই তহারা নিশাচর মামে বিখ্যাত হয়। রাজিকালে বনমধ্যে দক্ষিণমুখ হইয়া মলত্যাগার্থ বিদলে রাজিচরদিশের আগমন জানিয়া সাবধান হইতে পারা যায়। দিবাভাগে নিশাচরের ভয় নাই, কিন্তু রাজারা উত্তরদিক্ হইতে হণয়ার্থ অরণ্ডে প্রবেশ করিতেন। দিবাভাগে উত্তরমুখ হইয়া বনিলে দুর হইতে দেখিয়া সাবধান হইতে পারা যায়।১৩

<sup>\*</sup> সৃদং নাত্তজ্ঞলাং তথা ইতি বা পাঠঃ।
† হলোৎখাতাঞ্চ পার্বিব : ইতি পাঠান্তর্ম।

অচ্ছেনাগন্ধকৈনেন জলেনাবুদুদেন চ।
আচামেত হৃদং ভূয়ন্তথা দদ্যাৎ সমাহিতঃ ॥ ১৮ ॥
নিল্পাদিতাজ্বিশোচন্ত পাদাবভ্যুক্ষ্য বৈ পুনঃ ।
ক্রিঃ পিবেৎ সলিলং তেন তথা দিঃ পরিমার্জ্জরেৎ ॥১৯॥
শীর্ষণানি ভতঃ স্বানি মূর্জানঞ্চ নৃপালতেও।
বাহু নাভিঞ্চ তোয়েন হৃদয়ঞ্চাপি সংস্পৃশেৎ ॥ ২০ ॥
আচান্তক্ষ ততঃ কুর্য্যাৎ পুমান্ কেশপ্রসাধনম্।
আদর্শাঞ্জনমান্দল্যদূর্কাদ্যালভনানি চ ॥ ২১ ॥
ততঃ স্বর্ণধর্মেণ বৃত্ত্যর্থক্ষ ধনার্জ্জনম্।
কুর্কীত শ্রদ্ধানন্ত্রা যজেচ পৃথিবীপতে । ॥ ২২ ॥
সোমসংস্থা হ্বিঃসংস্থা পাকসংস্থাক্ষ্য সংস্থিতাঃ ।

উভয় হতে সাত বার মৃত্তিকা দিলে শৌচ সমাধান হয়। " অন্তর গঙ্কপুন্য কেন্সুন্য বৃদ্দুন্য নির্মাল সলিল ছারা আচমন করিবে (পরস্ক আচমনের পূর্বে) সমাহিত হইয়া পুনর্বার মৃত্তিকা গ্রহণপূর্বক " পাদ শৌচ সম্পাদন করিয়া পাদ প্রকালন করিবে। " তৎপরে বার কুল্কুচো করিয়া দুই বার মুখমার্জন করিবে। " তৎপরে মন্তকের সমুদায় স্থান, ইন্সিয় সমুদায়, ব্রহ্মরন্ধু, বাছ্ছয়, নাভি ও হৃদয়, এই সমুদায় স্থান ক্রমশঃ সজল হন্ত ছারা ক্রাভি ও হৃদয়, এই সমুদায় স্থান ক্রমশঃ সজল হন্ত ছারা ক্রাভি করিবে। " এইরূপে শৌচ সাধনপূর্বক প্রাভঃস্থান করিয়া) কেশ-সংস্কারে প্রস্তুত্ত হাইবে। আদর্শদারা ও চক্ষুতে অঞ্জনলেপন ও স্ব্রে শ্রীরে যথাস্থানে দুর্বা প্রভৃতি মাঙ্গলিক দ্রেব্য বিন্যাস করিবে। "

ভূপতে! এই সমস্ত কার্য্য সম্পন্ন হইলে গুছত্ব ব্যক্তি জীবিক। নির্কাহের জন্য অকাতীয় ধর্মানুসারে ধনোপার্ক্তন করিবে, শ্রজা-মুক্ত হইয়া যাগানুষ্ঠানেও প্রয়ুক্ত হইবে। ২২ সোমসংস্থা (অগ্নি-

ধনে যতে। মনুষ্যাণাং খতেতাতো ধনাৰ্জ্জনে ॥ ২৩॥ নদীনদতড়াগেষু দেবখাতজ্ঞলেষু চ। নিত্যক্রিয়ার্থং স্নায়ীত গিরিপ্রজ্ঞবণেষু চ ॥ ২৪ ॥ কুপেযুক্ততোয়েন স্নানং কুর্রীত বা ভূবি। স্বায়ীতোদ্ধৃততোয়েন অথবা ভুব্যসম্ভবে † ॥ ২৫ ॥ শুচিবস্ত্রধরঃ স্নাতে। দেবর্ষিপিতৃতর্পণ্য । তেষামেব হি তীর্থেন কুর্ব্বীত স্থসমাহিতঃ॥ ২৬॥ ত্রিরপঃ প্রীণনার্থায় দেবানামপবর্জ্জয়েও। তথবীণাং यथा नाग्नः সক্ষাপি প্রজাপতেঃ॥ ২৭॥ পিতৃণাং প্রীণনার্ধায় ত্রিরপঃ পৃথিবীপতে। টোম প্রভৃতি) হবিঃসংস্থা (অগ্ন্যাধের প্রভৃতি) পাকসংস্থা (অস্ট্রকা প্রভৃতি ) এই সমুদায় ধর্ম্মা কর্মাই ধন হইতে সম্পন্ন হয় স্থুতরাং ধনোপার্জ্জনার্থ বত্ত করা মনুষ্যের অবশ্য কর্ত্তব্য । १० (অনম্বর মধ্যাহ্ন কালে ) নিত্যক্রিয়ার নিমিন্ত নদী নদ তড়াগ অথবা দেবখাতে কিংবা পর্বতপ্রত্রবণে স্নান করা বিধেয়। ১° ( যে দেশে এতৎসমু-দায় না থাকিবে দেখানে ) কুপ হইতে জল তুলিয়া কুপপ্রাস্ত-ভূমিতে অথবা কুপোদক গ্নহে আনয়ন পূর্ব্বক স্নান করিবে। ( यদি এ সুবিধাও না ঘটে, বা পীড়া হয়, তাহা হইলে মন্ত্রন্ত্রান দারা শুচি हरेता) <sup>२६</sup> मधां दु स्नान हरेल পरित रख পরিধান পূর্বক সমা-হিত হইয়া তন্তন্তীর্থে দেবতর্পণ ঋষিতর্পণ ও পিতৃতর্পণ করিবে। <sup>২ ৬</sup> দেবগণের প্রীতির নিমিক্ত তিনবার, ঋষিণণের প্রীতির নিমিক্ত তিনবার, প্রজাপতির প্রীতির নিমিত্ত একবার জল প্রদান করা কর্ত্তব্য। <sup>২১</sup> ভূপতে! এইরূপ পিছুলোকের ভৃপ্তির জন্য তিনবার

ধনাপত্যে মন্ত্র্যাণাম্ ইতি কেতিৎ পঠিত।
 অথবা ভূবি সম্ভবে ইতি পুত্তকান্তরদ্য পাঠঃ।

পিতামহেভ্যশ্চ ভথা প্রীণয়েৎ প্রপিতামহান্॥ ২৮॥
মাতামহায় ভৎপিত্রে ভৎপিত্রে চ সমাহিতঃ।
দদ্যাৎ পৈত্রেণ তীর্থেন কাম্যঞান্যৎ শৃণুদ্ব মে॥ ২৯॥
মাত্রে প্রমাত্রে ভ্রমাত্রে গুরুপত্রৈয় তথা নূপ।
গুরবে মাতুলাদীনাং স্নিগ্ধমিত্রায় ভূভুজে॥ ৩০॥
ইদঞ্চাপি জপেদমু দদ্যাদাত্মেচ্ছয়া নূপ।
উপকারায় ভূতানাং ক্রতদেবাদিভর্পণঃ॥ ৩১॥
দেবাস্থরাস্তথা যক্ষা নাগা গন্ধর্বরাক্ষমাঃ।
পিশাচা গুহ্যকাঃ সিদ্ধাঃ কুয়াগুল্ডরবঃ থগাঃ॥ ৩২॥
জলেচরা ভূমিলয়া বায়াহারাশ্চ জন্তবঃ।
প্রীতিমেতে প্রয়ান্ত্রান্ত মদ্বেনামুনাখিলাঃ॥ ৩৩॥

জল প্রদান করিবে। পিতামহ প্রপিতামহ <sup>২৮</sup> মাতামহ প্রমাতানমহ র্দ্ধপ্রমাতামহ ইহাদিগকে তর্জনী মূল দ্বারা জল প্রদান করিবে। পরে কামা তর্পণ বলিতেছি শ্রুণণ করুন। <sup>২৯</sup> মাত্রে ইদম্ (ইহা মাতার) প্রমাতার প্রমাতার) র্দ্ধপ্রমাতার) র্দ্ধপ্রমাতার) র্দ্ধপ্রমাতার) গুরুপদ্বৈ ইদম্ (ইহা গুরুপদ্বীর) গুরুবে ইদম্ (ইহা গুরুর) মাতুলমিত্রায় ইদম্ (ইহা মাতুলমিত্রগণের) ভূতুকে ইদম্ (ইহা রাজার) ও এইরপ মস্ত্রপাঠ করিয়া স্বেচ্ছানুসারে অভিলয়িত বন্ধু বাদ্ধবিকে জল প্রদান করিবে। পরে সমুদায় প্রাণীর উপকারার্থ দেবাদি তর্পণ করিবে ও (তাহার মস্ত্র এই) দেবগণ অসুরগণ ফ্রন্সণ নাগগণ গন্ধর্মগণ রাক্ষ্মণণ ভূতলন্থ কীটাদিণ্যাণ কুম্মাণ্ডগণ রক্ষ্মণ পক্ষিগণ গ্রুক্সণ ভূতলন্থ কীটাদিণ্যাণ প্রমাণ্ডন প্রাণিগণ, ইহারা সকলেই মন্ধন্ত জল দ্বারা শীড্র পরিতৃপ্ত হউন। ও যে সকল প্রাণী বিবিধ নরকে বিবিধ যাতনা '

নরকেরু সমস্থের বাজনারু চ যে ছিতাঃ।
তেষামাপ্যায়নারৈ জদীয়তে সলিলং ময়া॥ ৩৪ ॥
যেহবান্ধবা বান্ধবা বা যেহন্যজন্মনি বান্ধবাঃ।
তে সর্ব্বে ভৃপ্তিমায়ান্ত যে চান্মজােরকাজ্জিনঃ॥ ৩৫॥
যত্র, কচন সংস্থানাং কুভ্স্তোপহতাত্মনাম্।
ইদমপ্যক্ষয়ঞ্চান্ত ময়া দত্তং তিলােদকম্॥ ৩৬॥
কাম্যােদকপ্রদানান্তে ময়ৈতং ক্ষিতং হপ।
যদস্থা প্রীণয়ত্যেতন্মনুষ্যঃ সকলং জগৎ॥ ৩৭॥
জগদাপ্যায়নােভূতং পুণ্যমাপ্রাতি চানঘ।
দত্রা কাম্যােদকং সম্যুগেতেভ্যঃ শ্রদ্ধান্বিতঃ॥ ৩৮॥
আচম্য চ ততাে দদ্যাৎ স্থ্যায় সলিলাঞ্জলিম্।
নমাে বিবস্তে বন্ধন্ ভাসতে বিফুতেজ্সে।

ভোগ করিতেছে, তাহাদের তৃপ্তির উদ্দেশে আমি জল প্রদান করিতেছি। " ঘাঁহারা আমার বান্ধব, ঘাঁহারা আমার বান্ধব নহেন, ঘাঁহারা পূর্বজনে আমার বান্ধব ছিলেন এবং যিনি যিনি আমার দক্ত জল প্রত্যাশা করেন, তাঁহারা সকলেই মদন্ত জল দ্বারা পরিক্তিপ্ত হউন। " ঘিনি যে কোন স্থানে অবস্থান করুন, যদি কুধা ভ্ষায় কাতর হইয়া থাকেন, তাহা হইলে তাঁহাদের পক্ষেমদন্ত এই সতিলোদক অক্ষয় তৃপ্তিজনক হউক। ""

রাজন্! কাম্যোদক প্রদানের পর যাহা বলিতেছি, তাহা দান করিলে মনুষ্য সমুদায় জগৎ প্রীত করিতে পারেন 1° বিশেষতঃ সমুদায় জগৎ পরিহৃপ্ত করাতে নির্মল পুণ্যরাশি উপার্জন করেন 1 ভূপতে! পূর্বোক্ত ব্যক্তিদিণের উদ্দেশে কাম্যোদক প্রদান করিয়া শ্রদানিত হইয়া °৮ আচমন পূর্বাক সূর্যাকে সলিলাঞ্জলি প্রদান জগৎসবিত্রে শুচয়ে সবিত্রে কর্মদায়িনে॥ ৩৯॥
ততা গৃহার্চনং কুর্যাদভীষ্টস্করপূজন্ম।
জলাভিবেকপুপ্পাণাং ধূপাদেশ্চ নিবেদনৈঃ॥ ৪০॥
অপূর্কমিমিহোত্রঞ্চ কুর্য্যাৎ প্রাগ্রন্ধণে ততঃ।
প্রজাপতিং সমুদ্দিশ্চ দদ্যাদান্ততিমাদরাং॥ ৪১॥
শুহোভাঃ কাশ্চপায়াথ ততোহমুমতয়ে ক্রমাৎ।
তচ্ছেয়ং প্রণিকেইন্ড্যোহথ\* পর্জ্জন্যায় ক্ষিপেত্রতঃ॥৪২॥
দ্বারে ধাতুর্বিধাতুশ্চ মধ্যে চ ব্রন্ধণঃ ক্ষিপেৎ।
গৃহস্ত পুরুষব্যাত্র। দিগ্দেবানপি মে শৃণু॥ ৪৩॥
ইন্দ্রায় ধর্মরাজায় বরুণায় তথেন্বে।

করিবে। (মন্ত্র) যিনি ব্রক্ষের ন্যায় দীপ্তিশালী, যিনি বিষ্ণু হইতে তেজঃ প্রাপ্ত হইয়াছেন, যিনি জগতের উৎপাদক যিনি ঐহিক কর্ম সম্পায়ের কারণ, সেই বিশুদ্ধ বিবস্থান্ সবিতাকে প্রদান করি। " অনন্তর গৃহ দেবতা ও ইউ দেবতার পূজা করিবে। এই পূজাতে প্রথমতঃ জলাতিকে পরে পূজা পূপ দীপ প্রভৃতি নিবেদন করিতে হইবে। " পরে প্রোক্ষণ পূর্বক অগ্নিহোত্র সমাধান করিয়া প্রথমতঃ ব্রহ্মকে পরে প্রেক্ষণ তিকে আদরপূর্বক আহুতি প্রদান করিয়া তদবশিষ্ট, জলাধার সমিধিতে জলেতে ও মেঘেতে নিক্ষেপ করিবে। " প্রক্ষপ্রেষ্ঠ ! দারের উভয় পাছে ধাতা ও বিধাতার উদ্দেশে ও মধ্যদেশে ব্রহ্মের উদ্দেশে জল প্রদান করিতে হইবে। পরে দিক্পালদিগের পূজা বলিতেছি, শ্রাণ করেন। " গৃহহর পূর্ব্ব দিকে ইক্রকে, দক্ষিণ দিকে ধর্মারাজকে, পশ্চিম দিকে বরণকে, উষ্টার দিকে ইন্দুকে হতলেৰ জন্মন্ত্র বলি প্রদান করিবে। " পূর্ব্ব

उटक्ष्यः प्रसिद्धराज्य ३७ वा भोग्डाम् ।

প্রাচ্যাদিষু বুধাে দদ্যাৎ হুতশেষান্নকং বলিম্ \*॥ ৪৪।
প্রাণ্ডতরে চ দিগ্ভাগে ধন্বন্তরিবলিং বুধঃ †।
নির্বপেদ্ বৈশ্বদেবঞ্চ কর্ম কুর্যাদতঃ পরম্॥ ৪৫॥
বায়ব্যে বায়বে দিক্ষ সমস্তাস্থ ততাে দিশাম্।
বক্ষণে চান্তরিক্ষায় ভানবে প্রক্ষিপেদ্ বলিম্॥ ৪৬॥
বিশ্বদেবান্ বিশ্বভূতানথাে ভূতপতীন্ পিতৃন্।
যক্ষাণাঞ্চ সমুদ্দেশ্য ‡ বলিং দদ্যান্তরেশ্বরঃ॥ ৪৭॥
ততােইন্যদন্মাদায় ভূমিভাগে শুচৌ বুধঃ।
দদ্যাদশেষভূতেভাঃ স্বেচ্ছা়া তৎ সমাহিতঃ॥ ৪৮॥

দেবা মনুষ্যাঃ পশবো বয়াংসি

সিদ্ধাঃ স্যক্ষোরগদৈত্যসংঘাঃ।
প্রেভাঃ পিশাচান্তরবঃ সমন্তাঃ
যে চান্নমিচ্ছন্তি ময়া প্রদত্তম্ ॥ ৪৯॥

উত্তর দিকে ধন্বস্তরি-বলি ও বৈশ্বদেব-বলি প্রদান করিয়া তৎপর-বর্ত্তী কর্ম অর্থাৎ গৃহদেবতা-বলি প্রদানানস্তর কর্ত্তব্য তদিতর দেবতার বলি প্রদান করিবে। " রাজন্! অনস্তর বায়ুকোণে বায়ুকে, সমস্ত দিকে ব্রহ্ম অস্তরিক্ষ ও ভামুকে বলি প্রদান করিয়া "" বিশ্বদেবগণ, বিশ্বভূতগণ, ভূতপতিগণ, পিতৃগণ ও যক্ষগণকে উদ্দেশ করিয়া বলি প্রদান করিতে হইবে। " অনস্তর পশুত ব্যক্তির কর্ত্তব্য এই যে, স্কেছানুসারে অন্য অন্ধ গ্রহণ করিয়া সমাহিত চিক্তে পবিত্র ভূমিতে অশেষ প্রাণীকে প্রদান করেন। " ( তাহার মন্ত্র এই)—দেবগণ, মনুষ্যগণ, পশুগণ, পক্ষিগণ, সিদ্ধাণ, যক্ষগণ, উরগ্

<sup>\*</sup> ভূতশেষ দিকং ৰলিম্ ইতি বা পটিতবাম্।

<sup>+</sup> भवक्रविवानिः बटनाः इंकि भौठीक्षवम् ।

<sup>🛨</sup> যক্ষাধ্য সমুদ্দিশ্য ইতি বা পঠিঃ।

পিপীলিকাঃ কীউপাতক্ষকাদ্যাঃ
বুজুক্ষিতাঃ কর্মনিবন্ধবদ্ধাঃ।
প্রান্ত তে ভৃপ্তিমিদং ময়ান্তং
তেভ্যো বিস্ফুং স্থাবনো ভবস্তা। ৫০॥
যেবাং ন মাতা ন পিতা ন বন্ধুঃ
নৈবান্নসিদ্ধিন তথান্নমন্তি।
তত্ত্প্রেইন্নং ভূবি দত্তমেত্
প্রান্ত ভৃপ্তিং মুদিতা ভবস্ত \*॥ ৫১॥
ভূতানি সর্কাণি তথান্নমেত্
ভ্রমণ বিজ্বন যতোহন্যদন্তি।
তত্মাদহং ভূতনিকায়ভূত্য্
ভন্নং প্রফ্রামি ভবায় তেবায়॥ ৫২॥

গণ, দৈত্যগণ, প্রেত্তগণ, পিশাচগণ, তরুগণ ও অন্যান্য যে সকল আবি মদ্দন্ত অন্ন প্রত্যাশা করে তাছারা " এবং পিলীলিকা কীট পতঙ্গ প্রভৃতি যাহারা কর্মপাশে বন্ধ ও ক্ষুধার্ত্ত আছে, আমি তাহাদের সকলের নিমিন্ত এই অন্ন প্রদান করিলাম, ইহাতে সকলেই পরিতৃপ্ত ও সুখী হউন। " যাহাদের মাতা নাই, পিতা নাই, বন্ধু নাই, পাকাদিছারা অন্ন প্রন্তত করিবার উপায় নাই এবং খাদ্য দ্রব্যও নাই, আমি তাঁহাদের তৃত্তির নিমিন্ত পৃথিবীতে এই অন্ন প্রদান করিলাম, এক্ষণে তাঁহারা এই অন্নে তৃপ্ত ও মুদিত হউন। " কগতীতলন্থ নিখিল প্রাণী, এই অন্ন এবং আমি, সকলই বিদ্যুমার; কারণ বিষ্ণু ভিন্ন কোন বন্ধাই বিদ্যুমানতা নাই। এই যুক্তি অনুসারে সমুদায় ভূতসমূহ আলা হইতে ভিন্ন নহে, আমি

\* প্রয়াক লোকার প্রধার ভরৎ ইতি বা পঠাভাম।

চতুর্দশো ভৃতগুণো য এব

তত্র স্থিতা যেংখিলভূতসংখাঃ।
তৃপ্ত্যর্থমন্নং হি ময়া বিস্ফং\*

তেষামিদং তে মুদিতা ভবস্ত ॥ ৫৩ ॥
ইত্যুক্ষাৰ্য্য নরো দদ্যাদন্নং শ্রদ্ধাসমন্বিতঃ।
ভূবি ভূতোপকারায় গৃহী সর্বাশ্রম্যে যতঃ॥ ৫৪ ॥
শ্বচণ্ডালবিহলানাং ভূবি দদ্যাৎ ততো নরঃ।
যে চান্যে পতিতাঃ কেচিদপাত্রা ভূবি মানবাঃ॥ ৫৫ ॥
ততো গোদোহমাত্রং বৈ কালং ভিঠেদ্ গৃহাক্ষণে।
ভাতিথিগ্রহণার্থায় তদুর্দ্ধং বা যথেচ্ছয়া॥ ৫৬॥

সমুদায় জীব সক্লপ হইতেছি, অতএব আমি সমুদায় জীবগণের পুষ্টির উদ্দেশে অন্ন প্রদান করিলাম। " চতুর্দশপ্রকার জীবের অন্তর্গত সমুদায় জীবকেই আমি তৃপ্তির জন্য অন্ন প্রদান করিলাম, একণে তাঁহারা সকলেই প্রমুদিত হউন। " গুহস্থ ব্যক্তি এই মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া শুলান্বিত চিন্তে ভূতগণের উপকারের জন্য পৃথিবীতে অন্ন প্রদান করিবে; কারণ গৃহস্থই সকলের আশ্রায়। " অন-স্তর কুকুর, চাপ্তাল, বিহঙ্গ এবং বে কোন মনুষ্য পতিত ও অপাত্র আছে, তাহাদিগের তৃপ্তির জন্য ভূমিতে অন্ন প্রদান করিবে। " পরে অতিথি-গ্রহণের জন্য, গোদোহন করিতে মত সমন্ন অতীত হয়, তত ক্ষণ অর্থাৎ এক যটিকার চতুর্থাংশ-কালমাত্র অথবা ইচ্ছানুসারে তাহা অপেক্ষা অধিক সময় গৃহের প্রাক্তণে দ্বামান

ময়া নিহয়ীয় ইতি বা পরিভবাম।

চতুর্দশ প্রকার জীব—দেবতা আট প্রকার, তির্ব্যক্ বোমি পাঁচ প্রকার, মন্তবং এক প্রকার। অথবা কীট পতল প্রভৃতি চতুর্দশ প্রকার ভূত। অথবা চতুর্দশ ভূবন-্তু স্থিত চতুর্দশ প্রকার জীব।১৩

অতিথিং তত্র সংপ্রাপ্তং পূ্রুয়েৎ স্বাগতাদিনা।
তথাসনপ্রদানেন পাদপ্রকালনেন চ॥ ৫৭॥
প্রদ্ধার চামদানেন প্রিয়প্রশান্তরেণ চ।
গছতশ্চানুষাতেন প্রীতিমুৎপাদয়েদ্ গৃহী॥ ৫৮॥
অক্তাতকুলনামানমন্যতঃ সমুপাগতম।
পূর্রেদতিথিং সম্যক্ নৈকপ্রামনিবাসিনম্॥ ৫৯॥
অকিঞ্চনমসংবদ্ধম্ অন্যদেশাৎ সমাগতম্ \*।
অসংপূজ্যাতিথিং ভূপ্তন্ ভোক্তকামং ব্রুত্যধঃ॥ ৬০॥
স্বাধ্যায়গোত্রবন্মপৃষ্ঠা চ তথা কুলম্।
হিরণাগর্ভবুদ্ধ্যা তং মন্যেতাভ্যাগতং গৃহী॥ ৬১॥

থাকিবে। " গদি অতিথি প্রাপ্ত হয়, তাহা হইলে স্বাগত জিজ্ঞান। দারা আসনপ্রদান দারা পাদপ্রকালন দারা " অদ্ধাপূর্বক অর দান দারা প্রিয় প্রস্থা ও প্রিয় উত্তর দারা গমনকালে অনুগমন দারা তাহার প্রীতি উৎপাদন করিবে। " দ

যাঁহার কুল ও নাম পরিজ্ঞাত নহে, যিনি দেশান্তর হইতে সমাগত হইয়াছেন, ঈছল অতিথির পূজা করিবে, পরস্ক একপ্রামবাদী
ব্যক্তিকে অতিথি করা বিধেয় নহে। " যিনি অন্য দেশ হইতে
উপাগত, যাঁহার সহিত কোন সম্বন্ধ নাই, যিনি অকিঞ্চন অর্থাৎ
যাঁহার কিছুমাত্র পাথেয় নাই, ঈদুল ব্যক্তি যদি অতিথি হইয়া
ভোজনাতিলাধী হন, তাহা হইলে তাঁহার সেবানা করিয়া অথে
ভোজন করিলে গৃহস্থকে নির্ম্গামী হইতে হয়। " গৃহস্থ ব্যক্তি
অভ্যাগত ব্যক্তির গোত্র লাখা কুল বিদ্যা প্রভৃতির পরিচয় গ্রহণ
না করিয়া হিরণ্যগর্ভি-বোধে তাঁহার অতিথিসৎকার করিবে।"

<sup>\*</sup> অকিঞ্নসদংৰক্ষ অন্তেশাতুপাগভত্ইতি পুত্ৰাভ্রন্য পাঠঃ।

পিত্রগঞ্চাপরং বিপ্রমেকমপ্যাশয়ের প!।
তদ্দেশ্যং বিদিতাচারসংভূতিং পঞ্যজ্ঞিয়য়॥ ৬২॥
তদ্মশ্যং সমুদ্ধৃত্য হন্তকারোপকণ্পিতয়।
নিবাপভূতং ভূপাল! শ্রোত্রিয়ায়োপকণ্পয়েৎ॥ ৬৩॥
দিন্যাক ভিক্ষাত্রিতয়ং পরিবাড্রক্মচারিগায়।
ইচ্ছয়া চ নরো দদ্যাদ্ \* বিভবে সত্যবারিতয়॥ ৬৪॥
ইত্যেতেংতিথয়ঃ প্রোক্তাঃ প্রাপ্তকা ভিক্ষবশ্চ যে।
চতুরঃ পূজয়য়েতান্ ন্যজ্ঞর্যাৎ প্রমূচ্যতে॥ ৬৫॥
তাতিথির্যস্ত ভ্র্যাশো গৃহাৎ প্রতিনিবর্ত্তে ।। ৬৫॥

রাজন্! অনন্তর পিতৃশ্রাদ্ধ উপলক্ষে অন্য একটি ব্রাহ্মণ ভোজন করাইবে। এই ব্রাহ্মণটা পঞ্চ যজের অনুষ্ঠানকারী ও তদ্দেশীর হইবে। ই হার আচার ও কুল পরিজ্ঞাত থাকিবে। ই রাজন্! হস্ত এই মন্ত্রদারা রচিত পৃথক্ স্থাপিত অমাগ্র উদ্ধৃত করিয়া শ্রোত্রিয় ব্রাহ্মণকে প্রদান করিবে। ই বিদ্বান্ ব্যক্তি এই রূপে তিনপ্রকার ভিক্ষা প্রদান করিয়া যদি ঐশ্বর্য্য থাকে, তাহা হইলে ইচ্ছানুসারে পরিব্রাট্ ও ব্রহ্মচারীদিগকে অনিবারিত রূপে দান করিবে। ই শেষোক্ত এই তিনপ্রকার অতিথি ও পূর্ব্বোক্ত ভিক্ষ্পণ, সমুদায়ে চারিপ্রকার অতিথির যথাবিহিত সৎকার করিলে স্থযজ্ঞরূপ স্বণ হইতে মুক্ত হইতে পারা যায়। ই যে অতিথি হতাশ হইয়া গৃহ হইতে ক্রিয়া যায়, সে আপনার পাপপুঞ্জ গৃহন্থকে প্রদান করিয়া

অজ্ঞাত-কুলনীল অতিথি এক প্রকার। পিতৃতর্গণোচ্দেশে পরিজ্ঞাত দেশীর র'ন্ধণ দিতীয় প্রকার অতিথিয়। হস্তকারোপলন্ধিত শ্রোত্তিয় তৃতীয় প্রকার শ্রুতিথি। পরিরাট্ রন্ধচারি প্রভৃতি ভিন্দান্ধীবীরা চতুর্থ প্রকার অভিথি।৬৫

স দত্ত্ব। দুক্তং তবৈ পুণ্যমাদায় গচ্ছতি ॥ ৬৬॥
ধাতা প্রজাপতিঃ শক্তো বহ্নির্ম্পাণোহর্যমা।
প্রবিশ্যাতিথিমেবৈতে\* ভুঞ্জেতেইয়ং নরেশ্বর !॥ ৬३॥
তক্ষাদতিথিপুজায়াং যতেত সততং নরঃ।
স কেবলমখং ভুঙ্ক্তে যো ভুঙ্ক্তে ত্বতিথিং বিনা॥৬৮॥
ততঃ স্থবাসিনী-দুঃখি-গর্ভিণী-বৃদ্ধ-বালকান্।
ভোজায়েৎ সংস্কৃতায়েন প্রথমং চরমং গৃহী॥ ৬৯॥
অভুক্তবৎস্থ চৈতেযু ভুঞ্জন্ ভুঙ্ক্তে হি দুক্তম্†।
মৃতশ্চ নরকং গত্তা‡ শ্লেয়ভুগ্ জায়তে নরঃ॥ ৭০॥
অস্থাতাশী মলং ভুঙ্ক্তে অজপী পুযশোণিতম্।

গৃহছের পুণ্যরাশি গ্রহণপূর্মক প্রস্থান করে। ত রাজন্! ধাতা প্রজাপতি ইন্দ্র আয়ি সূর্য্য ও বস্থাণ, ই হারা অতিথিশরীরে অনু-প্রবিষ্ট হইয়া অন্ন ভোজন করেন। ত অতএব অতিথি–সংকার-বিষয়ে সকলেরই যন্ত্র করা কর্ত্তবা। যে ব্যক্তি অতিথি–নিরপেক্ষ হইয়া একাকী ভোজন করে, তাহার কেবল পাপরাশি উদরস্থ করা হয়। ত অতিথি–মিরপেক্ষ হয়। ত অতিথি—মিরপেক্ষ হয়। ত অতিথি—মিরপেক্ষ হয়। ত অতিথি—মিরপেক্ষ হয়। ত অতিথিসেবার পর গৃহস্থ বাক্তি, স্থবাসিনী গর্ভিণী দুঃখার্ভ বালক রক্ষ, ইহাদিগকে স্থসংস্কৃত অন্ন ভোজন করাইয়া পশ্চাৎ স্বয়ং ভোজন করিবে। ত যে গৃহস্থ এই সকল ব্যক্তিকে ভোজন না করাইয়া স্বয়ং অথা ভোজন করে, তাহার দুক্ত ভোজন করা হয় এবং পরকালে নিরম্বগামী হইয়া ভাহাকে শ্লেমুভোগী হইতে হয়। ত বে ব্যক্তি স্থান না করিয়া ভোজন করে, ভাহার মল ভক্ষণ করা

যে কন্যা বিবাহিত। হটৱাও পিতুগুছে বাস করে ভাষাকে স্থাসিনী বলে।১১ 🔎

অসংস্কৃতারভুঙ্মূত্রং বালাদিপ্রথমং শক্তং॥ ৭১॥
তথাচ্চ্ণুষু রাজেন্দ্র । যথা ভুঞ্জীত বৈ গৃহী।
ভুঞ্জতশ্চ তথা পুংসঃ পাপবদ্ধো ন জায়তে॥ ৭২॥
ইহ চারোগ্যমতুলং বলর্দ্ধিস্তথা নূপ !।
ভবত্যনিষ্ঠশান্তিশ্চ \* বৈরিপক্ষাভিচারিকা॥ ৭৬॥
স্নাতো যথাবং কৃত্বা চ দেবর্ষিপিতৃতর্পন্ম।
প্রশান্তরত্বপানিস্ত ভুঞ্জীত প্রয়তো গৃহী॥ ৭৪॥
কৃতজাপ্যো ভূতে বহ্নৌ শুদ্ধবস্ত্রধরো নূপ !।
দত্তাহতিথিভ্যো বিপ্রেভ্যা গুক্তত্যঃ সংশ্রিতায় চ ॥৭৫॥

হয়; বে ব্যক্তি জপ না করিয়া আহার করিতে প্রবৃত্ত হয়, তাহার রক্ত ও পূর পান করা হয়, বে ব্যক্তি অসংক্তৃত অন্ন ভোজন করে, তাহার মুত্র খাওয়া হয়, যে ব্যক্তি বালক রক্ষ প্রভৃতিকে আহার না করাইয়া অথ্যে আহার করে, তাহার বিষ্ঠা ভক্ষণ করা হয়। " রাজেন্দ্র! যে রূপে গৃহস্থ ব্যক্তির ভোজন করা কর্ত্তব্য ও বেরূপ ভোজন করিলে পাপক্ষার্শ না হয়, তাহা বলিতেছি, প্রবণ কর। " এরূপ আহারে ইহলোকে সমধিক আরোগ্য, বলরজি, অনিউশান্তি, ও শত্রুপক্ষের অভিচার হয়। " গৃহস্থ ব্যক্তি স্মানানন্তর যথাবিধানে দেবতর্পণ খবিতর্পণ ও পিতৃতর্পণ করিয়া হত্তে প্রশন্ত রক্ষাক্ষুরীয়ক ধারণপূর্বক প্রস্থত হইয়া ভোজন করিবে। " প্রথমতঃ বিশুদ্ধ বস্ত্র পালতে ব্যক্তিন করিয়া অভিথিগণকে ব্রক্ষাক্ষণবিধান প্রস্থাক জপ ও হোম সমাপন করিয়া অভিথিগণকে ব্রক্ষণ-গণকে গুলাগেত ও আপ্রিত ব্যক্তিদিগকে ভোজন করাইবে; " পরে

<sup>\*</sup> ভবত্যরিষ্টশান্তিশ্চ ইতি বা পাঠঃ।
† কুডজপো হুডে বঙ্গে ইতি বা পাঠায়।
শক্রপক্ষেব অভিচার হয় অর্থাৎ শক্রপক্ষ ধাংস হয় । ৩০

পুণ্যান্ধরঃ শস্তমাল্যধারী নরেশ্বর!।

নৈকবন্ত্রধরোহথার পাণিপাদে। নরাধিপ!॥ १৬॥

বিশুদ্ধবদনঃ প্রীতো ভূঞ্জীত ন বিদিঙ্মুখঃ।

প্রাঙ্মুখোদঙ্মুখো বাপি ন চৈবান্যমনা নূপ!॥ ११॥

অন্ধং প্রশস্তং পথ্যঞ্চ প্রোক্ষিতং প্রোক্ষণোদকৈঃ।

ন কুৎসিতাহাতং নৈব জুগুপ্সাবদসংস্কৃতম্॥ १৮॥

দত্ত্বা তু ভূক্তং শিষ্যেভ্যঃ \* কুধিতেভ্যস্তথা গৃহী।

প্রশস্তম্ভানির্মু ভূঞ্জীতাকুপিতো নূপ!॥ १৯॥

নাসন্দীসংস্থিতে পাত্রে নাদেশে চ নরেশ্বর!।

নাকালে নাভিসংকীর্ণে দত্ত্বাগ্রঞ্চ নরোহ্যায়ে॥ ৮০॥

পবিত্র গন্ধতার ও প্রশন্ত মালা ধারণপূর্বক প্রীতিপ্রফুল ও বিশুদ্ধন বদন হইয়া পূর্বমুখ বা উন্তরমুখ হইয়া অনন্যচিন্তে ভোজন করিবে; পরস্ক একবন্তরধারী আর্দ্রপাণি বা আর্দ্রপদ হইয়া বিদিক্ মুখে ভোজন করা বিধেয় নহে। আরু প্রশন্ত পথা ও প্রোক্ষণোদকদারা প্রোক্ষিত হওয়া আবশাক। কুৎসিত ব্যক্তি কর্তৃক আনীত, য়ণিত বা অসংস্কৃত অর গ্রহণ করা বিধেয় নহে। দ এই অনের কিয়দংশ শিব্যগণকে ও কুধিত ব্যক্তিদিগকে দান করিয়া অকুপিত মনে এবং প্রশন্ত ও বিশুদ্ধ পাত্রে ভোজন করিবে। আমন্দীর উপরি সংস্থাপিত পাত্রে অভিসন্ধীন স্থানে অযোগ্য স্থানে বা সন্ধ্যাকাল প্রভৃতি অসময়ে ভোজন করিবে না। অগ্লিকে অগ্রভাগ না দিয়াও ভোজন করা বিধেয় নহে। শ রাজন্ । অর প্রশন্ত ও মন্ত্রদার

<sup>\*</sup> দত্তা দুর্ম্মীত শিক্ষেত্যঃ ইতি বা পঠনীয়ন্।
ত্মগ্রিকাণ, নৈশ্মতি কোণ, বায়ুকোণ, ঈশানকোণ, এই চারিটী বিশিক্।
ত্মাসদ্যা -- কাপ্তনিশ্মিক ত্রিপদী (টেপায়া); চতুপদী (মেল) প্রভৃতি।
চতুপদী

মন্ত্রাভিমন্ত্রিতং শস্তং ন চ পর্যাধিতং নৃপ !।

অন্যত্র ফলমাং সৈভ্যঃ শুক্ষণাকাৎ তথৈব চ \* ॥ ৮> ॥

তদ্ব বাদরিকেভ্যুক্ত গুড়পকেভ্য এব চ।

ভূঞ্জীতোদ্বিসারাণি ন কদাচিম্নরেশ্বর ! ॥ ৮২ ॥

নাশেষং পুরুষোংশ্রীয়াদন্যত্র জগতীপতে !।

মধুমুদ্ধিস্পির্ভিয়ঃ শক্তুভ্যুক্ত বিবেকবান্ ॥ ৮৩ ॥

অশ্রীয়াৎ তন্মনা ভূত্বা পূর্বস্ত মধুরং রস্ম্।

লবণাশ্রে তথা মধ্যে কটুতিক্রাদিকং ততঃ ॥ ৮৪ ॥

প্রাগ্রবং পুরুষোংশ্বন্ বৈ † মধ্যে চ কঠিনাশনম্।

পুনরত্তে দ্বাশী চ বলারোগ্যেন মুঞ্জি ॥ ৮৫ ॥

অভিমন্ত্রিত হইবে। পর্যাধিত হইলে ভোজন করা কর্ত্তব্য নহে।
ফল মাংস ও শাক শুদ্ধ হইলে ভোজন করিবে না, কিন্তু শক্ত প্রভৃতি কতকণ্ডলি দ্রব্য শুদ্ধ হইলেও ভোজন করা যাইতে পারে।
দুণ্
অপক লেহ্য প্রভৃতি বা বদরিকাবিকার এবং শুদ্ধক দ্রব্য শুদ্ধ
হইলে ভক্ষণ করা অনুচিত। যাহার সার উদ্ধার করিয়া লও্যা
হইয়াছে, ইম্বশ বস্তুও (খোল প্রভৃতি) কখন ভক্ষণ করা উচিত
নহে।
দুণ্
অগতীপতে! বিবেকী ব্যক্তি, মধু অল দুধি মৃত ও
শক্ত ব্যতীত আর কোন বস্তু নিঃশেষ করিয়া ভক্ষণ করিবে না।
ভাজনকালে অল ব্যতীত অন্য বিষয়ে মনঃসংযোগ করা অনুচিত।
প্রথমতঃ মধুর রস, মধ্যে লবণ ও অল রস, শেষে কটু তিক্ত প্রভৃতি
রস আহার করিবে।
দুণ্
বিষয়ে প্রবর্ষ দ্রবিষয়ে দ্রবিষয়ে দ্রবিষয়ে করে, তাহার বল ও আরোগ্য
পরিহীন হয় না।
দুণ্
এই রূপে অনিষ্ক্ত অল ভোজন করিবে।

<sup>\*</sup> ७६नाका निकर जथा है जि वा निर्वे मी सम्।

<sup>+</sup> श्रूक्रदर्शश्रद देव हेकि वा शार्थः।

প্রধাসামহামৌনং প্রাণাদ্যাপ্যায়নায় চ ॥ ৮৬ ॥
পুজ্বা সম্যাথাচম্য প্রাঙ্মুখোদঙ্মুখোহপি বা ।
যথাবং পুনরাচামেৎ পাণী প্রক্ষাল্য মূলতঃ ॥ ৮৭ ॥
স্কঃ প্রশান্তচিত্তস্ত ক্রভাসনপরিগ্রহঃ ।
অভীইদেবতানান্ত কুর্বীত স্মরণং নরঃ ॥ ৮৮ ॥
অগ্রিরাপ্যায়মত্বরং পার্থিবং প্রনেরিতঃ ।
দত্তাবকাশং নভ্যা জরয়ত্বস্ত মে স্থেম্॥ ৮৯ ॥
অন্নং বলায় মে ভূমেরপামগ্রানিল্সা চ ।
ভবত্যেভং পরিণতৌ ম্যান্ত্র্যাহতং স্থেম্॥ ৯০ ॥

ভোজনকালে বাগ্যত হইয়া থাকিবে, কোন প্রকার ঘ্ণা প্রদর্শন করিবে না। ভোজনারস্ক্রকালে মহামৌন অবলম্বনপূর্দ্মক প্রাণাদির পরিতোষের জন্য পঞ্চ গ্রাস ভক্ষণ করিবে।৮১

ভোজনাবদানে আচমন করিয়া পূর্ব্য বা উত্তরমূপ হইয়া যথাবিধানে মুলদেশ পর্যান্ত হন্তব্য প্রকালন করিয়া পুনর্বার আচমন
করিবে। তা অনন্তর আসনে উপবেশন পূর্বক মুন্ত ও প্রশান্ত চিন্ত
হইয়া ইন্ট দেবতা স্মরণ করিবে। তা পেরে এই মন্ত্র পাঠ করিবে)
বায়ু কর্ত্বক পরিবর্জিত আয়ি, আকাশ কর্ত্বক দন্তাবকাশ নদীয়
অয় জীর্ন কর্মন। পরে সেই জীর্ন অয় হইতে আমার শরীরন্তিত
পার্থিব ধাতু পরিপুট হউক, তাহাতে আমার মুখ সক্ষেশতা র্জি
হইতে ধাকুক। তা অয় হইতে আমার শরীরন্তিত পৃথিবী জল
অয়ি বায়ু, এ সমুদারের বলাধান হউক্ এবং অয়ই ঐ ধাতুচতুটীয়

মহামেদিন অৰ্থাৎ মুখে কথা কহিবৈ মা, সক্ষেত্ৰারাও কোন অভিএর প্রথান করিবে না। এ নায় বাহা, অপানার বাহা, সনানায় বাহা, উদানায় বাহা, আগানায় বাহা, এই পঞ্জ মন্ত্রপাঠ করিবা পঞ্চ গ্রাস আর ভক্ষণ করিবে।৮৬

প্রাণিপানসমানানামুদানব্যানয়োন্তথা।
তামং পুর্ফিরঞ্গান্ত মমাস্তৃব্যাহতং স্থেষ্। ১১॥
তাগন্তির্গ্রিবভ্বানলশ্চ
ভূক্তং ময়ান্নং জরয়ত্বশেষ্য ।
স্থাঞ্চ মে তৎপরিণামসন্তবং
যক্ষত্বরোগো † মম চাল্ত দেহে॥ ১২॥
বিজ্ঞানভূতো ভগবান্ যথৈকঃ।
সভ্যেন তেনান্নশেষমেত্
তারোগ্যদং মে পরিণামমেতু॥ ১৩॥
বিজ্ঞান্তি তথৈবান্নং পরিণামশ্চ বৈ যথা।
সত্যেন ভেন বৈ ভুক্তং জীর্যাত্রন্নিদং তথা॥ ১৪॥

রূপে পরিণত হইতে থাকুক, আমারও সুথ অব্যাহত হউক্। "
এই অর প্রাণ অপান সমান উদান ব্যান, এই পঞ্চ প্রাণের পৃষ্টিকর হউক্, আমিও অব্যাঘাতে স্থথ লাভ করি। " আমি যে সমুদায় অয় ভোজন করিয়াছি তাহা, আগস্তাসম্বন্ধি অগ্নি ও বড়বানল বারা সম্পূর্ণ রূপে জীর্ণ হউক এবং আমি তৎপরিণতিসমুত স্থাও লাভ করি, আমার শরীরও নীরোগ হউক। " যেমন একমাত্র ভগবান্ বিষ্ণু, সমস্ত ইন্দ্রিয়, সমস্ত দেহ ও সমস্ত আত্মার প্রধান এবং আমার উপাস্য সেইরূপ সেই সত্য অনুসারে আমার এই সমুদায় ভুক্ত অয় পরিণামে আরোগ্যদায়ক হউক। " যেমন বিষ্ণু ভোক্তা ও অয় বিষ্ণুর পরিণাম, তাহার ন্যায় সেই সভ্য অনুসারে আমার এই ভুক্ত অয় জীর্ণ হউক। "

<sup>\*</sup> ক্ষমন্ত শেষ্ ইতি কেটিং পঠিছি।

+ যক্ত ব্রোগো মন ইতি বা পাঠঃ।

ইত্যুচ্চার্য্য স্বহন্তেন পরিমৃষ্য তথোদরম্ । ।

অনারাসপ্রদায়ীনি কুর্য্যাৎ কর্মণ্য তব্দ্রিতঃ ॥ ৯৫ ॥

সচ্ছান্ত্রাদিবিনোদেন সন্মার্গাদ্যবিরোধিনা ।

দিনং নয়েৎ ভতঃ সন্ধ্যামুপতিষ্ঠেৎ সমাহিতঃ ॥ ৯৬ ॥

দিনান্তসন্ধ্যাং সুর্যোগ পূর্বামৃক্তৈযু তাং বুধঃ ।

উপতিষ্ঠেদ্ যথান্যায়ং সম্যাগাচম্য পার্থিব ॥ ৯৭ ॥

সর্বাকানমুপস্থানং সন্ধ্যয়োঃ পার্থিবেষ্যতে ।

অন্যত্র স্তকাশোচবিজ্ঞমাতুরভীভিতঃ ॥ ৯৮ ॥

সূর্য্যোগভ্যুদিতো যশ্চ ত্যক্তঃ সুর্যোগ চ স্থপন্ ।

অন্যত্রাতুরভাবাৎ তু প্রায়শ্চিতী ভবেৎ নরঃ † ॥ ৯৯ ॥

গৃহস্থ ব্যক্তি এই সকল মন্ত্র উচ্চারণপূর্বক উদর মার্ক্তন করিয়া আলস্য পরিত্যাগপূর্বক অনতিক্রেশসাধ্য কার্য্যে প্রব্রুত্ত হইবে। " সাধুসমাতৃত পথের অবিরোধী সংশান্ত্র পর্যালোচনাদ্বারা ( কাব্য নাটক অলক্ষার পুরাণ প্রভৃতি আলোচনা দ্বারা ) অথবা সংপথের অবিরোধী ক্রীড়াদ্বারা দিবসের শেষ অংশ যাপন করিবে। পরে সাংয়কাল উপস্থিত হইলে সমাহিত হইয়া সন্ধ্যাবন্দনে প্রবৃত্ত হইবে। "

রাজন্! নক্ষত্র থাকিতে প্রাতঃসন্ধ্যা ও সূর্য্য অব্ধান্তনিত হইলে সায়ংসন্ধ্যা উপাসনা করিবে। সন্ধ্যোপাসনা আরস্তের সময় যথা-বিধি আচমন করিতে হইবে। "ভূপতে! সূত্রকাশোচ, মৃত্রকাশোচ, চিক্তর্রম, পীড়া, অনিটাশক্ষা, এই কয়েকটা প্রতিবন্ধক ব্যতীত অন্য সকল দিনই সন্ধ্যোপাসনা করিতে হইবে। " যে ব্যক্তি পীড়া ব্যতীত, সূর্য্যোদয়কালে বা সূর্যাভসময়ে শয়ন করিয়া

<sup>\*</sup> পরিমার্ক্সা ভথোদরম্ ইতি পাঠাভরম্। † প্রায়ক্তিনিয়ভে দরঃ ইতি বা পটিভয়ম্।

তবাদয়দিতে সুর্য্যে সমুখার মহীপতে!।
উপতিষ্ঠেরঃ সন্ধ্যামস্বপংশ্ব দিনান্তজ্ঞাম্॥ ১০০॥
উপতিষ্ঠন্তি যে সন্ধ্যাৎ ন পূর্বাৎ ন চ পশ্চিমাম্।
বজন্তি তে দুরাত্মানন্তামিত্রং নরকং নূপ!॥ ১০১॥
পুনঃ পাকমুপাদার সায়মপ্যবনীপতে!।
বৈশ্বদেবনিমিন্তং বৈ পত্মমন্তং বলিং হরেৎ॥ ১০২॥
তত্রাপি শ্বপচাদিত্যস্তবৈধারাপবর্জ্জনম্।
অতিথিঞ্চাগতং তত্র স্থশক্ত্যা পুজ্যেদ্ বুধঃ॥ ১০৩॥
পাদশৌচাসনপ্রহ্মবাগতোক্ত্যা চ পুজনম্।
ততশ্চান্নপ্রদানেন শারনেন চ পার্থিব!॥ ১০৪॥
দিবাতিথো তু বিমুখে গতে যৎ পাতকং নূপ!।

থাকেন, তিনি পাতকী হন। "মহীপতে! এই কারণে গৃহস্থ ব্যক্তি, সূর্য্যাদয়ের পূর্মে শযা হইতে উথানপূর্ম ক মন্ধ্যা উপাসনা করিবে। দিনাবসানে সন্ধ্যাকালেও শয়ন না করিয়া সন্ধ্যাবন্দনে প্রবন্ধ হইবে। "মাজন্! যে সকল দুরাস্থা পূর্ম-সন্ধ্যাও সায়ংসন্ধ্যা উপাসনা না করে, তাহারা অন্ধনারময় নরকে প্রবিষ্ট হয়। "মাজনি পাসনা না করে, তাহারা অন্ধনারময় নরকে প্রবিষ্ট হয়। "মাজনি পিছে। সায়ংকালে পত্নীয়ারা অন্ধ পাক করাইয়া বৈশ্বদেবকর্মাসিন্ধির নিমিন্ত মন্ত্র ব্যতিরেকে পুনর্বার বলি প্রদান করিবে। "মাজকালে প্রভৃতি অকিঞ্চন ব্যক্তিকে অন্ধ প্রদান করিবে। বদি সায়ংকালে অভিধি অভ্যাগত হয়, তাহা হইলে, যথাশক্তি তাহার পূজা করা কর্ত্ব্য। "" (সায়ংকালে অভিধি অভ্যাগত হয়, তাহা হইলে, যথাশক্তি তাহার পূজা করা কর্ত্ব্য। "মাজনাল স্থায়া নজভাপ্রকাশ স্থায়া কুললপ্রম দ্বারা অন্ধপ্রদান হারা শ্বনার্থ শ্ব্যাদান হারা তাহার পূজা করিবে। ""

তদেবাষ্টগুণং পুংসাং স্থা্যোঢ়ে বিমুখে গতে ॥ ১০৫॥ তক্ষাৎ স্বশক্ত্যা রাজেন্দ্র। সূর্য্যোচ্মতিথিং নরঃ। পুজয়েৎ পুজিতে তিমান্ পুজিতাঃ সর্বদেবতাঃ ॥ ১০৬ ॥ অন্নশাকামুদানেন স্বশক্ত্যা প্রীণয়েৎ পুমান্। শয়নপ্রস্থর মহীপ্রদানৈরথবাপি ভ্র্॥ ১০৭॥ ক্রতপাদাদিশোচশ্চ ভুক্তা সায়ং ততো গৃহী। গচ্ছেদস্ফুটিতাং শয্যামপি \* দারুময়ীং নৃপ ! ॥ ১০৮ ॥ নাবিশালাং নবাভগাং নাসমাং মলিনাং ন চ। ন চ জন্তুময়ীং শয্যামধিতিষ্ঠেদনান্তৃতাম্ † ॥ ১০৯॥

রাজন্! দিবাভাগে অভিথি সমাগত হইয়া বিমুধ হইলে যে পরি-মাণে পাতক হয়, সূর্য্যান্তগমনের পর অতিথি বিমুখ হইয়া গমন कतित्व जाहात अधेक्षण भाजक हहेगा थारक। " तारक्य ! এहे কারণে স্থ্যান্তগমনের পর সমাগত অতিথিকে যথাশক্তি পুজা করিবে। রাত্রিকালে উপস্থিত অতিথির পূজা হইলে সমুদায় দেবতার পূজা করা হয়। <sup>১ • •</sup> গৃহস্থ ব্যক্তি দুঃস্থ ইলৈ ভোজনার্থ শাক অন্ন ও জল প্রদান দারা এবং শায়নার্থ শিয়া, প্রস্তর বা ভূমি এদান দ্বারা যথাশক্তি অতিথির প্রীতি উৎপাদন করিবে 1<sup>2</sup>

রাজন্! গৃহস্ব্যক্তি সায়ংকালীন আহারাবসানে পাদাদি প্রকালন করিয়া ছিজরহিত গভদস্তময় পর্যাকে অথবা কাঠময় পर्यादक भग्नमार्थ गमन कतिरव। " " এই পর্যাক রুহৎ না হয়, ভগ্ন না হয়, বন্ধুর না হয়, কীটপূর্ন (ছারপোকাযুক্ত) না হয় এবং উহার শ্যা ছিল্ল মলিন ও অনাত্ত না হয়। ঈদ্ভণ শ্যায় শ্যুন করা গৃহত্বের কর্ত্তব্য 1' " শয়নকালে পূর্য়ে দিকে বা দক্ষিণ দিকে

গঢ়েছ শ্যামক্টিভানপি ইভি পুত্তকান্তরন্য পাঠঃ
 শতিপ্রেদনার্ভান্ ইভি বা পঠনীর্দ্।

প্রাচ্যাং দিশি শিরঃ শস্তং যাম্যায়ামথবা নৃপ !।

সদৈব স্বপতঃ পুংসো বিপরীতন্ত রোগদম্॥ ১১০॥

ঋতাবুপগমঃ শস্তঃ স্বপত্যামবনীপতে !।

পুরাম্যুক্ষে শুভে কালে জ্যেষ্ঠযুগ্ধাস্থ রাত্রিষু॥ ১১১॥

নাম্যাতান্ত স্থিয়ং গচ্ছেন্নাতুরাং ন রজস্বলাম্।

নামিষ্ঠাং ন প্রকুপিতাং নাপ্রশস্তাং ন গর্ভিণীম্॥ ১১২॥

নাদক্ষিণাং নান্যকামাং নাকামাং নান্যযোধিতম্।

মন্তক করা প্রশন্ত। পশ্চিমশিরা বা উত্তরশিরা হইয়া শন্ধন করিলে রোগ জিমিয়া থাকে। '' অবনীপতে! ঋতুকালে স্বপত্নীতি গমন করা প্রশন্ত হইতেছে। পুংনামক নক্ষত্রে যুগা রাত্রিতে শুভ সময়ে ঋতু কালের শেষ অংশে গমন করা কর্ত্তরা। ''' পত্নী যদি অস্থাতা হয় অর্থাৎ যদি তাহার ঋতুস্থান না হইয়া থাকে এবং যদি পীড়িতা বা রক্ষস্থলা হয় অর্থবা যদি সে কামার্ত্তা না হইয়া থাকে কিংবা যদি তাহার অপবাদ ঘটিয়া থাকে, অথবা যদি সেই পত্নী কুপিতা বা গর্ভিণী হইয়া থাকে, তাহা হইলে তাহাতে গমন করা অকর্ত্তিয়া '' যে কামিনী অনুকূলা নহে, যে কামিনী অন্য পুরুষে আসক্তা, যে কামিনী অকামা, যে কামিনী পরস্ত্রী, যে কামিনী ক্ষুধার্ত্তা, যে কামিনী অধিক ভোক্ষন করিয়াছে, তাহাতে গমন করা উচিত নহে এবং আপনিও যদি প্রতি-

পুংমামক নক্ষত্ৰ দণ্টী, যথা অধিনী কুর্ত্তিকা রোহিণী পুনর্বস্থ পুষা হস্তা অস্থ্য-রাধা প্রবণা পুর্বজ্ঞান্তপদ্ ও উত্রজ্ঞান্তপদ্। ভগৰতী গাঁতায় কথিত ইইয়াছে বে, '' ঋতুস্মাতা ভবেরারী চতুর্বেইইনি তদিনাং। আবে ছণিদিনং রাজন্! ঋতুকাল উদাহতঃ । ন'রী চতুর্ব দিনতা ঋতুস্মাতা ইইয়া থাকে। সেই চতুর্ব দিন অবধি বোল দিন পর্যন্তে ঋতুকাল। এই বোড়শ দিনের মধ্যে শেষ অংশে গমন করিলে সন্তান বলিষ্ঠ হয় ও প্রোয়ই গর্ভ নপ্ত হয় না।

ভাগবতী গীতা প্রভৃতি অনেক গ্রন্থে কথিত হইয়াছে যে, ঋতুকালের অযুগ্ধ রাত্রিতে গমন করিলে কনা। জবে, যুগা রাত্রিতে পুত্র উৎপন্ন হয়, অতএব যুগা বাত্রিতে গমন করাই পুশ্রাথী ব্যক্তির কর্জব্য। ১১১

ক্ষুৎক্ষামামতিভুক্তাং বা সয়ঞৈতিগুণৈযুঁতঃ ॥ ১১৩॥ সাতঃ প্রগান্ধধৃক্ প্রীতো ন ধ্যাতঃ ক্ষ্মিতোইপি বা \*। সকামঃ সামুরাগশ্চ ব্যবায়ং পুরুষো ব্রজেৎ ॥ ১১৪॥ চতুর্দশ্যক্ষমী চৈব অমাবাস্যাথ পূর্ণিমা। পর্বাণেতানি রাজেকে! রবিসংক্রান্তিরেব চ ॥ ১১৫॥ তৈলন্ত্রীমাংসসস্থোগী পর্বাস্থেতেরু বৈ পুমান্। বিষ্ণুত্রভোজনং নাম প্রয়াতি নরকং নৃপ!॥ ১১৬॥ অশেষপর্বস্বৈতেষু তুসাৎ সংযমিতিরু বৈঃ। ভাব্যং সচ্ছান্ত্রদেবেজ্যাধ্যানজপ্যপরেন রৈঃ॥ ১১৭॥ নান্যযোনাব্যোনো বা নোপযুক্তোষ্যন্ত্রথা। দেবিদ্বিগ্রন্তর্গাঞ্চ ব্যবায়ী নাশ্রমে ভবেৎ †॥ ১১৮॥

কুল, অন্য রমনীতে আসক্ত, অকাম, পরপুরুষ, কুধার্ত্ত বা অতিভুক্ত হয়, তাহা হইলেও জ্ঞীগমন করা অকর্ত্তব্য। " প্রাত্ত মাল্যধারী গদ্ধদ্রব্যধারী প্রীত সকাম ও সামুরাগ হইয়া পত্নীগমন
করিবে, কুধিত বা চিন্তান্থিত হইয়া গমন করা অবিধেয়। " "
রাজেক্স! চতুর্দশী অইমী অমাবস্যা পূর্নিমা ও সংক্রান্তি, এই কয়েক
টীকে পর্ম বলে। " বে ব্যক্তি এই সকল পর্ম দিবসে তৈলমর্দ্দন,
মাংসভোজন ও জ্ঞীসম্ভোগ করে, তাহাকে বিখ্যুত্ত-ভোজন-নামক
নরকে গমন করিতে হয়। " জ্ঞানবান্ ব্যক্তিরা এই সমুদায় পর্মদিবসে জিতেক্সির হইয়া সংশাস্ত্র অনুশীলন, দেবপুলা যাগ ধ্যান
ও লপ করিবেন। " গো-ছাগাদি যোনিতে অবোনিতে (মুখ
হস্তাদিতে) দেবালয়ে ব্রাক্ষণের আলয়ে গুরুর আলয়ে অথবা
বিধ্পন্ধোগ ধারা (ব্রষ্য বাক্ষিকরণ রসায়ন প্রস্তৃত্তি ধারা) জ্ঞী-

শ্চীতো স খ্যাতঃ কৃষিতোধলি বা ইতি পাঠাতরম্।
বাবারী নাম্ময়ে তবেৎ;ইতি বা পাঠঃ।

চৈত্যচত্ত্বরতীর্থেষু গোষ্ঠে নৈব চতুম্পথে।
নৈব শাশানোপ্রন্সলিলেষু মহীপতে! ॥ ১১৯॥
প্রোক্তপর্ব্ব দেশ্যেষু নৈব ভূপাল! সন্ধারোঃ।
গচ্ছেদ্যবায়ং মতিমান্নমূত্রোচ্চারপীড়িতঃ॥ ১২০॥
পর্ব্বন্ধিং মতিমান্নমূত্রোচ্চারপীড়িতঃ॥ ১২০॥
পর্ব্বন্ধিং মতা দিবা পাপপ্রদেশ নূপ!।
ভূবি রোগাবহো\* নূণাম প্রশক্তো জলাশয়ে॥ ১২১॥
পরদারান্ন গচ্ছেচ্চ মনসাপি কদাচন।
কিমু বাচান্থিবন্ধোংপি নাস্তি তেষু ব্যবায়িনাম্॥ ১২২॥
মৃতো নরকমভ্যেতি হীয়তেহক্রাপি চায়ুবঃ।
পরদারগতিঃ পুংসাম্ উভয়ক্রাপি ভীতিদা †॥ ১২৩॥

পুরুষ বাবহার করিবে না। "" ভূপতে! মান্য প্রধান বৃক্ষতলে, প্রাঙ্গণে, তার্থে, গোষ্ঠে, চতুষ্পথে, শ্মশানে, উপবনে বা জলমধ্যে স্ত্রীর সহিত বাবহার করা বিধেয় নহে। "" রাজন্! বুজিমান্ বাজি পুর্বোজ্ঞ সমুদায় পর্বাদিবসে, প্রত্যুবে, সন্ধ্যাকালে অথবা মল মুক্রবুজ হইয়া স্ত্রাসহবাস করিবে না। "" পর্বাদিবসে স্ত্রাগমন করিলে ধনহানি হয়, দিবাভাগে পাপ হইয়া থাকে, ভূতলে স্ত্রীসম্ভোগ করিলে খ্যাভিলোপ হয়। "" বাক্যমারা বা মনোম্বারাও কখন পরস্ত্রাগমন করিবে না, কারণ পরস্ত্রাগমন করিলে অস্থিবিহীন হইতে হয় অর্থাৎ পরস্ত্রাগমন ইহলোকে ও পরলোকে ভয়প্রদর্শন করিয়া থাকে কারণ ইহলোকে উপরলোকে ও পরলোকে ভয়প্রদর্শন করিয়া থাকে কারণ ইহলোকে উপ্রবাক্তির আয়ুক্ষেয় হয়, ও পরলোকে সেনরক গমন করে। "" জ্ঞাবান্ ব্যক্তি এই সমুদায়

<sup>🕈</sup> ভূবি রোগঞ্জ: হতি বা পঠাত।ম্।

र উভয়ত্রাপি সীদভি ইতি কেচিং পঠতি।

ইতি মত্বা স্বদারেরু ঋতুমৎস্থ নরে। ব্রন্তেৎ। যথোক্তদোষহীনেরু সকামেযুন্তাবপি॥ ১২৪॥

ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২°শে গৃহস্থর্দ্যা নাম একাদশো২ধ্যায়ঃ।

বিবেচনা করিয়া পূর্ব্বোক্ত দোষহীনা সকামা পদ্ধীতে ঋতুকালে বা অন্য সময় ইচ্ছানুসারে গমন করিবে। ১২৪

> বিষ্ণুরাণ তৃতীয় অংশ গৃহস্থ-ধর্ম-নামক একাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

বিষ্ণুপুরাণম্। তৃতীয়োহংশ:। দাদশাধ্যায়ঃ।

## ঐৰ্ব উবাচ।

দেবগোত্রাক্ষণান্ সিদ্ধ-র্ন্ধাচার্যাং শুর্থার্চয়েও।
দ্বিকালঞ্চনমেও সন্ধ্যান্থীনুপচরেও তথা॥ >॥
সদান্ধপহতে বস্ত্রে প্রশন্তাক্ষ তথোষধীঃ \*।
গারুড়ানি চ রত্নানি বিভ্রাও প্রয়তো নরঃ॥ >॥
প্রস্থিমানলকেশক্ষ স্থান্ধিকারুবেশপৃক্।
দিতাঃ স্থানসো হাদ্যা বিভ্ত্যাক্ষ নরঃ সদা॥ ৩॥
কিঞ্চিৎ পরস্থান হরেন্নাপ্যাপ্রাপ্রথ বদেও।
প্রিয়ঞ্চ নান্তং জ্রান্ধান্যদোষান্ধীরয়েও॥ ৪॥

ঔর্ব কহিলেন। গৃহস্থ ব্যক্তি, দেবতা গো ব্রাহ্মণ সিদ্ধপুরুষ
বৃদ্ধ আচার্য্য ও অগ্রিই হাদিগের পূজা করিবে এবং দুই সন্ধান
সন্ধ্যা দেবীকেও নমস্কার করিতে হইবে। গৃহস্থ, সর্বাদা প্রয়ত
হইয়া অচ্ছিন্ন বস্ত্রযুগল, প্রশন্ত মহৌষধি ও গরুত রত্ম ধারণ
করিবে। কেশগুলি সর্বাদা তৈলাদিদ্বারা চিকণ ও পরিষ্কার
রাখিবে। গন্ধজাব্য যুক্ত মনোহর বেশধারণ করিবে। উত্তম শুক্র
পূজা ধারণ করাও কর্ত্ব্য। কথন কিছুমাত্র পরজাব্য হরণ করিবে
না, কাহাকে কিছুমাত্র অপ্রিয় কথা কহিবে না। মিথা প্রিয়
বাক্য প্রয়োগ করাও উচিত নহে। অন্যের দোষ কীর্ত্তন করাও

নান্যশ্রিয় তথা বৈরং রোচয়েৎ পুরুষেশ্বর !।
ন দুফং যানমারোছেৎ কুলচ্ছায়াং ন সংশ্রেয়ে । ৫॥
বিদ্বিফ-পতিভামত্ত-বহুবৈরাতিকটিকৈঃ \*।
বন্ধকী-বন্ধকীভর্তৃ ক্ষুদ্রানৃতকথৈঃ সহ ॥ ৬॥
তথাতিবায়শীলৈশ্চ পরিবাদরতৈঃ শঠিঃ।
বুধো ন মৈত্রীং কুর্মীত নৈকপন্থানমাশ্রমে ॥ ৭॥
নাবগাহেজ্জলৌযস্য বেগম্মে নরেশ্বর ।
প্রদীপ্তং বেশ্ম ন বিশেষ রোহেচ্ছিথরং তরোঃ ॥ ৮॥
ন কুর্য্যাদ্ভসংঘর্ষং ন কুফীয়াচ্চ নাদিকাম্।
নাসংবৃতমুধো জুত্তেৎ শ্বাসকাশৌ চ বর্জ্জয়ে ॥ ৯॥

অনুচিত। পুরুষজ্ঞেষ্ঠ! পরস্ত্রী দেখিয়া লোভ প্রকাশ করিবে না, কাহারো সহিত শক্তবাও করিবে না। জীর্ণ বা ভয় যানে অরোহণ অথবা নদীতীরস্থিত রক্ষছায়ার উপবেশন করাও করিবা নহে। পণ্ডিত ব্যক্তি, সহক্ষ শক্তর সহিত, পতিত বা উল্লম্ভ ব্যক্তির সহিত, যাহার অধিক শক্ত ঈস্থল লোকের সহিত, কুদেশ-স্থিত কুরোর সহিত, বেশ্যাও তাহার উপপতির সহিত, যাহার। অপেমাক্র লাভে ন্যায়পথ পরিত্যাগ করে তাদুশ কুদ্রোশয় ব্যক্তির সহিত, মিথ্যা বাদার সহিত প্রতিব্যক্ষীল মনুষ্যের সহিত, পরনিন্দাপরায়ণ লোকের সহিত ও শঠের সহিত মিক্রতা করিবে না, একপণ্ডে চলিবে না। রাজন্! নদীজলের বেগ ময় হইলে ভোঁটো পড়িলে) স্থান করা অনুচিত। গৃহে আঞ্জন লাগিলে সেই প্রস্থলিত গৃহে প্রবেশ বা রক্ষের অগ্রভাগে আরোহণ করিবে না। দিন্তে দন্তে ধ্রি করিবে না, নাসিকা কুঞ্চিত করাও অবি-

<sup>\*</sup> বহুবৈরাভিসন্ধটে ইভি পাঠাভরস্

নোলৈছিলে \* সশক্ষ ন মুক্ষেৎ প্ৰনং বুধঃ।
নথান্ন বাদলেচ্ছিল্টান্ন তৃণং ন মহীং লিখেৎ॥ ১০॥
ন শাক্ষ ভক্ষয়েলোইং ন মৃদ্নীয়া দিচক্ষণঃ †।
জ্যো তীংষ্যমেধাঃ শস্তানি নাভিবীক্ষেত চ প্রভা।
নথাং পরস্তিয়ইকেব সূর্যাঞ্চাস্তমনোদয়ে॥ ১১॥
ন ভংকুর্য্যাচ্ছবক্ষৈব শব্যাক্ষা হি সোমজঃ॥ ১২॥
চতুপ্রান্ চৈত্যত্ত্রন্ শাশানোপবনানি চ।
দুক্তিপ্রীসন্নিকর্ষ বিজ্ঞান্তিক্যোনিলি সর্বাদা ১৩॥
প্রাদেবপ্রজ্জোতিশ্ছ্যাংনাতিক্যেদ্ বুধঃ।
নৈকঃ শ্ন্যাটবীং গচ্ছেন্ন চ শ্ন গৃছে বসেৎ॥ ১৪॥

ধেয়। মুখ আরত না করিয়া জ্প্তাত্যাগ করা কর্ত্তব্য নছে। উচ্চৈঃস্বনে স্থাস ও কাশ পরিত্যাগ করিবে না। অতি উচ্চ হাসা ও শব্দপুসক বায়ুপনিত্যাগ করিবে না। নথবাদ্য বা নথদারা তৃণক্ষেদন
কনিবে না। নথদারা ভূমিতে লিখিবে না। " শ্বাক্র্য চর্বাণ বা
লোট্রমর্দন করা বিচক্ষণ ব্যক্তির কর্ত্তব্য নছে। প্রভা! অপবিত্র
হইয়া সূর্যা প্রভৃতি প্রশস্ত জ্যোতিঃপদার্থ দর্শন করিবে না। "
উলক্ষপরস্ত্রী দর্শন ও উদ্যান্তের সময় দিবাকর দর্শন করা অবিধেয়।
শব দর্শন করিয়া বা শবগন্ধ আঘাণ করিয়া স্থা। প্রকাশ করিবে না।
কারণ, শবগন্ধ সোমের অংশ। " রাত্রিকালে চতুত্বাথ চৈতা রক্ষ,
শ্বাশান, উপবন ও দুই কামিনী, এ সমুদায়ের সংসর্গ পনিত্যাগ
করিবে! " পূল্য ব্যক্তি, দেবতা, ধ্বলা ও ভেজঃপদার্থ, ই হাদিগের ছায়া স্থিতক্রম করা বিজ্ঞ ব্যক্তির কর্ত্তব্য নছে। শূন্য গৃছে

<sup>\*</sup> नोरें हर्इटेंग्ट इंजि वा श्रवाणाम्।

<sup>া</sup> ন ৰাজ্য প্রাক্তিপলোইং ম গৃছীয়াভিচক্ষণঃ ইভি অমে। পঠিভি।

কেশান্থিক কিকামেধ্য-বহ্নিভস্মতুষাং শুধা।
স্থানার্দ্রাং ধরণীধ্রেব দূরতঃ পরিবর্জ্জয়েৎ॥ ১৫॥
নানার্য্যানাশ্রয়েৎ কাংশিচৎ ন জিন্ধান রোচয়েদ্ বুধঃ।
উপসর্পেত ন ব্যালান্ চিরং তিষ্ঠেম চোপ্রেভঃ॥ ১৬॥
অতীব জাগরস্থপ্লে তদ্ধৎ স্থানাসনে বুধঃ।
ন সেবেত তথা শ্যাং ব্যায়ামঞ্চ নরেশ্বর॥ ১৭॥
দংফ্রিঃ শৃক্ষিণশৈচব প্রায়েশ্রমান্ত কর্জয়েৎ।
অবস্থায়ঞ্জ রাজেন্দ্র। পুরোবাতাতপৌ তথা॥ ১৮॥
ন স্থায়ার স্থপের্যো নচৈবোপস্পুশেদ্ বুধঃ।
মুক্তকক্ষণ্ট নাচামেৎ দেবাভ্যর্চাঞ্চ বর্জ্জয়েৎ॥ ১৯॥
হোমদেবার্চনাদ্যাম্থ ক্রিয়াস্থাচমনে তথা।

বাস করা বা একাকী জনশূন্য অরণ্যে গমন করা অনুচিত। তথ্য কেশ, অন্থি, কণ্টক, অপনিত্র বস্তু, অগ্নি, ভশ্ম, তুব ও স্নানজল দ্বারা আত্র ভূমি পদদ্বারা কশর্শ করিবে না। তথ্য অনার্য্য ব্যক্তির আশ্রয় গ্রহণ করিবে না, কুটিল লোকের সংসর্গ পরিত্যাগ করিবে। হিংল্র জন্তুর সমীপবন্তী হওয়া উচিত নহে। নিজেঃ ভঙ্গের পর অধিক ক্ষণ শ্যায় থাকিবে না। তথ্য অধিক ক্ষণ শ্য়ন, অধিক ক্ষণ নিজো, অধিক ক্ষণ জাগরণ, অধিক ক্ষণ আনহান, অধিক ক্ষণ উপবেশন, অধিক ক্ষণ ব্যায়াম ও অধিক ক্ষণ স্ত্রীসংসর্গ করিবে না। তথ্য ব্যক্তি, দংক্রীর ও শৃঙ্গীর সমীপবন্তী হইবে না। সম্মুখবায়ু, সন্মুখ রোজ এবং নীহার পরিত্যাগ করিবে। ত উলক্ষ্ হইয়া স্নান ও আচমন করিবে না, নিজাও যাইবে না। কাছা খুলিয়া আচমন বা দেবপুজা করা বিহিত নহে। তথ্য হোম দেবপুজা প্রভৃতি ক্রিয়াতে, আচমনে, পুণ্যাহ বাচনে ও ক্লপ কার্য্যে একবন্ত্র ইয়া

নৈকবন্তঃ প্রবর্ত্তে দিজবাচনিকে জপে ॥ ২° ॥
নাসমঞ্জনশীলৈস্ত সহাসীত কদাচন।
সদৃত্তিসন্নিকর্ষো হি ক্ষণাদ্ধ মিপি শাস্যতে ॥ ২১ ॥
বিরোধং নোত্তবৈর্গছেরাবরৈশ্চ সদা বুধঃ \* ।
বিবাদশ্চ বিবাহশ্চ সমশীলৈন্ পেষ্যতে ॥ ২২ ॥
নারভেত কলিং প্রাক্তঃ শুদ্ধবৈরং ন কারয়েং † ।
অপ্যাপহানিঃ সোঢ়ব্যা বৈরেণার্থাগমং ভ্যক্তেং ॥ ২৩ ॥
স্থাতো নাক্ষানি নির্মাজ্জেৎ স্থানশাট্যা ন পাণিনা।
ন চ নিপ্র্নিয়েৎ কেশানাচামেন্নৈব চোপ্রতঃ ॥ ২৪ ॥
পাদেন নাক্রমেৎ পাদং ন পুজ্যাভিমুখং নয়েং।

'প্রবৃত্ত হইবে না।' স্বার্থপির ব্যক্তির সহিত কখনই একত অবস্থান করিবে না। ক্ষণার্জের জন্যও স্থশীল ব্যক্তির সংসর্গ প্রশংসনীয়।' জানী ব্যক্তি উৎকৃষ্ট বা অপকৃষ্ট লোকের সহিত বিরোধ
করিবে না। রাজন্! বিবাদ ও বিবাহ সমকক্ষ লোকের সহিত
করাই কথঞ্চিৎ শ্রেয়ঃ।' বস্তুত: জ্ঞানবান্ ব্যক্তি কাহারে। সহিত
বিবাদ করিবে না, র্থা শক্রতা করাও অনুচিত। অলপ ক্ষতিও
সহ্য করিবে, তথাপি কাহারো সহিত শক্রতা করিয়া ধনোপার্জ্জন
করা বিধি বিহিত নহে।' স্থানের পর পরিধেয় বস্তবারা বা
হস্তবারা গাত্র মার্জন করিবে না। কেশ ঝাড়াও উচিত নহে।
স্থানের পর উঠিয়া মুখপ্রকালন করিবে না। পদ্বারা পদ আক্রমণ করা কর্ত্তবা নহে। প্রজ্য ব্যক্তির অভিমুখ্নে পদ স্থাপন করিয়া
অবস্থান করিবে না। গুরু লোকের সম্মুখে বিনয়ান্থিত হইয়া

<sup>\*</sup> मांभरेतक नमा तूधः इंडि वा भविषयाम्।

<sup>+</sup> फक्टरेन्त्रक वर्क्करम् रेडि अस् क्रिमा श्रीतेः।

বীরাসনং গুরোরতো \* তাজেত বিনয়ান্বিতঃ॥ २৫॥
অপসবাং ন গচ্চেচ্চ দেবাগারচতুষ্পথান্।
মঞ্চল্যপূজ্যাংশ্চ ততো বিপরীতার দক্ষিণান্॥ ২৬॥
সোমাগ্র্কাসুবায়্নাং পূজানাঞ্চ ন সন্মুথ্য।
কুর্য্যাৎ স্তীবন-বিমূত্রসমুৎসর্গঞ্চ পণ্ডিতঃ॥ ২৭॥
তিষ্ঠার মূত্রয়েৎ তদ্ধৎ পন্থানং নাহবমূত্রয়েৎ।
ক্ষেমবিমূত্ররক্তানি সর্বাদেব ন লজ্ঞায়েৎ॥ ২৮॥
ক্ষেমিবিংহানকোৎসর্গো নাম্নকালে প্রশাস্তে।
বলিমক্লজপ্যাদৌ ন হোমে ন মহাজনে †॥ ২৯॥
যোষিতো নাবমন্যেত ন চাসাং বিশ্বসেদ্ বুধঃ।
ন তৈবের্ম্ভিবেৎ তাম্ব নাধিকুর্য্যাৎ কদাচন॥ ৩০॥

থাকিবে, উচ্চাদনে বদিবে না। বি দেবাগার চতুম্পথ মাঙ্গলিক জ্বনা ও পূজা বাজি, এ সমুদায়কে প্রদক্ষিণ না করিয়া গমন করিবে না। এতদ্বিনরীত বস্তু বা ব্যক্তিকে প্রদক্ষিণ করিবে না। বি জ্ঞানবান্ ব্যক্তি, চক্ত অগ্নি সূর্য্য জল বায়ু পূজা বাজি, এতং সমুদায়ের অভিন্তুর্থে নিজীবন বা মুত্র পুনীষ পরিত্যাগ করিবে না। বি দণ্ডায়মান হইয়া প্রস্রাব ত্যাগ করিবে না, পথেও প্রস্রাব করা কর্ত্বনা নহে। ক্রেয়া মল মুত্র রক্ত, এ সমুদায় কখনই লক্ত্বন করিবে না। বি আহানিরের সময় প্রেয়া ত্যাগ করা বা হাঁচা কর্ত্বনা নহে। এইরূপ দেবপূজা ম ক্লেকি কার্যা ক্লে হোম প্রভৃতি কার্যাকালে বা মহাজনসমাপে গ্লেষা ত্যাগ করিবে না হাঁচিবেও না। বি জ্লীলোককে বিশ্বাস করিবে না, তাহাদের প্রতি অবজ্ঞাও করিবে না। জ্লালোকের প্রতি

<sup>#</sup> নোচে!সনং ঋরোরতের ইতি পাঠাওরন্।

<sup>†</sup> म महाकरेन: वैकि का भारतः।

মান্ত্রাজ্য-পুজাননভিবাদ্য চ।
ন নিক্বিদেশ্ হাৎ প্রাক্তঃ সদাচারপরো নৃপ \* ॥ ৩১ ॥
চতুপথান্ নমস্কুর্যাৎ কালে হোমপরো ভবেৎ।
দীনানভুাদ্ধরেৎ সাধূন্ উপাসীত বহুক্রতান্॥ ৩২ ॥
দেবর্ষিপুজকঃ সম্যক্ পিতৃপিণ্ডোদকপ্রদান্ বজেৎ ॥৩৩॥
হতং মিতং প্রিয়ং কালে বশ্যাত্মা যোহভিভাষতে †।
স যাতি লোকানাহ্লাদ-হেতুভূতান্ নৃপাক্ষয়ান্॥ ৩৪॥
ধীমান্ হ্রীমান্ ক্ষমায়ুক্ত আজিকে। বিনয়ান্বিতঃ।
বিদ্যাভিজনর্দ্ধানাং যাতি লোকানস্কুমান্॥ ৩৫॥

কর্মান্তিত হইবে না, তাহাদের প্রতি কোন বিষয়ে কর্ত্ত প্রদান করিবে না। ° সদাচারপরায়ণ বিদ্যান্ত, মাঙ্গলিক বস্তু, পুজা, রত্র, মৃত্র, পূজা, এ সমুদায়কে নমস্কার না করিয়া গৃহ হইতে নিজ্বান্ত হইবে না। ° চতু স্পথ দেখিলে নমস্কার, যথাকালে হোম, দীন ব্যক্তিকে উদ্ধার ও বিদ্যান্ত স্থালি ব্যক্তির সন্মান করিবে। ° যিনি দেবগণের ও অধিগণের পূজা করেন, যিনি পিছলোকের প্রাদ্ধ ও তর্পণ করিয়া থাকেন, যিনি অতিথিসৎকার করেন, তিনি পরলোকে উন্তম স্থান প্রাপ্ত হন। ° যিনি বিজিতে ক্রিয়া, যিনি যথা—সময়ে মিত বাক্য হিত বাক্য ও প্রিয় বাক্য বলেন, তিনি দেহাব-সানে প্রীতিদায়ক অক্ষয় লোকে গমন করেন। ° যিনি ধীমান্ত্রীমান্ ক্ষমাবান্ আন্তিক ও বিনীত, তিনি সৎক্লসন্তুত বিদ্যাত্ত্ব ব্যক্তির প্রাপ্য উন্তম লোক প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। ° স্থান্তহণ ব্যক্তির প্রাপ্য উন্তম লোক প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। ° স্থান্তহণ

<sup>\*</sup> সদাচারে পরে। নরঃ ইতি পুস্তকাররম্য পঠিঃ।

<sup>🛧</sup> যোহি ভাষতে ইভ্যম্যে পঠি।

অকালগজ্জিতাদৌ তু পর্বস্থাদেশ চকাদির।
অনধ্যায়ং বুধঃ কুর্য্যাদুপরাগাদিকে তথা ॥ ৩৬ ॥
শনং নয়তি ষঃ কুদ্ধান্ সর্ববন্ধুরমৎসরী।
ভীতাশ্বাসনক্ত সাধুঃ স্বর্গস্তস্যাম্পকং ফলম্॥ ৩৭ ॥
বর্ষাতপাদিকে জ্জী দণ্ডী রাত্র্যটবীয়ু চ।
শরীর্জ্রাণকামো বৈ সোপানৎকঃ সদা জ্রেছে ॥ ৩৮ ॥
নোর্জং ন তির্যগ্দুরং বা নিরীক্ষন্ পর্য্যটেদ্বুধঃ।
যুগমাত্রং মহীপৃষ্ঠং নরো গজ্জে লোকয়ন্ ॥ ৩৯ ॥
দোষত্তে স্বাশ্বাংস্ত বশ্যাত্মা যো নির্ম্যতি।
তদ্য ধর্মার্থকামানাং হানির্নাম্পাপি জায়তে ॥ ৪০ ॥

কালে চক্রগ্রহণ কালে পর্কাদিবদে অশেচি সময়ে ও অকালে মেঘ
গর্জন হইলে, ইত্যাদি সময়ে পণ্ডিত ব্যক্তি অধ্যয়ন করিবেন না।"
যিনি কুপিত ব্যক্তির ক্রোধ শাস্তি করেন, যিনি সকলের বন্ধু ও
মাৎসর্ঘাবিহীন, যে সাধু ভীত ব্যক্তিকে আশ্বাস প্রদান করেন,
তাঁহার পক্ষে অগিলাভ অতি সামান্য ফল বলিতে হইবে।" বিনি
শরীর রক্ষা করিতে অভিলাষী, তিনি বর্ষার সময় ও রৌজের সময়
ছত্র ব্যবহার করিবেন, রাত্রিতে গমন বা বনমধ্যে প্রবেশের সময়
দশুপাণি হইয়া চলিবেন এবং যখন যেখানে গমন করেন, কখনই
পাদুকাবিহীন হইয়া যাইবেন না।" পাশ্ব বা উদ্ধি বা দূবতর
প্রদেশ নিরীক্ষণ করিতে করিতে যাওয়া পশুক্তের কর্ত্বন্য নহে।
গমন কালে সক্ষুধ্বন্তী চারি হস্ত ভূমি দেখিতে দেখিতে যাই-বেন।" যে ব্যক্তি আপনাকে বশীভূত করিয়া পূর্কোক্ত সমুদায়
ও অন্যান্য দোবের মূল পরিহার করেন, তাঁহার কিছুমাত্র ধর্ম অর্থ

পাপেইপ্যপাপঃ পরুষ্ঠেগতিখতে প্রিয়াণি যঃ।
মৈত্রীদ্রবাত্তঃকরণস্ত্রস্য মুক্তিঃ করে স্থিতা ॥ ৪১ ॥
যে কামক্রোধলোভানাং বীতরাগা ন গোচরে।
সদাচারস্থিতাস্তেষামন্তাবৈধৃতা মহী ॥ ৪২ ॥
তন্মাং সভ্যং বদেং প্রাজ্ঞো যং পরপ্রীতিকারণম্।
সত্যং যং পরদুঃখায় তত্র মৌনপরো ভবেং ॥ ৪৩ ॥
প্রিয়ং যুক্তং হিতং নৈতদিতি মন্তান তদ্বদেং।
শ্রেম্নত্তর হিতং বাক্যং যদ্যপ্যত্যন্তমপ্রিয়ম্ ॥ ৪৪ ॥
প্রাণিনামুপকারায় যদেবেহ পরত্র চ।

করিলে যিনি তাহার প্রত্যাপকার না করিয়া মঙ্গলের চেক্টা করেন, কোন ব্যক্তি নিষ্ঠুর বাক্য বলিলে যিনি তাহাকে প্রিয় ও হিত বাক্য বলেন, যিনি সমুদায় প্রাণীর প্রতি বন্ধুবং ব্যবহার করেন এবং সেই বন্ধুতানিবন্ধন যাঁহার অন্তঃকরণ সর্বাদা দ্রবীভূত হইয়া আছে, মুক্তি তাঁহার হস্তগত বলিতে হইবে। ° ' যে ব্যক্তি সদা সদাচার-পরায়ণ, যে ব্যক্তি বীতরাগ ও মিগ্যা মায়ার বলীভূত নহেন, যিনি কাম ক্রোধ ও লোভকে পরাজয় করিয়াছেন, জাঁহার সত্য ছারাই পৃথিবা অবস্থিতি করিতেছে। ° শত্র অত বিজ্ঞ ব্যক্তি সর্বাদা সত্য কথা কহিবেন। সত্যই সর্বা সাধারণকে প্রীত করে, পরস্তু যে স্থলে সতা কথা কহিলে কাহারে আনিষ্ঠ হয়, সে স্থলে মৌন অবলম্বন করা কর্ত্রবা। ° যে স্থলে প্রিয় বাক্য বলিলে হিতজনক ও যুক্তিসঙ্গত না হয়, সে স্থলে প্রিয় বাক্য কহিবে না, কারণ হিত বাক্য যদিও সাতিশয় অপ্রিয় হয়, ভাছা হইলে ভাছাও বলা শ্রেয়ঃ। ° যে কার্য ইহলোকে বা পরলোকে প্রাণিগণের

পালেংপাপাপ: পুরুষেংপাভিষতে ইতি বা পাঠ: ।

কর্মণা মনসা বাচা তদেব মতিমান্ ভজেৎ ॥ ৪৫ ॥ ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২° শে সদাচারো নাম দ্বাদশো ২ধ্যায়ঃ ।

উপকারজনক হয়, মতিমান্ ব্যক্তি সেই কার্য্যেই মনোদার। বাক্যদারা ও ব্যবহারদার। প্রবন্ত হইবেন। ° °

> বিষ্ণুরাণ তৃতীয় অংশ সদাচার-নামক ভাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

বিষ্ণুপুরাণম্।
ভূতীয়োহংশঃ।
ত্রোদশাধ্যায়ঃ।

## ঔর্ব্ব উবাচ।

সচেলস্য পিতৃঃ স্থানং জাতে পুত্রে বিধীয়তে।
জাতকর্ম ততঃ কুর্য্যাৎ \* প্রাদ্ধমভ্যুদয়ে চ যৎ ॥ > ॥

যুখান্ দৈবাংশ্চ পিত্রাংশ্চ সম্যক্ষব্জনাদ্ দ্বিজ্ঞান্।
পূজ্যেন্ডোজ্যেন্চেব ভন্মনা নান্যমানসঃ ॥ ২ ॥

দধ্যক্ষতৈঃ স্বদরৈঃ প্রাপ্ত্র্যাদ্ভ্রুপোইপি বা।
দেবতীর্থেন বৈ পিণ্ডান্ দদ্যাৎ কায়েন বা নূপ॥ ৩ ॥
নান্দীমুখঃ পিতৃগণক্তেন প্রাদ্ধেন পার্থিব।

ন্তর্ম কহিলেন। পুত্র জন্মিবামাত্র পিতা যদি সমিহিত থকেন।
তাহা হইলে তিনি তৎক্ষণাৎ দেই বস্ত্রেই স্থান করিবেন। পরে
পুত্রের জাতকর্ম ও আড়ুাদয়িক শ্রাদ্ধ করিতে প্রবৃদ্ধ ইইবেন।
তিনি পূর্বে উৎপন্ন অন্য পুত্রের প্রতি মনোনিবেশ না করিয়া
তক্ষনা হইয়া বাম দিক্ হইতে দেবপক্ষে ও পিতৃপক্ষে যুগা যুগা
ব্রাহ্মণ স্থাপনপূর্বক পূজা করিবেন ও ভোজন করাইবেন। বাজন্ !
গৃহস্থ ব্যক্তি প্রাভ্যুথ ও উত্তরমূখ ইইয়া দধি আতপতভূল ও কুলদ্বারা নির্মিত পিশু, দেবতীর্থনারা বা প্রজ্ঞাপতি তীর্থনারা প্রদান
করিবেন। ভূপতে! এই শ্রাদ্ধানা নান্দীমুখ পিতৃগণ পরিতৃপ্র

প্রীয়তে তত্তু কর্ত্তব্যং পুরুষেঃ সর্ব্যক্তিয়ু॥ ৪॥
কন্যাপুত্রবিবাহেয়ু প্রবেশে নববেশ্বনঃ।
নামকর্মনি বালানাং চূড়াকর্মাদিকে তথা॥ ৫॥
সীমন্তোময়নে চৈব পুত্রাদিমুখদর্শনে।
নান্দীমুখং পিতৃগণং পুজয়েৎ প্রয়ন্তো গৃহী॥ ৬॥
পিতৃপুকাবিধিঃ প্রোক্তো রুদ্ধাবেশসমাসতঃ।
ক্রমতামবনীপাল! প্রেতকর্মাক্রিয়াবিধিঃ॥ १॥
প্রেতদেহং শুকৈঃ স্লাবিঃ মাপিতং অধিভূষিতম্।
দক্ষ্বা আমাদ্বহিঃ স্লাতাঃ সচেলাঃ সলিলাশয়ে॥ ৮॥
যত্র তত্র স্থিতারৈতদমুকায়েতি বাদিনঃ।
দক্ষিণাভিমুখা দদ্যব্লিন্ধবাঃ সলিলাঞ্জলিম্॥ ৯॥

থাকেন অতএব গৃহস্থ ব্যক্তি সমুদায় অভ্যুদয়-কার্য্যেই এই নাল্পী"মুখ প্রাদ্ধ করিবেন 1° কন্যার বিবাহ কালে, পুত্রের বিবাহ কালে,
সুত্রন গৃহপ্রবেশকালে, বালকের নামকরণ সময়ে, চূড়াকর্ম সময়ে 1°
সীমস্তোলয়ন কালে, পুত্রমুখ দর্শন সময়ে এবং অন্যান্য অভ্যুদয়
কালে গৃহস্থ ব্যক্তি পবিত্র ইয়া নাল্পীমুখ পিতৃগণের পুকা করিবেন। ভূপতে! পুর্বে প্রাচীন মতানুসারে সক্তেপে পিতৃপুকার ক্রম
বিশ্বাছি, একণে প্রেড কর্মের বিধান (বলিডেছি) প্রবণ করুন 1°

(কোন ব্যক্তি প্রাণ্ডাগ করিলে তাহার বস্কুগণ) সেই মৃতদেহ
স্থান করাইয়া মাল্যদারা বিভূষিত করিয়া থামের বাহিরে দথা
করিবে ৷ পরে সেই বস্ত্রের সহিত জলাশয়ে অবগাহনপূর্বক স্থান
করিয়া দক্ষিণমুখ হইয়া 'যত্র তত্র ছিতায় অমুকায় এতং' (যে কোন
স্থানে থাকুন, অমুককে এই জল দিলাম) এই মস্ত্র পাঠ পূর্বক দলিলাঞ্গলি প্রদান করিবে ৷ বিদি দিবাভাগে দাহ হয় তাহা হইলে)

প্রবিষ্টাশ্চ সমং গোভিত্র মিং নক্ষত্রদর্শনে।
কটধর্মাংস্ততঃ কুরু ্তি শৈ অন্তরশায়িনঃ \* ॥ >০ ॥
দাতব্যোহনুদিনং পিণ্ডঃ প্রেতায় ভুবি পার্থিব।
দিবা চ ভক্তং ভোক্তব্যম্ অমাংসং মন্থর্গন্ত ! ॥>>॥
দিনাদি তাবদিছাতঃ কর্তব্যং বিপ্রভোজনম্।
প্রেতন্ত্রিং তথা যাতি বন্ধুবর্গেণ ভুঞ্জতা ॥ ১২ ॥
প্রথমেইছি তৃতীয়ে চ † সপ্তমে নবমে তথা।
বস্ত্রতাগং বহিঃ স্থানং কৃত্রা দদ্যাৎ তিলোদকম্॥>৩॥
তভোহন্ধ বন্ধুবর্গন্ত ভুবি দদ্যাৎ তিলোদকম্।
চতুর্থেইছি চ কর্তব্যং ভস্মান্থিচয়নং নূপ॥ ১৪॥

ভূমে প্রস্তরণান্ত্রিন ইতি পাঠান্তরম।
 প্রথমেহত্নি তৃতীয়ে বা ইতি বা পঠাতাম।

তদূর্দ্ধনকস্পর্শন সপিগুনামপীষ্যতে।
যোগ্যাঃ সর্বক্রিয়াণান্ত সমানসলিলান্তথা।। ১৫।।
অন্তলপনপুস্পাদিভোগাদন্যত্র পার্থিব!।
শ্ব্যাসনোপভোগশ্চ সপিগুনামপীষ্যতে।
ভস্মাস্থিচয়নাদূর্দ্ধং সংযোগোন তু যোষিতা।। ১৬।।
বালে দেশান্তরস্থে চ পতিতে চ মুনো সতে।
সদ্যঃশোচং তথেচ্ছাতে। জলাগ্ন্যুদ্ধনাদিরু॥ ১৭॥
স্তবন্ধোর্দশাহানি কুলস্যান্ধং ন ভুঞ্জতে।
দানং প্রতিগ্রহা যজ্ঞঃ স্বাধ্যায়শ্চ নিবর্ত্তে॥ ১৮॥
বিপ্রস্যাত্তদ্ব, দ্বাদশাহং রাজন্যস্যাপ্যশৌচকন্।

আছি চয়ন করা বিধেয়। ° অনন্তর সপিগুদিগের অক্সন্সর্শ করিবে। বাঁহারা সমানোদক তাঁহারা অশোচের মধ্যে পঞ্যজ্ঞ প্রভৃতি কুসমুদায় কর্ম করিতে পারেন ° কিন্তু তাঁহার। স্রক্ চন্দন প্রভৃতি ভোগ্য বস্তু ভোগ করিতে পারিবেন না। ঐ সময় শ্যা আসন প্রভৃতি ভোগ বিষয়ে তাঁহারা এবং সপিগুগণও অধিকারী। ভন্ম ও অস্থি চয়নের পর স্ত্রীসহ্বাস প্রুরিভাগে করা কর্ত্বা। °

বালক মৃত হইলে, দেশান্তরন্থিত ব্যক্তি পরলোক গমন করিলে, পতিত ব্যক্তি মরিলে, শুরু স্বর্গারোহণ করিলে, কেই ইচ্ছাপূর্বক দেহত্যাগ করিলে, জল অগ্নি বা উদ্ধানাদি দ্বারা অপমৃত্যু ইইলে, শ্রাবণের পরক্ষণেই অশৌচ নির্দ্তি হয়। ১০ যাহার মৃত্যশৌচ হয়, দেশ দিবস পর্যান্ত তাহার গোত্রের অন্ন ভোকন করা বিধেয় নহে। স্বালোচ কালের মধ্যে দান প্রতিগ্রহ যজ্ঞ অধ্যয়ন, এ সমুদ্যি কর্মা করিবে না। ১৮ ব্রাক্ষণের যেরপ অশৌচ হয়, কহিলাম। ক্ষ্রিয়ের দ্বাদশ দিন, বৈশ্যের পঞ্চদশ দিবস, শুত্রের এক মাস অশৌচ হইয়া পাকে। ১৯

অর্কান্য বৈশ্যা মানঃ শ্তা গ্রন্থ গ্রন্থ । ১৯॥

অর্জাে ভালয়েৎ কামং দিলানাদ্য ততাে দিনে।

দদ্যাদ্দর্ভের্ পিগুঞ্চ প্রেতারাচ্ছিউসরিধাে ॥ ২০॥

বার্যায়ুধ্বতােদান্ত দগুল্চ দিলভালনাৎ।

প্রেটবােংনন্তরং বর্ণাঃ শুদ্ধেরংক্তে ততঃ ক্রমাৎ॥২১॥

ততঃ স্বর্ণধর্মা যে বিপ্রাদীনামুদাহ্বতাঃ।

ভান কুর্বীত পুমান্ জীবেরিজধর্মাক্তিনৈস্তথা ॥ ২২॥

স্তাহনি চ কর্ত্বানেকােদিউমতঃ পরম্।

আহ্বানাদিক্রিয়াদৈবনিযােগ্রহিতংহি তথ ॥ ২৩॥

একােহর্ণত্ত দাতব্যস্তবৈকং পবিত্রকম্।

প্রেতায় পিণ্ডো দাতবাে ভুক্তবৎসু দিলাভিষু ॥ ২৪॥

প্রশ্চ তব্রাভিরতির্গলমানৈ দিল্জম্বনাম্।

অনস্তর অশৌচান্তে আদ্য আদ্ধ দিবসে তিনটা বা পাঁচটা বন্ত ইছো অযুগা ব্রাহ্মণ ভোজন করাইবে। এই ব্রাহ্মণের উচ্ছিটোর স্মীপে দর্ভের উপর মৃত ব্যক্তির উদ্দেশে পিগুদান করিবে। "পরে ব্রাহ্মণ ভোজন হইলে, ব্রাহ্মণ জলকে, ক্ষপ্রেয় অস্ত্রকে, বৈশ্য প্রত্যাদকে, শুদ্র যথিকে জিজ্ঞাসা করিয়া শুদ্ধ হইবেন। "প অনস্তর চতুর্বর্বের মধ্যে যে বর্বের ধে ধর্মা নির্দ্দিট আছে, তিনি তাহার অমুষ্ঠান করিবেন এবং স্থ ধর্মোপার্ক্ষিত ধনদারা জীবিকা নির্দ্দির করিতে প্রস্তুত্ত হইবেন। "পরে প্রতিমাসে মৃত তিথিতে একো-দিন্ট করিবে। এই সাসিক প্রান্ধে আবাহনাদি ক্রিয়া ও বৈশ্বদের ব্রাহ্মণানক্রণ নাই। "পরে প্রাম্বাহনাদি ক্রিয়া ও বৈশ্বদের ব্রাহ্মণানক্রণ নাই। "পরে অই মাসিক একোঞ্জিট আছে একটা অর্যা ও একটা পরিত্র দান করিবে। পরে অমুগা ব্রাহ্মণিদগকে ভোজন করাইয়া ত্রেভোজেশে পিণ্ড দান করিবে। " অনস্তর যল্নান

অক্ষয্যমমুকস্যেতি বক্তবাং বিরতৌ তথা ॥ ২৫॥ **একোদ্দিউম**য়ো ধর্ম ইত্থমাবৎসরাৎ স্মৃতঃ। সপিণ্ডীকরণং তিমান্ কালে রাজেন্দ্র ! তচ্ছুণু ॥ ২৬॥ একোদি चेविधारनन कार्याः उनिभ भाषितः। তিলগদোদকৈর্ক:\* ভত্র পাত্রচতুষ্টয়ম্॥ ২৭ ॥ পাত্রং প্রেত্ম্য ভত্তৈকং পাত্রত্তয়যুতং তথা। সেচয়েৎ পিতৃপাত্তেষু প্রেডপাত্তং নৃপ ! ত্রিষু॥ ২৮॥ ততঃ পিতৃত্বমাপন্নে ভিস্মিন্ প্রেতে মহীপতে।। आमाधर्मातरगरेग्यु ७९ श्र्वानकरत् १ शिष्त् ॥ २२॥ পুত্রঃ পৌত্রঃ প্রপৌত্রো বা ভ্রাতা বা ভ্রাতৃসন্ততিঃ †। সপিওসন্ততিবাপি ক্রিয়ার্। নৃপ ! জায়তে ॥ ৩০ ॥ 'অভিরম্যতাম্' এই কথা বলিলে ব্রাক্ষণেরা 'অভিরতাঃ মঃ' এই উন্তর করিবেন। পরে ব্রাহ্মণেরা 'অমুক্সা অক্ষণামিদ্মুপতিষ্ঠতাম' এই বাক্য বলিবেন 1' এইক্লপ এক বৎসর প্রতিমাসে একোঞ্চিট করিবে। রাজন্! এফ বৎসর অতীত হইলে যে সপিগুকিরণ করিতে হইবে তাহা বলিতেছি, শ্রবণ করুন। ১° ভূপতে! এই সপিণ্ডী-করণও একোদ্দিউ বিধানাসুসারে করিতে হইবে। ইহাতে ভিল গন্ধ ए উদ্ৰয়ুক্ত চারিটা পাত্র স্থাপন করিবে।<sup>২৭</sup> এই পাত্রচতুটয়ের

মধ্যে একপাত্র প্রেতের ও তিন পাত্র পিছলোকের। অনস্তর প্রেত-পাত্রস্থ জলাদিধারা পিছপাত্রতার সিক্ত করিবে। ২৮ মহীপতে! পরে সেই প্রেক্ত পিতৃভাবাপন্ন হইলে স্বধাকারাদি ধারা তদবধি উদ্ধৃতন তিন পুরুষের অর্চনা করিবে। ২০ রাজন্! পুত্র, পৌত্র,

প্রপৌত্ত, ভ্রাতা, ভ্রাত্তপুত্র বা অন্য কোন সপিপ্ততনর সপিপ্তী
\* বলিগ্রোদকৈযুক্তিণ্ ইতি কেটিং পটন্তি।

† বন্ধুর্বা ভ্রাতুসন্তিঃ ইতি পাটারেম্।

তেষামভাবে সর্বেষাং সমানোদকসন্তি। ।

মাতৃপক্ষস্য পিণ্ডেন সংবদ্ধা যে জলেন বা ॥ ৩১ ॥

কুলদ্বয়েংপি চোচ্ছিন্নে জীভিঃ কার্য্যা ক্রিয়া নৃপ । ।

সংখাতান্তর্গতৈর্বাপি কার্য্যা প্রেন্ডস্য বা ক্রিয়া \* ॥ ৩২ ॥

উৎসন্নবন্ধু-ঋক্থানাং কারয়েদবনীপতিঃ।

পূর্ব্বাঃ ক্রিয়া মধ্যমাশ্চ তথা চৈবোত্তরাঃ ক্রিয়াঃ ॥৩৩॥

ক্রিপ্রকারাঃ ক্রিয়া ছেতান্তাসাং ভেদং শৃণুষু মে ।

আদাহ-বার্য্যায়ুধাদি-স্পর্শাদ্যন্তান্ত যাঃ ক্রিয়াঃ ॥ ৩৪ ॥

তাঃ পূর্ব্বা মধ্যমা মাসি মান্যেকোদ্দিউসংজ্ঞিতাঃ ।

প্রেতে পিতৃত্বমাপন্নে সপিণ্ডীকরণাদ্র ॥ ৩৫ ॥

ক্রিয়ন্তে যাঃ ক্রিয়াঃ পিত্র্যাঃ প্রোচ্যন্তে তা নৃপোত্তরাঃ ।

করণে অধিকারী হইবে ।°° যদি কোন সপিশুনস্ততি না থাকে, তাহা হইলে, সমানোদকসস্তান, তদভাবে যাতামহসপিশু, তদভাবে যাতামহসপিশু, তদভাবে যাতামহসপিশু, তদভাবে যাতামহসপিশু, তদভাবে যাতামহসপানোদক সন্তান সপিশুকিরণ করিবে।°° যাহার পিতৃকুল ও মাতৃকুল উভয়ই উচ্ছির হইয়াছে, জ্ঞালোক তাহার কার্য্য করিতে পারিবে। তদভাবে সমানপ্রবর সহাধ্যায়ি প্রভৃতি প্রেতকৃত্য করিবে।°° যাহার বন্ধু ও উন্তরাধিকারী নাই, রাজা তাহার আদ্য, মধ্যম ও অন্তিম প্রেতক্রিয়া করাইবেন।°° এই তিনপ্রকার আদ্য, মধ্যম ও অন্তিম প্রেতক্রিয়া করাইবেন।°° এই তিনপ্রকার উর্জ্ব-দেহিক ক্রিয়ার ভেদ বলিভেছি, শ্রেবণ কর্মন। দাহ অবধি বারি আয়ুধ প্রভৃতি ক্র্পর্শ পর্যন্ত যে ক্রিয়া °° তাহার নাম আদ্য ক্রিয়া। মাসিক একোদিউ শ্রাদ্ধের নাম মধ্যক্রিয়া। প্রেত, পিতৃত্ব প্রাপ্ত হবলে সপিশুকরণের পর °° যে সকল শ্রাদ্ধ করা হয়, তাহার নাম অন্তিমক্রিয়া। পিতা মাতা সপিশু সমানো-

<sup>\*</sup> প্রেডসা যা ক্রিয়া ইতি বা পঠিডবাদ্।

পিতৃমাতৃসপিতৈস্ত সমানসলিলৈশুপা।। ৩৬ ॥
তৎসংখান্তর্গতৈশ্চেব রাজ্ঞা বা ধনহারিণা।
পূর্বাঃ ক্রিয়াস্ত কর্ত্তবাঃ পুত্রাদ্যৈরের চোত্তরাঃ॥৩৭ ॥
দৌহিত্রৈর্বা নরশ্রেষ্ঠ ! কার্য্যাস্তত্তনহৈস্তপা।
মৃতাহনি চ কর্ত্তবাঃ স্ত্রীণামপুত্তরাঃ ক্রিয়াঃ।
প্রতিসংবৎসরং রাজন ! একোদ্দিফবিধানতঃ॥ ৬৮॥
তন্মাদুত্তরসংজ্ঞা যাঃ ক্রিয়াস্তাঃ শৃণু পার্থিব !।
যদা যদা চ কর্ত্তব্যা বিধিনা যেন বানখ !॥ ৩৯॥

ইতি এবিফুপুরাণে তৃতীয়ে ২ শ প্রতীদ্ধ-দেহিক শন্ম ত্রে দ্রেশিয়া ।

দক °° শিষ্য শুরু সহাধ্যায়ী বন্ধু রাজা বা অন্য যে কোন উন্তরাধি-কারী, ইহারা পূর্ব্ব ক্রিয়া করিবে, পরস্কু পুত্রপোত্রাদি ব্যতীত অন্য কেহ অন্তিম ক্রিয়া করিতে পারে না।°° পূরাদি না থাকিলে. দৌহিত্র বা দৌহিত্রতনয়ও ঐ অন্তিমক্রিয়া করিতে পারে। রাজন্! প্রতিবহুসর মৃত তিবিতে একোদ্দিই প্রান্ধের বিধানামুসারে কি জ্রী কি পুরুষ সকলেরই অন্তিম ক্রিয়া করিবে।°° রাজন্! যাহাকে অন্তিম ক্রিয়া বলা যায়, তাহা যে যে সময় যে যে বিধানামুসারে করিতে হইবে, তাহা বলিতেছি, প্রবণ করুন।°°

বিষ্ণুরাণ তৃতীয় অংশ প্রতৌর্দাদক-নামক ত্রোদশ অধ্যায় সমাপ্ত। বিষ্ণুরাণম্। ভূতীয়োহংশঃ।

চতুর্দশোহধ্যায়ঃ।

## खेंस छेवाह ।

বিশ্বেদেবান্যিগণান্ বয়াং সি মনুজান্ পশূন্॥ ১॥
সরীস্পান্ পিতৃগণান্ যজানাজূতসংজ্ঞকন্ \*।
আদ্ধং আদ্ধায়িতঃ কুর্বান্ তর্পারত,থিলং হি তৎ॥ ২॥
মাসি মাস্যসিতে পক্ষে পঞ্চাশ্যাং নরেশর!।
তথাইকাস্থ কুর্বাত কাম্যান্ কালান্ শৃণ্যু মে॥ ৩॥
আদ্ধার্মাগতং দ্বাং বিশিষ্টমথবা দ্বিজম্।

প্রথ কহিলেন। শ্রদ্ধায়ক হইয়া পিতৃ শ্রাদ্ধ করিলে, ব্রহ্মাইজ্রদ্ধা, সূর্যা, অলি, বসুগণ, মরুদ্গণ, বিশ্বদেবগণ, ক্ষিণা, পক্ষিণা, মনুষ্যাণ, পশুগণ, সরীস্পাণ, পিতৃগণ ও অন্যান্য সমুদায় ভূতগণ পরিতৃপ্ত হন। বাজন্! প্রতিমাদে ক্ষণক্ষের অমান্বস্যা তিথিতে এবং অইকাতে এই শ্রাদ্ধ করা কর্ত্বয়। একণে কাষ্য শ্রাদ্ধের কাল বলিতেছি, শ্রবণ করুন। ব্যাদ্ধি ব্রাদ্ধাণ পাইবে, দ্বায় গৃহে উপস্থিত হইবে, অথবা যখন বিশিষ্ট ব্রাদ্ধাণ পাইবে,

শচ্চানাং বৃতসংজ্ঞিতম্ ইতি পুস্কাশ্বরা পাঠঃ।
 শগ্রহারণ মানের প্রবর্গী ভিদটী কৃষ্ণাইমীকে অক্টকা বলে।

শ্রাদ্ধং কুর্নীত বিজ্ঞায় ব্যতীপাতেইয়নে তথা॥ ৪॥
বিষুবে চৈব সংপ্রাপ্তে গ্রন্থণে শশিস্থ্যযোগঃ।
সমস্তেষ্বে ভূপাল! রাশিষ্কে চ গচ্ছতি॥ ৫॥
নক্ষত্রগ্রহপীড়াস্থ দুউস্প্রাবলোকনে।
ইচ্ছাশ্রাদ্ধানি কুর্নীত নবশস্যাগমে তথা॥ ৬॥
অমাবাদ্যা যদা মৈত্র! বিশাখাস্বাতিযোগিনী।
শ্রাদ্ধিঃ পিতৃগণভূপ্তিং ভদাপ্রোত্যইবার্ষিকীম্॥ १॥
অমাবদ্যা যদা পুষ্যে রোদ্রে চর্ক্ষে পুনর্কসা।
দ্বাদশাকং ভদা তৃপ্তিং প্রয়ান্তি পিতরোহর্চিতাঃ॥ ৮॥
বাসবাজৈকপাদৃক্ষে পিতৃণাং তৃপ্তিমিচ্ছতাম্।
বারুণে চাপ্যমাবদ্যা দেবানামপি দুর্লভা॥ ৯॥

কিংবা যখন উন্তরায়ণ বা দক্ষিণায়নের শেষ হইবে, তখন (ইচ্ছানুসারে) আদ্ধ করিবে। বিশেষতঃ বিষুষ্দ্ধ জ্যান্তিতে মুর্যাগ্রহণকালে
চক্রগ্রহণকালে প্রত্যেক সংক্রান্তিদিবসে গ্রহ নক্ষত্র দূষিত হইলে
দৃঃস্থা দর্শন করিলে সূতন শাস্য গৃহে আসিলে কাম্য আদ্ধ করিবে। বিসময় অমাবসা তিথিতে অনুরাধা, বিশাধা ও স্থাতী নক্ষত্রের যোগ হয়, সে সময় আদ্ধি করিলে পিতৃগণ আট বৎসর পরিত্প্ত থাকেন। বে সময় অমাবসা তিথিতে পুরা, আর্মা বা পুনর্বসু নক্ষত্রের যোগ হয়, তৎকালে আদ্ধ করিলে পিতৃগণ দ্বাদশ বৎসর পরিতৃপ্ত থাকেন। বিনি দেবগণেরও পিতৃগণের তৃপ্তি ক্রমা-ইতে অভিলাম করেন, তাঁহার পক্ষে অমাবসা তিথিতে ক্যোধা,

উন্তৱায়ণ দক্ষিণায়ন ও বিষুষ সংক্রান্তি পৃথক বলিবার ভাৎপর্য্য এই যে, ইহাতে আন্ত ক্রিলে সম্মান্ত কল হয়।।।।

ধানা 🗯 শৰ ৰাজী**ত অন্য নৃতৰ শন্য গৃহে আদিলে কা**মাণ্ডা**ছ ক**রিবে ; কাৰণ গান: ৫ গৰ নৃতন আদিলে নিভাগাছ (নৰান্ন) করিতে হয়। ৬

নবদ্দেষ্মাবস্যা যদৈতেষ্বনীপতে ! ।
তদা তৃপ্তিপ্রদং প্রাদ্ধং পিতৃণাং শৃণু চাপরম্ ॥ ১০ ॥
গীতং সনৎকুমারেণ যদৈলায় মহাত্মনে ।
পৃচ্চতে পিতৃভক্তায় প্রদ্ধাবনতায় চ \* ॥ ১১ ॥
বৈশাথমাসস্থ তু যা তৃতীয়া
নবম্যনৌ কার্ত্তিকগুরুপক্ষে ।
নভস্যমাসস্য তমিব্রপক্ষে
ত্রোদশী পঞ্চদশী চ মাঘে ॥ ১২ ॥
এতা যুগাদ্যাঃ কথিতাঃ পুরাণৈরনন্তপুণ্যান্তিথয়শ্চতব্রঃ ॥ ১৩ ॥

পূর্বভাত্রপৎ ও শতভিষা নক্ষত্রের যোগ অতীব দুর্লভ। অবনী-পতে! অমাবস্যার সময় পূর্বেরাক্ত নয়টা নক্ষত্রের যোগ হইলে যদি আদ্ধ করা হয়. তাহা হইলে, পিতৃলোক সাতিশয় তৃপ্ত হন, পরস্ক এতদ্বিন্ন অন্য যে দিল আদ্ধ করিলে পিতৃগণের সমধিক চৃপ্তি হয়, তাহা বলিতেছি, অবণ কর্মন। " যখন পিতৃভক্ত আদ্ধাবনত মহাত্মা পুরুরবা সনৎকুমারের নিকট এই বিষয় জিজ্ঞাসা ক্রিয়াছিলেন, তখন তিনি বলেন যে " বৈশাধ মাসের শুকুল পক্ষের তৃতীয়া, কার্জিক মাসের শুকুপক্ষের নবমী, তাত্রে মাসের ক্রম্পক্ষীয় ত্রয়োদশী এবং মাঘ মাসের পূর্ণিমা " এই চারি মাসের চারিটা তিথি যুগাদ্যা। পূর্বতন মহর্ষিরা বলিয়াছেন যে, এই চারি দিবস আদ্ধাদি ক্রিয়া করিলে অনস্ত কল হয়। " বৈশাধ মাসের

<sup>\*</sup> প্ৰস্ৰাৰনভায় চ ইতি বা পঠনীয়ম্।

রত্মগর্ভ ও শ্রীধরস্বামী উভয়েই ব্যাখ্যা করেন যে, মাব নাসের পঞ্চদশী অর্থাথ অমানস্যা ভিথি বুগাল্যা। ইহাতে প্রান্ধ করিলে অনন্ত কল হর। আদি সরল ভাবে ব্যেরপ বুফিলাম খ্যুস্থাদ করিলাম। পঞ্জিকাডেও মাঘী পুর্নিমাকে মুগাল্যা,বলে।>২

ठलकर्या गांधवयानि यव मिनकरा देव वियुवद्यक्षः মন্বন্তরাদ্যান্তিথয়স্তবৈব চ্ছায়াগতশ্চ ব্যতিপাত্যোগঃ॥ ১৪॥ ष्ठेशमः श्लात हत्स्यामा इत्यम्ह ত্রিষুষ্টকাম্বপায়নদ্বয়ে, চ। পানীয়মপাত্র তিলৈবিমিশ্রং দদ্যাৎ পিতৃভ্যঃ প্রয়তো মর্ষ্যঃ। শ্রাদ্ধং ক্রতং তেন সমাঃ সহস্রং বহুসামেতৎ পিতরে। বদন্তি॥ ১৫॥ মাঘাসিতে পঞ্চদশী কদাচিৎ উপৈতি যোগং যদি বারুণেন। ঋক্ষেণ কালঃ স পরঃ পিতৃণাং न्हाल्भे भूटेनान् भ ! लखाट ७ २८मी ॥ ১७॥ কালে ধনিষ্ঠা যদি নাম তিয়ান

অমাবস্যা, দিনক্ষয়যুক্ত িষু বসংক্রোন্তিছয়, মন্বভ্রের আদ্য তিথি, ছারাগত ব্যতিপাত্যোগ, "চক্রগ্রহণ, ক্র্যাগ্রহণ, তিনটা অইকা, উন্তরায়ণকাল ও দক্ষিণায়নকাল, এই সকল সময় যে ব্যক্তি বিশু-ছাচার ছইয়া পিতৃগণকে তিলমিশ্রিত জল প্রদান করে, ভাহার সহস্র বংসর শ্রাদ্ধ করিবার ফল হয়। পিতৃগণ এই গোপনীয় বিষয় বলেন । "বদি ক্যাচিৎ মাঘ মাসের অমাবস্যা তিথিতে শত্তিবা নক্ষ্ত্রের যেগে হয়, তাহা হইলে ভাহা পিতৃগণের পক্ষেণরৰ উৎকৃষ্ট সময়। রাজন্! ঈদুণ যোগ পাওয়া অলপ পুণোর কর্মানহে। "বাজন্! আ মাঘমাসের অমাবস্যা দিবসে যদি ভবন্তি ভূপাল! তদা পিতৃভাঃ।
দত্তং জলান্নং প্রদদাতি তৃপ্তিং
বর্ষায়তং তৎকুলজৈর্মনুব্যৈঃ॥ ১৭॥
তব্রৈব চেন্ডাদ্রপদান্ত পূর্বাঃ
কালে তদা যৎ ক্রিয়তে পিতৃভাঃ।
শ্রাদ্ধং পরাং তৃপ্তিমুপেত্য তেন
যুগং সমগ্রং পিতরঃ স্বপন্তি॥ ১৮॥
গঙ্গাং শতক্রমথবা বিপাশাং
সরস্বতীং নৈমিষ্গোমতীং বা।
অব্রাবাগাহার্চনমাদরেণ
রুত্বা পিতৃগাং ছ্রিতং নিহন্তি॥ ১৯॥
গায়ন্তি চৈতৎ পিতরঃ সদৈব
বর্ষাম্বাতৃপ্তিমবাপ্য ভূয়ঃ।
মা্বানিতান্তে শুভতীর্থতোরঃঃ

ধনিষ্ঠা নক্ষত্রের যোগহয়, তাহা হইলে, সেই দিবস কুলজ সমুবোরা অন্ধ জল প্রদান করিলে, পিতৃগণ দশসহস্র বৎসর পরি-তৃপ্ত থাকেন। <sup>১০</sup> ঐ মাঘ মাসের অমাবস্যাতে যদি পূর্বভাত্রপৎ নক্ষত্রের যোগ হয়, তাহা হইলে, পিতৃপ্রাদ্ধ করিলে পিতৃগণ সম্পূর্ণ এক যুগ পরিভৃপ্ত হইয়া নিজা যান। <sup>১৮</sup> গঙ্গা, শতজ্ঞ, বিপাশা, সরস্থতী ও নৈমিবারণ্যের মধ্যবর্জী গোমতী, এই সকল নদীতে অবগাহন করিয়া আদরপূর্বক পিতৃলোকের অর্চনা করিলে সমুদায় পাপক্ষয় হয়। <sup>১৯</sup> পিতৃলোক সর্বদাই এই গান করেন যে, বর্ষাকালের, মঘাতৃপ্তি ( অপর পক্ষের মঘা- জ্যোদশী-প্রাদ্ধ-ক্ষনিত ভৃপ্তি) লাভ করিয়া পুনর্বার মাঘ্যাসের

যাস্যামি তৃপ্তিং\* তনয়াদিদতৈঃ ॥ ২০ ॥
চিজ্ঞ্চ বিভঞ্চ নৃণাং বিশুদ্ধং
শক্তশ্চ কালঃ কথিতো বিধিশ্চ।
পাত্রং যথোক্তং পরমা চ ভক্তিঃ
নৃণাং প্রফ্ছন্তাভিবাঞ্জিতানি ॥ ২১ ॥
পিতৃগীতাস্তবৈবাত্র শোকাস্তাংশ্চ শৃণুষু মে।
শুদ্ধা তথৈব ভবতা ভাব্যং ততাদৃতাত্মনা † ॥ ২২ ॥
শুপা ধন্যঃ কুলে জায়াদস্মাকং মতিমান্ নরঃ।
শুকুর্বন্ বিভ্রশাঠাং যঃ পিগুান্ নো নির্বপিষ্যতি ‡ ॥ ২৩ ॥
রত্মবস্তমহীযানসর্বভোগাদিকং বস্তু।
বিভবে সতি বিপ্রেভ্যা যোহস্মামুদ্ধিশ্য দাস্যতি ॥ ২৪ ॥

জমাবসাতে পুত্রপৌত্রাদি কর্ত্বক প্রদন্ত শুভ তীর্থসলিলছার। পরিতৃপ্ত হইব। ' (আজকালে) বিশুদ্ধ চিন্তু, বিশুদ্ধ মন, প্রশন্ত কাল, কথিত বিধি, যথোজ্ঞ পাত্র ও পরম ভক্তি, এই সমুদ্ধার হইতে বাঞ্চা পূর্ব হয়। ' এ স্থলে কতক্ত্রলি পিতৃ– গীতা স্লোক বলিভেছি, অবশ্বক্রন। জাপনি এই পিতৃগীতা অবশ্ব করিয়া তদ্বিয়ে যত্তপূর্বক তদ্মুন্নপ ব্যবহার করিবেন। ২২৮

বিনি বিজ্ঞাত্য না করিয়া আমাদিগকে পিশুদান করেন, এক্লপ ধন্য কোন জ্ঞানী ব্যক্তি যদি আমাদের বংশে জন্মগ্রহণ করেন, (তাহা হইলে আমরা কৃতকৃত্য হই।) ১৬ সেই সন্তানের যদি ক্রম্মা থাকে, ভাহা হইলে, তিনি আমাদের উদ্দেশে ব্রাক্ষণগণকে রম্ম, বস্ত্র, ভূমি, যান, ধন ও সর্মপ্রকার খাদ্য ক্রব্য দান করি-

धानावङ्ख्य श्रेष किट शबें ।

<sup>🛧</sup> छत्र प्राचमा है हि शृषका धत्रमा शाहः ।

<sup>‡</sup> निधान निर्वानित्रवाठि देखि वा निष्क्रवाम् ।

অল্লেন বা যথাশক্ত্যা কালেং স্মিন্ ভক্তিনভ্ৰধীঃ। ভোজয়িষ্যতি বিপ্রাথান তমাত্রবিভবো নরঃ ৷ ২৫ ৷ অসমর্থোইমদানস্য ধান্যমানং স্বশক্তিতঃ। প্রদাস্যতি দ্বিজাগ্র্যেভ্যঃ স্বর্ণ্ণাশ্পাং বাপি দক্ষিণায়। ২৬। 🤊 তত্রাপ্যসামর্থ্যুতঃ করাআঅস্থিতাংস্থিলান্। প্রণম্য দ্বিজমুখ্যায় কবৈষচিদ্ধৃপ । দাস্যতি । ২৭ । তितः मथाये जिर्वाभि ममर्वजान् कलाञ्जनीन । ভক্তিনত্ৰঃ সমুদ্দিশ্য ভুব্যস্মাকং প্ৰদাস্যতি ৷ ২৮ 🛚 ় যতঃ কুতশ্চিৎ সংপ্রাপ্য গোভেনা বাপি গবাহ্নিক্ষ্। অভাবে প্রীণয়ন্নসান্ শ্রদ্ধাযুক্তঃ স দাস্যতি \* ॥ ২৯॥ বেন 12 বদি ভাত্তণ বিষয় বিভগনা পাকে, ভাতা হইলে, যথা-াকালে ভক্তিনম্ হইয়া যথাশক্তি অন্নারা প্রধান প্রধান ব্রাহ্মণ-গণকে ভোক্তন করাইবে। ২৫ যদি অল্লানেও অসমর্থ হয়, ভাহা হইলে, শ্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণদিগকে স্বশক্তি অনুসারে আম ধান্য অথবা यश्किशियां ज पिक्रा अपान कतित। १ व तांकन्! यपि कांन वा कि ইহাতেও অসমর্থ হয়, তাহা হইলে, করাগ্রন্থারা কতকশুলি তিল शहन कतिया (कांन श्राधान बाक्यनटकं नमकातश्रक्षक मान कतिरव। १९ অপবা ভক্তিনত্ৰ হইয়া সাতটী বা আটটী তিল্মিশ্ৰিত জলাঞ্চলি আমাদের উদ্দেশে ভূমিতে নিকেপ করিবে। १४ अथवा यদি ইহা-তেও অপারণ হয়, তাহা হইলে, যে কোন হান হইতে গবাহ্নিক ভূণ সংগ্রহপূর্মক আদ্ধায়ুক্ত হইয়া আমাদের প্রীতির উদ্দেশে গাভীকে প্রদান করিবে।<sup>১৯</sup> যদি কিছুরই সঙ্গতি না হয়, ভাহা

ৰ প্ৰদাৰ্জঃ প্ৰদাসতি ইতি বা পঠনীয়ন্।

সতগুলি তুণদাৱা একটা গাড়ীৰ একটী দিম তুপ্তি হয়, তাহাকে গৰায়িত ৰলে।২>

সর্বাভাবে বনং গত্বা কক্ষামূলপ্রদর্শকঃ
স্থ্যাদিলোকপালানামিদমুকৈঃ পঠিষ্যতি ॥ ৩০ ॥
ন মেইন্তি বিত্তং ন ধনং ন চান্যৎ
শ্রাদ্ধোপযোগ্যং স্থপিতৃন্ নতোইন্ম।
তৃপ্যস্ত ভক্ত্যা পিতরো ময়ৈতো
ভুক্লো ক্রতো বত্মনি মাক্রতস্য ॥ ৩১ ॥
শ্রুব্ধ উবাচ।

ইত্যেতৎ পিতৃভিগাঁতং ভাবাভাবপ্রয়োজনম্।
যঃ করোভি ক্লতং ভেন প্রাদ্ধং ভবতি পার্থিব"। ॥ ৩২॥
ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়েহ শশে শূাদ্ধকল্পো নাম চতুর্দশোহধ্যায়ঃ 1

হইলে, বনমধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া কক্ষামূল প্রদর্শনপূর্বক অর্থাৎ উর্জবাহু হইয়া আদিত্যপ্রভৃতি লোকপালগণের সমক্ষে উটেঃশ্বরে এই
মন্ত্র পাঠ করিবে যে, ° আমারে (স্থবর্গ রৌপ্য প্রভৃতি) বিস্তু নাই,
(ধান্য ভিল যব প্রভৃতি) ধন নাই, আমার পিভূতাজোপযোগী
আর কোন বস্তুও নাই, অভএব আমি পিভূগণকে নমস্কার করি—
ভেছি। আমার একমাত্র ভক্তিশ্বরা পিভূগণ পরিতৃপ্ত হউন, আমি ...
এই বাহুদ্ব আকাশে নিক্ষেপ করিলাম। ° °

- ঔর্ম কহিলেন, রাজন্! ধন থাকিলে কি করিতে হইবে, ধন না থাকিলেই বা কিরুপ করিতে হইবে, তাহা এই পিভৃগণ বলিয়া-ছেন। যিনি উক্তরূপ করেন, তাঁহার আদ্ধ করা হয়। <sup>৩২</sup>

> বিষ্ণুপুরাণ তৃতীয় অংশ আদ্ধকণ্প-নামক চতুর্দশ অধ্যায় সমাপ্ত।

কক্ষামূল-বনল। কক্ষামূলপ্রদর্শন নির্দানতার চিয়। ৬।

## বিষ্ণুপুরাণম্ ৷

## তৃতীয়োহংশঃ।

### शक्षिर्भाश्यायः।

## ঔৰ্ব্ব উবাচ 1

ব্রান্ধণান্ ভোজয়েৎ প্রাদ্ধে যদ্গুণাংস্তান্ নিবোধ মে।
বিণাচিকেতন্ত্রিমধুন্ত্রিস্থপর্ণঃ ষড়ক্ষবিৎ ॥ ১॥
বেদবিৎ প্রোতিয়ো যোগী তথা বৈ জ্যেষ্ঠদামগঃ।
ঋদিক্ স্প্রীয়দৌহিত্রজামাতৃশ্বশুরস্তথা ॥ ২॥

উর্ব কহিলেন। আদ্ধিকালে বাস্থা গুণসম্পন্ন ব্রাহ্মণক ভোজন ক্রাইতে হইবে, ভাহা বলিভেছি, আবণ করুন । আদ্ধের ব্রাহ্মণ ত্রিণাচিকেত, ত্রিমধু, ত্রিস্থপর্ণ ও বড়ঙ্গ-বেদাধ্যায়ী হইবেন। এই ব্রাহ্মণের বেদবিৎ, আোত্রিয়, যোগী ও জ্যেষ্ঠসামগ হওয়া আবশ্যক। ঋত্বিক্, ভাগিনেয়, দৌহিত্র, জামাতা, শ্বশুর, সাতুল,

যিনি বেদাগিবিচারে সমর্থ তাঁহাকে বেদবিং বলা যায়। যিনি বেদোক্ত সমুদারের অন্তপ্তান করেন, তিনি আেত্রির। যিনি যোগাভাগে করেন, তিনি যোগী। ঋক্-বেদের অন্তগত মুদ্ধনানং দিব ইত্যাদি সামগানের নাম ক্ষেপ্তসাম। যিনি ভাছা গান করিতে পারেন, উ'চাকে ক্ষেপ্তসামগ বল' য'য়।২

শ্রাক্ষকর্ত্তা ও শ্রাদ্ধতেকা উভয়ের পরিত্যাক্ষ্য বিষয় ও পার্ক্রণশ্রাদ্ধ প্রয়োগ, পঞ্চদ অধ্যায়ে কথিত হইতেছে। বেদের অন্তর্গত বিভীয় কঠীকস্থ ভিন অসু-বাকের নাম বিশাচিকেত। খাঁচারা তাহা অধ্যয়ন ও তাহার অমুণ্ঠান করেন, ভাঁহাদিগত্বেও ব্রিণাচিকেত বলা যায়। যে ব্রাদ্ধণ, মধুবাতা ঋতায়তে ইত্যাদি তিনটী ঋকবেবদের মন্ত্রপাঠ করেন, উ'হার নাম ব্রিমধু। যিনি ব্রহ্মণেইছডাদি অসুবাক্তরের পাঠ করেন, তিনি ব্রিস্থপেই। যিনি নিক্ষা করে ব্যাক্রন নিক্রক্ত জ্যোতিঃশাক্ষ্য ও চুদ্দোব্রন্থ, এই ছয় বেদাল অধ্যয়ন করিয়াছেন, ভাঁহাকে বড়ল-বেদাধায়ী বলা যায়।>

মাতুলোহথ তপোনিষ্ঠঃ পঞ্চায়্যভিরতস্তথা।
শিব্যাঃ সম্বন্ধিনশৈতব মাতাপিত্রতশ্চ যঃ॥ ৩॥
এতান্ নিয়োজয়েং আছে পুর্বোক্তান্ প্রথমং নৃপ!।
বাহ্মণান্ পিতৃপুত্যর্থমনুকশ্পেষ্বনন্তরান্॥ ৪॥
মিত্রপ্রক্রন্থী ক্লীবঃ শ্যাবদন্তস্তথা দিজঃ।
কন্যাদ্যয়িতা বহ্নিবেদোজবঃ সোমবিক্রয়ী॥ ৫॥
অভিশন্তস্তথা স্তেনঃ পিশুনো আম্যাক্ষকঃ।
ভূতকাধ্যাপকস্তদ্ব ভূতকাধ্যাপিতশ্চ যঃ॥ ৬॥
পরপুর্বাপতিশৈচব মাতাপিতোস্তথোজ্বকঃ।

তপোনিরত, আহবনীয়াদি-পঞ্চাগ্নি-নিরত, শিক্ত, সম্বন্ধী, অথবা মাতাপিতার প্রতি অনুরক্ত ব্রাহ্মণ, ° এই সমুদায় ব্রাহ্মণকে পিত্লোকের তৃপ্তির জন্য শ্রাহ্মে নিযুক্ত করিবে। পরস্ক প্র্রোক্ত (জ্যেষ্ঠসামগ পর্যাস্ত) ব্রাহ্মণ নিমন্ত্রণ করাই মুখা কম্প। যদি ভাহা না পাওয়া যায়, তাহা হইলে, অমুকম্প-স্বরূপ শেষোক্ত ব্রাহ্মণ (নিয়োগ) করিবে। মিত্রন্তোহী, কুনখী, ক্লীব, শ্যাবদস্ত, কন্যাদূৰক, (অধিকারী হইয়াও) অগ্রিত্যাগী ও বেদত্যাগী, সোম-বিক্রয়ী, ° সতা হউক বা মিপ্যাই হউক, যাঁহার উপর মহাপাত-কিন্ধ-দোবের আরোপ হইয়াছে, চৌর, পিশুন, গ্রাম্যাক্রক, যিনি বেতন গ্রহণপূর্মক অধ্যাপন বা অধ্যয়ন করেন, ° বিনি পরপূর্মা-পতি, বিনি মাতাপিতা পরিত্যাগ করেন, বিনি শুদ্রসন্তান প্রতি-

ৰীহার নথ কুংসিত উ'হার নাম কুনখী। খাঁহ'র মন্ত আঞাৰিক কুকবর্ণ, জাঁগাকে শ্যাৰম্ভ বলা বার। অধিবাহিত। নারীর নাম কন্যা। যিনি সোমলতা বিক্রয় করেন, তিনি সোমবিক্রয়ী।৫

ষে ব্যক্তি পরোক্ষে পরের গোৰকীর্জন করে, তাহার নাম পিওম<sup>া</sup> প্রামের মধ্যে সর্কি জাতির নিকট সংগৃহীত ধনে বে পুজা হয়, বিনি ডাহ'র পৌরে'হিডঃ করেন, তিনি গ্রামণাক্ষক ।»

ব্যলীস্ভিপোন্টা চ ব্যলীপভিরেব চ।
তথা দেবলকশৈচব আদ্ধি নার্ছান্ত কেতনম্॥ १॥
প্রথমেহাক্ত বুধঃ শস্তান্ শ্রোতিয়াদীন নিমন্ত্রেরেও।
কথয়েচ তদৈবৈষাং নিয়োগান্ পৈত্রদৈবিকান্ \* া৮॥
ততঃ কোধব্যবায়াদীন্ আয়াসঞ্চ দিজৈঃ সহ।
যজমানো ন কুবীত দোষস্তত্র মহানয়ম্॥ ৯॥
আদ্ধে নিয়ুক্তো ভুক্ত্বা ভু ভোজয়ত্বা নিয়ুজ্য চ।
ব্যবায়া রেতসো গর্ভে সজ্জয়ত্যাত্মনঃ পিতৃন্॥ ১০॥
তত্মাৎ প্রথমমত্যোক্তৎ দিজাগ্রাণাং নিমন্ত্রণম্।

পালন করেন, বিনি শূদ্রাণীর ভর্তা, বিনি দেবলক। এই সকল ব্যক্ষণকে আছে নিমন্ত্রণ করিবে না।

বিজ্ঞ ব্যক্তি আছের পূর্ব দিবস প্রশস্ত শ্রোত্রিয় প্রভৃতি ব্রাক্ষণ নিমন্ত্রণ করিবেন। ঐ নিমন্ত্রণ-কালে তিনি দেবপক্ষের ব্রাক্ষণ বা পিতৃপক্ষের ব্রাক্ষণ তাহা বলিয়া দিবেন। শু আছের দিবস বজ্ঞমান, ও ব্রাক্ষণ, ক্রোধ, স্ত্রাসহবাস এবং শারীরিক পরিশ্রম করিবে না, কারণ তাহাতে মহাদোষ ঘটিয়া থাকে। শুর্বাদন আছে নিমন্ত্রণ করিয়া বা নিমন্ত্রিত হইয়া, পর দিন আছে ভোজন করিয়া বা ভোজন করিয়া বা ভোজন করিয়া বা ভিজন করিয়া ভারিসহবাস করিলে, তাঁহার পিতৃগণ রেতঃকুঙ্গে নিময় হন। শু এই কারণে আছের পূর্ব দিন প্রধান ব্রাক্ষণকে

বে কন্যা একবার অন্যকে সম্পূদান করা হইর'ছেল, লেই কন্যাকে বিনি বিবাহ করেন, ঠাহাকে পরপুর্বাপতি বলা বার। বে বাল্লণ বেতন গ্রহণ করিয়া ভিন ২ংসর দেবপুলা করেন: তাঁহার নাম দেবলক। তিনি হব্য ক্ব্যাদিতে রহিত হুইয়া থাকেল।

<sup>\*</sup> পিতৃদৈৰিকান্ ইতি বা পঠাতাম্।

आथवा सिमञ्जन कारम এই विमिन्न पिटवम दय, आर्थिन छिडि ও आरकांथ हरेन्ना जिल्लम क्रिटवम । ৮

অনিমন্ত্র্য দ্বিজান্ গেছম্ আগতান্ ভোজারেদ্ যতীন্ ॥১১॥
পাদশোচাদিনা গেছম্ আগতান্ পূজারেদ্ দ্বিজান্।
পবিত্রপাণিরাচান্তান্ আসনেমুপবেশারেৎ ॥ ১২ ॥
পিতৃণামযুজাে যুথাান্ দেবানামিচ্ছয়া দ্বিজান্।
দেবানামেকমেকং বা পিতৃণাঞ্চ নিয়ােজয়েং \* ॥১৩॥
তথা মাতামহশ্রাদ্ধং বৈশ্বদেবসমন্বিতম্।
কুর্বীত ভক্তিসম্পন্নস্তন্তং বা বৈশ্বদৈবিকম্॥ ১৪॥
প্রাঙ্কুখান্ ভোজারেদ্বিপ্রান্ দেবানামুভয়াত্মকান্।
পিতৃপৈতামহানাঞ্চা ভোজায়েচাপ্রাদৃঙ্মুখান॥ ১৫॥

নিমন্ত্রণ করিতে হইবে। অনিমন্ত্রিত সংযতে ব্রিয় ব্রাহ্মণ যদি গৃহে উপস্থিত হন, তাহা হইলে, শ্রাদ্ধে তাঁহাকেও ভোজন কর। ইতে পারিবে।

ব্রাহ্মণ, গৃহে আগমন করিবামাত্র পাদ-প্রকালন-প্রভৃতি-ছাঃ
উহির পূলা করিবে। পরে সেই ব্রাহ্মণ আচমনপূর্মক পবিত্রা পাণি হইলে তাঁহাকে নির্দিষ্ট আসনে উপবেশন করাইবে। পিতৃত্র পক্ষে অযুগা ও দেবপক্ষে মুখা ব্রাহ্মণ, যে কয়েকটা পারে, নিযুক্ত করিবে। অথবা পিতৃপক্ষে একটা ও দেবপক্ষে একটা ব্রাহ্মণ বসান-ইবে। প্রত্বিক্ষ ভক্তিযুক্ত হইয়া বিশ্বদেব ব্রাহ্মণযুক্ত মাতামহ-শ্রাহ্ম করিবে। অথবা পিতৃপক্ষে ও মাতামহপক্ষে একটামাত্র বিশ্বন্ দেব কম্পনা করিবে। পিতৃপক্ষে ও মাতামহপক্ষে একটামাত্র বিশ্বন্ ব্রাহ্মণগণকে পূর্মমুখে বসাইগ্রা ভোক্ষন করাইবে। পিতৃপক্ষের ও মাতামহপক্ষের ব্রাহ্মণদিগকে উত্তরমুখে বসাইবে। পিতৃপক্ষের ও

शिक्षाक विद्यस्ति रिक श्रीवाद्यम् ।

<sup>🛧</sup> পিত্ৰহাজায়তামাঞ্চ টাভ বা পাঠ: ।

পৃথক্ তয়োঃ কেচিদান্তঃ শ্রাদ্ধন্য করণং নৃপ!।

একত্রৈকেন পাকেন বদন্ত্যন্যে মহর্ষয়ঃ॥ ১৬॥

বিষ্টরার্থং কুশান্ দত্ত্বা সংপ্ত্রার্ঘ্যবিধানতঃ।

কুর্য্যাদাবাহনং প্রাজ্ঞা দেবানাং ক্রদন্ত জ্ঞা॥ ১৭॥

যবামুনা তু দেবানাং কুর্য্যাদর্ঘ্যং বিধানবিৎ\*।

স্র্যাদ্ধ্যং বিধানবিৎ\*।

স্র্যাদ্ধ্যং ক্রাদ্ব্যাদর্ঘার বিধানবিংশ।

পিতৃণামপদব্যং তৎ সর্বমেকোপকল্পয়েই।

অমুজ্ঞাঞ্চ ততঃ প্রাপ্য দত্ত্বা দর্ভান্ দ্বিধার্কতান্॥ ১৯॥

মন্ত্রপুর্বং পিতৃণান্ত কুর্য্যাদাবাহনং বুধঃ।

তিলামুনা চাপদব্যং দদ্যাদর্ঘ্যাদিকং নৃপ!॥ ২০॥

কোন কোন মহর্ষি বলেন যে, পিতামহবর্গের ও মাতামহবর্গের াথক্ আদ্ধ করিতে হইবে। কেহ বা বলেন, একত্র এক পাকেই িভয়বর্গের আদ্ধ হইতে পারে। ° °

ি বিজ্ঞ ব্যক্তি প্রথমতঃ ব্রাহ্মণগণকে আগনের নিমিন্ত কুল প্রদান
করিয়া অর্ঘ্য প্রদানপূর্মক পূজা করিবে। পরে ব্রাহ্মণদিগের অনু—
মতি লইয়া দেবগণের আবাহনে প্রবৃত্ত হইবে। তারে বিধানক্ত ব্যক্তি ধব–সহিত উদক্ষারা যথাবিধানে দেবগণের ক্ষর্য্য প্রদান করিবে। তাঁহাদিগকে মাল্য গন্ধ ধূপ দীপ দান করিবে। তাল দুর বাম দিকে পিছুগণকেও তৎসমুদায় প্রদান করিতে হইবে। তহপরে ব্রাহ্মণের অনুজ্ঞা লইয়া দুই ভাগে দর্ভ প্রদান করিবে। তাল ব্যক্তর পশ্তিত ব্যক্তি, (উলদ্ধ স্থা ইভ্যাদি) মন্ত্র পাঠপূর্মক পিছ্-গণের আবাহন করিবে। রাজন্। পরে বার্ম দিকে সভিলোদক্ত ্রোরা অর্ঘ্যাদিতপ্রদান করিতে হইবে। তাল

<sup>&#</sup>x27; বিধানতঃ ইতি বা পাঠঃ।

কালে তত্রাতিথিং প্রাপ্তমন্নকামং নৃপাধ্ব ম্।
ব্যাক্ষাকৈরভ্যকুজাতঃ কামং তমপি পুজ্মে । ২১॥
যোগিনো বিবিধৈর পৈর্নাণামুপকারিণঃ।
ক্রমন্তি পৃথিবীমেতামবিজ্ঞাতস্বরূপিণঃ॥ ২২॥
তত্মাদভ্যক্ষেথে প্রাপ্তং কালে ভত্রাতিথিং বুধঃ \*।
শাদ্ধক্রিয়াফলং হন্তি নরেন্দ্রাপুজিতোইতিথিঃ †॥২৬
কুত্রাদ্যপ্তনক্ষারবর্জ্জমন্ধং ততোহনলে।
ক্রম্ভাতো দিকৈভিস্ত তিঃকৃত্বঃ পুরুষর্ষভ ।॥ ২৪॥
ক্রমন্যে কব্যবাহার স্বাহেত্যাদৌ নৃপাভ্তিঃ।
সোমায় বৈ পিতৃমতে দাতব্যা তদনন্তর্ম।

এই সময় যদি যদৃচ্ছাক্রমে সেই স্থানে কোন পণিক অতিথি উপস্থিত হয়, তাহা হইলে, ব্রাহ্মণদিগের অনুমতি লইয়া যথা-সাধ্য তাঁহার পূজা করিবে। বির্ধিক এই পৃথিবীতে পরিভ্রমণ করেন। নের উদ্ধেশে নানারূপ ধারপূর্বক এই পৃথিবীতে পরিভ্রমণ করেন। তাঁহাদের স্বরূপ জানিতে পারা দুঃসাধ্য। বির্ধির পূজা করিয়া থাকেন। যদি সে সময় অতিথির পূজা না হয়, তাহা হইলে আছেরও ফল হয় না। বিপ্রুম্ব শ্রেষ্ঠ প্রাহ্মণগণকর্ত্ব অনুজ্ঞাত হইয়া শাক প্রভৃতি বাপ্লেন রহিত ও লবণ রহিত অমন্বারা তিনবার অগ্নিতে আছতি প্রদান করিবে। বির্মিণ প্রমাধ্য বিষ্ঠান করেতেছি, এই বিশ্রা প্রথম আছতি, প্রামার পিতৃমতে স্থাহা পিতৃমান্ সোমকে প্রদান

<sup>•</sup> अ'सकारमध्डिथिश दूभ: इंडि প्रश्नको स्त्रमः शाउः।

<sup>+</sup> कारमध्या पुष्टिएडां श्विथि: इंडारमा श्वेषि।

বৈবস্বতায় চৈবান্যা তৃতীয়া দীয়তে ততঃ। ২৫ ॥

হতাবশিষ্টনম্পাশ্পং পিত্ৰপাত্ৰেয় নিৰ্বপেৎ।

ততোহত্ৰ মিষ্টমত্যৰ্থমভীষ্টমতিসংস্কৃতম্ \*॥ ২৬ ।

দত্ৰা জুবধ্বিচ্ছাতো বাচ্যমেতদনিষ্ঠুরম্।
ভোক্তব্যং তৈশ্চ তচ্চিত্ৰৈমো নিভিঃ স্কুমুখৈঃ সুধুম্ ॥২৭ ॥

অকুধ্যতা চাত্ৰৱতা দেয়ং তেনাপি ভক্তিতঃ।

রক্ষোত্মমন্ত্রপঠনং ভূমেরাস্তরণং তিলৈঃ॥ ২৮ ॥

কত্বা ধ্যেয়াঃ স্থপিতরস্ত এব দিক্ষসত্তমাঃ।

পিতা পিতামহশ্চৈব তথৈব প্রশিতামহঃ।

মম তৃপ্তিং প্রয়ান্তদ্য বিপ্রদেহেয়ু সংস্থিতাঃ॥ ২৯ ॥

করিতেছি, এই বলিয়া দ্বিতীয় আহুতি, 'বৈবস্থতায় স্বাহা' যমকে প্রদান করিতেছি, এই মন্ত্র পাঠ করিয়া তৃতীয় আহুতি প্রদান করিবে।' তংপরে হুতাবশিষ্ট লইয়া অন্স অন্স প্রিপ্পাত্র সমুদায়ে ছড়াইয়া দিবে। অনস্তর অতাস্ত অতীষ্ট অভিসংস্কৃত মিট অন (ব্রাহ্মণদিগকে)' দান করিয়া কোমল ভাবে বলিবে বে, 'ইচ্ছাতো জুবধন্' যথেচ্ছ রূপে ভোজন কর্মন। ব্রাহ্মণেরাও তদ্যতিতিক ও নৌনী হইয়া প্রসন্ম মুখে ভোজন করিবেন।' প্রাদ্ধকর্তাও ক্রোধহীন ও জ্বাহীন হইয়া ভক্তিপূর্বক (ভজ্যান্তর) প্রদান করিতে থাকিবেন। অনস্তর রক্ষোম্মন্ত্র পাঠ ও ভূমিতে তিল আস্তীর্ন বি বরিয়া সেই সকল ব্রাহ্মণকে আপনার পিতৃলোকস্বরূপ ভাবনা করিবে। (পরে এই মন্ত্র প্লাঠ করিবে।)

আমার পিতা পিতামহ ও প্রপিতামহ, ই হারা ব্রাক্ষণশরীরে অধিষ্ঠানপূর্বক পরিতৃপ্ত হউন। ১ আমার পিতা পিতামহ ও প্র-

<sup>\*</sup> অভীৱনতিৰংক্তম্ ইতি ব: পঠাভাস্।

পিভা পিতামহকৈ তথৈব প্রপিতামহ:।
মম তৃপ্তিং প্রয়ান্ত্র্মি-হোমাপ্যায়িতমূর্ত্য়ঃ॥ ৩°॥
পিতা পিতামহকৈ তথৈব প্রপিতামহ:।
তৃপ্তিং প্রয়ান্ত পিতেন ময়া দক্তেন ভূতলে॥ ৩১॥
পিতা পিতামহকৈ তথৈব প্রপিতামহ:।
তৃপ্তিং প্রয়ান্ত মে ভক্তা যন্ত্রাক্তিদ্হাক্তম্॥ ৩২॥
মাতামহন্ত্রিমুপৈতু তগ্য

পিতা তথা তস্য পিতা তথান্যঃ \*।
বিশ্বে চ দেবাঃ পরমাং প্রয়ান্ত
তৃপ্তিং প্রণশান্ত চ যাতুপ্রানাঃ ॥ ৩৩ ॥
যজ্ঞেশ্বের হব্যসমন্তকব্যভোক্তাব্যয়াত্মা হরিরীশ্বেরাইত্র।
তৎসন্ত্রিশানাদপ্যান্ত সদ্যো
রক্ষাংস্যশেষাণ্যস্থরাক্ষ সর্বের। ৩৪ ॥

পিতামহ, ইঁহারা অগ্নিও হোমদারা আপ্যায়িত হইয়া পরিতৃপ্ত হউন। ত' আমার পিতা পিতামহ ও প্রপিতামহ, ইঁহারা ভূড়লে মন্ত্র পিওদারা পরিতৃপ্ত হউন। ত' এই শ্রাক্তে আমি বাহা করিতে অসমর্থ হইয়াছি তদিবয়ে, আমার পিতা পিতামহ ও প্রপিতামহ, ইঁহারা (একমাত্র) আমার ভক্তিদারা পরিতৃপ্ত হউন। তং আশ্বার মাভামহ প্রমাতামহ ও রন্ধ-প্রমাভামহ, এবং বিশ্বদেবপ্রণ, ইঁহারা পর্ম তৃপ্তি লাভ কর্মন, নিশাচ্রগ্র প্রন্থী হউক্। ত এথানে সমন্ত হ্বা-ক্বা-ভোক্তা অব্যয়াক্সা যজেশ্বর

ভথাপিতা ভিক্ত পতা চ গোধন।: ইতি পাঠাভরম্।

ভৃথেষু তেষু বিকিরেদরং বিপ্রেষু ভূতলে \*।

দদ্যালাচমনার্থায় ভেভ্যো বারি সরুৎ সরুৎ ॥ ৩৫ ॥

স্কৃথৈতৈররুজ্ঞাতঃ সর্বেশিরেন ভূতলে। \*

সতিলেন ততঃ পিগুান্ সম্যা দদ্যাৎ সমাহিতঃ ॥ ৩৬ ॥
পিতৃতীর্থেন সতিলান দদ্যাদ্থ জলাঞ্জলীন্।
মাতামহেভ্যস্তেনৈব পিগুাংস্তীর্থেন নির্বপেৎ ॥ ৩৭ ॥

দক্ষিণাপ্রবিশ্বৈর প্রযজ্নোপপাদ্যেৎ।

অবকাশেষু চোক্ষেষু জলতীরেষু চৈব হি ॥ ৩৮ ॥

দক্ষিণাগ্রেষু দর্ভেষু পুল্পধূপাদিপুজিতন্।

স্বিপিত্র প্রথমং পিগুং দদ্যাদুক্তিইনন্নিধ্যা ॥ ৩৯ ॥

হরি (সমিহিত আছেন)। সেই স্থারের সমিধানহেতু ক্ষণকাল-মধ্যেই সমুদার রাক্ষ্য ও সমুদার অস্কুর পলায়ন করুক। ""

অনন্তর ব্রাহ্মণগণ পরিত্প হইলে কতকশুলি অম ভূতলে ছড়াইয়া দিবে। পরে আচমনের নিমিত্ত ব্রাহ্মণগণকে এক এক গশুৰ জল
দিতে হইবে। তা পরে উস্তম পরিতৃপ্ত ব্রাহ্মণগণ অনুজ্ঞা প্রদান
করিলে সমাহিত হইরা তিল ও ব্যঞ্জনাদিসহিত উদ্ভম শাররারা ভূমির উপর পিশু দান করিবে। তা তৎপরে পিতৃতীর্থ দারা
তিলসহিত জলাঞ্জলি প্রদান করিতে হইবে। মাধামহদিগকেও
সেই পিতৃতীর্থদার। পিশু দান করিবে। তা এই সকল কার্ব্যে রম্থপূর্বেক দক্ষিণা প্রদান করা কর্ত্বিয়। ইহার মধ্যে প্রথমতঃ জল্মভীরে বা অন্য কোন উদ্ভম পরিষ্কৃত স্থানে তা ব্রাহ্মণের উদ্ভিক্তর
নিকট দক্ষিণাগ্র ক্লসমূহ বিস্তার করিয়া স্বীয় পিতাকে পূম্প ধূপ

ভুতগুলেভেমবকিরেদরম্ইভি পাঠা দুরম্।
 পিতৃতীর্থ অগাং হস্তারা।৩ং

পিতামহায় চৈবান্যৎ তৎপিতে চ ভথাপরম্।
দর্ভমূলে লেপভুজঃ প্রাণয়েল্লেপঘর্ষণৈঃ ॥ ৪০ ॥
পিটুওমাতামহাংশুদ্বদান্ধমাল্যাদিসংযুকৈঃ।
পূজয়িত্বা দ্বিজাগ্রাণাং দদ্যাচ্চাচমনং ততঃ \*॥ ৪১ ॥
পিত্রেভাঃ প্রথমং ভক্ত্যা † তম্মনক্ষো নরেশ্বর!।
স্কর্ষধেত্যাশিষা যুক্তাং দদ্যাচ্ছক্ত্যা চ দক্ষিণাম্॥ ৪২ ॥
দত্ত্বা চ দক্ষিণাং তেভ্যো বাচয়েদ্বৈশ্বদেবিকান্।
প্রীয়ন্তামিতি যে বিশ্বেদেবান্তেন ইতীরয়েৎ ‡॥ ৪৩ ॥
তথেতি চোক্তে তৈর্বিপ্রঃ প্রার্থনীয়ান্ত্রথাশিষঃ।
পশ্চাদ্বিক্জিয়েদেবান্ পূর্বং পৈত্যান্ মহামতে!॥ ৪৪॥

দীপ প্রভৃতিষারা অর্চিত পিঁশু প্রদান করিবে। ত তৎপরে পিতামহকে একটা ও প্রপিতামহকে একটা (পিশু দিবে)। অনন্তর হস্তে
লিপ্ত অন্তু ঘর্ষণ করিয়া দিয়া লেপভোগা পিতৃগণকে প্রীত করিবে। ত পরে এইরপে গন্ধমাল্যপ্রভৃতি-সংযুক্ত পিশুদ্বারা মাতামহগণের পূলা করিয়া ব্রাহ্মণগণকে আচমনীয় জল প্রদান করিতে হইবে। ত রাজন্। তৎপরে তন্মনা হইয়া ভক্তিপূর্মক স্থায়া এই আশীর্বাদ গ্রহণ করিয়া পিতৃসম্বন্ধী ব্রাহ্মণগণকে যথাশক্তি দক্ষিণা প্রদান করিবে। ত অনন্তর দক্ষিণা—প্রদান হইলে বৈশ্বদেবিক ব্রাহ্মণগণের নিকট বলিতে হইবে যে, ইহাদ্বারা বিশ্বদেবগণ প্রীত হউন। ঐ ব্রাহ্মণদিগের নিকট ইহার উন্তর্ব্ব লইতে হইবে। ত মহামতে! ব্রাহ্মণেরা তথান্ত এই কথা বলিলে তাঁহাদের নিকট আশীর্বাদ প্রার্থনা করিয়া প্রথমতঃ পিতৃসম্বন্ধী ব্রাহ্মণদিগকে পশ্চাৎ দেব-

मन्त्रीमाठमनः ७७: ইভि वा श्रमीयृग्।

<sup>†</sup> পৈত্ৰেডাঃ প্ৰথমং ভক্তা। ইতি বা পৰ্টিডবাম্। ইতীবয়ন ইতি পুস্কান্তবস্থাটঃ।

মাতামহানামপ্যেবং সহ দেবৈঃ ক্রমঃ স্মৃতঃ।
তোজনে চ স্বশক্ত্যা চ দানে তদ্বদিসর্জ্জনে ॥ ৪৫ ॥
'আপাদশোচনাৎ পূর্বং কুর্য্যাদেবদিজনাস্ত্র ।
বিসর্জ্জনন্ত প্রথমং পৈত্রমাতামহেষু বৈ ॥ ৪৬ ॥
বিসর্জ্জনেত প্রতিবচঃ সংমানাভ্যাদিত তাংস্ততঃ।
নিবর্ত্তেতাভার্ত্তাত আদ্বারান্তাদক্রজেৎ ॥ ৪৭ ॥
ততস্তু বৈশ্বদেবাখ্যাং\* কুর্য্যান্ত্রিত্যক্রিয়াং বুধঃ।
ভূঞ্জীয়াচ্চ সমং পূজ্য-ভূত্যবন্ধুভিরাত্মনঃ † ॥ ৪৮ ॥

পক্ষের ব্রাহ্মণগণকে বিসর্জ্জন করিবে। " দেবগণের সহিত মাতামহের প্রাহ্ম করিবার সময়ও এইরূপ ক্রম অবলম্বন করিতে হইবে।
ভোজন, যথাশক্তি দান ও বিসর্জ্জন বিষয়ে (পিতৃপ্রান্ধের ন্যায়
ক্রম জানিবে।) " (ইহার তাৎপর্য্য এই যে) কি পিতৃপক্ষের
প্রাহ্ম, কি মাতামহপক্ষের প্রাহ্ম, উভয় স্থলেই তথ্য দেবপক্ষের
ব্রাহ্মণের পাদ শোচপ্রভৃতি সমুদায় কর্ম্ম সম্পাদন করিতে হইবে,
পরস্ক পিহৃপক্ষীয় ও মাতামহপক্ষীয় ব্রাহ্মণের বিসর্জ্জন (ও
দক্ষিণাদান) পুর্বেষ করিতে হইবে। " "

অনন্তর প্রীতিবাক্য প্রয়োগ ও সন্মানপূর্বক পুজিত ব্রাহ্মণগণের বিসর্ক্তন করিবে। বিসর্ক্তনকালে দ্বারপর্যান্ত অনুগমন করিয়া তাঁহাদের অনুমতি লইয়া প্রতিনির্দ্ধ হইবে। তা তৎপরে বিজ্ঞা বাজি বৈশ্বদেবনামক নিতাক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিবে। পরে সংযত-চিন্ত হইয়া মান্য ব্যক্তি, বন্ধু ও ভ্তাপ্রভাব সহিত একজ্ঞা ভোজনে প্রস্তু হইবে। তা

<sup>🗸</sup> ভতশ্চ বৈশ্বদেব।ভগাম্ ইভি কেচিং পঠস্কি।

<sup>🕇</sup> च्राव्यकृष्टिव्याचान् इति क्विट श्रेतिश्व ।

এবং আদ্ধং বুধঃ কুর্যাৎ পৈত্রং মাতামহং তথা।
আট্রেরাপ্যায়িতা দলুঃ সর্বকামান পিতামহাঃ \* ॥ ৪৯।
ত্রীণু আদ্ধে পবিত্রাণি দৌহিত্রং কুতপস্তিলাঃ।
রক্ষতস্থ তথাদানং কথাসন্দর্শনাদিকম্॥ ৫০॥
বর্জ্যানি কুর্ববিতা আদ্বং কোপোহধ্বগমনং ত্রা।
ভোক্রপ্যত্র রাজেন্দ্র! ত্রয়মেতন্ন শস্ততে॥ ৫১॥
বিখেদেবাঃ স পিতরস্তথা মাতামহা নৃপ!।
কুলঞ্চাপ্যায়তে পুংসাং সর্ববং আদ্ধং প্রকৃর্বভাম্॥৫২॥
সোমাধারঃ পিতৃগণো-যোগাধারশ্চ চন্দ্রমাঃ।

পশ্তিত ব্যক্তি এইরপে পিতৃপ্রান্ধ ও মাতামহশ্রান্ধ করিবেন, কারণ পিতামহগণ প্রান্ধদার প্রাণ্যায়িত হইলে সমুদায় কামনা পূর্ব করিয়া দেন। " প্রান্ধস্থলে দৌহিত্র, কৃতপ, তিল, এই তিনটা অতীব পবিত্র। রক্ষত গ্রহণ, রক্ষত দর্শন ও রক্ষত কথা প্রবণ এতৎসমুদায়ও পবিত্রতাজনক। " রাক্ষেক্র! যিনি প্রান্ধ করিবেন, তাহার কর্ত্রব্য এই যে, কোম, পথগমন ও কোন বিষয়ে ত্বরা পরিত্রাগ করেন। যিনি প্রান্ধে ভোজন করেন, তাহার পক্ষেও ঐ তিনটা কার্ম্য প্রশংসনীয় নহে। " মহারাজ! যিনি সমুদায় প্রান্ধ করেন, তাহার প্রতি বিশ্বদেবগণ পিতৃগণ মাতামহগণ ও তদ্বংশীয় সকলেই পরিতৃপ্ত হইর্মা থাকেন। " ভূপতে! চক্র পিতৃগণের আধার ব্রবং চক্রের আধার বোগ, অতএব প্রান্ধকালে প্রেষ্ঠ যোগীকে

#### সক্ৰিকামং পিতামহা: ইতি বা পঠ্যতান্।

আমাৰস্যার দিন গাতী তুণ ভক্ষণ করিলে ভাগা হটতে যে যুত তৰ্পন্ন হয়, ভাগ'র নাম দেগছিত্র। অথবঃ দেগছিত্র কন্যার পুত্র। কেহ কেহ বলেল, দেগছিত্র শব্দের অর্থ বাড় গপাত্র। হাগলোমজাত সালের নাম কুতপ; অথবা কুতপ শব্দের অর্থ দিবসের অক্টম মুহ্র ভি । • শ্রেষ্ঠযোগিনিয়োগস্তু তন্মাদ্ ভূপাল! শস্ততে। ৫৩॥ সহস্রস্থাপি বিপ্রাণাং যোগী চেৎ পুরতঃ ছিডঃ। সর্বান্ ভোক্তৃংস্থারয়তি যজমানং তথা নৃপ!। ৫৪।

ইতি এবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২ শে শুদ্ধ-কম্পো নাম পঞ্চশোহধ্যায়ঃ 1

নিয়োগ করা প্রালন্ত। ° রাজন্! সহস্র ব্রাক্ষণের মধ্যে যদি এক-জনমাত্র যোগী থাকেন, ভাহা হইলে ভিনি সমুদায় ভোজাকে এবং যক্ষানকে উদ্ধার করেন। ° °

বিষ্পুরাণ-তৃতীয়াংশ-শ্রাদ্ধকণ্প-নামক পঞ্চদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

# विक्यूत्रागम्।

তৃতীয়োহংশঃ।

(बाष्ट्रणार्थायः।

## खेर्स डेवाह।

হবিষ্যমৎস্থমাংসৈপ্ত শশস্ত শকুনস্ত চ।
শৌকরচ্ছাগলৈরৈণৈ-রেগরবৈর্গবয়েন চ॥ ১॥
উরজ্রগবৈয়েন্চ তথা মাসর্দ্ধা পিতামহাঃ।
প্রয়ান্তি তৃপ্তিং মাংসৈপ্ত নিত্যং বাধীণসামিষঃ॥ ২॥

खेर्स कहिलान, खांट्य समग्र द्वाक्षणिनगरक हित्या कताहेला जिन्नण अकमाम अविन्ध थाटकन, मध्मा मिला मूहे माम, ननमाश्म मिला जिन माम, अक्षिमाश्म मिला छाति माम, भूकतमाश्म मिला आह माम, हानमाश्म मिला ह्य माम, अननामक हित्याश्म मिला माज नाम, क्रक्रम्नमाश्म मिला खाहे माम, नव्यमाश्म मिला नय माम, व्यवमाश्म निला मन माम, नामश्म मिला अनात माम, जिन्न नव अतिज्ध थाटकन। अतिक्ष येन वाद्योगम-माश्म मिला यात्र, जाहा हहेला जिन्नाटकत ज्खित खात जात माहे। ताकन् ! नशा-

গবা-ণল থাকাতে কেই কেই গোমাংস মা বলিয়া পারস অর্থ করেম। এ অর্থ অথে জিক; কারণ পারস বা দুন্ধ কখন মাংসমধ্যে পরিগণিত ইইতে পারে মা। বিশেবতঃ বখন গবরমাংস খুকরমাংস জক্ষণ করিয়া পরিভূপ ইইতেছেন, তখন গোমাংস ভক্ষণে বাধা কি? কলতঃ কলির পুর্বের গোমাংস ভক্ষণ প্রচলিত ছিল। মহাভারতে বোদ্শ-রাজিক-মূলে ক্থিত আছে, র্থিকের প্রতিদ্যু দুই সহস্র গো-হতা ক্রিয়া ভাহার মাংস ব্রাক্ষণ্দিগকে ভোকন করাইতেম। বিশিষ্ট বাল্যীকির আর্থনে গমন ক্রিলে ভাহারে একটা বংশভরী ভোকনার্থ দেখুলা হয়। ক্ষমদেশন্ত্র

খড়ানাংসমতীবাত্ত কালশাকং তথা মধু।
শস্তানি কর্মণাত্যন্তত্থিদানি নরেশ্বর !॥ ৩॥
গয়ামুপেত্য যঃ প্রাদ্ধং করোতি পৃথিবীপতে!।
সফলং তস্ত ভজ্জন্ম জায়তে পিতৃত্যিদিম্॥ ৪॥
প্রসান্তিকাঃ সনীবারাঃ \* শ্চামাকা দিবিধান্তথা।
বনৌষধীপ্রধানান্ত প্রাদ্ধার্হাঃ পুরুষর্বভ !॥ ৫॥
যবাঃ প্রিয়ঙ্গবো মুদ্দা গোধুমা ত্রীহয়ন্তিলাঃ।
নিজ্পাবাঃ কোবিদারাশ্চ সর্বপাশ্চাত্র শোভনাঃ॥ ৬॥
অক্ততাগ্রয়ণং যচ ধান্যভাতং নরেশ্বর !।

রের মাংস. কৃষ্ণশাক ও মধু, এই সমুদায় দ্রব্য প্রাদ্ধকর্মে অভ্যন্ত প্রশাস্ত ও যার পর নাই তৃপ্তিদায়ক। তৃপতে! যে ব্যক্তি গরাতে গমনপূর্বক প্রাদ্ধ করে (পিতৃশ্বণ হইতে মুক্ত হওয়াতে) ভাহার ক্রম্ম সার্থক হয়। ভাহার পিতৃগণ পরিতৃষ্ট পাকেন। পুরুষপ্রেষ্ঠ! দেবধান্য, নীবারধান্য, খেডবর্ব ও রুষ্কবর্ব এই দুইপ্রকার প্যামাক ধান্য ও পশ্চাদুক্ত প্রধান বন্যৌবধি, এই সমুদায় দ্রব্য প্রাদ্ধের উপযোগী। যব, প্রিয়ঙ্গু, মুদ্গ, গোধুম, ব্রীহি, ভিল, শিল্পী, কোবিদার ও সর্বপ, এই সমুদায় ওবধি প্রাদ্ধের উপযোগী।

<sup>\*</sup> अत्र'खिकाः नवीवाता देखि वां शारेः।

বেদব্যাসকে একটা বংস ভোজনার্য দিয়াছিলেন, বেদব্যাস দরা করিয়া ছাহ'কে ছাড়িয়া দিলেন। এই রূপ গোমাংস ভক্ষান্তর অনেক প্রমাণ পাওয়া যায়। ২

ৰাধ্ৰীণস—জীৰবিশেৰ। স্মৃতিকারেরা বলেন, জলপানের সময় যাহার কর্ণছর জলে মা হয়, বার্ছিকা বশতঃ যাহার ইন্সিয়ে সমুখার জীণ হটরাছে, যাহার সর্বাজ খেতবর্গ, উদৃশ প্রাচীন অজাপতিকে বাজিকেরা বাধ্বীণস বলিয়া থাকেন। বেদে আছে, যে পজীর গ্রীবাদেশ কৃতবর্গ, মন্তক রক্তবর্গ ও পক্ষ সমুখার খেতবর্গ, উদৃশ পক্ষীকে বাধ্বীণস্বিদা বার। ২

<sup>(</sup>पर्वथाना-चार्वनु-तीहिनम्म, त्वथान । । विद्या-विम् । काविकात-स्मित्र-मात्रक कनविरमक । ।

রাজমাসানগৃং শৈচব মস্থরাংশ্চ বিবর্জ্জয়েৎ॥ १॥

জলাবুং গৃঞ্জনথৈব পলাপুং পিওমূলকম্।

গান্ধারকং করন্তাণি লবণান্যৌধরাণি চ॥ ৮॥

জারক্তাশৈচব নির্যাসাঃ প্রত্যক্ষলবণানি চ।

বর্জ্যান্যেতানি বৈ প্রান্ধে যক্ত বাচা ন শস্ততে॥ ৯॥

নক্তাহ্বতং ন চোৎস্ফং ভূপ্যতে ন চ যত্র গৌঃ।

দুর্যন্ধি ফেনিলঞ্চায়ু প্রাদ্ধেরাগ্যং ন পার্থিব!॥ ১০॥

কীরমেকশফানাং যদৌ এমাবিক্ষেব চ।

মার্যঞ্চ মাহিষ্টেগ্র বর্জ্জয়েৎ প্রাদ্ধকর্মণি॥ ১১॥

বতাপবিদ্ধচাতালপাষ্টোম্বান্তরোগিভিঃ।

রাজন্! অকৃতাগ্রয়ণ ধান্য, অকৃষ্ণ মাস, সূক্ষ্ম শারী ধান্য ও নস্র-ছিদল, এ সমুদায় (আজে) পরিত্যাগ করিবে। অলাবু, গুপ্তন, পলাগু, পিগুাকৃতি মূলক, গান্ধার, করস্ক, উবর-ভূমিলাভ লবণ শভাবতঃ ঈষৎ রক্তবর্ণ বৃক্ষনির্যাস, যে লবণ মিজিত হইলেও দেখিতে পাওয়া যায় ও যে বস্তু লোকে নিন্দিত, আদ্ধানাল এ সমুদায় বস্তু পরিত্যাগ করা কর্তব্য। বাত্রিতে আনীত জল, অপ্রতিভিত্ত কূপাদির জল, গোগণ যে জল তৃপ্তিপূর্মক পান না করে, এবং দুর্গন্ধকল ও ফেনিল জল, এ সমুদায় আদ্ধায়োগ্য নহে। অক্ষম্ম জন্তর দুর্মা, উন্তীদ্ধা, মেবছ্মা, মৃগদুর্মা, মহিবদুর্মা, এ সমুদায় আছে পরিত্যাগ করা কর্ত্বব্য। ব্যক্ত, অপবিদ্ধা, চাঞাল, পারগু, উন্মন্ত, উন্মন্ত,

অকৃত গ্ৰেয়ণ থান্য — নৰশন্যাগম হইলে বারি বাশ্বদের যাহালারা যাগ না ক্ৰেন ৷ং

গ্ৰাম—হরিংবর্ণ মূলক। গার্ভার—এক প্রকার শাক **অথবা কাঞ্জিক।** করম্ভ— অবিকৃশিত ল'প অথবা এক প্রকার শাক।৮

अक्षान-- गोहारमव शूव (योषा, ष्राश्व क्षाप्रक्रि । ১১

ক্ষকবাকু-শ্ব-নথৈশ্চ বানরপ্রামশৃকরৈঃ ॥ ১২ ॥
উদক্যা স্তকাশোচি-মৃতহারৈশ্চ বীক্ষিতে।
শ্রামের সুরা ন পিতরো ভূঞ্জতে পুরুষর্যভ ! ॥ ১৩ ॥
তথ্যাৎ পরিশ্রিতে কুর্য্যাচ্ছাদ্ধং গ্রদ্ধাসমন্বিতঃ।
উর্ব্যাং চ তিলবিক্ষেপাদ যাতুধানান্ নিবারয়েৎ ॥১৪ ॥
ন পুতি নৈবোপপন্নং কেশকীটাদিভিন্প ! ।
নচৈবাভিষবৈমিগ্রমন্ধং পয়ুর্যিতং তথা ॥ ১৫ ॥
শ্রদ্ধাসমন্থিতর্গতং পিতৃত্যো নামগোত্তঃ।
যদাহারাস্ত তে জাভান্তদাহারস্বমেতি তথ ॥ ১৬ ॥
শ্রান্তে চাপি পিতৃভিগীতা গাথা মহীপতে!।
ঈক্ষাকোর্মনুপুত্রস্ত কলাপোপবনে পুরা ॥ ১৭ ॥

চিররোগী, কুকুট, কুকুর, নগ্ন, বানর, গ্রামশূকর, ই রজস্বলা নারী, জননাশোচবিশিক্ট, মরণাশোচবিশিক্ট, মৃতহারক, ইহারা আদ্দর্শন করিলে দেবগণ ও পিতৃগণ আদ্ধ ভোজন করেন না। ১০ অতএব উত্তম পরিরত স্থানে আদ্ধান্থিত হইয়া আদ্ধ করিবে। ভূমিতে ভিল নিক্ষেপ করিয়া নিশাচরগণকে নিরাক্ত করিবে। ১০

শ্রান্ধের অন্ন দুর্গন্ধি, কেশযুক্ত, কীটযুক্ত, কাঞ্লিক-মিশ্রিত ও পর্যুবিত না হয়। " শ্রন্ধান্ধিত হইয়া নামগে তৈ উল্লেখপুর্মার্ক পিতৃগণকে (নির্দোষ) অন্ন দান করিলে, পিতৃগণ যদাহার হইগাছেন, অন্নও তক্রপে পরিণত হয়। " মহীপতে! শুনিয়াছি, পূর্মান (হিমালয়-পার্মা-ন্থিত) কলাপনামক উপবনে পিতৃগণ
মনুপুত্র ইক্ষাকুকে এই গীতা বলিয়াছিলেন যে, " আমাদের বংশে

ৰ গু—মপুংনক। পাত্ৰপৰিছ—উৎপত্তির পরেই মাতা কর্তৃক পরিত্যক্ত। পাৰ্ধ— বৈদিককণ্ম-পরিত্যাগী। ২২

মৃতহারক-প্রনির্বণ-বৃত্তি অর্থাৎ মুদ্দোকরাত্। ১৬

অপি নত্তে ভবিষ্যন্তি কুলে সন্মার্গগামিনঃ \*।
গয়ামুপেতা যে পিগুনি দাক্সন্তান্মাকমাদরাৎ ॥ ১৮ ॥
অপি নঃ স্বকুলে জায়াদ্† যে। নো দদ্যাৎ অয়োদশীম্।
পায়সং মধুসপির্ভ্যাং বর্ষাস্ক চ মঘাস্ক চ ॥ ১৯ ॥.
গোরীং বাপুম্বছেৎ কন্যাং‡ নীলং বা ব্যমুৎস্জেও।
যজেত বাশ্বমেধন বিধিবদ্দিশাবতা ॥ ২০ ॥
ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়েহ শলে আচারকীর্ত্তনশ নাম যোড়শোহধ্যায়ঃ ৷

সংপথবন্তী এমত কোন পুত্র জন্মে যে, যে পুত্র গ্যায় গমন করিয়া আদরপূর্ব ক আমাদের উদ্দেশে পিগুদান করে। ' আমাদের কুলে এমন কোন সন্তান জন্মায় বে, সে ব্যক্তি, আমাদের উদ্দেশে ভাদ্রমাদের মঘাসংযুক্ত অয়োদশী তিথিতে য়ত-মধু-সংযুক্ত পায়স প্রদান করে। ' (আমাদের বংশে এমন কোন পুত্র উৎপন্ন হয় যে,) গৌরী কন্যা বিবাহ করে বা নীল রুষ উৎসর্গ করে অথবা যথাবিধি দক্ষিণা প্রদানপূর্ব ক অশ্বনেধ যজ্ঞের অনুষ্ঠানে প্রস্তুত্ত হয়। ' "

বিষ্ণুপুরাণ-তৃতীয়াংশ-আচার-কীর্ত্তন-নামক বোড়শ অধ্যায় সমাপ্ত।

অক্টমনৰীয়া কন্যার নাম গেঠরী, নম্ম ন্যায়া কন্যায় নাম রোহিণী, দশম বহাঁছা ক্রায় নাম কন্যা, ভাচার পর রজনতা ক্রা নার। গেঠরী ক্র্যা চান করিলে অর্পনমন করে, রোহিণী ক্র্যা সম্পূর্ণান করিলে বৈকুঠে বায়া, ক্র্যাণান করিলে ব্রহুলোক প্রাপ্ত হয়, রজনতা সম্প্রণান করিলে রেই,রব সরকে গমন করে। ২০

বাহার সর্কাল লোহিত বর্ণ, মুখ ও পুচ্ছ পাঞ্চরবর্ণ, ক্লুর ও শুল খেতবর্ণ, তাহার নাম নীল রুব। ১০

<sup>\*</sup> সমাৰ্শনীলিন ইতি বা পঠনীয়ন্।

<sup>🛧</sup> অপি ম: न কুলে ভারাত্ ইভি বা পঠাভাব্।

<sup>🛨</sup> গোরীং বাপ্যদহেৎ ভার্য্যাম্ ইতি পাঠা ভরম্।

# विकुश्रागम्।

তৃতীরোহংশঃ। সপ্তদশোহধ্যারঃ।

## পরাশর উবাচ।

ইত্যাহ ভগবানোর্কঃ সগরায় মহাত্মনে।
সদাচারান্ পুরা সমাক্ মৈত্রের! পরিপৃচ্ছতে ॥ ১॥
ময়াপ্যেতদশেবেণ কথিতং ভবতে ছিজ! \*।
সমুল্লজ্যা সদাচারং কশ্চিন্নাপ্রোতি শোভনম্॥ ২॥
মৈত্রেয় উবাচ।

যগুণবিদ্ধপ্রমুখা বিদিতা ভগবন ! মম। উদক্যাদ্যাশ্চ যে সর্বে, নর্মমিচ্ছামি বেদিতুম্॥ ৩॥

পরাশর কহিলেন, নৈত্রেয়। পূর্বে মহান্ধা সগর সদাচারের লক্ষণ জিজ্ঞাসা করিলে ভগ্নবান্ ঔর্ব পূর্বোজ সমুদায় বলিয়াছি-লেন। ব্রহ্মন্। আমিও তোষার নিকট সমুদায় কহিলাম। কোন ব্যক্তি সদাচার উল্লেখন করিয়া শ্রেষোলাভ ক্রিডে পারে না।

মৈত্রেয় কহিলেন, ভগবন্! ক্লাব কাহাকে বলে, অপবিদ্ধ কাহাকে বলে, উদকী ( একখনা জ্রী ) কাহাকে বলে, ইত্যাদি সমুদায় আমি অবগত আছি, পরস্ক নগ্ন কাহাকে বলে ভাহা আমি জানি না, একণে জ্ঞাত হইতে অভিনাধ করি ই কাহার নাম নগ্ন?

<sup>• #</sup> ভবভো দিল! ইভি কেচিৎ পঠতি।

কো নগ্নঃ কিং সমাচারো নগ্নসংজ্ঞাং নরো লভেৎ। নগ্নস্থরপমিচ্ছামি যথাবদ্যাদিতং ত্বরা॥৪॥ পরাশর উবাচ।

ঋগ্যজ্ঃসামসংজ্যেং ত্রা বর্ণার্তিদ্বি ।।

এতামুজ্ঞাতি যো মোহাৎ স নাঃ পাতকী স্তঃ ॥ ৫ ॥

ত্রা সমস্তবর্ণানাং দিকসংবরণং যতঃ।

নাো তবতু জ্মিতারাম্ অতস্তস্তামসংশ্রম্॥ ৬ ॥

ইদঞ্চ ক্রায়তামন্ত্রীয়ায় স্থমহাত্মনে।

কথ্যামাস ধর্মজ্ঞো বসিষ্ঠো মৎপিতামহঃ॥ ৭ ॥

মরাপি তস্য গদতঃ ক্রতমেত্রমহাত্মনং।

নামস্বন্ধি মৈত্রেয়! যথ পৃট্টোইহমিই ত্রা॥ ৮ ॥

দেবাস্থ্রমভূদ যুদ্ধং দিব্যমকং পুরা দিক।।

মনুষ্য কিব্লপ আচরণ করিলে নগ্ন এই উপনাম প্রাপ্ত হয়। নগ্নের লক্ষণই বা কি? এসমুদায় আপনি যথাবিধানে বলুন, আমি শ্রবণ করিতে অভিলাষ করি।

পরাশর কহিলেন, ছিল! কক্ যক্ষুং ও সামবেদ, এই ত্রারী অর্থাৎ বেদজার, সমুদায় বর্ণের আর্তিস্ক্রপ। যে ব্যক্তি মোহ-বশত এই ত্রায়ীরূপ রতি পরিত্যাগ করে, সেই পাতকীকে নগ্র বলা বায়। বক্ষন্! ত্রাই সমস্ত বর্ণের সংবরণ স্থরপ, অতএব এই ত্রাইরূপ সংবরণ পরিত্যাগ করিলে নগ্র হয়, সম্পেহ নাই। জামার পিতামহ ধর্মজ্ঞ বিশিষ্ঠ, মহাস্থা ভীয়ুকে এই বিষয়ে যাহা বলিয়া-ছিলেন, তাহা শ্রবণ কর। বিজ্ঞান তুমি যে আমার নিক্ট নগ্র বিষয়ক কথা কিজ্ঞাসা করিতেছ, ইহা মহাস্থা মংপিতামহ যখন বলেন, তথন শুনিয়াছ।

তিমিন্ পরাজিতা দেবা দৈতৈত্ত্বিদ-পুরোগমৈঃ॥৯॥
ক্ষীরোদস্যোত্তরং কূলং গত্তাহতপ্যন্ত বৈ তপঃ।
বিফোরারাধনার্থায় জগুশ্চেমং স্তবং জ্থা॥ ১০॥
দেবা উচুঃ।

আরাধনায় লোকানাং বিষ্ণোরীশস্য যাং গিরম্।
বক্ষ্যামো ভগবানাদ্যস্তয়। বিষ্ণুঃ প্রসীদতু ॥ ১১ ॥
যতো ভূতান্যশেষাণি প্রস্থতানি মহাত্মনঃ।
যক্মিংশ্চ লয়মেয়ন্তি কন্তং সংস্তোতুমীশ্বরঃ॥ ১২ ॥
তথাপ্যরাতিবিশ্বংস-শ্বন্তবীর্য্যা ভবার্থিনঃ।
ত্মাং স্তোষ্যামস্তবোক্তীনাং যাথার্থ্যং নৈব গোচরে\* ॥ ১৩॥

ব্রহ্মন্! পূর্বাংলে এক সময় দিবা এক বৎসরপর্যান্ত দেবগণের ও অস্থ্যগণের পরক্ষার যুদ্ধ হইয়াছিল। এই যুদ্ধে হুাদ প্রভৃতি দৈত্য-গণ দেবগণকে পরাজয় করেন ই অনন্তর (পরাজিত দেবগণ) ক্ষীর সমুদ্রের উত্তর কূলে গমন করিয়া বিষ্কুর আরাধনার নিমিন্ত তপসা। করিতে প্রস্তু হইলেন ও এইরূপ ন্তব করিতে লাগিলেন। ই

দেবগৰ কহিলেন, আমরা লোকনাথ বিষ্কৃর আরাধনার নিমিস্ত বে সকল বাকা প্রয়োগ করিব, তদ্ধারা সেই অনাদি ভগবান্ বিষ্কৃত্থাসম হউন ৷ ' বে মহাত্মা হইতে সমুদায় প্রাণী উৎপন্ন হই-তেহে, যাঁহাতে সকলেই লয়প্রাপ্ত হইবে, তাঁহার তব করিতে কোন্ ব্যক্তি সমর্থ হইবে ? ' ঈশ্বর ! যদিও আপনকার তত্ত্ব স্তুতি-বাকোরও অগোচর, তথাপি আমরা শক্রক ত পরাভব দ্বারা হীনবীর্ষ্য হইয়া আপনাদের মঙ্গলাকাক্তায় আপনকার তব করিতে প্রয়ন্ত

<sup>🛊</sup> মেণ! গোচরে ইতি গ্রন্থান্তরসা পাঠঃ।

অনৈকান্তিকত্ব ভ্রমের যাগাণি করা যায় যদি ভাহার ফললাতে সংশর থাকে ভাং। হইলে সেই ফলকে অনৈকান্তিক বলা যায়।১০

ষমুর্বী সলিলং বহিংবায়ুরাকাশমের চ।
সমস্তমন্তঃকরণং প্রধানং তৎপরঃ পুমান্॥ ১৪॥
একং তবৈতজ্ঞতাত্মন্ মুর্ত্তামূর্ত্তময়ং বপুঃ।
আবন্ধস্থপর্যান্তং স্থানকালবিভেদবং॥ ১৫॥
তবেশ। তব যথ পূর্বং স্থান্তিকমলোদ্ভবম্।
রূপং সর্বোপকারায় তবৈ বন্ধাত্মনে নমঃ॥ ১৬॥
শক্রাক্ত রুত্তবস্থামিকহৎসোমাদিভেদবং \*।
বয়মের স্থারপথ যথ তবৈ দেবাজ্মনে নমঃ॥ ১৭॥
দন্তপ্রায়সমস্বোধি তিতিক্ষাদমবর্জ্জিতম্।
যজ্ঞপং তব গোবিন্দ। তবৈম দৈত্যাত্মনে নমঃ॥ ১৮॥
নাতিজ্ঞানবহা যত্মিন্ নাড্যন্তিমিততেজ্ঞাস।

হইলাম। ত আপনি পৃথিৱী, আপনি সলিল, আপনি অগ্নি, আপনি বায়ু, আপনি আকাশ, আপনি (মন বুদ্ধি অহঙ্কার ও চিন্তু লামক) সমুদায় অন্তঃকরণ, আপনি প্রকৃতি, আপনি প্রকৃতি হইতে ভিন্ন পুরুষ স্থরপ। ত ভূতাত্মন্! আপনকার একমাত্র মুর্ত্ত ও অমুর্ত্ত রূপ, আব্রক্ষত্তত্ব পর্যন্ত সমুদায় স্থান ও কাল বিভেদ করিতেছে ত ঈশ্বর! ক্তিনাধনের নিমিক্ত আপনকার নাভিক্ষল হইতে সমুৎপন্ন যে প্রথম মুর্ত্তি, তিনিই হিরণাগর্তা। আপনিই সেই হিরণাগর্ভকরপ। আমরা হিরণাগর্জরুপী আপননাকে নমক্ষার করি। ত আমরা ইন্দ্র সূর্যা রুদ্র বন্ধু অগ্নি মরুৎ সমুদায় দেবতাস্থরপ, আপনাকে নমক্ষার। ত দান্তভা-বিবজ্ঞিত, সেই বিভাস্বরূপ আপনাকে নমক্ষার। ত দান্তভা-বিবজ্ঞিত, সেই বিভাস্বরূপ আপনাকে নমক্ষার। ত দান্তভা-বিবজ্ঞিত, সেই বিভাস্বরূপ আপনাকে নমক্ষার। ত দান্তভা-বিবজ্ঞিত,

<sup>\*</sup> वश्वविद्याः शतायां किएकवर हां छ शांवास्तर्मे ।

শব্দাদিলোভি যথ তথৈ তুভ্যং যক্ষাত্মনে নমঃ ॥১৯॥
কৌর্য্যায়াময়ং খোরং যচ্চ রূপং তবাসিতম্।
নিশাচরাত্মনে তথৈ নমস্তে পুরুষোত্তম ! ॥ ২০॥
স্বর্গস্থার্ম-সদ্ধর্মফলোপকরণং তব।
ধর্মাধ্যঞ্চ তথা রূপং নমস্তব্যৈ জনার্দন ! ॥ ২১॥
হর্ষপ্রায়মসংসর্গি গতিমদামনাদিয়ু।
সিদ্ধাধ্যং তব যজ্ঞপং তথৈ সিদ্ধাত্মনে নমঃ॥ ২২॥
অতিতিক্ষাধনং ক্রুরমুপভোগময়ং হরে ॥।

দ্বিজিহ্বং তব যজপং তবৈ সপীত্মনে নমঃ † । ২৩ ।।
নাড়ী, সমধিক জ্ঞানের আধার নহে সুতরাং বাহাদের তেজ
স্তিমিতপ্রায়, যাহারা শব্দ রূপ রস প্রভৃতি বিষয় লোভে আক্রান্ত,
তান্তুল বক্ষরূপী আপনাকে নমস্কার ।' পুরুবোক্তম ! আপনকার
যে রূপ ক্রুরতা ও মায়ার অন্বিতীয় আধার, যে মুর্ত্তি যোর তমো–
ময়, আপনি সেই নিশাচরাত্মক হইতেছেন, আপনাকে নমস্কার ।' ক্রার্ক্তন ! স্বর্গন্থিত ধার্মিকদিগের বাগাদি উক্তম ধর্মের কলস্বরূপ
যে অন্তুট, তাহা আপনকারই রূপভেদ হইতেছে, অতএব সেই
অন্তুটকে নমস্কার ।' যাঁহারা অগ্নি জল প্রভৃতি গমনীয় স্থানে
গমন করেন, অণচ কিছুতেই সংস্টাহন না, যাঁহারা সর্বাদা প্রীতিময়, তাত্মল সিজ্ঞাণ আপনকারই রূপ হইতেছে, আপনি সিজ্
স্বরূপ, আপনাকে নমস্কার । ই হরে ! অক্ষমাই বাহাদের সর্বাস্থ্য,
যাহারা ক্রুর, যাহারা উপভোগে পরিতৃপ্ত হয় না, ঈত্বল নিকিছুগণ আপনকারই স্বরূপ হইতেছে, অতএব আপনি নাগাত্মক,
আপনাকে নমস্কার । ই আপনকার যে মুর্ভি জ্ঞানময়, প্রশোভ্যক,

<sup>\*</sup> উপুভোগদহং হরে ! ইতি পাঠান্তরম্। কু তক্ষৈ শানান্তনে দমঃ ইতি ব। পঠাতাম্।

অববৈধি চ যচ্ছান্তমদোষমপকলাব্য ।
খাষিরপাত্মনে তথ্যৈ বিষ্ণো রূপায় তে নমঃ । ২৪॥
ভক্ষয়ত্যথ কম্পাত্তে ভূতানি যদবারিতম ।
দ্বন্ধপং পুগুরীকাক্ষ তথ্যৈ কালাত্মনে নমঃ॥ ২৫॥
সংভক্ষ্য সর্বভূতানি দেবাদীন্যবিশেষতঃ।
নৃত্যত্যন্তে চ যক্রপং তথ্যৈ রুদ্রাত্মনে নমঃ॥ ২৬॥
প্রবৃত্ত্যা রক্ষ্যো যচ্চ কর্মণাং কারকাত্মকম্ †।
জনার্দ্দন ! নমস্তব্যৈ দ্বন্ধায় নরাত্মনে ‡॥ ২৭॥
অফাবিংশদ্বধাপেতং যক্রপং ভামসং তব।
উন্ধার্যগামি সর্বাত্মন্ ! ভব্যৈ পশ্বাত্মনে নমঃ॥ ২৮॥

দোষস্পূর্ণ-পরিশ্না ও পাপরছিত, সেই ঋষিরপ বিষণুমুর্ত্তিকে নমস্কার করি। বিশ্ব পুঞ্জীকাক্ষ ! আপনকার যে মূর্ত্তি, কণ্পাস্তে অবারিত রূপে সমুদায় ব্রক্ষাণ্ড গ্রাস করে, সেই কালরূপী আপনাকে নমস্কার করি। বিশ্ব আপনকার যে মুর্ত্তি, ক্রের মনুবা প্রভাতি সমুদায় জীবসমূহকে নিঃলেষ রূপে তক্ষণ করিয়া পরিশেষে স্থত্য করেন, আপনি সেই রুদ্রমূর্ত্তি, আপনাকে নমস্কার। বিশ্ব জনার্দ্ধন ! যাহারা রজোগুণে পরিচালিত হইয়া কর্মে প্রস্তুত্বয়, আপনি সেই মনুবাস্থরূপ, আপনাকে নমস্কার। বিশ্বতি প্রকার বধবিশিক্ত, যাহারা ত্যোময় ও উন্মার্গ্যামী,

<sup>ं</sup> अ বিক্রপা অমে সমঃ ইভি কেটিং পঠবি।

क कांत्रशास्त्रम् हेडारमा शहिता

<sup>🛨</sup> ভত্রপার নরাবানে ইতি কেটিং পঠাছ।

সভাভতত চ এই কলে যদি ন তুপাতি চ এইরপ পাঠ থাকে ভাহা হইলে এইরপ অর্থ হইবে যে, আপনকার যে মুর্ভি, দেব মন্ত্রা প্রভৃতি সমুদার কীইসমূহ নিঃশেষ-রূপে সংগার করিয়াও পরিতৃত্ত না হন, আপনকার সেই রুল্ল মুর্ভিকে নমন্ধার করি।২০

যজ্ঞান্দভূতং যজপং জগতঃ সিদ্ধিসাধনম্।
বৃক্ষাদিভেদৈর্যন্তেদি তথ্যৈ মুখ্যাত্মনে নমঃ॥ २৯॥
তির্যাঙ্গানুষদেবাদিব্যোমশকাদিকঞ্চ যৎ।
রূপং তবাদেঃ সর্বস্থি তথ্যে সর্বাত্মনে নমঃ॥ ৩০॥
প্রধানবৃদ্ধ্যাদিময়াদশেষাৎ
যদন্যদ্যাৎ পরমং পরাত্মন্।
রূপং তবাদ্যং ন যদন্যভূল্যং
তথ্যে নমঃ কারণকারণায়॥ ৩১॥
শুক্লাদি-দীর্ঘাদি-ঘনাদি-হীনম্
অগোচরে যচ্চ বিশেষণানাম।

আপনি সেই পশুমূর্ত্তি, আপনাকে নমন্তার। তথা পানকার যে মূর্ত্তি জগতের সিজিবিধায়ক-যজ্ঞাক্ষ-স্কলপ, যাহা বৃক্ষ লতা শুলা তৃণ প্রভৃতি ভেদে বিভিন্ন, আপনি সেই উদ্ভিদাত্মক, আপনাকে নমন্তার। তথ্যক্ মানুষ দেব প্রভৃতি এবং আকাশ শব্দ প্রভৃতি সমুদায়ই আপনকার মূর্ত্তি, স্থতরাং আপনি সর্বস্থান, আপনাকে নমন্তার। তথ্যক্ পরমাত্মন্ ! আপনকার যে মূর্ত্তি প্রকৃতি মহন্তম্ভ্র অহঙ্কারতন্ত্র প্রভৃতি প্রপদ্দাল্মক আদি, অন্য কোন মূর্ত্তিই যাহার সম্ভূপ নহে, সেই কারণ-কারণ পরম ব্রহ্ম) মূর্ত্তিকে নমন্তার করি। তাগবন্! আপনকার যে মূর্ত্তিক সমন্তার করি। তাগবন্! আপনকার যে মূর্ত্তি, শুক্র কৃষ্ণ প্রভৃতি ক্রপ রহিত, যে মুর্ত্তি হুস্বতা দীর্যতা প্রভৃতি পরিমাণ-বিহীন, যে মুর্ত্তি ঘনতা তর্লতা প্রভৃতি শুল-বিরহিত, যাহা সমুদায় বিশেষণের অগোচর, যাহা পবিত্র হুইতেও

অইটিবংশতিপ্রকার<sub>্</sub>বধ, ইন্সিয়বধ একাদশপ্রকার, তুটিবধ নয়প্রকার, সি**ছি**বধ আটপ্রকার। ২৮

শুদ্ধাতিশুদ্ধং পরমর্ষিদৃশ্যং
রূপায় তবৈ ভগবন্নতাঃ সা॥ ৩২॥
যন্ধঃ শরীরেষু বদন্যদেহেদশেষজন্তবজনব্যয়ং যৎ।
যক্ষাচ্চ নান্যদ্যতিরিক্তমন্তি
ব্রহ্মস্বরূপায় নতাঃ সা তবৈ ॥ ৩৩॥
সকলমিদমক্ষস্য যস্য রূপং
পরমপদাত্মবতঃ \* সনাতনস্য।
তমনিধনমশেষবীজভূতং
প্রভূমমলং প্রণতাঃ সাবাস্থদেবম্॥ ৩৪॥
পরাশর উবাচ।

স্তোত্রস্যাস্যাবসানে তু † দদৃশুঃ পরমেশ্বরষ্।

অতিপবিত্র, মহর্ষিরা (জ্ঞানচক্ষু দ্বারা) যে মুর্জ্তি দর্শন করিয়া থাকেন, সেই (পরব্রহ্ম) মূর্জিকে নমস্কার করি। <sup>৩২</sup> যিনি আমাদের শরীরে অবস্থিতি করিতেছেন, যিনি অন্যান্য সমুদায় শরীরে ও সমুদায় পদার্থে অবস্থান করেন, যিনি জন্মরহিত ও ক্ষয়রহিত, যাঁহা হইতে ভিন্ন অন্য কোন বস্তুই নাই, আপনি সেই ব্রহ্মস্ক্রমণ, আপনাকে নমস্কার। <sup>৩৩</sup> যিনি উৎপজ্ঞিরহিত, এই সমুদায় প্রপঞ্চ বাঁহার ক্রপ-ভেদমাত্র, পরম পদ ব্রহ্মই যাঁহার আস্থা, যিনি নিত্য অক্ষয় নির্মল প্রভু, যিনি সমুদায় ক্রগতের বীক্সস্ক্রপ, সেই বাস্থাদেবকে নমস্কার করি। <sup>৩৩</sup>

পরাশর কছিলেন। অনস্তর দেবগণ এইরূপ স্তব করিয়া শব্ধ-

<sup>🍍</sup> প্ৰস্প্রাম্বত: ইভি বা পঠ্যতান্।

<sup>🕈</sup> ছে:ত্রস্যান্যাবনামে তে ইতি পুস্ককান্তর্ন্য পাঠ:।

শশ্ব ক্রিন্ । ৩৫ ॥
তমুচুঃ সকলা দেবাঃ প্রণিপাতপুরঃসরম্ ।
প্রসীদ দেব দৈত্যেভাস্তাহীতি শরণার্থিনঃ \*॥ ৩৬ ॥
ত্রেলাক্যং যজ্ঞভাগাশ্চ দৈত্যেহু দিপুরোগনৈঃ ।
হৃতং নো ব্রহ্মণোহপ্যাজ্ঞামূলজ্ঞা প্রমেশ্বর ॥ ৩৭ ॥
যদ্যপ্যশেষভূতিস্য বয়ং তে চ তবাংশকাঃ ।
তথাপ্যবিদ্যাভেদেন ভিন্নং পশ্যামহে জগং ॥ ৩৮ ॥
স্বর্ণধর্মাভিরতা বেদমার্গান্মারিণঃ ।
ন শক্যাস্থেহরয়ো হস্তম্মাভিস্তপ্যাহিতাঃ ॥ ৩৯ ॥
তমুপান্নম্মোত্মন্ † অস্মাকং দাতুমহ্সি।

চক্র-গদা-পাণি গরুড়ারত পরমেশ্বর হরিকে দেখিতে পাইলেন। তথ্বর সমুদায় দেবতাই তাঁহাকে নমস্কার করিয়া কহিলেন, নাধ! প্রসন্ধ হউন, আমরা শরণাপন্ধ হইয়াছি, আমাদিগকে দৈতাগণ হুজার ছইতে রক্ষা করুন। তথ্য পরমেশ্বর! হুাদপ্রভৃতি দৈতাগণ ব্রহ্মার আদেশ অতিক্রম করিয়া আমাদের অধিকৃত ত্রিলোক ও ষজ্ঞভাগ হরণ করিয়াছে। তথ্য দিও আপনি অশেষ জীবস্বরূপ ও অমরা আপনকারই অংশমাত্র, তথাপি আমরা মায়াবলে জগতীস্থ সমুদায় বস্তু পরক্ষার পৃথক্ দেখিতেছি। তথ্য আমাদের শ্তুগণ (হুাদপ্রভৃতি) স্বর্বর্ধর্মে অভিরত, বেদমাগানুসারী ও তপঃসম্পন্ধ, স্বতরাং আমরা তাহাদিগকে বিনাশ করিতে সমর্থ হইতেছি না। তথ্য অপরিমেয়স্বরূপ ভগবন্! যাহাতে আমরা সেই সমু-

৫ গীদ নাথ ! ইতি বা পাঠ ম্।
 † ভমুপারমলেখং বম্ইতি বা পঠনীরষ্।

যেন তানস্থান্ হস্তং ভবেম ভগবন্! ক্ষমাঃ॥ ৪০॥ পরাশর উবাচ। ইত্যুক্তো ভগবাংস্তেভ্যো মায়ামোহং শরীরতঃ। তমুৎপাদ্য দদে বিষ্ণুঃ \* প্রাহ চেদং স্থরোত্তমান্॥৪১॥ শ্রীভগবাস্থবাচ।

মায়ামোহোইয়মথিলান্ দৈতাংস্তামোইয়য়তি।
ততো বধ্যা ভবিষান্তি বেদমার্গবিহিক্তাঃ॥ ৪২॥
ছিতৌ ছিতস্থানে বধ্যা যাবন্তঃ পরিপন্থিনঃ।
ত্রহ্মণো যেইধিকারস্যা দেবদৈত্যাদিকাঃ স্থরাঃ॥ ৪৩॥
তদ্যাচ্ছত ন ভীঃ কার্য্যা মায়ামোহোইয়য়য়তঃ।
গচ্ছত্বদ্যোপকারায় ভবিতা ভবতাং স্থরাঃ॥ ৪৪॥
দায় ভাষ্যকে বিনাশ করিতে সমর্থ হই, আপনি আমাদের পক্ষে
এরপ কোন উপায় করিয়া দিউন। ১°°

পরাশর কহিলেন। দেবগণ এই কথা বলিলে ভগবান্ বঞ্ছি স্বীয় শরীর হইতে মায়ামোহ উৎপাদন করিয়া তাঁহাদিগকে প্রদান করিলেন এবং (এই বাকা) কহিলেন। ১১

শীভগবান্ কহিলেন। এই মায়ামোহ, সমুদায় দৈত্যকে মোহিত করিবে পরে তাহারা বেদবহিন্ধৃত হইলে তোমরা অনারাদে তাহাদিগকে বধ করিতে পারিবে। ই দেবগণ! যাহাতে স্থিরকা হয়, তদ্বিয়ে ব্রন্ধা নিযুক্ত আছেন। যে সকল দৈত্য বা দেবতা প্রভৃতি ব্রন্ধার অধিকারের প্রতিকুলাচরণ করে, তাহারা সকলে আমারই বধ্য। ই দেবগণ! একাণে তোমরা গমন কর, ভয় করিও না; এই মায়ামোহ তোমাদের অথ্যে অথ্যে গমন করেক। ইহা হইতে ভোমাদের উপকার হইবে। ই

<sup>\*</sup> ममुल्लामा मरमी विक : हेलि वी लोग्डाम् ।

### পরাশর উবাচ।

ইত্যুক্ত্ব। প্রণিপতৈয়নং যযুদেঁব। যথাগতম্ । মায়ামোহোহপি তৈঃ সার্দ্ধং যযৌ যত্র মহাস্করাঃ ॥৪৫॥

ইতি ঐবিষ্ণুপুরাণে তৃতীয়ে ২ শে মামা-মোহোৎপত্তির্নাম সপতদশো ২ধ্যায়ঃ।

পরাশর কহিলেন। বিষ্কৃ এইরপ কহিলে দেবগণ তাঁহাকে প্রণাম করিয়া যথাস্থানে গমন করিলেন। মায়ামোহও তাঁহাদের সহিত গমন করিয়া যেণানে অস্কুরগণ অবস্থিতি করিতেছে, সেই স্থানে উপস্থিত হইল। 8°

> বিষ্ণুরাণ-তৃতীয়াংশ-সপ্তদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

## विकुश्रागम्।

তৃতীয়োহংশঃ।

অফাদশো>ধ্যায়: 1

## পরাশর উবাচ।

তপদ্যভিরতান্ দোহথ মায়ামোহো মহাসুরান্।
মৈত্রেয় দদৃশে গত্তা নর্মদাতীরসংশ্রান্॥ ১॥
ততো দিগস্বরো মুণ্ডো \* বর্হিপত্রধরো! দিজ।
মারামোহোহসুরান্ শ্লুফ্মিদং বচনমত্রবীৎ॥ ২॥
মারামোহ উবাচ।

ভো দৈত্যপত্য়ো জত যদর্থং তপ্যতে ভপঃ। ঐহিকং বাথ পারত্রাং তপসঃ ফলমিচ্ছুথ॥৩॥

পরাশর কহিলেন। মৈত্রেয় ! অনন্তর মায়ামোহ, দৈতাগণের
নিকট গমন করিয়া দেখিল যে, তাহারা নর্মাদাতীর আত্রয়পূর্রক
তপ্যা করিতেছে। বক্ষান্! পরে সেই মায়ামোহ দিগন্বর, মুপ্তিতনন্তক ও বহিপত্রধারী হইয়া অস্থ্রগণকে এইরূপ মনোহর বাক্যে
বলিতে আরম্ভ করিল। ১

মায়ামোহ কহিল, অহে দৈতাপতিগণ! তোমরা কিজনা তপদাা করিতেছ, বল। এই তপোনুষ্ঠানদ্বারা তোমরা ঐহিক কল কামনা কর ? বা পারলোকিক ফল প্রত্যাশাকর ?

<sup>\*</sup> ७८ को: मनबद्धीयुक्तः वृक्ति वा भवनीयुम् । \*

অস্থরা উচুঃ।

পারত্রাফললাভায় তপশ্চধ্যা মহামতে!। অস্মাভিরিয়মারকা কিং বা তেইত্র বিবক্ষিতমু॥ ৪॥

মায়ামোহ উবাচ।

কুরুধং মম বাক্যানি যদি মুক্তিমভীপ্সথ।
আর্থং ধর্মমেভঞ্চ মুক্তিদারমসংবৃতম্॥ ৫॥
ধর্মোবিমুক্তেরহোইয়ং নৈতদস্মাৎ পরঃ পরঃ।
আর্ত্রবাবস্থিতাঃ স্বর্গং বিমুক্তিং বা গমিষ্যথ।
আর্থং ধর্মমেভঞ্চ সর্কে যুয়ং মহাবলাঃ॥ ৬॥
পরাশর উবাচ।

এবং প্রকারের হৈ ভি.য়ু ক্তিদর্শনব দ্ধিতৈঃ। মায়ামোহেন দৈত্যান্তে বেদমার্গাদপাক্লতাঃ॥ १॥

অস্থ্রপণ কহিলেন, মহামতে! আমরা পারত্রিক-**ফল-লা**ভের প্রত্যাশায় তপস্যা করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছি। এ বিষয়ে যদি ভোমার কিছু বক্তব্য থাকে, বল। <sup>৪</sup>

নায়ামোহ কহিল, যদি তোমরা মুক্তি কামনা করিয়া থাক, তাহা হইলে আমার উপদেশানুসারে চল এবং আমি বে ধর্ম (বলিব) তাহা মান্য কর। এরপ করিলে তোমাদের পক্ষে মুক্তি-ছার উল্যাটিত হইবে। এই ধর্মই মুক্তির উপ্যুক্ত। ইহা হইতে শ্রেষ্ঠ অন্য কোন ধর্ম নাই। এই ধর্মে অবস্থান করিলে স্বর্ম মুক্তি, যাহা ইছে। কর, পাইতে পারিবে। তোমরা সকলেই মহাবল। তোমরা এই ধর্মই মান্য কর। "

পরাশর কহিলেন। এই রূপে মায়ামোহ বিবিধ-যুক্তি-প্রদর্শন-ছার। পরিবর্দ্ধিত বাক্যসমূহে (বিমোহিত করিয়া) দৈত্যগণকে ধর্মায়ৈতদধর্মায় সদেতন্ত্র সদিত্যপি।
বিমৃক্তয়ে ত্বিদং নৈতদ্বিমৃক্তিং সংপ্রযক্তি। ৮॥
পরমার্ধোইয়মত্যর্বং পরমার্থো নচাপ্যয়ম্।
কার্যমেতদকার্যঞ্চ নৈতদেবং ক্ষুটন্তিবৃদম্।
দিখাসসাময়ং ধর্মো ধর্মোইয়ং বছবাসসাম্॥ ৯॥
ইত্যনৈকান্তবাদঞ্চ মায়ামোহেন নৈকধা।
তেন দর্শয়তা দৈত্যাঃ স্বধর্মান্ত্যাজিতা দিজ!। ১০॥
অর্থেমং মহাধর্মং মায়ামোহেন তে যতঃ।
প্রোক্তান্তমাপ্রিতা ধর্মমার্হতান্তেন তেইতবন্!। ১১॥
ব্রয়ধর্মসমূৎসর্বং মায়ামোহেন তেইস্করাঃ।
কারিতান্তম্মা হ্যাসংস্থপান্য তৎপ্রবোধিতাঃ \* ॥১২॥

বেদমার্গ হইতে বিচ্যুত করিল। এইটা ধর্মা, এইটা অধর্মা, এইটা সহ, এইটা অসহ, এইটা মুজির কারণ, এরপ করিলে মুজিলাভ হয় না, দ এই কার্য্য অভ্যন্ত পরমার্থ, এই কার্য্য পরমার্থ নহে, এইটা সহকার্য্য, এইটা দুক্ষর্মা, এই বিষয় এরপ নহে, ইহা কাই এইরপই হইবে, ইহা দিগল্যরদিগের ধর্মা, ইহা বছবজ্ঞ মনুষোর ধর্মা, এইরপ অনেকপ্রকার বলিয়া অনৈকান্তিকত্ব আদর্শনিপ্রক মায়ামোহ, দৈভাগণকে অধর্মা পরিভ্যাগ করাইল। শার্যামোহ দৈভাদিগকে বলিয়াছিল যে, ভোমরা এই মহাধর্মা (অর্ছভ) মান্য কর। এই হেতু যাহারা এই ধর্মা আঞার করিয়াছিল, ভাহারা আহত নামে বিশ্বাভ ইয়াছে। শার্মামোহ, এই রূপে অস্কুরগাকে বেদধর্মা পরিভ্যাগ করাইল। অসুরগণও মায়ামোহমা হইয়া অন্যান্য যাজিদিগকে নিজ ধর্মা দীক্ষিত করিছে

<sup>\*</sup> ভথানে। চ প্রবেখক:: ইভি পাঠাক্ষম ।

তৈরপান্যে পরে তৈশ্চ তৈরপান্যে পরে চ তৈঃ \*।
অংশেরহোভিঃ দন্ত্যক্তা তৈতদৈ তৈয়ঃ প্রায়শস্ত্রী ।>৩।
পুনশ্চ রক্তাম্বরধৃঙ্গায়ামোহোইঞ্জিতেক্ষণঃ।
অন্যানাহাস্ত্রান্ গত্বা মৃদ্পেশধুরাক্ষরম্ । >৪। •

মায়ামোহ উবাচ।

স্বর্গার্থং যদি বাঞ্চা বে। নির্ব্বাণার্থমথাস্করাঃ।
তদলং পশুষাতাদি-দুউধদৈর্মনিবোধত ॥ ১৫॥
বিজ্ঞানময়মেবৈতদশেষমবগচ্ছথ †।

বুধাধ্বং মে রচঃ সম্যথু ধৈরেবমুদীরিতম্ ‡ ॥ ১৬ ॥
লাগিল । বি বাহার। মায়ামোহময় ধর্মে দীক্ষিত হইতে
লাগিল ) তাহারাও অন্য দৈতাদিগকে, অন্য দৈতোরাও অপর
ব্যক্তিদিগকে, অপর ব্যক্তির। আবার আর আর ব্যক্তিকে, আর
আর ব্যক্তিরাও অন্যান্য লোককে অপ্য দিনের মধ্যেই বৈদিক ধর্ম্ম
পরিত্যাগ করাইল । ব

অনন্তর মায়ামোহ রক্তান্তর পরিধানপূর্বক নয়নে অঞ্জন লেপন করিয়া অন্য অন্তর্গদণের নিকট গমন করিল এবং মুদু মধুর ও সংক্ষিপ্ত বাক্যে কহিল 1<sup>38</sup>

মারামোহ কহিল, অসুরগণ! বদি তোমরা নির্বাণ মুক্তি বা স্থা কামনা কর, তাহা হইলে পশুহিংসাপ্রভৃতি দুট ধর্মো কোন ফলোদয় হইবে না, জানিবে। ° এই সমুদায় জগং বিজ্ঞান-ময় বলিয়া অবগত হুও। আমার বাক্যে উত্তমরূপ প্রণিধান কর। এ বিষয়ে বুধগণ এইরূপ বলিয়াছেন যে, ° এই জগং জানাধার।

<sup>\*</sup> তৈরনো চ তথা চ তৈঃ ইতি কেটিং পঠাছি।

প অংশব্যব্যক্ত ইতি বা পঠনীর্ম্।

<sup>†</sup> বুরৈধরের মিহোদিভম্ ইতি বা পাঠাম।

এই স্থলে বেছেপ্ট প্রদর্শিত হইভেছে। >

জগদৈতদনাধারং ভ্রান্তিজ্ঞানার্থতৎপরম্ \*। রাগাদিদুইমত্যর্থং ভ্রাম্যতে ভবসঙ্কটে॥ ১৭॥ পরাশর উবাচ।

এবং বুধ্যত বুধ্যধ্বং বুধাতৈবমিতীরয়ন্।
মায়ামোহঃ স দৈতেয়ান্ ধর্মমত্যাজয়ন্নিজম্॥ ১৮॥
নানাপ্রকারবচনং স তেষাং যুক্তিযোজিতম্†।
তথা তথা চ তদ্ধর্মং ± ততাজুস্তে যথা যথা॥ ১৯॥
তেহপ্যন্যেষাং তথৈবোচুরনারন্যে তথোদিতাঃ।
মৈত্রেয় ! তত্যজুর্মাং বেদস্যৃত্যুদিতং পরম্॥ ২০॥
অন্যানপ্যন্যপাষ্ট প্রকারের্ভ ভিদ্ধি জ !।

ইহা ভবসঙ্কটে নিয়ত পরিভ্রমণ করিতেছে। ইহা ভ্রান্তিজ্ঞানময় ওরাগাদি দোষে সাতিশয় দূষিত। <sup>১১</sup>

পরাশর কহিলেন। মায়ামোহ, "এবং বুধাত, এবং বুধাধাম্, এবং বুধাত" এইরপ জ্ঞাত হও, এইরপ অবগত হও, এইরপ বুঝিয়া রাথ, কথা বলিয়া দান্বগণকে নিজ ধর্মা পরিত্যাগ করাইল। দায়ামোহ, দৈতাগণের নিকট এইরপে নানাপ্রকার মুক্তিযুক্ত বাক্য বলিতে লাগিল যে, তাহারা দ্ব ধর্মা পরিত্যাগ করিতে প্রবৃত্ত হইল। বাহারা স্বধর্মপরিত্যাগী হইল) তাহারা অন্যের নিকট কহিল। আন্যেও অপরের নিকট কহিতে আরম্ভ করিল। মৈত্যেয়! দৈত্যেরা এই রূপে বেদোক্ত ও স্মৃত্যুক্ত পরম ধর্মা হইতে বহিন্ধৃত হইল। বাহারা বাক্ষরণ! সাতিশয় মোহ-জনক মায়ামোহ, অন্যান্য বছবিধ পাষ্থ্রপ ধারণ করিয়া

<sup>•</sup> আ'ভিজ্ঞানাৰতংপরম্টতি পাঠাভরম্। ৩ মুক্তিবোজিতম্টতি বা পাঠঃ। ‡ তথা তথা বদন্ধখন্টতি পাঠ'ভরম্ণ

দৈতেয়ান্ মোহয়ামাস মায়ামোহোইতিমোহরং ॥২১॥
স্বল্পেনৈব হি কালেন মায়ামোহেন তেইসুরাঃ।
মোহিতান্ততাজুঃ সর্বাং ত্রয়মার্গান্তিতাং কথাম্॥২২॥
কেচিদ্বিন্দাং বেদানাং দেবানামপরে দ্বিজ!।
যজ্ঞকর্মকলাপস্য তথান্যে চ দিজন্মনাম্॥ ২৩॥
নৈতদু্ত্তিসহং বাক্যং হিংসা ধর্মায় নেয়তে।
হবীংব্যনলদ্যানি ফলায়েত্যর্ভকোদিতম্॥ ২৪॥
যজ্ঞেরনেকৈর্দেবত্বমবাপ্যেক্রেণ ভুজ্যতে।
শাম্যাদি যদি চেৎ কাষ্ঠং তদ্বরং পত্রভুক্ পশুঃ॥ ২৫॥
নিহতস্য পশোর্যজ্ঞে স্বর্গপ্রান্থির্যদীয়তে।

অন্যান্য দৈত্যগণকেও মোহিত করিল। ১০ এই রূপে সায়ামোহ-কর্তৃক মোহিত অসুরগণ, অপপ কালের মধ্যেই বেদবিষয়ক সমুদায় কথা পরিত্যাগ করিল। ১০ ছিজ্ঞ! তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ বেদের নিন্দা করিতে লাগিল। কেহ কেহ বা দেবগণের নিন্দা করিতে প্রস্তু হইল। কোন দৈত্য, যজ্ঞাদি কর্মকলাপের, কেহ বা ব্রাহ্মণের নিন্দা করিতে আরম্ভ করিল। ১০ (তাহারা এইরূপ কুত্রক উপস্থিত করিতে লাগিল যে) যে কার্য্যে কোন প্রাণীর হিংসা হয়, যাহাতে পরপীড়া হয়, ঈদুল কার্য্য ধর্মজনক, এই বাক্য কথনই যুক্তিসহ হইতে পারে না। যুত অনলে দক্ষ হইলে ফল প্রদান করে, ইহা বালকের বাক্য। ১০ অনক যজ্জ্বারা দেবতা হইয়া ইক্ষের সহিত্যিদি শ্রমী কার্গ প্রভৃতি কান্ঠ ভোজন করিতে হয়, তাহা হইলে তাহাদের অপেক্ষা পশুও শ্রেষ্ঠ কারণ পশুরা কোমল-পত্রাদি ভক্ষণ করিয়া থাকে। ১০ যজ্ঞ্বলে পশুরধ করিলে যদি সেই শশু মুর্গ লাভ করে, তাহা হইলে, যজ্ঞ্বান কি জন্য

স্বপিতা যজমানেন কিন্তু তথান্ন হন্যতে ॥ ২৬ ॥
তৃপ্তয়ে জায়তে পৃংসো ভুক্তমন্যেন চেৎ ততঃ ।
দদ্যাদ্ আদ্ধং অদ্ধান্ত্যং ন বহেয়ুঃ প্রবাসিনঃ ॥ ২৭ ॥
জনপ্রদ্ধের্যমত্যেতদবগম্য ততো বচঃ \* ।
উপেক্ষ্য শ্রেয়সে বাক্যং † রোচতাং যন্ত্যেরিতম্॥২৮॥
ন হ্যাপ্রবাদা নভসো নিপতত্তি মহাস্করাঃ ।
য়ুক্তিমন্তনং আহাং ময়ান্যৈশ্চ ভবদ্বিধঃ ॥ ২৯ ॥
মায়ামোহেন তে দৈত্যাঃ প্রকারের্বহুভিন্তথা ।
ব্যুপাপিতা যথা নৈষাং ত্রিয়াং কশ্চিদরোচয়ৎ ॥ ৩০ ॥

আপনার পিতাকে ব্লিদান না করেন । " আদ্ধালে এক ব্যক্তি ভোলন করিলে যদি অন্য (মৃত) ব্যক্তির ভৃত্তি হয়, তাহা হইলে প্রবাসগত ব্যক্তির নিকট কি জন্য (পুরাদিদন্ত অল্ল) উপস্থিত না হয়? " (ইহাছারা প্রতিপল্ল হইতেছে যে, যাগাদি-বিষয়ক সমুদায় বাক্য যুক্তিহান।) ইহা কেবল লোকের শ্রদ্ধার উপর নির্ভির করিতেছে। তোমরা ইহা বিবেচনা করিয়া দেখা। ইহাতে উপেক্ষা করাই শ্রেয়ঃ হইতেছে। আমি যাহা কহিলাম, তাহা ডোমরা হাদয়ক্সম কর। " অন্থরগণ! (যদি বল আন্ত বাক্যই প্রমাণ; এ কপাও অগ্রহ্যে, কারণ) আন্তর্গক্য কিছু আকাশ হইতে পতিত হয় না। তোমরা আমি ব৷ অন্য ব্যক্তি, সকলেরই উচিত যে, মুক্তিসক্ষত বাক্য গ্রহণ করে। " মায়ামোহ, এই রূপে অমুরগণকে নানাপ্রকারে ঈদৃশ বিকৃতিভাবাপন্ন করিয়া দিল যে, ভাহা-দের মধ্যে কোন ব্যক্তিই আর বেদে শ্রদ্ধ। করিল না। " "

অবলম্ভভোগত ব: ইভি পাঠাভবন্।

<sup>🕇</sup> উপেকা ভের্গী ইভি বা পঠ্যতাম্। 🔑

ইপ্রুমার্গযাতের তেরু দৈত্যেরু তেইমরাঃ।
উদ্যোগং পরমং করা যুদ্ধায় সমুপদ্ভিতাঃ॥ ৩১॥
ততো দেবাসুরং যুদ্ধং পুনরেবাভবদ্ধিল।।
হতাশ্চ তেইসুরা দেবৈঃ সমার্গপরিপদ্ধিনঃ॥ ৩২॥
স্বর্ধাকবচন্তেষামভূদ যঃ প্রথমং দ্বিল!।
তেন রক্ষাভবৎ পূর্বাং নেশুর্দাফে চ তত্র তে॥ ৩৩॥
ততো মৈত্রেয়! ভ্যার্গবির্ত্তিনো ষেইভবন্ জনাঃ।
নগ্রান্তে তৈর্যভন্তাং ত্রয়ীসংবরণং রুধা॥ ৩৪॥
ব্রন্ধারা গৃহস্থান্ত বানপ্রস্থান্তমাঃ।
পরিব্রাড় বা চতুর্ধাইত্র পঞ্চমো নোপপদ্যতে॥ ৩৫॥
যন্ত সন্তাল্য গার্হস্থাং বানপ্রস্থান জারতে।

এই রূপে দৈতাগণ কুপথগামী হইলে দেবগণ প্রমযত্বপূর্বক উদ্যোগ করিয়া যুদ্ধকরণার্থ তাহাদের নিকট উপস্থিত হইলেন। তা ব্রহ্মন্! অনন্তর পুনর্বার দেবাস্থরের মহাসংগ্রাম আরম্ভ হইল। দেবতারা (তথন অনায়ামে) সৎপথপরিপত্থী অন্তরগণকে বিনাশ করিলেন। তা পূর্বে অসুরগণের স্বধর্মরূপ যে কবচ ছিল, তদ্ধারাই ভাহারা রক্ষা পাইত। একণে তাহাদের সেই ধর্মারূপ কবচ পরিতাক্ত হওয়াতে ভাহারা বিন্ট ছইল। তা

মৈত্রেয়! এই সময় অবধি বে সকল মনুষ্য মায়ামোহ-প্রবর্ত্তিত ধর্মের অসুবর্তী হইয়াছে, তাছাদিগকে নগুবলা যায়, কারণ তাহারা অন্যায়পথবর্ত্তী হইয়া বেদরাপ আবরণ পরিত্যাগ করিয়াছে। ৩° ব্রহ্মচারী, গৃহত্ত, বানপ্রস্থা ও পরিব্রাট্র, এই চতুবিধ ব্যক্তির চতুবিধি আশ্রম আছে। পঞ্চম আশ্রম নাই।৩° নৈত্রেয়! যে ব্যক্তি গার্হত্ত আশ্রম পরিত্যাগের পর বানপ্রস্থ বা পরিব্রাড়্ বাপি মৈত্রেয়! স নথঃ পাপক্ষরঃ॥ ৩৬॥
নিত্যানাং কর্মণাং বিপ্র! তস্য হানিরহর্নিশ্ম।
অকুর্বন্ বিহিতং কর্ম শক্তঃ পততি তদ্দিনে॥ ৩৭॥
প্রায়শ্চিত্রেন মহতা শুদ্ধিং প্রাপ্রোত্যনাপদি।
পক্ষং নিত্যক্রিয়াহানেঃ কর্তা মৈত্রেয়! মানবঃ॥ ৩৮॥
সংবৎসরং ক্রিয়াহানির্যস্য পুংসোহভিজায়তে।
তস্যাবলোকনাৎ সূর্য্যো নিরীক্ষ্যঃ সাধৃভিঃ সদা॥ ৩৯॥
স্পৃত্তে স্থানং সচেলস্য শুদ্ধিহেতুর্মহামতে!।
পুংসো ভবতি তদ্যোক্তা ন শুদ্ধিঃ পাপকর্মণঃ॥ ৪০॥
দেবর্ষিপিতৃভূতানি যস্য নিঃশ্বস্য বেশ্মনি।
প্রয়ান্ত্যনর্চিতান্যত্র লোকে তক্মান্ন পাপক্ষৎ । ৪১॥

পরিব্রাট না হয়, দেই পাপাস্থাকে নগু বলা বায় । ত বজন্ !
হব ব্যক্তি শক্তি থাকিতে একদিনমাত্র বিধিবিছিত ক্রিয়ার অনুভান না করে, দে তদ্দিনেই পতিত হয় এবং ভাহার প্রকৃত
সমুদায় নিতা কর্মের হানি হয় । ত কৈত্রেয় ! বিপৎকাল ব্যতীত
যে মনুষ্য এক পক্ষ নিত্যক্রিয়া না করে, দেই ব্যক্তি উৎকট প্রায়ক্রিজে করিলে শুদ্ধ হইতে পারে । ত এক বৎসরকাল যে মনুবার
নিত্যক্রিয়ার অনুভান না হয়, তাহাকে দর্শন করিলে সূর্য্য
দর্শন করা সাধুদিগের নিয়ত কর্ত্ব্য । ত মহামতে ! ঈদৃশ
ব্যক্তিকে স্পর্শ করিলে বজের সহিত স্থান করিয়া শুদ্ধ হইতে
পারা বায় । কিন্তু দেই পাপাস্থার শুদ্ধ কিছুতেই হইতে পারে
না । ত এই পৃথিবীরধ্যে যাহার গৃহে দেবগণ পিত্রগণ ও ভূতগণ,
অর্চিত না হওয়াতে নিশ্বাস পরিত্যাগপুর্বক প্রতিগমন করেন,

<sup>\*</sup> म जन्मार भाग कृत्रतः हेकि अवाक्तमा भागः ।

দেবাদিনিশাসহতং শরীরং যস্য বেশ্ব চ।
ন তেন সঙ্করং কুর্যাৎ গৃহাসনপরিচ্ছদৈ: \*॥ ৪২॥
সন্তাষণামুপ্রশ্নাদি সহাস্যাধ্যেব কুর্বতঃ ।।
জারতে তুল্যতা পুংসন্তেনেব দিজ! বৎসরম্॥ ৪৩॥
অথ ভুঙ্ ক্তে গৃহে তস্য করোত্যাস্যাং তথাসনে ‡।
শেতে চাপ্যেকশ্যনে স সদ্যন্তৎসমো ভবেৎ ॥ ৪৪॥
দেবতাপিতৃভূতানি তথানভার্চ্য যোহতিথীন্!
ভুঙ্ক্তে স পাতকং ভুঙ্ক্তে নিজ্তিভ্রম্য কীদৃশী ॥৪৫॥
বাহ্মণাদ্যাশ্য যে বর্ণাঃ স্বধর্মাদন্যতো মুধ্ম্।
যান্তি তে নগ্নসংজ্ঞান্ত হীনকর্মস্বস্থিতাঃ॥ ৪৬॥

তাহা হইতে আর পাতকী নাই। " যাহার শরীর ও গৃহ, দেবগণ পিতৃগণ ও ভূতগণের দীর্ঘনিশাস্থারা দলিব হয়, তাহার সহিত এক গৃহ এক আসন বা এক পরিছেদ থারা সংসর্গ করিছে না। " বে ব্যক্তি উক্তপ্রকার পাতকীর সহিত একবংরকাল সম্ভাষণ, কুলল প্রশ্ন বা একত্র উপবেশন করে, সে তাহার সভূশ হয়। " বে ব্যক্তি সম্ভূশ পাতকীর হছে ভোজন করে, যে ব্যক্তি তাহার সহিত এক শ্ব্যার শ্রন করে, সে তংক্ষণাৎ তৎসভূশ পাতকী হয়। "

যে ব্যক্তি দেবগণের, পিতৃগণের, ভূতগণের ও অতিথিগণের অর্চনা না করিয়া স্বয়ং ভোজন করে, সে ব্যক্তির পাতক ভোজন করা হয়। ইয়েশ নমুষ্যের নিজ্ তি নাই। ° ে ব্রাহ্মণপ্রভৃতি বর্ণ-চতুট্য যদি স্বস্বধর্ম হইতে বিমুখ হয় অথবা যদি হীনর্ভি

<sup>\*</sup> गृशासमभिष्करेगः देखि किविश भवेषि ।

<sup>🛧</sup> महरागाः हेव कूनवलः इंडाटमा श्रवेशि।

<sup>🛨</sup> করোজাসাং তথাদনে ইতি কেতিৎ পঠন্ধি।

চতুর্ণাং যত্র বর্ণানাং মৈত্রেয়াত্যস্তসঙ্করঃ।
তত্রাস্যা সাধুরভীনামুপখাতায় জায়তে॥ ৪৭॥
অনভ্যর্চ্য শ্রমীন দেবান্ পিতৃন্ ভূতাতিথীংস্তথা ॥।
যো ভূঙ ক্তে তস্য সন্তাষাৎ পতন্তি নরকে নরাঃ ॥৪৮॥
তত্মাদেতান্ নরো নগ্নাংস্ত্রয়ীসন্ত্যাগদূষিতান্।
সর্বদা বর্জ্জয়েৎ প্রান্ত আলাপস্পর্লনাদিয়ু॥ ৪৯॥
শ্রদাবন্তিঃ কৃতং যত্নাৎ দেবান্ পিতৃপিতামহান্।
ন প্রীণয়তি তচ্ছাদ্ধং যদেভিরবলোকিত্য্॥ ৫০॥
শ্রমতে চ পুরা খ্যাতো রাজা শতধন্তু বি।
পত্নী চ শৈব্যা তস্যাভূদতিধর্মপরায়ণা॥ ৫১॥

অবলম্বন করে, তাহা হইলে, নগ্ন এই উপাধি প্রাপ্ত হয়। ""
নৈত্রেয় ! এক গৃহে যদি বর্গচতুষ্টয় অবস্থান করে, তাহা হইলে,
সেই একত্রাবস্থান হইতে সাধুচরিত ব্যক্তিদিগের সাধু চরিতের
উপহাত হইয়া প্রাকে। " যে ব্যক্তি, শ্ববিগণকে, দেবগণকে, পিতৃগণকে, ভূতগণকে ও অভিপিকে অর্চিত না করিয়া স্বয়ং ভোজন
করে, তাহার সহিত সংভাবণদারা লোকে নিরয়গামী হয়। ""
অতএব বিজ্ঞ ব্যক্তি, বেদপরিত্যাপদারা দূবিত এই সমস্ত নগ্ন
ব্যক্তির সহিত কথন আলাপাদি করিবেন না, তাহাদিগকে কশর্মও ,
করিবেন না। " শ্রদ্ধাবান্ লোকে যখন যদ্ধান্তক শ্রদ্ধার।
ডেখন যদি ইহারা অবলোকন করে, তাহা হইলে সেই শ্রাদ্ধার।
দেবগণ ও পিতৃপিতামহগণ প্রীত হন না। ""

শুনিয়াছি, পূর্বকালে শতধনুনামে ভূমগুলে বিখ্যাত এক রাজা ছিলেন। তাঁহার পত্নীর নাম শৈব্যা। শৈব্যা সাতিশয়

<sup>\*</sup> অনভাঞ্যনিদেবাংস্ত পিতু কুতাতিখীংস্কথা ইতি পাঠান্তরম্।

পতিত্রতা মহাভাগা সত্যশৌচদয়ায়িতা।
সর্বলক্ষণসম্পন্না বিনয়েন নয়েন চ \* ॥ ৫২ ॥
স তু রাজা তয়া সার্দ্ধং দেবদেবং জনার্দ্দনম্।
আরাধয়ামাস বিভুং পরমেণ সমাধিনা ॥ ৫৩ ॥
হোমৈর্জিপেস্তথা দানৈরূপবাসেন্দ ভক্তিতঃ ।
পূজাভিশ্চামুদিবসং ভন্মনা নান্যমানসং ॥ ৫৪ ॥
একদা তু সমং স্নাতো ভৌ তু ভার্যাপভী জলে।
ভাগীরথ্যাঃ সমৃত্তীর্ণে কার্ভিক্যাং সমুপোষিতো ॥৫৫॥
পাষভিনমপশ্যেতামায়ান্তং সংমুখং দিজ!।
চাপাচার্যাস্য তস্যাসে সথা রাজ্যে মহাত্মনঃ ॥ ৫৬ ॥
অভস্তদোল্যবাৎ তেন সহালাপম্পাকরোৎ।

ধর্মপরায়ণা " পতিব্রতা নহাভাগাঁবতী সত্যনিষ্ঠা শৌচপরায়ণা দয়াপরতন্ত্রা সর্কলক্ষণসম্পন্না ও বিনয়াম্বিতা ছিলেন।" সেই রাজা, পত্নীর সহিত পরস সমাধি অবলম্বনপূর্বক দেবদেব বিভু জনার্দ্দনের আরাধনা করিতে প্রব্রন্থ হইলেন। " তিনি প্রতিদিন তম্মনা হইয়া ভক্তি সহকারে হোমদ্বারা জপদ্বারা দানদ্বারা উপ-বাসদ্বারা ও পূজাদ্বারা (বিষ্ণুর আরাধনা করিতে লাগিলেন। তিনি কখন) অন্য বিষয়ে মনোনিবেশ করিতেন না। " একদা তাঁহারা স্ত্রী পুরুষে কার্ভিকী (পূর্বিদ্যাতে) উপবাস করিয়া একত্র হইয়া ভাগীরথীসলিলে স্থানপূর্বক উথিত হইয়া " সম্মুখবর্জী সমাগত কোন পাষগুকে অবলোকন করিলেন। দ্বিজ ! এই পাষ্ণ, মহাস্থা রাজার চাপাচার্য্যের স্থা ছিল। " রাজা সেই গৌরব হেজু সেই গাঁষণ্ডের সহিত আলাপ করিলেন, পরস্ক তাঁহার পত্নী

<sup>&</sup>lt;sup>8</sup>\* সম্পন্ন। বিনয়েন চ ইভি বা পঠাতান্।

নতু সা বাগ্যতা দেবী তস্য পত্নী যতন্ত । ৫৭॥
উপোষিতাশীতি রবিং তশ্মন্ দৃষ্টে দদর্শ চ॥ ৫৮॥
সমাগম্য যথান্যায়ং দক্ষতী তে যথাবিধি।
বিষ্ণাঃ পূঁজাদিকং সর্বাং ক্রত্বন্তে দিজোত্ম।॥৫৯॥
কালেন গছতা রাজা মমারাসে সপত্নজিং।
অস্বারুরেহে তং দেবী চিতাস্থং ভূপতিং পতিম্॥ ৬০॥
স তু তেনাপচারেণ খা জজ্ঞে বস্থাধিপঃ।
উপোষিতেন পাষ্ণুসম্ভাষো যঃ ক্রতোহত্বং॥ ৬১॥
সাপি জাতিশ্বরা জজ্ঞে কাশীরাজস্বতা শুভা।
সর্ববিজ্ঞানসংপূর্ণা সর্বলক্ষণপুজিতা॥ ৬২॥
তাং পিতা দাতুকামোহভূৎ বরায় বিনিবারিতঃ।

পতিব্ৰতা দেবী লৈব্যা বাগ্যতা হইয়া থাকিলেন। <sup>১০</sup> তিনি উপো-বিতা ছিলেন, বিবেচনা করিয়া (কথা কহিলেন না এবং ) সেই পাষশ্যের প্রতি দৃষ্টিপাত হওয়াতে সূর্য্য দর্শন করিলেন। <sup>১৮</sup>

বিধানামূলারে বিষ্ণুর পূজা প্রভৃতি সমুদায় কর্ম সম্পন্ন করি—লেন। " কৈছু কাল পরে শক্রেবিজ্ঞয়ী ভূপাল কলেবর পরিভাগা করিলেন। দেবীও সেই ভূপভির চিভায় অস্থার চৃ হুইলেন। " রাজা উপোবিত হুইরা যে পাবপ্রের সহিত সম্ভাবণ করিয়া ছিলেন, সেই ( নগু-সংসর্গ-জনিত পাপদারা কুকুর্যোনিতে জন্মপদ্মিহ করিলেন। " ভাঁহার পত্নীও কাশীরাজের দুহিভা রূপে জন্মিলেন। ইনি সর্ম-বিজ্ঞান—সম্পানা সর্ম-স্থলকণ-মুক্তা শোভনা ও জাভিনারা হুইলেন। " অনন্তর কাশীরাজ, কোন বরে কন্যা সম্প্রদান

<sup>+</sup> তদ্য পদ্ধী পতিব্ৰভ্য ইভি বা পঠাভাষ্।

তথৈব তন্ত্বা বিরতো বিবাহারস্ততো নৃপঃ॥ ৬৩॥
ততঃ সা দিব্যয়া দৃষ্ট্যা দৃষ্ট্য শ্বানং নিজং পভিম্।
বৈদিশাখ্যং পুরং গত্বা তদবস্থং দদর্শ তম্॥ ৬॥
তং দৃষ্ট্বে মহাভাগং শ্বানং ভূতং পতিং তথা।
দদে তবৈ বরাহারং সৎকারপ্রবর্ণং শুভম্ \*॥ ৬৫॥
ভূপ্পন্ন দত্তং তয়া সোহন্নমভিমিফমভীপ্রিতম্।
শঙ্কাতিললিতং কুর্মন্ বহু চাটু চকার বৈ॥ ৬৬॥
অতীব ব্রীজ্তা বালা কুর্মভা চাটু তেন সা।
প্রধানপ্রমাহেদংদ্যিতং তং কুযোনিজম্॥ ৬৭॥

করিতে অভিলাষী হইলে ঐ কন্যাই তাঁহাকে বিবাহের আয়োজন করিতে নিষেধ করিলেন। (কন্যার প্রার্থনাশ্রবণে রাজাও তাঁহার বিবাহানুষ্ঠানে) বিরত হইলেন। ১০ তালীরাজদুহিতা দিব্য-চক্ষুষারা দেখিলেন যে, তাঁহার পতি দারমের হইরা বিদিশা নগনরীতে অবস্থান করিতেছেন। তথন তিনি সেই স্থানে গমন করিয়া ভদবস্থ ভর্তাকে দেখিতে পাইলেন। ১০ তিনি মহাভাগ ভর্তাকে তাদৃশ কুরুর হইতে দেখিয়া সংকারপূর্বাক তাঁহাকে উল্লেম আহার প্রদান করিলেন। ১০ তাঁহার ভর্তাও তৎকর্ত্ক প্রদান্ত জ্বীর অলেন গলাতি-সুলভ ভঙ্গী দ্বারা অলেন চাটুকারিতা প্রকাশ করিতে লাগিলেন। ১০ সামী চাটুকারিতা প্রকাশ করাতে বালা কালীরাজদুহিতা অভীব লক্ষিতা হইলেন। তিনি কুষানিজাত ভর্তাকে প্রণাম করিয়া কহিতে লাগিলেন। ১০

গ্রহার প্রবং ওতম্ইতি বা পঠাভাম্।

### পত্নুবাচ।

স্মান্তাং তক্মহারাজ ! দাক্ষিণ্যললিতং ত্বরা ।

যেন শ্বযোনিমাপন্নো মম চাটুকরো ভবান্ ॥ ৬৮ ॥
পাষণ্ডিনং সমাভাষ্য তীর্থস্থানাদনন্তরম্ ।
প্রাপ্তোহিদ কুৎসিভাং যোনিংকিংন স্মর্নি তৎপ্রভো ॥৬৯
প্রাশ্বর উবাচ ।

তরৈবং সারিতে তত্র পূর্বজাতিরুতে তদা।
দধ্যে চিরমথাবাপ নির্বেদমতিদুর্ল ভ্রম্ ॥ १९॥
নির্বিগ্রচিতঃ স ততো নির্মায় নগরাৎ ততঃ।
মরুপ্রপতনং কুত্বা শার্মালীং যোনিমাগতঃ॥ ৭১॥

কাশীরালদুহিতা কহিলেন, মহারাজ! আপনি শুরুর সধা বলিয়া সন্তাবহেতু যে প্রীতি সম্ভাষণ করিয়াছিলেন, তাহা শারণ করুন। দেই কারণে আপনি শ্ববোনি প্রাপ্ত হইয়া আমার নিকট চাটুকারিতা প্রকাশ করিতেছেন। গ্লুপ্তি শুলোন তীর্থস্তানের পর পাষপ্তকে দেখিয়া যে সম্ভাষণ করিয়াছিলেন, তাহাতেই কুংসিত যোনিতে ক্মপরিগ্রহ করিয়াছেন, ইহা কি আপনকার শারণ হয়না?

পরাশর কহিলেন। কাশীরাজাদুহিতা এইরপ স্মারণ করিয়া দিলে কুকুর, পূর্ব জন্মের নিমিত্ত অনেক ক্ষণ চিন্তা করিতে লাগিল পরে সেই কুকুর, অভিদূর্লভ নির্কোদ প্রাপ্ত হইল। ত অনন্তর সেই কুকুর নির্কিপ্ত হইয়া সেই নগরী হইতে নিজ্ঞান্ত হইল। পরে পর্যতশৃঙ্গ হইতে সক্ষুভূনিতে পতিত হইয়া প্রাণত্যাগ করাতে শৃগাল যোনিতে জন্ম পরিগ্রহ করিল। ত পরে দিতীয়া

ভত্তাৰ আপেণ্ৰা ঈৰ্ধ) দি হেতু আপনার প্রভি যে আৰম ন্নন৷ হয় ভাহার নাম নিৰ্বেশ ৷১০

मिर्विश--मिर्द्वश्युक्त । १३

দাপি দিতীয়ে সংপ্রাপ্তে বর্ষে দিবোন চক্ষা।
জাত্বা শ্গালং তং দ্রফুং যযৌ কোলাংলং গিরিম্ ॥१২
তত্রাপি দৃষ্টা তং প্রাহ শার্গালীং যোনিমাগতম।
ভর্তারমতিচার্কিদী তনয়। পৃথিবীপতেঃ \*॥ ৭৩॥
পান্ধানাচ।

তাপি সার্দি রাজেন্দ্র শ্বেমানিস্থ্য যম্মা।
প্রাক্তং তে পূর্কচিরিতং পাষ্ডালাপদংশ্রম্ ॥ १৪॥
পুনস্তয়াক্তস্কুজাত্বা সত্যং সভাবতাং বরঃ।
কাননে স নিরাহারস্তত্যাজ স্বং কলেবর্ম্॥ ৭৫॥
ভূরস্ততো বৃকং জাতং গত্বা তং নির্জ্ঞানে বনে।

বৎদর উপস্থিত হইলে কাশীরাজ দুহিতা দিব্য চকুষারা দেখিলেন যে, ভাঁহার পতি শৃগাল যোনিতে উৎপন্ন হইয়াছেন। তখন তিনি তাহাকে দেখিবার নিমিক্ত কোলাহল পর্বতে গমন করিলেন। ব্যাকৃতি দেই রাজকুমারী সেখানে উপস্থিত হইয়া শৃগাল যোনি প্রাপ্ত তর্তাকে দেখিয়া কহিতে লাগিলেন। ১০

কাশীরাজ্বনয়া কহিলেন, নহারাজ! পূর্বজন্মে আপনি ষে কুক্র যোনিতে উৎপন্ন হইয়াছিলেন এবং সে সময় আমি যে আপনকার নিকট পাষভোৱ সহিত আলাপ বিষয়ক পূর্ব জন্ম-রস্তান্ত বর্ণন করিয়াছিলাম, তাহা মারণ হয় ? 1°

পরাশর কহিলেন। পরম সত্যনিষ্ঠ রাজা শতধন্, পত্নীর নিকট তাদৃশ বাক্য শ্রবণ পূর্ম্বক সমুদায় অবগত হইয়া অনাহারে সেই কানন মধ্যেই (শৃগাল-) দেহ পরিত্যাগ করিলেন। শুলনস্কর তিনি পুনর্মার বিক হইয়া জন্মিলেন। তথন অনিন্দিতা কাশীরাজ-

তন্যা প্ৰিবীক্ষিত: ইতি গাঠান্তরম্।

সারিয়ামাস ভর্তারং পূর্ববৃত্তমনিন্দিত। ॥ ৭৬ ॥ ন অং রকো মহাভাগ ! রাজা শতধন্ত্রকান্। খা ভূত্বা অং শৃগালোহভূর্কজ্বং সাম্প্রভং গতঃ ॥৭৭:॥ পরাশর উবাচ ।

আরিতেন যদ। ত্যক্ত তেনাত্মা গৃধুতাং গতঃ।
অবাপ সা পুনতৈনং বোধয়ামাস ভাবিনী \*॥ ৭৮॥
নরেন্দ্র: আর্য্যতামাত্মা হলেং তে গৃধুচেইয়া।
পাষ্ণালাপজাতোহয়ং দোষো যদগৃধুতাং গতঃ। ৭৯।
ততঃ কাকত্মাপন্নং সমনন্তরজন্মনি।
উবাচ তথী ভর্তারমুপলভ্যাত্মযোগতঃ।। ৮০।।

তনয়া নির্ক্তন আরণো প্রবেশ পূর্পক রকয়ণী ভর্তাকে পূর্পর্বতান্ত মারণ করিয়া দিলেন। (ও কছিলেন, ) মহাভাগ! আপনি রক্ষ নহেন। আপনি শতধ্যু নামক রাজা। আপনি পূর্পে কুকুর, পরে খাগাল হইয়া জ্মিয়াছিলেন, একণে রক হইয়া জ্মিয়াছেন। গ কালীরাজ দুহিতা এই কথা মারণ করিয়া দিলে রাজা, রকদেহ পরিত্যাগ করিলেন। তৎপরে তিনি গৃধু হইয়া জ্মিলেন। সন্তাব-বতী রাজকুমারী পুনর্বার গৃধের নিকট উপস্থিত হইয়া সমুদায় পূর্প র্জান্ত প্রবণ করাইলেন। গ (ও কহিলেন) রাজন্! আপনি হথের নায় চেটা করিলেন না, আপনি কে? তাহা মারণ করিয়া দেখুন। আপনি পাষগুলাপ জনিত পাপে ইছলা গৃধ হইয়া-ছেন। গণরে (রাজা গৃধ শরীর পরিত্যাগ করিয়া) কাকঘোনি প্রাপ্ত হইলেন। তথ্যী কালীরাজ-দুহিতা যোগবলে কাকরপ ভর্তাকে চিনিতে পারিয়া কহিলেন দ্বাতা! প্রে সমুদায়

अ'त्र्'भ!त को वनी है कि वो भवेगीसम ।"

অশেষা ভূভ্তঃ পূর্বং বশ্যা যব্মৈ বলিং দদুঃ।
স ত্বং কাকত্বনাপত্নো জাতোহদ্য বলিভুক্ প্রভো!॥৮১
পরাশর উবাচ।

এবমেব চ কাকত্বে স্মারিতঃ স পুরাতনন্।
তত্যাজ ভূপতিঃ প্রাণান্ ময়ূরত্বমবাপ চ ॥ ৮২ ॥
ময়ূরং তং ততঃ সা বৈ \* চকারাস্থাতং শুভা।
দতৈঃ প্রতিক্ষণং স্থান্তেগুপ্তং তজ্জাতিভোজনৈঃ † ॥৮৩
তত্ত্ব জনকো রাজা বাজিমেধং মহাক্রতুন্।
চকার তস্যাবভূপে স্মাপ্যামাস তং তদা ॥ ৮৪ ॥
সম্মো স্বয়ঞ্চ তত্বদী সারিয়ামাস চাপি তন্।

রাজা বলীভূত হইয়াযাঁহাকে ৰলি এমদান করিত, একণে সেই আপনি কাক হইয়া্বলিভুক্ হইলেন । ৮০

পরাশর কহিলেন। কাশীরাজতনয়া কাকরপী ভর্তাকে এইরপ পূর্বজন্ম-র্জান্ত স্মরণ করিয়া দিলে তিনি প্রাণত্যাগ করিয়া মন্ত্র-যোনিতে জন্মগ্রহণ করিলেন। ইং স্ক্রেরী বালা কাশীরাজনন্দিনী (ভর্ত্তাকে মন্ত্রহার জন্মিতে দেখিয়া) প্রতিক্রণে মন্ত্রজাতির ভক্ষ্য পরম রমণীয় বিবধ জ্বার প্রদানধারা ভাঁহার ভৃত্তি সম্পাদন পূর্বক আনুগত্য করিতে লাগিলেন। ১০

অনস্তর জনক নামক রাজা অস্থানেধ নামক সহাযজের অসুষ্ঠান করিয়া ভাহাতে সেই মন্তুরটীকে স্থান করাইলেন।৮° কাশীরাজ-নন্দিনীও (সেই মন্তুরের সহিত) স্থান করিয়া, রাজা কিরূপে কুজুর

মরুরত্ব ভত: ব। টব ইতি পাঠ অরম্। ।
বি বালা ভক্কাতিতে আইন: ইতি ব। পঠ ভাষ্।

व्शिन्टस नुकांत्र खेलहात बुसात। ४३

যথানো শশ্বালাদ্যা যোনী র্জ্ঞাছ পার্থিরঃ॥৮৫॥
স্তজন্মক্রমঃ দোহথ তত্যাজ স্বং কলেবর্ন্।
জজ্জে চ জনকসৈরে পুরোহসৌ সুমহাত্মনঃ॥৮৬॥
ততঃ দা পিতরং তন্ধী বিবাহার্থনচোদয়৫।
দ চাপি কারয়ামাদ পিতা ভক্তাঃ স্বয়ংবর্ম॥৮৭॥
স্বয়ংবরে ক্রতে দা তং দংপ্রাপ্তং পতিমাত্মনঃ।
বরয়ামাদ ভূয়োহপি ভর্ভাবেন ভাবিনী॥৮৮॥
বুভুজে চ তয়া দার্দ্ধং দ ভোগান নৃপনন্দনঃ।
পিতর্মুপরতে রাজাং বিদেহেয়ু চকার বৈ॥৮৯॥
ইয়াজ যজ্জান্ স্বহুন্ দদৌ দানানি চার্থিনাম্।
পুত্রামুৎপাদয়ামাদ য়ুয়ুধে চ সহারিভিঃ॥৯০॥

শুগাল প্রভৃতি ইই এ জিমায়াছিলেন, তাহা সারণ করিয়াদিলেন। ৮° সমূরতাপ্রাপ্ত রাজ্ঞাও যথাক্রমে পূর্ব্ব পূর্ব্ব জন্ম র্ভুন্ত আবণ্ করিয়া কলেবর পরিত্যাগ করিলেন। পরে তিনি সেই মহাত্মা জনক রাজারই পুত্ররূপে উৎপন্ন হইলেন। ৮°

আনস্তর কুশালী কাশারাজদূহিত। পিতার নিকট বিবাহ করিবার অভিলাষ প্রকাশ করিলেন । কাশীরাজন্ত কন্যার নিমিস্তার্থবর সভাব আয়োজনে প্রেক্ত ইইলেন। দি যথন স্থাংবর সভাব ইলেন ডি যথন স্থাংবর সভাব ইলেন ডি যায় ভর্তাকে উপন্থিত দেখিয়া পুনর্বার ভর্তাবে বরণ করিলেন। দি জনক রাজার পুত্রত কাশানাজনতন্যার সহিত বিবিধ ভোগ্য বস্তু ভোগ করিছে লাগিলেন। পরে জনক রাজাব মৃত্যু ইইলে তিনি বিদেহ দেশে রাজ্য প্রাপ্ত ইইলেন। দি তিনি বিবিধ যজের অনুষ্ঠান করিয়া যাচকপ্রকে বহুস্থা পন দান করিছে লাগিলেন। তিনি শক্রেগণের লাহিত সংখাম ও ব

রাজাং ভুক্তৃ। যথান্যায়ং \* পালয়িত্বা বস্থারাম্।
তত্যাজ স প্রিয়ান্প্রাণান্ † সংগ্রামে ধর্মতো নৃপঃ ॥৯১॥
তত্শিত তাছং তং ভূয়ো ভর্তারং সা শুভেক্ষণা।
অহারুরোহ্ বিধিবদ্ যথাপূর্বেং মুদা সতী ॥ ৯২॥
ততোহবাপ তয়া সার্দ্ধং রাজপুত্রা স পার্থিরঃ।
ঐন্তানতীত্য বৈ লোকান্লোকান্কাম্দুহোহক্ষয়ান্॥৯৬॥
স্বর্গাক্ষয়ত্বন্ধ দান্পতামতিদুল্ল ভন্।
প্রাপ্তার্মত্বং পাপ্য সংশুদ্ধিং তাং দিজোত্ম ! ‡ ॥৯৪॥
এর পাষগুসম্ভাব-দোষঃ প্রোক্তো ময়া দ্বিল !।
তথাশ্বমেধাবভূথসান্মাহাত্মানের চ॥৯৫॥

(কাশীরাজ-দুহিতাতে) পুত্র উৎপাদন করিলেন। ° তিনি ন্যায়ানুসারে রাজ্য শাসন ও পৃথিনী পালন করিয়া অলপকাল মধ্যেই ধর্মযুদ্ধে প্রিয় জীবন পরিত্যাগ করিলেন। ° স্থলোচনা সতী রাজকন্যা, প্রীত মনে পূর্ফের ন্যায় পুনর্কার যথাবিধানে মৃত পতির
চিতায় আরোহণ করিলেন। ° অনন্তর রাজা সেই রাজকন্যার
সহিত, ইজলোক অতিক্রম পূর্ফক বিশিধ কামপ্রদ অক্ষয় লোক
প্রাপ্ত হইলেন। ° দিকোরেম! তিনি (অশ্বমেধ যজ্ঞে স্নান পূর্ফক)
পরিশুদ্ধ হইয়া তুলনারহিত অক্ষয় স্বর্গ, অতি দুর্লভ দান্দাত্যসূপ
ও পূর্মাজ্জিত সমুদায় পুণ্যের ফল প্রাপ্ত হন। ° \*

ব্রহ্মন্! এই আমি তোমার নিকট পাষণ্ডের সহিত সম্ভাষণের দোষ ও অস্থান্য যজে স্লানের মাহাত্ম্য বর্ণন করিলাম ৷ \* অভএব

<sup>\*</sup> রাজ্যে কুলা যথান্যার্ম ইতি পঠি:ভ্রেম্।

<sup>†</sup> ভত্যাঞ্চ প্রিয়ান্ প্রাণান্ ইতি কেটিং পঠতি।

<sup>🕹</sup> সংসিদ্ধিং তাং বিজ্ঞোত্ম! ইতি বা পাঠঃ।

তন্মাৎ পাষতিভিঃ পাপৈরালাপস্পর্শনে তাজেং।
বিশেষতঃ ক্রিয়াকালে যজ্ঞাদে চাপি দীক্ষিতঃ ॥৯৬॥
ক্রিয়াহানিগৃহে যদ্য মাদমেকং প্রজায়তে।
তদ্যাবলোকনাৎ দূর্যাং পশ্যেত মতিমান নরঃ ॥ ৯৭॥
কিং পুনর্বৈস্ত সংত্যক্রা ক্রয়ী সর্ব্বাত্মনা দিজ।।
পরায়তোজিভিঃ পাপের্বেদ্বাদ্বিরোধিভিঃ ॥ ৯৮॥
পাষতিনো বিকর্মস্থান্ বৈড়ালক্রতিকান্ শঠান্।
হৈতুকান্-বকর্তীংশ্চ বাঙ্যাব্রেণাপি নার্চ্চরেং॥ ৯৯॥

পাৰপ্ত পাপাত্মাদিগের সহিত আলাপ বা তাহাদিগকে ক্লাৰ্শ করিবে না, বিশেষতঃ যে সময় কোন নিত্য নৈমিন্তিক ক্রিয়ার অমুষ্ঠান করিবে বা যজে দীক্ষিত থাকিবে, (তৎকালে তাহাদের সংস্থা পরিত্যাগ করা অতাব কর্ত্তবা । ত যাহার গৃহে এক মাস কাল নিত্য নৈমিত্তিক ক্রিয়ার অমুষ্ঠান না হয়, বুদ্ধিমান্ ব্যক্তি তাহাকে দর্শন করিলেও সুর্য্য দর্শন করিবেন। গ বিশেষতঃ পরামভোজী বেদনিরোধী যে সকল পাপাত্মা, সর্ব্বভোজার বেদ পবিত্যাগ করিয়াহে, (তাহাদিগকে দর্শন করিলে ভৎক্ষণাৎ সূর্য্য দর্শন করিয়া শুদ্ধ হওয়া অতীব কর্ত্তব্য ।) পবশুন বিকর্মন্থ বিজ্ঞাল-ব্রতী শঠ হৈতুক ও বকর্তি, এই সকল মনুষ্যকে বাকালার বিজ্ঞান বিত্তা শ্রেষ্ট সকল মনুষ্যকে বাকালার ও আর্চনা

ৰে বাজি অধর্ম চইতে জই, ভাহার শাস পাষপ্ত। বে ব্যক্তি নিষিদ্ধ কর্ম করে, ভাহার নাম বিক্রিস্থ । যে বাজি ধান্মিকের চিন্ন ধারণ করিরা গোপনে পালাগ্রণান করে, ভাহার নাম বিক্রান্তাতী। যে বাজি সন্মুখে প্রিয়নাকা বলে. পারোক্ষে অনিষ্টাচরণে প্রস্তুত হর এবং ধর্মের অসুহরাধ রাথে মা, ভাষাকে শঠ বলা যায়।যে বাজি হেতু প্রদর্শন পুর্বাক সংকর্মে সন্মেন্ত করে, ভাষাক্তে ইত্তুক বলা যায়।যে বাজির নাচদুটি ও স্থাবিধা পাইলে যে বাজি পারের অনিষ্ট করে,যে ব্যক্তি নিয়ত আর্গি সংবাদ ও পাই এবং বে ব্যক্তি কপ্টত ভাষাক্রম পুর্বাক

দুরাদপান্তঃ সম্পর্কঃ • সহাস্যাপি চ পাপিভিঃ।
পাবণ্ডিভিদুরাচারৈস্তব্যাৎ তান্ পত্তিত্তি । ১০০ ॥

এতে নগ্নান্তবাধ্যাতা দৃষ্ট্যা শ্রাদ্ধোপখাতকাঃ।

যেবাং সন্তাবণাৎ পুংসাং দিনপুণাং প্রণশ্যতি॥ ১০১ ॥

এতে পাষ্ডিনঃ পাপা ন হ্যেতানালপেদ্ বুধঃ।
পুণাং নশ্যতি সন্তাবাদেতেবাং তদ্দিনোদ্ভবম্॥ ১০২॥

পুংসাংজ্ঞটাধরণমোণ্ডাবতাং † ইথৈব

মোখাশিনাম্থিলশোচনিরাক্তানাম্।

করিবে না। " যথন দুরাচার পাষাগুদিগকে দের্খন বা সপর্ল করিলে পাপসপর্ল হয়, তথন ) সেই সমন্ত পাপীর সহিত একতা উপবেশন বা অন্য কোন সম্পর্ক রাখা স্থান্ত প্রাহত হইতেছে, অভএব ঈদৃশ মনুষাকে সর্বাভোগে পরিত্যাগ করিবে। ""

নগু-কাহাকে বলা যায়, তাহা এই তোমার নিকট বর্ণন করিলান। ইহারা আজ দর্শন করিলে আজ পণ্ড হয়। ইহাদের সহিত সম্ভায়ণ করিলে এক দিনের পুণ্য ক্ষয় হইটা থাকে। ১°° এই পাপাআদিগকেই পাষ্ণ বলা যায়। পণ্ডিত বাজি, ইহাদের সহিত আলাপও করিবেন না। ইহাদের সহিত কথা কহিলে সেই দিনের উপার্ক্তিত পুণ্য ক্ষয় হয়। ১°° বাহারা রুণা ভোজন করে অর্থাৎ যাহারা দেব পুরা অতিথিসেশ প্রভৃতি নিত্য কর্ম্মে বিমুধ হইয়া স্বয়ং আহারে প্রস্কু হয়, যাহারা বাহ্য পোচ ও আন্তরিক

দুরালাপস্ত সংসর্গ ইতি পাঠাত্তরম্।
 কটাধরণ মেতিবিভাশ্ইতি বা পাঠনীয়ম্।

গাড়ের মিকট আপনাকে বিনীজের নগার প্রকাশ করে, উচ্প পাপাত্মাকে বক-ভি বলা যার। ১০

তোরপ্রদান-পিতৃপিওবহিষ্কৃতানাং সম্ভাষণাদপি নরা নরকং প্রয়ান্তি॥১০৩

ইতি এবিষ্ণুপুরাণে তৃতীরেই°শে। অফাদশোইধ্যায়ঃ।

া সমাপ্তশ্চায়ৎ তৃতীয়াংশঃ।

শৌচ হইতে পরাঙাুখ, যাহারা তর্পণ বা পিতৃপ্রাদ্ধ না করে, যাহারা রখা জটাধারণ বা রণা মন্তকম্পুন করিয়া থাকে, ঈছুশ মনুষ্যের সহিত সম্ভাষণ করিলেও নিরয়গামী হইতে হয়। ' \*\*

বিষ্ণুপুরাণ-তৃতীয়াংশ অফাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

তৃতীয় অংশ সমাপ্ত

# বিষ্ণুপুরাণ-টীকা।

### তৃতীয়াংশঃ।

#### প্রথমোহধ্যায়ঃ।

অংশহয়েন স্ট্যাদিদ্বিসপ্তভুবনোক্তিভিঃ। অধ্যারোপ্য নিষিত্বং তদ্রাজদিজসদুক্তিভিঃ॥ ভৃতীয়েহংশে মনুব্যাসধর্মাদ্যাঃ স্থিতি-হেতবঃ। বর্ণান্ড্যেইত নিষেধায় কৌরবাপৃতনা যথা॥ ভত্রাপি প্রথমেহধায়ে সপ্ত মন্বন্তরাণি তু। ভবন্ত্তানি কথিতানাবভারা হরেরপি ॥ রন্তকীর্ত্তনপূর্বকং মন্বন্তরাণাং স্বরূপং পৃচ্ছতি, কথিত ইতি চতুর্জি: ॥ ১॥ ইহ বারাহকল্পে। যথাক্রমমিতানেন ক্রম-প্রাপ্তং। বর্ত্তমানমপি মন্বন্তরং জ্ঞেয়ম্ ॥২॥ কম্পেদ্য আদৌ স্বায়ন্তুব-मञ्चलत् कथि उर व्यथमारम दनवा यामाच्या स्वरता मतीव्यानगः। চকারাদিক্রো যজ্ঞ, মনুপুরো প্রিয়ব্রতোদ্ধানপাদৌ কথিতো ॥ ৮॥ দেবৰীন্ দেবান্ ঋষীংশচ তৎস্থতান্ মনুপুত্ৰান্ ॥ ৯॥ পারাবভা-স্তবিতাশ্চ দেবগণে। বিপশ্চিৎসংক্তো দেবেল্রঃ ॥১০॥ উদ্ভমম উদ্ভম-मचिक्त मखलुतम् । উत्तम এবৌकुमिঃ ॥ ১২ ॥ चोन्नणकाः चोन्नानार দাদশানাম্ এবৈকো গণঃ ইত্যেবমেতে পঞ্ গণাঃ শৃতাঃ॥১৪॥ সপ্তবিংশতিকাঃ সপ্তবিংশতীনাং গণাঃ ॥১৫ ॥ ১৬॥ শত-যজ্ঞোপলকাঃ শতক্তৃঃ। তত্ত্র তামদে মন্বন্তরে যে সপ্তর্যঃ তেষাৎ নামানি মে শৃণু ইতাম্বয়ঃ॥ ১৭ ॥ জ্যোতিদ্ধানেতাম্বর্থকং নাম ॥১৯॥ বৈবতো নাম নামত ইতি নামপ্রসিদ্ধৌ নামতঃ সংজ্ঞবৈৰ নতু রেবতপুত্রঃ ॥২০॥ প্রত্যেকং চতুর্দশভূতা এতে গণাঃ ॥ ২২॥ ২৭ ॥ वस्त्रान् लोकविकाठ देजि विलायनवस्त्रम् । शृषश्रीकत वस्त्रान् বৈষ্যবান্ বশিষ্টশাপে জ্ঞাতেহপি ক্ষোভাভাবাৎ। লোকবিজ্ঞতঃ
সর্বসঙ্গপরিত্যাগেন মুক্তিপ্রাপ্তেঃ। তথা সতি নব পুত্রা মহাবলং
ইতি নবস্থ্যউপপন্নং ভবতি ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ এবং তহি মনুপুত্রদেবেজ্রবিভিঃ পঞ্চত্রের জগতঃ পালনে সিদ্ধে কৃতং বিফোঃ
পালকত্বেন ? ইত্যাশস্ক্যা, সর্দ্বেস্থাপি মন্বস্তরেমু পালনে প্রস্তুর্যা
বিষ্ণোর্থিষ্ঠাতৃত্বং দর্শ্যতি, বিকুশক্তিরিত্যাদিনা যাবৎ অধ্যায়সমাপ্তি। দেবত্বেন যজ্ঞাদিকপদেবতাভাবেন বিষ্ণোঃ স্বরূপভূত্য
শক্তিঃ তদ্য বিষ্ণোঃ অংশেন স্বায়্ত্রুব্দন্ত্তরে আকৃত্যাং মাত্রি
যজ্ঞনংজ্ঞঃ উৎপন্নঃ জজ্ঞে বভূবেত্যর্থঃ। যদ্বা প্রথমে অন্তরে
অবসরে ব্রহ্মণো মানসঃ যঃ উৎপন্নোক্রচিঃ তন্মাৎ পিতুঃ যজে
ইতি ॥ ৬॥ উক্তমেব অর্থং বিষ্ণুপদ্নিক্রক্ত্যা দর্শয়ন্ মন্বাদির চ
তদাবেশমাহ যন্মাদিতি দ্বাভ্যাম্। মহান্থানঃ শক্ত্যা স্বরূপভূত্যঃ
প্রবেশনাহ প্রবেশনার্থাং ॥ ৪৬ ॥

ইতি জ্ঞীবিষ্ণুপুরাণদীকায়াং স্বপ্রকাশাখ্যায়াং তৃতীয়ে-২ংশে প্রথমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

## षिठी दशा ३ था। यः ।

দিতীয়ে সপ্ত মন্থাদীন্ বক্ষারাদৌ রবেঃ স্কুতঃ। থণা ।
সাবর্ণিরতবং ইতিহাসং তমব্রবীং ॥ ১॥ মনুঃ আদ্ধাদেবঃ॥ ২॥
ছায়াং বিশ্বতুল্যাম্ স্বস্থানিন্যাং স্থিয়ং স্থাতেজঃস্থাধুং
নির্মায় ভর্তুঃ শুক্ষারণে যুযোজ, স্বয়ঞ্চ তপদে যথাবিত্যর্থঃ॥ ৬॥
অত্র মনুং সাবর্ণিম্। তপতীং সন্থরণস্য রাজ্ঞোভার্যাম্॥ ৪॥ ছায়্যব
সংজ্ঞারপেণ স্থিত। ছায়াসংজ্ঞা। সা কদাচিং স্থাপত্যত্রমন্মেইন
বতী আস্থানি পাদ্পহারোদ্যভায় যমায় পাদ্তে পত্রিতি শাপং

. 4

मामी। जमाजिनिम्याज्यालका त्नाग्रामी मराजा कि खानाग्रर সংজ্ঞেতি যমসূর্যায়োরু দ্বিরভূদিতার্থঃ ॥৫॥ ততশ্চাতিনির্বন্ধং পৃষ্টয়া তয়া নাহং দংজ্ঞা কিন্তু ত্রস্যাশ্ছায়েতি আখ্যাতে বিবস্থান্ সূর্য্যঃ সমাধিনোন্তরকুরুত্বরণ্ডেইখীং বড়বারপাং তপসি স্থিতাং সংজ্ঞাৎ দদৃশে দদর্শ। ততঃ সোহপি বিবস্বানশ্বরপধ্রস্তস্যামশ্বিনৌ দেবৌ রেবতঞ্জেতি ত্রয়মজীজনৎ। রেতসোহস্ত ইতি রেবতনামনিক্র-। কিঃ॥ ৭॥ অমিং চক্রাকারং তক্ষয**ন্তম্। তেজসো বিশাতনং** ক্তবান্। অইমং ভাগং ন ব্যশাতয়ত মতোহব্যয়মু ॥ ৯ ॥ ধনদস্য শিবিকামন্ত্রমু ॥ ১১ ॥ পূর্বজন্য শ্রাদ্ধেবন্য স্বর্ণঃ মনুরিতি স্মান-বর্ণহাৎ সূর্যাপুত্রস্বাৎ তুলারূপস্বাদ্বা ॥ ১৩ ॥ বিংশকঃ বিংশতি-সঙ্খাকঃ ॥ ১৬ ॥ অদ্ভূ তসংজ্ঞঃ ইন্দ্রঃ ॥২১ ॥ স্বক্ষেত্রাদয়ঃ ব্রহ্মসাবর্ণি-পুত্রাঃ ॥ ২৭ ॥ উক্তানাং মম্বাদীনাং কৃত্যভেদানাহ, চত্যুগান্ত इति। कलो त्रमानार निक्षात खेल्ह्राम काट्य मिनिकी महर्राया जुन-মেত্য কৃত্যুগাদৌ তানেৰ সংগ্ৰৱত্ত্ত্মন্তি ॥ ৪৪ ॥ বেদ প্ৰৱৰ্ত্তনমুক্তা শা, তিপ্রবর্ত্তনশাহ, কৃত ইতি। শা,তেঃ ধর্মাশাস্ত্রদা মনুসংজ্ঞান্য **उद्घषि अवर्खि जानार सा जीनाम्र भनकगरम ज्या । उद्यास छरत रा** দেবাঃ কীর্ত্তি তাত্তে তল্পামানঃ তন্তকান্বস্তরে যজভুজো ভবস্তি। যাবৎ মল্বরং মল্বর্সমাপ্তিপর্যান্তম ॥৪৫॥ অন্যেহপি মলাদয়ন্তনাল্ত-রাধিকারিণ এব ইত্যাহ, মনুরিতি॥ ৪৭॥ তাবৎ প্রমাণা চ নিশেতি তদা সূর্য্যাদিপরিক্ষান্দরপেকালোপাধ্যভাবেছপি ভগবভো যোগ-। নিজারপমায়োপাধিপরিচ্ছির্ম্য কাল্স্য তাবত্ত্বং জ্ঞেয়ম্। ব্রন্ধেতি দিবা ব্রহ্মরূপধরো যঃ স এব ভগবানু রাত্রৌ শ্রীনারায়ণরূপেণ শেষাহে অনন্তনামি দর্পে শেতে ইত্যর্থঃ ॥৪৯॥ এবমেব দর্ব্বকপামস্থ-স্তরাদিস্থিতিং সপ্রপঞ্চমমাহ, ততঃ প্রবুদ্ধ ইত্যাদিনা যাবদধ্যায়-সমাপ্তি ॥ ৫১ ॥ স্থিতয়ে যো ব্যাপারঃ স এব লক্ষণম উপাধির্যস্য ্সঃ॥ ৫৩ ॥ উপসংহর্তি, এবমিতি দ্বাভাাম্॥ ৫৮ ॥ অত বা অন্যত্র বা কল্পাদে তিমাং ব্যতিরেকি যৎ ভূতাদি, তন্নান্তি, কিন্তু ভেদ-

কম্পনাশূন্যে। ভগবানেবান্তীত্যেষ এব সদ্ভাবঃ প্রমার্থঃ ক্থিত ইতি॥৫৯॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণটীকায়াং স্বপ্রকাশাখ্যায়াং তৃতীয়েহংশে দিতীয়োহধ্যায়ঃ।

## जृञीदशाश्यागः ।

স্থিতিহেতৃ প্রসঙ্গেন মুনেঃ প্রশানুসারতঃ। বেদব্যাসস্থৃতীয়েইত্র সপ্রপঞ্চারুবর্ণাতে ॥ বেদব্যান্তিং প্রস্টাুং সর্বাহত বাৎপর্যামনুবদ্ভি, জ্ঞাতমিতি। যথা সর্বাং জগৎ বিষ্ণুরেব ততঃ পরং ন বিদ্যুতে। যথা চ বিফৌ তিষ্ঠতি, বিষ্ণোঃ সকাশাৎ যথা ভবতি, তথা অক্তো ময়া জ্ঞাতম্। অনেন সর্কোহপিকারকাদ্যর্পৌ বিষ্ণার্পলক্ষ্যতে ॥ ১॥ যথা বেদা ব্যস্ত। ইতি প্রকারপ্রশঃ ॥ ২ ॥ যদ্মিন্ যদ্মিনিত্যধিকরণ প্রশন্তঃ। যো য ইতি কর্তৃ প্রশন্ত। শাখাভেদানিতি শাখাসংখ্যানায়োঃ প্রশু: ॥৩॥ তত্র তাবৎ শাণাভেদানাং সম্বাতে নামতক বিস্তারেণ বক্ত্রশক্য ইত্যাহ, বেদ্দ্রুমস্যেতি ॥৪∥ অধিকরণকর্ত্বরূপপ্রশু যোকস্তরমাহ, দাপর ইতি দাভ্যাম্॥৫॥ বীর্যামুৎসাহঃ, তেজঃ প্রাগল্ভাং বলক্ষ গ্রহণসাম্ধ্যমণ্সমবেক্ষা ॥ ৬ ॥ নমু অপর এব বেদব্যাসাঃ, কথং ভগবানু বেদভেদানু করোতি ১ ইত্যাশস্ক্ষ্য, সর্বের ভগবস্তুনৰ ইত্যাহ যয়েতি॥ ৭॥ অত্ৰ তাবৎ অভীতানাগতমন্বস্ত-রাণাং ব্যাসানু অতিবিস্তরত্বেন উপেক্ষ্য বৈবন্ধতে মন্বস্তরে ব্যতী-তান্ ব্যাসান্ ভাবিনপৈকং তথা শাখাভেদাংশ্চ বক্তুমহে যদ্মি-লিতি। ৮। অটাবিংশতিব্যাসা ব্যতীতা নিব্নস্থাধিকারা জাতা ইতার্থঃ, বিসর্গলোপশছান্দসঃ ॥ ১০ ॥ প্রজাপতির্মনুঃ, " ছাপরে তু পুরা রক্তে মনো: সায়স্তুবেহস্তরে। ব্রস্তা মনুমুবাচেদং বেদান্ বাসা প্রজাপতে ॥" ইতি **নারক্তেঃ। ইত এব বচনাৎ দ্বাপরাদিষি**ভ্যত্র

দ্বাপর আদির্ঘেষাং তেরু দ্বাপরাবাং সন্ধ্যাংশেষিত্যর্থঃ কল্প্যাতে। শান্তবুসমকালং সভাবভাাং ক্ষেট্ৰেপায়নোহপত্তিপ্ৰসিজেঃ । ১১ । ২০॥ ইদানীং বেদ্বিভাগং বক্ষামাণঃ প্রথমং তাবৎ প্রণবাবচ্ছিন্ন-ব্রহ্মণো বেদাবিভাবং দর্শগ্রিতুমাহ ধ্রুবমিতি। ধ্রুবং বেদাদীনাং প্রকৃতিভূতং ওঁমিত্যেবং রূপং ব্যবস্থিতমেক্মক্ষরং ব্রন্ধেত্যভিধী-য়তে। তত্ত্বাহ, বহত্ত্বাৎ অপরিচ্ছিন্নরপত্রন্ধাত্মকত্বাৎ বুংছণ-ত্বাৎ বেদাদীনাং কারণত্বাৎ আনির্ভাবকর্ত্বাদিতি যাবছ। " যদ্মা-দুচ্চার্যামাণ এব রংহতি রহয়তি তমাাদুচাতে পরব্রহ্ম' ইতি ঞ্জে:। ওঁমিত্যেকাক্ষরং ব্রন্ধেতি গীতোক্তেশ্য ॥ ২১॥ তদ্যৈব ব্যাপকত্বং প্রতিপাদয়ন ব্রহ্মপ্রকাশকত্বং ব্রহ্মত্বেন প্রকাশত্বং ব্রন্ধব্বেনাপাস্যং প্রণমতি প্রণবেতি। ভূর্ভুবঃস্বরিতি ব্যাহাতিত্রমং নিতাং প্রণবাবস্থিতমীর্যাতে। তেন ব্যাহ্নতিত্রয়াত্মকং যদিত্যর্থঃ। ঝাগ্যজুঃসামাথর্কাণমিতি প্রথমার্থে দিতীয়া। এতদ্বেদ্চতৃষ্টয়াত্মকঞ্ যহ ভবৈষ ব্রহ্মণে প্রণবাখ্যায় নম ইতি। ২২ ॥ এবং বাচকপ্রণব-প্রণামানন্তরং তদ্বাচ্যং ব্রহ্ম প্রণমতি জগত, ইতি সার্কৈক্সিভিঃ। জগতঃ প্রলয়োৎপত্তো যৎকারণসংক্তিতং মহতক্ষ পরমং শুহাং মুখ্যং কারণং তদ্মৈ মুব্রন্ধণে পূজিতশুণাধিষ্ঠাতে ব্রন্ধণে নম ইত্য-ন্বয়ঃ ॥২৩॥ তদেব বিশিন্তি, অগাধং পূর্মপরকালাবধিরহিত্ম্ অপারং সর্কাতম্ অক্ষয়ং ক্ষিত্মশক্ং জগতঃ সমোহনং তমো-खनः, जमाप्रमानग्रः। किश मञ्जूकानश्रहास्त्रिजाः मञ्जूकाश्वनाजाः পুরুষস্য যোহর্থো ভোগাপবর্গলক্ষণঃ স প্রয়োজনং কার্য্যং যস্য তৎ ॥ ২৪ ॥ তদেবাহ, সাম্ব্যজ্ঞানং পঞ্চিংশতিত ভ্ৰজ্ঞানং তদ্বতাং নিষ্ঠা প্রাপাৎ স্থানম। শমঃ অন্তঃকরণব্যাপারোপরমঃ, দমঃ বাছ্যে-ক্রিয়ব্যাপারোপরমঃ, স এব আত্মা স্বভাবে যেষাং তেষাং গতিঃ আজানাজাবিবেককারণং যন্তদব্যক্তমতীক্রিয়ম্ অমৃতম্ অবিনাশি প্রবৃদ্ধং ব্রহ্মপরিণামবদ্দ্দ শাশতং বস্তুতঃ সদৈকরপতয়া বর্ত্ত-गानम् ॥ २०॥ अपानः गर्भामिक्षिरिकर्ज्छन अजीयमानम् । यक्ष

প্রধীয়তে আধীয়তে বিশ্বনিহেতি প্রধানম্ আত্মযোনিঃ, অনন্ন কার্যাঃ স্বভঃসিদ্ধানিতি যাবৎ। শুহায়াং হাদয়কুহরে প্রকাশমানং সত্ত্য যাস তৎ শসাতে বেদাদিষু। অবিভাগঃ নির্দেদ্ পুংস্কুমার্যা। শুক্রং দীপ্তিমং স্বয়স্প্রভাষ্ ইতি যাবৎ। অক্রেম্ অপক্ষয়শূনাম্। বহুধাত্মকং বহুপ্রকারোপাধিকম্॥২৬॥

যদেবস্তুতং তথাপি পরমব্রহ্মণে কূটস্থপরিপূর্ণায় তব্মৈ প্রণা-গম্যায় নিতাং নমো নম ইতি ভক্তাতিশয়ো দ্যোতাতে ॥ ২৭॥ ইদা-নীং বাচ্যবাচকপ্রণবব্রহ্মণ এব অভেদ্বিবক্ষয়া ব্যাহ্বত্যাদিরূপতা-মাহ, যজ্জপমিতি, সার্ট্রৈক্তিভিঃ। বাসুদেবস্য যৎ প্রণবাখ্যং রূপমে-ভদভেদমপি ত্রিধা ব্যাহ্যতিরূপেণ ভুরাদিলোকত্রয়রূপেণ্ চ ভেদে। যস্য তৎ। তত্র হেতুমাহ স প্রভুঃ প্রণবান্ধা বাসুদেব এব বিভিন্না-ভিবুদ্ধিভিঃ ভিদ্যতে ভিন্নতমা প্রতীয়তে। দৃশ্যতে ভিন্নবুদ্ধিভিরিতি পাঠে বিষমন্থকীতিঃ সর্মভূতেমভেদে।২মৌ দৃশ্যতে অতঃ ভেদ-মপি তৎস্ক্রপম্। ত্রিধা ভিদ্যতে ইতি ত্রিধা ভেদং জ্ঞানাত্মভিন্নং ত্রিধা ভিন্নস্ত ভ্রাদ্যাত্মতার্থঃ ॥২৮॥ কিঞ্ ঝগাদিময়ঃ ৠয়েদাদি-ক্লপঃ ঋগাদিসারঃ প্রণবস্তদাত্মা চ শরীরিণাং বেদবিভাগকর্জৃণা-माञ्चा ह म এव ॥ २৯ ॥ প্রণবাধাবাস্থদেবনা মর্কাত্মতং নিবেদয়তি, স ভিদ্যত ইতি। ন এব বেদময়ঃ, ম এব ভিদ্যতে, ঋগাদিরপেণ বহুভিভেটিনঃ সশাখনু অনেকপ্রকারকশাখাকং বেদমাত্মানমের তত্ত্ব প্রবেদ্ধ সন্স এব করে।তি, স এব সমস্তশাখারপাচ। তত্র হেতুছুতবিশেষণত্রয়মাহ, জ্ঞানস্বরূপে। ভগবাননস্ত ইতি। তেন অনস্তশাখারপরং তৎ প্রণেত্রঞ্গেপদাত ইতি॥ ৩০॥

ইতি ঐবিপুরাণটীকায়াং স্বপ্রকাশাখ্যায়াং তৃতীয়ে-২ংশে তৃতীয়ো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

## ठजूरर्था ३ था। यः ।

অষ্টাবিংশে দ্বাপরেহত্র নান্যত্রাপি প্রমঙ্গতঃ। কৃষ্ণদ্বৈপায়নে-নৈব বেদা ব্যস্তা ইতীর্যতে। আদ্য ঈশ্বরাদুদ্ভূতশ্চতুস্পান ঋগাদি-🎾 তুর্ভেদিসমূহরূপঃ শতদাহস্ত্রদায়িত ইত্যর্থঃ। ততঃ প্রব্রোহয়ং কুৎস্নো যজ্ঞো দশগুণঃ দশবিধঃ, অগ্নিহোত্রদর্শপৌর্ণমাসচাতুর্মাস্য-পশুসোম। ইতি পঞ্চিধঃ, স এব প্রকৃতিবিকৃতিভেদেন দশ্বিধ ইতি। যদা গুহোটক্তঃ পঞ্যজৈঃ সহ দশবিধন্ম্॥ ১॥ অত মন্ত্ৰ-স্তরে অফাবিংশতিতমে দ্বাপরে চতুস্পাদমেকং সন্তং বেদং চতুর্না ঋগ্যজুঃসামাথর্করপেণ পৃথগ্ব্যভক্ত। প্রভুঃ ঈশ্বঃ অবতাররপঃ ॥२ ॥ टेंडः शूर्टेकंः ममरेखः मग्नी ह यक् विश्ला तमा वाखाः ॥७॥ उद তম্মাৎ অনেন কুষ্ণবৈপায়নক্তেন বেদবিভাগেন ছফীস্তেন চতুৰ্গেষ্ সর্কেম্বপি বেদবিভাগান্ পূর্মিঃ কৃতান্ অবধারয় জানীহি॥৪॥ তদেবং কৃষ্ণবিশ্বাসমা মুখ্যবমুক্তা তত্ত্ব কেতৃমাহ ক্ষেতি, অতঃ অস্মিন্ মন্বরে অষ্টাবিংশে এব দাপরে ভারতাবিভাব ইতি গমাতে 🕪 বেদপারগান্বেদ্সা পারং গন্তঃ সমর্থান্ ॥৭॥ ঋথেদ-আবকমিতি সমাসস্থমপি আবকপদমগ্রেইনুক্ষ্য যোজ্যং পারগ-মিতি কচিৎ পাঠঃ ॥ ৮ ॥ ইতিহাসপুরাণয়োরিতি " আর্বাদি-🕻 বহুধাখ্যানং দেবর্ষিচরিতাশ্রয়ম্। ইতিহাসমিতি প্রোক্তং ভবিষ্যা-দ্ভুতধর্মযুক্॥' সর্গাদিপঞ্লক্ষণং সর্গাদ্যবভারভেদ্বিবক্ষয়া দশ্ব লক্ষনঞ্চ ॥ ১০ ॥ এক আসীদিতি যাজুর্বেদিকাধ্বর্যবক্রিয়াবাহুল্যাৎ প্রধানকর্মণত যাজনস্য তদিহিতত্বাৎ যজঃপ্রাধান্যাদেবমুক্তম্ "যক্তিষ্টঞ্ যজুর্কেদে তেন যজ্জমযুপ্তত। যাজনাদ্ধি যজর্কেদ ইতি ়শাস্ত্রম্য নিশ্চয়ঃ॥" ইতি বাযুক্তেঃ। হোত্রোপলক্ষিতাশ্চতার ঋত্বিজশ্চত্বারে। হোতারঃ। তৈঃ অনুষ্ঠেমং কর্মা চাতুহে ত্রিম্, তৎ

যিমিনভুং। জাতং তেন চতুর্জাবিভক্তেন বেদেন যজ্ঞম অকরে। প্রবর্ত্তিবান্ ॥ ১১ ॥ চাতুর্হোত্রমেবাহ, আধ্বর্যাবমিতি ॥ ১২ ॥ চতুর্দ্ধ ভেদমাহ, তত ইতি। ততঃ বেদরাশেঃ যজুংরুদ্ধু,ত্যেতাসুষঙ্গঃ সামভিগীতাত্মকৈরুদ্ধতৈরিতার্থঃ ॥ ১৩ ॥ রাজ্ঞঃ সর্বকর্মাণি শাহি পুষ্ঠ্যাদীনি ॥১৪॥ বেদ। এব পাদপাঃ তেভ্যঃ কাননং শাখাপ্রশাখ সম্ভতিঃ এব কাননমিতি বা 1 ১৫॥ প্রথমম্ ঋগ্বেদপাদপং দ্বিধ বিভেদ #১৬॥ বাস্কল এব বাস্কলিঃ স্বার্থে ইন্ #১৭॥ বাস্কলয়ে দস্তায়া भाषामाः অवास्त्रभाषात्स विशामत्म कगृदः ॥ ১৮ ॥ उम्र रेशनः শিষাসা ইত্রপ্রমতেঃ শিষাপ্রশিষ্যেতাঃ শিষাপ্রশিষ্যাণাং পুতান শিষ্যাংশ্চ ক্রমাৎ যথে।। ২০।। বেদ্মিত্রাখ্যঃ শাকণ্প ইব্র প্রমৃতি সংহিতাম অধীতবান্। ততক্ষ স এব তদ্যা: পঞ্চ সংহিতাকার তাশ্চ শিষ্যেভ্যঃ মুদ্দালাদিভ্যো দদৌ ॥২১॥ শাৰুপূৰ্ণিস্ত ইন্দ্ৰপ্ৰমতি-শিষাত্তৎসংহিতায়াঃ সংহিতালিতয়ং নিরুক্তং চ বেদশক্নিব্চন-রূপম্অকরে† ।। ২৩।। তচ্স সংহিতাত্তি বৃথ ক্রেঞ্চাদিভাঃ অদাৎ। চতুর্থো নিরুক্তকুৎ নামেতি কেচিৎ পঠস্তি।। ২৪ ॥ অনু শাখাঃ অবান্তরশাখাঃ। বান্ধলিঃ পৈলশিষ্যঃ। তিন্তঃ সংহিতা শ্চক্রে ইত্যুক্তং দ এবান্যান্তিশ্রঃ সংহিতাঃ ক্রতবান্। অপর এ সাকম্পদতীর্থো বাঙ্কলিঃ, তচ্ছিষ্যঃ কালায়নি প্রমুখান্ত্রয়ঃ।।২৬

> ইতি ঐবিষ্ণুপুরাণসিকায়াং তৃতীয়েহংশে চতুর্পোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

## পঞ্চনা হ্ধ্যায়ঃ।

পঞ্চেম্থ যজুঃশাখাঃ কথান্তেম্ত্র সমাসতঃ। সেতিহাসং তৈজ্ঞিনীয়ং বাজিশাখাপ্রবর্ত্তনম্। সপ্তবিংশৎ সপ্তবিংশতিঃ যজুষঃ প্রধানশাখাঃ। ব্রহ্মাণ্ডে ভূ একাধিকশতমধ্যু শাখা আপস্তন্ত্যোক্তা

উক্তাঃ ॥১॥ যজু:শাখান্তরাণামুৎপত্তিং বক্তৃং শিষ্যান্তরমাহ, যাজ্ঞ-বল্ক্যস্তি ॥ ২॥ তমাদেব শাখাদ্যপ্রস্তিং বক্তু ম্ইতিহাসমাহ, ঋষিরিতি, অদ্য অস্মৎসমাজে য ঋষিমাগিমিষ্যতি তস্যেতঃ সপ্তরাত্তৎ ব্ৰহ্মহত্যা ভবিষাতীতি যঃ সময়োহভূৎ তং বৈশক্ষায়ন এবাতি-कालवानि इत्यातस्यः॥ ॥ सञ्जोग्रः स्र स्ट अना म्लुकेर সন্তম্ অঘাত য় ২ । ৠবিশাপ বশাৎ পদ। স্পৃষ্ট মাতো ২সে মমারে-· ৰ ভাৰ্যঃ 🛮 ৫ 🖟 সমর্থেনানোন মহাপাতকে কুতে২নোন কণ্থ ভৰ্প্রায়-শ্চিত্তং কর্ত্তব্যমিতীদং ন বিচার্যাং কিন্তু তথা সাক্ষান্বধে শাস্ত্রোজ-মুণ্য প্রকারেণ মদর্থং ব্রভং চরভেভার্থঃ 🛮 ৬ 🛭 বিপ্রাবমনাক! বিপ্রাব-মন্তঃ! || গ মর্কান্ শিষ্যান্ প্রত্যুক্তে ভল্লিষিধা ময়েব কার্যামিত্যক্ত-দ্বাদাজাভঙ্গকারিণেত্যক্তম্॥ ৮॥ মমাপি দ্বয়া গুরুণা অলং, দ্বতো मधा यमधीजः जिममिणि इम्नम्यू हकात ॥১०॥ इम्छानाः नाकाम् গ্রহণমনু চিতমিতি তিজিরা: পক্ষিণো ভূষা জগৃহঃ, ততো হেতোভে · তৈজিরীয়া: প্রসিদ্ধাঃ ॥ :২ ॥ ভতে। হন্যেষাং চরকাধ্যু সিংজ্ঞাং নির্বক্তি, ব্রহ্মহত্যাব্রতমিতি ! ১৩ ৷ ততােহসৌ সূর্য্যং স্তবা তৎ-প্রসাদালকৈর্যজুর্ভিঃ কাণাদ্যাঃ পঞ্চদশ শাখাঃ কৃতবানিতি দর্শয়-প্লাহ, যাজ্ঞবল্ক্যোহপীত্যাদিনা যাবদধ্যায়সমাপ্তি॥ ১৪॥ বিমুজ্জেঃ বারা ত্রয়ীধামকতে ত্রয়ীরূপতেজঃশালিনে । ১৫। অগ্রীদোমভূতার থাতা জগতঃ কারণাত্মনে। তদেবাহ, ভাস্করায় আতপর্কিদারা জগৎঞারণনিতি ভাব:। তদুপপাদয়তি তেজো বিভ্রত ইত্যগ্নি-র্বিরপত্বন্। সৌর্ধ্রং বিভ্রত ইতি সোমরপত্বন্। উক্তঞ্, "সূর্য্যরিশ্বঃ सुरुप्ता यत्रर्भि उट्डन ठट्टमा इंडि ॥ ३७ ॥ कलाकां के निकाटना জ্ঞায়তে যেন তথাভূতঃ আত্মা যদ্য তলৈ ধ্যেয়ায় সর্ফোষাং ধ্যানার্ছায় ধীমহীতি। গায়ত্রীলঙ্গাৎ "পরমাক্ষরং ব্রহ্ম অক্ষরাৎ পরতঃ পরঃ" ইতি শ্রুতেঃ। তদ্ধপিণে ওঁকাররূপিণে ইতি বা ॥১৭॥ স্থামূতেন সুথৈব অমৃতম্ অমরণসাধনত্বাৎ তেন ভৃপ্তাত্মনে ভর্প-🍍 काम। ধৃতাকানে ইতি পাঠে ধার্মিকো। ১৮। হিমাদীনাং যা

র্কিঃ তৎকর্তা। হেমন্তবর্ষা থা বিকালর পায় বেধনে প্রক্রে ।১৯৮ সত্থা মধরঃ সত্তম্ ভিধরঃ। সত্যধামধর ইতি পাঠে সত্যম্ অবাধিতং ধাম তেজাে ধরতীতি পচাদ্যচ্ ॥২০ ॥ সৎকর্ম রাত্রিসন্ধাতর-কালবিহিতং যৎ কর্ম তদ্যাগ্যঃ॥২১ ॥ পূর্ব্বোজনেবার্থং বিধিম্থানাহ, স্পৃষ্ট ইতি ॥২২ ॥ তক্তাতিশায়েন পূর্ব্বোইজঃ পর্য্যাইয়ঃ সর্বির প্রনাত নমঃ সবিত্র ইতি ॥২৩ ॥ হিরপ্রায়ং তেজােময়ম্। কেতবঃ বেদময়াঃ অহা অমৃতগায়িনঃ অমৃতাহারাঃ। "উদূত্যং জাতবেদসমিতাাদি হাগ্র উক্তঃ। হিরপ্রায় রপ ইতি পাঠে কেতবঃ রশ্ময়ঃ। অমৃতং জলং, তদ্ধাতারঃ। বহন্তি গছন্তীতার্থঃ॥২৪ ॥ অমাতয়ামসংজ্ঞানি অনৈারনতান্তানি ॥২৭ ॥ বাজিনঃ সমাধ্যাতাঃ বাজিরপস্র্যপ্রোক্তসংহিতাধ্যায়িত্বাদিতার্থঃ॥২৮ ॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুরাণটীকায়াং শ্রীধরস্বামিরুভায়াং ভৃতীয়েহংশে পঞ্চমাহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

# यदं धार्था श्रायः ।

সামোহপাথর্কণঃ শাখাভেদাঃ পেরাণিকা অপি। অধ্যেতারশ্চ কর্জারন্তেবাং ষষ্ঠে নিরাপিতাঃ ॥ তস্য কৈমিনে:। অসা কৈমিনি-পুজ্রস্য সুমন্তোঃ। তৌ কৈমিনেঃ পুজ্রপৌক্রো কৈমিনিনা। বিভক্তা-মেকৈকাং সংহিতাং স্বস্কালেহনী ত্রন্তৌ ॥২॥ তৎসুতঃ স্থমন্তম্বতঃ তং সংহিতাভেদম্॥ ৩॥ সুরুর্মণঃ শিষ্যাবাহ, হির্ণানাভ ইতি। কৌশল্য ইতি হিরণানাভবিশেষণং যে পঞ্চদশ শিষ্যান্তেভাঃ পঞ্চদশ সংহিতা হিরণানাভবিশেষণং যে পঞ্চদশ শিষ্যান্তভাঃ পঞ্চদশ সংহিতা হিরণানাভন দস্তান্ত এব উদীচ্য সাম্যাভাঃ স্থাতাঃ সংহিতা হিরণানাভাদ্ গুহীতাঃ তে প্রাচ্যসাম্যা উচান্ত ইতাম্বঃ॥৫ পৌষ্পিঞ্জিৰিয়ানাহ, লোকাক্ষিরিতি । তদ্ভেদিঃ তচ্ছিয়া-প্রশিষ্যাদিভিঃ॥৬॥ হিরণানাভদ্য উদীচাসামগশিষামধ্যে ক্তি-नामा मिया: ॥१ ॥ टेंड: कृष्डिनाम्न: मिटेयाः ॥৮ ॥ त्मवन्रमाः स्वमः-হিতাং চতুর্ধা চক্রে, তাস্ত মৌদ্যাদয়: চত্তারো জগৃহরিভার্থঃ ॥১১ ॥ পথাকুতান্তিম্রঃ সংহিতা জাজল্যাদয়ো জগুলুঃ, থৈঃ স্বসংহিতা ভিন্না কুতাঃ ॥১২॥ দৈন্ধবাঃ দৈন্ধবায়নশিষ্যাঃ মুঞ্জকেশা ইতি বলো-রেব নামান্তরং তচ্ছিষ্যা দ্বিধা দ্বিঃপ্রকারা ভিনা বেদাঃ স্বস্থ-সংহিতা য়ৈ: তে তথা। সংহিতাভেদানাহ, নক্ষত্ৰকপা ইতি। বেদানাং সংহিতানাঞ্ কম্প ইত্যস্বয়ঃ। তত্ত্ৰ নক্ষত্ৰকম্পো নক্ষ-ত্রাদিপুরুবিধিঃ বেদকপ্পো বৈতালিকব্রহ্মত্বাদিভি: সংহিতাকপ্পঃ নংহিতাবিধিঃ ॥ ১৪ ॥ আঙ্গীরসকল্পঃ অভিচারাদিবিধিঃ শাস্তি-कल्लाः अश्वतकाम् । केम नमर्गमास्त्रामितिधिः ॥১৫॥ व्याधानामितिः সহ পুরাণসংহিতাঞ্জে ব্যাস ইতি শেষঃ। তত্র ছটোপলব-ক্ষমমুপাখ্যানং প্রচক্ষতে গাধা পিতৃপুধিব্যাদিগীতাঃ কল্প-শুদ্ধিঃ বারাহাদিকপেনির্বয়ঃ 1১৬ । স্থমত্যাদয়শুদ্য রোমহর্ষণস্য বট শিষা: তৎকৃতাঃ ষট্ সংহিতা জগৃহঃ ॥১৮॥ কাশাপাদিভি-ব্রিভিঃ কুতান্তিম্রঃ। অকুতব্রণ এব কাশ্যপঃ কাশ্যপোছপাকুত-ব্রণ ইতি বায়নোজেঃ। রোমহর্ষণিকা চ অন্যা রোমহর্ষণেন পুনঃ সজেলপেণ কুতা ॥১৯॥ এতাষাং সংহিতানাং চতুইটয়েন সারোদ্ধার-রপমিদং বিষ্ণুপুরাণং মুনে! মৈতেয় । ময়া কৃতমিতি শেষঃ ॥২০॥ ব্যাসহতানি অষ্টাদশপুরাণান্যাহ, আদামিতি সার্দ্ধৈশুর্ভিঃ। কেচিৎ তু সংহিতানাং চতুষ্টায়েন ইদ্যাদ্যং ব্ৰাক্ষামুচ্যতে ইতি বদজি ॥ ২১ ॥ উজেম্বটাদশপুরাণেরু কিমেতৎ পুরাণং জ্য়া কথাত ইত্যাহ, যদেতদিতি। ময়া যদেতৎ তব কথাতে তদেবানাগতাখ্যা-নেন পদ্মপুরাণানস্তরং ব্যাসেন কৃত্মিত্যর্থঃ। বথাই মাৎস্থে, "বরাহ-কল্পরন্তান্তমধিকতা পরাশরঃ। যান্ প্রাহ ধর্মানবিলাংশুদুক্তং रेवकवर किनू: "' देखायरमव उक्षां मिकथि जर वारमन निवस र उस-

পুরাণাদি কথাতে ৷ বিষ্ণুপুরাণঞ্চ কচিৎ দশসাহস্রং কচিদউসাহস্র-মি ত্যাদিবিক**ল্পেহপি অত্ৰ বট্সাহস্ৰমেব ব্যাখ্যায়তে** ॥২৬॥ অস্থ বৈষ্ণবসংজ্ঞায়াং হেতুমাহ সর্গে চেতি ॥২৫॥ পুরাণানাং বেদোপ-রংহনত্ত্বেন ধর্মবেদতদ্ধেতৃত্বাৎ ধর্মবিদ্যান্থানের চতুর্দশমন্তর্ভাবমাহ, অঙ্গানীত। অঞ্গান-শিক্ষাকণপজ্যোতিশ্ছন্দোনিরুক্তব্যাকরণানি ষট্। চতুর-চন্তারঃ। ধর্মশাস্ত্র-মন্ত্রাজিন্ত্রাজ্ঞান্ত্র-মান্ত क्विलः पृष्टार्थितिमाञ्चानमाशुर्विमामिक्कुकः ख्वन् धर्माविमाञादैनः সহাষ্টাদশবিদ্যান্থানান্যাহ আয়ুরিতি। আয়ুর্বেদোহটাক্ষচিকিৎসা-শাস্ত্রং ধন্বস্তরিপ্রোজ্জন্। ধনুবেদি। ভৃত্তপ্রোজ্জনত্র্বিধ আয়ুধ-সন্ধানমোক্ষাদিবিষয়ঃ। গান্ধর্মনেদেশ ভরতমুনিপ্রণীতো, স্থত্যগীতা-দিবিষয়ঃ। অর্থশাস্ত্রং বার্হনপত্যাদিনীতিশাস্ত্রম্। পূর্ব্বোজাশ্ততু-र्मर्भा जाकी मिना विका विकास के बिन में विकास के कि नाम के वी-ণাং ভেদানাহ, জ্বেয়া ইতি ॥৩০॥ উপসংহতি ইতীতি। প্রসঞ্চা-তাঃ সম্বায়া, প্রোক্তাঃ শাখাভেদান্ত নাম উক্তাঃ। ভেদহেতুঃ পুরুষাণামলপপ্রজ্ঞত্বাদিঃ ॥৬১ ॥ শাখানাং পুরুষপ্রণীতত্বেন বেদস্থ পৌরুষেয়ত্বং স্থাদিতাত আহ, প্রালাপত্যেতি। কম্পাদৌ প্রজা-পতিনা ছটা শ্ৰুতিঃ। নিত্যৈর ইমে তু শাখাভেদাস্তস্থা এর विकल्याख्यश्राक्ष्रार्थमवाख्याख्या न प्रभूषाः भूकृरेषः कृषा डेडार्थः ॥ ७२ ॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণটীকারাং শ্রীধরস্বামিক্তারাং তৃতীয়েহংশে যঠোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

## मश्रुरमार्थायः।

বেদশাখাপ্রণয়নমুক্তং কর্ত্রাদিভেদতঃ। ভাপ তান্ত্রিকধর্মণ্ড নেতিহাসোহত্র বর্ণাতে। ভূতলাদিপ্রসন্ধানুপ্রসন্ধাদনুবর্ণাতে। সদ্-গতিত্বংস্কন্তনাং ভগবন্ধগ্রস্থতঃ। উক্তমভিনন্দনশুতিস্থতি- সারভূতং ধর্মাং পৃচ্ছতি যপাবদিতি সপ্ততি: ॥১॥ পাতালবীণীঃ ভূবি-नव्या कार्रा । मक्ष (वाकाः सर्गामयः। এতৎ मक्षत्री नामिकापर मर्वम् 🕪। অয়মেন প্রশ্বঃ প্রফান্যোহর্থো নকুলেন ভীয়াং প্রতি পৃষ্টস্ততশ্চ স ভীয়াত্তং প্রতি যৎ প্রাহ তক্ত শৃণুষ । ৮॥ স কালিককে। দিজো মামুবাচ ময়া জাতিশারে। মুনিঃ পৃষ্ট ইতি ॥১॥ তেন জাতিশারেণ ইদনিদং বর্ত্তনানমেতদিখনেবং লক্ষণং ভবিষ্যতীতি চ কালি-ক্লকস্থানে যদাখ্যাতং তেন চ কালিক্লকেন মহাং যগোক্তঃ ভথৈব जनज्द (र तदम नक्लाजास्यः । ১०॥ धामभागमाताष्ट्राक्तन म কালিক্কে। দ্বিজে। ভূবঃ পুনঃ পৃষ্ট: নন্ জাতিকারবাক্যং যদ্যদাহ ভদনাপা ব্যভিচারি নয়া ন দুউমিভাতিবিশাসার্থমুক্র ॥১১॥ প্রকৃ তমাহ, একদেতি। তম্ম জাতিকারস্থমুনেঃ ॥১২॥ তদেবাহ জাতীতি। তং সংবাদং সংবাদবিষয় র্থম্ ॥১৩॥ তমেবাছ, স্বপুরুষমিত্যাদিভি: সোহন্যলোক্য ইত্যক্তৈরেকবিংশত্যা শ্লেটেকঃ। পাপিজনানয়নায় উদাতং পাশহস্তং স্বপুরুষমভিগীকা বিষ্ণুভক্তান্ পরিভাজাবা। নানয়েতি স্বপ্রতাপভঙ্গভিয়। গুতিরহস্পত্যা চ কর্ণমূলে বদ্ভি শা॥১৪॥ ন বৈঞ্বানাং প্রভুরিতাত্ত হেতুমাহ, অহমিতি। প্রজা-সংয্মনাৎ যুম ইতি সংজ্ঞা লোকহিতাহিতে শুভাশুভফলদানার্থে ধাতা নিযুক্তোহপি হরিরেণ গুরুত্তদশগোহিমান স্বতন্ত্রঃ, যতো মমাপি সংযদনে দণ্ডে বিষ্ণুঃ প্রভবতি। হিতায় স নিযুক্ত ইতি পাঠে দণ্ডোহপি পাদক্ষ্ণার্থভয়া হিত এব তক্ষাদ্পি ॥১৫॥ তত্ত হেতু-মাহ, কটকেতি দ্বাভ্যাম্। সর্বোৎপত্তি প্রলয়হেতুত্ত্বন সর্বাত্মকত্বাৎ সর্ক্ষনিয়ন্ত ত্বনিত্যর্থঃ। কটকো বলয়ঃ। কর্বিকা কর্নভূষণম্। কটকাদি-टिं एम मार्गकरेथाः कार्रिशक्र अनक्षित्र मि व्याप्त करे को बारिशक्ष विक-মেনেষ্যতে যথা তথৈক এব জগৎকারণভূতো হরিঃ স্থরাদিভেটদ্-রুদীর্ঘান্তে ॥১৬॥ কিঞ্চ ভেদশু মায়োপাধিক দ্বামায়:নাশে তু বিঞ্-রেক এব ইত্যাহ, কিতীতি। অনিলোছ, ভাঃ কিতিজলপর মাণবো यथा अनिन्रशास्त्र अवनात्न धित्रक्यामिना मटेहरू जार गासि ज्यां

গুণানাং কলুবেণ কালুবেয়ণ ক্ষোভেণ যে সুরাদয়ো জাতাঃ অস্তে শ্বণক্ষোভোপরমে তেন বিষ্ণুনা সহৈকতাং যান্তীতাম্বরঃ ॥ ১৭ ॥ তহি যমস্থাপি নিয়ন্ত্রভিক্তিঃ কথং মনুষ্যসাধ্যেত্যত আহ, হরি-মিতি। পরমার্থতঃ সর্বাত্মত্বেন ছরিং যঃ প্রণমত্যপি তং পরিত্যজ্য ব্রক। যদা হরিপ্রণতিমাত্রেণ পরমার্থতঃ তমপগতসমস্তপাপবন্ধ-মিতাম্বয়:। অনেন দৃষ্টান্তেন ভক্তসংস্থিগোছপি ত্যাজ্ঞা ইত্যুক্তং (यर्त्त्र ह भाषा: भम्माख्याख्या: ख्राष्ट्रीं ख्रिकारकः ॥১৮॥ সমস্তস্থ ধাতৃঃ পালকস্যাও৯॥ উচ্চৈরতিশয়েন শিতং গুদ্ধং রাগাদি-শূন্যং মনে যদ্য তং বিষণুভক্তং বিদ্ধি। ভক্তে হৈতুং বৃদন্ তং বিশিন্থীন চল ঠীতি হরেরাজেয়মিতি বুদ্ধা নিজবর্ণাশ্রমধর্মতো যোন চলতি তম। ভজে শিচ্ছানাহ, সমমভিরিতি ॥২০॥ তেম-পান্তমোহে মনসি সভতং কৃতজনার্দ্দনমতীব ভক্তমবৈহি। কিং-বিশিষ্টং কলে বর্ত্তমানস্য যস্য তৎক্তেন পাপমলেনাতা। বুদ্ধিন মলিনীক্কতত্তমু ॥২১॥ ন হলতীতি বদুক্তং তৎ বিশেষমাহ, কনকমিতি কনকমপি রহস্যপি ছুট্। পরস্বং ভূণমিব যং সমবৈতি জিছুক্ষাবিমুখে। ভবতীতাৰ্থ: ৷ অপচ ভগৰতি অনন্চেতা: ভৰতি তম্ ∥২২ ॥ সিত-মনসমিতি বিশেষণং যদুক্তং তদেব কশব্দভাং সপষ্টয়তি। স্ফটি-কেতি। স্ফটিকগিরিশিলের অমলঃ তুহিনময়ুর্পশচন্দ্রস্তুস্থ রশ্মিপুঞ্জে মংসরাদিদোষত্থ বিষণুভক্তেশ্চ বিরোধোক্ত্যা তদ্দোষরহিততৈথব বিষ্ণু ভ জন্ত্ৰমিত্যুক্তং ভবতি॥২৩॥ ভদেব বিধিমুখেন বিব্লুণে†ভি বিমল-মতিরিতি। শুচি শুদ্ধং চরিতং যন্ত অধিলানাং সন্থানাং মিত্রভূতঃ অতে নিরতে মানমায়ে গর্মালীকে যেন সঃ ॥২৪ ॥ তম্ম প্রসন্নতৈব চিহ্নমিত্যাহ, বসতীতি। উক্তমর্থমর্থান্তরন্যাসেন সমর্থয়তি, ক্লিতিরস-মিতি ৷ শালপোতো বালতকঃ শালতকঃ চাকুত্যা সূকুমারতীয়ব রমাং ক্ষিতিরসং স্বস্থান্তর্যধা কথয়তি অনুমাপয়তি এবং সর্বভৃতেযু সৌমাতয়া বিষ্ণ ভজোহিপি বিষ্ণুং ছদি বসস্তং সূচয়তীভার্থঃ ॥২৫॥ কিঞ্চ যমনিয়মেতি, অহিংসাসত্যান্তেয়ব্রহ্মচর্য্যাপরিগ্রহা যুগাঃ পৌচ-

সন্তোষতপঃস্বাধ্যায়েশ্বপ্রপ্রণিধানানি নিয়্নাং, ধনাদিসম্পৎসমুৎসিজো মনসঃ উল্লাস্যে মদঃ, আত্মনি পূজ্যবুদ্ধির্মানঃ, পরশুভছেষো মৎসরঃ ॥২৬॥ অপগতকলাষত্বমেবাহ, হৃদীতি। অসি স্থানে,
অপীতি কচিৎ পাঠঃ। তৎ তহি অহানাং পাপানাং বিঘাতকর্ত্তা হরিস্তেন ভিন্নং নাশিতং সদমং কথং ভবতি, বলবদিরোধিনি সত্যপরং ন তিষ্ঠতীত্যর্থান্তরেণ কণ্টয়তি কগমিতি॥২৭॥
ইদানীমভজলক্ষণান্যাহ হরতীতি চতুর্ভিঃ॥২৮॥ সতাং বিনিন্দাং
ক্রুতে সন্তম্গহি ন দদাতি। যদা সন্তং বিষ্ণুং তদ্ভক্তংবা ন
যজতি ন পূজ্মতি ন চ তম্মৈ দদাতি॥২৯॥ পরমম্বদাদিমু শঠমতিঃ সন্মর্থভূষ্ণাং করোতি অর্থাং তেন্তা এবার্থং গৃহীতুং বাঞ্ভতি,
যদা পরমম্বদাদে তেবাং নিম্ভমন্যায়েনাপ্যর্থভূষ্ণাং করোতি॥
৬০॥ অনার্বিঃ বিশালো দীর্ঘকালো যাং সঙ্গন্তেন মন্তঃ। অনার্যাবিশালেতি পাঠে নীটিঃ দুংশীলৈশ্চ যঃ সঙ্গন্তেন মন্ত ইত্যর্থঃ॥৬৯॥
উক্তমভক্তিচ্ছং ভক্তচিক্তমাহ, সকলমিতি॥৬২॥ তন্নামনীর্ত্তনং
তদ্দকশ্বণতা চৈকান্তভক্তচিক্ত্মিত্যাহ, কমলনন্তনিতি॥ ৬৬॥

দূরতরেণ তাজেতি যদুক্তং তত্ত্র হেতুমাহ, বসতীতি। তথ্য দ্রন্থিল গতাত যাবচ্চক্রত্রমণাদ তন্তচক্রেণ প্রতিহতে বীর্যাবলে যথা তথা তব মম চ তদ্দ্দ্পিণাতবিষয়ে পাপিজনানয়নেহিপি ন গতিরন্তি সপুনরনালোক্যঃ বৈক্ষবাসাহ ঃ নাম্মলোক্যোগাঃ ॥৩৪॥ মম মহাং তেন জাতিমারেণ। কুরুবর ! হে ভীয়়॥৩৫॥ তস্য বশীকর্ত্ত্র সমর্থাঃ। কেশবালম্বনঃ কেশবাশ্রয়ঃ॥৩৮॥

ইতি এবিষ্ণুপুরাণটাকায়াং এধরস্বামিরুতায়াং তৃতীয়েহংশে সপ্তমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

यमगीजा नमाखा।

# वरुत्वाश्यागः ।

विष्यात्रात्रीयताशास्त्रा निक्धवाश्चनक्ष्यः। मगत्रोवीयमश्चापर मवाधारिय्रमिक्रभारक । यथा यथकारत पर्याण ॥ । विस्थाताता-ধনপরৈরাজ্ঞানতৎপরৈঃ॥২॥ স্থাবিদ্ধং ব্রহ্মলোকাদিপদম্। 🖢 ॥ যাবৎ যংসভাবিং ভূরি স্বল্পাং বেতি প্রমাণতঃ ॥१॥ বর্ণা-শ্রমাচারবতেত।ধিকারিবিশেষণাৎ বেদোক্ততদ্বিরুদ্ধপুরাণাগমাদ্য-জ্ঞাচারবানের তত্রাধিকারী ন বিগীতাচারঃ। অন্যঃ প্রত্যুক্তবর্ম-পরিত্যারেন ভদুব্রভধারণশ্রবণকীর্ত্তনাদিরূপঃ পছা ন ভবতি 🛭 ৯ 🛭 यक्कांन् यक्षेत्रान् हेळा मीन् यकन् दिख् १ यक कि यः कक्ष न क्ष्यन् বিষ্মেৰ জপতি অন্যং স্ন্ বিষ্ণুনেৰ হান্ত ॥১০॥ যতঃ পূজ্যবধ্য:দি-সর্বস্বরপো বিষণু স্থাৎ তদাজ্ঞ । বর্ণাশ্রমধর্মান্ যাগাদান্ সদা-চারাংশ্চ কুর্বতা বিষ্ণুবারাধাতে তোষাতে। সদাচারঃ অবিগতি-শিষ্টাচারঃ ॥১১॥ উক্তমর্থমেবাধিকারিদর্শনপূর্মকং ব্যাতিরেকমুখেন ছুঢ়য়তি ব্রাহ্মণ ইতি ॥ ১২॥ তিত্র সাধারণধক্ষানাহ, ষড়ভিঃ পর-च्याभवामर ममक्रानिन्मार देवभूनार भरतारक तरहारमायकथनम् ॥ ১७ ॥ ন হস্তি ন প্রাণান্ বিয়োজয়তি। প্রাণিনো জঙ্গাননাান্ দেহিনঃ স্থাবরান্ ৷ এতেষাং নিয়মেনাক্রিয়মানানাং ধর্মত্বেন হরিতোষণ-ত্বাৎ চিত্তশোধকত্বসূ ॥১৫॥ ইদানাং হ্রিতোষকানু সাধারণধর্মানাহ. বর্ণেতি। তিষ্ঠংস্থিতি হেতৌ শত্প্রতায়ঃ। তেরু স্থিতিস্তদনুষ্ঠান-মারাধয়নহেতৃরিতার্থঃ ॥১৯॥ তথ তহিতিনে শ্রোভুষিক্যমি ব্রী-হীত্যর্থঃ ॥২০॥ ভত্র ব্রাহ্মণস্যাবশাকান্ধর্মানাহ দান্মিতি। দদ্যাৎ কুৰ্য্যাৎ নিত্যোদকী নিভ্যং স্নানভৰ্পণাদিকুৎ যথাধিকারমৌপাদনা-श्वारक्ष को मीनांश वा अतिश्रवः ॥२२॥ श्वानां अक्र नियमानां र, अखार्थ-মিতি। প্রতিগ্রহাদানং প্রতিগ্রাহাস্য গবাদেরাদানং গ্রহণং শুর্বর্থং ৪রোরর্থো যশ্মিন তৎ শুক্লার্থাদিতি পাঠে তু শুক্লঃ শুব্ধ অর্থো ষদ্য

उन्मादिशादिः। "क्रमांशवः श्रीविष्तायः श्रीखण मह ভार्षायाः। व्यतिस्थित मर्खिवार धनः शुक्रमूमाञ्चम्" इंडि निक्षूत्रमाद। শুক্লার্থমিতি পাঠে শুক্লধনোপার্জ্জননিমিন্তমিত্যর্থঃ। তত্তাপি ন্যায়ত: কালপুরুষাদিপ্রতিগ্রহং বিনা দিজে ব্রাহ্মণঃ ॥२৩ । গ্রাবে ইতি। গ্রাবে পাষাণে পারক্যে পারকীয়ে রত্নে বাস্য ব্রাহ্মণস্যে-ত্যুপলক্ষন । পড়্যান খতে চাভিগনঃ শস্তে অভ্যাহভার-জ্ঞায়তে ন তু নিয়ম্তে। "ঋতৌ ভার্যামুপেয়াং" ইতি শ্রুতৌ পরিসংখ্যায়। উক্তত্ত্বাৎ পরিসঞ্চানিয়ময়োর্ভেদাৎ। তথাহি ভট-পাদঃ, "বিধিরভাস্তম প্রাপ্তৌ নিয়মঃ পাক্ষিকে সভি। তত্র চানাত্র চ প্রাপ্তে পরিসম্বোতি গীয়তে ॥" ইত্যসার্থঃ –স্বর্গোপায়ভূত-জ্যোতিটোমস্যাত্যস্তমপ্রাপ্তস্য প্রাপণং বিধিঃ। যথাগ্রিটোমেন ষজেতেত্যাদিং। পাক্ষিকপ্রাপ্তে সভ্যামপ্রাপ্তাংশন্য পরিপূরণায় নিয়মেন প্রাপণং নিয়মবিধিঃ ৷ যথা ব্রীহীনবহস্তীতাত্র বিভূষীকরণ-স্যাবহননেন নথনিকৃন্তনাদিনা চ প্রাপ্তম্য নথনিকৃন্তনাদিপক্ষেৎপি অবহননস্যাপ্রাপ্তস্যাংশস্য নিয়মেন প্রাপণং বিধেয়স্য তত্ত চান্যত্র চ প্রাপ্তের প্রাপ্তিযোগ্যভায়াং অন্যতরনির্ক্তয়ে পুনঃ প্রাপণং পরি-সন্থা। যথা 'পঞ্পঞ্চনথা ভক্ষ্যাং'' 'শ্বতৌ ভার্য্যামুপেয়াৎ" অত্র পঞ্চনখভক্ষণাদেলোঁকত এব প্রীপ্তম্য অজ্ঞাতত্ত্বা-ভাবাৎ। তত্র ষা,তেরজ্ঞাতজ্ঞাপকত্বলক্ষণস্য প্রামাণ্যস্য অসম্ভবেন ্স্বার্থত্যাগাৎ পঞ্চাতিরিজ্ঞপঞ্চনখভক্ষণনিষেধাদিরপান্যা**র্থক**ল্পান**ং** যুক্তম্তত্র উক্তরপপ্রামাণ্যসন্ত্বাৎ তদকুরোধেন রাগতঃ প্রাপ্তম্ বাধোহপি ন্যায় এব। অত এব ন স্বার্থত্যাগান্যার্থক স্পননিষেধ-প্রতিযোগি প্রাপক প্রমাণবাধলকণ দোবত য়বস্তুম্, এবং ভৌতোদা-হরণেহপি ইমামগ্জানুশনামৃতদ্যেত্যশাভিধানীমাদন্ত ইত্যত্ত ঋত-ফলসাধারণাশ্বমেধসম্বন্ধিনঃ পশো রশনাং গৃহীতবস্ত ইত্যেবমর্থ-ক্স্য মন্ত্রস্যার্থপ্রকাশনসামর্থালক্ষণালিক্ষেনাশ্রশনাদানে গর্দ্ধভাদি-রশনাদানে চোভয়ত্র শ্রুতানুমান্দারা প্রাক্সাতঃ প্রাগেরাদার্শন্-

দানে মন্ত্রবিনিয়োগলক্ষণস্য জ্বত্যর্থস্য অপ্রাপ্তস্য সত্ত্বেন ক্রতের-প্রাপ্ত প্রাপক ত্বলক্ষণপ্রামাণ্যসম্ভবাৎ ন তদ্বুরোধেন স্বার্থত্যাগস্তত-শ্চান্যার্থকম্পনাপ্রাপ্তবাধশ্চ নাস্তাতি ন দোষত্রয়গদ্ধোহপি, তহি অজ্ঞাতজ্ঞাপক ত্লক্ষণপ্রামাণ্যস্য সর্বতাবিশেষাদপূর্বনিয়মপরি-मस्याविधीनाः (का एक ? देखि हिर, न, अमानास्त्रतारगात्रा উপায়ে পূর্ববিধিঃ, পাক্ষিকপ্রাপ্তে নিয়মবিধিঃ শ্রুতাপেক্ষয়া বিলম্বিতপ্রত্যায়কপ্রমাণেনোভয়প্রাপ্তিযোগ্যতয়া পরিসংখ্যাবিধি-রিতি পূর্বমেবোক্তত্বাহ। অথাপুর্মবিধিবহ পরিসঞ্চা বিধেরপি অপ্রাপ্তপ্রাপকত্বেন চরিতার্থবাদন্যনিরুত্তিঃ ফলং ন স্যাদিতি চেন্ন, লিক্ষেন প্রাক্সাতোহর্থসা মত্যা পুর্মপ্রতিপাদনবৈয়র্থ্যাদন্য-নিব্লস্তিরপফলস্যাবশ্যকত্বাৎ। তথাপি জ্রুতা অশ্বরশনাদানে বিনিযুক্তস্য মন্ত্রস্য পশ্চাল্লিক্সেন বিনিধোগাসন্তবাদন্যনির্ক্তিঃ স্থতরাং সিজের রশনৈর পরিমখ্যাফলম। অপুরুবিধেন্ত অগ্নিটো-মাদিয়ু প্রেরভিজননস্য সন্তবায়'ন্যফলাক(জেফতি। তাত এব ভট্ট-পাদাঃ স্বয়ন্ আহঃ তত্র বার্ত্তিকে, "গজ্ঞাতবিধিরেবায়ন্তাতো মস্ত্রস্থ নিশ্চিতঃ। পরিসম্ব্যাফলেনে 'জেগ ন বিশেষঃ পুন: শ্রুতেঃ॥" ইতি পরিসম্খান্যনিব্লক্তি: ফলমিতার্থঃ। তৎ কৃত ইতাত্রাহ, "ন বিশেষঃ পুনঃ শ্রুতেঃ ইতি লিকজন্যভবিষাৎপুনঃশ্রবণসা তৎ প্রথম-ভবশতিজন্য শ্রবণস্য প্রবিত্তলকণফলমাতে বিশেষাভাবাৎ ক্রতি-क्रवाञ्चन नहां नहिक्क प्रकार कार्य क्रिक क কেচিং তু ভউমতে পরিমঝ্যায়া: স্মার্ক্তোদাহরণং নার্ন্ডাতি বদন্তি, क्य ''পঞ্প পঞ্চনখা ভক্ষ্যাঃ'' ইত্যাদিষু উচ্চ প্রকারেণ দোষত্রয়া-ভাবাৎ পরিসম্বোদাহরণত্তেহিপ অদোষাৎ ভেদেনৈর পরিস্থাা-লক্ষণদ্য দামান্যেবাক প্রাচ্চ। এবমূত্রে ভার্য্যামুপেয়াদিভাত ঋতৃ-कालान्जुकालायार्निजावर धाश्वज्या जाखाश्वाश्मभूतवलकः कला-ভাশনিয়মবিধাসম্ভবেন পরিস্থোবা তহি, "খতুস্লাতান্ত যো ভার্যাৎ স্বিধে নোপগছতি। ঘোরাগাৎ জাণ্হত্যায়াৎ পচাতে । তা

সংশয়: ॥" ইতি দোষশ্রবাং ন স্যাৎ। নৈষ দোষঃ মনসি কামে
সভ্যপি তৃস্য দ্বোদিনা তামনুপগছতো দোষশ্রনণোপপত্তেরিতি
সংক্ষেপঃ। "লোকে ব্যবায়ামিষমদ্যসেবা নিত্যান্ত জন্তোনহি তত্র চোদনা" ইত্যাদিশুকোজেশ্চ ॥২৫॥ ক্ষল্লিয়ধর্মানাহ, দানাদীতি
চতুর্জিঃ ॥২৬॥

শস্ত্রাজীবে যুদ্ধজীবিকা তস্য ক্ষাপ্তিয়স্য প্রথমে কম্পে পক্ষে পৃথিবীপালনং কর্মাভিধীয়ত ইতি শেষঃ ॥২৭ ॥ অত্র হেতৃঃ ধরি-ত্রীতি। ভবস্তি স্থপতেরংশাঃ, "পুণ্যাৎ বজ্যু ণমাদক্তে ন্যায়তঃ পরি-পালয়ন্" ইত্যাদিশা,তেঃ স্বয়মেকেনানুষ্ঠিতধর্মাৎ প্রতিপালিত-বিপ্রাদ্যবুষ্টিভধর্ম্মষ্ঠাংশো ভূয়ানিতি ভাব: ॥২৮ ॥ বর্ণানাং সংস্থা মর্যাদা তাং করে। তীতি তথা। বর্ণসংস্কারক ইতি পাঠে সংস্কা-त्रका खनाथानकर्छ। । २৯॥ रिवमाधर्मानलाह, लाखलानामिछि দ্বাভ্যামূ 🌬 শূদ্রাণামপ্যাহ, দ্বিজাতীতি। দ্বিজাভিসংশ্রয়ং ত্রৈ-বর্ণিকশুক্রাবালক্ষণং কর্ম্ম তাদর্থাং তৎপারতন্ত্রাঞ্চ স্বধর্মঃ। তেন দ্বিজ-শুক্রবালকেনাত্মপোষণং মুখাম্। আপদি তু ক্রয়বিক্রয়কৈর্ণিজ্য-लरेक उपमञ्चर व क्यां पिकां कर्या हित्तन खरान (लावनः मृखमा। "विज्ञ ख्यायत्रा कीरत्र शीत्रत्व" देखि खर्कारकः॥ ७२ ॥ शांकगरेकः-र्टेर्न्थरम्यारेथाः। "नमकारत्व मरञ्जल अथ यख्वाच वालरव्यः" देखि যাজ্ঞবল্কোজেঃ। পিত্রাদিকং আদাদি, তেন দ্বিজ্ভভাষালভ্ৰেন ज्ञातान क्कीं ७ ॥ ७७ ॥ भून ३ मर्स्स्वार माधातनधर्याना इ, ज्ञाहि ইতি। অক্ষরদ্যাধিকৈঃ দালৈজিভিঃ এতে গরিপ্রহাদ্যাঃ সর্ফেষাং সামান্যলক্ষণা ইতি চতুর্থেনাম্বরঃ। পরিগ্রহোহর্থসংপাদনম ॥৩৪ ॥ দয়াপরদুঃধপ্রহরণেছা। ভিতিকা শীতোঞাদিদ্দ্দুসহিষ্কুতা। অনভিক্রানিতা আত্মনি শ্রেষ্ঠভাদ্যভিমানশূন্যতা। সত্যং যথার্থ-কথনম্। শৌচম্, 'মৃজ্জলাভাং বাতৃ তং বাছং ভাবও দ্বিত পান্তরম্' তৎ দিবিধম ''শরীরং পীডাতে যেন্ মুশুভেনাপি কর্মাণা। অভ্যন্তং তৎ ন কুর্বতি অন্যাসঃ স উচ্যতে।" ইত্যনায়াসঃ। সঙ্গলম "শিরঃ সপুষ্পং চরণো স্থাজিতোঁ ইত্যুক্তম্। মৈত্রী সর্কমিত্রভাবেন বর্ত্তন্। অক্সৃহা প্রাণযাত্রামাত্রনিমিক্তাদনাত্রানভিলায়ঃ। 'অত্যুক্তাৎ সমৃতাদরাদক্ষিত্রাক্তিন বাসসঃ। অপরপ্রেয়ভাবাক্ত ভূয় ইচ্ছন্ পভত্যধঃ ॥' ইতি। অকার্পন্যং যথাশক্তি দানম্ অনসূয়া গুণের দোষারোপাভাবঃ ॥ ৬৬ ॥ উক্তরীত্যা বৈশাস্ত্রকর্মপ্রাপ্তো তরিব্রেধমাহ, এতয়েঃ ক্ষত্রিয়বৈশায়োঃ, ব্রাক্ষণনাপ্রাপলক্ষণম্ ॥৬৮ ॥ উভাভাং ক্ষত্রিয়বৈশ্যাভ্যাম্। ব্রাক্ষণনাপি, অত্র শক্তমা মুখ্যকপ্রিক্তিঃ। অশক্তনানুকক্ষাশ্রেয় এব কর্ম্মস্করং ব্রক্তার্বিভক্তরম্ ॥৬৯ ॥ উক্তানুবাদপূর্মকম্ । আশ্রমধর্মান্ বক্তৃং প্রতিজ্ঞানীতে ইতীতি ॥ ৪০ ॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণিটীকায়াং শ্রীধরস্বামিক্নতায়াং ভৃতীয়েহংশে অফমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

### नवरमाञ्चाग्रायः ।

নিক্ষচা ছরিভোষার্থান্ বর্ধন্দানশেষতঃ। তল্কদাশ্রমধর্মাংশ্চ নবমেছত্র নির্নপিতাঃ॥ ১॥ ব্রতানি "প্রাজ্ঞাপতাং তথা সৌনানারে বংশদৈবিকন্" ইত্যাদীনি মধুমাংসবর্জ্ঞনাদীনি চ চরতা কুর্মতা বেদো গ্রাহ্যঃ॥ ২॥ স্থিতে উল্লিড্ড গুরৌ শিষান্তিষ্ঠেই উল্লিভবেই, তথা আসচি আসীনে নীটিঃ হীনভাবেনাসীত, শুভিকূলমেত্রিপেরীতং ন কুর্যাইছে॥ ৪॥ তেনৈবোক্তঃ পচেই, ন তু শীঘাধ্যাপনার শুরুং নিযুপ্তীত ॥ ৫॥ আচার্যোগাবগাহিতা আপোহবগাহেত। কলাং কলাং প্রাতঃ প্রাতঃ গ্রাহঃ॥ ৬॥ গুরীভো গ্রাহ্যা গ্রহণাহে বিদেশ যেন সঃ। নিম্পন্নশুরুদিক, তিঃ দন্ত-শ্রমদ্দিনঃ॥ গ বিধিনা ব্রাক্ষার্যাদিনা স্বক্র্মণা যাজনাদিনা ॥৮॥ নিবাপেন পিশুদানাদিনা পিতৃনিতি পিতৃযক্ত্রো দশিতিঃ। যটেজ-

র্দেবানিতি দেবযজ্ঞঃ। অতিথীনলৈরিতি মরুষাযজ্ঞঃ। মুনীংক্ত স্বাধ্যায়ৈরিতি ব্রহ্মযজ্ঞঃ। অপত্যেন প্রজাপতিমিতি প্রসঙ্গাদ্-গৃহস্স্যাবশ্যকং কৰ্ত্তব্যমিত্যুক্তম্ 🏿 ৯ 🌡 বলিকৰ্ম্মণা ভূতানীতি ভূত-যজঃ। বাক্সভ্যেন সভাবচনেন। বাৎসল্যেনেতি পাঠে দাভূত্বে-নোপকর্তৃত্বেন বা॥১০॥ অটস্তি ভ্রামান্তি॥১২॥ অনিকেডাঃ অগৃহাঃ। অনাহারা: আহারার্থং সঞ্চয়রহিতাঃ। যত্রসায়ং তত্তিব পূহং যেষাং তে। প্রতিষ্ঠা আশ্রয়ঃ, যোনিস্মাতা সম্মেহমন্নদানাদিনা দেহপোষকত্বাৎ ॥১৩॥ অতত্তেষাং গৃহাগতানাং স্বাগতে†ক্তিপূর্ব্বকং মধুরং প্রিয়ং বক্তব্যম ॥১৪॥ স ভগ্নাশোহতিথিশুলৈ পাপং দর্ভ্বৈত নিত্যকর্মরপাতিথিপূজাভাবেন প্রত্যবায়োৎপত্তেঃ। পুণামাদায়েতি তৎপূজাজন্যপুণ্যানুৎপত্তেরেবমুপচর্য্যতে ॥১৫॥ অহকার আত্মনুত্-কর্ষিঃ। দন্তো লাভাদার্থং ধর্মাচরণম্। পরিতাপো রুথাদন্তমি-ত্যুক্তাপঃ। উপঘাতঃ প্রতিঘাতঃ তাড়নং বা। পারুষ্যং নিষ্ঠ্-त्रका ॥১७॥ मर्वतरेक्करियुक्तः मन् ॥১१॥ कुछ कुछा श्राह्म विछ १-যেন সঃ । ১৮ । স্কাতিণিঃ স্কাতিণিপুজকঃ। অভিণিরজ্ঞাত-পূর্মঃ ॥১৯ ॥ ত্রিসবনং ত্রিকালস্কানং অভ্যাগতোহজ্ঞাতপূর্মঃ ॥২১ ॥ বন্যস্থেহেন ইক্লুদীতৈলাদিনা। তপস্যতন্তপশ্চরতঃ ∥২২ 🛙 জয়েৎ প্রাপ্রাৎ ॥২৩॥ চতুর্থা শ্রমং স্থানং বিশ্রামহেতঃ ॥২৫॥ ত্রৈ-বর্গিকান্ ধর্মার্থকামহেতৃভূতান্ আরম্ভান্ লৌকিকবৈদিকোদেবাগান ত্যক্তা ব্রহ্মনিষ্ঠাৎ কুর্য্যাদিতি ভাবঃ ॥২৬॥ একরাত্রস্থিত্যাদাবপি বিশেষমাহ তথেতি ॥২৮॥ বিগতাঃ শাস্তা নির্ফাণা অঙ্গারা যশ্মিন্। ভুক্তবস্তো জনা যশ্মিন্ ত্যান্ কালে প্রশস্তাঃ শ্রেষ্ঠান্ত্রো বর্ণা যে তেষামু । ২৯ । ভিকান্নভক্ষণ এবোপাসনামাহ, রুত্ত্বতি। অগ্নি-হোতাং পূর্বাং ভূয়মানং বহ্নিং শরীরসংস্থং কুত্বা প্রাজাপতোষ্ট্যানস্তর-মাক্সন্যথীনাধায় ভিক্ষারূপ্যেহবির্ডিঃ স্বমুখে কুঞ্জানীয়ে শারীরং প্রাণাদিযুক্তং জাঠরমগ্রিমুদ্দিশ্য চিতাগ্রিনা জাঠরোহগ্রিভু গুকে নাহমিতি চিতাচৈভন্যেনাগ্নিনা অনুসন্ধানেন যো আহুছোতি স লোকানপাদি গ্রিহোত্রিণাং ব্রজ্জতী ত্যুপাসনাফলোজিঃ, যদা লোক্যত ইতি লোকো ব্রফাব বহুত্বমবিব ক্ষিত্য। চিন্তা গ্রিনেতি পাঠে ॥৩২॥ ইদানী মাশ্রমপালন স্যাপরমফলমাহ, মোক্ষেতি। স্বাম্মন্ ব্রহ্মণি সক্ষণ্টিত মিদা বিশ্বমিতি বুজি যুক্তঃ ব্রফোব লোকস্তম, অনিস্কানং বিশ্বমি যথা জ্যোতি বিশ্বমি অ্যাদিশতেঃ। দিলাতি রিতি পূর্ব- লোকেলা বিশ্রমানিজেঃ। "গতিন্ত্র্যাশ্রেমে নান্তি বাহুজোকাকো কিচিছে। তুর্যাশ্রমে গতিঃ শোক্তা মুখকানাং স্বয়স্ত্রবা ॥" ইতি দস্তাত্রেয়াকেঃ। ব্রাহ্মণঃ প্রব্রেজ দ্ গৃহাদিতি সমসংবর্ত্তিবাধায়নবচনাচ্চ॥ ৬৩॥

্ ইতি এবিষ্ণুপুরাণ্টীকায়াং এধরস্বামিকতায়াং তৃতীয়ে২ংশে নবমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

### मन्द्रभाश्याश्या

পুংসঃ বোড়শসংক্ষারৈর্বর্ণ শ্রমনিবেশনম। অতন্তানাই দশমে বাহুলোন দ্বিজ্ঞাতির ॥ চন্তার আশ্রমা এব চাতুরাশ্রমাথ তদ্ধার কথিতঃ। এবঞ্চাতুর্বর্ণাক্রিয়াইপি পুংসঃ ক্রিয়াং বোড়শসংক্ষার-রূপাম্॥ ১ ॥ নিত্যামহরহঃ ক্রিয়মাণাং প্রভাবায়পরিহারকলাম্। নৈমিন্তিকীং রাহুদর্শনাদে নিমিন্তে সতি বিহিতানামকরণাং প্রভাবায়প্রদাম্ । কান্যাং কান্যায় হিতাং অগ্রিটোমাদিকাম্॥ ২ ॥ নিত্যনিমিন্তিকাশ্রিতমিতি কান্যাস্যাপ্রাপলক্ষণম্॥ । জাত্রস পুরুষ্থ জাত্রকর্ম চ আদিক্রিয়াকাঞ্ছং চ জন্মনঃ প্রাচীনং গর্ভাধানপুংসবনাদিক্র্যামমূহং পিত। কুর্মীত ইত্যর্থঃ। তদুক্তম্, "গর্ভাধানসূত্তি প্রশং সবনং স্পান্ধাহ পুরু।" ইতি ॥ ৪ ॥ দিক্রমানং ব্রাহ্মণানাং যথারন্থি যথোপচারং দৈবং দেবসন্থন্ধি কর্মা পিত্রাং পিতৃসন্ধিক কর্মা ক্রিয়াহ। অভ্যুদ্যশ্রান্ধাতেন বিশেষণ প্রদক্ষিণোপচারা-

দিনা ইদৰপিত্ৰ্যান্ধং কুৰ্যাদিত্যর্থঃ ॥ ৫॥ তদেবাহ, দধেতি। দৈবেন করাগ্রেণ॥ ৬॥ প্রাজাপত্যেন কনিষ্ঠামুলেন। তদুক্তম, "ক্নিষ্ঠাদেশিন্যঙ্গুতুলান্যগ্রং কর্ম্য চ। প্রজাপতিপিত্রক্ষদেব-তীর্থানালুক্মাৎ ॥'' ইতি অশেষর্দ্ধিকালেয়ু কন্যাপুত্রবিবাহে-ষি ভ্যাদিন। বক্ষ্যমাণে যু ॥ ৭ ॥ দশমে হহনি অতীত ইতি শেষঃ। **उक्तारणीठारस्थानकाग्। अटे**बन कालास्त्रत्रभाह् यथा, "नामरस्यूर मभगाक्ष कि ि मिष्ट्छि भार्थित । चामभग्रामथका ब्राह्मार मारम शूर्व তথাপরে ॥" ইতি। দেবপূর্বাং কুলদেবভানামপূর্বাকং কুলদেবতা-সম্বদ্ধ নাম কুর্যাদিতি শঙ্খেতেওঃ। নরাখ্যং পুরুষবাচকম্। তত্ত্ত প্রান্তে শর্মার্কাদিনংযুত্ম। যথা সোমশর্মা ইক্রবর্মা চক্রম্বপ্তঃ শিব-मामः हे जो मि ॥৮ ॥ व्यव्हों नर फिथा मि । व्यव्यव्य दि में जोत्रीत्र লজ্জাবহুম। অপশব্দং শুহুকেশাদি। জুশুপ্সং বাভংসরপম্। সমা-ক্ষরং দ্বাক্ষরচতুরক্ষরাদি নাম কুর্যাৎ ॥১০॥ অতিদীর্ঘণ বছরক্ষরং হৃত্য-মণ্পাক্ষরং প্রবণক্ষরং লক্ষন্তরাক্ষরম্ ॥১১ ॥ অনন্তরসংস্কারেনিছ-মণারপ্রাশনচড়োপনয়নাথৈয়ঃ সংস্কৃতঃ সন্ যথোজাং শুরুওজা-ষাদিলক্ষাং বিধিমাঞ্জিতা॥১২॥ মধ্যে নৈষ্ঠিকং ব্রহ্মচর্যামাহ, ব্রহ্ম-চর্ব্যেণেতি। বা গার্ম্থানিচ্ছায়ামিত্যর্থঃ। কালং কুর্য্যাৎ নয়েৎ ॥১৪॥ বৈখানসে বান প্রস্থঃ। ইচ্ছয়া আশ্রমাদাশ্রমং গচ্ছেৎ। যাবজ্জীবং মমায়মেবাশ্রম ইতি যদি পূর্বসঙ্কাপিতং তদা তত্ত্বৈ তিষ্ঠেৎ, নাশ্রমান্তরং গচ্ছেৎ। এতচ দৃঢ়বৈরাগ্যাভাবে দ্রেটব্যম্। ভত্তাপি **पृ**ष्ठितरको তৃ यिङः স্যাদেत । "यमश्दतर वितरक€ छमश्दतर প্রবেজ্ব ' ইতি শ্রুতেঃ ॥১৫ ॥ বর্ষেরেকগুণামিতি যবীয়স্যা এবোপ-लक्ष्मभ् अनुशा माक्रतमाश्वामकामा माजानूमिङ के प्वातिश्मप्रश-বধিকব্ৰহ্মচৰ্য্যস্য ত্ৰিংশন্বৰ্ষাদুৰ্দ্ধং নিবাহে "দশনৰ্ষা ভৰেৎ কন্যা অভ উদ্ধৃং রজস্বলা" ইতি নিন্দিতরজস্বলাবিবাহাপ্তেঃ। "অসপিশ্বাং যবীয়দীম্" ইতি মা,তেট। অতিকেশাং কেশগ্ৰস্তাম্। অকেশাং নিক্ষেশপ্রায়াম্ ॥১৬॥ নিসর্গতো গর্ভবেস্থায়ামেব। অবিশুদ্ধাং পাত-

কাদিদুটাম্। সরোগাং সহজরোগাম্। অকুলজাং দুক্লাম্। অতি-রোগিণীমুৎকটরোগিণীয় ॥১१॥ দুষ্টাং শূক্রাদিসংবর্জিভাম্। দুষ্ট-বাচাটাং বহুবিরুদ্ধদুর্ভাষিণীমূ। ব্যক্ষিনীং পিছতো মাতৃতশ্চ কুষ্ঠিনীং কুষ্ঠিপিতৃমাতৃজামিতার্থঃ। শাক্ষাণাের বাঞ্জনং পুংস্ববাঞ্জকং তদ্-যুক্তাম্ ॥১৮ ॥ ক্ষামবাক্যাং স্বভাবত এবাবসন্ন্বচনাম্। অনিবদ্ধে-কণাং পক্ষতিরসংরুত্তেক্ষণাং নিষিদ্ধেহুপি অনিরুদ্ধদর্শনাং বা নিদ্রা-য়ামপি অর্জনিমীলিতনেত্রামিতি বা। ব্রস্তাক্ষীং বর্ত্তুলনয়নাম্॥১৯॥ ষস্যা হসস্ত্যাঃ গগুয়োঃ কূপকৌ গতৌ ভবতন্তাং নোদ্বহেং। তাছ-শীমিতি পুনান্ধেধোহতিদোষখ্যাপনায়। কচিৎ পুন্তকেহ্যমৰ্দ্ধ-স্লোকো নাস্থোব। হসস্ত্যাশৈচৰ জায়তে ইতি পাঠে একৰচন সাৰ্যন্ ॥২০॥ পাপুকরজাং শ্বেনথাম্ । ২১ ॥ সংহতে ক্রের যস্প্রেম ॥ ২২ ॥ করালমুখীং দম্ভরাস্যাম্। পঞ্নীমিতি। মাতৃপক্ষাৎ মাতৃসন্তানাৎ পঞ্চনাং পিতৃপক্ষাং পিতৃসন্তানাৎ সপ্তমীং বিহায়েতি শেষঃ। "পঞ্মাৎ সপ্তমাদুৰ্জ্বং মাতৃতঃ পিতৃত্তখ।'' ইতি বচনাৎ। তগাচ মাতরমারতা তৎপিতৃপিতামহাদিগণনায়াং পঞ্চমপুরুষসন্তান-বর্ত্তিনী মাতৃপক্ষে পঞ্চমীত্যুচ্যতে। সন্তানভেদেহপি যতঃ সন্তান-ভেদমাদায় গণয়েৎ যাবৎপঞ্চম ইতি। এবং পিতৃপক্ষসপ্তমীতি জ্ঞে-য়ম। তাং নোছতেৎ ততঃ পরামুছতে দিতার্থঃ ॥২৩ ॥ তমেব ন্যাযাং বিধিং দর্শয়িতুম অফৌ বিবাহানাহ, ব্রাহ্ম ইতি। যথা, 'ব্রাহ্মে। বিবাহ আহূম দীয়তে শক্তালঙ্কৃতা। যজ্ঞস্য ঋতিজে দৈব আদায়া-ৰ্বস্তু গোদ্বয়ম্। সহোভৌ চরতাং ধর্মং প্রাজাপত্যো বিশিঃ মাতঃ। वाद्यः अविगानाना शाक्तर्यः ममग्रान्मियः। ताक्रारमः युक्तर्ताप रेभमाठः कनाकाष्ट्रनार ॥'' ইতি ॥ ২৫ ॥ এতেষামিতি । यहारं দেবলঃ, "আদ্যা বিবাহাশ্চ চত্তারে। ধর্ম্মান্ডোয় প্রদানিকা:। অশুল্কা ব্রাহ্মণার্ছান্ট ভারমন্তি ছয়োঃ কুলম্। গান্ধর্মরাক্ষসে রাজ্ঞ আহরো বৈশাশুদ্রয়োঃ। স পাপিষ্ঠো বিবাহানাং পৈশাচঃ প্রথিতো-২উনঃ ॥'' ইতি। অন্তাং পৈশাচম্ ॥২৬॥ সমুদ্বহেৎ কুৰ্য্যাৎ। এবা

পূর্মে জিলকণা সমাক্ নিধিবৎ উট়া সতী মহাকলং দদাতি। এতৎ সমাগুঢ়ং মহাকলমিতি পাঠে এতদাশ্রহ্যমূঢ়ং প্রতিপাদিতং সদি-তার্থঃ ॥২৭॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণটীকারাং শ্রীধরস্বামিক্তারাং তৃতীয়েহংশে দশমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

### वकामर्गा ३ था यः ।

গর্ভাধানাদিনা পুংসঃ সংক্তম্য কৃতিং ক্রবন্। একাদশে সদা-চারান্ প্রাহ জীহরিতোষণান্। ব্রান্ধে মুহুর্ত্তে সূর্যোদয়াৎ পূর্বং তৃতীয়ে মুহূর্ত্তে। অর্থকান্ত ধর্মস্তাবিরোধিনম্ ॥৫॥ তয়োর্ধমার্থমো-দু স্টাদৃষ্টবিনাশায় ছন্টাছন্টবিনাশনিব্লন্তয়ে। তাদর্থো চতুর্থীত্যত্রার্থ-শব্দস্য নিব্বক্তেরপি বাচকত্বাৎ। যদা বিনাশমপনেতুমিতার্থ:। ক্রিয়া-র্থোপপদস্য চ কর্মাণি স্থানিন ইতি চতুর্থী। যথা রঘৌ বনং গস্তুমি-তার্থে 'বনায় পীতপ্রতিবদ্ধবংসাম্' ইতি। দৃষ্টাছষ্টবিনাশায়েতি পাঠঃ স্থামঃ 1 ত্রিবর্ণে সমদর্শিতা পর্মপরাবিরোধেন ভবত্তি সম-ছষ্টি: ॥৬॥ ধর্মমপীতি ব্যাত্রচৌরাদিনমাক্রান্ততীর্থণমনাদি অস্ক-খোদর্কং দুঃখোত্তরফলকং লোকবিদ্বিটং সৌত্রামণ্যাদৌ স্থরা-গৃহাদি ॥৭ ॥ কল্যমুষ্দি মৈত্রং মিত্রাধিষ্ঠিতপায়ুকুতং মলোৎসর্গাদি গ্রামারেখ ত্যাং তদসন্তবেষু আবসপাৎ দূরে ॥৮॥ গৃহাঙ্গণে সদা-সঞ্চারদেশে ॥ ৯ ॥ আত্মছায়ামিতি। এতান্ পুরস্কৃতা ন মেহেত ইতার্থঃ ॥১০॥ লেপসম্ভবাং গৃহলেপনগতাম্॥১৫॥ অন্তঃপ্রাণ্যবপ-রঞ্জিটাদ্যুশুহতাম্ অনুপ্রাণ্যবপরামিতি পাঠে অণুভিরতিস্কৈরঃ প্রাণিভিরবপরাং যুক্তামিতার্থঃ। ७॥ একাদ্যা মৃদঃ পৌচোপপা-দিকাঃ॥১৭॥ সহশোচমুক্ত্র বক্তন্যাচমনপরিভাষামাহ, অচ্ছেন

অনাবিলেন আচামেতেত্যাচমনং প্রস্তুত্য তদ্য পূর্বার্ক্কমাহ, মৃদ-मिकि। जृत्या मृत्याननगर ॥১৮॥ उदा निष्णानिकां खित्योहः मन् भूनः भाषावज्यका मलिल जिः भिरविष्ठाखाः । मूथ हिः भति-মার্জ্জরেৎ ॥১৯॥ শীর্ষণ্যানি শিরঃস্থানি স্বানি ইক্রিয়চ্ছিদ্রাণি আল-ভেৎ স্পৃশেৎ হৃদয়ঞ্চাপাসংজয়ন্ ইতি পাঠে মৌনীভূত্বেতার্থঃ। অত্র বিশেষমাহ, দক্ষঃ 'প্রকাল্য পাদে হস্তো চ ত্রিঃ পিবেদমুবীক্ষিতম্। সংর্ত্যাপ, ঠম্লেন দিঃ প্রস্ত্যাৎ ততে। মুখম্। সংহতাভিত্তিভিঃ পूर्वमामाञ्च मम्भ्रम्थः । अकृष्ठेन अमिना। घाने भणामनस्तम অঙ্গ ষ্ঠানামিকাভ্যান্ত চক্ষুংশ্ৰোত্তে পুনঃ পুনঃ৷ কনিষ্ঠাঙ্গু ষ্ঠতো নাভিৎ হৃদয়ন্ত তলেন বৈ। সর্ঞাভিস্ত শিরঃ পশ্চাদাসূ চাগ্রেণ সংস্পৃদেশৎ"॥২০॥ অথ প্রাতঃস্থানস্য মলাপকর্ষণরূপস্য শৌচোক্তে চ উজপ্রায়ত্বাৎ। নিত্যোদকী ভবেৰিপ্ৰ ইতি পূৰ্বং সঞ্জেপেণোজভাৎ সন্ধ্যোপা-मनरहामानीनाथ मृर्य्यानग्राखमग्रश्चमरणत्नाकचाद उन्नविजनश कियाकाश्वमार, आठास देखि ॥२১॥ সোমসংস্থা অগ্নিটোমাদ্যঃ সপ্ত। হবিঃসংখা অগ্নাধেয়াদাাঃ। পাকসংখাঃ অফকাদাাঃ। যথাহ গোতমঃ, অইকা পার্বশাদ্ধম্। ভাবেণ্যাগ্রহায়ণী চৈতাশ্বযুজীতি मश्र लाकमश्रद्धाः, अध्यादिश्रमशिरहांजः पर्मालीर्वमाम्याश्रद्धाः । র্থ্যান্যানি নির্চুপশুবন্ধনোত্রামণী চেতি সপ্ত হবির্যজ্ঞসংস্থাঃ। অগ্নিটোমেভাগ্নিটোম উক্থবোড়শী বাজপেয়োহভিরাত্রম্, আ-প্রোর্যাম ইতি সপ্ত সোমসংস্থা ইতি ॥২৩ ॥ মাধ্যন্দিনীয়স্মানতর্পণা-ন্যাহ, নদীতি। দেবখাতো মনুষ্যাদিকতো হ্রদঃ। স্নায়ীত স্নায়াৎ। কৃপেরু কলসাদিভিক্লজ্বেন ভোয়েন ভুবি তস্তটভূমৌ স্নায়াৎ। তদসংভবে নদ্য। উদ্বতন শীতলোদকেন গৃহ এব স্নায়াৎ। ততা-भा**गको** উक्षाम् कि उज्जाना एको मञ्जूञाना मि कूर्या मिछाना-म्ब जिल्हा । अक्षम् ॥२०॥ जिवार प्रवामीनार जीर्धन भूरकीरकन ॥२७ ত্রিরপ ইতি শাখাভেদব্যবস্থিতমিদম্। তত্ত ভূর্দেবান্ ভূবর্দেবান্ স্বর্দেরাংস্তর্পরামীতি এবং তিরপো বর্জয়েৎ দদ্যাৎ তথ্যীগামপি

ভুরাদিপদযোগেন ত্রিরপো দদ্যাৎ প্রজাপতিং তর্প্যামীতি সকৃৎ॥২৭॥ পিতৃণামিতি ভ্রাদিপদযোগেন সামান্যপিতৃ**ণা**ং তৎ প্রয়োগং বিনা স্থপিতৃণাঞ্চোর্খঃ॥২৮॥ পৈতেণ ভীর্থেন তৰ্জনীমূলেন কাম্যং ফলনিশেষার্থম্॥ ২৯॥ "হে এক্ষন্! ভাশ্ব-দাদিরপায় তৃভ্যং নমঃ" ব্রন্ধভামত ইতি পাঠে বেদৈঃ প্রকাশ-মানায়েতার্থঃ। জগৎসবিত্তে। বিশ্বজনকায়, কর্মদায়িনে কর্মপ্রবর্ত্ত-কায় ॥৩৯ ॥ অপুর্মমনন্য প্রকৃতিকম্ অগ্নিহোত্রং ব্রহ্মাদিপঞ্ছিতিকং দেবযজ্ঞাখাং হবিহেশিং কুর্যাদিভার্থঃ। অপুর্বমিতি পাঠে প্রোক্ষণপূর্বকমিতার্থঃ ॥ ৪১ ॥ ভৃত্যজ্ঞমাহ, তক্ষেষং হুতশেবং মণিকে জলাধারসলিধৌ অন্তাঃ পর্যান্যায় চ ক্ষিপেৎ।. পৃথীপর্যা-ন্যান্তা ইতি পাঠান্তরম ॥ ৪২ ॥ গৃহস্ত দারে ধাতুর্বিধাতুক মধ্যে ব্রহ্মণঃ ॥৪৩ ॥ প্রাচ্যাদিযু গৃহস্থেতি সর্বকাম্বয়: ॥৪৪ ॥ ধ্রম্ভরি-विन निर्वाल इंडाम्बरः। उत्पवः भृश्तावादान विनक्षकः, ইদানীং তদিতরদেবতাকাং বলিমাহ, বৈশ্বদেবসিত্যাদিনা ভুবি मानना इंडारखन निरम्यानाया प्रता उत्माना यज वली তং ততঃ কুর্য্যাৎ ॥ ৪৫ ।। তদেবাহ, বায়ব্যে কোপে বায়বে বলিং প্রক্রিপেৎ। বারবে ইতি পাঠে বীক্ষয়া সমস্তাসু দিক্ষ বায়বে বায়ুমুদ্দিশ্য প্রক্ষিপেদিভার্থঃ। ততে। দিশাং, প্রাচ্য मिरभ, मिक्क विष्य मिरभ, ইত্যामिन। विलश किरअर । 86 I মধ্যে ব্রাহ্মণাদিত্রয়াণামু উত্তরতঃ বিশ্বেভ্যো দেবেভ্য ইভ্যা-দিনা বলিং ক্ষিপেৎ, দক্ষিণতো ভূতপতাদীনামিতি ৷ ৪৭ ৷ বেষামন্ত্ৰ নাত্তি বেষাঞ্চ সভাপানে নাত্ৰ সিদিঃ পাকসাধনং নান্তীত্যৰ্থঃ ৷ ৫১ ৷ চতুৰ্দ্দশ ইতি এব দেব ইত্যাদি শ্লোকোক্তঃ কীটপতঙ্গান্তঃ চতুর্দ্দশসংখ্যাকে। ভুতগণ:। স্বার্থে ডপ্রভার আর্বঃ। यद्या देनवमकेविधर, তৈর্ব্যগ্রো। ন্যঞ্প পঞ্বিধং মামুক-বৈষকবিধমিতি \* চতুর্দ্ধশো ভূতগণঃ, তত্র স্থিতা আধিলা ভূত-मश्चां खडान वां खत किरण बांश ॥ ७७ ॥ यहा भाग वां खत वां का ममाधा । भ थक्

পৃথক্ বলিদানং প্রতীয়তে তথাপীত্যুকার্যা নরে৷ দদ্যাদিতি বাচনিকমে ৈকবলিদানমিতি । ৫৪ । অপাত্রাঃ আদ্ধার্যোগ্যাঃ। পুংস্থার্থম ৷ তেষাঞ্জু বি দদ্যা ৷ এ৫ ॥ গোদোহমাত্রং ঘটিকা-চতুৰ্থাংশম্॥৫৬॥ তত্ৰ তিমান্ কালে॥৫৭॥ অভিগিল্জণ-মাহ, অভ্তাতেতি। নৈক্ঞাননিবাসিন্ম এক্ঞামস্বভিন্ন ॥ ৫৯॥ নিত্যত্বার্থমপুজনে নিন্দামাহ। অকিঞ্চনাদিশুণবিশিষ্টমতি পিমসং-পুজা ভক্তমন্নং ভুপ্লন্ ভুঞ্লানোহধোগছতি ভোক্তুকামমিতি পাঠে অভিথেবিশৈষণম্॥ ৬০ ॥ স্বাধ্যায়াদিকমপৃষ্ট্য চরণং বেদাবান্তর-শাখাম আচারং বা অপৃষ্টা অভ্যাগতমতিথিম ॥ ৬১॥ পিত্রপং নিত্যশ্ৰাদ্ধাৰ্থ আশয়েৎ ভোক্ষেৎ। বিদিত আচারঃ সংভৃতিঃ কুলঞ্ যস্য। পঞ্চাজ্ঞিয়ং পঞ্চযক্তকাবিণম্ ॥৬২॥ অনাগ্রং ভোক-নাদ্যনবশিষ্টম্। অত চোক্তম্ "গ্রাসমাত্রা ভবেদ্কিকা অগ্রং গ্রাস-চতুটীয়ম্। অথাণােব তু চতারি হস্তকারং প্রচক্ষাতে ॥" মনুষাে– ভাো হত্তেতি মন্ত্রেণোপকম্পিতমন্নং হস্তুকারোপকম্পিতম। নিবা-পভূতং পৃথক্ৰপেত্যাপিত্যু ॥ ১৩ ॥ ইত্যেতেই তিথয় ইতি অজ্ঞাত क्लनामानमिजादिन। उर मत्ना अन्तात्रकर भृगेनास्यत्नाक এক:, পিত্রর্থান্নভোক্তা চাপরঃ, হস্তকারসং প্রদানঞ্চান্য ইতি ত্রয়ঃ ৷ পূর্দমাশ্রায়োক্তাশ্চ প্রিব্রাড ব্রহ্মচারিণে। ভিক্লবো ভিক্ল -জীবিনশ্চেত্যেকো বর্গঃ. ইত্যেতাংশ্চত্রঃ পুজয়ন মনুষ্যযজ্জাপা-ন্ত্ৰাল্য চাতে ॥ ৬৫ ॥ নিন্দাৰ্থবাদেনাতিণিপূলায়া আবশ্যকত্বমুপদং-হরতি, অভিধিরিতি ত্রিভি: ॥ ৬৬ ॥ স্থাসিনী কুতবিবাহা পিতৃ-গৃতস্থা কন্যা, চরমং পশ্চাৎ গৃহী ভুঞ্জীত ॥৬৯। তথাতাশী ত্রিবিধ-স্নেহীনঃ সন্ ভোকনশীলঃ অজ্পী গায়ত্তাদিমন্ত্রপহীনঃ। বালা-দিতঃ প্রথমং ভুঞ্জানঃ। শৃক্র পুরীষং ভুঙ্কে ॥ १১॥ প্রসঙ্গাৎ ভোজনপ্রকারমাহ, তথাদিত্যাদিনা প্রাণাপ্যায়নায়েতান্তেন ॥१२॥ অরিষ্টমন্ডভাত্তরং তদ্য শান্তিঃ গৈরিপক্ষাণ:মুৎপক্ষযোগাণামভি-চারিকা বিনাশশীবাঃ ॥१७। প্র এখ উদ্ভ মুখে। ব, ভূঞা গ ॥ ११॥

আসন্দী দারুময়ং ত্রিপদাদি। অদেশে কুংসিতে স্থানে, অকালে সন্ধাদিসময়ে। আকাশ ইতি পাঠে অনারতে। অগ্রমগ্রয়ে দত্ত্বা পরিশিকীস্যাল্লসাধ্যং কিঞ্চিদ্যো ক্লিপ্তাচ ন ভুঞ্জীত পরিশিকীস্যাল্ল-স্যাগ্রং নাগ্নে ক্ষিপেদিতি বিধিঃ ॥৮০॥ মন্ত্রাভিমন্ত্রিতং শন্তং ভুঞ্জী-তেত্যসুষকঃ। শুদ্ধং জলোপদেকং বিনা পকং শাকাদিকং সঞ্জা-দিকং বিনেতি শেষঃ ॥৮১॥ হ্রীতকেভাঃ অপকলেহাাদিভাঃ বাদরি-কেভ্য ইতি পাঠে তু বদননিকারেভ্য ইত্যর্থঃ। গুড়পকেভ্যঃ লড়্ডু-কাদিভাঃ। গুড়ভক্ষেভা ইতি পাঠে স এবার্থঃ। উদ্ধৃতসারাণি পি-ণ্যাকাদীনি ॥ ৮২॥ নাশেষং নিঃশেষং ন ভঞ্জীত ॥৮৩॥ তন্ম ाः অন্নে দস্তচিক্তঃ সন্ ॥৮৪॥ বলাবেবিগো ন মুঞ্ডি ন ভাজতি, সর্বাদা তদাজো ভবতীতার্থঃ ॥ ৮৫॥ তানিন্দামনিষিদ্ধং মহামৌনং সকে-তাদিরহিতম্ ॥ ৮৬ ॥ মূলতঃ কফোণিপর্যারম্ ॥ ৮৭ ॥ প্রনেরিতো বহ্নিভ্সা দক্তাবকাশং ময়া ভুক্তমন্নং জবয়তু। ততশ্চান্নরসেন পার্থিবং দেহধাতুম আপ্যায়য়ন্ত্রিত ॥ ৮৯ ॥ পঞ্চতারগ্রহপ্রার্থনং মে মৎসম্বন্ধিনাং ভুগ্যাদীনাং বলাগারমন্ত্র ॥ ৯০ ॥ অরোগো রোগা-ভাবঃ ॥ ৯२ ॥ विक्ध् र्यथा সমন্তদেহাদির প্রধানভূতো ময়োপীস্থতে, তেনোপাদনেন সভ্যেন প্রমার্থতোহিপি সভ্যভ্তেনার্ম আবোগ্য-দং সং পরিণামমেজিভাল্বয়ঃ॥৯৩॥ এবং বিষ্ণুরক্তেভাগদাবিপি गाकाम ॥ ৯৪ ॥ मण्डाञ्जामीज व्यामिण्यम कीजापनति शत-গ্রহঃ। অত এব বিশিন্টি, সন্মার্গাদ্যবিরোধিনেতি ॥৯৬॥ সন্ধ্যো-পান্তে বিশেষমাত, দিনেতি ৷ তথাচ স্মৃতিঃ, 'প্রাতঃসন্ধ্যাৎ সনক্ষ-ত্রাম উপাদীত যথাবিধি। সাদিত্যাং পশ্চিমাং সন্ধ্যামদ্ধান্তমিত-ভাস্কাবম্ ॥'' ইতি ॥ ৯৭ ॥ সূতকং জন্মনিমিন্ত্মশৌচম্। অশৌচং শাবং, বিভ্রমো বৈচিন্তাং, আতুরমাতৃবন্তং রোগক্কতং, ভীতিরপায়া-দ্যাশস্কা তেভ্যোহনাত্র ॥ ৯৮ ॥ সূর্য্যোণাড়াদিতো যশ্মিন্ স্থপ্তে সূর্য্য উদেতি, সূব্যেণ তাক্তো যশ্মিন্ স্থপ্তে সূর্ব্যোহস্তমেতি। আত্র-ভাবাদিতি সূতকাদেরপলকণম্। প্রায়শ্চিন্তীয়তে পাত্কী ভব-

তি ॥৯৯॥ বৈশ্বদেবনিমিন্তং বৈশ্বদেবকর্মফলসিদ্ধার্থম্। পত্নীমন্ত্রং বিনা বলিং হরেৎ পড়াা মার্দ্ধং বলিং হরেদিতাপি পাঠঃ কুত্রা পি॥১০২॥ তত্রাপি সায়মধি॥১০৩॥ প্রহাঃ প্রহারং প্রণাম ইভার্যঃ || ১০৪ || সূর্যোণাস্তং গচ্ছতা উঢ়ঃ প্রাণিত ইব সূর্য্যাস্তমন-স্তরমাগত ইত্যর্থঃ ॥ ১০৬ ॥ শয়নং কমলাদি। প্রস্তরঃ কটত্রণাদি, মহী স্থলমাত্রমপি । ১০৭ । অক্টিডামবিদীর্বাং গ্রুদস্তময়ীং তদভাবে দারুময়ীমপি॥১০৮॥ স্বপতঃ প্রাচ্যাৎ বাম্যায়ালৈক শিরঃ সদা শস্তমিতাম্বয়ঃ | ১১০ | ইদানীং বিশিষ্ট যোষিদামনমাত, যাবদধ্যায়সমাপ্তি। ঋতাবিতি পুংনামক্ষণি দশ অশ্বিনী-ক্তিকা-রোহিণী-পুনর্যম্পুষা-হস্ত-অনুরাধা-শ্রবণ পর্যভাত্রপদা-উদ্ধরভা-অপদা চ। জ্যেষ্ঠ্যুগ্রামু রাত্রিয়। ঋতুকালমারভা ষষ্ঠাইম্যাদিয়ু রাত্রিয়। তত্রাপি জ্যেষ্ঠায় র্দ্ধাসু উন্তরোত্তরং শুভাস্থি-তার্থঃ । ১১১ । অস্তাত্মকৃতর্মানান্। রক্ষলাং চতুর্বাতি-প্রভারুপরতরজ্ঞাং অনিষ্ঠামরূপজাতেছাম্ অপ্রশৃস্তাং পরি-বাদাদিদূবিতাম্ ॥ ১১২ ॥ অদকিণাম্ অন্তুক্লামু অন্কামাম্ অন্-পুরুষাভিলাবিণীয়। এভিব্ল্যুমাণেগ্র পৈযুতিঃ পুরুষো ব্যবায়ৎ ब्रह्मिक्जिन्द्रत्रशास्त्रः ॥১১७। अन्यार्गानी असोनिर्गात्नी। अर्गात्नी मुर्थाप्ती खेवधर त्रवाताकीकतनतमायनामि प्रतामीनामाध्यस राहर স্থিতঃ। আত্রমীতি পাঠে স এবার্থঃ॥ ১১৮॥ অধন্যো ধনহানি-कुर | >२> । यम। मनमा न गत्कर उमा वाहा उमिलमारः किर वक्तता हे छार्थः। পরস্ত্রীবানায়িনামন্তিবদ্ধোহপি নালি, ক্রমিকীটা-দিযোনির পরিবর্ত্তান্ত ইতার্থ: ॥ ১২২ ॥ পরদারের গাতিঃ গমনং যস্ত স প্রংসাং মধ্যে সীদতি। উভয়ত্র ইহ পরত্র চ। তদেবাহ, মৃত ইতি ভীতিদেতি পাঠঃ মুগমঃ ॥ ১১৩ ॥

ইতি ঐবিষ্ণুপুরাণটীকায়াং ঐধরস্বামিরভায়াং তৃতীয়েহংশে একাদশোহধ্যায়ঃ সমাঞ্জঃ।

## चामरणा३ थायः।

ব্রাক্ষং মুকুর্ত্তমারভ্য নিশীধান্তং নিরূপিতাঃ। সদাচারা বাদশে তু তএবানিয়মেরিতাঃ। প্রায়েণ তু গৃহস্থানাং ত্রিবর্গপরচেত-সাম্। দৃষ্টুভিউপ্রধানানাং সন্ধাণানিহোক্তরঃ ॥ সা অনুপহতে অভয়ে প্রশস্তা বিষণুক্রান্ত। দুর্বাদয়ঃ॥২॥ প্রস্নিধা: অরকাঃ প্রসিদ্ধা ইতি পাঠে অলক্তাঃ কেশা যস্য ! ৩ ৷ অন্যশ্ৰিয়ং रेरात श्र ना जिलास । न ना नी ना श्र कृत ऋ । या विषय निर्मित जि সহ মৈত্রীং ন কুর্ব্বীত। বহুভিবিরং যস্ত। অভিকীটকৈরতান্তং की हे तथ भी कृटिक: । की कटिक ति कि भारि क्रामण देखित का बंध । तक्की বেশ্যা। কুন্তঃ অপেলাভোৎসিক্তঃ। অন্তক্থো মিথ্যা-বাদী ॥ ৬॥ শঠঃ কুটিলঃ॥ १॥ জলৌঘস্ত বেগমগ্লে। অন্যশ্মিন্ व्यनविश्व नावशाहर न व्यविष्य । व्यमीखः व्यविनात्नाख्य ॥ ৮ ॥ न क्कीयांत्वाधिकत्त्रकः अभःइउग्रत्था जुडामि न क्याधि। ।। न मृपनोग्राम मर्फराष्ट्र व्यामार्थार्थितः मृद्या-দীনি শন্তানি ব্রাহ্মণাদীনি নাভিবীক্ষেত। জ্যোতীংব্যমেধ্যা-শস্তানীতি পাঠে জ্যোতীংৰি চক্ষুঃপ্ৰতিকুলানি অমেধ্যানি পুরী-यानीनि जमखानि जमझनानि | >> । भवर ठकातां उपनक्षिक न তংকুর্যাৎ ন জুপ্তব্দেৎ। তত্র হেতুঃ। শবগদ্ধে হীতি বিশ্বস্থায়ী-ষোমাত্মকত্মেনাগ্রাংশে উয়ুণি প্রাণেন সহ গতেহবশিষ্টাম্য দেহস্ত শবস্য গল্প: সোমজ ইতি "অগ্নিক্ষা রসঃ সোম: শরীরং তত্ময়ং यजः" इंजि वहनार ॥ १२ ॥ श्रृका श्रुक्त अञ्च्याः ॥ १८ ॥ जुकान् कू िलान् न त्ता हराइ तराइ वालान् मू छे मृशान् मर्भान् ..वा নোপসপেত তইসংমুধং ন গচ্ছেৎ॥ ১৬॥ অতীৰ জাগরাদীন্ ন চ সেবেত নাভ্যমেছ। স্থানং গতিনির্ভিম আসনমুপবেশনংশ্যাম্

ইতি শয়নব্যবায়যোক্ৰলক্ৰম ব্যায়ামং আমম্ 🛮 ১৭ 🖟 অবশ্যায়ং হিমম্।১৮॥ উপস্পৃশেৎ স্বাচামেৎ। মুক্তকচ্ছ: মুক্তপশ্চাদঞ্চল:॥১৯॥ দ্বিজবাচনিকে পুণ্যাহবাচনে ॥ ২০॥ ইষ্যতে যথা কথঞ্চিদমুমন্তে ন বিধীয়তে॥২২॥ তদেশহ নেতি ন কলিং কলহম্॥২৩॥ পুজ্যানামভিমুখং পাদং ন নয়েৎ ন প্রসারয়েৎ 🛭 ২৫ 📗 অপ-সব্যম প্রদক্ষিণম্। বিপরীভান্ অমঙ্গল্যান্ প্রদক্ষিণং ন কুর্য্যাৎ ॥২৬॥ সিংহানকং কঠিনঃ শ্লেষা। ক্ষুডমিতি কেচিৎ। মহাজনে মহাজন-সমীপে ॥ ২৯॥ ঈরুরিসহিষ্ণুঃ তাশ্চ বোবিতে। নাধিকুর্যাৎ কুত্রাপ্যধিকারিণীর্ন কুর্যাৎ। তাস্বিতি পাঠেইন্তঃপুরাধিকারং ন কুর্য্: দিত। খ:॥ ৩০॥ সাধুনের বহুলাতান্ উপাদীত নেতরান্। कारल সময়োচিতম্॥৩২॥ বিদ্যাদিরজানাং বিনয়ত্তহকর্ক-শিকা ভদবিত ইতাৰ্থঃ ⊪৩৫ ∥ যুগমালেং হতচতুইটয়ম্॥৩৯ ॥ দোৰহেতূন্ উক্তান্ অনুক্রাং 🕫 ॥ ৪০ ॥ পাপে২ পরাধিনি অপাপঃ च्यत्माक्षां भक्तवज्ञाविति श्रियज्ञावा ॥ ८১ ॥ त्य कामानीनांश न গোচরে নাম্পদং ভবস্তীতার্থঃ। অমুভাবৈঃ সত্যাদিম্বভাবৈধৃতি। ''সতোনোকুস্কিত। ভূকিঃ'' ইতি জ্ঞতেঃ॥৪২॥ উপদেশসার্মাহ প্রাণিনামিতি॥ ৪৫॥ •

ইতি জীবিফুপুরাণটীকায়াং জীধরস্বামিরুতায়াং তৃতীয়ে২ংশে দ্বাদশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

## वद्याप्रणाभ्धायः ।

ত্রোদশেহণ আংদ্ধানি সনিমিস্তান্যবর্গন্। প্রেতক্রিয়ান্তণা তাস্ক্র যথার্হমধিকারিণ:। পিতৃঃ পুত্রজন্মকালে সমিহিতসা। ১॥ সবাক্রমাৎ প্রদক্ষিণক্রমেণ। নানামানসঃ অন্যান্মিন্ উইপমপুত্রাদৌ মানসং যস্যান:। আদ্বসময়ে ত ছুশো ভবেদিভার্থঃ॥২॥ কায়েন

প্রজাপতিতীর্থেন 🛮 ৬ ॥ সর্মরন্ধীর্দর্শয়তি কন্যাপুরেতি 🗷 ৫ ॥ পুত্র-माानियूथनर्गात व्यथमाज्य नर्गात। उक्र बनाकाल मिनिश्चिमाव পিতৃত্তথৈবোক্তত্বাৎ ॥ ৬ ॥ স্লানৈঃ স্বানসাধনৈঃ সচেলাঃ পূৰ্ব-ধ্তবস্ত্রসহিত। এব স্নাতাঃ ॥ ৮ ॥ অমুকায়েতি নামগোরোপ-वाकानम् ॥ ৯॥ (गांजिः ममर गवार अदिमममद्या अउक मिवा-দাহবিষয়ম্। কটধর্মান্ প্রেতক্ত্যানি অন্তরন্তৃণশ্যা। ॥১০॥ অনু-দিনং যাবদশৌচং ভক্তম ওদনম্অতঃ পিটাদিবৰ্জনমায়াতি। অমাংসমিত্যক্তেমা ংসবাতিরিজাকুজ্ঞ। । ১১ ॥ বিপ্রভোজনম্। এতচ্চ সপিওসমানোদকবিষয়ং সপিঞাদিভেদশ্চ কুর্ম্মোক্তঃ "সপিঞ্চা তু পুরুষে সপ্তমে বিনিবর্ত্তে। সমানোদকভাবস্ত জন্মনাম্নোরবেদনে" ইতি ॥১২ ॥ স্ক্রক্রিয়াণামুপাসনং পঞ্চতভাদীনাম ॥১৫ ॥ বালে-২জাতদত্তে দেশান্তরস্থ ইতি সংবৎসরাদুর্দ্ধিং সদ্যঃশৌচং সংবৎ-সরাভান্তরে তু অশৌচান্তে ত্রুতে ত্রিরাত্রম। দেশান্তরন্ত "মহা-নদান্তরং যত্র গিরিব। ব্যবধায়কঃ। বাচে। যত্র বিভিদ্যন্তে তদ্দে-শান্তরমিষাতে' ইতি। এতচ্চ মাতাপিত্ব্যতিরিজ্ঞবিষয়ম্। তদুজন্। "পিতরৌ চেন্মতৌ স্যাতাং দূরতস্তদ্দিনমারভা দশাহং সূত্কী ভবেৎ' ইতি। মুনৌ যতৌ। ইচ্ছাত ইজিবিশেষণাদনিচ্ছয়া মতে यरथाक्तमानामि कार्यम्। "यिन कन्छि अभारमन खिरय्जाश्चाम-কাদিনা। তস্যাশোচং বিধাতবাং কর্ত্তব্যা চোদকক্রিয়া ॥" ইতি ·সাতেঃ॥১৭॥ মৃতে। বন্ধুঃ সপিণ্ডো যস্য তৎকুলস্যান্নং দশাহৎ ন ভোক্তবাম্। তৎকুলস্য ভদনভোক্ত্র বাবদশৌচং দানাদি নিবর্ত্ততে ॥ ১৮ ॥ এতৎ পূর্ব্বোক্তদশাহঃ ॥১৯ ॥ আদ্যানেকোদ্দিক-শ্ৰাদ্ধ সাহ অযুক্ত ইতি। একং ত্ৰীণীত্যেবং বিষমসংখ্যান্। আদ্যে অশোচানন্তরং প্রথমেহহনি। অন্ত ইতি পাঠে অশোচান্ত ইত্যর্থঃ। ''আব্দানেকাদশেহহনি'' ইতি সাতেঃ॥২০॥ দ্বিজভোজনাদনস্তরং বটর্ণবিপ্রাদিভিবার্ঘাদ্যাঃ ক্রমাৎ প্রফারাঃ ততত্তে শুধারন্ ইত্য-ষমঃ। ব্রাহ্মণাদি ভিশ্চতুর্ভিব বৈশ্চত্বারি ক্রমাৎ প্রেইব্যানীত্যর্থঃ ॥২১॥

**एका**नंखतरमव निकथर्मार्क्करेनकीरवद कीविकार्थर निकथरमाणान-র্জনং কুর্যাদিতার্থঃ ॥ ২২ ॥ অতঃ প্রথমমাসাৎ পরং প্রতিমাসং मृত তিথে वावनक्षम् आञ्चानमावाहनम् आफिनाक्निनादी कत-ণাদিক্রিয়া দৈবনিয়োগো বৈশ্বদেববিপ্রামন্ত্রণঞ্চ তত্রহিতমু॥২৩॥ ভুক্তবৎস্থ বহুষু অযুজেগ ভোজয়েদিত্যুক্তত্বাৎ প্রেভার্যৈক এব পিশ্রে দেয়ঃ | ২৪ | প্রশাসাভিরতিরিতি অভিরম্যতামিতি যজ-মানোকৈছি কৈরভিরতাঃ সাইতি বক্তব্যমিতার্থঃ। অক্ষযামমুক্সো-তি একোদ্দিটবিশেষবিষয়মেতং। উপতিষ্ঠতামিতাক্ষযাস্থানে বিপ্র-. বিসর্জ্জনে২ভিরমাতামিতি বদেং। ভুয়স্তে অভিরতাঃ শা ইতি স্মৃতেঃ ||২৫|| তক্ষিন্ কালে পূর্বে সংবৎসরে তৎসপিঞ্চীকরণম্ ||২৬|| পাত্রচতৃষ্টয়স্য বিনিয়োগমাহ পাত্রং প্রেডসোতি 1২৭॥ আদ্ধর্থমিঃ স্বধাকারাদিভিত্তৎপূর্মান সপিগুরিকতঃ পূর্বেগ যেষাং তাংস্ত্রীন পুল্লেং। চতুর্থস্ত নিবর্ত্ততে তম্মাৎ তৃতীয়াৎ পুরুষাণাং নাম धृदुष्ठीि अध्यः ॥ २ अ॥ पूर्यान्त्र क्ष्माचार्यन क्रियां कर्त् न् चाह, পত্ৰ ইতি সাৰ্দ্ধৈক্সিভিঃ ॥৩০॥ পূৰ্ব্বোক্তানামেৰ স্ত্ৰীভিঃ মুখ্যাবুকল্প:-ভাবেৰ ক্ৰিয়া কাৰ্য্যা ইত্যৰ্থঃ। সংঘাতঃ দাৰ্থঃ পাত্ৰিকসমুদায়ঃ। তত मुख्या जनसर्गिष्ठः (अखिज्या कार्याख्याः। ममान अवतम-মানশাস্তাদিরূপ: সংখাত ইতি কেচিৎ ॥৩২॥ উৎসন্না বন্ধবো ঋক্-থানি চ যেষাং তেষাম। উৎসন্নবস্কুরিক্থাদিতি পাঠে উৎসন্নবস্কোঃ প্রেক্স রিক্পাদিতার্থঃ। কর্ষ্বাবস্থাং বক্তাং ক্রিয়াত্রৈবিধ্য- " মাহ পূকা ইতি ত্রিভিঃ॥৩৩॥ আদাহাদ্দাহপূর্কাবধিকাশ্চ তা বা-र्याञ्चर्या निक्क्य मी निवरस्थ योगार जाक जान। यहा जानमस्याप्त हा-স্তেহ স্মিরিভ্যাদাহং শাশানং তেন প্রেডদাহো লক্ষ্যতে। আদা-इक्ष वाद्याञ्चर्थामिन्नार्भन्छ जामारखी यात्रार जाः । मार्शमारभी वास-ভবাঃ প্রবাঃ ক্রিয়া ইতার্থ: ॥ ৩৪ ॥ তত্ত্র পূর্বাঃ ক্রিয়াঃ পিত্রা-দিভিরপি যথার্ছং কর্ত্তব্যাঃ॥৩৫॥ পুতাটেদ্যরেবোর্জনাঃ মধ্যমা-স্ভুট্মের্যথাসম্ভবং কর্ত্তব্যা ইতি গম্যতে ॥ ৩৭ । সূঁতাংহনি চেতি

চকারাদেউকাদিয় পার্স্কণিধিনা চেত্যর্থঃ ॥ ৩৮॥ তন্মাদুস্তর-ক্রিয়াবাহুল্যাদুস্তরক্রিয়া যাঃ তাঃ তৎকালবিধীন্ পৃণিত্যর্থঃ ॥ ৩৯॥ ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণিটীকায়াং শ্রীধরস্বামিক্সতায়াং ত্রয়োদশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ

# ठजूर्म्या३शायः ।

শ্ৰাদ্ধং তৎফলকালাংশ্চ নিত্যকাম্যাদিভেদতঃ। চতুৰ্দশে তু कण्भारक उरक्तानाम्बनर्वग्रर। उत्त जावमूखतक्तियानार कानान् বৰ্ষিয়ান্ আদ্বিপ্ৰশংসামাহ ব্ৰহ্মেতি। ১। প্ৰতিমাসং কৃষ্ণকে পঞ্দশ্যাং দশ্লাদ্ধং কুর্মীতেতার্থঃ। অষ্টকা আগ্রহারণাাদুর্বুং তিস্ৰঃ কৃষ্ণাইট্যান্তামু॥ ৩॥ আদাৰ্ছং দ্ৰব্যং বিশিষ্টঞ্ছ দ্বিদ্ৰাগতং বিজ্ঞায়েত্যস্বয়ঃ ॥৪॥ সমস্তেমু রাশিমু অর্কে গছতে সতি ইতি সর্বদংক্রান্তীনাং আদ্ধকালন্বস্যোক্তত্বাৎ অন্তনে বিষুবে চেতি পৃথ-ঞজিঃ ফলাভিরেকার্থা। ৫।। ইচ্ছাঞাদ্ধানি কাম্যানি নবশস্যা-গম ইতি। এতচ্চ ব্রীহিষববাতিরিক্তবিষয়ম। তয়েশনিতাঞাদ্ধ-নিমিক্তবাৎ ॥ ৬ ॥ মৈত্রমনুরাধা ॥ ৭ ॥ রৌক্রমার্ক্রা ॥ ৮ ॥ বাসবৎ জোষা, অজৈকপাৎ পূর্মভাজ্রপদা, বারুণ্ড শতভিষা, এতেযু নক্ষত্রেম্বনাবাস্যা পিতৃণাং দেবানাঞ্চ ত্প্তিং কর্ত্ত নিচ্চতাং পুংসাং দুর্লভা। ইচ্ছতেতি পাঠে স এবার্থঃ॥৯॥ নম্বনাবস্যাঞাদ্ধা-ন্নি তাতৈব তৎকথমেতেরু ফলশ্রুতিরিত্যত আহ, নবন্ধিতি। গো-দেশহেনাপঃ প্রণয়েৎ পশুকামস্যেতিবৎ নক্ষত্তপ্রধারান্দর এফল-বিধিরিত্যর্থ:। নিত্যাৎ পৃথগেতানি আদানীতি বা। ১০। এলার পুরারবদে ॥ ১১ ॥ পঞ্চদশী মাঘ ইত্যত্ত্বিদ্ধপ্ত ইত্যসুষদ্ধ: ॥ ১২ ॥ এতা युगामधः॥ ५७ ॥ शृर्खारेक्टत्त्रव वाक्नगामिनकरेख्यु कि। माधा-মাবদ্যা অতিশ্রেষ্টেড্যাহ, মাঘাসিতে ইতি ব্রিভিঃ। পুর্বছ এতৈ-

র্ক্তির্তা সামানা। অমাবাস্যেতি বিশেষঃ ॥১৬॥ পিতৃণামর্চনং ক্যা আত্মনা দূরিতং নিহন্তি নাশয়তি॥১৯॥ বর্ষাম্যাতৃপ্তিমিতি অপরপক্ষম্যাত্রয়েদশী আন্ধে ভৃপ্তিং প্রাপ্যেত্যর্থঃ॥২০॥ চিন্তং বিশুদ্ধং শত্তং দ্রবাং চিন্তাং বিশুদ্ধং বিশ্বশাস্তাইনম্॥২১॥ এতদেব পিতৃগীতৈঃ সপক্ষয়তি, পিতৃগীতা ইতি যাবদ্ধায়সমাপ্তি। অম্বচিন্তবিন্তাদিপঞ্চপ্রাশস্ত্যে পিতৃগীতান্ শ্লোকান্ শৃণু॥২২॥ আমপকং ধান্যমান্মিতি বা পাসঃ। তন্তু পুরুষাহারমাত্রম্॥২৬॥ গবাহ্নিক্ম্ এক্স্যা গোরেকাহছ্প্তিক্ষনকং ভৃথাদি॥২৯॥ ক্লামুল-প্রদর্শকঃ নির্ধনত্বখ্যাপনার্থমূদ্ধ বাহঃ॥৩০॥ বিশ্তং স্বর্রজতাদি ইতর্থ ধনক্ষ নান্তি। তথ্পত্যয়ার্থং ময়া ভুজৌ মারুত্যা বর্মনি আকাশে ক্ষিপ্তো॥৩১॥ ভাবাভাবপ্রয়োজনং বিশ্বস্য ভাবেইভাবে চ প্রয়োজনং পিতৃহ্প্তিহেতৃপ্রয়োগ্যাম্॥৩২॥

ইতি ঐবিষ্ণুপুরাণ্টীকায়াং ঐধরস্বামিক্তায়াং তৃতীয়ে২ংশে চতুর্দশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

### शक्षमत्ना ३ था यः ।

ইতি কত্যান বিধীনত্র আদিয়ান্ ব্রাহ্মণানপি। ভোজৃঃ কর্ভি বর্জ্যানি প্রাহ্ম পঞ্চদশে মুনিঃ। অথ পার্মণশ্রাদ্ধ প্রয়োগান্ বক্ষান্ প্রথমং আদ্ধীয়ান্ ব্রাহ্মণানাহ, ব্রাহ্মণানিতি ত্রিভিঃ। যদ্স্থান্ থৈপ্ত গৈয়ু জান্ । বিভীয়কঠিক হাজ্যোহনু বাকাজিণাচিকে তাঃ। তদ্ধ্যায়ী তদমুষ্ঠাতা চ ত্রিণাচিকেতঃ। মধুবাতা ইতি ত্রু চাধ্যায়ী তদ্ভ ভণ্চ ত্রিমধুঃ। ব্রাহ্মণেনমান্ ইত্যাদ্য নু বাক্ত মধ্যায়ী তদ্ভ ভণ্চ ত্রিমধুঃ। ব্রাহ্মণেনমান্ ইত্যাদ্য নু বাক্ত মধ্যায়ী তদ্ভ ভণ্চ ত্রিমুবর্ণঃ। বট্ অহ্ণানি যদ্য তথ বেদমধীতে বেন্তি বা ষড়ক্ষণির । বেদ্বিৎ বেদার্থবিচারকঃ। আ্রের্ড দ্র্পানু ঠাতা। বোগী যোগাভ্যাসী। মুদ্ধানং দিব ইত্যান্থ্য গ্রিশ্বগীতং ক্রোষ্ঠ-

ঁসাম, তদগাতা ভোষ্ঠনামগ:। আহ্বনীয়াদি**ত্তয়ঃ সভ্যা**বস্থাে বন্ধে এতে পঞ্চাপ্রয়ঃ তেম্বভিরতন্তদুপাসক:। যদা বেদান্তোজ-म्।-পর্জন্য-পৃথিবী-পুরুষ-যোষিজ্ঞ -পঞ্চায়িবিদ্যোপাসকঃ॥२॥ এতেরু মুখ্যাতুকপাভেদমাহ, এতানিতি। এতান্ প্রথমশ্লোকোকান্ জ্যেষ্ঠসামগান্। প্রথমং মুখ্যকল্পে নিমন্ত্রেছে। অনন্তরান্ ঋগা-নাত, মিত্রঞ্গিতি সার্ট্রেক্তিঃ। কুনখী নিসর্গতঃ কুৎসিতন্থঃ। শ্যাবদন্তঃ স্বভাবতঃ কৃষ্ণদন্তঃ। অগ্নিবেদোজ্বাঃ অধিকারী শক্তশ্চ-মন্। অগ্নিহোত্রবেদাভ্যাসভ্যাগী। সোমং সোমলভাং বিক্রীণীতে স তথা ॥৫॥ অভিশন্তঃ সত্যেনাসত্যেন বা মহাপাতকিত্বেনাভি-যুক্তঃ। স্তেনশ্চৌরঃ। পিশুনঃ নিভতে পরদেশবক্তা। গ্রামযাজকঃ সাধারণানাং যাজয়িতা, গ্রামার্থপুটো বা । ভৃতকাধ্যাপকঃ বেতনে-নাধ্যাপকঃ তেনাধ্যাপিতক্ষ ॥ ७॥ পরপূর্বা পরক্ষৈ হা দক্তা তদ্যা অপরঃ পতিঃ। মাতাপিত্রোরপাতিত্যাদাবপি উজ্রকঃ উপেক্ষকঃ। ব্ৰলীসূতিপোষ্টা শূদ্ৰাপত্যপোষক:। দেবলকঃ "দেবাৰ্চ্চনপরো বিশ্রো বিত্তার্থী বৎসরত্রয়ম্। অসৌ দেবলকো নাম হব্যকব্যেষ্ গহিতঃ॥" ইত্যুক্তঃ। কেতনং নিমন্ত্রণম্॥ ৭ ॥ ইদানীং প্রয়োগমাহ প্রথমেহ হ্লি পূর্বেদ্যঃ। পৈত্রদৈবিকান্ এতে পৈত্রা এতে দৈবিকা ইতি কল্পয়েছ। যদ্ধা পিতৃদেবসম্বন্ধিন:। অক্রোধনৈঃ শৌচপরৈ-রিতি নিয়োগাৎ 🏿 । কথয়িত্বা চ তথা কুর্য্যানিত্যাই তত ইতি ৯। মহান্তং দোষমাহ, আদ্ধ ইতি। নিযুক্তঃ পূর্বাদনে ভুক্ত্যাচ পর-দিনে ব্যবায়ী এবং কর্ত্তাপি ॥১০ ॥ অনিমন্ত্রিভানপি যভীন্ বিজ্ঞান্ ভোক্তমেৎ। যতিত্বেলৈৰ পূৰ্বেজিদোৰাভাবাদিতি ভাবঃ ॥ ১১ ॥ তাংশ্চ সর্বান্ পাদশোচাদিনা পুরুয়ে ।১২ ৮ পিতৃ নাম যুকো যুগান্ দেবানাং যুগানিক্যা বা যথাশক্তি ভোক্ষেৎ। উভ-য়েষাম্ একমেক্ত বা । ১৩ । তন্ত্ৰং বেতি পিভূমাতামহশ্ৰাদ্ধয়ো-রেকমেব বৈশ্বদেবনিধানমিত্যর্থ:॥ তন্ত্রন্তুন্দেশ্যানুষ্ঠানসাম্যে সতি

সজাতীয়ানেককার্যাকরম্ অমাবাল্যারাং তীর্পপ্রাপ্রেক্ঞাজ-মিব ॥১৪॥ উভয়ার্থকান পিতৃমাতামহীয়বৈশ্বদেবার্থকান পিতৃমাতা-মহবর্গশ্রাদ্ধীয়া কুদ্ওমুখানি উ বাছয়ঃ। ভোজয়েছ ভোজনার্থমুপ-বেশয়ে ইতাৰ্থঃ ॥১৫ ৰা তয়ে গৈ পিতৃমাতামহ বৰ্গয়োঃ ॥ ১৬ ॥ দ্বিপা-কৃতান্ দ্বিধণীকৃতান্। বিশংস্তে খ্রেতি মন্ত্রপুর্বম্ অতএব বিশ্বদেব।-বাহনেহপি মন্ত্র আয়াতি ॥ ১৯ ॥ তদা প্রাপ্তাতিথিভোজনে হেতুমাহ দ্বাভ্যাং যোগিন ইতি ॥ ২২ ॥ ব্যঞ্জনং শাকাদি। ক্ষারং লবণাদি ভদ্মজ্ঞ ॥ ২৪ ॥ বৈবস্থতায় যমায়েতি পুণগাভৃতিঃ শাথিভেদব্যবন্থিত। ॥ ২৫ ॥ অকুধাতা চাত্মরতা চ ভক্তিতো দেয়ম্। অক্সাতেতি পাঠে তত্র কার্য্যেতাগাছতা পূর্কেণ।-चयः ॥२৮॥ मम निजानयस्थिर अयोखि जाचयः। मर्यान राक्ष-নাদিসহিতেন অলেন পিগুান্দদ্যাৎ ॥ ৩৬ ॥ চোকের সমাচীনের লেপভুজঃ পিতৃণাং চতুর্থাদ্যাঃ ॥ ৩৮ ॥ পিত্রেভ্যো ব্রাক্ষণেভাঃ স্থক স্বধেত্যাশিষা যুক্তাম্। এতদাশীঃপ্রার্থনানস্তরং দক্ষিণাৎ দদ্যাদি ত্যতো দক্ষিণাপি পিতৃপূর্বৈবায়াতি | ৪২ | কিঞ্চ পশ্চাদ্বিসক্ষয়ে-দিতানেন বিসর্জ্জনমপি পিতৃপূর্বকমিতাতোহন্য সর্বং দেবপূর্ব-स्तित्वार्थामुक्तम् ॥ ८८ ॥ हेमस्मितार्थर दिश्वदिनवञ्चलक्षरकार्भाः আপাদেতি। পাদপ্রকালনাৎ প্রভৃতি দেবার্থানাং ব্রাক্ষাণানাং সর্কং প্রথমং কুর্যাহ। ততঃ পিতৃবর্গাণাং ততো মাতামহবর্গাণাম্ ইতি। বিসর্জ্জনন্তি,তি দক্ষিণায়। উপলক্ষণং পূর্বমেবোক্তত্বাৎ ॥৪৬ ॥ পুলৈন্দানৈ।ভ্তিতাৰ ক্লিচ সহ ভূঞ্জীত ॥৪৮ ॥ দৌহিতা। দুহিতুঃ সূতঃ। কুতপোহউমো মুকুর্তঃ। দৌহিত্রমিতি পাঠে দৌহিত্রং शृङ्गिराभवः । ''स्मारामागरङ मारम या ह श्रीमु (गोसु गम् । मिहिकी ना मडा उना। इड१ मिहिक्यूठारा ।" ইতি। मिहिकश খড়রপাত্রমিতি কেচিৎ। কেচিজু কুতপমপি ছাগলোমজং কল্বল-মাহঃ । রজতস্য কথাসন্দর্শনাদিকমপি। পবিত্রং•রাজতং রজ-ডাক্তং বা পিতৃণাং পাত্রমুচ্যতে। 'রেজ্ডস্য তথাদানং দর্শনং নাম

চেষ্যতে" ইতি মৎস্যবায়ুক্তেঃ ।। ৫০ ।। বিশ্বেদেবাদয় আপায়স্তে কুলঞ্চাপ্যায়ত ইতি ।। ৫২ ।। স্থোম্ধারঃ পিতৃগণঃ অগ্নিষ্বান্ধারঃ দের্ধকারিকো গণঃ সোমাধারঃ সোমোপজীবিদ্ধাৎ । যোগাধার-শ্চক্রমান্তেষামের যোগবলেন পুনশ্চক্রস্যাপ্যায়নাৎ । তথাচ হরি-বংশে । " এতেহম্মৎপিতরস্তাত ! যে:গিনাং যোগবল্ধনাঃ । আপ্যায়মন্তি যে পূর্বং সোমং যোগবলেন বৈ ।" তথা বায়ঃ "আদ্ধে প্রীতাঃ পুনঃ সোমং পিতরো যোগমাশ্রিতাঃ । আপ্যায়ন্মতি যোগেন ত্রৈলোক্যং তেন জীবতি ।।" তম্মাৎ শ্রাদ্ধে যোগিনিমন্ত্রণং শস্তমিতি ।। ৫৩ ॥

ইতি ঐবিষ্ণুরাণটীকারাং ঐধিরস্বামিরভায়াং তৃতীয়ে-২ংশে শ্রাদ্ধকণ্ণো নাম পঞ্চদশোইধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

## (याष्ट्रणा> धारा ।

সদাচারপ্রসঙ্গানুপ্রসঙ্গোথ বাড়শে দ্রাণি আদ্বাগ্যানি তথাযোগ্যানি চাদিশং॥ তত্র আদ্বে দেয়দ্রব্য প্রশংসা, হবিব্যপ্রিহাদিভিঃ। মৎস্যাদীনাং নবানাং মাংসৈশ্চ প্রত্যেকমেকৈক—
শাসর্ক্ষ্যা পিতামহাঃ। পিতরস্ত্রিং প্রয়াস্ত্রীতি দ্র্যোরম্বয়ঃ।
প্রীহাদিভিরেকমাসং মৎস্যমাংকৈদ্বে মাসাবিত্যেবং দশমাসাস্তং
মহস্যামিষে মাংসন্থোপচারঃ। এণো হরিণবিশেষঃ। রুরুঃ পৃষতঃ
তদাব্যুগবয়ো গোসদৃশঃ পশুরারণ্ডঃ। ১ । উর্ভ্রো মেষঃ ভদীইয়শ্চ। গব্যস্ত প্রঃ পায়সং বা। "সংবৎসরস্ত গব্যেন প্রস্থা পায়—
সেন চা ইতি স্মৃত্তঃ। মাংসমধ্যপাঠাৎ মাংস্মেবেত্যন্যে তল্তু
মুগান্তরীগমিত্রীর্বেয়ম্। বাধ্রীণস্মাংকৈল্প নিত্যং স্ক্রালং ভূপা ন্ত
বাধ্রীণসং স্মৃতিশ্রসিদ্ধঃ। যথা ত্রিঃ পিবন্তির্ভিন্নং ক্লাণং শ্বেতং

ব্হুজমজাপতিম্। বাধ্ৰীণসম্ভ তং প্ৰান্ত্ৰ্যাজ্ঞিকাঃ প্ৰাক্ষকৰ্মণি।।" ইতি জলপানে যস্য মুখবৎ কণোঁচ জলং স্পৃশত: স তিপিবঃ। যদাকৃষ্ণগ্রীবোরক্তশিরাঃ শ্বেতপক্ষোবিহঙ্গমঃ। স বৈ বাধ্রীণসঃ প্রোক্ত ইত্যেষা নৈগমী শ্রুতিরিতি। ২।। তজ্জন্মপিতৃতৃষ্টিদং সং তিমান্ জন্মনি পিতৃণামূণাদুন্তীৰ্ণ ইত্যৰ্থঃ ॥ ৪॥ প্ৰশান্তিকা দেব-ধান্যানি আরণাত্রাহিসভূশা ইতি কেচিং। শ্যামাকা দ্বিধাঃ শ্বেতাঃ কৃষ্ণাশ্চ বন্যৌষধিপ্রধানা বক্ষ্যমাণাঃ।। ৫।। প্রিয়ঙ্গবঃ কং-গৰঃ, ব্রীহয়ঃ শর্ৎপকানি ধান্যানি । নিস্পাবাঃ শিস্তাঃ। কোবিদা-রারকাত্তিশ্চ তত ফলানি লক্ষান্তে সর্যপাঃ শ্বেতাঃ ॥७ ॥ বর্জ্জানাহ, অকুতা এয়ণ্যিত্যাদিন। পৃথু বিত্যিতান্তেন। নবশ্যাগ্যে সাগে-বিহিতা ইফিরাপ্রয়ণম, তত্ত কৃতং যন্ন তথ। রাজমাধান্ অকৃষ্ট-মাসাৰ্ অণূন্ সূল্লশালীন্ ॥ ৭॥ গুঞ্লং হরিতমুলকং পলা খুং লশুনভেদং পিগুমূলকং পিগুকোরমূলকম্। এতেনান্যমূলকাভ্য-নুজ্ঞা আয়াতি, গান্ধারং শাকভেদঃ কাঞ্লিকং বা। করন্তাণি অবি-ক্ষিতঃ লাজাঃ শাক্তেদ ইত্যেকে। ওষরাণি উষরভূমিকাতানি ॥৮॥ নির্যাস। রক্ষরশা আরক্তাঃ স্বভাবতঃ। প্রভাকলবণানি চকুর্দান-লবণানি। যচ বিহিত্মপি বাচান শ্সাতে নিন্দাত ইতার্থ: ॥ ৯॥ অনুংস্টম্ মপ্রতিষ্ঠিতকূপাদিভবম্ গৌর্য 🏲 ভূপাতে স্বল্পনি-তার্থঃ । ১০ ॥ একশফ। বড়বাদাাঃ। আবিকং মেষসহন্ধি। মার্গং হরিণীসম্বন্ধি ৷ ১১ ৷ বণ্ডাদিভিস্তগ্রোদশভিবীক্ষিতে আকে দেবাঃ পিতর্ভ ন ভুঞ্তে ষণ্ডো নপুংস্কুম্ অপবিদ্ধো মহাজনপরিত্য-জ্ঞঃ। প্রস্তী বৈদিককর্মপরিত্যাগী। রোগী মহারোগী। কুকবাকু: কুকুটঃ। স্থা কুকুরঃ। নগ্না অগ্রিমাধ্যায়ে বক্ষামাণাঃ ॥১২॥ উদক্যা রক্ষলা, সূতকং জননাশোচম্। অশৌচং মরণনিমিত্তম্ তল্পাঃ। মু এছারঃ শবনির্ছরণর জি ॥১৩॥ পরিশ্রিতে সর্কাতঃ পরিরতে ॥১৪॥ পুতি দুর্গন্ধি কেশকাটাদিভিক্লপপন্নং যুক্তম্। অবপর্নমিতি পাঠে দূষিত্মিতার্থঃ। অভিষবৈঃ কঞ্জিকৈঃ। প্রার্থিং পকং রাত্য-

স্তানিতম্। এতৎ সর্বান্ধং পিত্রুদ্ধিশ্য ন দদ্যাদিত্যর্থঃ ॥ ১৫॥ শ্রদ্ধানিতঃ পিত্রুদ্ধিশ্য যদক্তং তদন্ধ তে পিতরো যদাহারা যাদৃশাহারযোগ্যা জাতাজদাহারতামুপৈতীত্যর্থঃ ॥ ১৬॥ কলাপো হিনবৎপাশ্ব বিক্রা প্রামনিশেষঃ, তদ্যোপেবনে ইক্ষাকোরিক্ষাকুং প্রতি পিতৃতিগীতা।। ১৭।। অপি দুর্ঘটিইমাহ ॥ ১৮॥ বর্ষাম্ব ভাত্রপদে মহানক্তে ক্রোদশীং প্রাপ্য ॥১৯॥ গোরীমকর্বাম্। "অক্টর্ম ভবেদ্দারী নববর্ষ, তুরোহণী। দশর্বা ভবেহ কন্যা অত উর্দ্ধার ক্রেলা॥" ইতি স্মাতেঃ। তামুদ্দেহ স্বীকৃর্যাহ। উদাহ্যেই ইতি বা পাঠঃ। "গোরাং দদনাকপৃষ্ঠং বৈকুপ্তই যাতি রোহিণান্। কন্যাং দদদ্বক্ষলোকং রৌরবন্ধ রেজস্বলাম্॥" ইতি সংবর্ত্তাক্তিঃ। নীলঃ স্মৃত্যুক্তঃ। "লোহিতো যন্ত বর্ণেন মুখে প্রুছ চ পাণ্ডরঃ। শ্বেতঃ পুরবিষণোভ্যাং স্নীলোর্ষ উচ্যতে॥" ইতি । ২০॥

ইতি শ্রীবিফুপুরাণ্**টা**কায়াং শ্রীধরস্বামিক্নতায়াং তৃতীয়েহংশে যোড়শোহধ্যায়ঃ।

## मश्रुपरमार्थायः!

এবং নবভিরধ্য হৈ স্ত্রন্থীধর্মাঃ প্রপঞ্চিতাঃ। ব্যতিরেকে স্বন্ধা-প্রিদ্ধানেই নির্মপ্রতে। তির সপ্তদশে দেবৈঃ স্তর্তো বিষ্ণুরজী—জনএ। মায়ামোইং যতো মগ্রা দৈত্যা নগ্নাশ্চ জাগারে ॥>॥ বর্ণানাম্ আরতিঃ পরিধানম্।। ৫।৷ কিঞ্চ যতঃ সৈব সংবর্গমিপি প্রাবর্গম্ উন্তরায়মিতি যাবং। অভন্তং পরিভ্যাগে পরিধানে জ্রীয়হীন ইব নগ্রে ভবভাত্তিঃ। ৬।৷ এভদেব স্পষ্টীকর্ত্রি মিভিহাসং প্রভৌতি, ইদঞ্চেতি।।পী। দেবাশ্চঃ স্থাশ্চ যোজারো যাসান্ তথা ৯। লোকা—নামীশস্য বিষ্ণোই।।১১।। প্রসূত্যনি জাতানি। প্রভূতানীতি পাঠে ই

রুদ্ধিং গভানি ॥১২॥ যদ্যাপি তব যাথার্থাং তত্ত্বম্উক্তীনাং বচসাং গোচরে বিষয়ে নৈব বর্ত্ততে তথাপি অরাতিক্ততন বিধ্বংসেন পরা-ভবেন বিধ্বস্তং নাশিতং বাঁগ্যং প্রভাবে। যেষাং তে বয়ং যুদ্মাৎ ভবার্থিনঃ কল্যাণার্থিনঃ স্বমতানুরূপং স্তোষ্যামঃ ॥১৩॥ তত্র প্রথমং বিশ্বরপেণ সন্ত্রণাস্ত্রবস্তি, ত্বযুক্ষীত্যাদিনা তামে সকাত্মনে নম ইত্য-ন্তেন। সমস্তং মনোবুদ্ধাহক্ষার চিত্তাখামন্তঃকরণম্। তস্যাঃ প্রকৃতেঃ প্রঃ ॥:৪ ॥ স্থানং দেশঃ, দেশে কালে চ তিমিংস্ত্রশিকানাভেদ্যুক্তং বিশ্বং ভবৈক্ষের বপুরিভার্থ:।। ১৫।। তত্র তর রূপমধ্যে প্রথমং সংগণ বিশ্বেপকারায় যথ তব রূপথ তাল্ম নমঃ ।।১৬ ।। ব্যুমের তব যং স্কুপংত সৈ নমঃ।। ১৭ ।। অসম্বোধি বিবেক শূনাম্।। ১৮।। যশ্মিন্ যক্ষরপে নাডা ইন্দ্রিয়নাড্যো হাদ্রনাড্যো বা নাতিজ্ঞান-বহা নাতিজ্ঞানক্ষমাঃ। নাট্যস্তিমিতেতি পাঠে নাট্যেন স্থত্যাদিনা। তত্র হেতুভিমিততেজ্সি অপসত্ত্বে।। ১৯।। অসিতং তমো-ময়ম্।। ২০।। স্বৰ্গস্থঃ স্বৰ্গাহী যে ধর্মিণঃ যজমানাস্তেষাং যঃ সদ্ধর্মো যাগাদিন্তম্য যথ ফলং স্বর্গাদি তম্যোপকরণং প্রাপকং ধর্মাথামদৃষ্টানংজ্ঞং যদ্রপং তালৈ নমঃ। ২১॥ গমনাদিই গমনীয়া-দিযু অসংস্থিতা যা সংস্থাসূন্যা গতিগতাদি তদাজন্ সিদ্ধা হি জলাল্ল্যাদিয়ু গছন্ততিষ্ঠন্তো বান সংগছন্তে।। ২২।। অতিতিকা অক্ষম ধনং সক্ষস্থং যস্য। উপভোগবশমিতি পাঠে উপভোগেছপি ত্প্রিহিতম্ ॥ ২৩ ॥ অদে। ষং রাগাদি হানম্ ঋষিরপম্ । ঋষ)।-কুতিরাত্ম। দেহো যস্য ভব্মৈ তব রূপায় নমঃ ॥ ২৪ ॥ যহ কালাত্মকং তে রূপং ভূতানি ভক্ষয়তি তলৈ নমঃ।। ২৫।। রুদ্রাত্মকন্ত রূপং ভক্ষিত্ব প্রত্যতীতি শেষঃ।। ২৬।। রজসো র্ভ্যা যৎ কর্মণাং কারকাত্মকং কর্তৃস্বভাবং তদ্মৈ নরাত্মনে মনুষ্যাত্মনে নমঃ।। ২৭।। অটাবিংশদ্বধোপেত্মিতি পাঠে, একাদশ ইন্দ্রিয়বধাঃ, নব তুঞ্চি-বধাং অকৌ নিদ্ধিবধা ইতি প্রথমেহংশে বিব্লকা:।। ইচ।। জগতঃ निक्तितर्छनः द्वनापिटल्टेपरास्ति जिन्नम्। यज्दैलमीजि भारित,

রক্ষণ্ডলালতাবীরুৎ হৃণত্ত্সারাত্মনা বড় ভেদি। মুখ্যাত্মনে রক্ষাত্মানা ২৯॥ তব সর্বসাদেং কারণস্য যজেপৎ তির্যাঙানু ব্যাদেবাদাত্যান্ত্রঃ॥৩০॥ ইদানীং নিশুর্ণং ব্রহ্ম প্রণমন্তি, প্রধানাদিময়াদন্মাচিশ্বরুপাদনাৎ পরমং রূপম্ অতএব যদনাতুল্যং ন ভবতি নির্স্তন্ম নহঃ।। ৩১ ।। পূর্বোক্তমেব দর্শয়ন্তঃ প্রণমন্তি, শুক্লাদীতি
ব্রিভিঃ। শুক্লাদানাং কিয়তাং নিষেধমুক্তা সম্ববিশেষণনিষেধনাহ, অগোচর ইতি॥ ৩২॥ পরমপদাত্মবতঃ পরমং পদং ব্রহ্মিবাত্মা স্বরূপং যস্যান্তি তস্য ।। ৩৪॥ তব শরণার্থিনোহন্মান্
দৈত্যেভ্যন্ত্রাহীতি তং হরিমুচ্রিত্যস্বয়ঃ॥ ৩৬॥ স্থিতৌ স্থিতিনিনিত্তং স্থিতস্য ব্রহ্মণোহধিকারস্য যে যাবন্তঃ পরিপন্থিনন্তে সর্বের্
ম্ম বধ্যা ইত্যর্থঃ ॥ ৪৩॥

ইতি শ্রীবেষ্ণুপুরাণটীকায়াং শ্রীধরস্বানিক্রতায়াং তৃতীয়েহংশে সপ্তদশোহধ্যায়ঃ।

# वर्षे। प्रताशः ।

ইহে:চান্তে হতা দৈত্যা মায়ামোহবিমোহিতাঃ। নগসংসগদোষে তৈয় দৈব্যাশভধনুংকথাঃ ॥১॥ শ্লুক্ষ্ মনোহরম্ ॥২॥ ঐহিক্ষ্
ইহলোকভোগ্যং পারত্রাং পরলোকভোগ্যম্॥ ৩॥ এবং ধ্রমিগ্রে
বক্ষামাণম্। অসংবৃতমুদ্যাটিতম্ ॥ ৫॥ অর্হ: যোগ্যঃ। এতস্মাদপরে। ধ্রম: ন পরে। ন শ্রেষ্ঠঃ।। ৬ ।। এবংপ্রকারের্বাক্যৈঃ, যুক্তিদর্শনং শুদ্ধতর্কবাদঃ, তেন বর্দ্ধিতিঃ। চচ্চিতৈরিতি বা পাঠঃ।
অপাক্তা দূরীক্ষতাঃ।। ৭ ।। বেদ্যার্গাপাকরণমের সপ্তধা দর্শয়তি,
সার্দ্ধিভাগিং ধর্মায়েতি।। ৮ ।। অনৈকান্তবাদং কলবাভিচারিকারণবাদং ভেদকৈলবাদং বা দর্শয়তা ইত্যেবং স্বধ্ন্মান্ ভ্যাক্রিত।
ইত্যুপসংহারঃ গৈও॥ আইতানাং নামনিক্রজিমাহ,অহতেতি ॥১১॥

সম্প্রদায় প্রবৃদ্ধি নাহ ত্রুমীতি।। ১২।। আহত মতমুক্রা বৌদ্ধমত-মহে পুনশ্চতি সপ্ত ভিঃ। রক্তেতোতদাচরপ্রদর্ম ১৪॥ অত হি বিজ্ঞানময়ং বুদ্ধিময়মিত্যাদিনা যোগাচারাণামাত্মখ্যাতিবাদ উক্তঃ । ১৬ । অনাধারমিতি মাধামিকমতশুনাখ্যাতিপক্ষে ক্তিঃ। অভিজ্ঞানধ্য তদর্থশ্চ তহপরং ত্রিষ্ঠম্ । ১৭॥ এবং বুধ্যতেতাত श्वनक्: किर्तिक्षभम् निक् कार्थ। ॥ ३৮ ॥ व्यन्त्रभाष्य धका देवलांका-য়তিকমতভেদৈঃ ॥ ২১ ॥ এটামার্গাশ্রিতাং ক্রাম্পি তত্যজুঃ ॥২২ ॥ ন কেবলমেতাবং কিন্তু কেচিং বিনিন্দাং বেদানামিতি। চত্রারিতি শেষঃ ॥ ২৩ ॥ নিলামের কুতর্ক হিতানাছ নৈ তদিতি । হি পা পর-পীড়া ধর্মায়েতি সহচনম্ কগ্নীষোদীয়ং পশুদালতে ড' ইত্যাদিরাপং তল মুক্তিনহং যতঃ "ন হিংসা। স্থা ভূতানি " ইতি জাই । ব তরেষ্ঠে চেষ্ট ইতি তুপাচঃ স্থগমঃ॥ ২৪॥ সমার্দিস্মিদ্রপং কাষ্ঠাং বজ্ঞো ভাত্তথেৎ ইন্দ্রো ভুক্সতে তথ তাহ ববং শ্লেখ্য পান্তঃ या छ। इसी कार्क १६ को मन भवा छक। १२९ या छ। इसी असी ह শেরহ তহি যজমানেন সদা চার্থং স্বপিত। কিং ন হন্যতে ১॥ ২৬॥ অনোন অ'দ্ধে অলং ভুক্তন অনানা স্থায়ে চেজ্জায়তে তহি প্রা-সিনে হল ন বহেনুঃ কিন্তু স্থান স্তঃ প্তাদিত মুদিশা আকং দ্দ্যাং ॥ ২৭॥ ততে। নিন্তিকং কেবলং পুণগতন শ্ৰেষ্মেড্দ-यद्धानितिषयः त्राः, व्याष्टः युपातिगात्। त्रितिष्यं युक्तः ॥२৮॥ नपालः-বাদে বেদে কথ্য উপেক।? ততাহ, নহাতি। নহি আপ্রাদঃ সভা-বতঃ কেচন বর্ত্তান্ত, কিন্তু যদেব যুক্তিমন্বচনং তথায়া অলৈচ্চ ভবদ-বিধৈশ্য প্রাহাম্য ব্জিশ্য পুরেষাজারীতাগ বেদবাদেয় নাভাতি ভাবঃ ৷২৯৷ তেষ্থে মধ্যে ॥৩০॥ গার্হস্তাং পরিভাত্য বানপ্রস্তঃ পরি-ব্ৰাড় বাং যোন জায়তে স চনগঃ ॥৩১॥ নগ্নস্থা তৎসংস্থিণশচ দেখি-ম(জ, লিভাবেশিভাদিন। যদেভিরবলে†কিভমিভাজ্যেন। বিজিতং নিত্রণ পাত্তি পাপবান ভবতি ॥৩৭॥ এবং পক্ষজিয়াহানেহেতিঃ প্রায়শ্চিত্রেন মহত। শুদ্ধিং প্রাপ্রোতীত্যর্থঃ। এবং মাসাদিক্রিয়া-

হান'বিধিকং প্রায়শ্চিক্তং জ্ঞেয়ম ॥৬৮ ॥ তম্ম সংবৎসরক্রিয়ালোপ-কর্ঃ॥৩৯॥ অত পুণিবাম।। ৪১॥ গৃহাদিভিঃ সঙ্করং সং-সগম্∥৪২ ॥ সহঃস্থ'মেক্ত স্ভিম্। সাহায্যমিতি পাঠে প্র**স্পরং** সম্ভাষাদিস্যান ক্রিয়ারং সংবংসরং কুর্কাতঃ তেন নাগ্রেন তুলারুং জায়তে ॥ ৪৩ ॥ ইদানীং ভোজনাদীনি যুগপ্থ ক্রিয়মাণানি সদ্যঃ-পাতহেত্ৰ ইত্যাহ অপেতি ৷৪৪ ৷ ব্ৰাহ্মণদ্যাঃ স্বধৰ্মাদন্যতোমুখং বিমুখং যাতি যে তে নল্লখজাং যান্তীতাল্যঃ ॥৪৬॥ সক্তরো গুংদিয় অ:ভাহিতিঃ || ৪৭ || কুভং শ্রাদ্ধেমিতাম্যঃ || ৫০ || তত্ত পাষ গুলেপেদোষং দুশবিভুম ইতিহাসমাহ, ক্রায়তে চেতাদিনা যাবেৎ সমাপ্তি ॥ ৫১ ॥ ভেম্ম রাজ্ঞশ্চাপাচার্য্যম্ম পত্রবিদ্যাপ্তরেরেসৌ প্ষেণ্ডা সংখ্যাব্যঃ ॥ ৫১ ॥ তেনাপচারেণ নয়সংস্থেণ পাপেন। তদেবকে, উপোধিতেন রাজ্ঞা পাষ্থ্যসন্তাষ আলাপঃ॥৬১॥ নস্মন্মির্থে বিজ্ঞানমধাধিতজ্ঞানং তেন সংপূর্ণা স্বভাবত: পূর্ণা ্সসংক্রেডার্থঃ ॥ ৬২ ॥ তয়। কাশিরাজ**স্ক্**রয়া তথা বিনিবারি**ডঃ** সন্॥ ৬০॥ দাকিলাদ্ধরোঃ স্থেতি সন্তাবাৎ ললিতং প্রতি-সম্ভাষণং স্ময্য তাং যেন ভবান্সম চাটুক'রে। জাভ ইত্যর্থঃ। চাটুঃ প্রাভিচেটা;। ৬৮ । মরুপ্রপতনং গিরিশৃঙ্গাও পাতং নিরুদক- ८मटम ग्रहालश्त्रमन १ ता। मार्गाली १ मृगाल नचित्रनी १ त्यां निम्॥१०॥ ব্রকং বনশ্বনং কৃতব্যাঘুং বা ॥ ৭৬ ॥ যদা আত্মা দেহভাক্তন্তদা ষ্ঠু হাং গভঃ। এনং পৃথুম অবাপ রোণয়ামাদ চ ॥ ৭৮ ॥ আত্মা র:জ-,দহঃ মার্যাতাম্। ভাজাতামিতি পাঠে আলা গুরুদেহঃ। অয়ং যেন দোষেণ। ৭৯ ॥ উপলভা জ্ঞাত্বা প্রাপ্য চ ॥ ৮০ ॥ বলিং করম্। বলিভুক্ উনহারপিগুভুক্ 🛮 ৮১ 🗷 তজ্ঞাতিভোজনৈৰ্য্রজাতি-ভে:জনৈউক্তৈয়ঃ । ৮৩ । আহানঃ পতিং স্বয়ংবরে বরয়ামাসেত্যুক্ত্য পতিব্রত্যা সম্যাপত্যঃ জ্ঞাতম্য তত্রাপি স্বয়ম্বরবিষয়ে বরণে স্ত্রীপুরু-ষ্যোজে জি চনি জ ভাবেহপি দেখি ভাবঃ সূচিতঃ ॥ ৮৮ ॥ একান্ লোকান্ অ ঠাতা কামদুহ: কামদুঘান্ লোকান্ প্রাপ ॥৯৩॥ তাম্

অশ্বেধ্বভ্ধস্থানজাং দিদ্ধিং পাষ্ডিসংদর্গজপাপক্ষয়পুণ্যরদ্ধি-क्रभाम् । ৯৪ ॥ हेमानी १ देकग्र किमारायन शूर्ता क्रायन आग्रानिहन-মাহ, ক্রিয়াহানিরিতি॥৯१॥ থৈঃ ত্র্য়ী ত্যক্তা তেষাং দর্শনাৎ সুর্বাৎ পশ্যেদিতি কিং পুনস্বাচাং পরাম্ভোজিভিঃ পাষ্ডান্নভো-জিভিঃ ॥ ৯৮ ॥ পাষ্ডাদ্যঃ সর্বে বেদ্ধিরুদ্ধ। এব, যদাভঃ। 'ভ্রেটঃ স্বধন্মাৎ পাষ্ঞো বিকর্মান্তো নিষিক্ষা । যস্য ধর্মান্তেরা নিভাগ স্থ্যাধ্ব ইবোচ্ছিতঃ। প্রচ্ছিল। পাপানি বৈড়ালং নাম তদ্ ব্রতম্। প্রিয়ং বাজি পুরোহনাত্র বিপ্রিয়ং কুরুতে ভূপন। তাজে-পরোধচেষ্টশ্চ শাঠোহয়ং কণিতো বুরৈঃ। সন্দেহকুদ্রেত্ভিশ্চ স্থক্মসু স্হেতুকঃ। অসাগ্ছঠিটিন্কুতিকঃ স্বার্থনাধনতথ্পরং। শাঠো মিথ্যাবিনীতশ্চ বকর ব্রিরুদান্তভঃ 🗗 ইতি। বাঙ্গাত্রেণাপ্রি নার্চ্চয়েহ। তৈঃ সম্ভাষণমূপি ন কুর্ব্যাহ ॥ ১১ ॥ যদ। টেচবং ভদ। পূর্বেটিক্রঃ পাপিভিঃ মহ সংপর্কঃ মহভোজনাদি রূপে। দুরাদ-পাতো নিষিদ্ধঃ, সহাস্যাপি নিষিদ্ধা। কিং বছন। সর্সায়েন। তান্ পরিবর্জমেৎ ॥১০০॥ নগ্রপাষ গুরেনাঃ পূর্বদোষমতুরদন্ উপসংহরতি, এত ইতি দ্বাভাগন ॥ ১০১ ॥ সর্বেশং তেষাং সামান্দ্রেন্ আহ প্রংসামিতি ৷ রুথৈবেতি বিশেষণাদ্যক্ষিরিঃপ্রোক্তং শৈবপাঞ্ পতব্রতাদাঙ্গভূতজটাধারণাদাব্যনাতে, অমেংঘাশিনাং দেবত -তিথ্যাদিপূলাং বিনা অনভোকুণাম্ অথিলশৌটের্জভান্তর-**भोरेग्रनिताक्जानार विक्रिजानाथ जाय अमानामित्छा मायास्मारमारम** বহিষ্ঠানামিতি। তপদোহপি স্ততিঃ শ্রেষ্ঠানিপুর্ন্ স্থেন-তরান্। তপস্থভিরতান্ দেবৈঃ স্ততে। বিফ্রমুমুহৎ ॥ ১০৩॥

ইতি শ্রীবিস্পুরাণীকায়াং শ্রীধরস্বামিকতায়াৎ তৃতীয়ে২ংশে অফাদশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

সমাপ্তশ্চায়ং তৃতীয়োহংশ

# পুরাণপ্রকাশ।

#### \*\* E 1305

# বিষ্ণুপুরাণ।

ঞীধরস্বামি-ক্লত টীকা ও বিফুর্থ-বৈদ্যনাথ-নামক বাঙ্গালা অনুবাদ সমেত।

**ठ**जूर्थ जर्भ 1

প্রবরদাপ্রসাদ বসাক কর্তৃক প্রকাশিত।

কাল হাতা

কাব্যপ্রকাশ য**ন্তে** মুজিত।

#### বিজ্ঞাপন।

বিষ্ণুপ্রাণের চতুর্থ অংশে প্র্যবংশীয় ও চন্দ্রবংশীয় ভূপালগণের বংশবিস্তার বিস্তারিত রূপে কীর্ত্তিত হইয়াছে। যিনি আর্য্য জাতির প্রাচীন ইতিহাস জানিতে অভিলাষ করেন, তাঁহার পক্ষে এই বিষ্ণু-পুরাণের চতুর্থাংশই প্রীতিকর হইবে। ইহার শেষে চন্দ্রগুপ্ত প্রভৃতি ভবিষা রাজগণের রুত্তান্তও কিয়ৎপরিমাণে আছে। যিনি বিষ্ণুপ্রাণ আদ্যোপান্ত পাঠ করিয়াছেন, তিনি অসঙ্কৃতিত হৃদরে স্বীকার করিবেন যে, বিষ্ণুপ্রাণ সমুদায় পুরাণ অপেকা সর্বাংশেই শ্রেষ্ঠ। আমরা অনুমান করি, বিষ্ণুপুরাণ, প্রচলিত সমুদায় পুরাণ অপেকাই প্রাচীন।

এ ছলে অনেকের এরপ সংস্কার বন্ধমূল আছে যে, অফীদশ পুরাণই বেদ-বাাস-কৃত, ফুভরাং কোন পুরাণ প্রাচীন কোন পুরাণ আধুনিক হওয়া কি রূপে সন্তব হইবে? এই সংশয় দূর করিবার নিমিত্ত সমাপ্তি সময়ে আমরা একটা পোরাণিক ইতিরত্ত লিখিব। একণে সংক্ষেপে কিঞ্জিৎ লিখিতেছি।

এই বিষ্ণুপ্রাণেই আছে, বেদবাস, প্রাণসংহিতা নামে একথানি প্রাণ প্রণ প্রান্ধ কুরিয়া ছয় জন শিষ্যকে অধ্যয়ন করাইয়াছিলেন।
তাঁহার তিন জন শিষ্য, ঐ প্রাণসংহিতা অবলম্বন করিয়া অ অ
নাম অনুসারে তিন থানি পুরাণ প্রণয়ন করেন। ঐ পুরাণত্তয়ের নাম,
শাংসপায়ন-সংহিতা, বৈশস্পায়ন-সংহিতা ও লোমহর্ষণ-সংহিতা।
এই পুরাণচতুষ্টয় এক্ষণে লুগু হইয়াছে। এই পুরাণচতুষ্টয় অবলম্বন
করিয়াই ভিন্ন ভিন্ন সময়ে বিষ্ণুপ্রাণ ও অন্যান্য সয়দায় পুরাণ প্রণীত
হয়। বেদবাস-কৃত পুরাণ-সংহিতাতে যে সর্ব্য, প্রতিসর্ব্য, বংশ, মন্তর
ও বংশাল্লরিত বর্ণিত ছিল, সয়দায় পুরাণেই তাহা গৃহীত হইয়াছে।

অমন কি, ঐ সকল বিষয়ে বেদবাসকৃত অনেক শ্রোক পর্যান্ত অফীদশ পুরাণে অবিকল প্রাপ্ত হওয়া যায়। বেদবাসের শিষ্য-প্রশিষ্ঠাগণ,
বেদবাসকৃত মূল পুরাণ অবলম্বনপূর্ব্বক কালে কালে এক এক পুরাণ
প্রণান্ত করিয়া আদিগুক বেদবাসের নামান্ত্রসারেই প্রচার করিয়াছেন।
তাঁহাদের গুকতক্তি এতদূর বলবতী ছিল যে, তাঁহারা অপ্রণীত
প্রস্থাধা আপনাদের নাম পর্যান্ত প্রকাশ করেন নাই। অফীদশ
পুরাণেই সর্গ, প্রতিসর্গ প্রভৃতি পঞ্চবিধ বিষয় আছে। তন্মধ্যে কোন
পুরাণে কোন বিষয় বা কোন উপাধ্যান সংক্ষেপে, কোন পুরাণে
কোন বিষয় বা কোন উপাধ্যান বিস্তান্তির রূপে বর্ণিত আছে। কোন
পুরাণে কোন বিষয় বা কোন উপাধ্যান পরিতান্তে, কোন পুরাণে কোন
বিষয় বা উপাধ্যান সূতন সন্ধিবেশিত হইয়াছে। এই কারণেই অফীদশ পুরাণ ভিন্ন ভিন্ন হইয়া পড়িয়াছে। বস্তুগত্যা এই অফীদশ পুরাণ,
বেদব্যাস-পণীত পুরাণ-সংহিতার সংস্করণদারা উৎপন্ন হইয়াছে বলিয়া,
সমুদায় পুরাণকে বেদব্যাস পুণীত বলাও নিতান্ত মুক্তিবহিত্ ত হইতেছে না।

জীবরদাপ্রসাদ বসাক। পুরাণপ্রকাশ-প্রকাশক।

# নির্ঘণ্ট পত্র।

### চতুর্থ অংশ

#### প্রথম অধ্যায় ।

|   | বংশবিস্তার বিষয়ক প্রশ্ন              | ••••        | ****       | 5 |
|---|---------------------------------------|-------------|------------|---|
|   | মনুবংশ সংস্রণের ফল                    | ••••        | ****       | > |
|   | ত্রন্ধার উৎপত্তি                      | ••••        | ****       | ২ |
| 4 | ' ত্রন্ধা হইতে দক্ষাদির উৎপত্তি       |             | ••••       | २ |
|   | ইলার গর্ভে বুধ হইতে পুরুরবা           | র উৎপব্তি   | ••••       | v |
|   | ইলার পুনর্কার পুৰুষাকৃতি প্রা         | প্তি        | ••••       | ૭ |
|   | ইলা সুত্রান্ন নামে বিখ্যাত হইয়       | । তিনটি পুত | उ ९ १ ।    |   |
|   | পূর্ম্বক প্রতিষ্ঠান নগরের অ           | ধিপতি হন    | ****       | 8 |
| • | স্থাজা সুদ্বান্ন স্বীয় গর্ভজাত পুত্র | পুরুরবাকে   | প্রতিষ্ঠান |   |
|   | নগর প্রদান করেন                       | ••••        | ,          | 8 |
|   | পৃষ্ধু গুঞ্র গোবধ করিয়া শৃজ          | <b>र</b> न  | • • •      | 8 |
|   | কাৰুষদিগের উৎপত্তি                    | ••••        |            | 8 |
|   | নাভাগের বৈশ্যতাপ্রাপ্তি ও বং          | ংশবিস্তার   | ••••       | 8 |
|   | নাভাগের ক্ষত্রিয় সন্তানদিগের         | टेवभान ना   | ম          |   |
|   | প্রাপ্তির কারণ                        |             |            | L |

#### [ 2 ]

| রেবত রাজা ও রেবভীর উপাখ             | <b>ग</b> १            | ••••       | 9             |
|-------------------------------------|-----------------------|------------|---------------|
| বলদেবের সহিত রেবতীর বিবাং           | र                     | ••••       | 50            |
| প্রথ অধ্যায় সমাপ্তি                |                       |            | 38            |
| দ্বিতীয় অধ্যায়                    |                       |            | <b>&gt;</b> @ |
| কুশস্থলী নগর ধ্বংস                  | ••••                  | ••••       | 5¢4t -        |
| মনুর নাদিকা হইতে ইক্ষাকুর উ         | <b>ং</b> পত্তি        | ••••       | 36            |
| ইক্ষাকু পুত্র বিকুক্ষির শশাদ না     | ম প্রাপ্তি            | ••••       | ٠. ٥          |
| বিকুক্ষির তনয় পরঞ্জয়ের ককুৎ       | ছ নাম প্রাপ্তি        | র          |               |
| কারণ                                | ****                  | • • • • •  | 36            |
| ককুৎস্থের বংশ বিস্তার               | ••••                  | ••••       | <b>\$</b> 0   |
| রাজা কুবলয়াখের ধুরুমার নাম         | । প্রাপ্তির <b>কা</b> | রণ         | २०            |
| धूक्त्रारतत दः भ                    | ****                  | ****       | ÷ 0           |
| <u> মন্ত্রপুত জলপানদারা ধুরুমার</u> | বংশীয়রাজা            | यून-       | •             |
| নাম্বের গর্ভদকার                    | ****                  | ••••       | २,5           |
| রাজা যুবনাথের উদরে মান্ধাত          | রি জন্ম               | ••••       | २२            |
| দেভিরির উপাখ্যান                    | ••••                  | ••••       | २०            |
| মান্ধাভার পঞ্চাশৎ কন্যার সহি        | তে মহর্দি সো          | ভরির বিবাহ | <b>9</b> 5    |
| দেভিরির বিষয় ভোগ                   |                       | • • • •    | ر ج الحو      |
| দোভরির ঐশ্বর্যা দর্শনে মান্ধাত      | চার বিশায়            | ••••       | ৩৫            |
| দোভরির বৈরাগ্য                      | ••••                  | ** *       | 50            |
| দ্বিতীয় অধ্যায় সমাপ্তি            | ****                  | ****       | 83            |
| ভৃতীয় অধ্যায়                      |                       |            | 8२            |
| সেভিরির বন গমন ও মুক্তি             |                       | ••••       | 8२            |
| সেভিরিচরিত প্রবণের ফল               |                       |            | 8 3           |

| মান্ধাভার পুত্র পুৰুকুৎসের না  | গলোকে                              | গমন ও নৰ্ম-           |                            |
|--|------------------------------------|-----------------------|----------------------------|
| দার সহিত বিবাহ   | ••••                               | ••••                  | 88                         |
| সর্পবিষ নাশের মন্ত্র   | ••••                               | ••••                  | 84                         |
| দিখিজয়ী রাবণ হইতে পুরুকুণ   | ংসের পে                            | ত্রি অনরণ্যের         |                            |
| মৃত্যু   | ••••                               | ••••                  | 8.7                        |
| অনরণ্যের বংশ   |                                    | ••••                  | 88                         |
| অনরণ্যবংশীয় রাজা সভ্যত্রতে  | চর তিশব                            | দু নাম প্রাপ্তি       | 8'5                        |
| তিশকুর বংশ   | •••                                | ••••                  | 8.5                        |
| ত্রিশকুর বংশে সগরের উৎপ  | ত্তি                               | ••••                  | 8 9                        |
| সগর কর্তৃক পরাজিত ইহহয় গ  |                                    | প্রভৃতি ক্ষত্রিয়-    |                            |
| গণের যবনত্ব শকত্ব পারদ   | ত্ব ও পছ                           | লবত্ব প্রাপ্তি        | <b>α</b> ο                 |
| তৃতীয় অধ্যায় সমাপ্তি   |                                    | ****                  | ¢ o                        |
|  |                                    |                       |                            |
| চতুর্থ অধাণয়  |                                    |                       | ¢ >                        |
| চতুর্থ <b>অধ</b> ায়<br>সগরের এক জ্রীতে য <b>র্ফি সহত্র</b>  | 'ও এক া                            | প্রীভে এক মাত্র       | ¢ >                        |
|  | 'ও এক <u>।</u><br>                 | ন্ত্ৰীতে এক মাত্ৰ<br> | c 5                        |
| সগরের এক জ্রীতে যফি সহস্র  | 'ও <b>এক</b> ;<br>                 | ন্ত্ৰীভে এক মাত্ৰ<br> |                            |
| সগরের এক স্ত্রীতে য <b>র্ফি সহস্র</b><br>পুত্রের উৎপস্থি   | 'ও এক :<br>                        | প্রীভে এক মাত্র<br>   | <b>c &gt;</b>              |
| সগরের এক স্ত্রীতে য <b>র্ফি সহস্র</b><br>পুত্রের উৎপস্থি<br>সগরপুত্রগণের ছুর্ব ক্ততা   | ••••                               | প্রীভে এক মাত্র<br>   | ر ي<br>د ي                 |
| সগরের এক জ্রীতে য <b>র্ফি সহস্র</b><br>পুত্রের উৎপস্থি<br>সগরপুত্রগণের হুর্ব ক্ততা<br>সগরের অস্বমেধ যজ্ঞ   |                                    |                       | 69<br>59<br>Cr             |
| সগরের এক স্ত্রীতে যফি সহজ্ঞ<br>পুত্রের উৎপত্তি<br>সগরপুত্রগণের ত্বর্ব ততা<br>সগরের অস্থমেধ যজ্ঞ<br>অস্থান্বেষণ ও সগরপুত্রগণের মূ   | <br>ভূ্য<br><b>চ অস্থা</b> নঃ      | <br><br>इ.न           | 69<br>CP<br>RD             |
| সগরের এক স্ত্রীতে যফি সহজ্ঞ<br>পুত্রের উৎপত্তি<br>সগরপুত্রগণের ত্বর্বতা<br>সগরের অস্থমেধ যজ্ঞ<br>অস্থান্বেশ ও সগরপুত্রগণের মৃ<br>সগরের পোত্র অংশুমান্ কর্তৃ  | <br>ভূ্য<br><b>চ অস্থা</b> নঃ      | <br><br>इ.न           | 62<br>53<br>62<br>83       |
| সগরের এক স্ত্রীতে যফি সহজ্ঞ<br>পুত্রের উৎপত্তি<br>সগরপুত্রগণের দ্বর্গুত্তা<br>সগরের অস্থমেধ যজ্ঞ<br>অস্থান্বেল ও সগরপুত্রগণের মূ<br>সগরের পোত্র জংশুমান্ কর্তৃত্ব<br>অংশুমানের পোত্র ভগীরথ ব                                     | <br>ভূা<br>ক অস্বান<br>কৰ্তৃক গস্ব | <br>য়ন<br>শনয়ন      | 62<br>53<br>62<br>63<br>63 |
| সগরের এক স্ত্রীতে যফি সহজ্ঞ<br>পুত্রের উৎপত্তি<br>সগরপুত্রগণের ত্বর্ব ততা<br>সগরের অস্থমেধ যজ্ঞ<br>অস্থান্বেন ও সগরপুত্রগণের মূ<br>সগরের পোত্র জংশুমান্ কর্তৃত্ব<br>অংশুমানের পোত্র জংশুমান্ কর্তৃত্ব<br>অংশুমানের পোত্র জগীরথ ব | <br>ভূা<br>ক অস্বান<br>কৰ্তৃক গস্ব | <br>য়ন<br>শনয়ন      | 62<br>53<br>62<br>63<br>63 |

| কল্যাযপাদের রাক্ষসভাব, ব       | ব্ৰান্ধণভক্ষণ          | ও ভ্রান্ধণীর শাপ | 65         |
|--------------------------------|------------------------|------------------|------------|
| বশিষ্ঠ হইতে কল্যাষপাদ-প        | ज़ी मनग्रसीर           | া গর্ভ           | ৬২         |
| অশ্বকের উৎপত্তি ও বংশ          | •••                    | •••              | હ૭         |
| খটুাঙ্গের তত্ত্তান             |                        | •••              | <b>៤</b> 8 |
| রামাদির উৎপত্তি                |                        | •••              | 4a         |
| রামের বংশ                      | ••••                   | ••••             | <b>७</b> ४ |
| অভিমন্যু হইতে রামের বংশ        | ীয় বৃ <b>হদ্বলে</b> র | া মৃত্যু         | ৫১         |
| চতুর্থ অধ্যায় সমাপ্তি         | • • • •                | 91.0             | 90         |
| পঞ্চম অধ্যায়                  |                        |                  | 95         |
| নিমির যাগানুষ্ঠান              | ****                   | ****             | 95         |
| বশিষ্ঠ ও নিমির পরস্পার শ       | াপে দেহ ত্য            | াগ               | 9>         |
| মিত্রাবৰুণ হইতে বশিষ্ঠের পু    | ন ভৰ্জ গ               | ****             | 90         |
| নিমির বংশ                      | •••                    | ****             | 98         |
| সীতার উ <b>ৎপত্তি</b>          | ••••                   | ••••             | 95         |
| কুশদ্ধজের বংশ                  | ••••                   | ••••             | 9.5        |
| পঞ্ম অধ্যায় সমাপ্তি           | ****                   | ****             | 96         |
| ষ <b>ন্ঠ অধ্</b> যায়          |                        | ••••             | 95         |
| চন্দ্ৰংশ কথন                   | ••••                   | ****             | Po. •      |
| চন্দ্ৰ কৰ্তৃক গুৰুপত্নী হরণ    | ••••                   | ****             | ۲۶         |
| চন্দ্র হইতে গুৰুপত্নীর গর্ভে ব | ংধের জন্ম              | ••••             | <b>b</b> 3 |
| বুধ হইতে ইলার গর্ভে পুরুর      | ধার উৎপত্তি            | ••••             | 40         |
| উর্বাদীর সহিত পুরারবার সং      | <b>হ</b> বাস           | 4 * * *          | ba         |
| উর্বশীর নিয়ম                  |                        | ••••             | 49         |
| <b>डेक्</b> नीत चर्ल गमन       |                        | ****             | 49         |

| উর্নদী-প্রাপ্তির নিমিত্ত রাজার | র যাগারু  | ্ষান                         | ৯৪             |
|--------------------------------|-----------|------------------------------|----------------|
| যক্তে অগ্নিত্রয়ের উৎপক্তি     | •••       | ••••                         | केद            |
| যন্ঠ অধ্যায় সমাপ্তি           | •••       | ••••                         | <b>৯</b> ৫     |
| সপ্তম অধ্যায়                  |           |                              | રુલ્           |
| পুররবার বংশ                    | • • •     | ••••                         | ৯৬             |
| জহুর জন্ম ও গঙ্গা পান          | • • •     | •••                          | ৯৭             |
| জহুর বংশ                       | •••       | •••                          | ৯৭             |
| জমদগ্নি ও বিশামিতের জন্ম       | • • •     | •••                          | 202            |
| সপ্তম অধ্যায় সমাপ্তি          | •••       | •                            | २०२            |
| অফ্স অধ্যায়                   |           |                              | <b>७०८</b>     |
| আয়ুর বংশ                      | • • •     | •••                          | 320            |
| পন্ত রির জন্ম                  | • • •     | •••                          | <b>&gt;</b> 08 |
| ধন্বস্তুরির বংশ                |           | •••                          | 306            |
| অঊম অধ্যায় নমাপ্তি            | • • •     | • • • •                      | 305            |
| নবম অধ্যায়                    |           |                              | 509            |
| ইন্দ্রের সাহায্যার্থ দৈত্যগণের | সহিত ?    | াজির সংগ্রাম                 | 222            |
| ুরজিপুত্রগণের ইক্রত্ব প্রাপ্তি | • • •     | •••                          | ১০৯            |
| বৃহস্পতির কেশিলে পুনর্বার      | रेटमुत रे | <del>ত্ৰ</del> িত্ব প্ৰাপ্তি | 220            |
| ক্ষত্রহন্ধর বংশাবলী            | • • •     | •••                          | >>>            |
| নবম অধ্যায় সমাপ্তি            | • ••      | •••                          | ३५२            |
| দশম অধ্যায়                    |           |                              | <i>339</i>     |
| নহুষের বংশাবলী                 |           |                              | 220            |
| যযাতির করাপ্রাপ্তি             |           | •••                          | >>8            |

| পুত্রগণের প্রতি যযাতির শাণ            | <b>†</b>      | • • • | >>¢          |
|---------------------------------------|---------------|-------|--------------|
| যযাতির বিষয় ভোগ                      | •••           | •••   | 224          |
| যযাতির বৈরাগ্য                        | •••           | •••   | >2.5         |
| যযাতি-পুত্রগণের রা <b>জ্</b> যাভিষে   | ক             | •••   | >>9          |
| দশম অধ্যায় সমাপ্তি                   | •••           | •     | 726          |
| একাদশ অধ্যায়                         |               |       | >>>          |
| যথাতির প্রথম পুত্র যহুর বং            | ণাবলী         | • • • | 279          |
| যদ্লবংশে কার্ত্তবীর্য্য অজ্জুনের      | জন্ম          | • • • | 250          |
| পরশুরাম হইতে কার্ত্তবীর্য্যের         | <b>मृ</b> जुर | • • • | \$20         |
| যতুবংশের বৃষ্ণি মধুপ্রভৃতি নাম        | প্রাপ্তির কা  | রণ    | ३२७          |
| একাদশ অধ্যায় সমাপ্তি                 | • • •         | • • • | >>8          |
| इमिन जश्रीत                           |               |       | <b>3</b> > ¢ |
| বহুপুত্র ক্রোষ্ট্র বংশাবলী            | •••           | • • • | <b>3</b> 2¢  |
| অপুত্র ক্রৈণ জ্যামঘের চরিত            | • • •         | •••   | ३२५          |
| জ্যামঘের বংশাবলী                      |               | • • • | 300          |
| वानम् अधारा मगांखि                    | • • •         |       | <b>५</b> ७२  |
| ত্রোদশ অধ্যায়                        |               |       | 200          |
| সত্বতের বংশাবলী                       | •••           |       | 305          |
| স্যমন্ত্ৰকোপাখ্যান                    | •••           | •••   | >08          |
| ক্ষের কলককালন                         | • • •         | •••   | ५०८          |
| জাম্বতীর সহিত ক্ষের বিবা              | र             | •••   | 585          |
| সভ্যভামার সহিত ক্লফের বিব             | <b>†</b> হ    | •••   | >8¢          |
| স্যায় কের নিমিত্ত সত্রাজিতে          | র মৃত্য       |       | >86          |
| •<br>স্থায়ন্তকের নিমিত্ত শতধনুর মৃত্ | ङ्ग           |       | 202          |

| .%                            |                |            |  |
|-------------------------------|----------------|------------|--|
| ক্ষের পুনর্কার কলঙ্ক এবং ক্র  | ফের প্রতি বন   | দদেবের কে  | र्ग भ                                  |
| ও অবিশ্বাদ                    | •••            | ***        | <b>५</b> ७२                            |
| অক্রের দারকা পরিভ্যাগপূর      | কি পলায়ন      | •••        | 348                                    |
| গান্দিনীর উপাখ্যান            | •••            | •••        | 200                                    |
| অক্রের আনরন                   | •••            | •••        | <b>5</b> & 9                           |
| অক্রের নিকট স্থামস্তক মণি     | প্রাপ্তি ও ক্ল | ফার কলকঃ   |  |
| क्तानन                        | •••            | •••        | 350                                    |
| ক্ষের আনেশে অন্রের প্রক       | াশ্য রূপে স্থ  | মস্তক নণি- |  |
| ধারণ                          |                | •••        | >50                                    |
| ত্রোদশ অধ্যায় সমাপ্তি        | ***            | •••        | 558                                    |
| ठ <b>ूर्फ</b> ण अक्षांश       |                |            | ১৬৫                                    |
| শিনির বংশাবলী                 | •••            |            | >50                                    |
| অন্মিত্র-সন্তান পৃশ্লির বংশাব | <b>া</b> লী    | •••        | >3 c                                   |
| অন্ধক বংশ                     | •••            | •••        | <b>&gt;</b> 55                         |
| কুস্তির বংশ                   | •••            |            | >45                                    |
| শ্রুতদেবার বংশ                | • • •          | • • •      | 590                                    |
| জ্রতকীর্ত্তি ও জ্রভশ্রবার বংশ | • • •          | •••        | 390                                    |
| শিশুপালের উৎপত্তি             | •••            | • • •      | 593                                    |
| চতুর্দশ অধ্যায় সমাপ্তি       | •••            | ••••       | <b>३</b> १२                            |
| পঞ্চল অধ্যায়                 |                |            | 290                                    |
| শিশুপালের মুক্তিলাভের কার     | <b>ৰ</b>       | ••••       | 396                                    |
| বস্থদেবের পত্নীগণের নাম ও ব   |                | •••        | 399                                    |
| কুফের জন্ম                    | ••••           | ****       | 313<br>6P¢                             |
| যত্ত্বংশীয়দিগের সংখ্যা       |                | ••••       | ************************************** |
|                               |                |            |  |

| প্ৰদেশ অধ্যায় সমাপ্তি   |          |  |
|--|----------|--|
| বোড়শ অধ্যায়  | ****     | 34   |
| ভূকহির বংশ   |          | 7.1  |
| বোড়শ অগ্যায় সমাপ্তি  | ••••     | 7 4  |
| সপুদশ অধ্যায়  | ****     | 140  |
| দুকার বংশা ও স্থান্থ   |          | >b~(   |
| জ্জুরে বংশ ও সপ্তদশ অধ্যায় সমারি<br>অ <b>ষ্টাদ</b> শ অধ্যায়  | <b>3</b> | 36   |
| सर्गित इन्हें केन  |          | <b>&gt;</b> b-   |
| যথাতির চতুর্থ পুত্র অণুর বংশাবলী   | ****     | 360  |
| অঙ্গ বন্ধ কলিন্দ মুলা ও পুণু নামের কা  | রণ       | <b>3</b> 61  |
| অঙ্কের বংশ (ও চম্পানগরী স্থাপন)  | • • • •  | <b>3</b> <i>b</i> ;  |
| কর্নের উৎপদ্ধি   | ****     | 28   |
| অফীদশ অধ্যায় সমাপ্তি  | ****     | 38   |
| ादेन जिल्हा का कार्या  |          | • • •  |
| উনবিংশ অধ্যায়   |          | 15.  |
|  | •••      | >>,  |
| পুকপুত্র জনমেজয়ের বংশাবলী   | •••      | \$ .   |
|  | •        | \$5°   |
| পুকপুতি জনমেজয়ের বংশাবলী<br>পু <sup>ক্তং</sup> শে হুদা <b>স্তপুত্র ভরতের জন্ম</b><br>ভরতের বংশ  |          | >50<br>>50<br>>50  |
| পুকপুতি জনমজেরের বংশাবলী<br>পু <sup>ক্তং</sup> শে হুদা <b>স্থপুত্র ভরতের জন্ম</b><br>ভরতের বংশ<br>ভরতপুত্র বিভ্থারে বংশ  | •        | 550<br>550<br>550<br>550   |
| পুকপুতি জনমজেররে বং শাবলী<br>পু <sup>ক্বং</sup> শে ছুদাস্থপুতি ভেরভারে জাদা<br>ভিরভের বংশ<br>ভিরভপুতি বিভিথারে বংশা<br>হ'ডিনাপুর স্থাপান   | ••••     | >><br>>><br>>><br>>><br>>><br>>><br>>>                                       |
| পুকপুত জনমজেরের বং শাবলী<br>পুকবংশে হুদাস্তপুত্র ভরতের জন্ম<br>ভরতের বংশ<br>ভরতপুত্র বিভথের বংশ<br>হস্তিনাপুর স্থাপন<br>অজ্যীত-ভনয় বৃহ্দিযুর বংশ                                      | ••••     | \$50<br>\$50<br>\$50<br>\$50   |
| পুকপুত জনমেজয়ের বং শাবলী পুকবংশে তুঘস্তপুত্র ভরতের জন্ম ভরতের বংশ ভরতপুত্র বিতথের বংশ হাস্তিনাপুর স্থাপন অজ্যীত-তন্য বৃহ্দিযুর বংশ ঐ নীলের বংশ  | ••••     | >><br>>><br>>><br>>><br>>><br>>><br>>>                                       |
| পুকপুত জনমেজয়ের বংশাবলী পুকবংশে গুদ্মস্থাত ভরতের জন্ম ভরতের বংশ ভরতপুত্র বিতথের বংশ হাস্তিনাপুর স্থাপন অজ্যাত-তন্য বৃহ্দিযুর বংশ ঐ ঐ নীলের বংশ কপ ও কপীর উৎপত্তি                      | ••••     | 550<br>550<br>550<br>550   |
| পুকপুত জনমেজয়ের বং শাবলী পুকবংশে তুদ্মস্তপুত্র ভরতের জন্ম ভরতের বংশ ভরতপুত্র বিতথের বংশ হস্তিনাপুর স্থাপন অজমীত-তনয় বৃহ্দিযুর বংশ ঐ নীলের বংশ কপ ও কপীর উৎপত্তি অজমীত-তনয় ঋ্কের বংশ |          | \$50<br>\$50<br>\$50<br>\$50<br>\$50<br>\$50<br>\$50<br>\$50<br>\$50<br>\$50 |
| পুকপুত জনমেজয়ের বংশাবলী পুকবংশে গুদ্মস্থাত ভরতের জন্ম ভরতের বংশ ভরতপুত্র বিতথের বংশ হাস্তিনাপুর স্থাপন অজ্যাত-তন্য বৃহ্দিযুর বংশ ঐ ঐ নীলের বংশ কপ ও কপীর উৎপত্তি                      |          | \$200<br>\$200<br>\$200<br>\$200<br>\$200<br>\$200<br>\$200<br>\$200         |

#### [5]

| বি <b>ংশ অধ</b> ্যায়                     |         |      | २०६           |
|---|---------|------|---------------|
| <i>স</i> হুর বংশ                          | ••••    | •••• | २०४           |
| ভ শস্তবুর রাজ্যে অনার্ফির কারণ            |         | •••  | ₹0.P          |
| ্গান্তরুর বংশ                             | •••     | •••  | २०३           |
| <ul> <li>শাণ্ডবগণের বংশ</li> </ul>        | • • •   | •••  | 522           |
| বিংশ অধ্যায় সমাপ্তি                      |         | •••• | २५७           |
| একবিংশ অধ্যায়                            |         | -    | <b>\$</b> > 8 |
| ভবিষ্য ভূপালগণের বংশ                      | •••     |      | ₹58           |
| প্রিক্ষিতের বংশাবলী                       | •••     | •••  | ₹\$8          |
| একবিংশ অধ্যায় সমাপ্তি                    |         | •••• | २ऽ७           |
| দ্বাবিংশ অধ্যায়                          |         |      | २२१           |
| ্ঃকৃাকুবংশীয় ভবিষ্যভূপালগণ               | • • •   | •••• | २५१           |
| জ, দাবিংশ অধ্যায় সমাপ্তি                 | • • • • | •••  | २५२           |
| - <sup>*</sup> ত্রেশ্বিংশ <b>অধ্যা</b> য় |         |      | २२०           |
| दृश्क्षय वर्षांध्यन्न मर्गथरमभीय छ        | বিষ্য র | জগণ  | २१०           |
| ত্রেংবিংশ অধ্যার <b>সমাপ্তি</b>           | ř       | •••• | २२5           |
| চতুৰ্বিংশ অধ্যায়                         |         |      | २२२           |
| ে <sup>ন</sup> ্যাতবংশীয় ভবিব্য রাজগণ    | • • •   | •••  | २२२           |
| শিশুনাগবংশীয় ভবিষ্য রাজগণ                |         | •••  | २२७           |
| नम् त्रीषा                                | ••••    | •••• | २२७           |
| মে রেয় বংশ (চন্দ্রগুপ্ত প্রভৃতি)         |         | •••• | २२8           |
| ভঙ্গভূপালগণ (পুষ্পমিত্র প্রভৃতি)          | ••••    | •••• | २२४           |
| কালায়ন ভবিষ্য রাজগণ                      | ****    |      | २ २ ५         |

#### [ 50 ]

| পদ্ধভূত্য নামক ভবিষ্য রাজগণ     | •••    | •••  | <b>२</b> ३७ |
|---------------------------------|--------|------|-------------|
| नक, बरन, मूछ छ योन ज्ञांकरान    | •••    | •••  | 226         |
| কেলিকিলা নগরীন্থিত যবনগণের স    | াৰাজ্য | **** | 224         |
| ভবিষ্য বিবিধ রাজবংশ             | •••    | •••  | २२३         |
| কলির প্রাত্তাবে রাজগণের চরিত    | •••    | •••  | 205         |
| সত্যসুগ প্রারম্ভের সময়         | •••    | •••  | २७४         |
| কলির প্রাত্মন্তাবের সময়        | ****   | **** | २७५         |
| পৃধিবীগীতা                      | •••    | •••  | ₹80         |
| <b>व्यक्तिः म व</b> धाति नगां छ | •••    | •••  | ₹84         |

# চতুর্থ অংশ সমাপ্তি।

विक्शूश्रवागम्।

চতুর্বোহংশ:।

व्यथरमार्थातः।

বৈত্রেয় উবাচ।

ভগবন্! যন্ত্ৰীঃ কাৰ্যাং সাধুকৰ্মণ্যবিছিছৈ:।
তক্মহুং গুরুণাখ্যাতং নিত্যনৈমিত্তিকাত্মকম্॥ > ॥
বৃণিধৰ্মান্তথাখ্যাতা ধৰ্মা যে চাশ্ৰমেষু বৈ।
শ্ৰোত্মিচ্ছাম্যহং বংশান্ তাংস্তৃং প্ৰক্ৰহি মে গুরো! ।২॥
প্রাশ্ব উবাচ।

মৈত্রেয়! আয়তাম্ অয়মনেক-যত্ত্বির-শূর-ভূপালা-স্কৃতো ব্রহ্মাদির্মানবো বংশঃ।

নৈত্যে কহিলেন, ভগবন্! আপনি আমার শুরু। বে সকল নিতা নৈনিন্তিক কর্মা, সৎকর্ম-নিরভ মনুষ্যের কর্ত্তন্য, তৎসমুদার আপনি আমার নিকট কহিলেন। গুরো! আপনি ব্রাহ্মণ ক্ষাত্তর প্রভৃতি বর্ণচতৃষ্টয়ের ধর্মা ও আপ্রমচতৃষ্টয়ের ধর্ম বলিয়াছেন। এক্ষণে আমি রাজগণের বংশাবলী প্রবণ করিতে অভিলাব করি, আপনি (কুপা করিয়া) বলুন।

পরাশর কহিলেন, মৈত্রেয় ! প্রবণ কর। ব্রহ্মা হইতে সানব-বংশ (বিস্তার্গ হইয়াছে।) অনেক যাগশীল শুর বীর ভূপাল, এই বংশ উজ্জ্বল করিয়াছেন। এ বিষয়ে কথিত আছে যে, যে ব্যক্তি

#### তথা চোচাতে।

ব্ৰহ্মাদ্যং যো মনোৰ্বংশম্ অহন্যহনি সংস্থারেও। তস্য বংশসমুচ্ছেদো ন কদাচিদ্ধবিষ্যতি॥ ৩॥

তদস্য বংশারপুর্বীমশেষপাপ গ্রহ্মালনায় মৈত্তেরৈতাং শৃণু। তদ্যথা সকলজগতামনাদিরাদিভূত ঋগ্যজ্ঞঃসামাদিময়ে। ভগবদিফুময়স্য ত্রহ্মণো মুর্তিরূপং হিরণ্যগর্ভো ত্রহ্মাণ্ডতো ভগবান্ ত্রহ্মা প্রায়ভূব ॥ ৪ ॥

বৃদ্ধান্ত দক্ষিণা দুষ্ঠজয়। দক্ষঃ প্রজাপতিঃ, দক্ষস্যাপ্যদিতির দিতে বিবস্থান্ বিবস্থতে। মার্মানোরিক্ষুণকুনৃগ-ধৃষ্ট-শার্যাতি-নরিষ্যন্ত-প্রাংশু-নাভাগ-নেদিষ্ট-কর্মপৃষ্ধাখ্যাঃ পুত্রা বভুবুঃ॥ ৫॥

ইফিঞ মিতাবরুণয়োর্মনুঃ পুক্রকামশ্চকার॥ ৬॥

প্রতিদিন ব্রহ্ম। অবধি সমস্ত সনু বংশ আরণ করে, কখনই তাহার বংশ লোপ হয় না। ইসত্রেয়! একণে অশেষ পাপ কয়ের নিমিস্ত সেই বংশের উৎপত্তি ক্রম (বলিতেছি) শ্রবণ কর। যথা——

প্রথমতঃ ব্রক্ষাপ্ত হইতে ভগবান্ হিরণাগর্জ ব্রক্ষা উৎপন্ন হইরাছিলেন। ইনি সকল অগতের আদি কারণ। ই হার আদি-ভূত কোন (ছাট) কারণ নাই। ইনি কাক্ যজুঃ সাম ও অথর্কা বেল্মর। ইনিই বিষ্কুময় ভগবান্ ব্রক্ষের পরিচ্ছিন মূর্ত্তি।

ব্ৰহার দৃক্ষিণালুই হইতে দক প্রজাপতি উৎপন্ন হইলেন।
দক হইতে অদিতি, অদিতি হইতে দুর্যা, দূর্য্য হইতে মনু, মনু
হইতে ইক্ষাকু জন্ম গ্রহণ করিলেন। ইক্ষাকু হইতে ক্রমণঃ নৃগ,
দুক্ত, শর্যাতি, নরিবান্ত, প্রাংশু, নাভাগ, নেদিউ, করুব, পূব্র,
এই দকল পুত্র উৎপন্ন হইল। পুর্বে মনু, পুত্র কামনার সৈত্রা-

তত্রাপহতে হোতুরপচারাদিশা নাম কন্যা বভূব। १।

দৈব চ মিত্রাবরুণ-প্রসাদাৎ স্থানুরো নাম মনোঃ
পুত্রো মৈত্রেয়াসীৎ। পুনশ্চেশ্বরকোপাৎ স্ত্রী সভী
সোমস্থনার্ধিস্যাশ্রমসমীপে বজাম। ৮।

সার্রাগণত তস্যাৎ বুধঃ পুরুরবস্মাজ্মজমুৎপাদয়ামাস ॥ ৯ ॥

জাতে চ তক্মিন্নমিততেজোভিঃ প্রমর্বিভিন্নিউ-ময় ঋঙাুয়ো যজুর্ময়ঃ নামময়োহথর্মময়ঃ সর্বময়ে। মনোময়ো জ্ঞানময়োহকিঞ্জিয়য়ো ভগবান্ যজ্ঞপুরুষ-য়রপী সুন্মস্য পুংস্কৃমভিলয়স্তির্ধধাবদিউঃ॥ ১০॥.

তৎপ্রসাদাদিলা পুনরপি সুদ্যুমোইভবং ॥ >> ॥

বরণ নামক যাগ করিয়াছিলেন। (মনু-পদ্ধীর প্রার্থনামুসারে)
কোডার সঙ্কলপ হেডু সেই পুরোকি বিকল হওয়াতে ইলা নারী
কন্যা উৎপন্ন হইয়াছিল। বৈরোধ দুলুর সেই ইলা নারী কন্যা,
বৈত্রাবর্গণের অনুগ্রহে সুদুদ্ধ নামক পুর হইলেন। ঐ সুদুদ্ধ
মহাদেবের কোপে শাপগ্রন্ত হইরা পুনর্বার প্রীর্পাপ্রান্ত হইয়া—
ছিলেন।

একদা তিনি সুধাংগুনন্দন বুধের আজ্রম সমীলে জ্রমণ করিছেছেন দ ( এমত সময় বুধ তাঁহাকে অবলোকন করিলা ) তাঁহাতে
অনুরক্ত হইলেন এবং তাঁহার গর্ডে পুরুরবা নামে একটা পুরু উৎপাদন করিলেন। পুরুরবা উৎপন্ন হইলে অনিততেকা মহর্বিরঃ,
সুদ্যুরের পুনর্বার পুরুরত্ব—কামনার বজ্ঞবন্ধ শুরুর বস্তুর্মন সামদর
অথর্বময় মনোমর জ্ঞানময় সর্বমন্ধ বস্তুত অকিঞ্জিন্ত ন্যক্তর্মক
ভগবানের উদ্দেশে বাগ করিতে লাগিলেন। " বজ্ঞেশার হ্রির
অনুহাহে ইলা পুনর্বার সুহায় হইলেন। "

তস্যাপ্যথকল-গন্ধ-বিনতসংজ্ঞাস্ত্ররঃ পুত্র। বভূরুঃ।
স্থান্ত্র জ্ঞীপূর্বকত্বাৎ রাজ্যভাগং ন লেভে॥ ১২॥
তৎপিত্রা তু বশিষ্ঠবচনাৎ প্রতিষ্ঠানং নাম নগরং
স্থান্ত্রায় দত্তম্। ভচ্চাদো পুররবদে প্রাদাৎ। পৃষ্ধস্ত শুরুগোবধাৎ শুকুত্বমগম্থ॥ ১৬॥

করুষাৎ কারুষা• মহাবলাঃ ক্ষজ্রিয়। বভূবুঃ ॥ ১৪॥ 'নাভাগো নেদিষ্টপুত্রস্ত বৈশ্যতামগমৎ॥ ১৫॥

তস্মান্তলন্দনঃ পুতোহভবৎ। ভলন্দনাদ্ বৎসপ্তি-রুদারকীর্ত্তিঃ, বৎসপ্রেঃ প্রাংশুরভবৎ, প্রজানিশ্চ প্রাং– শোরেকোহভবৎ, ভতশ্চখনিত্রঃ, তস্মাচ্চ ক্সং,† কুপাচ্চ

সুদামের উৎকল, গয় ও বিনত নামে তিনটা পুত্র হইল। ইনি
পূর্বে জ্রী ছিলেন বলিয়া রাজ্যভাগী হইলেন না <sup>১২</sup> পরস্কু তাঁহার
পিতা, বলিষ্ঠের অনুরোধ ক্রমে তাঁহাকে প্রতিষ্ঠান নামক নগর
প্রদান করিলেন। ইনিও পুরুরবা নামক পুত্রকে ঐ নগর দিলেন।
পূবপ্র, শুরুর, গোহতা করিয়া শুত্র হইলেন। করুষ হইতে
কারুষ নামে মহাবল ক্রমেরগণ উৎপন্ন হইল। ১৪ নে দিউ-পুত্র
নাজাগ, (কর্ম্মারা) বৈশ্য হইলেন। ১৫

নাভাগের একটা পুত্র হইল, তাহার নাম ভলন্দন। ভলন্দন হইতে উদারকীর্জি বৎসপ্রি ক্ষমগ্রহণ করিলেন। বংসপ্রির একটা পুত্র ক্ষিল। তাহার নাম প্রাংগু। প্রাংগুর একটা পুত্র হইল, ভাহার নাম প্রজানি। পরে প্রজানি হইতে খনিত্র, খনিত্র হইতে ক্লুপ, ক্লুপ হইতে অভিবল পরাক্রম অবিবিংশ, জ্মিলেন। অবি-

<sup>•</sup> कब्रव'e क'ब्रवा देखि बङ्गपाठ: शार्ठ: ।

**৭ ডন্মাচ্চ কুপ: চকুপান্তত ই**তি বা প'ঠঃ

অতিবলপরাক্রমোইবিবিংশোই ভবং। ততো বিবিংশঃ, তথাচ খনীনেত্রঃ, ততশ্চাতিবিভূতিঃ, অতিবিভূতেভূরি-বলপরাক্রমঃ করন্ধমঃ পুজোইভবং, তথাদপ্যবিক্ষিঃ, অবিক্ষেরপ্যতিবলঃ পুজো মরুত্রোইভবং॥ ১৬॥

যসোধাবদ্যাপি শ্লোকৌ গীয়েতে।—
মক্তন্য যথা যজ্ঞত্তথা কন্যাভবস্তুবি।
সর্বং হিরণায়ং যন্য যজ্ঞবস্তৃতিশোভনম্॥
অমাদ্যদিন্দ্রঃ সোমেন দক্ষিণাভির্দ্ধিলাতয়ঃ।
মক্তঃ পরিবেফারঃ সদস্যাশ্চ দিবৌকসঃ॥ ১৭॥
মক্তশ্চক্রবর্তী নরিব্যন্তনামানং পুত্রমবাপে। তথাচ্চ
দমঃ, দমস্য পুত্রো রাজ্যবর্দ্ধনো যজ্ঞে। রাজ্যবর্দ্ধনাৎ

বিংশ হইতে বিনিংশ, পরে বিবিংশ হইতে খনীনেত্র, খনীনেত্র হইতে অতিবিভৃতি, অতিবিভৃতি হইতে মহাবল পরাক্রমশালী করন্ধন নামক পুত্র জন্ম পরিগ্রহ করিল। করন্ধন হইতে অনিক্রিং অবিক্রি হইতে মহাবলশালী মরুজ্ব নামক পুত্র উৎপন্ন হইল। ১৯ এই মরুজ্বের এই শ্লোক অদ্যাপি সকলে আরন্ধি করিয়া থাকেন।

এই পৃথিবীমধ্যে মক্সন্ত যে ক্লপ যজ্ঞ করিয়াছিলেন, আর কোন্ বাজি তান্ত্রণ যজ্ঞের অনুষ্ঠান করিতে সমর্থ হইয়াছে? তাঁহার সমুদার যজ্ঞীর বস্তুই হির্থার ও সাতিশয় রমণীয় ছিল। তাঁহার যজ্ঞে দেবরাল সোমপান করিয়া, ব্রাহ্মণেরা (অসীম) দক্ষিণা পাইয়া যার পর নাই পরিজ্পু হইয়াছিলেন। তদীয় যজ্ঞে মরুত্-গণ পরিবেশনকর্ত্তা ও অন্যান্য দেবতারা সদস্য হইয়াছিলেন। ১৭

মরুত্ত, রাজ-চক্রবর্জী হইলেন। নরিব্যস্ত নামে উছির একটা পুত্র জমিল। নরিব্যস্তের পুত্র-দম, দমের পুত্র রাজ্য বর্জন, রাজ্য সুধৃতিরভূৎ। ততশ্চ নরঃ, তন্মাচ্চ কেবলঃ, কেবলাদ্
বন্ধুমান্, বন্ধুমতো বেগবান্, বেগবতো বুণঃ, ততঃ
তৃণবিন্দুঃ, তদ্যাপ্যেকা কন্যা ইলিবিলা নাম। তঞ্চালমুষা নাম বরাপ্যরা তৃণবিন্দুং ভেলে। তদ্যামদ্য
বিশালো জডের, যঃ পুরীং বৈশালীং নাম নির্মান।
হেমচন্দ্রণ বিশালক্ত পুরোংভবং। তন্মাচ্চ স্কচন্দ্রঃ,
তত্তনয়ো ধূমাশ্বঃ, তক্তাপি ক্ষুয়োংভূৎ। ক্ষুয়াৎ দহদেবঃ, ততঃ ক্লশাশ্বো নাম পুরোংভূৎ। দোমদতঃ
ক্লশাশ্বাৎ জডের। যো দশাশ্বমেধানাজহার। তৎপুরুশ্চ
জনমেজয়ঃ, জনমেজয়াৎ সুমতিঃ। এতে বৈশালকা ভূভূতঃ॥ ১৮॥

বর্জনের পুত্র মুধৃতি, মুধৃতির পুত্র নর, নরের পুত্র কেবল, কেবলের পুত্র বন্ধুমান, বন্ধুমানের পুত্র বেগবান, বেগবানের পুত্র বুধ, বুধের পুত্র হৃণবিন্দুর একটা কন্যা হইয়াছিল, ঐ কন্যার নাম ইলিবিলা। অলম্বুমা নামে পরম মুন্দরী অক্সরা, ঐ হৃণবিন্দুর সহিত সহবাস করিলেন। তাহাতে বিশাল নামে পুত্র উৎপন্ন হইল। রাজা বিশাল, বৈশালী নামে পুত্রী নির্মাণ করিলেন।

বিশালের একটা পুত্র হইল। ঐ পুত্রের নাম হেমচন্দ্র। হেমচক্রের পুত্রের নাম সুচন্দ্র। স্কুচন্দ্র হইতে ধুরাখ, ধুমাখ হইতে
ক্ষেয়, ক্ষ্ণের হইতে সহদেব, সহদেব হইতে রুশাখ, রুশাখ হইতে
সোমদন্ত, উৎপত্র হইলেন। এই সোমদন্ত দশটা অখনেধ বজ্ঞ
করিয়া ছিলেন। সোম দল্তের পুত্র জনমেজ্লয়, জনমেজ্লয়ের পুত্র
স্থাতি, (এই সমন্ত রাজা বৈশালী নগরীতে রাজত্ব করেন) এবং
ই হারা বিশালনংশীয় বলিয়া বৈশাল নামে বিখ্যাত হন। এবং
বিশ্বের একটা স্লোক পঠিত হইয়াগাকে, যথা।

শোকোইপ্যত্র গীয়তে,—

তৃণবিলোঃ প্রসাদেন সর্বে বৈশালকা নৃপাঃ। দীর্ঘায়ুযো মহাত্মানো বীর্যাবস্তোহতিথার্মিকাঃ॥ ১৯॥

শ্ব্যাতেঃ ক্র্যা সুক্র্যা নামাভবৎ। যামুপ্রেম চ্যবনঃ।

আনর্ভ্রন্থ নাম ধার্মিকঃ শর্যাতিপুত্রোইভবৎ।
আনর্ভ্রন্থাপ রেবতো নাম পুত্রো জজ্ঞে। যোহসাবানর্ত্তবিষয়ং বৃভূজে, পুরীঞ্চ কুশস্থলীমধ্যুবাস। রেবতস্থাপি
রৈবতঃ পুত্রঃ ককুলী নাম ধর্মাত্মা ভাতৃশতজ্যেষ্ঠোইভবৎ। তম্ম চ রেবতী নাম কন্যা। তামাদায় কম্মেয়মইতীতি ভগবন্তমজ্ঞানিং প্রস্কুং ব্রন্ধলোকং জগাম।

তৃণবিন্দুর প্রসাদে বৈশাল ভূপতিগণ, দীর্ঘায়ুঃ মহাত্মা বীর্য্য-শালী ও অতিধাঝিক হইয়াছিলেন। ১৯

শর্যাতির একটা কন্যা জিম্মিয়াছিল। এই কন্যার নাম স্কন্যা।
চাবন, এই স্কন্যাকে বিবাহ করিলেন। অনন্তর শর্যাতি হইতে
আনর্ত্ত নামে একটা পুত্র উৎপন্ন হইল। আনর্ত্ত অতিধার্মিক
ছিলেন। আনর্ত্তের একটা পুত্র জন্মে, তাহার নাম রেবত। রেবত,
কুশস্থলী নামে নগরীতে অধিষ্ঠান করিয়া আনর্ত্ত-নামক রাজ্য ভোগ
করেন।

রেবতের একশত পুত্র উৎপন্ন হইরাছিল। তত্মধ্যে কেন্ঠ পুত্রের নাম রৈবত ও ককুলী। ইনি ধর্মাত্মা ছিলেন। রৈবতের একটী কন্যা হইয়াছিল, ভাহার নাম রেবতী।

রৈবত, ঐ কন্যাকে কোন্ পাত্রে সম্প্রদান করা কর্ত্ব্য, এই কথা জিজ্ঞানা করিবার নিমিন্ত ঐ কন্যাকে সমভিব্যাহারে লইয়া ব্রহ্ম-লোকে ভগবান্ পদ্মযোনির নিকট গমন করিলেন। এই সময় হাহা তাবচ্চ ব্ৰহ্মণোইন্তিকে হাহা-হূহূ-সংজ্ঞাভ্যাৎ গন্ধৰ্কা-ভ্যামতিতানং নাম দিব্যৎ গান্ধৰ্কমগীয়ত॥২০॥

তাবচ্চ ত্রিমার্গপরিবর্ত্তিরনেক্যুগপরিবৃত্তি তিষ্ঠন্নপি রৈবতকঃ শৃণুন্ মুস্তুর্তিমিব মেনে ॥ ২১ ॥

গীতাবদানে ভগবন্তমক্তযোনিং প্রণম্য বৈর্তকঃ
কন্যাযোগ্যং বরমপৃচ্ছে । তঞ্চাহ ভগবান্, কথয়, যোহিভিমতত্তে বর ইতি । পুনশ্চ প্রণম্য ভশবতে যথাভিমতান্ আত্মনঃ স বরান্ কথয়ামাস, ক এয়ং ভগবতোহভিমতঃ, কলৈ কন্যামিয়াং প্রয়ন্থাতি । ভতঃ কিঞ্চিদবনতশিরাঃ সন্মিতো ভগবানক্তযোনিরাই ॥ ২২ ॥

ছুহ্নামে গন্ধসংঘ্য ব্রহ্মার সমীপে অতি মধুর স্বরে দিব্য গান্ধসার করিতেছিলেন। । এ গানে ষড়্জ মধ্যম ও গান্ধার সার এরূপ পরিবর্ত্তিত হইতেছিল যে, রৈবতক, সেই স্থানে অবস্থান করিয়া যতক্ষণ শুনিতেছিলেন, তাহার মধ্যে কত যুগ পরিবর্ত্ত হইয়া গেল, তথাপি তিনি সেই গত অনেক যুগকে মুহূর্ত্তির ন্যায় বোধ করিলেন। ১১

যথন সঙ্গাত নিরুদ্ধি হইল, তথান রৈবত, ভগবান্ পথাযোনিকে প্রণাম করিয়া কন্যার উপযুক্ত বরের কথা জিজাদা করিলেন। ভগবান্ তাঁছাকে কহিলেন, কোন্ বরে কন্যাদান করা
ভোমার অভিপ্রেত? রৈবত পুনর্যার প্রণাম পুর্বক, কোন্ কোন্
বরে সমর্পণ করা উঁছার অভিপ্রায়, তাহা বাক্ত করিয়া জিজাদা
করিলেন, ভগবন্! এই সকল পাত্রের মধ্যে কোন্টা আপনকার
অভিমত? কাহাকে কন্যাদান করি। অনন্তর ভগবান্ পিতামহ,
কিঞ্ছিং অবনত মন্তক হইয়া ঈবং হাসা পুর্বক কহিলেন। বি

যে এতে ভবতোহভিমতাঃ. নৈতেষাং সাম্প্রতমপত্যাপভাসত্তরপাবনীতলেহস্তি । বছুনি হি তবাত্রভদ্যান্ধবাং শৃণুতশ্চতুরু গান্যতীভানি। সাম্প্রতং ভূতলেহফাবিংশভিত্মস্থ মনোশ্চতুরু গমতীভপ্রায়ম, আসন্মে হি তৎকলিঃ, অন্যব্যে কন্যারত্নমিদং ভবতৈকাকিনা দেয়ম্॥ ২৩॥

ভবতোহপি মিত্রমন্ত্রিভৃত্যকলত্রবন্ধুবলকোষাদয়ঃ সমস্তাঃ কালেনৈতেনাত্যন্তমতীতাঃ ॥২৪॥

পুনরপু্থপারসাধ্বাঃ সরাজা ভগবন্তং প্রান্থ পপ্রাচ্ছ, ভগবন্! এবমবস্থিতে মমেয়ং কমৈ দেয়েতি। ভতঃ স ভগবান্ কিঞ্চিদবনতকন্ধরং ক্তাঞ্জলিভূতং সপ্তলোক-শুকুরক্তানিরাই॥২৫॥

যাহাদের নামোলেথ করিতেছ, এক্ষণে ভাহাদের কথা দুরে থাকুক, পৃথিবাতে ভাহাদের ব শাঁষ কোন ব্যক্তিও বিদ্যমান নাই। তুমি যে সময় এই স্থানে গান্ধর্ম গান শ্রেণ করিতেছিলে, ভাহার মধ্যে বহুসংখ্য চতুর্গু গভাত হইয়াছে। অধুনা পৃথিবীতে অফ্টাবিংশভিতম মনুর চতুর্গ অভাত প্রায় হইয়াছে। অধুনা কলিন্দুগ চলিতেছে। এক্ষণে ভোমার বন্ধু বান্ধার কেহই নাই) এখন তুমি একাকাই অন্য কোন ব্যক্তিকে এই কন্যারত্ম সম্পাদান কর। তুমি একাকাই অন্য কোন ব্যক্তিকে এই কন্যারত্ম সম্পাদান কর। তুমি একাকাই অন্য কোন বন্ধু বান্ধার মন্ত্রা ভূত্য কলতে সৈন্য কোন এতৎমুদ্যেই অভাত হইয়াছে। তু

অনন্তর সেই রাজা সশঙ্ক হইয়া পুনর্বার ভগবান্ ব্রহ্মাকে প্রাথম করিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, ভগবন্! যথন ঈদৃশ অবস্থা উপস্থিত হইয়াছে, তথন এক্ষণে কোন্বা;জিকে এই কনা। সম্প্রা- বিদ্যোগ্যমজন্ত যক্ত্য
বিদ্যোগ্যমজন্ত যক্ত্য থাতুঃ।
ন চ স্বরূপং ন পরং স্বভাবং
ন চৈব সারং পরমেশ্বরস্য॥ ২৬॥
কলামুহুর্তাদিমরণ্চ কালো
ন যদ্ভিত্তঃ পরিণামহেতুঃ।
অজন্মনাশস্য সমস্তমূর্ত্তেরনামরূপস্য সনাতনস্য॥ ২৭॥
যস্য প্রসাদাদহম্যুত্তস্য
ভূতঃপ্রজাক্তিকরোহন্তকারী।
ক্রোধাচ্চ ক্রডঃ স্থিতিহেতুভূতো
যক্ষাচ্চ মধ্যে পুরুষঃ পরক্ষাৎ॥ ২৮॥

দান করা কর্ত্তবা ? তথন সপ্তলোক-শুকু ভগবান্ পদ্ম যোনি, কৃত্যপ্রলি পুটে দশুরিমান ও কিঞ্চিৎ অবনত-মন্তক রৈবতককে কহিতে
লাগিলেন। ২৫

ব্রহ্মা কহিলেন। বিনি জন্মরহিত, আমরা ঘাঁছার আদি মধ্য
বা অন্ত জ্ঞাত হইতে সমর্থ নহি, যিনি সর্ব্যাত ও সকলের বিধাতা,
বিনি পরমেশ্বর, আমরা ঘাঁছার তত্ত্ব, অসাধারণ ধর্ম বা অসাধারণ
ক্ষমতা অবগত নহি, ১০ কলা কাঠা মুহুর্ত্ত প্রভৃতি কাল দারা
ঘাঁছার বিভূতির পরিণাম হয় না। ঘাঁহার জন্ম নাই, সূত্যু নাই।
সমস্ত বস্তই ঘাঁহার মুর্ত্তি, যিনি সনাতন, ঘাঁহার নাম বা রূপ নাই, ১০
বে অব্যয় পুরুষের অনুগ্রহে আমি জ্বগৎ স্প্তি করিতেছি, রুজ
ক্রোধ পুর্বক সংহার করেন ও মধ্যে বিক্নামক পরমপুরুষ রক্ষা

মজপমাস্থার স্কত্যজো যঃ
স্থিতে চ যোহসো পুরুষস্বরূপী।
ক্রন্তস্বরপেণ চ যোহতি বিশ্বং
থতে তথানন্তবপুঃ সমস্তম্ ॥ ২৯ ॥
শক্রাদিরূপী পরিপাতি বিশ্বং
অর্কেন্দুরূপন্ট তমো হিনন্তি।
পাকার যোহয়িত্বমুপেত্য লোকান্
বিভর্তি পৃথীবপুরব্যয়াত্মা॥ ৩০ ॥
চেফাং করোতি শ্বসন্থরূপী
লোকস্য তৃথিঞ্চ জলম্বরূপী।
দদাতি বিশ্বন্থিতিসংক্তিন্তন্ত্র
সর্বাবকাশঞ্চ নভঃস্বরূপী॥ ৩১ ॥

করিতেছেন, 'দ যিনি জন্মরহিত, যিনি মদীয় রূপ ধারণ পূর্বক ব্রহ্মাণ্ড স্থলন করেন, যিনি পুরুষোত্তম স্থরূপে সমুদায় পালন করিয়া থাকেন, যিনি রুদ্রে রূপে বিশ্বসংহার করেন, যিনি অনস্তরূপ হইয়া সমুদায় ধারণ করিতেছেন, 'দু যিনি ইন্দ্রাদি রূপে স্পষ্টি রক্ষাকরেন, যিনি চন্দ্র মুর্যা রূপে অন্ধ্রকার ধুংস করিয়া থাকেন, যিনি পাকের নিমিন্ত অগ্নিরূপ ধারণ করিয়া লোক সকল প্রতিপালন করিতেছেন, যিনি পৃথিবী মুর্জি (হইয়া সকলকে ধারণ করেন) যিনি অব্যয়, 'দু যিনি বায়ুরূপ হইয়া প্রবাহিত হইতেছেন, যিনি কলরূপে সকলের তৃপ্তি উৎপাদন করেন, যিনি ক্লগতের অবস্থানের নিমিন্ত আকালরূপী হইয়া সমুদায় পদার্থকৈ স্থান প্রদান করিতে—ছেন, 'দু যিনি সৃষ্টিকর্জা হইয়া আপনাকে আপনিই সৃষ্টি করেন, বে দেবতা, পালনকর্জা হইয়া আপনাকে আপনি পালন করিয়া-

যঃ স্জাতে সর্গ্রদাত্মনৈব

যঃ পাল্যতে পালয়িতা চ দেবঃ।
বিশ্বাত্মনঃ সং হ্যিতেহন্তকারী
পৃথক্ ন যস্যাস্য চ যোহব্যয়াত্মা॥ ৩২॥
যশ্মিন জগদ্ যো জগদেতদাদ্যো

যশ্চাপ্রিতোহস্মিন্ জগতি স্বয়ন্তঃ।
স সর্বভূতপ্রভবো ধরিত্রাং
সাংশেন বিষ্ণুন্পতেহবতীর্ণঃ॥ ৩৩॥
কুশস্থলী যা তব ভূপ! রম্যা
পুরী পুরাভূদমরাবতীব।
সা দ্বারকা সংপ্রতি তত্র চাস্তে
স কেশবাংশো বলদেবনামা॥ ৩৪॥
তব্যৈ ত্মেনাং তন্যাং নরেক্র।

থাকেন, যিনি অন্তকারী হইয়া বিশ্বরূপ আপনাকেই সংহার কবেন, যিনি অবার, যাঁহা হইতে পূণক্ কোন বস্তুই নাই। 
রাজন্! যাহাতে এই জগৎ অবস্থিতি করিতেছে, যিনি স্বয়ংই জগং, যিনি এই জগতের আদি, যিনি এই জগতে অনুপ্রবিষ্ট হইয়াছেন, যিনি স্বয়স্থু, যাঁহা হইতে সমুদায় প্রাণী উৎপন্ন হয়, সেই বিষ্ণুই স্বীয় অংশদারা পৃথিবীতে অবতীর্ণ হইয়াছেন। 
ভূপতে! পূর্ব কালে কুশস্থলী নামে অন্বাবতীর ন্যায় পরম রমণীয় যে ভোষার পূরী ছিল, একণে সেই স্থানে দারকা নামে প্রী সংস্থাপিত হইয়াছে। বিষ্ণুর অংশ বলদেব সেই দারকা-পূরীতে অবস্থান করিতেছেন। করুর অংশ বলদেব সেই দারকা-পূরীতে অবস্থান করিতেছেন। করুর বিজ্ঞাণ তিহার ভাষ্যা

প্রবাহন বরাহদের তনয়া তবেয়ং
প্রীরত্নভূতা সদৃশো হি যোগঃ॥৩৫॥
পরাশর উনাচ।
ইতীরিতোহদের কমলোদ্ভবেন
ভূবং সমাসাদ্য পুরুষানশেষান্
অতের জনঃ স্বশ্পবিবেকবীর্যান্॥৩৬॥
কুশস্থলীং তাঞ্চ পুরীমুপেত্য
দৃষ্ঠান্যরপাং প্রদদের স্বকন্যান্।
সীরপ্তজায় ক্ষ্টিকাচলাভবক্ষন্থলায়াতুলধীনরেক্তঃ॥৩৭॥
উচ্চপ্রমাণামতি তামবেক্ষ্য
স্বাক্ষাণ্ডাল স তালকেতৃঃ।

হ্টবে, তিনিই এক্ষণে শ্লাঘ্য বর। এই কন্যা স্ত্রীরত্বস্কুপ, এ<sup>ই</sup> উভয়ের যোগ হুই**লে** উ**ন্তম স্থলগুল হুইবে**।<sup>৩৫</sup>

পরাশর কহিলেন। অনস্তর রাজা, ব্রহ্মা কর্জ্ব এইরূপ উপদিই হইয়া ভূতলে অবতরণ করিলেন এবং দেখিলেন যে, পৃথিবীর সমুদায় মনুষ্যই হুস্থাকার, তেজোহীন, অপ্পাসামর্থ্য-বিশিষ্ট ও সামান্য জ্ঞানসম্পন্ন । ত তথন অসীম জ্ঞানশালী ভূপাল, কৃশস্থলী নগরীতে উপস্থিত হইয়া নিজ প্রী অন্যবিধ দর্শন করিয়া ফাটিকময় পর্যতের ন্যায় বক্ষঃস্থল বিশিষ্ট বলদেবকে ক্রা প্রদান করিলেন। ত বলদেব, সেই কন্যাকে অভিদীর্ঘাসী দেখিয়া আপনার লাস্থলাগ্র দ্বারা নত করিয়া (তৎকালীয় মানবীর

বিনাময়ামাস ভতশ্চ সাপি
বভূব সদ্যো বনিভা যথান্যা॥ ৩৮॥
তাং রেবতীং বৈবতভূপকন্যাং
সীরায়ুধোংসো বিধিনোপ্যেমে।
দত্ত্বা চ কন্যাং স নৃপো জ্বাম
হিমাচলং বৈ তপ্সে ধৃতাত্মা॥ ৩৯॥

ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থেই পশে রাজব ০শ-বর্ণন পনাম প্রথমোই ধ্যায়ঃ।

ন্যায় খর্কাকৃতি করিয়া) লইলেন। কন্যাও তৎক্ষণাৎ (তৎকালীয়)
অন্যান্য রমণীর ন্যায় হইল। তি অনস্তর হলধর, বৈবত রাজকন্যা
রেবতীকে ষথাবিধানে বিবাহ করিলেন। রাজা বৈবতও কন্যা
সম্প্রদানের পর হিমালয় পর্বতে গমন করিয়া সংযতাত্মা হইয়া
তপন্যা করিতে লাগিলেন। তি

বিষ্ণুপুরাণ-চতুর্থাংশ-রাজবংশবর্ণন নামক প্রথম অধ্যায় সমাপ্ত।

# विक्शुत्रागम्।

চতুর্থোহংশঃ।

#### দ্বিতীয়ো২ধ্যায়ঃ।

#### পরাশর উবাচ ট

যাবচ্চ বৃদ্ধাকাৎ ককুদ্মী রৈবতো নামাভ্যেতি, তাবৎ পুণ্যজনসংজ্ঞ। রাক্ষসাঃ তাম্ অস্ত পুরীং কুশ-স্থলীং জন্মঃ॥ ১॥

তাবদাস ভাতৃশতং পুণ্যজনত্রাদাৎ দিশো ভেজে।
তদবয়াশ্চ ক্ষত্রিয়াঃ সর্বাদিক্ অভবন্। ধৃইস্থাপি
ধাই কং ক্ষত্রং সমভবং। নভাগস্থাত্মকো নাভাগঃ
ভক্ষাম্বরীশো ২ম্বরীষ্ম্যাপি বিরূপোইভবং। বিরূপাৎ
পৃষদশো জজ্যে। ততশ্চ র্থীভরঃ। তত্রায়ং শ্লোকঃ।

পরাশর কহিলেন। রৈবত ককুমী যে সময় ব্রন্ধলোকে গমন করিয়াছিলেন, সেই সময় পুণাজন-নামক রাক্ষসগণ, কুশস্থলী নামে তদীয় পুরী ধ্বংস করে। তাঁহার শত ভ্রাতা তৎকালে পুণাজন-দিগের ভয়ে নানাদেশে পলায়ন করিয়াছিল। এই কারণে সকল-দিকেই তত্বংশীয় ক্ষজ্রিয়দিগের বাস হইয়াছিল। ধৃষ্ট হইতে ধার্টক নামে ক্ষজ্রিয়বংশ উৎপন্ন হইল। নভাগের পুত্র নাভাগ, নাভাগের পুত্র অষ্বীয়, অম্বরীষের পুত্র বিক্রপ। বিক্রপ হইতে পৃষদশ্ব, পৃষদশ্ব হইতে রথীতর উৎপন্ন হইলেন। এ বিষয়ে একটা শ্লোক আছে যে, রথীতর বংশীয়েরা যদিও ক্ষজ্রেয়বংশীয়, তথাপি

এতে ক্ষত্রপ্রসূতা বৈ পুনশ্চাক্ষিরসঃ স্মৃতাঃ। রথীতরাণাং প্রবরাঃ ক্ষত্রোপেতা দ্বিজাতয়ঃ॥২॥

ক্ষ্বতশ্চ মনোরিক্ষাকুর্ত্রাণতঃ পুরো জজ্ঞে। তস্থ পুরশতপ্রবরা বিকুক্ষি-নিমি-দণ্ডাখ্যাস্ত্রয়ঃ পুরাঃ শকুনি-প্রমুখাঃ পঞ্চাশৎ পুরাঃ উত্তরাপথরক্ষিতারো বভূবুঃ 1 চত্বারিংশদটো চ দক্ষিণাপথে ভূপালাঃ॥ ৩॥

স চ ইক্ষাকুরইকায়াম্ উৎপাদ্য আদ্ধার্হমাংসমান-য়েতি বিকৃক্ষিমাজ্ঞাপরামাস॥ ৫॥

স তথেতি গৃহীতাজো বনমভ্যেত্যানেকান্ মৃগান্ হত্বা অতিশ্রান্তোহতিকুৎপরিতো বিকুক্ষিরেকং শশম-

( অঙ্কির', অনপত্যা রথীতর-ভাষ্যাতে সন্তান উৎপাদন কর:তে ) অঙ্কিরা হইতে তাঁহারা ক্ষুসংশ্লিষ্ট ব্রাহ্মণ হইলেন ং

মনু এক দিন হাঁচিয়াছিলেন। তাহাতে তাঁহার নাদিকা হইতে একটা পুত্র উৎপন্ন হইল। ঐ পুত্রের নাম ইফ্ল্কু। ইফ্লাকু হইতে এক শত একটা পুত্র উৎপন্ন হইল। এই সমুদায় পুত্রের মধ্যে বিকুক্ষি, নিমি ও দণ্ড, এই তিনটা পুত্র প্রধান। এই একাধিক শত পুত্রের মধ্যে উক্ত তিন পুত্র ও শকুনি এভ্তি পঞ্চাহ পুত্র, উদ্ধাপথে রাজা হইলেন। অবশিক একচিত্রারিংশৎ-সন্থ্য পুত্র, দক্ষিণাপথে রাজা সংস্থাপন করিলেন।

একদা ইক্ষ্যুকু, অফকি শ্রোদ্ধে প্রস্তু হইয়া বিকুক্ষি নামক পুত্রকৈ আজ্ঞা করিলেন যে (তুমি পাশাদির সাহায্য বাতাত) স্বয়ং সুগ্রধ করিয়া আন্ধোপযোগা নাংস আনয়ন কর। বিকুক্ষি তথাস্ত বিলয়। পিছ-আজ্ঞা শিরোধার্য্য করিয়া বনে প্রবিষ্ট হইলেন এবং বহুসন্থ্য সুগ্রধ করিয়া সাতিশয় শ্রান্ত ও ক্ষুধায় কাতর হইয়া।

ভক্ষরৎ শেবঞ্চ মাংসমানীয় পিত্রে নিবেদয়ামাস।
ইক্ষাকুণাপি ইক্ষাকুকুলাচার্য্যন্তৎপ্রোক্ষণায় বশিষ্ঠঃ
প্রচোদিতঃ প্রাহ, জলমনেনামেধ্যেনামিষেণ। দুরাত্মনানেন তে পুত্রন এতক্মাংসমুপত্তং, যতোহনেন শশকে।
ভক্ষিতঃ। তত্হচাসে বিকৃক্ষিঃ গুরুনৈবমুক্তঃ শশাদসংজ্ঞামবাপ, পিত্রাপি চ পরিত ক্তঃ। পিত্র্যুপরতে
চাথিলামেতঃং পৃথীং ধর্মতঃ শশাস। শশাদস্য চ

ইদঞ্চনাৎ, পুরা হি ত্রেভায়াং দৈবাস্করমতীব ভীষণং বুদ্ধমানীৎ। তত্র চাতিবলিভিরস্থরৈরমরাঃ পরাজিতাঃ,

একটা শশক ভক্ষণ করিলেন। অমস্তর তিনি অবশিষ্ট মাংস আনয়ন করিয়া পিতার নিকট নিবেদন করেন। ইফুকুও সেই মাংস
লইয়া প্রাক্ষণের নিমিত্ত ইফ্বাকু কুলাচার্য্য বশিষ্টের নিকট সমর্পান
করিলেন। বশিষ্ট কহিলেন, এই অপবিত্র মাংসে কোন কার্য্য হইবে
না, কারণ এই দুরাত্মা স্থনীয় পুত্র হইতে এই মাংস উচ্ছিষ্ট হইয়'ছে। তোমার এই পুত্র একটা শশক ভক্ষণ করিয়াছে। গুরু
এই কথা বলিলে বিকৃষ্ণি, শশাদ নামে বিখ্যাত হইলেন এবং
তাঁহার পিতাও তাঁহাকে পরিত্যাগ করিলেন। অনন্তর কিছু কাল
পরে ইফ্বাকু পরলোক গমন করিলে শশাদ, ধর্মানুসারে সমুদায
পৃথিনী শাসন করিতে লাগিলেন। শশাদের একটা পুত্র হইল,
ভাহার নাম পরপ্রয়।

পুদকালে তেতাযুগে অস্থাগণের সহিত দেবগণের অতীব ভীষণ সংগ্রাম হইয়াছিল। তাহাতে অসীম বলশালী অস্থারেরা দেব-গণকে পরাজয় করিল। দেবভারা পরাজিত হইয়া ভগবান্ বিষ্কুর ভগবন্তং বিষ্ণারাধয়াঞ্চকুঃ। প্রসন্নদ্দ দেবানামনাদি-নিধনঃ সকলজগৎপরায়ণো নারায়ণঃ প্রাহ, জ্ঞাতমেব মগ্রা যুদ্মাভির্ঘাভিল্যিতং, তদর্থমিদং প্রায়তাম্॥ ৮॥

পরঞ্জা হি নাম শশাদস্য চরাজর্বেন্ডনয়ঃ ক্ষত্রিরবর্যঃ। ভচ্ছরীরেইহমংশেন স্বয়মেবাবতীর্য্য তান্ অশেবানস্থরান্ নিহনিষ্যামি, ভদ্ভবদ্ধিঃ পরঞ্জেয়োইস্থরবধার্থায়
ইহ কার্য্যোদেষাগঃ কার্য্য ইতি। এতৎ ক্রেত্রা প্রথম
ভগবন্তং বিফুমমরাঃ পরঞ্জয়সকাশমাক্র্যাঃ॥ ১॥

উচুশ্চনম, ভো ভো: ক্ষত্রিয়ব্ধ্য ! অস্মাভিরভ্যথি-তেন ভবতা অস্মাক্মরাতিব্ধোদ্যতানাং সাহায়কং ক্রতমিচ্ছামঃ॥ ২০॥

আরাধনা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। সমুদায় জগতের একমাত গতি আনাদি অনস্ত দেব নারায়ণ প্রসম হইয়া কহিলেন, তোমাদের যাহা অভিপ্রেড, ভাহা আমি অবগৃত আছি। তদ্বিয়ে আমি যাহা বলিভেছি, প্রবণ কর। দেশাদ নামক রাজ্বির পুর্বের নাম পর-প্রুছ। ভিনি একণে ক্রিয়ের মধ্যে প্রেষ্ঠ। আমি স্থায় অংশহারা ভদীয় শরীরে অনুপ্রবিষ্ট হইয়া সমুদায় অন্তর বধ করিব। অভ-এব পরপ্রুয় যাহাতে অন্তর বধের নিমিত বুজারম্ভ করেন, ভদ্বিয়ে তোমরা যত্তবান্ হও।

দেবগণ এই কথা প্রবণ পূর্মক ভগবান্ বিষ্কুকে প্রণাম করিয়া রাজা পরপ্রয়ের নিকট গমন করিলেন, এবং কছিলেন, অহে ক্ষান্ত্রাপ্র প্রথা শক্ত সংহারের উদ্যোগ করিতেছি, একণে ডোমার নিকট প্রার্থনা করি, তুমি শক্ত বিজয় বিষয়ে আমাদের সাহায্য কর। "প্রায়র ডোমার নিকট অভ্যাগত হইয়াছি, আমা- ভদ্তবতা অস্মাকমভ্যাগতানাং প্রণয়ভক্ষো ন কার্যাঃ।
ইত্যুক্তঃ পরপ্তয়ঃ প্রাহ, সকলত্রিলোক্যনাথো যোহয়ং
যুয়াক্ষিক্রঃ শতক্রতুঃ, অস্থ যদ্যহং ক্ষম্মারতে। যুয়দরাতিভিঃ সহ যোৎস্যে, তদাহং ভবতাং সহায়ঃ। ইত্যাকর্ণ্য সমস্তদেবৈরিজ্বেণ চ বাচ্মিত্যেবমন্ত্রীপ্সিত্য ॥১১॥

ততক শতক্রতোর্যভরপধারিণঃ ককুৎছে। হর্ষসম-দিতো ভগবতকরাচরগুরোরচ্যুতস্য তেজ্ঞসাপ্যায়িতো দেবাস্থরসংগ্রামে সমস্তানেব অস্থরান্ নিজ্ঞখান। যতক্ষ ব্যভককুৎছেন রাজ্ঞা নিস্দিতমস্থরবলম্, ততক্রামের্য ককুৎস্থসংজ্ঞামবাপ॥ ১২॥

দের সহিত প্রণয় ভঙ্গ করা তোমার উচিত কার্য্য ছইতেছে না। দেবগণ এই কথা বলিলে পুরপ্তায় উক্তর করিলেন, যিনি ত্রিলোকের অধীশ্বর, যিনি তোমাদের ইক্র, যিনি শতক্রতু নামে বিখ্যাত, তিনি যদাপি আমাকে ক্ষন্তে আরোহণ করাইয়া (সংগ্রাম ভূমিতে লইয়া যান) তাহা ছইলে আমি আপনাদের শক্রগণের সহিত যুদ্ধ করিতে এবং আপনাদের সহায় হইতে পারি। সমুদায় দেবগণ ও ইক্র, এই কথা প্রবণ করিয়া তথান্ত বলিয়া সম্মত ছইলেন। ১১

অনস্তর শতক্রতু রুষত রূপ ধারণ করিলেন। পুরপ্নয় তাঁহার ককুৎস্ হইরা প্রতী হাদয়ে দেবাস্থরের সংগ্রাম ভূমিতে অবতীর্ণ হইলেন। তিনি চরাচরপ্তর ভগবান্ অচ্যুতের তেজোদার। পরি-বর্দ্ধিততেলা হইরা সমস্ত অস্থর বিনাশ করিলেন। তিনি রুষ-ভের ককুৎস্থ হইয়া অসুর বুল সংহার করাতে ককুৎস্থ নামে বিখ্যাত হইলেন। <sup>১২</sup> ককুৎস্থের পুত্র অনেনাঃ। অনেনা হইতে পূথু, ককুৎস্থাপানেনাঃ পুরোহভূৎ ! অনেনদঃ পৃথাঃ, পৃথোর্কিশ্বগশ্বঃ, তদা চাদ্রেহিভূৎ, অদ্র অ যুবনাশ্বঃ \* তক্ত আবন্তঃ, যঃ আবন্তীং পুরীং নিবেশয়ামাদঃ। আবন্তক্ত ব্হদশন্তদ্যাপি কুবলয়াশ্বঃ † যোহদাবৃতক্ষদ্য মহর্ষেরপকারিলং ধুকুনামানমন্তরং বৈষ্ণবেন তেজদা-প্যায়িতঃ পুত্রসহক্তৈরেকবিংশতিভিঃ পরিবৃত্যে জ্বান, ধুকুমারসংজ্ঞামবাপ। তদ্য চ দমন্তা এব পুত্রা ধুকুমুখ-নিঃশ্বাদাগ্রিনা বিপ্লু ফা বিনেশুঃ॥ :২॥

দৃঢ়াখ-চন্দ্ৰাখ-কপিলাখাস্ত্ৰয়ঃ কেবলমবশেষি হাঃ। দৃঢ়াখাৎ বাৰ্যাখঃ, ‡ তসাৎনিকুন্তঃ, নিকুন্তাৎ সংহতাখঃ,

পূথু হইতে নিশ্বনশ্ব, নিশ্বনশ্ব হইতে আত্রে, আত্রে হইতে নুননাখা, 
মুননাখা হইতে আনস্ত উৎপন্ন হইলেন। এই আনস্ত, আনস্তী
নামী পুরী সংস্থাপিত কনেন। আবেস্তের পুত্র রংদশ্ব, রহদখ্বের
পুত্র কুনলয়াখা। কুনলয়াখা, নিফুতেজোছারা প্রব্রজতেজা হইয়া
মহর্ষি উত্তক্ষের অপকারী ধুদ্ধু নামক অসুরকে বিনাশ করিয়াছিলেন।
ধুদ্ধু বিনাশ কালে তিনি এক বিংশতি সহস্র পুত্রে পরিরত হইয়া
মুদ্ধাতা করেন। ইনি, ধুদ্ধু নিনাশ করিয়া ধুদ্ধুমার নামে নিখ্যাত
হইলেন। তাঁহার প্রায় সমুদায় পুত্র, ধুদ্ধুর ফুৎকারোখিত অনিছারা দক্ষ হইয়া বিনই হইল পরস্ক কেবল দুঢ়াখা চক্রাখাও বিশিলাখা. এই তিনটামাত্র প্র অবশিষ্ট রহিল।

ष्ट्रारचत পूज नार्याच, नार्यारचत भूज निक्र्य, निरस्ता अज

<sup>🌞</sup> তস্য চার্ভোংভূ , আর্ভসং যুবনাশ্বঃ ইতি পাঠা এনে ।

<sup>🕈</sup> कृत्रमायः हेणि क्विति गरेडि ।

<sup>‡</sup> पृहाबर क्षांचः क्रीख वा **ल**ठकीवम् ।

ততশ্ব ক্রশাশ্বঃ, তস্মাৎ প্রদেমজিৎ, ততো যুবনাশ্বোইভবং । তক্ত চঃপুত্রস,াতিনির্কেনিং যুনীনামাশ্রমণ্ডলে
নিবসতঃ ক্রপালু ভিত্তৈগ্বিভিরপতে, বিপাদনার ইক্টিঃ
ক্রতা। তক্তাঞ্চ নধ্যরাত্রে নির্ভায়াং মন্ত্রপুতজলপূর্বকলসং বেদিমধ্যে নিবেশ্য তে মুনয়ঃ তুয়ুপুঃ॥ ১৩।

তেরু চ স্থাংশ্ব অতীব তৃট্পরীতঃ স ভূপালন্তমাশ্রমং
বিবেশ, স্থাংশ্চ তান্ধীন্ নৈবোপাপ্যামাস॥ ১৪ ।

তচ্চ কলসজলম্ অপরিমেরমাহাত্মং মন্ত্রপুতং পাপে। প্রুদ্ধান্চ খাবরঃ প্রাচ্ছু, কেনৈতদ্মন্ত্রপুতং বারি নংহতাখা, নংহতাখা হউতে ক্লাখা, ক্লাখা ইইতে প্রদেশ করে, প্রদেশ হউতে প্রদেশ উইপের হইলেন। যুবনাখার পুত্র উইপের না হওগতে তিনি নির্বেদ্যুক্ত হইরা মুনিগণের আশ্রমন্ত্রলে নাস করিতে লাগিলেন। একদা মুনিগণ কুপালুক্দ্য হইরা উলোর সন্তান উইপাদ্ধের নিমিক্ত পুত্রেষ্ঠির অনুষ্ঠান করিলেন। অন্ধ্রাত্রি অতীত হইলে যাগ সমাপ্ত ইইল। তংশ মুনিগণ নল্পুত জলপূর্ণ কলস বেদিমধ্যে সংস্থাপন করিয়া শারন করিলেন।

যখন মুনিগণ নিজিত হইলেন, তখন রাজা যুবনাশ ভূফার্জ হইখা আশ্রম মধ্যে প্রবেশ করিলেন এবং দেখিলেন যে, ঋষিগণ সকলেই নিজাভিভূত হইয়াছেন। তখন তিনি ঋষিদিয়াকে উথাপিত না করিয়া সেই নস্তপুত অসীমনহে:আঃ-যুক্ত কলসন্থ হল পান করিলেন। ১°

অনন্তর (প্রভেঃকালে) যথন খাষিগণ প্রবৃদ্ধ ইইলেন, তথান উহোরা সকলকে জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন যে, কোন্ ব্যক্তি এই মত্রপুত জল পান করিল ? এই জল পান করিলে রাজা যুবনা- পীতমৃ? অত্র হি পীতে রাজোইন্য যুবনাখন্য পত্নী মহাবলপরাক্রমং পুত্রং জন্মিষ্যতি। ইতঃাকর্ণ্য ন রাজা, অজানতা ময়া পীতম্ইত্যাহ। ১৫॥

গর্ভশ্চ মুবনাশ্বোদরেহভবৎ। ক্রমেণ চ বর্ধে। প্রাপ্তসময়শ্চ দক্ষিণং কুক্ষিমবনীপভের্নির্ভিদ্য নিশ্চ-ক্রাম, ন চার্সো রাজা মমার॥ ১৬।

জাতে। নামৈষ কং ধাস্তীতি তে মুনয়: প্রোচুঃ ॥১৭॥
অথাগম্য দেবরাড়ত্রবীৎ, মাময়ং ধাস্তীতি। ততে।
মান্ধাতা নামতোহতবং। বজুে চাস্য প্রদেশিনী দেবরাজেন ন্যস্তা, তাং প্রসে। তাঞ্চামৃতস্তাবিণীমাসাদ্য

খের পত্নী মহাবল পরাক্রান্ত পুত্র প্রস্তাব করিত। ইহা শুনিয়া রাজা কহিলেন, আমি না জানিয়াই ইহা পান কবিয়াছ। ' কিছু দিন পরে রাজা বুবনাখের গর্জ হইল। গর্জ, দিন দিন রজি প্রাপ্ত হইলে পরে রাজা বুবনাখের গর্জ হইলে। গর্জ, দিন দিন রজি প্রাপ্ত হইলে, তখন রাজার দক্ষিণ কুক্ষি ভেদ করিয়া সন্তান নিঃম্বত হইল কিছু তাহাতে রাজার মৃত্যু হইল না।' পুত্র জ্ঞারামাত্র শ্ববিগণ কহিলেন, এই পুত্র কাহার শুন বা কি পান করিবেক।' এই সময় দেবরাজ আসিয়া কহিলেন "অয়ং মাং ধাতা" আমি ইহাকে পান করাইব। ইহাতেই ঐ বালক মান্ধাতা নামে বিখ্যাত হইলেন। অনস্তর দেবরাজ, বালকের মুখে স্থায় ভর্জনী জর্গণ করিলেন। বালক তাহা পান করিতে লাগিলেন। পরে মান্ধাতা ঐ অমৃত-প্রাবিণী অন্ধূলি পান করিয়া এক দিবলের মধ্যেই র্জিপ্রাপ্ত হইলেন। অনস্তর ভিনি রাজচক্রবর্জী হইয়া সপ্তদীপা পূণিবী ভোগ করিতে লাগিলেন। এ বিষয়ে একটা শ্লোক আছে যে, বে

পীত্বা চাহ্নৈর ব্যবদ্ধত। সতু মাস্কাতা চক্রবর্তী সপ্তদীপাং মহীং বুভুজে। ভবতি চাত্র শোকঃ।
যাবৎ স্থা উদেতি স্ম যাবদ্ধ প্রতিতিঠিতি।
সর্বাং তদ্যৌবনাশস্ত মাস্কাতুঃ ক্ষেত্রমূচ্যতে॥ ১৮॥
মাস্কাতা চ শশবিন্দুদ্হিতরং বিন্দুমতীমূপ্যেমে,
পুরুকুৎসম্ অম্বরীষং মুচুকুন্দঞ্চ তস্তামপ্তাত্রমুৎপাদ্যামাসা। পঞ্চাশচ্চ দুহিতরস্তস্ত নৃপ্তের্ভূবুঃ।

বহ্ন চশ্চ সৌভরিনাম ঋষিরন্তর্জনে দাদশাকং কালমুবাস। ১৯।

তত্র চান্তর্জনে সংমদনামাতিবছপ্রজোইতিপ্রমাণে। মীনাধিপতিরাসীৎ ৷ তম্ম পুরপোত্রদৌহিত্রাঃ পার্ম তঃ

স্থানে সূর্য্য উদিত হন ও যে স্থলে সূর্য্য অন্ত গমন করেন, তন্মধ্য-বর্ত্তী সমুদায় স্থানই যুবনাশ্ব-তনয় মাদ্ধাতার অধিকৃত বলিয়া কথিত আছে। ১৮

এই মান্ধাতা, রাজা শশবিন্দুর কন্যা বিন্দুমতীকে বিবাহ
করিলেন। তিনি বিন্দুমতীর গর্ভে পুরুকুৎস, অন্ধরীর ও মুচুকুন্দ,
এই তিনটা পুত্র উৎপাদন করিয়াছিলেন। পরে তাঁহার পঞ্চাশটা
কন্যা উৎপন্ন হইল।

এই সময় সৌভরি নামে কোন ঋথেদী ঋষি (তপস্যার্থ) ছাদশ
বৎসর জল মধ্যে বাস করিতেছিলেন 1° ( ঋষি যে জলে তপস্যা
করিতেছিলেন) সেই জলে সংমদ নামক একটা প্রকাশু মৎস্যরাজ
আগত্তান করিত। তাহার অনেক শুলি সন্তানসন্ততি ছিল। ঐ
মৎস্যরাজের পুত্র পৌত্র ও দৌহিত্রগণ, তাহার পার্খে পৃত্তে বজ্বঃত্বলে পুচ্ছে ও মত্তকের উপর জমণ করিয়া দিবারাত্র ভাহার সহিত

পৃষ্ঠ তোহ এতে। বক্ষঃপুক্ষার সাঞ্চোপরি জনন্ত নেব সহাহর্নি নাতিনির্ত! রেমিরে। সচাপি তৎস্পর্শোপচীয়-মানহর্ষ একরো বহু প্রকারং তন্ত হেঃ পশ্যতঃ তৈরা আজ-পৌ এদৌ হিত্রা দিভিঃ সহানুদিবসং বহু প্রকারং রেমে। অথা নুর্জানবিছিতঃ স সৌ ভরিরেকা এতংসমাধানমপ্রধান দিনং ক তথা ভক্ত সংস্থা আজ্ব পৌ এদৌ হিত্রা-দিভিঃ সহাতিরমণীয়ং ললি ভমবেক্ষ;াচিন্ত মুং।। ২০॥

আহো! ধন্যে ইয়ন্ ঈদৃশন্পি অনভিনতং যোন্যন্তর-নবাপ্য এভিরাত্মজপৌত্রাদিভিঃ সহ রমনাণোহতীবা-আকং স্পৃহানুৎপাদয়তি, বয়নপোবং † পুত্রাদিভিঃ

পরন স্থাপ ক্রীড়া করিত। তাহাদের সপর্শে মংসারাজেরও স্থাহান্ আনন্দ বর্জিত হইতে থাকিত। সেই মহর্ষি সৌভরিব সন্মুখেই মংসারাজ প্রতিদিন পুত্র পৌত্র দৌহিত্রাদির সহিত নানাপ্রকার ক্রীড়া করিত।

জনন্তর জলনধান্তিত সে তিরি, তপন্যায় এক এরপে চিন্তু সনা– হিত রাখিতে সমর্থ ইইলেন না। তিনি প্রতিদিন ঐ মংন্যরাজের, পুত্রপৌত্র দৌহিত্রাদির সহিত জাতি মনোহর ক্রীড়া সন্দর্শন করিয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন, ' এই মংনাই ধনা! এই মংন্য ঈদৃশ অনভিমত মীন যোনিতে উৎপন্ন ইইয়াও এই সকল পুত্র পৌত্রাদির সহিত ক্রীড়া করাতে আমারও লোভ কন্মাইয়া দিতেছে। আনার ইচ্ছা ইইতেছে যে, আ্যাও পুত্র পৌত্রাদিব সহিত এইরূপে ক্রীড়া করি। মহর্ষি এইরূপ পর্যালোচনা করিয়া

অপাদ পাহতবিবস্ইতি পাততরম্।

<sup>+</sup> ध्यमस्मार्शम्रभावश्वि, खनि ह बस्मद्रभावम् हेडि वा श्रेष्ठांच ।

নহ রময়িষ্যামঃ \*। ইত্যেবমভিসমীক্ষা স ভক্ষাদন্তর্জলালিক্ষ্যা নির্বেফুকামঃ কনার্যং মান্ধাতারং রাজানমগচ্ছে । ২১॥

অথাগমনশ্রবণসমনস্তরং চোপায় তেন রাজ্ঞা সমাক্ অর্ঘ্যাদিনা পুজিতঃ ক্রতাসনপরিএহঃ সৌভরিক্রাচ ৷

> নির্কেট কামোংখি নরেন্দ্র ! কন্যাং প্রযক্ত মে মা প্রণয়ং বিভাঙ্কীঃ। ন হার্থনঃ কার্য্যকাভ্যুপেতাঃ করুৎছগোতে বিমুখাঃ প্রয়ান্তি॥ ২২॥ অন্যেহপি সন্ত্যেব নৃপাঃ পৃথিব্যাৎ ক্ষাপাল। যেষাং তন্য়াঃ প্রভূতাঃ।

সেই জলমধ্য হইতে উথিত হইলেন। পরে তিনি উপভোগ কামনায় কন্যা প্রার্থনার অভিলাখে রাজ্য মাদ্ধাতার নিকট গমন করিলেন।<sup>২১</sup>

রাজা যখন শুনিলেন বে, সহর্ষি সৌভরি তাঁহার নিকট আগমন করিয়াছেন, তথন তিনি তৎক্ষণাৎ গরোধান করিয়া পাদ্য অর্যাদি দারা তাঁহার পূজা করিলেন। পরে সৌভরি আসন পরিশ্রহ করিয়া রাজাকে কহিলেন। নরেক্র! আমি বিষয় ভোগ করিতে অভিলাষী হইরাছি। আমাকে একটা কন্যা প্রদান করুন। আমার প্রণয় ভক্স করিবেন না। (আমরা অবগত আছি) করুৎস্থ গোরে কোন কার্য্যের নিমিন্ত কোন যাচক উপস্থিত হইলে কখনই বিমুধ হইয়া যায় না। ই পূপাল! এই পৃথিবীতে জন্যান্য বহু-সন্ধ্য রাজা আছেন। তাঁহাদের প্রভুত সন্তানও আছে পরত্ত আপনা-

<sup>🔹</sup> রমিব্যাদ ইভি রমরিব্যামতে ইভি বা পাঠঃ। 🐔

কিন্তুর্থিনামর্থিতদানদীকারতব্রতং শ্লাখ্যমিদং কুলং তে॥ ২৩॥
শতার্দ্ধসন্তব সন্তি কন্যাঃ
তাসাং মনৈকাং নৃপতে! প্রয়ন্ত।
যৎ প্রার্থনাভক্ষভরাদ্বিভেমি

তস্মাদহং রাজবরাতিদুঃখাৎ ॥ ২৪ ॥ পরাশর উবাচ। ইতি ঋষিবচনমাকর্ণ্য স রাজা জরা-জর্জুরিতদেহং তম্ ঋষিমালোক্য প্রত্যাখ্যানকাত্রস্তস্যাচ্চ ভগবতঃ শাপতো বিভ্যৎ কিঞ্চিধোমুখশ্চিরং দধ্যৌ ॥

ঋষিক্ষবাচ 1

নরেন্দ্র ! কস্মাৎ সমুপৈষি চিন্তাম্ \*

দের এই ককুৎস্থ বংশীয়েরাই যাচকদিগের প্রার্থিত বস্তু দানে
দীক্ষিত এবং একমাত্র আপনারাই এই প্লাঘ্য ব্রত ধারণ করিয়া
আছেন। ১০ ভূপতে! আপনকার পঞ্চাশটী কন্যা আছে। আপনি
ভাহাদের মধ্যে একটি আমাকে দান করুন। রাজপ্রেষ্ঠ! আমার
মনে প্রার্থনা ভক্ষের ভর হইতেছে। প্রার্থনাভক্ষ অতীব দুঃখক্ষনক (এজন্য আমি একটার অধিক কন্যা প্রার্থনা করিতে পারিলাম ন্যা।) ১০

পরাশর কহিলেন। রাজা, ক্ষরির এই বাক্য প্রবণ পূর্বক উছাকে জরাজজারিত-কলেবর দেখিয়া (কন্যা সম্প্রদীনে অসমত হইরাও) প্রত্যাখ্যান করিলে পাছে সেই ভগবান্ মহর্বি দাপ প্রদান করেন, এই ভয়ে ভীত হইরা প্রত্যাখ্যান করিতে না পারিয়া কিঞ্চিৎ অধোবদন হইরা জনেক ক্ষণ চিন্তা করিতে লাগিলেন।

<sup>\*</sup> সরেপ্র : কন্দাং ছমুলৈৰি চিভান্ ইভি বা পাঠঃ।

অশক্যমুক্তং ন ময়াত্র কিঞ্চিৎ।

যাবশ্চদেয়া তনরা তয়ৈব

ক্বতার্থতা নো যদি কিং ন লক্ষ্ ? ॥ ২৫ ॥

পরাশর উবাচ।

অথ তম্ম শাপভীতঃ সপ্রশ্রমুবাচাসে রাজা॥

রাজোবাচ।

ভগবন্! অসাৎকুল ছিভিরিয়ং য এব কন্যায়া অভিক্রচিতোইভিজনবান্ বরস্তব্যৈ কন্যা প্রদীয়তে। তগবদ্যাচ্ঞা চাসান্ধনোরখানামপ্যগোচরবর্তিনী কথমপ্যেষা
সংজাতা, তদেবমবৃছিতে ন বিদ্বাং কিং কুর্ম ইতি,
তন্ময়া চিন্তাত \* ইত্যভিহিতে তেন ভূভুজা মুনির-

ঋষি কহিলেন। ভূপতে! আপনি কিজন্য চিস্তিতা হই-

তেছেন ? আমি আপনাকে কোন অসাধ্য কর্মে নিয়োগ করি নাই।
আপনকার কন্যা অবশাই কোন না কোন পাত্রে সম্প্রদান করিতে
হইবে। যাহা অবশ্য দান করিতে হইবে, তাহা আমাদিগকে দিয়া
যদি চরিতার্থ হন, তাহা হইলে আপনকার কি লাভ না হইল ? বিরাধ করিতে। অনন্তর রাজা সেই মহর্ষির শাপে ভীত
হইয়া বিনয় পূর্মক কহিলেন, (রাজা কহিলেন) ভগবন্! আমাদদের বংশের এই নিয়ম আছে বে, কন্যা যে কোন কুলশীলসম্পন্ন
বরকে মনোনীত করিবে, তাহাকেই কন্যা সম্প্রদান করিব। আপনি
যে কন্যা প্রার্থনা করিবেন, তাহা আমাদের মনোরথেরও অগোচর।
পরস্ক যে কোন কারণে আপনি এক্ষণে যাচ্ঞা করিতেছেন। ইছশ
অবস্থায় আমি যে কি করিব? তাহা বিবেচনা করিয়া উঠিতে পারি-

इंटलाजबबा विकास देखि व शब्दीसम् ।

চিন্তর । অহো ! অরমন্যো শ্বে প্রত্যাখ্যা নোপায়ঃ। বৃদ্ধো শৃহম্ অনভিমতঃ স্ত্রীণাং কিমুত কন্যানামিতি। অমুনা সঞ্চিন্ত্যবমভিহিতম্॥ ২৬॥

এবমস্ত তথা করিষ্যামীতি সংচিন্ত্য মান্ধাতারম্ উবাচ॥ ২৭॥

যদ্যবং তদাদিশ্যতামসাকং প্রবেশায় কন্যান্তঃ-পুরবর্ষধরঃ \*॥ ২৮॥

যদি কন্যৈব কাচিম্মামভিলষ্তি তদাহং দারপরিগ্রহং † করিয়ামীতি, অন্যথা চেৎ, তদলম্মাকং এতেনা-

তেছি না। এই জনাই আমি চিন্তা করিতেছি। রাজা এই কথা বলিলে মুনি ভাবিতে লাগিলেন যে, দেখিতেছি, এইটি আমাকে প্রকারান্তরে প্রভ্যাখ্যান করিবার উপায়! (ইনি বিবেচনা করি-রাছেন) এই ব্যক্তি রুদ্ধ, ইনি কন্যাদের মনোনীত হওয়া দূরে থাকুক্ জীলোক মাত্রেই ইঁহাকে মনোনীত করিবে না। এইরূপ ভাবিষ্কাই রাজা আমাকে এইরূপ বাকা বলিরাছেন। 'তথন সৌভরি চিন্তা করিয়া, এক্ষণে স্বীকার করা যাউক, ইহাতে এইরূপ প্রভীকার করিব, এই প্রকার (মনে মনে উপায় উদ্ভাবন করিয়া) মান্ধাভাকে কহিলেন। 'া যদি এইরূপ (আপনকার ক্লোচার পাকে) তাহা হইলে আমাকে কন্যান্তঃপুরে প্রবেশ করাইবার নিমিন্ত কন্যান্তঃশুরের কঞ্কীকে আজা করুন। 'দ যদি আপনকার কোন কন্যা আমাকে মনোনীত করেন, ভাহা হইলে আমারও যৌবন প্রত্রেশ ব্যাহার

ख्यामांकः कमाचिः शृत्याद्यमाग्र वर्षवतः हेठानि शांवेः ।

<sup>🛧</sup> দ'বসংগ্রহ্ম ইতি পৃথকাত্তরসা পাঠ: ।

তীতক লারত্ত্বণ, ইত্যুক্ত্বণ বিররাম । ততশ্চ মান্ধাতা
মুনিশাপশঙ্কিতেন কন্যান্তঃপুরবর্ষধরঃ সমাজ্ঞপ্তঃ।
কন্যান্তঃপুরং প্রবিশারের ভগবানখিলসিদ্ধান্ধর্বমন্ত্রব্যেভ্যোহতিশয়েন কমনীয়ং রূপমকরোৎ। প্রবেশ্য চ
তম্ ঋষিমন্তঃপুরবর্ষধরঃ তাঃ কন্যকাঃ প্রাহ, ভবতীনাং
জন্যিতা মহারাজঃ সমাজ্ঞাপয়তি, অয়মসান্ ব্রদ্ধরিঃ
কন্যার্থী সমভ্যাগতঃ, ময়া চাম্ম প্রতিজ্ঞাতং, মদ্যম্মৎকন্যকা কাচিদ্ ভগবন্তং বরয়তি, তৎকন্যায়াশ্ছন্দে
নাহং পরিপন্থানং করিয়্যামি, ইত্যাকর্ণ্য সর্ব্যা এব

করিয়া বার্দ্ধকাবস্থায় এ উদ্যোগের আর আবশ্যকতা নাই। ৠবি এই কথা বলিয়া মৌন অবলম্বন করিলেন।

অনন্তর মান্ধাতা মুনিশাপভয়ে ভীত হইয়া কনান্তঃপুরের কঞ্ কার প্রতি আদেশ করিলেন। ভগবান্ সৌভরি, কন্যান্তঃপুরে প্রবেশ করিতে করিতে সমুদায় সিদ্ধ গন্ধর্ম এবং মনুষ্য হইতেও সংতিশয় রমণীয় রূপ ধারণ করিলেন। অন্তঃপুরন্থ কঞ্কী, সেই শ্বিকে অন্তঃপুরে প্রবেশ করাইয়া রাজকন্যাদিগকে কহিল, আপন্ নাদের পিত। মহারাজ আজা করিতেছেন যে, এই ব্রন্ধর্মি, কন্যা প্রতিজ্ঞা করিয়াছি যে, যদি আমার কোন কন্যা আপনাকে বরণ করে, তাহা হইলে আমি সেই কন্যার স্বাধীন-ভাবের পরিপন্থী হইব না। (অতএব বদাপি তোমাদের মধ্যে কাহারে। অভিক্রচি হয়, এই শ্বিকে পতিত্বে বরণ করিতে পার, ভাহাতে আমার আপিন্তি নাই।) রাজকন্যারা এই বাক্য শ্রেণ করিয়া সকলেই

<sup>\*</sup> वज्ञ वर्ष धत्रमञ्चल देखेब वर्ष बत्रमञ् : शृञ्जन स्टार सक्तारण ।

তাঃ কন্যকাঃ সান্তরাগাঃ সমন্মধাঃ করেণব ইবেভমূধগপতিং তম্,ঋষিমহমহমিকয়া বরয়ামভূবুঃ, উচুশ্চ ॥ ২৯॥

অলং ভগিন্যোইইমিমং রুণোমি
রুতো ময়া, নৈষ তবালুরূপঃ ।
মনৈব ভর্তা বিধিনৈষ স্ফঃ
স্ফাইমস্যোপশমং প্রয়াছি ॥ ৩০॥
রুতো ময়ায়ং প্রথমং ময়ায়ং
গৃহং বিশক্ষেব বিহন্যসে কিম্ ?।
ময়া ময়েতি ক্ষিতিশাত্মজানাং
তদর্থমত্যর্থকলিবভূব॥ ৩১॥

সানুরাগা ও সকামা হইল। করেগুগণ যেমন যুগপতিকে বেক্টন করে, তাহার ন্যায় রাজকন্যারা সকলেই, আমি অগ্রে আমি অগ্রে এই কথা বলিয়া সেই ক্ষাকে পতিত্বে বরণ করিলেন। ১০ তাঁহারা পরক্ষার কহিতে লগগিলেন, ভগিনীগণ! ডোমরা রুখা কেন (চেটা কর,) আমি ইহাঁকে পতিত্বে বরণ করিতেছি। আমি পূর্বেমনে ননে ইহাঁকে বরণ করিয়াছিলাম। বিশেষতঃ ইনি ডোমার অকুরূপ নহেন। বিধাতা ই হাকেই আমার ভর্ত্তা-ক্রুপ নির্মাণ করিয়াছেন এবং আমিও ইহার ভার্য্যাক্ষ্রপ নির্মাণ হইয়াছি। অভএব ডোমরা ক্ষান্ত হও । ৫ (কেহ বলিলেন।) আমিই ইহাঁকে প্রথমতঃ বরণ করিয়াছি। (কেহ কহিলেন) ইনি যখন প্রের্থি হন, ডখনই আমি ইহাঁকে বরণ করিয়াছিলাম, ডোমরা কেন একণে ব্যাখাত করিতেছ। এইরূপ রাজকন্যারা সকলেই আমি বরণ করিয়াছি, আমি বরণ করিয়াছি, এই কথা বলাতে ভক্জন্য সাভিশন্ন বিবাদ হইতে লাগিল। ৫ এইরূপে ব

যদা তু সর্বাভিরতীব হার্দাৎ

ধৃতঃ স কন্যাভিরনিন্দ্যকীর্ত্তিঃ !

তদা স কন্যাধিক্তো নৃপায়

যথাবদাচ্ট বিন্ত্রমূর্তিঃ ॥ ৩২ ॥

তদ্বসমাৎ, কিমেতৎ ? কথয় কিং করোমীতি কিং
ময়াভিহিতমিত্যাকুলমতিরনিচ্ছমপি কথমপি রাজায়মেনে। ক্লায়রপবিবাহশ্চ মহর্ষিঃ সকলা এব তাঃ কন্যকাঃ
অমাশ্রমননয়ৎ। তত্র চাশেষশিলিপশিলিপপ্রেণেতারং
বিধাতারমিবানাং বিশ্বকর্মাণমাহুয় সকলকন্যানামেযখন সমুদায় রাজকনাই দেই যশোভাজন মহর্ষিকে সাতিশর
প্রীতি সহকারে বয়ণ করিতে লাগিলেন, তখন কন্যান্তঃপুরে অধিকৃত কঞ্কী রাজার নিকট গমন পূর্বক অবনত-মন্তক হইয়া
আদ্যোপান্ত সমন্ত র্ক্তান্ত নিবেদন করিল। বি
ক্রেপ্রাহ্মাণান্ত সমন্ত র্ক্তান্ত নিবেদন করিল। বি
ক্রেপ্রাহ্মাণান্ত সমন্ত র্ক্তান্ত নিবেদন করিল। আনি তখন কিরপ
বলিয়াছিলাম ? (রাজা তখন অনন্যোপায় হইয়াং) অনিচ্ছা পূর্বক
যথাকথাঞ্চিৎ (সেই শ্ববিকে বরণ করিতে কন্যাগণেরাপ্রতি) জনুন্
সতি প্রদান করিলেন।

এইরপে মহর্ষির মনোমত বিবাহ হইল। পরে তিনি সেই
সমুদার রাজকন্যাকে লইরা স্বীর আশ্রুমে উপনীত হিইলেন।
অনন্তর তিনি সমুদার শিপ্সজীবিদিগের শিপ্পবিদ্যার প্রবর্ত্তক
দ্বিতীর বিধাতা স্বরূপ বিশ্বকর্মাকে আহ্বান পূর্মক আদেশ করিলেন যেরাজকন্যাদিগের প্রত্যেকের এক একটি অ্টালিকা নির্দাণ
করিয়া দাও। প্রত্যেক অ্টালিকাতে পর্ম রমণীর শ্বান, প্রম
রমণীর আসন ও প্রম রমণীর পরিচ্ছদ থাকিবে। (অ্টালিকার

কৈকস্তাঃ প্রোৎফ্লপক্ষজ-কূজৎকলহংস-কারগুবাদি-বিহলমাভিরাম-জলাশয়াঃ সোপবনাঃ সাবকাশাঃ সাধু-শ্যাসনপরিচ্ছদাঃ প্রাসাদাঃ ক্রিয়ন্তামিত্যাদিদেশ॥৩৩॥

তচ্চ তথৈবা**নুষ্ঠিতমশেবশিশোবিশে**বাচাৰ্য্যস্কৃষ্ণী দৰ্শিতবান্ ॥ ৩৪॥

ততশ্চ প্রমর্ষিণা সোভরিণাজ্ঞপ্তস্তেষু গৃহেযুন-পায়ানন্দনামা মহানিধিরাসাঞ্চক্রে॥ ৩৫॥

ততোহনবরতভক্ষাভোজ্যলেহাদুপেভোগৈরাগতার-গতভূত্যাদীনহর্নিশমশেষগৃঁহেরু তাঃ কিতীশদুহিতরো ভোজয়ামাসুঃ॥ ৩৬॥

একদা তু দুহিত্মেহারুইছদয়ঃ স মহীপতিরতি-

সন্ধিধানে বিশুদ্ধ বায়ু সঞ্চারার্থ) যেন প্রশস্ত স্থান থাকে। প্রত্যেক স্থানিকার নিকট উপবন থাকিবে। তাহাতে প্রফুল্ল কমলম্বারাও স্থাপুর ধানিকারী কলহংস কারপ্তব প্রভৃতি বিহঙ্গম দারা স্থালাভিত জলাশয় থাকিবে। ত আনস্তর অলেষ শিশ্প বিশেষাচার্যা বিশ্বকর্মা, (সৌভরির আদেশালুসারে) সেইরূপ অনুষ্ঠান করিয়া দেখাইলেন। ত পরে অনপায়ানন্দ নামে মহানিধি, পরমর্বি সৌভরির আজ্ঞানুসারে সেই সমস্ত অ্ট্যালিকায় অবস্থান করিতে লাগিল। ত

অনস্তর রাজকন্যার বৈই সমুদায় জ্ঞালিকাতে ( অবস্থান পূর্মক) অভ্যাগত অভিথিগণকৈ এবং অনুগত ভৃত্যগণকে দিবা-রাত্র অনবরত বিবিধ ভক্ষ্য ভোক্ষ্য লেহ্য পেয় প্রভৃতি দার। ভোকন করাইতে লাগিলেন। ° একদা ভূপাল, কন্যা স্নেহে আকৃষ্টহাদয়, হট্যা, কন্যাশ সুঃখ ভোগ করিভেছে, কি স্থা দুঃখিতাস্তাঃ সুখিতা বা ইতি বিচিন্ত্য তক্ত মহর্ষেরাশ্রমমুপেত্য ক্ষ্রদংশুমালাং ক্ষটিকময়ীং প্রাসাদমালামতিরম্যোপবনজলাশয়াং দদর্শ।। ৩৭।।

প্রবিশ্য চৈকং প্রাসাদমাত্মজাং পরিযুক্তা ক্রতাসন-পরিগ্রহঃ প্রবৃত্তস্থেহনয়নামুগর্ভনয়নোইত্রবীৎ ॥ ৩৮ ॥

অপ্যত্ত বংদে ! ভবত্যাঃ স্থখ্য উচ্চ কিঞ্চিদস্থখ্য ?
অপি তে মহর্ষিঃ সেহ্বান্ উত্ত সংস্থাতেইসাদ্গৃহবাসস্থা ?

ইত্যক্তা তত্তনয়া পিতরমাহ, তাত। অতিশয়রমণীয়ঃ প্রাসাদোহত্র, অতিমনোজ্ডমুপ্রনমতিকলবাক্য-বিহগাভিরতাঃ প্রোৎফুল্ল-পদ্মাকরজ্ঞলাশয়াঃ,
আছে, (ভাহা জানিবার নিমিন্ত) চিন্তাকুল হইয়া সেই মহর্ষির
আশ্রমে উপস্থিত হইলেন এবং দেখিলেন বে, ফ্টেকময়ী
প্রাসাদমালা শোভা পাইতেছে। ভাহার কিরণমালায় চতুর্কিক্
উজ্জ্বল হইয়ছে। অউালিকাসমুদায়ের নিকট রমণীয় উপ্রুন
ও রমণীয় জলাশয় শোভাবিস্তার করিতেছে।

তথন ভূপাল, একটা অটালিকায় প্রবেশ করিয়া কন্যাকে আলিকন করিলেন। পরে তিনি আসনে উপবিট হইলেন। তাঁহার নয়নম্বর, সমুদিত স্বেহ-সলিলে পরিপূর্ণ হইল। তিনি কহিলেন, পর্ব বংলে। তুরি ত সুখে আছ? না তোমার কোন অস্থ আছে? মহর্ষিত ভোমার প্রতি ক্ষেহ করেন? পূর্বে বে আমার গৃহে বাস করিতে, তাহা ত তুমি শ্বরণ করিয়া থাক ? রাজা এইরূপ লিজাসা করিলে তদীয় কন্যা তাঁহাকে কহিলেন, পিতঃ! এই পরম রমনীয় প্রাসাদ, এই অতিমনোহর উপবন, এই সকল স্থমপুর-ধনিকারী বিহ্গগণ-সুশোভিত, প্রফুল কমল বিরাজিত জলাশর,

মনে হেরুক্লভ ক্যভোক্ষার লেপনবস্তভূষণা দিভোগোপ-ভোগো মৃদুনি শয়নানি, সর্বসম্পৎসমবেভয়েভদ্-গার্ছ্যং, তথাপি কেন বা জন্মভূমির্ন স্ম্যাতে ? ত্বং-প্রসাদাদিদমশেষমভিশোভনম্ ॥ ৩১ ॥

কিন্তু এতং মমৈকং দুঃধকারণং যদসমূর্ত্তাংস্মদ্গেহাল্ল নিঃসরতি, মমৈব কেবলম্ভিপ্রীত্যা সমীপবর্ত্তী
নান্যাগাং মন্ত্রগিনীনাম্, এবঞ্চ মন্ন সহোদরা দুঃখিতাঃ,
ইত্যেবম্ভিদুঃথকারণম্, ইত্যুক্তস্ত্রা দ্বিতীয়ং প্রশিদ্ম্উপেত্য স্বভন্নাং পরিষ্ট্রোপ্রিক্টন্তথৈব পৃষ্ট্রান্ ৷

এই সমুদায় সনোঃ প্রন ভক্ষা ভোক্তা অনুলেপন বসন ভূষণ প্রভৃতি ভোগা বস্তু, এই সমুদার কোমল শবা। (দেখিতেছেন। পৃথিবীতে যে সমুদার মুখসামন্ত্রী ও) সম্পদ্ আছে, এখানে ভাষার কিছুরই অভাব নাই। (আনি যদিও এডদূর সুখসাধন ঐশব্য লাভ করিয়াছি) ভণাপি কোনু ব্যক্তি ক্র্মভূমির জন্য উৎক্তিত না হয়। আপনকার অনুগ্রেছে আমার একৎসমুদায়ই বার পর নাই উত্তম হইয়ছে। " পরদ্ধ আমার একটা দূংখের কারণ এই যে, আমার স্থামী, আমার গৃহ হইতে বহির্গত হন না। তিনি কেবল আমাতেই সাভিশ্বর লেহ ও প্রীতি প্রকাশ করেন। তিনি সর্বদাই আমার নিকটে থাকেন। ভিনি আমার ভাগুনীরা দুংখিতা আছেন। এই বিবয়নীই কেবল আমার সাভিশ্বর লুঃখের কারণ হর্মাছে।

রাজা কন্যার নিকট এই বাকা আরব করিয়া বিভীয় আসাদে গমন ক্রিলেন। সেধানেও তিনি ক্নাকে আলিজন পূর্বক উপ-বিষ্টাংইয়া সেইরপ জিলোসা ক্রিলেন। সেই রাজসুহিতাও সেই- ٥,

তয়াপি ত য়ৈব, সর্বদেত প্রাপাদাদাপতোগস্থমা থাতে, মনৈব কেবলং পার্শবর্তী নান্যাসামস্থতিনিনী-নামিতোবমাদি শ্রুত্বা সমন্ত্রাসাদের রাজা প্রবিবেশ, তনয়াং তবৈবাপৃদ্ধ ভাতিশ্চ তবৈবাভিহিতঃ পরিতোধবিসায়নি জর্মীবিবশহাদরো ভগবতং সৌভরি-নেকাভাবভিত্মপেতা রুতপুজোহরবী ॥ ৪০॥

দৃষ্ঠত্তে ভগবন্! সুমহানেষ সিদ্ধিভাবো নৈবংবিধমন্য ক্ষ্যচিদ্মাভিবিভূতিবিলসিউমুপলক্ষিত্ম,
কিয়দেভদ্ভগবংস্তপদঃ কলমিত্যভিপ্জ্য তম্ ঋবিং ভত্তিব
তেন ঋষিবর্ষ্যেণ সহ কিঞ্চিৎ কালমভিমতোপভোগং
বুভূজে স্পুরঞ্জগাম ॥ ৪১ ॥

রূপ সম্পার অউালিকা প্রভৃতি ঐশ্বর্য স্থাভোগ বর্ণন করিলেন এবং ( দুঃখিভান্তঃকরণে কছিলেন, আশার স্বামী ) সর্বাদা কেবল আশারই সমীপবর্জী থাকেন। ডিনি আশার অন্যান্য ভগিনীদিগের নিকট গদন করেন না। রাজা ঈছুশ সমুদার বাক্য শ্রবণ করিয়া ক্রেমে ক্রেমে সমন্ত প্রাসাদে গদন পূর্বক প্রভ্যেক কন্যাকে জিজ্ঞানা করিলেন। কন্যারা সকলেই সেইরপ কছিলেন।

অনন্তর রাজা সাভিনর পরিভোগ ও বিশার্থারা জাঁক্রান্ত-হদর হইয়া একান্তে অবঁহিত ভগবান্ সৌভরির নিকট উপহিত হই দেন এবং (বধা বিধানে) পূজা করিয়া কহিলেন, °° ভগবন্! আপন-কার অসাধারণ তপ:নিদ্ধি-প্রভাব দর্শন করিলাম। আমরা এই ভুমগুলে অন্য কোন ব্যক্তিরই ইছল বিভূতি অবলোকন করি নাই। ইহা যে আপনকার কভ তপন্যার কল (ব্লিভে পারি না।) রাজা এই বাক্য বলিয়া মহর্বির পূজা করিলেন। অনভ্র কিছু দিন ভিনি

কালেন গচ্ছতা তদ্য রাজতনয়াম তাম পুত্রশতং সার্দ্ধমন্তবং। তদমুদিনামুর্দ্ধমন্ত ত্রাতীব মনতা-কৃষ্ঠ-হৃদয়োহতবং॥ ৪২॥

অপ্যেতেহ্মংপুত্রাঃ কলভাষিণঃ পদ্ভাং গচ্ছেয়ুঃ,
অপ্যেতে যৌগনিনো ভবেয়ুঃ, অপি ক্রুলারানেতান্
পশ্যেয়ন্ অপ্যেতেষাং পুত্রা ভবেয়ুঃ, অথ তৎপুত্রান
পুত্রসমন্বিতান্ পশ্যেয়ন্, এবমাদিমনোরথমনুদিনকালসম্পত্তির্তিমবৈত্যৈৎ সঞ্জিয়ামাস ॥ ৪৩ ॥ অহো
মে মোহস্যাতিবিস্তারঃ!

#### मरनात्रथानाः न ममोक्षित्रख

সেই মহর্ষির সহিত অভিলবিত ভোগা বস্তু ভোগা করিয়া স্থীয় রাজধানীতে প্রতিগমন করিলেন। ° °

অনন্তর কিছুকাল অতীত হইলে সেই সমুদায় রাজকনার গর্জে মহর্ষির একশত পঞ্চালটা পুত্র উৎপন্ন হইল। এই সমুদায় পুত্র কলত্তের প্রতি, দিন দিন ওঁছার সেই বন্ধমূল ইইতে লাগিল। তিনি স্ত্রীপুত্রাদির মমতায় অতীন আকুই-ছদ্ম হইলেন। ই কবে আমার এই পুত্রস্তলি মধুর বাক্যে কথা কহিতে শিখিতে, কবে ইছারা পদ ছারা গমনাগমন করিতে পারিবে, কবে ইছারা ঘৌবন-লথে পদার্পন করিবে, কবে ইছাদের বিবাহ দিয়া পুত্রবধূর মুখ দর্শন করিব, কবে ইছাদের পুত্র হইনে, কবে আমি এই সমুদায় পুত্রকে পুত্রসমন্থিত হইতে দেখিব, এইরূপে প্রতিদ্ন যাহাতে সুদীর্ঘ কাল পরিবর্ডিত হয়, তাছল অভিলাধ করিয়া এই সমুদায় চিন্তা করিতেন। ই \*

অংহা! মহামোহের কি দুর্নিবার ক্ষমতা! দশ সহস্র বংসর

বর্ষায়তেনাপি তথাব্দলকৈঃ।
পূর্ণেয়ু পূর্ণেয়ু পূন্নবানাম্
উৎপত্য়ঃ সন্তি মনোরধানাম্ ॥ ৪৫ ॥
পদ্ধাংগতা যৌবনিনশ্চ জাতা
দারৈশ্চ সংযোগমিতাঃ প্রস্তাঃ ।
দৃষ্টাঃ স্থতান্তত্তনয়প্রস্তিং
দুষ্টাঃ স্থতান্তত্তনয়প্রস্তিং
দুষ্টাঃ পুনর্বাঞ্জতি মেহতুরাত্মা ॥ ৪৫ ॥
দুক্ষামি তেষামপি চেৎ প্রস্তিং
মনোরধাে মে ভবিত। ততোহ্নাঃ ।
পূর্ণেইপি তত্তাপাপরস্ত জন্ম
নিবার্যতে কেন মনোরধার। ৪৬ ॥
আস্ত্যুতাে নৈব মনোরধানাম্
অভোহস্তি বিজ্ঞাতিমিদং ময়া চ।

বা লক্ষ বৎসর অতীত হইলেও মনোরথ পরিসমাপ্ত হয় না। এক একটা মনোরথ পূর্ণ হইণামাত্র আবার সুতন সুতন অন্য মনোরথের উৎপত্তি হইয়া থাকে। ত আমার পুত্রেরা পদদারা গমনাগমন করিতে লিখিল, তাহারো যৌগনপথে অবতীর্ণ হইল, তাহাদের বিবাহ দিলাম, সস্তান হইল, পৌত্রমুখ দর্শন করিলাম, এক্ষণে আবার আমার অন্তরাজা পৌত্রের সন্তানাদি অবলোকন করিবার নিমিন্ত ধাবমান হইতেছে। ত যদিও এখন আমি পৌত্রের পুত্রাদি দর্শন করি, তাহা হইলে আমার মনোরথ অন্য দিকে ধাবমান হইবে অর্থাৎ তথন আমার এরপ অন্তঃকরণ হইবে যে, পৌত্রের পৌত্রাদি দর্শন করিলে চরিতার্থ হই। অতএব কিছুতে মনোরথ পরিভ্গু হয় না। ত সামি এক্ষণে বুরিতে পারিলাম যে, যে পর্যান্ত মৃত্যু না

মনোরথাসক্তিপরস্য চিত্তং
ন জায়তে বৈ পরমাজাসঙ্গি ॥ ৪৭ ॥
স মে সমাধির্জলবাসমিত্রমংস্তস্য সভাৎ সহসৈব নইঃ।
পরিগ্রহঃ সভারতো মমায়ং
পরিগ্রহঃ সভারতো মমায়ং
পরিগ্রহাশ্বাশ্চ মহাবিধিৎসাঃ ॥ ৪৮ ॥
দুংখং যদেবৈকশরীরক্তম
শতার্দ্ধিখাং তদিদং প্রস্তম্ ।
পরিগ্রহণ ক্ষিতিপাত্মজানাং
স্থাতরনেকৈর্বভ্লীক্তং তথ ॥ ৪৯ ॥
স্তাত্মক্তেজনয়ৈশ্চ
ভূয়োভূয়শ্চ তেষাং বপরিগ্রহণ ।

ত্য, সে পর্যান্ত মনোরণের নির্মন্ত নাই। বে ব্যক্তি মনোরণের অধীন ও অনুবর্তী, ভাহার মন কথনই প্রমাদ্ধাতে আসক্ত হয় না। " । আবি বে বৈরাগ্য আত্রর করিয়াছিলাম, কলগাদী মদীয় মিত্র সেই মথসেরে সহবাসেই সেই বৈরাগ্য নিলুন্ত হইল। সেই মথসের সংসারে এই সংসার পরিগ্রহ হইয়াছে এবং সংসার পরিগ্রহ হইয়াছে এবং সংসার পরিগ্রহ হইতেই আমার নানাবিধ সাংসারিক কার্য্যের অভিলাব হাতেছে। " একটা পরীর ধারণ করিয়া জন্ম পরিগ্রহ করাই আশেব মুংখের কারণ। পরস্কু আমি রাজকন্যাদিগকে বিবাহ করিয়া পঞ্চাপটী শরীর রুদ্ধি করিলাম। পরে সেই রাজকন্যাদিগের গর্ভে সম্ভান উৎপন্ন হওয়াত্তে সেই মুংখন্তনক পরীর বৃদ্ধ ধণে রুদ্ধি প্রথাত হইল। " একণে পৌত্র প্রেণ্ডার প্রভৃতি দারা এবং ভাহাদের পরিণীত পত্নী দ্বারা আমার সমন্তার আকর কতি-

বিভারনেষ্ত্যতিদু:খহেতুঃ
পরিএহো বৈ মমতানিধান্য।। ৫০॥
চীর্ণং তপো ষতু জলাজনেপ
তগার্দ্ধিরেষা তপনোহস্তরায়ঃ।
মৎসাস্য সন্ধাদভবচ্চ যো মে
স্তানিরাগো মুষিভোইস্ম তেন ॥ ৫১॥
নিঃসন্ধতা মুক্তিপদং যতীনাং
সন্ধাদশেষাঃ প্রভবন্তি দোষাঃ।
আরুচ্যোগোইপি নিপাত্যভেইঃ
সন্ধেন যোগী কিমুতাপসিদ্ধিঃ।। ৫২॥
আহং চরিষ্যামি ভধান্ধনোইর্ধে
পরিগ্রহ্থাহগৃহীতবৃদ্ধিঃ।
যথা হি ভূয়ঃ পরিহীনদোষো

দুঃখের কারণ প্রিজনবর্গ ক্রমশঃ সমধিক বিন্তীর্ণ হইতেছে। 
আমি পূর্বের জলগর্জ আশ্রন্থ পূর্বক যে তপস্থা করিয়াছিলান, এই
সমুদায় সম্পত্তিই সেই তপন্যার অন্তরায় হইয়াছে। পূর্বের বংসেরর
সংসর্গে আলার যে পূজাদি উৎপাদনে ও তৎসহবাসে কালযাপনে অনুরাগ আন্মিয়াছিল, আমি ভাহাতেই প্রভারিত হইলাম। 

শৈ যতিদিগের পক্ষে বিঃসম্বভাই মুক্তির আকর, কার্ম 
আন্যের সংসর্গে অশেব দোষের উৎপত্তি হয়। 

যাঁহাদের অশীনাত্র বিশ্বি হইয়াছে, তাঁহাদের কথা দূরে থাকুক, যে সকল বোগী
নিয়ত বোগযুক্ত থাকেন, জাঁহায়াও সম্পোষ্ট অধঃপতিত হন।

ক্ষণে বিদিও আমার বুদ্ধি, পরিগ্রহ-ক্রপ গ্রাহ কর্ম্বিক প্রস্তুত্ব

হিইয়াছে, তথাপি আদি আআার নিমিত্ত বড়বান, হইব এবং প্রনর্কার

জনস্য দুংথৈভবিতা ন দুংখী ॥ ৫৩॥
সর্বাস্থ ধাতারমচিন্তারপম্
অপোরণীয়াংসমতিপ্রমাণ্য ।
সিতাসিভঞ্মেরমীশ্বরাণাম্
আরাধ্য়িষ্যে তপলৈব বিফ্ম্॥ ৫৪॥
তিমিন্তালেকি সর্বাসিনাবিদ্যালিক কিলিন্তালিক কিল

ষাহাতে পরিজন-দৃঃথে দৃঃথিত হইতে না হয়, ও আমার সমুদায় দোষ সংশোধন হইয়া যায়, আমি তিছিবছে চেটা করিব। ° থিনি সকলের বিধাতা, যিনি অচিন্তারূপ, যিনি অণু হইতেও অণু এবং মহৎ হইতেও মহৎ, যিনি জীবরূপে বছ ও ঈশ্বর রূপে মুক্ত, যিনি ঈশ্বর হইতেও ঈশ্বর, আমি তপস্থা ছারা সেই বিষ্ণুর আরাধনা কাঁরব। ° আমার মন বিষ্কুত হইবার নিমিন্ত অশেষ দোষ বিবর্জিত হইরা সেই সর্কশক্তিমান, স্কর্ত্রপী অব্যক্ত ও ব্যক্তমুর্ত্তি অনন্ত বিষ্ণুতে স্ক্রদাই হির ভাবে অবস্থান ক্রেক । শে যিনি সমন্ত জীব-শ্বরূপ, বিনি নির্মাণ ও অনন্ত, যিনি সকলের ঈশ্বর, যাঁহার আদি নধ্য (বা অন্ত) নাই, যাঁহা হইতে ভিন্ন অন্য কোন বন্ত নাই,

পরং গুরুং সংশ্রয়মেমি বিষ্ম্॥ ৫৩॥

# ইতি জীবিষ্ণুরাণে চতুথে ২°শে দিতীয়ো২ধ্যায়: ।

যিনি শুরুদিগেরও পরম গুরু, আমি সেই বিফুর আঞার এহণ করিলাম। \*\*

> বিষ্ণুপুরাণ চতুর্থ অংশ দ্বিতীয় অধ্যায় সমাপ্ত ৷

# विक्षुश्रवागम्।

চতুর্থোহংশ: ।

ভূতীয়াধ্যায়া।

### পরাশর উবাচ।

ইত্যাত্মনমাত্মনৈবাভিধায়াসোঁ সৌভরিরপহায় পুত্রগৃহাসনপরিবহাদিকমশেষমর্থজ্ঞাতং সকলভার্য্যাসম-বেতো বনং প্রবিবেশ। তত্রাপ্যমুদিনং বৈথানসনিজ্ঞা-দ্যমশেষং ক্রিয়াকলাপং নিজ্ঞাদ্য ক্ষয়িতসকলপাপঃ পরিপক্ষমনোবৃত্তিরাত্মনায়ীনারোপ্য ভিক্করভবং॥ ১॥ ভগবতি আসজ্যাখিলং কর্মকলাপমজমবিকারমমরণা-দিধর্মমবাপ পরং পরবভামচ্যুতপদ্ম॥ ২॥

পরাশর কহিলেন। অনন্তর সৌভরি, আপনা আপনি এইরপ বিবেচনা করিয়া পুত্র গৃহ আসন পরিছেদ প্রভৃতি সমুদার ঐশব্য পরিত্যাগ পূর্কক সমুদায় ভার্যার সহিত্য সমবেত হইয়া বনগমন করিলেন। তিনি সেই বনে অবস্থান পূর্কক বৈধানস মুনিদিগের কর্ত্তব্য সমুদার ক্রিয়াকলাপ নিজ্পাদন করিয়া স্বীয় সমুদার পাপক্ষয় কনিলেন। পরে ওঁছোর মনোরন্তি বধন পরিপক্ক ও রাগাদি-শূন্য হইলা তথন তিনি আপনাতে আগ্রাধান করিয়া ভিক্ হইলেন। তিনি ভগবান্ বিকৃতে সমুদায় কর্মকলাপ সম্-পণ করিয়া জন্মরহিত বিকাররহিত সর্গাদি ধর্মারহিত ইক্রি-রের অগোচর অচ্যুত্ত পদ প্রাপ্ত হইলেন। ব্যাহাতার দুহিত্- ইল্যেতক্সান্ধাত্দু হিত্সমন্ধাদ্যাখ্যাতন্ ॥ ৩ ॥

যশ্চৈতৎ সৌভরিচরিতমনুমারতি পঠতি শৃণোভ্যবধারয়তি, তদ্যাফৌ জন্মান্যসন্মতিরসদ্ধর্মো বা মনসো
হসন্মার্গাচরণমশেষহেয়ের বা মমত্বং ন ভবতীতি, অতো
মান্ধাতুঃ পুত্রসন্ততিরভিধীয়তে ॥ ৪ ॥

অম্বরীষম্য মান্ধাতুত্তনয়ম্য মুবনাশ্বঃ পুরোহভূৎ। তথ্যাৎ হরিতঃ যতোহচ্চিরসো হারীতাঃ॥ ৫॥

রসাতলে চ মৌনেয়া নাম গন্ধর্বাঃ ষট্কোটিসজ্যা-ভৈরশেষাণি নাগকুলানি অপহাতপ্রধানরত্নাধিপত্যান্য-ক্রিয়ন্ত ॥ ৬॥

टेडक गम्नर्सवीर्गावशूटिङ्क्रद्रराभटेत्रर्छगवान् अध्यव-

সম্বন্ধে এই উপাধ্যান কহিলাম। যিনি এই সৌভরিচরিত শারণ করেন, পাঠ করেন, শারণ করেন অথবা অবধারণ করেন, তাঁহার অই জন্ম, অসন্ধান, অসন্ধর্ম, সমুদায় হেয় বস্তুর প্রতি মমতা বা অন্তঃকরণের অসৎপথে গমন, এ সমুদায় ঘটে না। অতঃ-পর মান্ধাতার পুত্র সন্ততি বর্ণন করিতেছি।

মান্ধাতার পুত্র অন্ধরীবের একটা পুত্র ক্ষিয়াছিল। ঐ পুত্রের নাম যুবনাশ্ব। যুবনাশের পুত্র হরিত। এই হরিত হইতে আক্ষা-রস হারীত বংশ বিখ্যাত হইয়াছে।

মৌনেয় নামক ছয় কোটি গন্ধর্ম, রসাতলে অবস্থান পূর্মক
নাগগণের সমস্ত প্রধান রত্ন ও সমুদায় আধিপত্য হয়ণ করিয়াছিল।
প্রধান প্রধান নাগগণ, গন্ধ্বিবলে পরাভূত হইয়া অশেষ দেবল
গণের ও ঈশ্বর কীরোদসলিলশায়ী ভগবান্ (বিফুর নিকট গমন
পূর্মক তার করিতে লাগিল।) তার প্রবণে তাঁহার নিজো ভঞ্

দেবেশস্তবশ্রবণায়ীলিতোন্তিরপুগুরীকনয়নো জলশয়নো নিজাবসানান্তিবৃদ্ধঃ প্রণিপত্যাভিহিতো ভগবন্!
অপ্যস্মাকমেতেভ্যে। গন্ধর্কেভ্যে ভয়মুপশমমেষ্যতীত্যাহ ভগবাননাদিপুরুষঃ পুরুষোন্তমো যৌবনাশ্বস্য
মান্ধাতুঃ পুরুকুৎসনামা পুরস্তমহমনুপ্রবিশ্যেতানশেষদুষ্টগন্ধর্কান্থপশমং নয়িষ্যামি॥ १॥

ইত্যাকর্ণ্য ভগবতে ক্তপ্রণামাঃ পুনর্নাগলোকমা-গভাঃ পরগপতয়ো নর্মদাঞ্চ পুরুকুৎসানয়নায় চোদয়া-মাস্তঃ॥ ৮॥

সা চৈনং রসাতলে নীতবতী। রসাতলগতশ্চাসো ভগবতেজ্সাপ্যায়িতাত্মবীর্যঃ সকলগদ্ধর্কান্ জ্বান, পুনশ্চ স্বভবনমাজগাম। সকলপদ্ধগপতয়শ্চ নর্মদার্টিয়

হইলে তদীয় পুশুরীক নয়ন উদ্মীলিত হইল। নাগগণ প্রণিপাত পূর্ব্বক নিবেদন করিল, ভগবন্! গল্পবিগণ হইতে আমাদের বে ভয় উপস্থিত হইয়াছে। কিরুপে তাহার উপশম হইতে পারে? অনাদিপুরুষ ভগবান্ পুরুষোন্তম কহিলেন, যুবনাশ্বের পুত্র মাল্লাভার পুরুকুৎস নামে যে পুত্র আছে, আমি তদীয় শরীরে অনুপ্রবিষ্ট হইয়া সমুদায় গল্পবিগণকে বিনাশ করিব। গনাগরালগণ, এই বাক্য প্রবণ পূর্বক ভগবান্ বিষ্ণুকে প্রণাম করিয়া নাগলোকে প্রভাগিমন করিল। পরে তাহারা পুরুকুৎসকে (নাগলোকে) আনম্যন করিবার নিমিল্ত (ভগিনী) নর্ম্মদাকে নিযুক্ত করিল (ও কহিল ভগিনি!) গ্রুমি যুবনাশ্বতনয় মাল্লাভার পুরুক্ৎস নামক পুত্রকে অপহরণ পূর্বক আনয়ন কর। নর্ম্মদা পুরুকুৎসক্র সমাতলে গমন করিলে

বরং দদুঃ। মত্তেই মুম্মরণসমবেতং নামগ্রহণং করিব্যতি তদ্য সর্পবিষভয়ং ন ভবিষ্যতীতি॥ ১॥

#### অত্র শ্লোকঃ।

নর্মাণ হৈয় নমঃ প্রাতর্মমাণ হৈয় নমো নিশি। নমো২স্ত নর্মাদে! তুভ্যং রক্ষ মাং বিষদর্পতঃ॥ ইত্যুচ্চার্য্যাহর্মিশমস্ককারপ্রবৈশে বান সর্বৈর্দশ্যতে॥১০॥

ন চাপি ক্লতানুসারণভুজো বিষমপি সুভুক্তমুপ-খাতায় ভবিষ্যতি॥ ১১॥

পুরুকুৎসায় চ ভবতঃ সন্ততিবিচ্ছেদে। ন ভবি-ব্যতীত্যুরগপতয়ো বরং দদুঃ॥ ১২॥

ভগবানের তেজোদারা তাঁহার তেজ পরিবর্দ্ধিত হওয়াতে তিনি
সমুদায় গন্ধর্মগণকে বিনাশ করিলেন। পরে তিনি স্বীয় ভবনে
প্রভ্যাগমন করেন। নাগরাজেরা তথন ভগিনীকে বর প্রদান
করিলেন যে, যে ব্যক্তি ভোমার স্মরণ ও নামগ্রহণ করিবে,
ভাহার সর্পভিয় বা বিষভয় থাকিবে না। নর্মদার নাম গ্রহণ ও
নাম স্মরণ বিষয়ে একটা শ্লোক আছে যে, "প্রাভঃকালে নর্ম্মদাকে
করি নমস্কার। নিশাকালে নমস্কার করি পুনর্বার। নর্মদে!
প্রণাম করি সর্বাদা ভোমাকে। বিষ সর্পা হতে ত্রাণ কর মা
আমাকে।" দিবাভাগে রাত্রিকালে অথবা কোন অন্ধ্রকারময় স্থানে
গমন কালে এই স্লোক উচ্চারণ করিলে সর্পা, দংশন করে না। ' তাজনকালে এই মন্ত্র পাঠ করিয়া যদি বিষত্ত ভক্ষণ করে,
ভথাপি কোন হানি হয় না। ' অনস্কর নাগরাজেরা পুরুকুৎসক্তেও একটা বর দিলেন যে, ভোমার কর্মন বংশলোপ ছইবে
না। ' ব

পুরুকুৎসো নর্মদায়াং ত্রসদস্থামজীজনং। ত্রসদস্থাসূতঃ সভূতঃ, ততোহনরণ্যস্তং রাবণো দিখিজয়ে
জ্বান ৷ অনরণ্যস্য প্রদশ্বঃ প্রদশ্বস্য হ্র্যাশ্বঃ পুত্রোহতবং। ততক্ষ সুমনাঃ, তস্যাপি ত্রিধন্বা, ত্রিধন্বনস্ত্রাযাাক্রণঃ ॥২২॥

তস্মাৎ সভ্যত্রতঃ । যোহসো ত্রিশস্কুসংজ্ঞামবাপ, চণ্ডালতামুপগতশ্চ। দ্বাদশবার্ষিক্যামনার্ফ্যাং বিশ্বা-মিত্রকলত্রাপত্যপোষণার্থং চাণ্ডালপ্রতিগ্রহপরিহরণায় চ জাহ্নবীতীরে ন্যগ্রোধে হুগমাংসমন্ত্রদিনং ববন্ধ ॥১৩॥

পরিতুটেন চ বিশ্বামিত্রেণ সশরীরঃ স্বর্গমারো-পিতঃ ॥ ১৪ ॥

ত্রিশক্ষোর্হরিশ্চক্র:। তসাৎ রোহিতাশঃ। ততশ্চ

পুরুকুৎস হইতে নর্মদার গর্জে অসদস্যু নামে একটি পুত্র উৎপন্ন হইল। অসদস্থার পুত্র সম্ভূত্র পূত্র জনরণ্য। রাবণ
দিখিজারের সময় তাঁহাকে বিনাশ করিলেন। জনরণ্যের পুত্র পৃষদশ্ব,
পৃষদশ্বের পুত্র হর্মান্ব, হর্মান্বের পুত্র সুমনা, স্থানার পুত্র তিধন্তা,
ত্রিধন্তার পুত্র ত্র্যারুণ, ''ত্র্যাারুণের পুত্র সভাব্রভ। এই সভাব্রভ
ত্রিশঙ্কু নামে বিখ্যাভ হন। ইনি চাঞ্চালত্ব প্রাপ্ত হইয়াছিলেন।
এক সময় ছাদশ বৎসর জনার্ফি হইলে এই ত্রিশঙ্কু, বিশামিত্রের
পুত্র কলতাদির ভরণপোষণের নিমিন্ত গঙ্গাভীরন্থিভ বটরক্ষে
প্রতিদিন মাংস বন্ধন করিয়া রাখিয়া আসিভেন, চাঞ্চালের
নিকট প্রতিগ্রহ করিবেন না, বিবেচনা করিয়া সাক্ষাৎসন্থন্ধে দান
করিভেন না। '' জনস্তর বিশ্বামিত্র পরিভূক্ত হইয়া তাঁহাকে
সশরীরে স্থর্গ ভূলিয়া দিয়াছিলেন। '' ত্রিশঙ্কার পূত্র হরিশ্বন্দ্র,

হরিতঃ, হরিতাচ্চঞ্চঃ, চঞ্চোর্বিজয়স্থদেবৌ। রুরুকো বিজয়াৎ রুরুক্সা চ রুক্ততেও বাহুঃ। যোহসো হৈহয়তালজজ্ঞাদিভিরবজিতোহত্তর্বিজ্বা মহিয়া সহ বনং প্রবিবেশ॥১৫॥

তদ্যাশ্চ সপত্না গর্ভস্তত্তনার গরো দত্তঃ। তেনাদ্যা গর্ভঃ স সপ্তবর্ষাণি জঠর এব তত্ত্বো। স চ বাহুর্বভাবাদোর্কাশ্রমসমীপে মমার। ১৬॥

সা তস্য ভাষ্যা চিতাং কৃত্বা তমারোপ্যামুমরণকৃতনিশ্চয়াভূৎ। অথৈনামতীতানাগতবর্ত্তমানকালবেদী
ভগবানোর্কঃ স্বসাদাশ্রমায়ির্মায়াত্তবীৎ, অলমেন্ডেহরিশ্চন্স হইতে রোহিতাশ্ব, রোহিতাশ্ব হইতে হরিত, হরিত
হইতে চঞ্চু, চঞ্চু হইতে বিজয় ও হুদেব, বিজয় হইতে কুরুক,
কুরুক হইতে বুক, বুক হইতে বাহু উৎপন্ন হইলেন। এই বাহু
হৈহর ভালজ্জ্ম প্রভূতি কর্ত্ত্বক পরাজিত হইরা গর্ভিণী মহিবীর সহিত বনপ্রবেশ করেন॥ ' এই রাজমহিনীর গর্ভস্তপ্রনের
নিমিন্ত তাঁহার সপত্নী গর (ঔষধ) প্রয়োগ করিয়াছিল। ভাহাতে
সাত বৎসর পর্যান্ত তাঁহার গর্জ থাকিল, (সন্তান হইল না।)
অনন্তর বাহু, রুজাবন্থা হেতু ঔর্জ নামক মহর্ষির আপ্রেমের সন্ধিধানে প্রাণ ভাগে করিলেন। '

অনস্তর বাহুর ভার্য্য চিতা নির্মাণ করিয়া ভর্তাকে চিতায় আবোপণ পূর্বক সহমরণার্থ ক্তনিশ্চয়া হইলেন। তৎকালে বর্ত্তমান ভূত ভবিষাৎ কালত্ত্তয় বেস্তা ভগবান্ ঔর্ব্ধ, স্বীয় আঞ্রম

a র'ক্রিভি পাঠাভর**য**।।

নাসদ্থাহেণ। অথিপভূমগুলপতিরতিবীর্ঘ্যপরাক্রমো-২নেক্যজ্ঞক্রদরাতিপক্ষক্ষয়কর্ত্তা তবোদরে চক্রবর্ত্তী তিষ্ঠতি। মৈবং মৈবং সাহসাধ্যবসায়িনী ভবতী ভবতু, ইত্যুক্তা চ সা তত্মাদমুমরণনির্বান্ধাৎ বিররাম॥ ১৭॥

তেনৈব ভগবভা স্বাশ্রমমানীয়ত। কতিপয়দিনান্তরে চ সহৈব তেন গরেনাভিতেজস্বী বালকো জ্বজ্ঞে। তস্যৌ-র্বো জাভকর্মাদিকাং ক্রিয়াং নিষ্পাদ্য সগর ইতি নাম চকার। ক্রতোপনয়নঞ্চৈনমৌর্বো বেদান্ শাস্ত্রান্যশে-ষাণি অস্ত্রঞ্গাগ্রেথ ভার্গবাধ্যমধ্যাপয়ামাস। উৎপন্ন-

হইতে নির্গত হইয়। তাঁহাকে কহিলেন, ঈদৃশ অসদস্ঞান করিও না। যিনি অথগু ভূমগুলের অধিপতি হইবেন, যিনি বহুসংখ্য যাগাস্থান করিবেন, যিনি অসীম বীর্য্য ও অসীম পরাক্রমশালী হইবেন, যিনি সমুদায় শক্রপক্ষ ক্ষয় করিবেন, তান্তুশ রাজ-চক্রবর্ত্তী তোমার গর্ভে অবস্থান করিতেছেন। ঈদ্ধশ সাহস করিও না, ঈদৃশ অধ্যবসায় হইতে বিরতা হও। ভগবান্ ঔর্ব্ধ এই কথা বলিলে বাহুমহিনী দেই সহমরণ নির্বন্ধ হইতে বিরতা হই-লেন।

অনস্তর ভগবান্ ঔর্ব, ঐ রাজমহিবীকে স্বীয় জাশ্রমে আনরন করিলেন। কিছু দিন পরে সেই গরের (বিষৌষধের) সহিত অতি তেজ্ঞস্বী বালক ভূমিষ্ঠ হইল। ঔর্ব ঐ বালকের জাতকর্ম প্রভৃতি সমুদার ক্রিয়া সম্পাদন করিয়া সগর এই নাম রাখিলেন। পরে সগরের উপনরন হইলে ঔর্ব তাঁহাকে সমুদার বেদ ও সমুদার শস্ত্র এবং ভার্গব নামক আগ্রেয়াক্ত শিখাইলেন। সগরের বর্ধন বৃদ্ধিপরিণত হইল, তথান এক দিবস তিনি মাতাকে জিজ্ঞাসা বৃদ্ধিশ্চ মাত্রমপৃচ্ছে । আর ! কথমত্র বয়ম ? ক বা তাতঃ ? তাতোহস্মাকং কঃ ? ইত্যেবমাদি পৃচ্ছতঃ তন্মাতা সর্বমবোচং। ততঃ পিতৃরাজ্যহরণামর্ধিতো হৈহয়তালজজ্বাদিবধায় প্রতিজ্ঞামকরোং। প্রায়শশ্চ হৈহয়ান্ জ্বান । শক-যবন-কাষোজ-পারদ-পজ্লবা । হন্যমানাস্তৎকুলগুরুং বশিষ্ঠং শরণং যয়ৢঃ॥১৮॥

অথৈতান্ বশিষ্ঠো জীবমৃতকান্ কৃত্বা সগরমাহ, বৎস ! বৎস ! অলমেভিরতিজীবমৃতকৈরমূস্তৈঃ ॥১৯॥

" করিলেন, মাতঃ ! আমরা কিরুপে এখানে অবস্থান করিতেছি, আমার পিতা কে? তিনি কোথায় আছেন? সগর এইরূপ অনেক কণা জিজ্ঞাসা করিলে তাঁছার মাতা সমুদায় বিবরণ কহিলেন।

অনন্তর সগর অমর্বান্থিত হইয়া পিভ্রান্ধা প্রত্যাহরণার্থ হৈছয় তালজন্ম প্রভৃতির বিনাশ বিষরে প্রতিজ্ঞান্ধা হইলেন। তিনি প্রথমতঃ হৈছয়দিগকে উন্মূলিতপ্রায় করিলেন। পরে যথন শক যবন কান্থোজ পারদ ও পজ্জাবগণকে সংহার করিছে প্রস্তুত্ত হইলেন, তখন ডাহারা তদীয় কুলগুরু বিশিষ্ঠের শরণাপন্ন হইল। ১৮ অনন্তর বিশিষ্ঠ তাহাদিগকে জীবন্মৃত করিয়া সগ্রকে কহিলেন, বৎস! ইহারা জীবন্মৃত। ইহাদিগকে পুনর্বার বিনাশ করিবার নিমিক্ত ইহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবনান হইবার আবশাক্তা নাই।১০ তোমার প্রতিজ্ঞা রক্ষার নিমিক্ত আমি

এতে চ মরৈব ত্বপ্রতিজ্ঞাপরিপালনার নিজধর্মং দিজসক্পরিত্যাগং কারিতাঃ ॥ ২•॥

স তথেতি তদ্গুরুবচনমভিনন্দ্য তেবাং বেশান্যছমকারয়ৎ। যবনান্ মুগুড শিরুসঃ, অর্দ্ধুগুন্ শকান্,
প্রারুবহিকান্ পারদান্, পহলবাংশ্চ শাক্রাগ্রন্, নিঃস্থাধ্যায়বহিকারান এভাননাংশ্চ ক্ষজিয়াংশ্চকার। তে চ
নিজধর্মপরিত্যাগাদ্রাক্ষণৈশ্চ গরিত্যক্তা মেন্দ্রাং
বয়ঃ। সগরোহিশি স্বাধিষ্ঠানমাগাম্য অস্থালিতচক্রঃ সপ্তদ্বীপবতীরিমামুক্রীং প্রশাশাস। ২১।

ইত জীবিজুপুরাণে চতুর্থাংশে তৃতীয়োহধারঃ।
ইহাদিগকে খীয় ধর্ম ও ছিজসংসর্গ পরিত্যাগ করাইলাম,
(তাহাতেই ইহারা জীবন্ম,ত হইয়াছে।) ° সপর তথান্ত বলিয়া
শুরুবাক্য অনুমোদন করিলেন এবং শক যবন প্রভৃতির অন্যবিধ
বেশ করিয়া দিলেন। ববনদিগের মন্তক মুক্তন করাইলেন, শকদিগকে অর্জ্বুক্তিত করিয়া দিলেন। এইরূপ পারদ্যাণকে প্রলম্বিতকেশধারী এবং পজ্লাবদিগকে শ্মুক্রধারী করিলেন। সগর এই
সকল ক্ষত্রিয় ও অন্যান্য জনেক ক্ষত্রিয়কে বেদাধার্মন র হত ও
বাগাদি ক্রিয়া হীন করেন। ইহারা,ধর্ম পরিত্যাগ হেতু ব্রাহ্মণকর্ম্ব পরিত্যক্ত হইয়া ক্লেছে হইল। (বিজয়ী) সগরও নিজ
রাজধানীতে আগধান পূর্বক সপ্তরীপা প্রথিণী শাসন করিতে
লাগিলেন। ভাঁহার আজ্ঞা বা সেনাবল কোথাও প্রতিহত হয়
নাই। ২০

विक् भूत्रान हजूर्य बरम उठीत बशात नमार्थ।

विकुश्रवानम्।

চতুর্থোইংশঃ ৷

ठज्बीयातः।

### পরাশর উবাচ।

কশ্যপদূহিতা সুমতির্বিদর্ভরাজতনয়া চ কেশিনী দ্বে তার্থে সগরস্যান্তাম্। ১॥

তাভ্যাঞ্চাপত্যার্থমারাধিত ঐর্ব: প্রমেণ সমাধিনা ব্রমদাৎ ॥ ২॥

একা বংশধরমেকং পুত্রম্, অপরা ষ্টিং পুত্রসহস্রাণি জনয়িষ্যতীতি যদ্যা যদভিষতং, তদিছয়া গৃহতাম্। ইত্যুক্তে কেশিনী, পুত্রমেকং, সুমতিঃ পুত্রসহস্রাণ ষ্টিং ব্রে । তথেতি চ ঋষিণাভিহিতে অল্পৈরে-

পরাশর কহিলেন। সগরের দুইটী মহিবী ছিলেন। একটী কশাপের কন্যা স্থমতি, আর একটী বিদর্ভরাজতনয়া কেশিনী। শ সন্তানের নিমিন্ত এই দুই মহিবী ঔর্বের আরাধনা করিলে ঔর্ব পরম বোগবলে বর প্রদান করিলেন বে, বিভামান্তর দুই জনের মধ্যে এক জন বৃত্তি সহত্র পূত্র ও এক জন একটীমাত্র বংশধর পত্র প্রস্বাকরিবে। ইহার মধ্যে বিনি বে বর চাও, ইচ্ছা পূর্বক গ্রহণ কর। মহবি এই কথা বলিলে স্থমতি বৃত্তি সহত্র পুত্র ও কেশিনী ব ং ছো ভরে কৈকমসমঞ্জনং নাম বংশধরং পুত্রমস্ত কেশিনী। বিনতাতনয়ায়াস্ত স্থমত্যাঃ ষ্টিঃ পুত্রসহ-স্থাণ্যভবন্। ভসাদসমঞ্চো ২ংডমান্ নাম কুমারো জড়ে ॥ ৩॥

স তু অসমঞ্জা বাল্যাদেবাপর্তঃ। পিতা চাস্যাচিন্তরৎ, অয়মতীতবাল্যা বুদ্ধিমান্ ভবিব্যতীতি। ব অথ তত্রাপি বয়স্তীতে তচ্চরিত্মেবৈনং পিত। তত্যাক্ষ ॥ ৪ ॥

তান্যপি ষটিঃ কুমারসহত্রাণি অসমঞ্জসশ্চরিতমনু-চকুঃ॥ ৫॥

ততশ্চাসমঞ্জদশ্চরিতারুকারিভিঃ সাগরৈরপধ্সত-যজ্ঞাদিসন্মার্গে জগতি দেবাঃ সকলবিদ্যাময়মসং-

একটী পুত্র প্রার্থনা করিলেন। অত্যু দিন পরে কেশিনী অসমঞ্চা নামে একটা বংশধর পুত্র প্রস্ব করিলেন। বিনতার কন্যা স্থম-তিরও ষ্ঠি সহস্র পুত্র হইল। অসমঞ্জার একটা সন্তান হইল, তাহার নাম অংশুমান্।

অসমপ্রা বাল্যকাল অবধি সাতিশয় দুর্ত্ত ছইয়াছিলেন।
তাঁহার পিতা সগর, বিবেচনা করিতেন যে, বাল্যকাল অতীত...
ছইলেই তাঁহার বুদ্ধির পরিণতি ও জ্ঞান ছইবে। অসমপ্রা
যখন বয়ঃপ্রাপ্ত ছইলেন, তখনও তাঁহার চরিত্র পূর্মবৎ থাকাতে
সগর তাঁহাকে পরিত্যাগ করিলেন। শুসারের অপর ষ্ঠি সহস্র
পুত্রেরও অসমপ্রার ন্যায় চরিত্র ছইল। অসমপ্রার চরিত্রের
অনুকারী সগরতন্যগণ, পৃথিবীতে যজ্ঞ প্রভৃতি সমুদায় সৎকর্ম্ম,
লোপ করিতে প্রক্ত ছইলে দেবতারা, সকল বিদ্যাময় দোষক্রান্দি-

স্থামিশেষদোধৈর্ভগবতঃ পুরুষোত্তমস্যাংশভূতং কপিলর্ষিং প্রণম্য তদর্থমূচুঃ॥ ৬॥

ভগবন্! এভিঃ সগরতন রৈরসমঞ্স করিতমমুগম্যতে, কথমেবমেভিরমুসর দ্ভির্জ গদ্ধবিষ্যতী ত্যার্ত্তজগৎপরিত্রাণায় \* চভগবতো হত্ত শ্রীর এহণম্, ইত, কর্ণ্য
ভগবান্, অলৈপরেব দিনৈরেতে বিনক্ষ্যতি ইত্যুক্তবান্॥ ৭ ॥

তত্রান্তরে চ সগরো হয়মেধমারেভে। তত্ত্র চ তৎপুত্রৈরধিষ্ঠিতমস্যাশ্বং কোহপ্যপঞ্চত্ত্য ভূবো বিবরং প্রবিবেশ॥৮॥

ততশ্বাবেযণায় তনয়ান্ যুযোজ। ততন্তত্তনয়া-

পরিশূন্য ভগবান পুরুষোন্তমের অংশ নহর্ষি কপিলকে প্রণাম করিয়া নিবেদন করিলেন, ভগবন্! এই সমুদায় সগরতন ম অসমপ্রার চরিত্রের অনুসন্তি হিইয়াছে। এই রাজকুমারেরা ঈস্তুশ কুমাগানুসারী হইলে কিরপে পৃথিবী রক্ষা হইবে! আর্ত্ত জনের পরিত্রাণের নিমিন্তই এই ভূমগুলে আপান শরার পরিগ্রহ করিয়াছেন। ভগবান্ কপিল, এই বাক্য শ্রেণ ক্রিয়া কহিলেন, (দুর্ভি সগরতন্ত্রেরা) অপস দিবসের মধ্যেই বিন্টা হইবে। গ

কিছু দিন পরে সগর অশ্বমেধ বজ্ঞ আরম্ভ করিলেন। সগর-তনয়েরা অশ্ব রক্ষায় নিযুক্ত হইলেন। কোন ব্যক্তি সেই অশ্ব অপহরণ করিয়া পাতালতলে প্রবিষ্ট হইল। দ্ তথন সগর জ্ঞা অন্বেষণের নিমিক্ত পুত্রগণকে নিযুক্ত করিলেন। অনন্তর সগর-তনয়েরা অশ্বপুর চিহুরে অমুবর্তী হইয়া নির্দ্ধাতিশয় সহ্কারে

আর্জনপরিত্রাণার ইতি পাঠাররম্।

শ্চাশ্বখুরপদবীমন্থ্যরন্তোইতিনির্ব্বন্ধেন বস্থাতলমেকৈ-কো যোজনং যোজনমবনেশ্চধান ॥ ৯ ॥

পাতালে চাশং পরিজ্ञয়য়য়য়য়নীপতিনন্দনাস্তে
দদৃশুঃ। নাতিদুরছিভঞ্চ ভগবন্তমপ্যনে শরৎকালে২কমিব তেজোভিরনবরভমুদ্ধ্রধশ্চাশেষদিশশেচাস্তাসয়য়ানং কপিল্যিমপশ্যন্। ১০॥

ততশ্চোদ্যতায়ৢধা দুরাত্মায়ময়দপকারী যজ্ঞবিখাত কর্ত্তা হয়হর্তা হন্যতাং হন্যতামিত্যধাবন্। ততশ্চ তেনাপি ভগৰতা কিঞ্চিদীষৎপরিবর্ত্তিতলোচনেন বিলোকিতাঃ স্বশরীরদমুপেনামিনা দহ্যমানা বি-নেশুঃ॥ ১১॥

প্রত্যেকেই বস্থাতলের এক এক বোজন খনন করিলেন (ও তাঁহারা পাতালে প্রবিষ্ট হইলেন।) ব্যাপন রাজনন্দনের। দেখিতে পাইললেন যে, পাতালতলে অর্থা পরিভ্রমণ করিতেছে। তাহার অনতিদ্রে দেখেন যে, ভগবান্ সহর্ষি কপিল, শরৎকালীন মেঘসম্পর্ক-বিরহিত দিবাকরের ন্যায় তেজোরাশি দ্বা অনবঙ্গত উর্জ্ব অধঃ ও সমুদার দিক দ্যোতমান করিতেছেন। ব্যাপর সগরতনরের। অস্ত্র উদ্যত করিয়া, এই দুরাত্মাই আমাদের অপকারী, কল, ইহাকে বধ কর, এই বলিয়া ধাণমান হইলেন। তথন ভগবান্ কিলল, লোচন্দ্র ইবৎ পরিবর্ত্তিত করিয়া দৃষ্টিপাত করিবামাক্র তদীয় শরীর–সম্ভূত অগ্নিদ্বারা সগরতনয়ের। দক্ষা ও বিন্তী হইল। ব্যাপ্তিলা বিন্তী হইল।

সগরোহপ্যস্থামাশ্বাসুসারি তৎ পুত্রবলমশেবং প্রমর্ষিকপিলতেজ্সা দক্ষমংশুমন্তম্মমঞ্জ্সঃ পুত্রমশ্বা-নয়নায় তোদয়ামাস॥ ১২॥

দ তু সগরতনয়ধাতমার্গেণ কপিলমুপগম্য ভক্তিনম্রন্তথা তথা চ তুষ্টাব। যথৈনং ভগবানাহ, গভৈছনং
পিতামহায়াখং প্রাপয়, বরং বৃণীষ চ। পুত্র! পৌত্রশ্চ
তে স্বর্গাদাকামানয়িষ্যতীতি॥ ১৩॥

অথাংশুমানপি ত্রন্ধক্ত হতানামস্মৎপিতৃণাং স্ব-গায় স্বর্গাযোগ্যানাং স্বর্গপ্রাপ্তিকরং ব্রম্মাকং ভগ-বান্ প্রযক্ষ্তু ইত্যাহ॥ ১৪॥

তঞ্চাহ ভগবান্, উক্তমেবৈত্ময়া পৌত্তে ত্রিঅনস্তর সগর যথন কানিতে পারিলেন যে, অশ্বের অনুযায়ী
তদীয় সমুদায় পুত্র ও সৈনাসামস্ত মহর্ষি কপিলের তেজোছারা
ভন্মসাথ ইইয়াছে, তখন তিনি অসমপ্লার পুত্রকে অখানয়নার্থ
প্রেরণ করিলেন। ১১ অসমপ্লার পুত্র অংশুমান, সগরতনয়গণকর্ত্বক নিখাত পথ দ্বারা মহর্ষি কপিলের নিকট গমন পূর্বক ভিজ্তিনম হইয়া এরপ তার করিতে লাগিলেন যে, ভগবান্ কপিল,
(পরিত্তী হইয়া) তাঁহাকে কহিলেন, এই অশ্ব লইয়া গিরা
তোমার পিতামহকে দাও এবং আমার নিকট বর লও। বৎস!
তোমার পৌত্র দেবলোক হইতে গঙ্গা আনয়ন করিবে। ১০ অনস্তর
অংশুমান কহিলেন, ভগবন্! আমার পিতৃগণ ব্রহ্মদণ্ডে বিনষ্ট
হইয়াছেন, স্কুরাং তাঁহারা স্বর্গপ্রান্তির অযোগ্য, এক্ষণে তাঁহাদের স্বর্গ লাভের নিমিন্ত আমাকে স্বর্গপ্রান্তির্জনক বর প্রেদান
কর্মন। ১০ ভগবান্ কপিল কহিলেন, এ ক্বিন্ধে আমি পূর্ব্বেই
ভোষাকে বলিয়াছি বে, ভোষার পৌত্র স্বর্গ হইতে পঞ্চাকে ভূম-

দিবাদ্গক্ষাং ভুবমানয়িষাতীতি। ভদন্তমা সংস্পৃতিষুক্তি ভসাস্বেতে স্বৰ্গমাবোক্ষান্তি। ভগবদ্বিষ্ণুপাদাস্কৃতিবিন্দিভলাম্য হি তমাহাত্মাং, যন্ন কেবলমভিদন্ধিপূৰ্ববি স্থানাদ্যপভোগেষূপকারকমনভিদং হিতমপ্যপেত প্রাণ্দাভিদ্যায়কেশাদ্যুৎস্কং শরীরজং যন্ত্পতিতং সদঃ শরীরিণং স্বর্গং নয়ভীত্যুক্তঃ প্রণম্য চ ভগবং অশ্বমাদার পিতামহযজ্ঞমাজগাম॥ ১৫॥

সগরোহস্থাশ্বমাদায় তং যজ্ঞং সমাপ্রামাস, সাগরং চাত্মজপ্রীত্যা পুত্রত্বে কম্পিয়ামাস॥ ১৬॥

তস্যাপ ংশুমতো দিলীপঃ পুরোহভবং। দিলীপ ।
শুলে আনয়ন করিবে। এই সকল অন্থিভন্ম সেই গঙ্গাজল কর্ত্র ক্ষুষ্ট হইলে সগরতন্যের। স্বর্গ গমন করিবে। ভগবান্ বিষণুর পাদা জ্ব হইতে বিনির্গত সলিলের উদ্ধান মাহাত্মা যে, অভিসন্ধি পূর্বক স্থানাদি করিলেই যে কেবল স্বর্গলাভ হয়, এরপ নহে পরস্ক যোনাদি করিলেই যে কেবল স্বর্গলাভ হয়, এরপ নহে পরস্ক যোজার গঙ্গাজল ক্ষাণাদিবিষয়ে কোন অভিসন্ধি না.
উদ্ধান্ত ব্যক্তির অন্থি চর্মা স্থায়ু কেশ প্রভৃতি শরীরের কোন অবয়ব বদীয় গর্জে পভিত হইলেও শরীর ভৎক্ষণাৎ স্থর্গে গমন করে। ভগবান্ কপিল এইরপ বলিলে অংশুমান্ ভাঁহাকে প্রণাম করিয়া অশ্ব গ্রহণ পূর্মক বিভামহের যক্তর্গলে উপন্থিত ভইলেন॥ বিভামহের যক্তর্গলে উপন্থিত ভইলেন॥ বিভামহের স্ক্রেইলে উপন্থিত ভিইলেন॥ বিভামহের স্ক্রেইলে উপন্থিত ভিইলেন॥ বিভামহের স্ক্রেইলে উপন্থিত ভিইলেন॥ বিভামহের স্ক্রেইলে উপন্থিত ভিইলেন॥ বিভামহের স্ক্রেইলে উপন্থিত ভিইলেন।

অনস্তর সগর অশ্ব গ্রহণ করিয়া সেই অশ্বমেধ যজ্ঞ সমাপন করিলেন। তিনি পুত্রগণের প্রতি প্রীতি প্রদর্শনার্থে (তাঁহাদেই কর্ত্বক নিশ্বাত) সাগরকৈ পুত্র কল্পনা করেন। ১°

অংশুমানের একটী পুত্র হইল, তাহার নাম দিলীপ। দিলী পের পুত্র ভগীরথ। ইনি স্বর্গ হইতে গঙ্গাকে পৃথিবীতে আন স্যাপি ভগীরথঃ। বোহদো গলাং স্বর্গাদিহানীয় ভাগীরথীসংজ্ঞাং চকার। ১৭॥

ভগীরধাৎ ঋতঃ, তস্যাপি নাভাগঃ, ততোহপ্যম-রীবঃ, তস্মাৎ সিম্মুদ্বীপঃ, তস্যাপ্যযুতাশঃ, তৎপুর ঋতুপর্ণো নলসহায়েহকক্ষরজ্ঞাহভূৎ। ১৮।

ঋতুপর্ণপুত্রঃ সর্বাকারঃ,তত্তনয়ঃ স্থদাসঃ, স্থদাসাৎ সৌদাসো মিত্রসহনামা॥ ১৯॥ «

বোহসাবটব্যাং সুগ্রাগতো ব্যান্ত্রদ্বর্মপৃশ্যৎ ॥২০॥
তাভ্যাঞ্চ তদ্বনমপ্যথং ক্তন্ ॥ ২০ ॥
স চৈকং তয়োর্কাণেন জ্বান ॥ ২২ ॥
বিষয়মাণশ্চাসাবতিভীবণাক্ততিরতিকরালবদ্বেশ রাক্রানাইভবৎ ॥ ২৩ ॥

র্মন করিরা ভাগীরথী নাম প্রদান করিলেন । তগীরখের পুত্র ক্রত. ক্রত হইতে নাভাগ, নাভাগ হইতে অন্থরীন, অন্থরীন হইতে সিন্ধুনীপ, সিন্ধুনীপ হইতে অযুতাখ, অযুতাখ হইতে শ্রতুপর্ব উৎপন্ন হইলেন। এই শ্রতুপর্ব নলরালার সহায় ও অক্ষরদয়ক্ত ছিলেন। ১৮ শ্রতুপর্বের পুত্র সন্ধর্কাম, সর্বকাদের পুত্র সুদাস, স্থানের পুত্র সৌদাস বা বিত্রসহ।

একদা এই মিত্রসহ, দুগরার্থ বনগমন করিয়া দুইটী নাযুদ্বিতে পাইলেন। <sup>২°</sup> এই দুইটী বাাযু হইতে সেই বন মৃগসূন্য
হৈরাছিল। <sup>২°</sup> মিত্রসহ সেই ব্যাবু মধ্যে একটীকে বাণনারা
কি করিলেন। <sup>২২</sup> বাণবিক দুগ মরিবার সময় করালবদ্দ ভীষণা-

দিভীরোংপি প্রতিক্রিয়াং তে করিব্যামীপুঞ্জু। অন্তর্জানং জগাম॥২৪॥

কালেন গছতা স গোদালো যজ্ঞখনজং ৷ পরিনিভিতযভে চাচার্য্যবিশিষ্ঠে নিজাতে তদ্ধকো বশিষ্ঠরপমাস্থায়, যজ্ঞাবসাবে মন সমাংশং ভোজনং দেয়ং তৎ
সংক্ষ্মিতাং কণাদিবার্গমিধ্যামীত্যজ্ঞা নিজাতঃ ॥২৫॥

ভূরক স্থাবেশং কথা রাজাজ্ঞরা বার্ষমাংসং সংস্কৃত্য রাজ্ঞে ন্যবেদয়ৎ। অসাবপি হিরণ্যপাত্রস্থিতং নাংসমাদার বশিষ্ঠাগমনপ্রতীক্ষোহভবৎ। ২৬॥

আগতায় চ বশিষ্ঠায় নিৰ্বেদিতশান্। স চাচিত্তয়ৎ

কৃতি রাক্ষন হইল। <sup>২০</sup> দিতীয় ব্যাঘু, আমি তোমাকে প্রতিফল প্রদান করিব, এই কথা বলিয়া অস্ত হিতি হইল। <sup>২০</sup>

কিছুকাল গত হইলে এক সমন্ন সৌদাস যজাতুষ্ঠান করিলেন।
আচার্য্য বলিষ্ঠ যজ্ঞয়মাপনানস্তর যজ্ঞ হুল হইতে গমন করিলে ঐ
রাক্ষণ বলিষ্ঠ রূপ ধারণ করিয়া (আগমন পূর্বক) কহিল যে,
এক্ষণে যজ্ঞ শেব হইয়াছে, অদ্য আহারের সময় আমাকে মাংস
দিতে হইবে, তুমি মাংস প্রস্তুত কর, আমি ক্ষণকাল পরেই এখানে
আগমন করিতেছি। (বলিষ্ঠরূপধারী রাক্ষ্য) এই কথা বলিয়া
চলিয়া গেল ঃ ২৪

ঐ রাক্ষস পুনর্বার সূদ্বেশ ধারণ পূর্বক রাজাজ্ঞামুসারে মনু-ব্যের মাংস পাক করিয়া রাজার নিকট সমর্পণ করিল। রাজাও , হিরগ্রের পাত্রস্থিত মাংস গ্রহণ করিয়া বাঁশিষ্ঠের আগমনের প্রতী-কার থাকিলেন। শুলভার যথন বাশিষ্ঠ আগমন করিলেন, তখন । তাঁহাকে সেই মাংস নিবেদন করিলেন। বশিষ্ঠ চিস্তা করিতে অহোরাজ্যেই স্বাদিঃশীলার । বেনৈ ভ্রমাংসমস্থাকং প্রফাত । কিমেভদু বাজাতমিতি গ্রানপরোইভূৎ, অপশ্রু তরাল্যমাংসম্। ভত্ত কোধকলু দীরু ত চৈত। রাজানং প্রতি শাপায়ুৎসমর্জ্ঞা, যন্মাদভোজ্যমন্ত্রিধানাং তপ্রিনাম্ অবগছরপি ভ্রান্মহাৎ দদাতি, তনাজ বৈবাত্ত লোলুপা বৃদ্ধিভবিষ্যতীতি ॥ ২৭ ॥

অনস্তরঞ্চ তেনাপি, ভগবতৈবাভিহিতে। হ্নীভুয়ক্তঃ, কিং কিং ? মটায়বাভিহিতম্ ? ইতি পুনরপি সমাধ্যে তছো ॥ ২৮॥

সমাধিবিজ্ঞানাবগতার্থশ্চাগ্যার্থক্ং চকার, নাত্যন্ত-মেতৎ, দ্বাদশাব্দং ভবতো ভোজনং ভবিষ্যতীতি ॥২৯॥

লাগিলেন, অহা ! রাজার কি দুঃশীলতা যে, আমাকে নাংস প্রদান করিতেছে ! পরে তিনি উছা কোন্ জীবের মাংস, (ইহা জানিবার নিমিন্ত ) গ্রানপরারণ ছইলেন, এবং জানিতে পারি-লেন যে তাহা মনুষ্যমাংস। অনস্তর তিনি ক্রোধে কলুবিত-হৃদয় হইরা রাজাকে শাপ প্রদান করিলেন ক্ষে এই মাংস অম্বর্ধি তপন্থিগণের বে অধাদ্য তাহা তুমি জ্ঞাত থাকিয়াও বধন আমাকে প্রদান করিয়াছ, তথন তোমার মনই ইহাতে লোলুপ হইবে, (তুমি রাজ্য ছইবে)।

অনন্তর রাজা কহিলেন, ভগবন্! আপনিই ত ( মাংস প্রদান করিছে) আজা করিয়াছেন। কি? আমিই আজা করিয়াছি? এই বলিয়া মুনি পুনর্কার সমাধি অবলন্ধন করিলেন। ২৮ মহর্বি যখন বোগবলে সমুদার রন্তান্ত অবগত হইলেন, ইডখন ভিনিরাজার প্রতি অনুগ্রহ প্রকাশ করিয়া (কহিলেন যে) চিরকাক

অসাবপি তু প্রগৃহ্যোদকাঞ্চলিং মুনিশাপপ্রদানারোদ্যতে। ভগবানস্থান্যঃ, নার্স্যেবং কুলদেবতাভূতমাচার্যাং শপ্ত মিতি অপত্যা মদমন্ত্যা প্রসাদিতঃ শস্যামুদরক্ষার্থং তচ্ছাপামু নোর্ক্যাং নাকাশে চিক্ষেপ তেনৈব
অপাদে সিষেচ॥ ৩০॥

তেন ক্রোধশৃতেনান্তসা দগ্ধছারে তৎপাদৌ কল্যাবভামুপগতৌ ॥ ৩১॥

ততশ্চ স কল্যাষপাদসংজ্ঞামবাপ, বশিষ্ঠশাপাচ্চ ষঠে কালে রাক্ষসভাবমুপেত্যাটব্যাং পর্যাটন্ অনে-কশো মার্যানভক্ষাৎ॥ ৩২॥

তোমাকে পিশিতাশন হইয়া থাকিতে হইবে না, কেবল দ্বাদশ বৎসরমাত্র নরমাংসভোজী হইয়া থাকিবে। <sup>১৯</sup> অনস্তর রাজাও সিলিলাঞ্জলি গ্রহণ পূর্মক মহর্ষিকে প্রতিলাপ প্রদান করিতে উদ্যত হইলেন। তথন রাজমহিবী মদয়ন্তী অনেক অমুনয় বিনয় পূর্মক কহিলেন যে, এই ভগবান্ মহর্ষি আমাদের শুরু, আচায়্য ও কুলদেবভাস্থরপ, ইঁহাকে শাপ প্রদান কয়া উচিত হইতেছে না। তথন রাজা, সেই শাপ প্রদানার্থ গৃহীত জল শস্য নই হইবার ভয়ে পৃথিবীতে এবং জল নই হইবার অশক্ষায় আকাশে নিক্ষেপ না করিয়া তদ্বায়া স্বীয় পদদ্দ সিক্ত করিলেন। ত সেই জোধাজ্যিত জলদারা তাঁহার পাদ্দয় কল্যাব অর্থাৎ কৃষ্ণ ও পাঞ্র্ব হইল। ত এই অব্ধি তিনি কল্যাব্রাদ্দাদ নামে বিখ্যাত হইলেন। বলিওলাপ হেতু তিনি প্রত্যেক ভৃতীয় রজনীতে রাক্ষম ভাব প্রাপ্ত হইয়া অর্গ্যে পরিজ্ঞমণ পূর্মক বহুসঙ্খ্য মুমুষ্য ভক্ষণ করিতেন। ত বি

একদা তু কঞ্চিমুনিমৃতুকালে ভার্যায়া সহ সভতং দদর্শ ॥ ৩৩ ॥

তয়োশ্চ তমতিভীষণং রাক্ষসমবলোক্য আসাৎ প্রধাবিতয়োর্দস্পত্যোত্ত ক্ষিণং জ্ঞাহ ॥ ৩৪॥

ততঃ সা ব্রাহ্মণী বন্ধশন্তং যাচিত্বতী, প্রসীদেক্ষাকুকুলভিলকভূতন্তং মহারাজ-মিত্রসহোন রাক্ষসঃ। নার্হসি
স্ত্রীধর্মস্থাভিজ্ঞো ম্যাক্তার্থায়ামিমং মন্তর্ভারমতুমিত্যবং বন্ধকারং ভস্যাং বিলপন্ত্যাং ব্যাত্রঃ পশুমিব
তং ব্রাহ্মণমভক্ষরং॥ ৩৫॥

একদা তিনি (রাক্ষস ভাব প্রাপ্ত ইইয়া) ভার্যার সহিত সক্ষত কোন মুনিকে দেখিতে পাইলেন। ত সেই ব্রাহ্মণ ও ব্রাহ্মণী, তাঁহাকে অতিভীষণ রাক্ষসাকার দেখিয়া ভয়ে পলায়ন করিতে লাগিলেন। কল্যাম্বপাদ, (পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধার্মান হইয়া) ব্রাহ্মণকে গ্রহণ করিলেন। ত অনস্তর ব্রাহ্মণী পুনঃপুন স্বীয় ভর্তাকে যাচ ্ঞা করিতে লাগিলেন, (ও কহিলেন) মহারাক্ষ! প্রসন্ন হউন। আপনি ইক্ষাকুলের ভূষণস্বরূপ। আপনি রাক্ষ্স নহেন, আপনি মহারাক্ষ মিত্রসহ। ত্রীসহ্বাসক্ষনিত স্থা আপনকার অবিশিল্ল নাই। আপনি সকলই জানেন। আমি ভর্ত্সংসর্দে পরিল্ল হই নাই। ইত্রশ অবস্থায় আমার ভর্তাকে ভক্ষণ কর্মণ করিন কার উচিত হইতেছে না।

ব্রাহ্মণী এইরপ বলিয়া অনেক বিলাপ করিতে ল<sup>নু আমার</sup> রাহ্মণ (তাহাতে কর্নপাতও না করিয়া) ব্যায় বেমন দেবগণ ভক্ষণ করে, তাহার ন্যায় সেই ব্রাহ্মণকে ভক্ষণ করিলে ত তশ্চাতিকোপসমবিতা ত্রাহ্মণী তং রাহ্মানং, যসা-দেবং ময্তৃপ্তায়াং ত্বয়ায়ং মৎপতির্ভক্ষিতঃ ,তসাৎ ত্বমপ্যস্তমবলোপভোগপ্রত্তী প্রাক্ষ্যসি, ইতি শশা– পার্যিং প্রবিবেশ চ ॥ ৬৬ ॥

ভতন্তস্য দাদশাকপর্যায়ে বিমুক্তশাপস্য জ্রীবিষয়া-ভিলাবিশো মদয়ন্তী স্মার্মামাস।। ৩৭॥

ততক্ষ পরমসৌ স্ত্রীসন্তোগং তত্যাজ্ঞ। বশিষ্ঠক্ষ অপুত্রিণা রাজ্ঞা পুত্রার্থমভ্যার্থতো মদয়ন্ত্যাং গর্ভাধানং চকার। যদা চ সপ্ত বর্ষাণ্যসৌ গর্ভো ন জজ্ঞে, ততন্তং

অনস্তর ব্রাহ্মণী, সাভিশয় রোষপরতন্ত্রা হইয়া রাজাকে শাপ প্রদান করিলেন যে, আমি স্থামিসহবাসে পরিভৃপ্তা না হইতেই ভূমি যে এরপে আমার পভিকে ভক্ষণ করিলে, এই কারণে ভূমি বর্ধনই স্ত্রীসংভোগে প্রবৃত্ত হইবে, তথনই ভূমি কলেবর পরিভাগি করিবে। ব্রাহ্মণী এইরপ শাপ প্রদান করিয়া অগ্নিতে প্রবিটা হইলেন 1°°

ন অনস্তর হাদশ বৎসর অতীত হইলে রাজা কল্যাহপাদ, শাপ বান তৈ মুক্ত হইলেন। একদা তিনি জ্ঞীসম্ভোগাভিলাষী হইলে নিয়েন্তী তাঁহাকে (ব্রাহ্মণপত্নীর শাপ) ক্ষরণ করিয়া দিলেন। <sup>বা</sup> ক্রোধান্তিই অবধি জ্ঞীসহবাস পরিত্যাগ করিলেন। পরে তাঁহার পাঞ্বর্ণ বা থাকাতে তিনি পুজ্ঞোৎপাদনার্থ বিশিষ্টের নিকট হইলেন করিলে বিশিষ্ঠ বদয়ন্তীর গর্ভাধান করিলেন। অনস্তর রাহ্মন বের অতীত হইল তথাপি সেই গর্জে সন্তান উৎপর মনুষ্যানা। তথন সেই রাহ্মসহিষী কথা (প্রতর) হারা সেই

গর্ভাশানা সা দেবী জ্বান। পুরেশ্বালারত। তস্য চাশাকএব নামাভবং। অশাকস্য মূলকো নাম পুরোহভবং। যোহসৌ নিঃক্ষজ্রেইসিন্ ক্ষাতলে ক্রিয়মাণে জ্রীভির্বিবজ্রাভিঃ পরিবার্য্য রক্ষিতঃ। ততন্তং নারীকবচমুদাহরন্তি। মূলকাং দশরপঃ, তুসাদিলিবিলঃ,
তত্তশ্চ বিশ্বসহঃ, তুসাদ্য পট্টাক্ষো দিলীপঃ,। যোহসৌ
দেবাস্তরাণাং সংগ্রামে দেবতাভিরভ্যবিতোহস্তরান
ক্যান। স্বর্গে চ ক্রতপ্রিয়েদে বৈর্ব্বরার্থং চোদিতঃ প্রাহ,
যদ্যবশ্যং বরো গ্রাহ্যক্তর্মায়ুঃ কথ্যতামিতি। অন-

গর্ভে আঘাত করিলেন। তাহাতে একটা পুত্র উৎপন্ন হইল।
এই রাজসুনার অখ্যক নামে বিখ্যাত হইলেন। অখ্যকের একটা
পুত্র হইল, তাহার নাম মুলক। (পরশুরাম) যখন পৃথিবী
নিঃক্ষত্রিয় করেন, তৎকালে জীলোকেরা বিবন্ধা হইরা এই মুলককে পরিবৃত্ত করিরা রক্ষা করিয়াছিল, এই জন্য ইনি নারীকবচ
নামে বিখ্যাত হন।

মূলক হইতে দশরথ, দশরথ হইতে ইলিবিল, ইলিবিল হইতে বিশ্বসহ, বিশ্বসহ হইতে খট্টাল্ল উৎপন্ন হইলেন। খট্টা-লের অপর একটা নাম দিলীপ। একদা দেবাস্থরের সংগ্রাম উপস্থিত হইলে দিলীপ দেবগণ কর্ত্বক প্রাথিত হইন্না অন্থরগণকে বিনাশ করিলেন। তাহাতে দেবগণ প্রীত হইন্না অন্থরোধ করি—লেন যে, তুমি একটা বর প্রার্থনা কর। দিলীপ কহিলেন, যদি একান্তই আমাকে বর গ্রহণ করিতে হন্ন, তাহা হইলে আমার কত পরমায়ঃ আছে, তাহা আপনারা বলিয়া দিউন। দেবগণ কহিলেন, তোমার এক মুকুর্ত্ত পরিমিত পরমায়ঃ অবশিষ্ট আছে।

ন্তরকৈতৈকক্তম্, একমুহূর্তপ্রমাণমায়ঃ। ইত্যুক্তোইস্থালিতগতিনা বিমানেন লখিমগুণো মর্ত্তলোকমাগম্যেদমাহ, যথা ন ব্রাক্তণেভ্যঃ সকাশাদাত্মাপি মে
প্রিয়ন্তরো নচাপি স্বধর্মোলজনং ময়া কদাচিদপ্যমুফিতং, ন চ সকলদেবমামুষপশুরক্ষাদিকেংপ্যচ্যুতব্যাত্রেকবতী দৃফির্মমাভূৎ, তথা তমেব দেবং
মুনিজনামুম্মতং ভগবন্তমস্থালিতগতিঃ প্রাপয়েয়মিত্যশেষদেবগুরো ভগবত্যনির্দেশ্যবপুষি সন্তামাত্রাত্মনাত্রত্মানং পরমাত্মনি বাসুদেবে মুযোজ, তত্ত্বৈব লয়মবাপ,
॥ ৩৮॥

ভকাপি আরতে শোকো গীতঃ সপ্তর্ষিভিঃ পুরা।

দেবগণ এই কথা বলিবামাত্র দিলীপ, দ্বরান্থিত হুইয়া অস্থালিতগতি দেবযান দারা তৎক্ষণাৎ মর্দ্র্যালেকে উপস্থিত হুইলেন এবং কহিলেন, সমুদায় ব্রাহ্মণগণ হুইতে যেমন আমার আত্মাণ্ড প্রিয়ণজর নহে, আমি বেমন কখন স্বীয় ধর্ম উল্লেখন করি নাই, সেই-ক্ষণ অচ্যুত ব্যতীত দেব মামুর পশু রক্ষ প্রভৃতি কোন পদার্থেই যেন আমার দৃষ্টি না হয়, আমি যেন মুনিজন কর্জুক নিরন্তর অনুধ্যাত দেব ভগবান্ বিষ্কৃকেই প্রাপ্ত হুই। আমাকে যেন ক্লেমাত্রও) তাঁহা হুইতে স্থালিত হুইতে না হয়। দিলীপ এই কথা বলিয়া অশেব দেবতার শুরু অনির্দ্ধেণ্যস্করণ সম্ভামাত্রা-দ্মাক পর্মান্থা ভগবান্ বাম্বদেবে আত্মাকে সংযুক্ত করিলেন এবং তাঁহাতেই লয় প্রাপ্ত হুইলেন। তা

্এ বিষয়ে পূৰ্বে সপ্তৰিগণ কৰ্জ্ক গীত একটা স্নোক আছে গে,

শট্টাকেন সমো নানাঃ কন্দিদুর্ব্যাং ভবিষ্যতি। যেন স্বর্গাদিহাগত্য মুহূর্ত্তং প্রাপ্য জীবিতম্। ত্রয়োহভিসংহিতা লোকা বুদ্ধ্যা দানেন চৈব হি

খটা, ক্লিতো দীর্ঘবান্থঃ পুত্রোহভবৎ। ততো রঘুঃ, স্থাদপ্যজঃ, অজাৎ দশরথঃ, দশরথস্যাপি শ্রীভগ-বানজনাভো জগৎস্থিত্যর্থমাত্মাংশেন রামলক্ষণভরত-শক্রম্বরূপিণা চতুর্দ্ধা পুত্রত্বম্যাসীৎ 18০॥

রামোহপি বালএব বিশ্বামিত্রযজ্ঞরক্ষণায় গচ্ছন্ তাড়কাং জঘান ॥৪২॥

পৃথিবীতে খটুাক্ষের সদশ আর কোন রাজা হইবে না। তিনি
মুহ্ র্ভিকাল মাত্র পরমায় জানিয়া স্বর্গ হইতে পৃথিবীতে আগমন
পূর্বক বুদ্ধি দ্বারা অর্থাৎ সমুদায় পদার্থ ই বাস্থদেব, এতদাত্মক জ্ঞান
দারা ও দান দ্বারা সমুদায় ত্রিলোক বাসুদেবে সমর্পাণ করিয়াছিলেন। ""

খট্ব ক হইতে দীঘ্বাস্থ নামক পুত্র উৎপন্ন হইল। দীঘ্বাস্থর
- পুত্র রঘু, রঘুর পুত্র অজ, অজ হইতে দশরথ জন্ম পরিগ্রহ করি—
লেন ৷ ভগবান্ পদ্মনাভ ভূমগুল রক্ষার নিমিন্ত আপনার অংশ
দারা রাম লক্ষাণ ভরত শত্রুত্ব রূপ চতুর্যা বিভক্ত হইয়া দশরণের
পুত্রত্ব স্বীকার করিলেন । \* \*

রাম বাল্যকালেই বিশ্বামিত্রের যজ্ঞ রক্ষার্থ গমন করিয়া তাড়কানান্নী রাক্ষনীকে বিনাশ করিলেন। " যজ্ঞ ছলে মান্নীচ উপস্থিত
হইলে তিনি তাহাকে শরাঘাত দারা আহত করিয়া স্বদূরে
নি:ক্ষেপ করেন। তিনি স্থবাহুপ্রভৃতি রাক্ষসদিগকে বিনাশ

যজে চমারীচমিমুপাভাহতং দূরং চিক্ষেপ, সুবান্ত-প্রস্থাংশ্চ ক্ষয়মনরং। সন্দর্শনমাত্রেণ এব অহল্যা-মপাপাং চকার। জনকগৃহে চমাহেশ্বরং চাপমনা-য়াদেনৈব বভঞ্জ, সীতাঞ্চাযোনিজাং জনকরাজ্ঞতনয়াং বীর্যাপ্তক্কাং লেভে॥ ৪২॥

সকলক্ষত্রকারণমশেষহৈহয়কুলকেতুভূতঞ্চ পর-শুরামমপাশুবীর্ঘ্যবলাবলেপং চকার ॥৪৩॥

পিতৃবচনাচ্চাগণিতরাজ্যাভিলাবো ভাতৃভার্য্যাস-মশ্বিতো বনং বিবেশ ॥৪৪॥

বিরাধখরদূষণাদীন্ কবন্ধবালিনো চ জ্বান ৷ বন্ধু চাড্যোনিধিন্ অশেষরাক্ষসকুলক্ষয়ং কৃত্যা দশাননাপ-হুতাং তদ্বাপহতকলক্ষামপ্যনলপ্রবেশশুদ্ধামশেষদে-

করিলেন। ভাঁহার ছাষ্টিপাতমাত্র অহল্যার পাপ কয় হইল।
তিনি জনকগৃহে উপনীত হইয়া অনায়াসেই শক্ষর-শরাসন ভঙ্গ
করিলেন। তাহাতে তিনি অযোনিসস্তৃতা জনক-রাজনন্দিনীকে
বীরত্বরূপ শুল্কদ্বারা লাভ (করিয়া বিবাহ) করিলেন। ইং তিনি,
সকল কল্রিয়কুল-ধ্বংসকারী হৈহয়কুল-ধূমকেতু স্বরূপ পরশুরামের বাহুবলজনিত দর্প চূর্গ করেন। ইণ তিনি পিতৃবাকা অমুসারে রাজ্যাভিলাষ পরিত্যাগ পূর্বক ভ্রাতা ও ভার্যার সহিত্
বনপ্রবেশ করিলেন। ইণ্ড অনস্তর তিনি বিরাধ ধর দূরণ প্রভৃতি
রাক্ষসগণকে এবং করন্ধ ও বালিকে বিনাশ করিয়াছিলেন। পরে
তিনি সমুদ্র বন্ধনপূর্বক সমুদায় রাক্ষসকুল কয় করিয়া দশানন কর্ত্বক অপহত জানকীকে উদ্ধার করিলেন। দশানন বংশারা
জনকতনয়ার ধেদ দূর হইল। রাম, তাঁহাকে অগ্নি প্রবেশদ্বারা

বেশসংস্কৃরমানাং সীতাং জনকরাজতনয়ামযোধ্যামা-নিন্যে। ৪৫॥

ভরতোহপি গন্ধর্কবিষয়সাধনায়োগ্রগন্ধর্ককোটী-ভিজ্ঞো জঘান।শক্রুদ্ধেনাপ্যমিতবলপরাক্রুমো মধুপুরো লবণো নাম রাক্ষসেশ্বরো নিহতো মথুরা চ নিবেশিতা। ইত্যেবমাদ্যতুলবলপরাক্রমবিক্রমণৈরভিদুফনিবর্হ ণৈরশে-ষস্যাস্য জগতো নিশ্পাদিতভিত্যো রামলক্ষণভরত-শক্রুদ্বাঃ পুনর্দ্ধিবমার্কাঃ ৷ যেহপি তেরু ভগবদংশেষ-মুরাগিণঃ কোশলনগরজনপদাস্তেহপি তন্মনসন্তৎসলো-কতামৰাপুঃ ॥ ৪৬॥

পরীক্ষা করিয়া **গ্রহণ করিলেন। সীতা অগ্নিপ্রবেশনারা পরিশুদ্ধা** হইলে দেবগণ **তাঁহার স্তব করিতে লাগিলেন। অন**স্তর রাম সীতাকে অযোধ্যায় আনয়ন করি**লেন।**°°

এ দিকে ভরতও গন্ধরাজ্য শাসনের নিমিস্ত উথ তিন কোটি
গন্ধর্ম বিনাশ করেন। শত্রুপ্ত অসীম পরাক্রমশালী মধুপুত্র
লবক'ামক রাক্ষ্যপতিকে সংহার করিয়া মধুবা নামে নগরী
সংস্থাপন করিলেন। রাম লক্ষ্যণ ভরত ও শত্রুপ্ত, এইরপে অসীম
পরাক্রম ও অসামান্য বল দারা ( অলোক সামান্য ) কার্য্য নির্বাহ
করিয়া দুই দমন দারা সমুদায় জগতের মর্য্যাদা স্থাপন পূর্বক
পুনর্বার স্বর্গে আরোহণ করিলেন। কোশলদেশবাসী নগরস্থ বা
জনপদস্থিত যে সমুদায় লোক, উক্ত ভগবানের অংশে অনুরাগী
ও একাগ্রহদয় ছিল, ভাহারা সকলেই স্বর্গে প্রমন করিল। "

রামস্য তু কুশলবে পুত্রে লক্ষণস্যাক্ষদচন্দ্রকৈতৃ,
তক্ষপুকরে ভরতস্য, স্থবাত্তশৃরসেনে চ শক্রম্ম্য ॥৪৭॥
কুশস্যাতিথিঃ, অতিথেরপি নিষধঃ পুত্রোহতবং 1
নিষধস্যাপি নলঃ, তস্যাপি নভাঃ, নভসঃ পুঞ্রীকঃ,
তত্তনয়ঃ ক্ষেমধন্ম, তস্য চ দেবানীকঃ। তস্যাপ্যহীনগুঃ, (ততাে রূপঃ) ততাে রুকুঃ, তস্য চ পারিপাত্রঃ,
পারিপাত্রাদ্দলঃ, দলাং ছলঃ, তস্যাপুত্র্থঃ, উক্থাদ্বজুনাভঃ, তত্মাং শজ্বানাভঃ, ততাে ব্যাথিতাশঃ,
ততশ্চ বিশ্বসহাে যজে। হিরণ্যনাভস্ততাে মহাযোগীশ্বরকৈমিনিশিষ্যঃ। যভা যাজ্বল্ক্যাে যোগমবাপ।

রামের দুইটী পুত্র জামিয়াছিল। একটার নাম কুশ ও একটার নাম লব। লাজ্মণের দুইটা পুত্র হয়, তাহাদের নাম অঙ্গদ ও চত্তকেতু। ভরতের পুত্রদয়ের নাম তক্ষ ও পুষ্কর, শত্রায়ের দুই পুত্রের নাম সুবাহু ও শূর্মেন।<sup>87</sup>

কুশের পুত্র অতিগি, অতিথির পুত্র নিষধ, নিষধের পুত্র নল, নলের পুত্র নভা, নভার পুত্র পুগুরীক, পুগুরীকের পুত্র ক্ষেমধন্বা, ক্ষেমধন্বার পুত্র দেবানীক, দেবানীকের পুত্র অহীনশু, অহীশুর পুত্র (রূপ, রূপের পুত্র) রুকু, রুকুর পুত্র পারিপাত্র, পারিপাত্রের পুত্র দল, দলের পুত্র ছল, ছলের পুত্র উক্থ, উক্থের পুত্র বজ্র—নাভ, বজ্রনাভের। পুত্র শঞ্জনাভ, শঞ্জনাভের পুত্র বৃথিতাশ্ব, ব্যাথিতাশ্বের পুত্র বিশ্বসহ, বিশ্বসহের পুত্র হিরণ্যনাভ। এই হিরণ্যনাভ, মহর্ষি জৈমিনির শিষ্য ও মহাযোগী ছিলেন। যে ক্রেদিনির নিকট যাজ্জবেককাও যোগাভাাস ক্ষিয়াছিলেন। হিরণ্য-

হিরণানাভস্য পুত্রঃ পুষাঃ, তথাৎ প্রথমারিঃ, ততঃ
স্থানার, তথাদায়িবর্ণঃ,ততশ্চ শীন্তঃ, ততোহিপা মরুঃ
পুত্রোহভূৎ। যোহসো যোগমান্থায়াদ্যাপি কলাপআমান্ত্রিতি। আগামিযুগে সূর্য্বংশক্ষপ্রথবভূমিতা ভবিষ্যতীতি। প্রশুক্রতন্ত্রাগ্রাক্তঃ, তস্যাপি
স্থানিঃ\* ততশ্চামর্যঃ, তম্য মহস্বান্,া ততো বিশ্রুতবান্, ততো বৃহদ্বলঃ যোহজ্বনতন্ত্রেনাভিমন্থানা
ভারত্যুদ্ধে ক্ষরমনীয়ত॥ ৪৮॥

নাভের পুত্র পুষ্য, পুষ্যের পুত্র ধ্রুবসন্ধি, ধ্রুবসন্ধির পুত্র ম্বদর্শনের পুত্র অগ্নিনর্ন, অগ্নিবর্নের পুত্র শীঘ্, শীঘ্রের পুত্র মরু।
মরু যোগ অবলম্বন করিয়া অদ্যাপি কলাপথামে অবস্থান
করিতেছেন। ইনি আগামী যুগে সূর্য্যবংশীয় ক্ষল্লিয়কুলের
প্রবর্ত্তক হইবেন। মরুর পুত্র প্রক্রুক্তর, প্রক্রুক্তরের পুত্র সুগন্ধি,
(সুগবি) সুগন্ধির পুত্র অমর্থ, অমর্থের পুত্র মহস্থান্ (সহস্রাংশু)
মহস্থানের পুত্র বিশ্রুতবান, বিশ্রুতবানের পুত্র রহন্ধল। যথন
কুরুক্তেত্তের যুদ্ধ হয়, সেই সময় অর্জ্জুন পুত্র, অভিমন্য, এই ব্রহ্দলকে বিনাশ করিয়াছিলেন। ও এই আনি তোমার নিকট
প্রধান প্রধান ইক্ষ্যাকুবংশীয় ভূপালগণের সংক্ষিপ্ত বিবরণ

স্থাৰিরিতি পাঠান্তরম্।

<sup>া</sup> তদ্য সহস্রা:ভরিভি কেচিৎ পঠিছি।

এতে হীক্ষাকুভূপালাঃ প্রাধান্যেন ময়োদিতাঃ। এতেয়াঞ্রিতং শৃণুন্ সর্ব্বপাপেঃ প্রমূচ্যতে॥ ৪৯॥

# ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুথে ই°শে চতুথোঁ ২ধ্যায়: 1

কহিলাম। যিনি এই সমুদায় রাজগণের চরিত প্রবণ করেন, তিনি সমুদায় পাপ হইতে মুক্ত হন্॥ ৪৯॥

> বিষণুপুরাণ চতুর্থ অংশ চতুর্থ অধ্যায় সমাপ্ত 1

## বিষ্ণুপুরাণম্ ৷

চতুর্থোঽংশঃ।

পঞ্চমাধ্যায়:।

#### পরাশর উবাচ।

ইক্ষাকুতনয়ো যোহসো নিমির্নাম, স তু সহত্র-সংবৎসরং সত্রমারেভে, বশিষ্ঠঞ্চ হোতারং বরয়া-মাস॥১॥

তমাহ বশিষ্ঠঃ, অহমিজেণ পঞ্চবর্ষণতং যাগার্থং প্রথমতরং রতঃ, তদনন্তরং প্রতিপাল্যতাম্, আগত-স্তবাপি ঋত্বিক্ ভবিষ্যামি, ইত্যুক্তে স পৃথিবীপতিনা ন কিঞ্চিদুক্তঃ ॥২॥

পরাশর কহিলেন। ইন্ধাকুতনয় নিমি, সহস্র বৎসর ব্যাপী
মহাযত্ত আরস্ত করিয়া বশিষ্ঠকে হোতার কর্মে নিযুক্ত করিলেন। পর্ব্ধ বশিষ্ঠ কহিলেন, দেবরাজ ইক্র, পঞ্চশত বর্ষব্যাপী
মুষ্ঠানের নিমিত্ত আমাকে পুর্বেই বরণ করিয়াছেন, অতএব
কিছুকাল প্রতীক্ষা কর, আমি (ইক্রভবন হইতে) প্রত্যাগত
হইয়া তোমার শ্বত্বিক্ হইব। বশিষ্ঠ এই কথা বলিলে রাজা
কোন উত্তর করিলেন না। বশিষ্ঠ (রাজার দৌন দুর্শনে)

বশিষ্ঠোইপ্যনেন সমন্বীপ্সতমিভামরপতের্যাগম-করোং ॥ ৩॥

সেশহপি তৎকালমেবানৈয়র্গোভমাদিভির্যাগমকরেছ।
সমাপ্তে চামরপতের্যাগে ত্রাবান্ বশিষ্ঠে। নিমেঃ কর্ম্ম
করিষ্যামীত্যাজগাম, তৎকর্মকর্তৃত্বঞ্চ তত্র গৌতমদ্য
দৃষ্ট্বা, অথ স্বপতে তবৈ রাজ্যে মামপ্রত্যাখ্যাইয়তদনেন
গৌতমায় কর্মান্তরমর্পিতং যস্মাৎ, তত্মাদয়ং বিদেছো
ভবিষ্যতীতি শাপং দদৌ॥৪॥

প্রতিবৃদ্ধশ্চাসাববনীপতিরূপি প্রাছ, যক্ষাত্মামসং-ভাষ্য অজানতএব শয়ানস্য শাপোৎসর্গমসৌ দুউগুরু-

সন্মতি আছে, বিবেচনা করিয়া দেবরাজের যজ্ঞ করিতে আরম্ভ করিলেন। (বলিষ্ঠ দেবরাজের যজ্ঞে নিযুক্ত হইলে) নিমিও সেই সময় গৌতম প্রভৃতি অন্যান্য মহর্ষিদারা থাগ করাইতে লাগিলেন। যখন দেবরাজের যাগ পরিসমাপ্ত হইল, তখন বলিষ্ঠ নিমির কর্ম করিবেন বলিয়া ত্তরাম্বিত হইয়া আগমন করিলেন এবং দেখিলেন যে, গৌতম প্রভৃতি মহর্ষিরা যজ্ঞ কর্ম সম্পাদন ও কর্ম্ব করিতেছেন। বলিষ্ঠ তখন রাজাকে নিদ্রাভিতৃত দেখিয়া এইরূপ শাপ প্রদান করিলেন যে, এই রাজা যখন আমাকে প্রভ্যাখ্যান না করিয়া আমার কথার উত্তর না দিরা গৌতমকে এই যজ্ঞে প্রবেশ করিতে দিয়াছেন, তখন (সেই অপরাধ্যে) ইনি বিদেহ (দেহ হীন) হইবেন। তথন রাজা প্রবৃদ্ধ ও জ্ঞাত হইয়া কহিলেন, আমি শয়ন করিয়াছিলাম, কিছুই জানি না। ঈদৃশ অবছায় বলিষ্ঠ যখন আমাকে না বলিয়া আমার প্রতি শাপ প্রদান করিয়াছেন, সেই দৃষ্ট

শ্চকার, তক্মাৎ তদ্যাপি দেহঃ পতিতো ভবিষ্যতীতি \* প্রতিশাপং দত্ত্বা দেহমত্যজৎ॥ ৫॥

তশাচ্ছাপান্ত † মিত্রাবরুণয়োস্তেজসি বশিষ্ঠতেজঃ প্রবিষ্টম্ উর্বালিশনাদুদ্ভূতবীর্যপ্রপাতয়োঃ সকাশাৎ বশিষ্ঠো দেহমপরং লেভে॥৬॥

নিমেরপি তচ্ছরীরমতিমনোহরং তৈলগন্ধাদিতি-রুপস্ক্রিয়মাণং, নৈব ক্লেদাদিকং দোষমবাপ, সদ্যো-স্তমিব তস্থো॥ १॥

যজ্ঞসমাপ্তো চ ভাগগ্রহণায়াগতান্ দেবান্ ঋত্বিজ্ঞ উচুঃ, যজমানায় বরো দীয়তাম্ ইতি। দেবৈশ্ছন্দিতো নিমিরাহ॥৮॥

গুরুরও দেহ পতন হইবে। রাজা এই কথা বলিয়া প্রতিশাপ প্রদান পূর্বক দেহত্যাগ করিলেন। রাজার এই শাপ হেডু বলিষ্ঠতেজ, মিত্রাবরুণের তেজে অনুপ্রবিষ্ট হইল। পরে, উর্বাদী দর্শনে মিত্রাবরুণের রেভঃপাত হইলে ভাহাতে বলিষ্ঠ, অপর দেহ ধারণ করিলেন। নিমির শরীরও (জীবিত দেহের ন্যায়) অভিনমনোহর থাকিল। তৈল গন্ধদ্বত হইল না, সদ্যোস্তের ন্যায় থাকিল।

যজ্ঞ সমাপ্তি হইলে যজ্ঞভাগ গ্রহণার্থ দেবগণ যথন যজ্ঞস্থলে উপস্থিত্ব হইলেন, তখন ঋত্বিক্গণ কহিলেন, আপনারা যজ্ঞ-মানকে বর প্রদান করুন। পরে দেবতারা বরপ্রার্থনার্থ নিসিকে

<sup>•</sup>তন্যাপি দেহ: পভিষ্যতীতি ইতি পাঠান্তঃম্ া ভচ্ছাপাঞ্চ ইতি বা পঠান্তাম্।

ভগবস্থোহখিলসংসারদুঃখসজ্ঞাতদ্য চ্ছেত্তারো ন হ্যেতাবজ্জগত্যন্যৎ দুঃখমস্তি, যছরীরাত্মনোর্বিয়োগো ভবতি, তদহমিচ্ছামি সকললোকলোচনেষু বস্তুম্, ন পুনঃ শরীরগ্রহণং কর্ত্মু ৷ ইত্যুক্তে দেবৈরসাবশেষভূ-ভানাং নেত্রেষু আসাং কারিতঃ ॥ ১ ॥

ততে ভূতারু মেষনিমেষং চক্রঃ। অপুত্র স্ত চত স্ত ভূজুজঃ শরীরমরাজকভীরবত্তে মুনরোধরণ্যাং মমন্ত্রঃ। ১০॥

তত্র কুমারো যজে। জননাজ্জনকসংজ্ঞাঞ্চাসাব-বাপ ॥ ১১॥

অভূদ্বিদেহো২স্য পিতেতি বৈদেহো মথনামিথির-

অনুমতি করিলে নিমি কহিলেন। দু আপনারা সংসারের সমুদার দুঃখপরম্পরা ধ্বংস করিয়া থাকেন। এই জগতের মধ্যে শরীরের সহিত আত্মার বিয়োগজনিত দুঃখের সম্ভূপ অন্য কোন দুঃখ নাই। অতএব আমার ইচ্ছা যে, আমি সকল লোকের লোচনে অবস্থান করি, পুনর্মার শরীর পরিগ্রহ করিতে আমার অভিলাব নাই। নিমি এইরপ প্রার্থনা করিলে দেবতারা সকল জীবের নেত্রে তাঁহার বাসস্থান করিয়া দিলেন। কিই অবধি সমুদার প্রাণীর চক্ষুতে নিমিষ হইল।

অনস্তর মুনিগণ পৃথিবীর অরাজকতা ভয়ে ভীত হইয়া সেই অপুত্র রাজার শরীর অরনীতে মস্থন করিলেন। তাহাতে একটা কুমার উৎপন্ন হইল। জনন অর্থাৎ জন্মহেতু ঐ পুত্র জনক এই নাম প্রাপ্ত হইল। ' ঐ জনক বিদেহের পুত্র, এই জন্য বৈদেহ

अत्रेशी—अपि छेश्शानम् सम्। एव क्! प्रश्विक क्रिटिंज स्य । ३०

ভূৎ। তদ্যোদাবস্থঃ পুত্রোহভূৎ। ততো নন্দিবর্দ্ধনঃ,(১) তক্মাৎ স্থকেতুঃ, তস্যাপি দেবরাডঃ(২) ভতশ্চ রুহ-দুক্থঃ(৩), তদ্য চ মহাবার্যঃ, তদ্যাপি সভ্যপৃতিঃ (৪), ততশ্চ ধৃষ্টকেতুঃ, ধৃষ্টকেতোর্হ্য্যশ্বঃ, তদ্য চ মরুঃ, মরোঃ প্রতিবন্ধকঃ, তন্মাৎ ক্লতরথঃ(৫), তন্মাৎ ক্রতিঃ (৬), তস্য বিবৃধঃ, তস্যাপি মহাধৃতিঃ, তস্য চ ক্রতিরাতঃ, ততো মহারোমা, ততঃ স্থবর্ণরোমা, ভদ্যাপি পুত্রো হ্স্বরোমা, (৭) ততঃ দীরধ্বজোইভূৎ ৷ নামে বিখ্যাত হইলেন। মন্থন দ্বারা তাঁহার জন্ম হইয়াছিল, এই জন্য তিনি মিথি নামেও বিভাত হন। রাজা জনকের একটা পুত इहेल, ভाहात नाम উদাবস্থ। উদাবস্থা পুত निम्बद्धन, ন ন্দিবর্দ্ধনের পুত্র স্থকেতু, (কেতৃ) স্থকেতুর পুত্র দেবরাত, দেবরাতের পুত্র রহদেণ, (রহদুক্থ) রহদেথের পুত্র মহাবীর্ঘ্য, মহাবীর্ঘ্যের পুত্র স্থৃতি, (সভাধৃতি) সুধৃতির পুত্র ধৃষ্টকেতু, ধৃষ্টকেতুর পুত্র হর্যাশ্ব, হর্যাশের পুত্র মরু, মরুর পুত্র প্রতিবন্ধক, প্রতিবন্ধকের পত্র কৃতরণ, (কৃতিরথ) কৃতরথের পুত্র কৃতি, (দেবামীট) কৃতির পুত্র বিবুধ, বিবুধের পুত্র মহাধৃতি, মহাধৃতির পুত্র কৃতিরাত, কৃতিরাতের পুত্র মহারোমা, মহারোমার পুত্র স্থবর্ণবামা, সুবর্ণ-

<sup>(&</sup>gt;) উषावरमार्भावन्त्रका देखि वा श्रवेनीयम्।

<sup>(</sup>২) ভত। কেতঃ, তস্মাক্ত দেবরাতঃ ইতি কেচিৎ পঠৰি।

<sup>(</sup>৩) ভতশ্চ বৃহদ্রথ ইতি বা পাঠ্যম।

<sup>(।)</sup> ভসাপি স্থৃভিরিভি পাঠার্রম্।

<sup>(</sup>e) ভন্মাৎ কৃতিরথঃ ইতি বা পঠনীরুম্।

<sup>(</sup>৬) ক্তেদেবামীচ ইত্যপি নাম দৃশ্যতে !

<sup>(</sup>१) कृषद्वामा हेक्टि नामास्त्रम् ।

ভদ্য পুতার্থং যজনভূবং ক্রমতঃ দীরে দীতা দুছিত। সমুৎপন্নাদীৎ। সীরধ্বজ্ঞদ্য ভ্রাতা 'সাং'কাশ্যাধিপতিঃ কুশধ্বজনামা। সীরধ্বজ্ঞদ্যাপত্যং ভারুমান্॥ ১২॥

ভার্মতঃ শতদু রঃ, তস্য শুচিঃ, তথা দূর্জ্জবহে। নাম(১) পুত্রো যজ্ঞে। তস্যাপি সত্যধ্বজঃ (২), ততঃ কুনিঃ, (ক্রুণিঃ) কুনেরঞ্জনঃ, তৎপুত্রঃ ঋতুজিৎ (৩),

রোমার পুত্র ক্রেরামা, (ডুলরোমা) ক্রেরামার পুত্র স্বীরধ্বন্ধ। এই সীরধ্বন্ধ যথন পুত্র কামনায় যাগ করেন, সেই সময় ভূমি কর্ষণ করিতে করিতে তাঁহার সীরে (লাঙ্গলাথে) সীতা নামী কন্যা উৎপন্ধা হইয়াছিলেন। সীরধ্বন্ধের ভ্রাতার নাম কুশধন্ধ। ইনি কাশীর অধিপতি ছিলেন। সীরধ্বন্ধের পুত্রের নাম ভারুমান্। ' ভারুমানের পুত্র শতদান্ধ, শতদানের পুত্র শতদান্ধ্য পুত্র উর্জবহ, (উর্জবাহ্ণ) উর্জবহ হইতে সভ্যাধ্যর, (ভারদ্যান্ধ্য) সভ্যাধ্যর হইতে কুনি, (জুণি) কুনি হইতে অঞ্জন, অঞ্জন হইতে ঋতুজিৎ (ক্রতুক্তিং বা কুতুক্তিৎ) ঋতুজিৎ

সংস্ত বিদ্যালয়ের পুস্তক ও আর ছুই একধানি পুস্তকে আছে যে, কুলধ্যক্ষ কালীর অধিপতি হিলেন। প্রীযুক্ত রাজা কমলকৃষ্ণ বাহাছুরের পুস্তকে এবং শ্রীযুক্ত বারু বরদাপ্রসাদ বর্গাক মহাশ্রের পুস্তকে এরপ আছে যে, কুলধ্যক সাক্ষাল্যের অধিপতি। পণ্ডিত উইল্লন্ সাহেব যুক্তি প্রদর্শন পূর্বক নিরূপণ করিয়াছেন যে, তিনি কালীর অধীশ্বর ছিলেন। রামায়ণে লিখিত আছে, কুলধ্যক সাক্ষাল্যের রাজা। তাগবতে আছে যে, সীর্থবজ্বের পুত্রের নাম কুল্ধক্ত। ১২

<sup>(</sup>১) তন্মাচোৰ্জনাহৰ্মাম ইতি বা পঠাতাম্।

<sup>(</sup>২) ভদ্যাপি ভারদ্বাক ইতি পাঠান্তরম্।

<sup>(</sup>৩) ক্ৰতুব্ৰিং, অথবা কৃতুব্ৰিং ইতি বিভিন্নঃ পঠি:।

ততোংরিউনেমিঃ, ত্যাৎ শ্রুতায়ৣঃ\*, ততঃ সূর্যায়ঃঃ,
ত্যাৎ সঞ্জয়ঃ, (সংনয়ঃ) ততঃ ক্ষেমারিঃ, ত্যাদনেনাঃ,
ত্যামানরথঃ, (মানরথঃ) ত্যা সত্যরথঃ, ত্যা সাত্যরথঃ, সাত্যরথেরুপঞঃ, ত্যাৎ শ্রুতঃ, (উপগুপ্তঃ,)
ত্যাৎ শাশ্রতঃ, ত্যাৎ সুধয়া (সুরচ্চাঃ) ত্যাপি
স্কলাসঃ, ততঃ সুশ্রুতঃ, ত্যাজ্জয়ঃ, জয়পুর্রো বিজয়ঃ,
ত্যা ঋতঃ, ঋতাৎ সুনয়ঃ, ততো বীতহ্বাঃ, ত্যাৎ
সঞ্জয়ঃ, ত্যাৎ (ক্ষেমাশঃ, ত্যাৎ) ধৃতিঃ, ধৃতের্বত্লাশঃ, ত্যা পুত্রঃ ক্রতিঃ, ক্রতৌ সন্তিষ্ঠতেইয়ং
জনকবংশঃ॥ ১৩॥

হইতে অরিউনেমি, অরিউনেমি চইতে ক্রুতায়ু, (শতায়ু)
ক্রুতায়ু হইতে (ক্রুতায়ুধ, ক্রুতায়ুধ হইতে) সুপাশ, (স্থ্যাশ)
স্থপাশ হইতে সঞ্জয়, (সংনয়) সঞ্জয় হইতে ক্রেমারি, ক্রেনারি
হইতে অনেনা, অনেনা হইতে মীনরথ, (মানরথ) মীনরথ
হইতে সভারথ, সভারথ হইতে সাভারথি, সাভারথি হইতে
উপপ্ত, উপপ্ত হইতে ক্রুত, (উপপ্তপ্ত) ক্রুত হইতে শাশ্রত,
শাশ্রত, হইতে সুধ্যা, (স্বর্কাঃ) স্থায়া হইতে স্থভাস,
(শুভাস বা স্থভাষ) স্থভাস হইতে স্ক্রুত, স্ক্রুত হইতে জয়
উৎপন্ন হইয়াছিলেন। জয়ের পুত্র বিজয়, বিজয়ের পুত্র সঞ্জয়,
সঞ্জয়ের পুত্র (ক্রেমাশ, ক্রেমাশের পুত্র) গ্রতি, গ্রতির পুত্র
বহুলাশ্ব, বহুলাশ্বের পুত্র কৃতি। এই কৃতি পর্যান্ত জনকবংশের

ভন্দে শতায়ুরিভি বা পঠনীয়ম্।

<sup>🛨</sup> ভন্মাং শুভায়ুঃ, ভভঃ শুভায়ুগঃ, ভভঃ সুপার্ম ইভি বা পাঠঃ।

ইত্যেতে মৈথিলাঃ। প্রাচুর্য্যেণ এতেষামাত্মবিদ্যা-শ্রমণো ভূপালা ভবিষ্যন্তীতি ॥ ১৪॥

### ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুথে ২° শে পঞ্চমোহধ্যায়: 1

শেষ হইয়াছে। ইঁহারা মিথিলার রাজা। এই বংশের মধ্যে অধিকাংশ রাজাই আত্মতত্ত্তত । ১৩

বিষ্ণুরাণ চতুর্থ অংশ নিমিবংশবিস্তার নামক পঞ্চম অধ্যায় সমাপ্ত। विक्यूत्रागम्।

চতুর্থোহংশঃ ৷

वर्षाशायः ।

#### মৈত্রেয় উবাচ।

সূর্য্য ভগবন্ বংশঃ কথিতো ভবতা মম।
সোমস্য বংশে ত্থিলান্ শ্রোত্মিচ্ছামি পার্থিবান্॥॥
কীর্ত্তাতে স্থিরকীর্তীনাং যেষামদ্যাপি সন্ততিঃ।
প্রসাদস্মুখন্তমে ব্রহ্মাখ্যাত্মর্হসি॥ ২॥

পরাশর উবাচ।

শ্রুষার মুনিশাদূল ! বংশঃ প্রথিততেজ্ঞসঃ। সোমস্যান্ত্রুমাৎ খ্যাতা যত্রোব্রীপতয়োহভবন্॥৩

মৈত্রের কহিলেন। ভগবন্! আপনি আমার নিকট সমুদার সূর্যবংশ বিবরণ কহিলেন, একণে চন্দ্রবংশীয় সমুদার ভূপাল-দিগের রস্তান্ত শ্রবণ করিতে অভিলাষ করি। ব্যক্ষন্! এই সমুদার দৃঢ়কীর্ত্তি ভূপতিগণের বংশীয়েরা অদ্যাপি খ্যান্তি প্রতি-পত্তি লাভ করিতেছেন। আপনি শ্রসমবদন হইয়া ভাঁহাদের বিবরণ বর্ণন কর্মন। ব

পরাশর কহিলেন। সহর্বে! চক্রবংশ বিষয়ণ ষ্থাক্রেমে বলি-

আয় হৈ বংশোহতিবলপরাক্রমদ্যুতিশীল-চেফা-বন্ধিরতিগুণান্বিতৈন হ্য-য্যাতি-কার্ত্তবীর্ঘার্চ্জুনাদিভির্ভূ-পালৈরলঙ্কৃতঃ॥ ৪॥

তমহং কথয়ামি, শ্রায়তাম্, অধিলজগৎক্র ই র্ভগবমারায়ণ-নাভিসরোজিনী-সমুদ্ধবাজ্ঞবোনের্ক্রণঃ পুরোহত্তিঃ, অত্তঃ সোমঃ, তঞ্চ ভগবানজ্জযোনিরশেষীযধি-দ্বিজ-নক্ষত্রাণামাধিপত্যেইভ্যবেচয়ৎ॥ ৫॥

স চ রাজস্থামকরোৎ। তৎপ্রভাবাদত্যুৎক্রফীধি-পত্যাধিষ্ঠাতৃত্বাচৈচনং মদ আবিবেশ\*॥ ৬॥

তেছি, প্রাবণ কর। এই বংশে অসীমতেজঃসম্পন্ন বিধ্যাত ভূপাদগণ ক্রম পরিগ্রহ করিয়াছিলেন। °

মহাবল পরাক্রান্ত তেজঃসম্পন্ন সুশীল উদ্যোগ-শালী অশেষ-গুণ-সম্পন্ন নহৰ যথাতি কার্ত্তবীর্য্য অজ্জুন প্রভৃতি ভূপালগণ কর্ত্তক এই বংশ অলঙ্কৃত হইয়াছে। " আমি এতদ্বংশ বৃদ্ধান্ত বলিতেছি, শ্রবণ কর।

নিখিল জগতের স্টিক্র। ভগবান্ নারায়ণের নাভিসরোজিনী হইতে সমুৎপন্ন পদাুযোনি ব্রহ্মার পুত্র অতি। অতি হইতে সমুৎপন্ন পদাুযোনি ব্রহ্মার পুত্র অতি। অতি হইতে সোম উৎপন্ন হইয়াছিলেন। ভগবান্ পিতামহ তাঁহাকে সমুদায় ওয়ধি, সমুদায় ছিল ও সমুদায় নক্ষতের অধিপতি করিলেন। ও অনস্তর চক্র রাজসূয় যজ্ঞ করেন। সেই রাজসূয় যজ্ঞ প্রভাবে এবং সর্ব্যপ্রান আধিপত্যে প্রতিষ্ঠিত ছিলেন বলিয়া, তাঁহার অন্তঃকরণ দর্পপূর্ব হইল। ওিনি অহক্ষারে মন্ত হইয়া সমুদায়

মদাবলেপাচ্চাসৌ সকলদেবগুরোর হস্পতেন্তারাং
নাম পত্নীং জহার ॥ ৭ ॥

বহুশশ্চ বৃহস্পতিচোদিতেন ভগবতা বৃদ্ধাণা চোদ্যমানঃ সকলৈশ্চ দেবর্ষিভির্যাচ্যমানোহিপি ন মুমোচ। তস্য হি বৃহস্পতিদ্বোদুশনাঃ পার্ফিগ্রাহো-হভবং॥৮॥

অভিরদশ্চ দকাশোপলক্বিদ্যো ভগবান্ রুদ্রো বৃহস্পতেঃ সাহায্যমকরোৎ॥ ১॥

যতশ্চোশনাঃ, ততেঁ। হি জন্তকুজন্তাদ্যাঃ সমস্তাএব দৈত্যদানবনিকায়া মহান্তমুদ্যমং চক্রেঃ। বৃহস্পতেরপি সকলদেবসৈন্যসহায়ঃ শক্রোহভবৎ॥ ১০॥

এবঞ্চ তেয়ারতীবোঞা সংগ্রামন্তারকানিমিত্তারদেবগণের শুক্র রহক্ষাতির ভার্যা তারাকে হরণ করিলেন।
অনন্তর রহক্ষাতি কর্ত্বক পুন:পুনঃ আর্থিত ভগবান্ ব্রহ্মা,
অনুরোধ করিলেন, সমুদায় দেবর্ষিগণ যাচ্ঞা করিলেন, তথাপি
সোম, রহক্ষাতির: ভার্যাকে ছাড়িয়া দিলেন না। শুক্রের সহিত্
রহক্ষাতির শক্রতা থাকাতে শুক্র, চন্দ্রের মহায় হইলেন।
ভগবান্ রুদ্রে, অক্সিরার নিক্ট বিদ্যা শিক্ষা করিয়া রহক্ষাতির সহায্য করিতে লাগিলেন। শুক্রে বে পক্ষে থাকিলেন,
সেই পক্ষে ক্রম্ভ পুভৃতি সমুদায় দানবগণ থাকিয়া সংগ্রামার্থ মহান্ উদ্যোগ করিতে লাগিল। এ দিকে সমুদায় দেবসৈন্য
সহিত দেবরাক্ষ, রহক্ষাতির সহায় হইলেন।

এইরপে রহম্পতি-পত্নী তারকার নিমিক্ত উভয় পক্ষের ঘোরতর সংগ্রাম হইতে লাগিল। তারকার নিমিক্ত এই যুক্ত কানয়ে। নামাভবং। ততশ্চ সমস্ত শস্ত্রাণ্যস্কুরেষু রুজ্ত-পুরোগমা দেবা দেবেষু চাশেষদানবাৰ মুমুচুঃ॥ ১১॥

এবঞ্চ দেবাস্থরাহবক্ষোভক্ষজদয়মশেষ মেব জগদ্ বেক্ষাণং শরণং জগাম॥ ১২॥

ততশ্চ ভগবানপুলোনসং শঙ্করমস্কান্ দেবাংশ্চ নি-বার্য্য রহস্পতেস্তারামদাৎ †। তাঞ্চান্তঃপ্রসবামবলোক্য রহস্পতিরাহ॥ ১৩॥

নৈষ মম ক্ষেত্ৰে ভবত্যান্যস্কুতো ধাৰ্য্যস্তদুৎস্থজন-মলমভিধাৰ্ফ্যেনেতি। দাচতেনৈবমুক্তা পভিত্ৰতা ‡ ভৰ্ভ্-বচনাৎ তমীধিকাস্তমে গৰ্ভমুৎসমৰ্জ্জ । ॥ ১৪॥

হওয়াতে ইহা তারকাময় সংশ্রাম নামে বিশ্যাত হইল। অনন্তর রুদ্র প্রভৃতি দেবগণ, অসুরগণের প্রভি, এবং সমুদায়
অসুরগণ দেবগণের প্রভি সমুদায় অন্ত্র পরিভাগ করিতে
লাগিল। '' এইরপে দেবাসুরের ভীষণ সংশ্রাম উপস্থিত হইলে
সমুদায় লোক কুরু হইয়া ব্রহ্মার শরণাপন্ন হইল।'' তখন ভগবান্
ব্রহ্মা, শুক্রকে রুদ্র ক অস্তরগণকে এবং দেবগণকে যুদ্ধ করিতে
নিবারণ করিয়া রহস্পতির পত্নী ভারাকে লইয়া রহস্পতির
নিকট সমর্পণ করিলেন। রহস্পতি, ভার্যাকে গর্ভবতী দেখিয়া
কহিলেন, '' তুমি আমার ক্ষেত্রে অন্যের বীজ বা অন্যের পুত্র
ধারণ করিতে পারিবে না, অত্তর্ব তুমি এখনি এই গর্জ পাতন
কর, আর অধিক ধার্ট্য প্রকাশের আবৃশ্যক নাই। ভারা

<sup>•</sup> দেবেষদেশমান বা ইতি পুস্তকাত্তরস্য পাঠি:।

<sup>া</sup> বৃহস্পত্তে ভারামণদৰ ইতি পুস্কা ভরসঃ প'ই:।

ţ एडरेमनमुका विभिष्ठिबना वेडि भारी धनम् ।

স চোৎস্ট্মাত্র এবাতিতেজদা দেবানাং তেজাং স্যাচিক্ষেপ ॥ ১৫॥

রহস্পতিমিন্দুং চ তদ্য কুমারস্যাতিচারতয়া সাভিলাষে দৃষ্ট্বী দেবাঃ সমুৎপল্লসন্দেহান্তারাং পঞ্চছুঃ, সত্যং কথয়াস্মাকমতিস্কভগে! কদ্যায়মাত্মজঃ ? সোমস্যাথ বৃহস্পতেঃ ? ইত্যক্তাপি সা তারা হ্রিয়া ন
কিঞ্চিদুবাচ॥ ১৬॥

वद्यान्त्रेशा विद्या यम्रात्मे (मरवर्षा) नाहहरक,

অতিশয় পতিব্রতা ছিলেন (তিনি পতির অভিপ্রায়ের বিরুদ্ধ কোন কার্য্যই করিতেন না।) সূত্রাং তিনি পতির মুখে এই বাক্য শ্রেবণ করিয়া তদীয় আজ্ঞানুসারে সেই গর্ভ ঈষিকান্তত্বে পরিত্যাগ করিলেন। গর্ভন্থ বালক, পরিত্যক্ত হইবামাঁত্র স্বীয় তেজোরাশি ছারা দেবগণের তেজ অভিভব করিল। গং

অনন্তর দেবগণ, দেখিলেন যে, রহক্ষতি ও চক্র, উভয়েই বালকের সৌন্দর্য্য দর্শনে (মুগ্ধ হইয়া গ্রহণ করিতে) লোলুপ হইয়াছেন। তখন দেটী কাহার পুত্র, এ বিষয়ে সন্দিহান হইয়া তারাকে জিজ্ঞাস। করিলেন, সুন্দরি! এই সন্তানটী কাহার? আমাদের নিকট সভ্য করিয়াবল। এই পুত্রটী রহক্ষণ-তির বা সোমের, কাহার? তাহা বল। দেবতারা এই কথা জিজ্ঞাসা করিলে তারা লজ্জ্ঞা ক্রমে কিছুই বলিলেন না। ১০ অনন্তর দেব-গণ পুনঃপুনঃ জিজ্ঞাসা করিলেও যখন তারা দেবগণের নিকট

ঈষিকাস্থস—বীবণস্তম, তৃণবিংশবের আছে। আমরকোনের টাকাকার বলেন, স্থবর্ণ বালাইনা যে আগিতির চালা যায়, ভাষতিকও সীষিকা বলা ঘটিতে পাতে। স্থান প্রস্থা অধি আনুদ্ধী কাড় ৮১৪

ততঃ স কুমারস্তাং শপ্ত মুদ্যতঃ, প্রাহ চ, দুষ্টে! অম্ব! কন্মাম্মম তাতং নাখ্যাসি ? অদৈয়ব তেহলীক-লজ্জাবত্যাঃ শান্তিময়মহং করোমি, যথা নৈবমন্যা-পাতিমন্থরবচনা ভবতীতি †॥ ১৭॥

অথ ভগবান্ পিতামহন্তং কুমারং সংনিবার্যা স্বয়-মপৃচ্ছৎ তারাম্, কথিয় বৎসে ! কস্যায়মাত্মজঃ ? সোম-স্যাথ বৃহস্পতেঃ ? ইত্যক্তা লজ্জাজভ্মাহ, সোমস্যতি ॥ ১৮॥

ততঃ ক্ষুরদুচ্ছ সিতামলকপোলকান্তির্ভগবানুড় পতি-

কোন কথাই কহিলেন না, তখন বালক জননীকে শাপ প্রদান করিতে উদ্যত হইয়া কহিল, দুষ্টে! মাতঃ! আমার পিতাকে। কিজন্য তুমি প্রকাশ করিতেছ না। আমি অদ্যই তোমার এই অলীক লজ্জার শান্তি প্রদান করিতেছি, এবং এরপ করিতেছি যে, যাহাতে অন্য কোন নারীই ঈছণ মন্থরভাষিণী না হয়। " অনন্তর ভগবানু পিতামহ, সেই কুমারকে শাপপ্রদান করিতে নিষেধ করিয়া আপনি গিয়া তারাকে জিজ্জাসা করিলেন, বৎসে! এইটা সোমের পুত্র ? বা বহুক্সতির পুত্র ? কাহার পুত্র ? বল। পিতামহ এই কথা জিজ্জাসা করিলে তারা, লজ্জায় জড়িত বাক্যে কহিলেন, এইটা সোমের। "

ভারা এই কথা বলিবামাত্র ভগবান্ উভূপতি চক্রের কপোল-কান্তি উজ্জ্ব হইল। ভাঁহার আফ্রান্দের আর পরিসীমা থাকিল

<sup>•</sup>ভত-চ কুমারস্থাম ই ভি কেচিৎ পঠি । া ত্রিষ:ভীতি পুথক পাঠঃ।

खर्मानिका कूमांतर माधू माधू वरम! व्यारकार्मी जि तुथ रेजि नाम हरका ॥ ১०॥

স চ, আখ্যাতমেবৈতৎ, যথেলায়ামাত্মজং পুরুরব-সমুৎপাদয়ামাস।

পুররবাস্ত্তিদানশীলোহতিয়জা অতিতেজস্বী। যং সত্যবাদিনমতিরূপবন্তং মিত্রাবরুণশাপাস্থাসূষে লোকে ময়া বস্তব্যম্ইতি ক্রতমতিরুর্বেশী দদর্শ॥ ২০॥

দৃষ্টমাত্তে চ যশ্মিন্, অপহায় মানমশেষমপাস্য স্বৰ্গস্থাভিলাষ**ং তম্মনা** ভূত্বা তমেবোপতছে॥২১॥ সোহপি চ তামতিশয়িত-সকললোকস্ত্ৰীকান্তি-

না। তিনি তখন বালককৈ আলিজন করিয়া কহিলেন, বৎস! সাধু, বৎস! সাধু, তুমি প্রাজ্ঞ, তুমি বুধ। চন্দ্র এই কথা বলিয়া তাঁহার বুধ এই নাম রাখিলেন। ১৯

এই বুধ হইতে ইলার গর্জে যে রূপে পুররবার জন্ম ছইমাছিল, তাহা পুর্বে,বলিয়াছি। পুররবা, অভিদানশীল অভিযন্ধা অভিভেক্ষণী ও সভ্যভাষী ছিলেন । উর্বাদী লামে অক্সরাঃ,
মিত্রাবরুণের শাপে মনুষ্যলোকে বাস করিতে হইবে জানিয়া
(পৃথিবীতলে আগমন করিয়া) সেই অলোক-সামান্য রূপনিধান
পুররবাকে দর্শন করিলেন। তর্বাদী রাজাকে দেখিবামাত্র
অভিমান ও সমুদায় স্বর্গসুখাভিলাষ পরিভাগে পুর্বক ভন্মনা
হইয়া তাঁহার নিকট উপস্থিত হইলেন। বারুমার্যাপালিনী

সৌকুমার্যলোবণ্যাতিবিলাসহাসাদিগুণামবলোক্য তদা-য়ন্তচিত্তর্তির্বভূব ॥ ২২ ॥

উভয়মপি তশ্মনক্ষমননাদৃষ্টি পরিত্যক্তসমস্তান্যপ্র-যোজনমভূৎ (১) ॥ ২৩॥

রাজা তু প্রাগন্ভ্যাৎ তমাহ॥ ২৪॥

সুভূ! স্বামহমতিকামোহিশ্য প্রসীদার্রাগমুদ্ধ (২) ইত্যুক্তা লজ্জাবধণ্ডিতমুর্বাশী প্রাহ। ২৫॥

ভবত্বেবং, যদি মে সময়পরিপালনং ভবান্ করো-তীতি ॥ ২৬ ॥

আখ্যাহি মে সময়মিত্যথ পৃষ্টা পুনরব্রবীৎ ॥২৭॥

লাবণাবতী ও বিলাস হাস প্রভৃতি শুণ সম্পন্না দেখিয়া এক কালে অপত্তত-চিন্ত হইয়া পড়িলেন '' এই জ্রী পুরুষ উভ-য়েই, তালাতহাদয় ও অনন্যছটি হইয়া থাকিলেন, অন্য কোন আবশাক কর্মোও তাঁহাদের মনোনিবেশ হইল না। ''

অনস্তর রাজা প্রগল্ভতা হেতু কহিলেন, ' ছক্ত ! আমি ভোমার প্রতি সাতিশয় অভিলাবী হইয়াছি, প্রসন্ন হও, আমার প্রতি অনুরাগ প্রকাশ কর । রাজা এইরূপ অভিপ্রায় ব্যক্ত করিলে উর্নশী, লক্ষাবশত প্রথমত তাঁহার বাক্য খণ্ডন পূর্মক পরে সম্মতা হইয়া কহিলেন। ' যদি তুমি আমার পণ রক্ষা করিতে পার, তাহা হইলে আমি ভোমার সহবাদে থাকিতে সম্মতা আহি। ' রাজা লিজ্ঞাসা করিলেন, ভোমার কিরুপ পণ?

<sup>(</sup>১)-श्रद्याञ्चनभागी । इंजि किटि शर्वे छ ।

<sup>(</sup>২) স্বামহমতিকামে হিন্দা, প্রসীন, অনুরাগরতি ! অসুরাগমুদ্ধই ইতি পুস্কান্ত-রস্য পাঠঃ ৷

শয়ন দ্মীপে মমোরণকদ্মং পুত্রভূতং নাপনেয়ম্ ॥ ২৮॥

ভবাংশ্চ ময়া নথোন দ্রন্তব্যঃ, স্বতমাত্রঞ্চ মমাহারঃ।
ইত্যেবমেবেতি ভূপতিরাহ। তয়া চ সহাবনীপতিরলকায়াং চৈত্ররথাদিবনের অমলপত্রমণ্ডের অভিরম্নীয়ের
মানসাদিসরঃস্থ অভিরম্মাণ এব ষ্টিবর্ষসহস্রাণি অনুদিনপ্রবর্দ্ধানপ্রমাণ ত্রিকা চ তদুপভোগাৎ প্রতিদিনপ্রবর্দ্ধানামুরাগা অম্বলোকবাদে-

তাহা বল। উর্বাদী পুনর্বার কহিলেন,।<sup>২০</sup> আমার পুত্রস্ক্রপ দুইটা মেষ আমার শযার নিকট থাকিবে, কথন স্থনান্তর করিতে পারিবে না।<sup>২৮</sup> (আমার ছিতীয় পণ এই যে) আমি কখন আপনাকে উলঙ্গ অবস্থার দর্শন করিব না। (আমার হৃতীয় পণ এই যে) আমি য়ত তিল আর কোন বস্তু আহার করিব না। (যদি এই নিয়মত্র্যের অন্যথা হয়, আমি তৎক্ষণাৎ পরিত্যাগ করিয়া যাইব।) রাজা তাহাই হইবে বলিয়া (উর্বাদীর নিয়ম পালনে কৃতপ্রতিক্ত হইলেন।)

অনন্তর তিনি উর্ধাণীর সহিত অলকাতে, চৈত্ররথ প্রভৃতি উদ্যানে, অতিরমণীয় মানস প্রভৃতি সরোবরে পত্মবনে নিরন্তর ক্রীড়া করাতে দিন দিন তাঁহার আমোদ প্রমোদ রুদ্ধি হইতে লাগিল। এইরূপে তাঁহার বৃত্তি সহস্র বংসর অভীত হইল। এই সমুদায় উপভোগ হেতু উর্ধাণীর অনুরাগ দিন দিন পরি-

ভাষলপদ্মৰতেন্ত্ৰ মানসাধিষু সরঃ স্থাভিরম্মাণ এক বাটি বর্ষা হৈ ইতি বাসক-বংশত-পৃত্তক সংপ্রাঠঃ।

২পি ন স্পৃহাং চকার। বিনা চোর্কাশ্যা স্থরলোকো-২পারসাং সিদ্ধান্ধর্কাণাঞ্চ নাতিরমণীয়োহভবৎ ॥ ২৯॥

ততশ্চোর্বেশী-পুররবদোঃ সময়বিদিশাবস্থার্বর্ব-সমবেতো নিশি শয়নাভ্যাসাদেকমুরণকং জহার ১৩০॥

তদ্য চাকাশে নীয়মানস্যোর্কশী শক্ষশ্ণে। আহ চ, মমানাথায়াঃ পুত্রঃ কেনাপি অয়মপহ্রিতে! কং শরণমুপ্যামীত্যাকর্ণ্য রাজা, নগ্ধং মাং দেবী ক্রক্ষ্য-তীতি ন যথো। অধান্যমপুরেণকমাদায় গন্ধর্কা যয়ঃ। তদ্যাপ্যপহ্রিমাণদ্য শক্ষমাকর্ণ্য আকাশে পুনরপি,

বন্ধিত হওয়াতে ক্রমশঃ স্থাবাসেও তাঁহার ক্পৃহা রহিল না।

এ দিকে অপ্সরোগণ সিদ্ধাণ ও গদ্ধগণ দেখিলেন যে, উর্মণী
ব্যতিরেকে স্থার আর শোভা নাই।

ও পুররবার পরক্ষার নিয়ম পরিজ্ঞাত থাকাতে গদ্ধগণার
সহিত সমবেত হইয়া রাজিকালে উর্মণীর শ্যার নিকট হইতে
একটা মেষ হরণ করিলেন।

ও খবন গদ্ধগণ মেষকে আকাল পথে
লইয়া যাইতেছেন, তথান উর্মণী তাহার শদ্ধ শুনিতে পাইলেন
এবং (আর্ত্তনাদ পূর্বক) কহিলেন, জামি অনাথা, কে আমার পুত্রকে
হরণ করিতেছে! এক্ষণে আমি কাহার শ্রণণাম হইব। রাজা
যদিও এই কথা শুনিতে পাইলেন, তথালি (তিনি উলক্ষ ছিলেন,
বলিয়া) পাছে দেবী আমাকে উলক্ষ অবস্থায় দেখেন, এই
আশক্ষায় (সহসা) যাইতে পারিলেন না। অনস্তর গন্ধর্মণণ
আর একটা মেষ হইয়া গমন করিলেন। যথন দ্বিতীয় মেষ্টা

অলকা কুবেরপুরী। টৈজারথ চিত্ররথ দামক গদ্ধর্ম কর্কুক নিন্মিত কুবেরের উপবন।২৯

অনাথা সাহমভর্কা কুপুরুষা শ্রাজি আর্তরাবিণী বভূব।
রাজাপ্যমর্থবশাদক্ষকারমেতদিতি খড়্গমাদার দুই !
দুই ! হতোহদীতি ব্যাহরমভাধাবং । তাবজ গন্ধর্মৈরতীবোজ্জলা বিদ্যুৎ জনিতা। তংগ্রজা চোর্মশী
রাজানপগতাম্বং দৃষ্ট্। অপবৃত্তসময়া \* তৎক্ষণাদেবাপক্রান্তা॥ ৩১॥

পরিত্যজ্য তাবুরণকো গন্ধর্কাঃ স্থরলোকমুপাগ-অপত্ত হয়, তথ্নও আকাশে তাহার শব্দ শুনিতে পাইয়া উর্বাদী পুনর্মার অধিকতর আর্ত্তনাদ করিতে আরম্ভ করিলেন ও কহিতে लाशित्मन, आमि अनाथा! आमात छर्डा नारे, आमि कुशुक्रवरक 🕶 আশ্রু করিয়া অবস্থান করিতেছি। এই সমুদার বাক্য রাজার অসহা বোধ হইতে লাগিল ৷ তিনি ভাবিদেন, গুহে ত অন্ধ-कात्रमय ( उनक अवसाय गांहरन क दमवी दम्बिटक शांहरन ना।) রাজা মনে মনে এইরূপ পর্যালোচনা করিয়া খড়র গ্রহণপূর্বক, রে দুউ ! এখনি বিনাশ করিতেছি, এই বলিয়া ধারমান ছইলেন ৷ **এই অবকাশে शश्चर्यगर्ग অতি উচ্চল विमाध अकाम कतिराग्य।** সেই বিদ্যুতের প্রভাষারা উর্বাদী রাজাকে উল্ল দেখিয়া পূৰ্যকৃত নিয়ম ভঙ্গ হওয়াতে তৎক্ষণাৎ সেই স্থান হইতে প্ৰস্থান क्तिलान। " शक्त स्वर्ग । अस्त प्रतिकाश श्री क त्वरलाटक উপনীত হইলেন। রাজাও সেই মেবন্বয় গ্রহণপূর্বক প্রক্রন্তর দয় इहेग्रा नग्रनांशांत आंगमन कतिलान ध्वर प्रचित्नन (य. मिचारन **डेबंभी** नाइ। <sup>92</sup>

রাজা উর্বাদীকে দেখিতে না পাইয়া সেই উলঙ্গ অবস্থাতেই উমান্ত হইয়া নানাস্থানে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। একদা তিনি

<sup>•</sup> প্রবৃত্তসময়া ইতি কেচিং পঠিছি।

তাঃ। রাজাপি তে নেষাবাদায় হৃষ্টমনাঃ স্থায়নমা-য়াতো নোর্কশীং দদর্শ॥ ৩২॥

তাঞ্চাপশ্যরপগতাম্বর\* এবোম্মন্তরপো বজাম।
কুরুক্মেত্রে চাডোক্ষসরসি অন্যাভিশ্চতস্ভিরপ্সরোভিঃ
সমবেতামুর্কশীং দদর্শ। ততশ্চোম্মন্তরপো রাজা,
জায়ে! হ ভিষ্ঠ, মনসি! খোরে বচসি, ইত্যনেকপ্রকারং
স্কুনবোচং॥ ৩৩॥

व्याह टार्किमी, महाताज ! जुलमरननाविटवक-

কুরুক্তে কমল বিরাজিত সরোবরে অন্য তিনটা অপ্সরার সহিত সমবেতা উর্বাশীকে দেখিতে পাইলেন। তথন রাজা উন্মন্ত হইয়া প্রণয়সন্তাবণ পূর্মক কহিলেন, জায়ে! যাইও না, কঠিনছদয়ে! দাঁড়াও, আমার সহিত কথা কও। রাজা এই প্রকার অনেক মধুর বাকা কহিলেন। ত উর্মাণী কহিলেন, মহারাজ! অবিবেচকের ন্যায় ঈদৃশ চেটা করিবেন না। এক্ষণে আমি গর্জিণী, আপনি এক বৎসর পরে এখানে আসিবেন, আপনকার একটা প্রে হইবে, আমিও আপনার সহিত এক রাত্রি যাপন করিব। রাজা, উর্মাণীর নিকট এই বাক্য প্রবণ করিয়া প্রহুট হইয়া স্বীয় রাজধানীতে প্রত্যাগ্রমন করিলেন। উর্মাণী সেই সমস্ত অপ্সরোগণের নিকট কহিলেন, আমি যাঁহার অমুরাগে আইট হালা হইয়া এত কাল যাঁহার সহিত বাস করিয়া-ছিলাম, ইনিই সেই পুরুষোন্তম। অপ্রায়ণ এই কথা প্রবণ করিয়া বহিলা, আহা! ইছার কি চমৎকার রূপ! (ইছার

<sup>•</sup> ভাঞাপণ্য উপনভাষর: ইতি প্রাম নিক: পঠি:।

চেন্টিতেন, মন্তর্বাত্বী অহম, জনান্তে ভবতাত্তাগন্তব্যম্,
কুমারন্তে ভবিষ্যতি, একাঞ্চ নিশামহং ত্বাল সহ বংস্যামি, ইত্যুক্তঃ প্রহুফিঃ স্বপুরুমাজগাম ৷ তাসাঞ্চাপ্সরসামুর্বাশী কথয়ামাস, অয়ং স পুরুষোৎকর্ষো, যেনাহমেতাবন্তং কালমন্ত্রাগাক্ষমনসা \* সহোধিতা ॥৩৪॥

ইত্যেবম্ উক্তান্তা অঞ্চরস † উচুঃ, সাধু সাধু অস্য রূপম্, অনেন সহাস্মাকমিপি সর্ব্ধকালমভিরন্তং স্পৃহা ভবেদিতি ॥ ৩৫

অব্দে চ পূর্বে স রাজ্য তত্রাজগাম, কুমারঞ্চায়ুষ-মবৈ তদোর্বলী দদৌ, একাঞ্চ নিশাং তেন রাজ্ঞা সহোবিত্বা পঞ্চপুত্রোৎপত্তয়ে গর্ভমবাপ॥ ৩১॥

ক্লপ দর্শন করিয়া) আমাদিহগরও ইচ্ছা হর যে, চিরকাল ইঁহার সহিত প্রীতি করি ৷ \*\*

অনন্তর এক বংসর পূর্ণ ছইলে রাজা পুনর্বার সেই স্থানে উপস্থিত ছইলেন। উর্মনী তাঁহার নিকট আয়ু নামক পুত্র সমর্পণ করিলেন। পরে তিনি রাজার সহিত এক রাজি বাস করিয়া, পাঁচ পুত্র প্রস্নব করণার্থ গর্জ ধারণ করেন। তা অনন্তর তিনি রাজাকে কহিলেন, মহারাজ! সমুদায় গঙ্কর্ম, আষার প্রতি প্রতি হেতু আপনাকে বর দান করিতে উদ্যত ছইয়াছেন,

অনুরাগারুইচেত্রা ইতি ঝ পঠাতাম্।

<sup>ा</sup> इत्छ। बनुका श्वाम भावत इंडि व। श्रेमी यम्।

উবাচ চৈনং রাজানম, অস্মৎপ্রীত্যা মহারাজায় সর্ব্ব এব গন্ধব্বা বরদাঃ সংবৃত্তাঃ, তৃস্মাৎ ব্রিয়তাং বর ইতি ॥ ৩৭ ॥

আহ রাজা চ, বিজিত-দকলারাতিরবিহতে জ্রিয়ান-র্থ্যে বন্ধুমানমিতবলকোষঃ, নান্যদিখাকমুর্ব্বশীদালো-ক্যাৎ অপ্রাপ্যমন্তি, তদহমনয়া সহেক্ষিণ্য। কালং নেতুমভিল্যামি॥ ৩৮॥

रेजूरक गन्नकी तारकश्वीशानीः प्रमूः॥ ७०॥

আপনি বর প্রার্থনা করন। বাজা কহিলেন, আমি সমুদায় শত্রু পরাজয় করিয়াছি, আমার সমুদায় ইত্রিয়ের সামর্থ্য অব্যাহত রহিয়াছে, আমার সমুদায় আল্লীয় স্বজন বন্ধু বান্ধর স্কুশলে আছেন, আমার অসীম বল ও অসীম ধন রহিয়াছে। এতং-সমুদায়ের মধ্যে আমার কিছুরই অভাব নাই, পরস্কু আমার পক্ষেকেবল উর্বাধীর সহবাসই দুর্লত হইয়াছে, উর্ব্ধণী সহবাস ব্যতীত আর কোন বস্তুই আমার দুর্ল্পাপ্য নহে; অভএব আমি কেবল এই উর্বাদীর সহিত একত্র কাল বাপন করিতে অভিলাষ করি। তি

া রাজা এই কণা বলিলে গল্পরেরা তাঁহাকে একটা অগ্নিস্থালী প্রদান করিলেন, " এবং বলিয়াদিলেন যে, তুমি বেদবিধান নানুসারে এই অগ্নি তিন ভাগ করিবে, পরে উর্নলী সলোকতা-রূপ সংকল্প করিয়া যাগ করিতে প্রেক্ত ইইবে। এরূপ করিলে তুমি অবশাই অভিলবিত ফল প্রাপ্ত হইতে পারিবে।"

বেদবিধানাসুসারে অবিহোত্তে অবি তিন তাগ ক্রিতে হর। যথা গাহ পিত্য, আহ্রমীয় ও দক্ষিণাটি। ৬৯

উচুশ্চ, এনমগ্রিম্ আমুায়ারুসারী ভূত্বা তিথা কৃত্বা উর্বাদী-সলোকভা-মনোরথমুদ্দিশ্য সম্যক্ যজেথাঃ, ততোহবশ্যমভিল্যিত্ববাঞ্চাদি॥ ৪০॥

ইত্যুক্তস্তাম গ্রিস্থালী মাদায়াজগান, অন্তর্টব্যাম্ অ-চিন্তরৎ, অহো মে অতিমুদ্তা! যদ গ্রিস্থালী মরানীতা নোর্কালীতি। অথৈনামটব্যামেবাগ্রিস্থালীং তত্যাজ, স্বপুর্ঞাজগাম ॥৪১॥

ব্যতীতার্দ্ধরাত্রো\* বিনিদ্রশ্চাচিন্তরৎ, মধোর্কশী-সালোক্যপ্রাপ্ত্যর্থমগ্রিস্থালী গন্ধর্কৈর্দ্ধতা। সা চ ময়া অটব্যাৎ পরিত্যক্তা। তদহং তত্র তদাহর-

গন্ধর্মগণ এই কথা বলিলে রাজা, সেই অগ্নিস্থালী গ্রহণ পূর্মক গমন করিতে লাগিলেন। কিয়দ্র আসিয়া বনমধ্যে চিন্তা করিতে লাগিলেন যে, অহো! আমার কি মুত্তা! আমি এই অগ্নি-হালীটী আনিলাম, উর্মাণিকে আনয়ন করিলাম না! অনস্তর রাজা সেই অরণ্যমধ্যেই সেই অগ্নিস্থালী পরিত্যাগ করিয়া স্বীয় নগরীতে আসিয়া উপনীত হইলেন।

ভানতার অর্জরাত্রি গতীত হইলে যথন রাজার নিদ্রোভক হইল, তথন তিনি চিন্তা করিতে লাগিলেন, আদি যাহাতে উর্ফানির সহিত সহবাস করিতে পারি, তজ্জনাই গন্ধকোরা আমাকে অগ্নিস্থালী প্রদান করিয়াছিলেন। আমি সেই অগ্নিস্থালী অরণ্য-মধ্যে পরিত্যাগ করিয়া আদিয়াছি। অতথব আমি একণে সেই অগ্নিস্থালী আনম্নার্থ সেই স্থানে গমন করি। রাজা এইরপ

ৰাভীভাৰ্দ্ধগ্ৰসমন্ ইভি ৰাভীভাৰ্দ্ধগ্ৰ ইভি ৰা পৃথকু পৃথকু পাঠ: ।

ণার যাদ্যামি, ইত্যুপার তত্রাপুদেগতো নাগ্রিছালীম-পলাং । শমীগর্জপাশ্বশাগ্রিছালীছানে দৃষ্ট্ব। অচি-ন্তর্হ, মরাত্র ছালী নিক্ষিপ্তা, সা চাশ্বপ্তঃ \* শমী-গর্ভোহভূহ। তদেতমেবাহমগ্রিরপমাদার স্বপুরমভি-গম্য অরণীং কৃত্বা তদুৎপন্নাগ্রেরপান্তিং করিষ্যামি ইতি॥ ৪২॥

এবমেব স্বপুরমুপগতোহরণীং চকার॥ ৪৩॥

পর্যালোচনা করিয়া উত্থান পূর্ক্ত সেই অরণ্যমধ্যে গমন করি-লেন, কিন্তু সেখানে সেই অগ্নিস্থালী দেখিতে পাইলেন না, পরস্কু যে স্থানে আগ্নিস্থালী ছিল, সেই স্থানে এক থণ্ড শমী-গর্জ অশ্বথ কাঠ দেখিতে পাইয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন, আমি এই স্থানে অগ্নিস্থালী নিক্ষেপ করিয়াছিলাম, সেই অগ্নিস্থালীই এই শমীগর্জ অশ্বথ হইয়াছে। অতথ্য আমি অগ্নিস্থালীই হাকেই গ্রহণ করিয়া রাজধানীতে গমন পূর্ক্ত অ্রণী করিয়া তদুংপল্ল অগ্নিষ্ধারা যাগ করিব। ইং

রাজা এই রূপ বিবেচনা করিয়া স্থভবনে গমন পূর্বাক্ (সেই শমী কাঠে) অরণী নির্মাণ করিলেন। ত অরণী নির্মাণের সময় তিনি গায়ত্তী পাঠ করিতে করিতে অঙ্গুলি ছারা সেই কাঠের পরিমাণ করিতে লাগিলেন। গায়ত্তী পাঠ পূর্বাক কাঠের পরিমাণ করাতে গায়ত্তীর যতগুলি অক্ষর, অরণীরও তত অঙ্গুলি পরিমাণ হইল। ত

<sup>\*</sup> স চাখত্ব ইতি কেচিৎ পঠন্ধি।

শে কাষ্ট ঘর্মণ ধারা অভি বাহির করা যায়, ভাহার মাস অরণী। ৪১

তৎপ্রমাণঞ্চাঙ্গুলৈঃ কুর্ব্বন্ গায়ত্রীমপঠৎ ৷ পঠত-শ্চাক্ষরসংখ্যানোবাঙ্গুলান্যরণ্যভবৎ ॥ ৪৪ ॥

তত্রায়িং নির্মাধার্যমামায়ারুদারী ভূত্বা জুহাব, উর্বাদীদালোক্যং চেছ ফলমভিদংছিতবান্। তেনৈবাগ্নিবিধিনা বছবিধান্ যজ্ঞানু ইফ্রী গন্ধর্বলোকান্ প্রাপ্য উর্বাদ্যা সহ বিয়োগং নাবাপ ॥ ৪৫॥

একোইশ্বিরাদাবভবৎ, ঐলেন ত্বত্ত মন্বন্তরে তেতা প্রবিভিতা॥ ৪৬।

## ইতি জীবিষুপুরাণে চতুর্থ ২° শে ষষ্ঠো ২ধ্যা য়: ।

জুনস্তর তিনি সেই অরণী নির্মাণিত করিয়া অগ্নি উৎপাদন পূবাক বেদবিধানামুসারে তিন ভাগ করিয়া তাহাতে হোম করিতে লাগিলেন এবং উর্বাণী সহবাসরূপ ফল কামন। করি-লেন। তিনি সেই অগ্নিছারা নানাপ্রকার যজ্ঞ করিয়া গন্ধবাধি-লোক প্রাপ্ত হইলেন এবং উর্বাণীর সহিত তাঁহার আর বিচ্ছেদ ঘটিল না। ° পূবাবি যজ্ঞে এক জুগু ছিল। এই রাজা হইতে এই সম্বন্তরে গোহপত্য আহবনীয় ও দক্ষিণাগু, এই তিন অগ্নি প্রবর্ত্তিত হইয়াছে। °°

বিষ্ণুপুরাণ চতুর্থ অংশ ষষ্ঠ অধ্যায়

# বিষ্ণুপুরাণম্।

চতুর্থোঽংশঃ ৷

मक्षमाधायः।

### পরাশর উবাচ ৷

ভদ্যাপ্যায়্ধীনানমাবস্থ-বিশ্বাবস্থ-শতায়ুঃ-শ্রুতায়ুঃ-(অযুতায়ঃ-) সংজ্ঞাঃ বড়ভবন্ পুত্রাঃ॥ ১॥

অমাবদোভীমো নামপুত্রোহভবৎ। ভীমদ্য কাঞ্চনঃ, কাঞ্চনাৎ স্থহোত্রঃ, তদ্যাপি জহুঃ। যোহদো যজ্ঞবাটমখিলং গলান্ত্রদা প্লাবিত্যালোক্য ক্রোধসং-

পরাশর কহিলেন। প্ররবার ছয়টা প্র হইয়াছিল। তাহাদের নাম আয়ৄঃ, ধীমান্, অমাবস্থা, বিশাবসু, শতায়ৄঃ ও
শতায়ৣঃ (অয়ুতায়ৣঃ)। অমাবসুর একটা প্র জিমিল, তাহার
নাম ভীম। ভীমের পুর কাঞ্চন, কাঞ্চন হইতে স্থাহোত্র, স্থাত্রতি
হইতে জয়ু উৎপন্ন হইলেন। এই জয়ু, সয়দায় য়জ্ঞাবিত
পঞ্চাজল ছারা প্লাবিত দেখিয়া ক্রোধভরে আরক্ত নয়ন হইলেন

রক্তনয়নে। ভগবন্তং বজ্ঞপুরুষমাত্মনি পরমেণ সমাধিনা সমারোপ্যাখিলামেব গন্ধাম্ অপিবৎ॥ ২॥

অথৈনং দেবর্ষয়ঃ প্রদাদয়ামাস্তঃ, দুহিত্ত্বে চাস্য\*
গঙ্গামনয়ৎ। জহ্গোশ্চ স্থজকুর্নাম † পুত্রোহ্ভবৎ।
তস্যাপ্যজকঃ, ততো বলাকাশ্বঃ, তস্মাৎ কুশঃ, কুশস্য
কুশাশ্ব-‡কুশনাভামুর্ভরয়ামাবসবশ্চত্বারঃ পুত্রা বভূবুঃ॥॥

তেয়াং কুশাশ্বঃ শক্রতুল্যো মে পুরো ভবেদিতি তপশ্চনর। তঞ্চোগ্রতপসমবলোক্য মা ভবত্বন্যোহস্ম-ভুল্যবীর্ঘ্য ইত্যাত্মনৈবাস্থেক্তঃ পুত্রত্বমগচ্ছ্ৎ॥ ৪॥

এবং তিনি পরম যোগবলে ভগবান্ যজ্ঞপুরুষকে স্থানীরে আবোপিত করিয়া সম্দায় গঙ্গা নিঃশেষরূপে পান করিলেন। আনস্তর দেবর্ষিগণ তাঁহাকে প্রসন্ন করিয়া গঙ্গাকে তাঁহার কন্যা করিয়া দিলেন। জঙ্কুর একটা পুত্র হইল, তাহার নাম স্থাক্তর্থ স্কান্তর পুত্র আজক, অজকের পুত্র বলাকাশ্ব, বলাকাশ্ব হইতে কুল উৎপন্ন হইলেন। কুলের চারি পুত্র। তাহাদের নাম কুলাশ্ব, (কুলাল্ব বা কুলাল্ব) কুলনাভ, (কুলনাস্ত্র) অমুর্ভরেয় ও অমাবস্থ।

কুশাশ্ব, এইরূপ সংকলপ করিয়া তপদাা করিতে লাগিলেন যে, ইন্দ্রসম্ভূপ তাঁহার একটা পুত্র হয়। অনস্তর ইন্দ্র তাঁহার উত্ত তপদ্যা অবলোকন করিয়া, তাঁহার তুল্য বীর্যালালী দ্বিতীয় ব্যক্তি না হয়, এই অভিপ্রায়ে স্বয়ংই তাঁহার পুত্র হইয়াজন্ম

<sup>•</sup> ছহিতৃদং চাস্য ইতি বা পাঠ:।

<sup>+</sup> अबसूर्भाम हेकि वा शर्रमीयम्।

<sup>🛨</sup> কুলামু বা কুলাম ইভি পাঠান্তবম্ ।

গাধিনাম স কোশিকোইভবং । গাধিশ্চ সত্যবতীং নাম কন্যামজনয়ং । তাঞ্চ ভার্মব ঋচীকো বর্ত্তে । গাধিরপ্যতিরোষণায় অতির্দ্ধায় চ ত্রাহ্মণায় দাতু-মনিচ্ছয়েকতঃ শ্যামকর্ণানামিন্দুবর্চসামনিলরংহ্সামশ্বানাং সহত্রং কন্যাশুল্কম্যাচত ॥ ৬ ॥

তেনাপি ঋষিণা বরুণসকাশাদুপলভ্য অশ্বতী-র্থোৎপন্নং ত্রাদৃশাশ্বসহজ্ঞং দত্তম্॥ १॥

ততঃ তাস্চীকঃ কন্যামুপথেমে। ঋচীকশ্চ তস্থাশ্চরুমপত্যার্থং চকার। তয়া প্রদাদিভশ্চ « ত-

পরিগ্রহ করিলেন। <sup>8</sup> ঐ পুত্র কৌশিক ও গাধি নামে বিখ্যাত হন। গাধির একটা কন্যা হইল, তাহার নাম সভাবতী। ভ্যু-বংশীয় ফটীক, এই কন্যার পাণি গ্রহণ করিবার জন্য প্রার্থনা করিলেন। গাধি, সাতিশয় কোপন-স্বভাব বৃদ্ধ ব্রাহ্মণকে কন্যা দান করিতে অনিচ্ছু হইয়া কহিলেন যে, চক্রের ন্যায় বর্ণ, এবং এক দিকের কর্ণ শ্যামবর্ণ, বায়ুর ন্যায় বেগশালী সহস্র অশ্ব শুল্ক স্বরূপ দিলে কন্যা দান করিব। শু মহর্ষি খাচীকও বরুণের নিকট অশ্বতীর্থোৎপন্ন উদ্ধ্যকার সহস্র অশ্ব প্রাপ্ত হইয়া রাজাকে প্রদান করিলেন। <sup>9</sup>

অনস্তর ঋচীক, গাধিকন্যাকে বিবাহ করিলেন। কিছু দিন পরে তিনি স্বীয় সন্তান উৎপাদনের নিমিক্ত চক্ল প্রস্তুত করিলেন।

আত্রে ক্ষত্রবরপুত্রে ( পত্তমে চরুমপর সাধ্যা-মাস ।। ৮।।

এষ চরুর্ভবত্যা অয়মপরস্তৃত্মাত্রা সম্যগুপথোজ্য ইত্যুক্ত্যা বনং জগাম॥ ৯॥

উপযোগকালে চ তাং মাতা সভ্যবতীমাছ, সর্বএবালুপুত্রমতিগুণং সমভিলমতি, নালুক্সায়াজাতৃগুণেষুতীবাদৃতো ভবতীত্যতোংইসি মম ত্বম্ আলুীয়ঞ্জং
দাতুং মদীয়ঞ্জমালুনোপযোক্ত্রম্॥ ১০॥

মৎপুত্রেণ ছি সকলভূমগুলপরিপালনং কার্যাম্॥১১॥
পরে সত্যবতীর প্রার্থনানুসারে সত্যবতী-মাতার একটী ক্ষপ্রিয়শ্রেষ্ঠ পুত্র উৎপাদনের নিমিন্ত অপর একটী চক্ল প্রস্তুত্ত করেন। দ
( শ্বচীক সত্যবতীকে কহিলেন, ) এই চক্ল ভূমি ভোজন
করিবে ও এই চক্ল ডোমার মাতা ভোজন করিবেন। তিনি
এই কথা বলিয়া বনে গমন করিলেন।

চক্র ভক্ষণের সময় সভাবতীর মাতা সভাবতীকে কহিলেন, পুত্রি! সকলেই আপনার সমধিক গুণবান্ পুত্র কামনা করিয়া থাকে। কোন ব্যক্তিই স্থীয় জায়ার ভাতার গুণধিকা উভদূর কামনা করে না। (আমার বোধ হয়, ভোমার নিমিস্ত যে চক্র প্রস্তুত হইয়াছে, ভাহা ভক্ষণ করিলেই সমধিক গুণবান্ পুত্র উৎপন্ন হইতে পারে, অভএব) ভোমার নিমিস্ত যে চক্র প্রস্তুত হইয়াছে, ভাহা ভূমি আমাকে দাও, এবং আমার জন্য যে চক্র হইয়াছে, ভাহা ভূমি আপনি আহার কর। তাবিবেচনা করিয়া দেখ) আমার পুত্র, সমুদায় অবনীমগুল পালন করিবে। তাবা

·~ 5.

কিয়দ্ত্রাহ্মণস্য বলবীর্য্যসম্পদিত্যক্তা সা স্বং চরুৎ মাত্রে দত্তবতী॥ ১২॥

অথ বনাদভ্যাগত্য সভ্যবতীম্ ঋষিরপশ্যৎ, আহ চৈনাম্, অতিপাপে! কিমিদমকার্য্যং ভবভ্যা ক্লভম্! অভিরৌদ্রং তে বপুরালক্ষ্যতে, সূনং ত্বয়া ত্বয়াত্সং-ক্লভক্ষপযুক্তো ন যুক্তমেতং॥ ১৩॥

ময়া হি তত্ত্র চর্রো সকলৈব শোর্য্যবিল-সম্পদা-রোপিতা, ত্বদীয়ে চরাবপ্যথিল-শান্তিজ্ঞানতিতিক্ষাদিক। ব্রাহ্মণগুণসম্পৎ। এতচ্চ বিপরীভং কুর্ব্বত্যাঃ তবাতি-রোদ্রান্তর্ধারণমারণ-নিষ্ঠঃ ক্ষত্রিয়াচারঃ পুত্রো ভবিষ্য-ত্যস্যান্ত্রোপশমরুচিঃ ব্রাহ্মণাচারঃ ॥ ১৪॥

বলবীর্য্য সম্পত্তিতে ব্রাহ্মণের কি প্রয়োজন। সত্যবতীর মাতা এই কথা বলিলে সত্যবতী স্বীয় চক্ল তাঁহাকে প্রদান (করিয়া তাঁহার চক্ল স্বয়ং ভোজন) করিলেন। ১২

অনস্তর ঋষি বন হইতে প্রত্যাগত হইয়া সত্যবতীকে নিরীক্ষণ করিয়া কহিলেন, রে পাপীয়সি! তুমি এ কি কুকর্ম করিয়াছ; তোমার শরীর সাতিশয় উশ্ল বোধ হইতেছে। তোমার মাতার নিমিক্ত যে চরু প্রস্তুত হইয়াছিল, তুমি তাহা আহার করিয়াছ, সন্দেহ নাই। ইহা তুমি নিতান্ত অন্যায় কার্য্য করিয়াছ। ১০ আমি তোমার মাতার চরুতে সমুদায় বল সমুদায় শোর্য্য ও সমুদায় বীর্যাক্রপ সম্পত্তি নিহিত করিয়াছিলাম এবং তোমার চরুতে সমুদায় আহান ও সমুদায় তিতিকা প্রস্তুতি ব্রাহ্মণসম্পৎ আহিত করি। তুমি চরুর বৈপরীত্য করাতে তোমার গর্জে যে প্র উৎপন্ন হইবেন সে সর্কাদ্

ইত্যাকর্ণ্যির সা তম্ম পাদে জ্ঞাহ। প্রণিপত্য চ এনমাহ, ভগবন্! ময়ৈতদজ্ঞানাদর্শ্বিতং, প্রসাদং মে কুরু, মৈবংবিধঃ পুত্রো ভবতু, কামমেবংবিধঃ পৌত্রো ভবতু\* ইত্যুক্তো মুনিরপ্যাহ, এবমস্ত ইতি॥ ১৫॥

অনন্তরঞ্চ সা জমদ্যিমজীজনং। তন্মাতা চ বিশ্বামিত্রং জনয়ামাস। সত্যবতী চ কৌশিকী নাম নদ্যভবং। জমদ্যিরিক্ষাকুবংশোদ্ভবস্য রেণােঃ তনয়াং
রেণুকামুপ্যেমে। তস্থাঞ্চাশেষক্ষত্রবংশহন্তারং\* পরশুরামসংজ্ঞং ভগবতঃ সকললােকগুরোর্নারায়ণস্থাশং
জমদ্যিরজীজনং॥ ১৬॥

অস্ত্রধারী অতীব উগ্র মারণ-পরায়ণ ক্ষজ্রিয়াচার হইয়া উঠিবে। তোমার মাডার গর্ভে যে সন্তান জন্ম পরিগ্রহ করিবে, সে শাস্তি-পরায়ণ ব্রাহ্মণাচার হইবে। ১৪

সত্যবতী এই কথা শুনিয়া শ্বচীকের পদন্বয় ধারণ করিলেন এবং প্রাণিপাত পূর্মক কহিলেন, ভগবন্! আমি অজ্ঞানতা প্রযুক্ত ঈদ্ধণ কার্য্যের অনুষ্ঠান করিয়াছি। এক্ষণে প্রসম হউন, আমার যেন ঈদ্ধণ পুত্র না হয়। বরঞ্চ আমার উক্তপ্রকার পোত্র হউক। সত্যবতী এই রূপ প্রার্থনা করিলে মহর্ষি কহিলেন, তাহাই হইবে। ক

অনস্তর সতাবতী, জমদগ্রি নামক পুত্র প্রামণ করিলেন। স্তাবতীর মাতার গর্ভে বিশামিত্রের জন্ম হইল। সতাবতী

> । এবংৰিধ: পে)ত্ৰো যে ভৰতু ইভি পৃস্তকান্তর্গ্য পাঠঃ। । অশেষকল্ৰহন্তারম্ ইভি ৰা পাঠঃ।

বিশ্বামিত্রপুত্রস্ত ভার্মব এব শুনঃশেকো নাম দেবৈ-র্দভঃ ততশ্চ দেবরাতনামাভবং। ততশ্চান্যে মধুচ্ছন্দ-জয়-ক্রতদেব-দেবাইফ-কচ্ছপ-হারীতকাখ্যা বি-শ্বামিত্রপুত্রা বভূবুঃ॥ ১৭॥

তেষাঞ্চ বহুনি কৌশিকগোত্রাণি ঋষ্যন্তরেষু -বৈ বাহ্যানি ভবস্তীতি ॥ ১৮॥

## ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুথে ২° শে সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

কৌশিকী নামে নদী হইলেন। জমদয়ি, ইক্ষ্বাকুবংশ-সন্তুত রেণুর কন্যা রেণুকার পাণিএহণ করিলেন। পরে জমদয়ি হইতে রেণুকার গর্ভে দকল লোকের শুরু ভগবান্ নারায়ণের অংশ অশেষ ক্ষপ্রিয়বংশ ধ্বংসকারী পরশুরাম, উৎপন্ন হইলেন। ১৬ ভৃশ্ববংশীয় শুনঃশেক, (নয়মেধ যজ্ঞে পশুভাব প্রাপ্ত হইয়াছিলেন।) পরে দেবভারা বিশ্বামিত্রকে ঐ পুত্র দান করেন, সুতরাং শুনঃশেক বিশ্বামিত্রপুত্র হইয়া দেবরাত নামে বিখ্যাত হন। পরে বিশ্বামিত্রের আর কএকটী পুত্র হইল। তাহাদের নাম মধুক্ষণ, জয়, কৃতদেব, দেবায়্টক, কচ্ছপ ও হারীতক। ১০ ইতাদের সন্তানেরা কৌশিক গোত্র হইয়াও ভিন্ন ভিন্ন হইয়াছন, কারণ শ্ববিভেদে (প্রবর ভেদে) তাহারা পরসপর পূথক্। ১৮

বিষ্ণুপুরাণ চতুর্থ অংশ নিমিবংশবিস্তার নামক সপ্তম অধ্যায় সমাপ্ত। বিষ্ণুপুরাণম্।
চতুর্থোহংশঃ।
অক্রমোহধ্যায়ঃ।

### পরাশর উবাচ॥

4,5

পুররবদো জ্যেষ্ঠঃ পুত্রে। যন্ত্রায়ুর্নামা, স বাহোদুহিতরম্\* উপযেমে। তস্যাং স পঞ্চ পুত্রান্ জনয়ামাসাং
নত্য-ক্ষত্রবৃদ্ধ-রন্ত-রিজসংজ্ঞাঃ, তথৈবানেনাঃ পঞ্চয়ঃ
পুত্রোহভূৎ। ক্ষত্রবৃদ্ধাৎ স্বহোত্রঃ: পুত্রোহভূৎ। কাশলেশ-গৃৎসমদান্তস্য পুত্রান্তর্যোহভবন্। গৃৎসমদস্য
শৌনকশ্চাতুর্বর্গ্রপ্রবর্ত্তিয়ভাভূৎ॥ ১॥

পরাশর কহিলেন। পুররবার আয়, নামে বে জ্যেষ্ঠপুত্র ছিলেন, তিনি বাহুর (রাহুর) কন্যার পাণিগ্রহণ করিয়াছিলেন। পরে তাঁহা হইতে বাহুকন্যার গর্ভে পাঁচটী পুত্র উৎপন্ন হয়। এই পঞ্চ পুত্রের নাম নহুব, ক্ষত্রের, রম্ভ রজি ও অনেনাঃ। ক্ষত্র-রন্ধের একটী পুত্র উৎপন্ন হইল, তাহার নাম মহোত্র। স্থানে-ত্রের তিনটী পুত্র হইল, তাহাদের নাম কাশ, লেশ ও গৃৎসমদ। গৃৎসমদের একটী পুত্র হইল, তাহার নাম শৌনক। ইনি

<sup>\*</sup> রাহোছু হিতরম্ ইাত ৰা পাঠঃ ॥

<sup>া</sup> উৎপাদ্যামান ইতি পাঠান্তরম্ 🛭

<sup>🛨</sup> সুমহোত্র ইতি পুস্তকান্তরদা পাঠ:॥

কাশস্য কাশিরাজঃ, ততো দীর্ঘতমাঃ পুত্রোহভবৎ। ধন্বত্তরিস্ত দীর্ঘতমসোহভূৎ। স হি সংসিদ্ধকার্য্যকরণঃ সকলসম্ভূতিষ্ঠানবিৎ॥ ২॥

ভগবতা নারায়ণেন চ অতীতসুংভূতাববৈষ বরো দত্তঃ॥ ৩॥

কাশিরাজগোতেইবতীর্য ত্বমইথা সম্যগায়ুর্কেদং করিষ্যান। যজ্ঞভাকু ভবিষ্যান ইতি॥৪॥

তদ্য চ ধন্বত্তরেঃ পুত্রঃ কেতুমান। কেতুমতো ভীম-রথঃ, তদ্যাপি দিবোদাদঃ, ততঃ প্রতর্দনঃ । দ চ মদ্র-

চাতুর্বর্ণের প্রবর্ত্তরিত। হইয়াছিলেন অর্থাৎ শৌনক বংশীয়েরা ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য শূদ্র, এই চারি জাতি হইয়াছে। '

কাশের পুত্র কাশিরাজ, কাশিরাজের পুত্র দীর্ঘতমা। দীর্ঘতমা হইতে ধন্মস্তরি উৎপন্ন হইলেন। ধন্মস্তরির কার্য্য (শরীর) ও করণ (ইক্রিয়) উস্তম সিদ্ধ (মর্ত্তাধর্ম রহিত) ছিল। তিনি সমুদায় জন্মেই বিবিধ জ্ঞানের আকর ছিলেন। ও তাঁহার পূর্যক্রেম ভগবান্ নারায়ণ জাঁহাকে বর দিয়াছিলেন যে, ও তুমি কাশিরাজ গোত্রে অবতীর্ণ হইরা আট খণ্ডে বিভক্ত উক্তম আয়ু-বেদ গ্রন্থ প্রণয়ন করিবে এবং তুমি যক্তভাগভাগী হইবে। ও

এই ধন্বস্তরির পুত্র কেতুমান্, কেতুমান্ হইতে ভীমরথ, ভীমরথ হইতে দিবোদাস, দিবোদাস হইতে প্রতর্দন কল

আয়ুদর্বদের অই অল যথা--- পলাকা, পুত্রিদ্যা, কায়ক্তি, অলডয়, বশায়ন, বাজীকরণ, কুমাবভয়। ৪

শ্রেণ্যবংশবিনাশাদশেষাঃ শত্রবোহনেন জিভা ইতি শক্রজিদভবং॥ ৫॥

তেন চ প্রীতিমতাত্মপুতো বংস বংসেত্যভিহিতঃ, ততো বংসোহসাবভবং॥ ७॥

সত্যত্ত তথা ঋত ধ্ৰজসংজ্ঞামবাপ। পুনশ্চ কুব-লয়নামানমশ্বং লেভে; কুবলয়াশ ইত্যস্যাৎ পৃথিব্যাৎ প্ৰথিতঃ॥ ৭॥

তস্য চ বৎসম্য পুত্রোইলকো নামাভবং । যদ্য অয়মদ্যাপি শ্লোকো গীয়তে।

यिः वर्षमञ्चानि यिः वर्षभञानि ह। जनकानभद्या नारना। बुजुरक स्मिनीः भूता ॥।।॥

পরিশ্রহ করিলেন। এই প্রভিন্ধন, ভদ্রশ্রেণ্য বংশ উন্মূলন করেন।
এইজন্য ইনি সমুদায় শক্ত জয় করিয়াছিলেন, বলিয়া শক্ত জিৎ
নামে বিখ্যাত হন। তাঁহার পিতা স্নেহ প্রযুক্ত তাঁহাকে
বৎস বলিয়া আহ্বান করিতেন, এই কারণে তিনি বৎস নামেও
বিশ্রুত হইয়াছিলেন। তিনি স্তানিষ্ঠ ছিলেন, বলিয়া ঋতস্বৈজ্ঞ এই নাম প্রাপ্ত হন। তিনি ক্বলয় নামে একটী অখ্
প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, তাহাতেই তাঁহার ক্বলয়াখ এই নাম
পৃথিবীতে প্রচারিত হইল।

এই বৎস নামক রাজার অলর্ক নামক একটা পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল। যাঁহার বিষয়ে একটা শ্লোক অদ্যাপি পঠিত হইয়াথাকে। যথা—পূর্বাকালে অলর্ক ভিন্ন অন্য কোন রাজাই ষট্রষ্টি
সহস্র বৎসর এই পূথিবী ভোগ করিতে পারেন নাই। দ

<sup>\*</sup> মেদিনীং যুবা ইতান্যবিধঃ পঠিঃ।

ভগালক্স্য সন্ধতিনামাত্মজোহতবং। ততঃ স্থনীথঃ,া তস্য স্থকেতুঃ, ততো ধর্মকেতুঃ, ততঃ সভ্যকেতুঃ, তস্মাৎ বিভুঃ, তত্তনয়ঃ স্থবিভুঃ, তত্তক স্থকুমারঃ, তস্যাপি ধৃষ্টকেতুঃ, তত্তক বৈনহোত্রঃ, তত্তক ভার্মঃ, ভার্মস্য ভার্মভূমিঃ, অতশ্চাতুর্বর্গপ্রের্ডিঃ, ইত্যেতে কাশ্যপা ভূপতরঃ কথিতাঃ। রজেন্ত সন্ততিঃ শ্রুমতামিতি॥ ১॥

## ইতি ঐবিষ্ণুপুরাবে চতুথে ২ পশে অফমো ২ধ্যায়ঃ ।

অলর্কের একটী পুত্র হইল, তাহার নাম সমতি। সমতির
পুত্র স্থনীথ, মুনীথের পুত্র স্থকেতু, মুকেতুর পুত্র ধর্মকেতু, ধর্মকেতুর পুত্র সভ্যকেতু, সভ্যকেতুর পুত্র বিভু, বিভুর পুত্র স্থাবিভুর
স্থাবিভুর পুত্র সূত্রমার, স্থাকুমারের পুত্র ধৃষ্টকেতু, ধৃষ্টকেতুর পুত্র
বৈনহোত্র, বৈনহোত্তের পুত্র ভার্গ, ভার্গের পুত্র ভার্গভূমি। এই
ভার্গভূমি হইতে ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য শৃত্র, এই বর্ণচতুইয়
উৎপর হইয়াছে। এই ভোষার নিকট কাশ ও ভদীয়
বংশোৎপন্ন রাজগণের বিষরণ কহিলাম। একণে রক্ষির বংশাবলী
বলিভেছি, প্রবণ কর।

বিকুপুরাণ চতুর্থ অংশ অক্টম অধ্যার সমাপ্ত ৷

र स्मीक हेकि नाम करम

# विक्थूश्रवानम् ।

চতুর্থোঽংশ:।

नवमाधायः।

### পরাশর উবাচ।

রজেঃ পঞ্চপুত্রশতান্যতুলবীর্য্যসারাণ্যাসন্। দেবা-স্থর-সংগ্রামারন্তে পরস্পরবধেন্সবো দেবান্চাস্থরান্চ বন্ধাণং পঞ্চছঃ॥১॥

ভগবন্! অস্মাকমত বিরোধে কতরঃ পক্ষো জেভা ভবিষ্যতীতি ৷ অথাহ ভগবান্, যেগামর্থে রক্তিরাস্তা-যুধো যোৎস্যতীতি ৷ অথ দৈত্যৈক্লপেত্য রক্তিরাস্তা-

পরাশর কহিলেন, রজির পঞ্চশত পুত্র হইলাছিল। ইছারা অসীন বলবান্ ও অসীন শোহাবীহা সম্পন্ন। একদা দেবগণ ও দানবগণের পরস্পার সংগ্রাম উপস্থিত হইল। পরস্পার সং-হারাভিলাণী দেবভারা ও অল্পরেরা ক্রছাকে জিজ্ঞাসা করিলেন,' ভগবন্! আমাদের এই সংগ্রামে কোন্ পক্ষ জয়ী হইবে? ভগবান্ ব্রহ্মা উন্তর করিলেন, রজি বে পক্ষ অবলঘন করিয়া অল্পর ধারণ পূর্বক যুক্ত করিবে, (সেই পক্ষই জয় লাভ করিবে।) অনন্তর দৈভাগণ, রজির নিকট উপস্থিত হইন্ন সংগ্রামে সাহায্য সাহায্যদানায়াভ্যথিতঃ প্রাহ, যোৎস্যেইহং ভবতামর্থে, যদ্যহম্ অমরজয়াদ্ভবতামিজো ভবিষ্যামি।
ইত্যাকর্থ্যতং তৈরভিহিতো ন বয়মন্যথা বিদিষামোহন্যথা করিষ্যামঃ। অস্মাক্ষিক্রঃ প্রস্থাদন্তদর্থময়মুদ্যমঃ।
ইত্যুক্ত্বা গতেষুস্থরেষু দেবৈরপ্যসাববনীপতিরেবমেবোক্তঃ। তেনাপি চ তথৈবোক্তে দেবৈরিক্রপ্তৃং
ভবিষ্যমীতি সমন্ত্রীপ্সিত্ম্॥২॥

রজিনাপি দেবদৈন্যসহায়েন অনেকৈর্মহাস্তৈঃ
ভদশেষমস্করবলং নিস্পিতম্। অবজিতারাতিপক্ষশচ
ইত্রেশ রজি-চরণযুগলমাত্মশিরদা নিপীড্যাহ, ভয়ত্রাণ-

পাইবার নিমিন্ত প্রার্থনা করিল। রক্তি কহিলেন, আমি ফ্রনি দেবগণকে পরাক্তম করিয়া ভোমাদের ইত্রন্থ পদ প্রাপ্ত হই, ভাহা হইলে ভোমাদের পক্ষ হইয়া মৃদ্ধ করিতে পারি। অমু-রেরা এই কথা প্রবণ করিয়া কহিল, আমরা একপ্রকার বলিব, অন্যপ্রকার করিব, এরূপ হইবেনা। প্রহ্লাদ আমাদের ইত্র। ভাঁহার নিমিন্তই এই মুদ্ধানুষ্ঠান হইভেছে।

অসুরেরা এই কথা বলিয়া চলিয়া গেল। পরে দেবগণ আসিয়া তাঁহার নিকট সেইরূপ কহিলেন। রফিও সেইরূপ উত্তর করি-লেন। দেবগণ সন্মত হইয়া কহিলেন যে, তোমাকেই আমরা ইক্সন্থ পদ প্রদান করিব।

অনস্তর রজি, দেবটেননাের সহায় হইয়া বিবিধ মহাজ্রারা সমুদায় অস্ত্রবল বিনাশ করিলেন। যখন সমুদায় শত্রুপক্ষ প্রাজিত হইল, তথন দেবরাজ ইক্র, রজির চর্ণমুগল স্বীয় দানাদস্মৎপিতা ভবান্, অশেষলোকানামুত্তমোতমো ভবান্, যদ্যাহং পুত্রস্ত্রিলোকেন্দঃ॥ ७॥

স চাপি রাজা প্রহ্ন্যাহ, এবমেবাস্তু, অনতি-ক্রমণীয়া হি বৈরিপক্ষাদপ্যনেকবিধচাটুবাক্যগর্ভ। প্রণতিঃ, ইত্যুক্ত্যা স্বপুরম্ আজগাম ॥ ৪॥

শতক্রপীক্রত্থ চকার। স্বর্যাতে চরজৌ নার-দর্ষিচোদিতা রঞ্জিস্কৃতাঃ শতক্রতুমাত্মপিতৃপুত্রমাচারা-দ্রাজ্যং যাচিতবন্তঃ॥ ৫॥

অপ্রাদানে চাবজিতোজ্মতিবলিনঃ স্বয়মিক্তৃং
সন্তকে ধারণ করিয়া কহিলেন, আপনি ভয় হইতে রক্ষা করিয়াছেন, অতএব আপনি আমাদের পিতা। আপনি সমুদায়
লোকের শ্রেষ্ঠ হইতেও শ্রেষ্ঠ, কারণ আমি ত্রিলোকের ইক্স হইয়াও
আপনকার পুত্র হইলাম।

রাজা হাস্য করিয়া কহিলেন, তাহাই হউক। শক্তপক্ষেরাও যদি নানাপ্রকার চাটুবাক্য প্রয়োগ পূর্বাক পদানত হয়, তাহা হইলে তাহাও অতিক্রম করিতে পারা যায় না, (অতএব তোমার প্রার্থনা ক্রিনেপ অগ্রাহ্য করি।) রাজা এই কণা বলিয়া স্বীয় রাজধানীতে প্রত্যাগত হইলেন। দেবরাজও ইক্রম্ম করিতে লাগিলেন।

কিছু দিন পরে রজি, স্বর্গ গমন করিলেন। রজিপ্তেরা মহর্ধি নারদ কর্তৃক উদ্ভেজিত হইয়া স্বীয় পিতার (কৃতক) পুত্র শতক্রতুর নিকট গমন করিয়া আচারানুসারে প্রাণ্য পৈভৃক রাজ্য প্রার্থনা করিলেন। শতক্রতু যখন ইন্দ্রত্ব পদ পরিত্যাগে

পৈতৃক বাজ্যে আনোরসাবে ঔরস পুরাই অধিক'ৰী হয়। এই বলিয়া রজিপুরে নাইজন পদ প্রাধনা করেন। €

চক্রঃ। ততশ্চ বছতিথে কালে ব্যতীতে বৃহস্পতি-মেকাত্তে দৃষ্ট্বাপহৃতত্তিলোক্যযজ্ঞভাগঃ শভক্রতু-রাহ। ৬॥

বদরীকলমাত্তমপ্যর্গনি মম আপ্যায়নায় পুরোডাশ-খণ্ডং দাতুম্, ইত্যুক্তো রহস্পতিরচে, যদ্যেবং পূর্বামেব ত্বয়াহং চোদিতঃ স্যাং তল্পরা ত্বর্গং কিম্ অকর্তব্য-মিতি॥ ৭॥

স্বল্পৈরেবাহোভিস্থাং নিজং পদং প্রাপন্নিয়ামি, ইত্যভিধার তেষামন্থদিনাভিচারিকং বুদ্ধিমোহার শক্রস্য চ তেজোর্দ্ধয়ে জুহাব। তে চাপি তেন বুদ্ধিমোহেনাভিভূয়মানা ব্রন্ধিষো ধর্মত্যাগিনো বেদ-

সম্মত হইলেন না, তথন সেই মহাবল রজিপুত্রেরা উাহাকে পরাজয় করিয়া বলপুর্ক ক্ষমং ইচ্ছত্ব করিতে লাগিলেন।

এইরপে বহুকাল অতীত হইল। শতক্রতুর বৈলোক্য-বজ্ঞভাগ অপহত হওয়াতে এক দিন তিনি নির্জ্ঞনে ব্রহ্মণতিকে
কহিলেন, আমার উপচয়ের জন্য (যজের সময়) আপনি
আমাকে একটী বদরীফল প্রমাণ হৃত প্রদান করুন। ইন্দ্র এইরূপ প্রার্থনা করিলে বৃহ্মণতি কহিলেন, তুমি পুর্মে যদি
আমার নিকট এরপ প্রার্থনা করিতে তাহা হইলে আমি
ভোমার নিমিক্ত বাহা না করিতে পারিভাম, এরপ কর্ম কি আছে।
এক্ষণে অপস দিনের মধ্যেই আমি ভোমাকে ভোমার পদে প্রতিজিতু করিব। বৃহস্পতি এই কথা বলিয়া রক্তিপ্রগণের বৃদ্ধিমোহের নিমিক্ত এবং শতক্রতুর ভেজার্কির নিমিক্ত প্রতিদিন
অভিচারিক হোম করিতে লাগিলেন। পরে তদ্ধারা বুক্কিমোহ হও-

বাদপরাঙ্মুখা বভূবুঃ। ততশ্চ তানপেতথ্যাচারান্ ইন্দ্রোজ্বান ৷ পুরোহিতাপ্যায়িততেজাশ্চ তিদিবমা-ক্রামং। এতদিন্দ্রস্য অপদচ্যবনারোহণং শুত্বা পুরুষঃ অপদল্রংশং দৌরাজ্মাং বা নচ আপ্রোতি। রম্ভত্ন-পত্যোহতবং। ক্ষল্রহদ্ধস্তঃ প্রতিক্ষল্রঃ, তৎপুত্রঃ সঞ্জয়ঃ, তস্যাপি জয়ঃ, ততশ্চ বিজয়ঃ, তত্মাদ কং, তস্য হর্ষবর্দ্ধনঃ, হর্ষবর্দ্ধনস্তঃ সহদেবঃ, তত্মাদ-দীনঃ, তস্য জয়সেনঃ, ততশ্চ সংস্তৃতিঃ, তৎপুত্রঃ

য়াতে রজিপুত্রেরাও ব্রাহ্মণ বিদ্বেষী ধর্মত্যাগী ও বেদবাক্য-পরাঙ্দুখ হইলেন । এইরূপ রজিপুত্রেরা ধর্মভ্রম্ট ও আচারভ্রম হইলে
ইন্দ্র ভাঁহাদিগকে বিনাশ করিলেন। পুরোহিত কর্ত্বক তাঁহার
তেজোর্দ্ধি হওয়াতে তিনি পুনর্মার ত্রিলোকের আধিপত্য প্রাপ্ত
হইলেন।

যাঁহারা এই ইজ্রের স্বপদভ্রংশ ও স্থপদ প্রাপ্তি বিবরণ প্রাথণ করেন, তাঁহারা স্বোকে পদভ্রত হন না, কোন ব্যক্তি তাঁহাদের উপর দৌরাত্মাও করিতে পারে না।

तरस्त मस्रान रम नारे। क्रबाहरकत भूव श्रीष्ठकत, श्रीष्ठकरव्यत भूव मञ्जा, मञ्जासत भूव कम, करमत भूव विक्रम, विकासत भूव यस्त्रकृष्ट यस्त्रकरण्ड भूव र्ववर्षन, र्ववर्षत्तत भूव मराप्त्र, मराप्त्रत भूव कमीन, स्त्री-त्तत भूव कमरामन, क्रमान्तत भूव मरह्छ, (मरङ्ख्) मरह्छ्त भूव ক্ষত্রধর্মা, ইত্যেতে ক্ষত্রবৃদ্ধস্য। অতো নত্ববংশং বক্ষ্যামি, ইতি॥৮॥

ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থে ३° শে নিমি-। ব° শবিস্তারো নাম নবমো ২ধ্যা য়ঃ।

কত্রধর্মা। ই হারা কত্রজের সন্তান। অতঃপর নভ্ৰবংশ বর্ণন ' করিব।৮

বিষ্ণুপুরাণ চতুর্থ অংশ নিমিবংশবিস্তার নামক নবম অধ্যায় সমাপ্ত। विकुलूतानम् ।

চতুর্থোহংশঃ।

मन्याधायः ।

### পরাশর উবাচ ৷

যতি-যবাতি-সংযাতি-আযাতি-বিযতি-কৃতিসংজ্ঞা নত্বস্য ষট্ পুত্রা মহাবল-পরাক্রমা বভূবঃ । যতিস্ত রাজ্যং নৈচ্ছং। য্যাতিস্ত ভূভ্দভবং, উপনস্চ দুহিতরং দেব্যানীং শর্মিষ্ঠাঞ্চ বার্ধপর্বণীমুপ্যেমে ॥১॥

অত্রানুবংশশোকো ভবতি।

ু জহুঞাণুঞ্চ পুরুঞ্চ শর্মিষ্ঠা বার্ষপর্বণী॥২॥

পরাশর কহিলেন। নহুষের মহাবল পরাক্রান্ত ছয়টা পুত্র পরাছিল। এই ছয় পুত্রের নাম—যতি, যথাতি, সংযাতি, ট্যাতি, বিযতি ও কৃতি। বতি রাজ্য করিতে অভিলাম করিলেন গা যথাতি রাজা হইলেন। ইনি শুক্রের কন্যা দেবখানীকে ্র র্ষপর্কার কন্যা শর্মিষ্ঠাকে বিবাহ করিলেন।

ने शहरत वश्मकी र्जनार्थ अविषे श्लोक चार्ट रह, रमवद्यानी, व जूर्मस नारम मूटेंगे भूख श्रमत कतिरामन। इवश्रम उनस्र विकी, क्रांट्र, चार् ७ शूक्न नारम जिनकी भूख श्रमत करतन। কাব্যশাপাক অকালেনৈব য্যাভির্জরাম্বাপ॥ ৩॥
প্রসন্ধ্রক্রব্দনাক জরাং সংক্রাম্য়িতুং জ্যেষ্ঠং
পুত্রং যদুম্ উবাচ, ত্বমাভামহশাপাদিয়মকালেনৈব
করা মামুপস্থিতা। তামহং তস্যৈবাস্থাহাৎ ভবতঃ সঞ্চারয়াম্যেকং বর্ষসহত্রং, ন তৃপ্তোহিস্মি বিষয়েয়ু, ত্বয়সা
বিষয়ানহং ভোক্ত্মিক্সামি। নাত্র ভবতা প্রভ্যাধ্যানং
কর্ত্তব্যম্ ইত্যুক্তঃ স নৈচ্ছৎ তাং জরামাদাতুম্।
তঞ্চাপি পিতা শশাপ, ত্বপ্রস্তিন রাজ্যাহা ভবিষ্যতীতি॥ ৫॥

অনন্তরঞ্জ ক্রহুং তুর্বস্থম্ অণুঞ্চ পৃথিবীপতির্জরা-গ্রহণার্থং স্বযোবনপ্রদানায় চ চোদয়ামান। তৈরপ্যে-

শুক্রের শাপানুসারে যথাতি অকালে জরাগ্রন্ত হইলেন। প পরে শুক্র প্রসন্ন হইলে তাঁহার বাক্যানুসারে রাজা জরাসংক্রমিত করিবার নিমিন্ত জ্যেষ্ঠপুত্র যদুকে কহিলেন, ভোমার মাতামহের শাপে অকালে এই জরা আমাকে আক্রমণ করিয়াছে। একরে আমি তাঁহার অনুগ্রহে এই জরা ভোমার শরীরে সঞ্চারিত করিতে অভিলাব করিয়াছি। এক সহস্র বহুসর (ভোমাকে এট জরা বহুন করিতে হইবে।) আমি বিষয় ভোগে পরিভৃপ্ত হট্ নাই। আমি ভোমার যৌবন গ্রহণ করিয়া বিষয় ভোগে করিড়ে ইচ্ছা করি। তুমি এ বিষয়ে অসমত হইও না।

অনস্তর এই কথা শুনিয়া যদু সেই জরা গ্রহণে সম্মত হইলে; না। তথন য্যাতি তাঁহাকে শাপ প্রদান করিলেন যে, তোম বংশে কেহু রাজা হইবে না। পরে য্যাতি, দ্রুত্ত তুর্কসূত অগুরী করাগ্রহণ ও স্বীয় যৌবন প্রদানার্থ ক্রমণঃ অসুরোধ করিলেন কৈকশ্যেন প্রত্যাধ্যাতন্তাংশ্চ শশাপ। অব শর্মিষ্ঠাতনয়মশেষকনীয়াংসং পুরুং তবৈবাহ, স চাতিপ্রবণমতিঃ প্রণম্য পিতরং সবস্থানং, মহান্ প্রসাদোহরমস্মাক্ষ্, ইত্যুদারম্ অভিধায় জরাং প্রতিজ্ঞাহ, স্বনীয়ঞ্চ
যৌবনং পিত্রে দদৌ। সোহপি চ নবং যৌবনমাসাদ্য
ধর্মাবিরোধেন যথাকামং যথাকালোপপন্নং,যথোৎসাহং
বিষয়ং চচার, সমাক্ প্রজাপালনমকরোধ। ৬ !!

বিশ্বাচ্যা সহোপভোগং ভুক্ত্য কামানামন্তমবা-প্যামীত্যনুদিনং তন্মনক্ষে। বভূব ॥ १ ॥

অনুদিনঞ্ উপভোগতশ্চ কামানতীব রম্যান্ মেনে ॥ ৮॥

ই হারাও একে একে অসমত হইলেন। রাজা ই হাদিগকেও
লাপ প্রদান করিলেন। অনস্তর তিনি সর্ব কনিষ্ঠ পুরুকে
সেইরূপ কহিবামাত্র পুরু, আজ্ঞার অনুবর্তী হইয়া বহুমান
পুর্বক প্রণাম করিয়া কহিলেন, যার পর নাই অমুগৃহীত হইলাম। পুরু উদারভাবে এই কথা বলিয়া জরাগ্রহণ পূর্বক স্বীয়
যৌবন পিতাকে প্রদান করিলেন। যহাতিও নুতন যৌবন
প্রাপ্ত হইয়া ধর্মের অবিরোধে যথাকালে অভিলাষ অনুসারে
উৎসাহ অনুসারে বিষয় ভোগ করিতে প্রেক্ত ইলেন ও প্রজ্ঞান

বিশ্বাচী নামী অঞ্চরার সহিত উপভোগ করিলে বিষয় বাস-নার অবসান হইবে, এই ভাবিয়া রাজ। নিরস্তর তদ্গত-হৃদয় হইলেন। নিরস্তর উপভোগদারা ভোগ্যবস্তু সমুদায় তাঁহার

<sup>•</sup> কাসানভী ব'ভিরমণেন্ সেনে ইতি পাঠা ভরম্।

### তত শৈচবমগায়ত। যযাতিক্লবাচ।

ন জাতু কামঃ কামানামুপভোগেন শাম্যতি।

হবিষা ক্লকবর্ত্বের ভূয় এবাভিবর্দ্ধতে ॥ ৯ ॥

যৎ পৃথিব্যাং ত্রীহিষবং হিরণ্যং পশবঃ স্তিয়ঃ।
একস্থাপি ন পর্যাপ্তং তদিত্যতিত্বং ত্যজেৎ ॥ ১০ ॥

যদা ন কুরুতে ভাবং সর্বভূতেরু পাপক্ম।
সমদ্ষ্টেন্তদা পুংসঃ সর্বা এব স্থা দিশঃ ॥ ১১ ॥

যা দুন্ত্যজা দুর্মতিভির্যা ন জীর্যতি জীর্য্যতঃ।
ভাং তৃষ্ণাং সংভ্যজন্ প্রাজ্ঞঃ স্থেইনবাভিপূর্যতে ॥১২॥

আতীব রমণীয় বোধ হইতে লাগিল। (রমণীয়তর বিষয়ভোগ দারা তাঁহার সস্তোগভূফা দিন দিন রুদ্ধি হইতে আরম্ভ হইল।) দ অনস্তর তিনি পশ্চাদুক্ত এই গান্টী গাইয়াছিলেন।

যথাতি কহিলেন। ভোগা বস্তুর উপভোগ দারা কখনই ভোগতৃষ্ণা নির্ন্তি হয়না, প্রত্যুত হবিদ্যারা হুতাশনের ন্যায় ভোগদারা তাহা সমধিক প্রবল ও বর্দ্ধমান হুইতে থাকে। প্রত্যুত পৃথিবীতে ধানা বব সূবর্ণ পশু কামিনী প্রভৃতি যে সমুদায় ভোগা বস্তু আছে, তাহা এক জনের উপভোগানহে। (কোন ব্যক্তিই চিরকাল তাহা ভোগ করিছে পান না।) অভএব সমধিক ভোগতৃষ্ণা পরিত্যাগ করা কর্ত্তব্য। ত যখন মনুবোর, কোন জীবের প্রতি পাপভাব না থাকে, যখন সকলের প্রতি সমন্থিই হয়, তখন সমস্ত দিক্ আনন্দময় ও স্থখময় বোধ হুইতে থাকে। ত মুঢ় বাজিরা যে তৃষ্ণা কোন মতেই পরিত্যাগ করিতে পারে না, শরীর স্কীন হুইলেও যাহা স্কীন হয় না, তাহুশ

জার্য্যন্তি জীর্যাতঃ কেশা দন্তা জীর্যান্ত জীর্যাতঃ । ধনাশা জীবিতাশা চ জীর্যতোহিপ ন জীর্যাতি । ১৩।

পূর্ণং বর্ষসহত্রং মে বিষয়াসক্তচেতসঃ ।
তথাপ্যক্রিনং তৃষ্ণা মমৈতেত্বে জায়তে ॥ ১৪ ॥
তথাদেতামহং ত্যক্ত্বা ব্রহ্মণ্যাধায় মানসমূ।
নির্দ্বন্ধ্যো ভূত্বা চরিষ্যামি মৃব্যাঃ সহ॥ ১৫॥

#### পরাশর উবাচ।

পুরোঃ সকাশাদাদায় জরাং দত্তা চ যৌবনম্। রাজ্যেংভিষিচ্য পুরুঞ্চ প্রযযৌ তপদে বনম্। ১৬॥ দিশি দক্ষিণপূর্বস্যাং তুর্বস্থং প্রত্যথাদিশৎ।

তৃষ্ণা পরিত্যাগ করিয়া পশুতেরা সুখী হন। ' মনুষ্য জীর্ণ হইলে কেশ জীর্ন (পক) হয়। মনুষ্য জীর্ন হইলে দন্ত জীর্ন হয়, পরস্ত মনুষ্য জীর্ন হইলেও ধনাশাও জীবনাশা কখনই জীর্ন হয় না। ' পূর্ণ সহস্র বৎসর হইল, আমার চিন্ত বিষয়া-সক্ত হইয়া আছে, তথাপি আমার তৃষ্ণা দিন দিন সেই সমুদায় ভোগা বস্তুর প্রতিই ধাবমান হইতেছে। ' অত্তরব আমি এই সম্ভোগ-লালসা পরিত্যাগপুর্বক একমাত্র ব্রহ্মে মনঃ-সমাধান করিয়া নির্দ্ধিও নির্মাম হইয়া মৃগগণের সহিত (অরণ্যে) বিচরণ করিব। '\*

পরাশর কহিলেন। অনস্তর বয়তি, পুরুর নিকট জ্বরা গ্রহণপূর্বক ত্দীয় যৌবন তাঁহাকে প্রভার্পণ করিলেন। পরে তাঁহাকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিয়া তপস্যার্থ বন গমনে কৃত-সংক্পা হইলেন। ১০ তিনি দক্ষিণপূর্ব দিকে তুর্বস্থুকে, পশ্চিম প্রতীচ্যাং চ তথা ক্রম্থ দক্ষিণাপথতো যদুম্॥ ১৭॥ উদীচ্যাঞ্চ তথৈবাণুং ক্রত্বা মগুলিনো নৃপান্। সর্ব্বপৃথীপতিং পুরুং সোহভিষিচ্য বনং যথৌ॥ ১৮॥

ইতি ীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থেই পলে নিমিবণ শ-বিস্তারো নাম দশমোইধ্যায়ঃ।

দিকে দ্রুক্ত, দক্ষিণাপথে যদুকে, <sup>১</sup> উত্তর দিকে অণুকে, মগুলী রাজা (অধীন শাসনকর্ত্তা) করিয়া পুরুকে সমুদায় পুথিবীর রাজ্যে অভিষেক পুরুক বন গমন করিলেন।

বিষ্পুরাণ চতুর্থ অংশ নিমিবংশবিস্তার নামক দশম অধ্যায় সমাপ্ত।

## ं विक्यूत्रानग्।

চতুর্থোহংশঃ।

क्रांप्रभाष्ट्रभागः।

#### পরাশর উবাচ।

অতঃপরং যথাতেঃ প্রথমপুত্রদ্য যদেবিংশমহং
কথয়ানি। যতাশেষলোকনিবাদি-মনুষ্য-সিদ্ধ-গন্ধর্বযক্ষ-রাক্ষদ-গুহ্যক-কিম্পুরুষাপ্সর-উরগ-বিহ্গ-দৈত্য-দানব-দেবর্ধি-দ্বিজ্ববি-মুমুক্তির্ধর্মার্থকামমোক্ষার্থিতিঃ তৎফললাভায় দদাভিষ্টুভাপরিচ্ছেদ্যমাহাজ্যেরাংশেন ভগবাননাদিনিধনো বিষ্ণুরবৃত্তার ॥ ১ ॥

পরাশর কহিলেন। অতঃপর আমি যথাতির প্রথম পুত্র যদুর বংশ কীর্জন করিতেছি। ধর্ম অর্থ কাম মোক্ষ, এই চতুর্বগাতিলাধী সকল লোকনিবাসী মুমুক্ষু মনুধাগা সিদ্ধাণ গদ্ধর্মণা যক্ষণা রাক্ষসগা গুছ্কগণ কিল্পুরুষণা অক্সরোগণ উরগণা বিহ্গণা দৈতাগা দানবগণ দেবর্ষিণা ও ব্রহ্মধিগণ, চতুর্বগ কল লাভের নিমিন্ত সর্বদা ঘাঁহার স্তব করিয়া থাকেন, যাহার মাহাত্মোর ইয়ন্তা নাই, সেই অনাদি অনন্ত ভগবান্ বিষ্ণু, স্বীয় অংশ্রারা এই বংশে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন।

#### অত্ৰ ক্লোকঃ।

যাবতীর্ণং বিষ্ণাখ্যং পরং জ্রন্ধানিরাক্তি॥ ২॥
সহজ্ঞান্ধং-ক্রেন্ধ্র নল-রম্-সংজ্ঞান্ডবারা যদুপুত্রা
বভূরঃ। সহজ্ঞান্ধপুত্রঃ শতজ্ঞিং। তদ্য হৈহয়-বেণ্হয়াজয়ঃ পুত্রা বভূরঃ। হৈহয়াৎ ধর্মনেত্রঃ, ততঃ কুল্ডিঃ,
কুল্ডেঃ সাহঞ্জিঃ, তত্তনয়ো মহিয়ান্, তত্মাৎ ভত্রশ্রেণ্যঃ, ততো দুর্লমঃ, তত্মাৎ ধনকঃ, ধনকদ্য ক্রতবীর্যান
ক্রতাগ্রি-ক্রতবর্ম-ক্রতৌজসন্চত্বারঃ পুত্রাঃ। ক্রতবীর্যাদর্জ্বঃ সপ্তদ্বীপপতির্বাভ্সহজ্ঞী জজ্ঞে। যোহদৌ
ভগবদংশমত্রিকুলপ্রস্তং দত্তাত্রেয়াখ্যমারাধ্য বাত্ত-

এবিবরে একটা স্লোক আছি যে, বিষ্ণুনামে নিরাকৃতি পরম ব্রহ্ম, যে বংশে অবতীর্ন হইয়াছিলেন, সেই যদুবংশ শ্রবণ করিলে মনুষ্য, সমুদায় পাপপুঞ্জ হইতে বিনিমুক্তি হয়। ১

যদুর চারি পুত্র । তাঁহাদের নাম—সহস্রজ্ঞাৎ, ক্রোইটু, নল ও রঘু। সহস্রজ্ঞাতের পুত্র শতজিৎ। শতজিতের তিনটা পুত্র জন্মে। তাহাদের নাম হৈছয়, বেণু ও হয়। হৈছয় হইতে ধর্মানেত্র, ধর্মানেত্র হইতে ক্লুন্তি, কুল্ডি হইতে সাহপ্রি, সাহপ্রিইত মহিয়ান্, মহিয়ান্ হইতে ভক্রপ্রেলা, ভক্রপ্রেলা হইতে দুর্দান, দুর্দান হইতে ধনক, ধনক হইতে কৃত্রীর্ঘা, কৃত্যায়ি, কৃত

সহস্থ অধ্যানেবানিবারণং ধর্মেণ পৃথিবীজয়ং ধর্মতশ্চারপালনম্ অরাতিভ্যোহপরাজয়য়্ অধিলজগৎপ্রখ্যাত-পুরুবাজ স্ত্যুম্, ইত্যেতান্ বরান্ অভিলবিতবান্, লেভে চ। তেনেয়মশেষদ্বীপবতী পৃথী সমাক্
পরিপালিতা। দশযজ্ঞসহস্রাণ্যদাবযজ্ঞৎ। তস্য চ
ক্রোকোহদ্যাপি গীয়তে॥৩॥
নুনং ন কার্ত্বীর্যাস্য গতিং যাস্যন্তি পার্থিবাং।
যক্ত্রেদানৈস্তপোভির্বা প্রশ্রেণ দ্যেন চ॥৪॥

কটা বর প্রার্থনা করিয়াছিলেন যে, তাঁহার সহস্র বাছ হয়, অধর্যে প্রকৃত্তির না হয়, তিনি ধর্মানুসারে পৃথিবী জয় করিতে পারেন, ধর্মানুসারে পৃথিবী পালন করেন, শত্রুগণের নিকট পরাজিত না হন, সমুদায় লোকে বিখ্যাত পুরুষ হইতে তাঁহার মৃত্যু হয়। অর্জ্জুন, এই সমুদায় বর প্রাপ্ত হইয়া অসম্ব্যু দ্বীপ সহিত এই পৃথিবী উদ্ভমরূপে পালন করিতে লাগিলেন। তিনি দশ সহস্র যজ্ঞ করিয়াছিলেন। তদ্বিয়ে অদ্যাপি একটা শ্লোক পঠিত হইয়া থাকে, যথা।

যজ্জারা দানদারা তপ্যাদারা বিনয়দারা বা দ্মদারা কোন রাজাই কার্ত্তবীর্যা অজ্জনের সমকক হইতে পারিবে না 1 °

শারে প্রাণিদ্ধি আছে যে, কার্ত্তবীর্য্যের মাম স্মরণ ও কীর্ত্তন করিলে অদাপি প্রনেষ্ট দ্রব্য প্রাপ্ত হওয়া যায়। কুর্মপুরাণে আছে যে "অনষ্ট-দ্রব্যতা চৈব তব নামাভিকীর্ত্তনাথ। । । । ।

হরিবংশে কথিত হইয়াছে যে, রাবণ দিখিক্সমার্থ বহিগত হইয়া নর্মদা নদীর নিকট শিবির সনিবেশ করিয়াছিলেন। ঐ সময় কার্স্তবিধ্যি অর্জ্জুন, সহত্রা বাড্ডারা নর্মদার স্রোতোরোধ করিয়া অন্তঃপুর-চারিণী রমণীদিগের সহিত ক্রীড়া করিতেছিলেন। পরস্তু নন্মদার স্রোত অবক্লক্ষ হওয়াতে অল বৃদ্ধি হইয়া রাব-বেব শিবির প্লাবিত করিল। তখন রাবণ অর্জ্জুনকে পরাজয় করিবার জন্য অনষ্টদ্রব্যতা চ তদ্য রাজ্যেহতবৎ ॥ ৫॥

এবং পঞ্চাশীতিসহসাণ্যকানব্যাহতারোগ্যত্রীবল-পরাক্রমো রাজ্যমকরোৎ। মাহিয়ত্যাং দিখিজয়াত্যা-গতো নর্মদাজলাবগাহনক্রীড়ানিপানমদাকুলেনাযত্ত্বে-নৈব তেনাশেষ-দেব-দৈত্য-গন্ধর্কেশ-জয়োজ্ত্ ত-মদাব-লেপোহপি রাবণঃ পশুরিব বদ্ধা স্বনগরেকাত্তে স্থাপিতঃ॥৬॥

কোর্ন্তবীর্ষ্যের এতদূর মাহাস্মা ছিল যে) তাঁহার রাজ্যে কখন কোন দ্রব্য হারাইত না। তিনি অব্যাহত আরোগ্য, অব্যাহত লক্ষ্মী, অব্যাহত বল ও অব্যাহত পরাক্রম পাইয়া এই রূপে পঞ্চাদীতি সহস্র বৎসর রাজত্ব করিলেন।

একদা রাবণ, মাহিয়াতী পুরীতে দিগ্রিজয়ার্থ উপস্থিত হইয়াছিলেন। তিনি সমুদায় দেব দৈত্য ও গল্পপ্রতিদিগকে পরাজয় করিয়া অহঙ্কারে মক্ত হন। (রাবণের মাহিয়াতী পুরীতে
উপস্থিতি সময়ে) কার্ত্তবিমি, নর্মাদা নদীর সলিলে অবগাহন
করিয়া ক্রীড়া করিতেছিলেন। তিনি (বাহুছারানদীর স্রোত
অবরোধ করিয়া) নিপান প্রস্তুত করণ পূর্মক ক্রীড়ায় মন্ত
ও জাকুল ছিলেন। তিনি সে সময় অয়য় পূর্মক রাবণকে পশুর
ন্যায় বন্ধন করিয়া নগরের এক প্রাস্তে রাখিলেন। \*

ভাঁচার মিকট যুদ্ধার্গ উপস্থিত হউলেন। অর্জনুন, অলবিহারের সময় যুদ্ধ না করিয়া বাৰণকে নাঁথিয়া মগরীর এক প্রাত্তে রাখিয়া পুনর্বার বিহারে প্রাত্ত ইউলেন।ঃ

যঃ পঞ্চাশীতিবর্ষসহত্রোপলক্ষণকালাবসানে ভগ-বর্মারায়ণাংশেন পরশুরামেণ উপসংহৃতঃ। তস্য পুত্রশতং, প্রধানাঃ পঞ্চ পুত্রা বভূবঃ, শূর্-শূরসেন-র্ষণ-মধুধক-জয়ধকসংজাঃ। জয়ধকাৎ তালজঙ্যঃ পুত্ৰোহভবৎ। তালজজন্য তালজজাধ্যং পুত্ৰশতমাদীৎ 1 যেষাং জ্যেষ্ঠো বীতিহোত্রঃ, তথান্যো ভরতঃ, ভরতাৎ র্ষ-স্ক্রজাতৌ চ। র্ষস্য পুত্রো মধুরভবৎ। তস্যাপি বৃষ্ণি-প্রমুখং পুত্রশতমাদীৎ। যতো বৃষ্টিদংজ্ঞামেতদ্যোত্র-মবাপ। মধুসংজ্ঞাহেতুশ্চ মধুরভবৎ। যাদবাশ্চ यमूनारमाननकनार ॥ १॥

### ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থে ২^শে वकामत्ना २ था सः ।

কার্ত্তবীর্ষ্যের রাজন্বের পঞ্চাশীতি সহস্র বৎসর অভীত হইলে ভগবান্ নারায়ণের অংশ পরগুরাম, উাহাকে বিনাশ করিলেন। এই অজ্জুনের একশত পুত্র হইয়াছিল। তন্ত্রে। পাঁচটা পুত্র প্রধান। এই পঞ্চ পুত্রের নাম শূর, শূরদেন, इरन, मध्यक ७ जग्रसक।

জয়ধ্যত্ৰ হইতে তাললজা নামে পুত্ৰ উৎপন্ন হইল। ভাল-কজের একণত পুত্র হইয়াছিল, ইছারাও ভালজজ নামে বিখ্যাত। এই শত পুত্রের মধ্যে জ্যেষ্ঠের নাম বীতিহোত্ত। ছিতীয়ের নাম ভরত। ভরত হইতে রুষ ও সুজাত নামে দুইটী পুত্র উৎপন্ন হইল। ব্রষ হইতে একটী পুত্র জান্মিল, ডাহার নাম
নধু। এই নধু হইতে ব্রফি প্রভৃতি একশত পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল।
এই ব্রফি হইতেই এই গোত্র ব্রফি নাম প্রাপ্ত হইয়াছে। উক্ত
নধুই এই বংশের মধুনাম প্রাপ্তির কারণ। ই হারা যদুবংশোৎপন্ন বলিয়া যাদ্ব নামে বিখ্যাত হইয়াছেন।

বিষ্ণুপুরাণ চতুর্থ অংশ নিমিবংশবিস্তার নামক একাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

# विक्यूत्रावम्।

চতুর্থোঽংশ: ।

वानभाशायः।

#### পরাশর উবাচ।

ক্রেফ্রিক যদুপুরস্যাত্মজো বৃজিনীবান্। ততশ্চ স্বাহিঃ, ততো রুযক্রঃ, রুষদ্যোশ্চিত্ররথঃ,\* তত্তনয়ঃ শশবিন্দৃঃ চতুর্দিশমহারত্মক্রবর্তী অভবং॥১॥ তগ্য চ শতসহত্রং পত্নীনামভবং। দশলক্ষ-

পরাশর কহিলেন, যদুনন্দন ক্রোষ্ট্রর একটা পুত্র হইল।

ঐ পুত্রের নাম র্জিনীবান্। র্জিনীবানের পুত্র স্বাহি, স্বাহির
পুত্র রুষক্র (রুষদ্ধ) রুষক্রর পুত্র চিত্ররথ, চিত্ররথের পুত্র
শশবিন্দু। এই শশবিন্দু চতুর্দ্দশ মহারত্র বিশিষ্ট \* চক্রবর্ত্তী
ছিলেন। ই হার এক লক্ষ্ণ পত্নী ও দশলক্ষ পুত্র হইরাছিল।

সমাট্দিনের সর্ব-শ্রেষ্ঠ চতুর্দণ বস্তুর নাম চতুর্দণ রন্ধ। ব্রখা—চক্ররন্ধ রথরন্ধ, মনিরন্ধ, ঋড় গরন্ধ, চর্ম্মরন্ধ, কেতুরন্ধ, নিধিরন্ধ, এই সমস্ত রন্ধ জীবন হীন। ভার্য্যারন্ধ, পুরোহিতরন্ধ, সেনানীরন্ধ, রথকাররন্ধ, পদাতিরন্ধ, অশ্বরন্ধ, হস্তিরন্ধ, এই সাতটী রন্ধ জীবনবিশিষ্ট। এই চতুর্দণ প্রকার বস্থার মধ্যে যাহা রন্ধ অর্থাৎ সর্বেলাৎকৃষ্ট ভাহাই সমাটের সম্পতি। ১

<sup>•</sup> ততো রুষদ্ভ:, রুষদেগালিক রুরথ ইতি পাঠান্তরুম্।

সন্থ্যাশ্চ পুত্রাঃ। তেষাঞ্চ পৃথু যশাঃ, পৃথু কর্মা, পৃথু জয়ঃ, পৃথু দানঃ, পৃথু করিঃ, পৃথু এবাঃ, ষট্ পুত্রাঃ প্রধানাঃ। পৃথু এবসঃ পুত্রঃ তমঃ, তত্মাদুশনাঃ। যো বাজিমেধানাং শতম আজহার। তস্য চ শিতে মুর্নাম পুত্রো হভূৎ \* তদ্যাপি রুক্যুক্বচঃ, ততঃ পরাবৃৎ, পরাবৃতো রুক্যুক্ত্যু-জ্যামঘ-পালিত-হরিত সংজ্ঞাঃ তদ্য পঞ্চাত্মজা বভূবুঃ। অত্রাদ্যাপি জ্যামঘদ্য শ্লোকো গীয়তে॥ ২॥

ভার্যাবশ্যান্ত যে কেচিন্তবিষ্যন্ত্যথবা মৃতাঃ। তেষান্ত জ্যামখঃ শ্রেষ্ঠঃ শৈব্যাপতিরভূৎ নৃপঃ॥ অপুত্রা তম্য সা পত্নী শৈব্যা নাম তথাপ্যমৌ। অপত্যকামোহপি ভয়াৎ নান্যাং ভার্যামবিন্দ্ত॥

এই সমুদায় পুত্তের মধ্যে, পৃথুষশাঃ, পৃথুকর্মা, পৃথুকয়, পৃথুদান, পৃথুকীর্ত্তি ও পৃথুশ্রবা, এই ছয়টী পুত্রই প্রধান ছিলেন 1

পৃথুশ্বার পুত্র তম, তম হইতে উপনা জন্ম পরিগ্রহ করেন।
এই উপনা সহস্র অশ্বমেধ যজ্ঞ করিয়াছিলেন। ই হার একটা
পুত্র হইয়াছিল। তাহার নাম শিতেয় (শিতেয়ু)। শিতেয়র পুত্র রুকাক্বচ, রুকাক্বচের পুত্র পরারং। পরারং হইতে
রুকোয়, পৃথুরুকায়, জ্যামঘ, পালিত ও হরিত, এই পঞ্চ পুত্র
উৎপন্ন হইল। ইহার মধ্যে জ্যামঘর বিষয়ে অদ্যাপি একটা
লোক পঠিত হইয়া থাকে। এই ভুমগুল মধ্যে যে সকল
জৈল পুরুষ জন্মিয়াছে বা জন্ম গ্রহণ করিবে, তন্মধ্যে শৈব্যার
স্থামী জ্যামঘ নামক রাজাই শ্রেষ্ঠ। এই রাজা জ্যামঘের

স ত্বেকদাতিপ্রভূত-গজতুরগ-সংমর্দ্দেনাতিদারুণে মহাহবে যুধ্যমানঃ সকলমেবারাতিচক্রমজয়ৎ। তচ্চারি-চক্রমপাস্ত-পুত্রকলত্রবন্ধুবলকোষং স্বমধিষ্ঠানং পরি-ত্যজ্য দিশঃ প্রবিক্রতম্॥ ৩॥

তিষ্মিন্ চ বিজ্ঞতেইতিত্রাসালোলায়তলোচনযুগলং ত্রাহি তাত। ভাতঃ। ইত্যাকুলবিলাপবিধুরং রাজ-কন্যারত্বমদ্রাক্ষীৎ॥৪॥

তদ্বৰ্শনাচ্চ তদ্যামৰুৱাগাৰুগতান্তরাত্ম। স ভূপো-ইচিন্তয়ং॥৫॥

সাধিদং মমাপত্যবিরহিত্স্য বন্ধ্যাভর্ত্তঃ সাম্প্রতং

পত্নী শৈব্যার সন্তান হয় নাই। জ্ঞামঘ পুত্রার্থী হইরাও ভয়ক্রমে অন্য নারীর পাণিগ্রহণ করিতে পারেন নাই।

এই রাজা এক সময় অভিদারণ মহাসংগ্রামে প্রভৃত গজ ত্রগরপ সংমর্দ্ধারা যুক্ষ করিতে করিতে সমুদায় বিপক্ষ পক্ষ পরাজয় করিলেন। তাঁহার শত্রুগণ, প্রত্র কলত্র বন্ধু ধনাগার সৈন্য সামস্ত ও নিজরাজধানী, সমুদায় পরিত্যাগ পূর্বাক দিক্ দিগস্তরে পলায়ন করিলে। বিপক্ষবর্গ পলায়ন করিলে তিনি দেখিলেন যে, (অলোক সামান্য রূপলাবণ্য সম্পন্ন) রত্ব স্বরূপ একটী রাজক্র্যা (ভয়বিহ্বলা হইয়া) রোদন করিতেছে ও এই বলিয়া আকুলিত বচনে কাতর স্বরে বিলাপ করিতেছে যে, পিতঃ! রক্ষা কর, ভ্রাতঃ! রক্ষা কর। এই কন্যার আয়ত লোচন মুগল ত্রাস হেতু ইতস্তত নিক্ষিপ্ত হইতেছে।

রাজা এই কন্যারত্নকে দর্শন করিবামাত্র অনুরাগাকৃষ্ট-হৃদয় হইয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন, " আমি বন্ধা রমণীর ভর্তা, বিধিনাপত্যকারণং কন্যারত্বমুপপাদিতম্ ৷ তদেতৎ উদ্বামি ৷ অথ চৈনাং স্যাদন্মারোপ্য স্বাধিষ্ঠানং নয়ামি ৷ ৬ ৷৷

তথৈব দেব্যাহমন্ত্রতাতঃ সমুদ্ধক্ষ্যামীতি। অথৈনাং রথমারোপ্য স্বনগর্মাগচ্ছৎ॥ ৭॥

বিজয়িনঞ্চ রাজানমশেষপৌরভৃত্য-পরিজনামাত্য-সমবেতা শৈব্যা দুর্ভুমধিষ্ঠানদ্বারমাগতা॥ ৮॥

সা চ অবলোক্য রাজ্ঞঃ সব্যপার্শ্বর্ত্তিনীং কন্যামী-বদুজূতামর্যস্কুরদধরপল্লবা রাজান্ম অবোচৎ, অভিচপল-

আমার সন্তান হয় নাই, বিধাতা আমার সন্তানের নিমিত্ব
এই উত্তম কন্যারত্ব উপস্থিত করিয়াছেন। আমি ইহাকে বিবাহ
করিব। এক্ষণে আমি ইহাকে রপে তুলিয়া নিজ রাজধানীতে
লইয়া যাই। (রাজধানীতে উপনীত হইয়া) দেবীর অসুমতি লইয়া পরে ইহার পাণিগ্রহণ করা যাইবে। রাজা এইরূপ বিবেচনা করিয়া রাজকন্যাকে রথে আরোপণ পূর্মক স্থায়
রাজধানীতে গমন করিলেন।

রাজা যথন বিজয়ী হইয়া রাজধানীতে প্রবেশ করেন, তখন, বৈশবাা (তাঁহার সম্মান বর্জনের নিমিন্ত) পৌরগণ ভ্তাগণ পরিজনগণ ও অমাতাগণে পরিব্রতা হইয়া সাক্ষাৎ করণাশয়ে নগরদারে উপনীত হইলেন। শৈবাা রাজার বাম পার্যে একটা রাজকন্যা দেখিয়া অমর্যাম্বিতা হইলেন। তাঁহার অধরপল্লব অমর্ব ভরে ঈবং ফ্রিড হইতে লাগিল। তিনি রাজাকে কহিলেন, এই রপোপরি চঞ্চল-হৃদ্যা যে এই একটী কন্যা দোখতেছি, ইনি কে? রাজা ভয়হেছু (এককালে ইতিকর্ত্বিয়তা-

চিত্তাত স্থাননে কেয়মারোপিত। ইতি। অসাবপ্যনা-লোচিতোত্তরবচনোহতিভয়াৎ তামাহ, সুষা মমেয়-মিতি॥ ১॥

#### ष्यदेशनः टेमट्याविक ।

নাহং প্রস্থতা পুত্রেণ নান্যা পত্ন্যভবৎ তব। সুযাসংবন্ধবাচ্যৈয়া কতমেন স্থতেন তে। ১০॥

## পরাশ্ব উবাচ ।

ইত্যাত্মের্ব্যাকোপ-† কলুষিত-বচনমুবিতবিবেকতয় দুরুক্তপরিহারার্থমিদমবনীপতিরাহ॥ ১১॥

যত্তে জনিব্যত্যাত্মজঃ তস্তেয়মনাগতমেব ভার্য্য

শূন্য হইয়া) কি উন্তর করা কর্ত্তবা, তাহা পর্যালোচনা না করিয়াই তাঁহাকে কহিলেন, এই কনাটী আমার পুত্রবধূ। অনন্তর শৈব্যা তাঁহাকে কহিলেন, আমি পুত্র প্রদাব করি নাই, তুমিও অন্য পত্নী পরিগ্রহ কর নাই। এই কন্যাটীকে পুত্রবধূ বলিতেছ। তোমার কোন্ পুত্রের সম্বন্ধে ইনি পুত্রবধূ হইলেন ? °

পরাশর কহিলেন। রাজার প্রতি শৈব্যার কোপ ও ঈর্ষা। হওয়াতে রাজার বাক্য কলুবিত ও বিবেচনা অপহাত হইল। তিনি অসম্ভাবিত বাক্য পরিহারের নিমিক্ত এইরূপ কহিলেন যে, '' তোমার গর্ডে যে সম্ভান উৎপন্ন হইবে, তাহার নিমিক্তই

কুৰাসমন্তৰাক্ চৈৰা ইত্যপি পাঠঃ।
 † ইত্যাবেইভাৰ্ব্যেৰ্য্যাকোপ—ইভি কেচিং পঠিছ।

নিরূপিতা, ইত্যাকর্ণ্যোজূতমৃদুহাসা তথেত্যাহ, প্রবি-বেশ চ রাজ্ঞা সহাধিষ্ঠানম্,\* ইতি ॥ ১২ ॥

অনন্তরঞ্চাতিশুদ্ধলগ্নহোরাংশকাবয়বোক্ত-রুতপুত্র-জন্মালাপগুণাৎ বয়সঃ পরিণামমুপগতাপি শৈব্যা স্বল্পৈরেবাহোভির্মভিমবাপ॥ ১৩॥

কালেন চ পুত্ৰমজীজনৎ ৷ তক্ত চ বিদৰ্ভ ইতি পিতা নাম চক্ৰে ৷ স চ ভাং স্কুষামুপ্যেমে॥ ১৪॥

তত্যাঞ্চাদো ক্রথকেশিকসংজ্ঞাপুত্রাবজনয়ৎ।
পুনশ্চ তৃতীয়ং রোমপাদসংজ্ঞং কুমারমজীজনৎ।
রোমপাদাদ্দঃ, বজোঃ পুত্রো ধৃতিঃ। বেনশিকস্যাপি
আয়ে এই নববধ স্থির করিয়া রাখিলাম। শৈবাা রাজার
এই কথা শুনিয়া ঈবৎ হাস্য করিলেন এবং কহিলেন, তাহাই
হইবে। শুনস্থার রাজা মহানগরে প্রবেশ করিলেন। অতিবিশুদ্ধ লায়া, বিশুদ্ধ হোরা, বিশুদ্ধ অংশক ও বিশুদ্ধ অবয়বে
(তাহাই হইবে অর্ধাৎ পুত্র উৎপন্ন হইবে, এই কথা) বলাতে
শৈব্যা পরিণতবয়কা হইয়াও অন্প দিনের মধ্যেই গর্জ ধারণ
করিলেন। শুনু উথ্যার একটী পুত্র উৎপন্ন হইল।

পরে বিদর্ভ হইতে ঐ রাজকন্যার গর্ভে দুইটী পত্র হইল। এই দুই পুত্রের নাম ক্রণ ও কৌশিক। পরে আর একটী সন্তান হইল, তাহার নাম রোমপাদ। রোমপাদের পুত্র বক্র, বক্রুর পুত্র ধৃতি।

রাজা ঐ পুতের বিদর্ভ এই নাম রাণিলেন। পরে বিদর্ভ

(महे त्राक्षकनारिक विवाह करतन। <sup>28</sup>

<sup>•</sup> अधिदिन ह श्रीका मशिक्षिमम् इष्टि वा शेठालाम् ।

চেদিঃ\* পুত্রোহভূৎ মস্থ সন্তত্তে চিদ্যা ভূপালাঃ ৷ ক্রথস্থ সুযাপুত্রগ্য পুত্রঃ কুন্তিরভবংশ ॥ ১৫ ॥

কুন্তেবৃ ফিঃ, বৃদ্ধেনিবৃতিঃ, নিবৃতেদশার্হঃ, ততশচ
ব্যামা, তথাদপি জীমূতঃ, বৃত্তাপি বংশক্তিঃ;,
ততো ভীমর্থঃ, তথাৎ নবর্থঃ, ততশচ দশর্থঃ,
তদ্য শকুনিঃ, ততনয়ঃ কর্ডিঃ, কর্ডেদেবরাতো২ভবৎ। তথাৎ দেবক্ষ্ত্রঃ,\* ভদ্য মধুঃ, মধোরনবর্থঃ, অনবর্থাৎ কুরুবৎসঃ,† ততশচামূর্থঃ, ততঃ

কৌশিকের একটী পুত্র হইল, তাহার নাম চেদি। চৈদ্য নামে ভূপালগণ, এই বংশে জন্ম পরিগ্রহ করেন। উক্ত জ্যাম-ঘের পুত্রবধূর পুত্র ক্রথ ছইতে কুন্তি উৎপন্ন হইলেন। ° কন্তির পুত্র রক্ষি, রক্ষির পুত্র নির্কৃতি, নির্কৃতির পুত্র দশার্হ্য, দশার্হের পুত্র বেয়ামা, ব্যোমার পুত্র জীমুত, জীমুতের পুত্র বংশকৃতি, (বিকৃতি) বংশকৃতির পুত্র ভীমরথ, ভীমরথের পুত্র নবরথ, নবরথের পুত্র দশর্থ, দশরথের পুত্র শকুনি, শকু-নির পুত্র করন্তি, করন্তির পুত্র দেবরাত, দেবরাতের পুত্র দেবক্ষক্র, দেবক্ষক্রের পুত্র মধু, মধুর পুত্র অনবরথ, (নবরথ) অনবরথের পুত্র ক্রেবৎস, ক্রেবৎসের পুত্র অনুরথ, অনুরথের পুত্র পুরু-

<sup>•</sup> বজো: পুরো ছতিঃ, খ্ডে: পুরু: কেনিক:, কেনিকস্যাপি চেনিঃ ইতি প্রামানিক: পাঠঃ।

<sup>🕈</sup> ক্রথস্য সুষাপুত্রস্য কুন্তিরভবং ইতি বহব:।

<sup>‡</sup> বিকৃতিরিতি নামাত্তবম্ া

তন্মাদেবক্ষত্র ইতি, তন্মাদেবক্ষত্র ইতি চ পৃথক্ পাঠ:।
 ক মধোর্মবরথ:, মবরথাং কুরুবংশ ইতি কুচিং পাঠ:।

পুরুহোত্রো জজ্ঞে। ততক্ষ অংশঃ\*, ততক্ষ সত্তঃ, সত্তাদেতে সাত্তাঃ॥ ১৬॥

ইত্যেতাং জ্যামঘদন্ততিং সম্ক্রাদ্মান্তঃ শ্বা স্ক্রপার্থঃ প্রমুচ্যতে ॥ ১৭॥

# 

হোত্র, পুরুহোত্রের পুত্র অংশ, অংশ হইতে সত্বত উৎপন্ন হইলেন। এই সত্বত হইতে সাত্বতবংশ বিস্তীর্ণ হইয়াছে। ১৩

উত্তম শ্রেকা সমন্বিত হইয়া এই জ্যামঘ বংশ প্রবণ করিলে মনুব্যগণ সমুদায় পাপপুঞ্জ হইতে বিনিমুক্তি হইতে পারে।

বিষ্ণুপুরাণ চতুর্থ অংশ নিমিবংশবিস্তার নামক দাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

<sup>•</sup> ততশ্চ অংকরিতি নামা**ত্ত**ন্ম।

## विकुशूत्रागम् ।

চতুর্থোইংশঃ।

ত্রোদশাধ্যায়ঃ।

#### পরাশর উবাচ।

ভজিন-ভজমান-দিব্যান্ধক-দেবাবৃধ মহাভোজ-বৃক্তি-সংজ্ঞাঃ সত্বতস্য পুত্ৰা বভূবুঃ॥ ১॥

ভজমানস্য নিমি-বৃকণ-বৃষ্ণয়ঃ,\* তথান্যে তদ্বিমাত্রাঃ শতাজিৎ-সহজাজিৎ-অমুতাজিৎ-সংজ্ঞাঃ॥ ২ ॥
দেবাব্ধস্যাপি বজ্ঞঃ পুরোহভূৎ। তস্য চ অয়ৎ
শ্লোকো গীয়তো ॥ ৩॥

পরাশর কহিলেন। সত্তের অনেকশুলি পুত্র হইয়াছিল।
তাহাদের নাম—ভজিন, ভজমান, দিব্য, অন্ধক, দেবার্ধ, মহাভোজ
ও রফি। ভজমানের এক স্ত্রীর গর্জে নিমি রকণ (কুকণ) ও
রফি (রিমি) এই তিন পুত্র এবং অন্য স্ত্রীর গর্জে শভাজিৎ,
সহস্রাজিৎ ও অযুতাজিৎ, এই তিন পুত্র উৎপন্ন হইল। দিবার্ধ ও
বক্রর বিষয়ে এই একটী শ্লোক পঠিত হইরা থাকে যে, ত

<sup>\*</sup> নিমিককণর শয় ইতি কেচিৎ পঠিছ।

<sup>†</sup> দেবার্ধস্যাপি বজ্র: স্রভোধপুর। তারোকেটেম গারোতে ইতি বসীক্রশিতপুদ্ধক্স্য পাঠ:।

যথৈব শৃণুমো দূরাদপশ্যামন্তথান্তিকাৎ ।
বক্তঃ শ্রেষ্ঠো মন্মাণাং দেবৈদেবাবৃধঃ সমঃ॥ ৪॥
পুরুষাঃ ষট্চ ষ্টিশ্চ ষট্ সহস্রাণি চাফ চ ।
বেহমৃতত্ত্বমন্ত্রপ্রাপ্তা বজোদেবাব্ধাদপি॥ ৫॥
মহাভোজস্ত্তিধর্মাত্মা । তস্যাশ্বয়ে ভোজা মার্তি-কাবতা বভূবুঃ॥ ৬॥

রুষ্ণেঃ স্থমিতাে যুধাজিচ্চ পুত্রোহভবং । ততশ্চা-নমিত্র-শিনী তথা । ৭॥

ভন্মত্রাশ্লিখ্নঃ, নিম্নদ্য প্রসেন-সত্রাজিতী। ভস্য চ সত্রাজিতস্য ভগবানাদিত্যঃ সধা অভ-বং॥৮॥

একদা তু অন্তোধেন্তীরসংশ্রয়ঃ সূর্যাং সত্রাজিত-

— আমরা দূর হইতে যেরপ শুনিতাম, নিকটে আসিয়াও অবিকল সেইরপ দেখিলাম। বক্ত সমুদায় মন্ত্রের মধ্যে শ্রেষ্ঠ এবং দেবার্ধ দেবতার তুল্য। ছয় হাজার ছব্ডি, আর আট জন মনুষা, বক্ত ও দেবার্ধ হইতে অর্থাৎ তাঁহা-দের উপদেশানুসারে মুক্তি লাভ করিয়াছে কম্যাভোজ বা ভোজ অভিধর্মাত্মা ছিলেন। মৃক্তিকাবত নামক প্রদেশবাসা ভোজগা, এই বংশে উৎপন্ন হইয়াছেন। \*

র্ফির দুইটী পূত্র উৎশন্ন হইল। তাহাদের নাম স্থাত্র ও মুধাজিছে। সুমিজের দুই পূত্র জন্মে, তাহাদের নাম অন-মিত্র ও শিনি। অনমিজের পূত্র নিম্ন, নিম্নের পূত্র প্রসেন ও স্তাজিত। ভগবান্ দিবাক্র, এই স্তাজিতের স্থাছিলেন। ৮ কোন সময় এই স্তাজিত সাগ্রতীরে অবস্থান পূর্মক সূর্যাের স্তুমাব । তম্মনস্কতয়া চ ভাসানভিট্য়মানো এওস্তম্য তহো । অস্পটমূর্তিধরং চৈনমালোক্য সত্রাজিতঃ স্থ্যমাহ, যথৈব ব্যোমি ত্বাং বহ্নিপিণ্ডোপমমহমপশ্যং তথৈবাদ্যাগ্রতো গতমপ্যত্র ন কিঞ্ছিরগবতা প্রসাদী-কৃতং বিশেষমুপলক্ষয়মি॥ ৯॥

ইত্যেবমুক্তে (ভগবতা) সূর্য্যেণ নিজকণ্ঠাদুমুচ্য স্যমন্তকনামা মণিরবতার্যা একাত্তে ন্যস্তঃ ৷ ভতস্ত-মাতাশ্রেজ্জল-হুস্ববপুষ্ম ইম্বদাপিক্লনয়নমাদিত্যমদ্রা-ক্ষীৎ। ক্রতপ্রণিপাতস্তবাদিকঞ্চ সত্রাজিতমাহ ভগবান্, বরম্মত্তোহভিমতং র্ণীম্বেডি। স্বত্দেব মণিরজু-

ত্তব করিতে লাগিলেন। তিনি একাথ-ছদয় হইয়া স্ততি পাঠ
করাতে দিবাকর তাঁহার সমাথে আসিয়া দণ্ডায়দান হইলেন।
সত্রাজিত, তাঁহাকে অসপট মূর্ত্তিধারী দেখিয়া কহিলেন,
আমি আপনাকে আকাশমণ্ডলে যেরপে অগ্রিপিণ্ডের নাায় দেখিয়াছি, এক্ষণে আপনি আদার সমীপবর্ত্তী হইলেও অবিকল
সেইরপই দেখিতেছি। অধুনা এস্থলে আপনকার প্রান্মতার
চিত্রুস্বরূপ কোন বিশেষ প্রত্যক্ষ করিলামনা। স্ত্রাজিত এই
কথা বলিবামাত্র দিবাকর স্থীয় কণ্ঠদেশ হইতে সামস্তক নামক
মণি উল্মোচনপূর্বাক এক পাশ্বে নামাইয়া রাখিলেন। অনস্তর
সত্রাজিত, ঈষৎ তাত্রবর্ণ উজ্জ্ল ভ্রুম্ব শরীর বিশিষ্ট ঈষৎ পিল্ললনয়ন দিবাকরকে দর্শন করিলেন। পরে তিনি প্রণিপাতপূর্বাক
স্ত্রতিপাঠাদি করিলে ভগবান্ আদিত্য তাঁহাকে কহিলেন,
তোমার যাহা ইচ্ছা হয়, আমার নিকট বর প্রার্থনা কর।

<sup>•</sup> অ, গ্ৰোজ্ঞানজপৰপুষণু ইতে কৃচিৎ প'ঠঃ।

মযাচত। স চাপি তবৈ তৎ দত্ত্বা বিয়তি স্বং ধিক্ষ্যমারু-রোহ॥ ১০॥

সত্রাজিতো ২প্যমলমণিরত্ব-সনাথ-কণ্ঠতয়। সূর্য্য ইব তেজোভিরশেষ- দিগভরাণু দ্ভাসয়ন্ দারকাং বিবেশ ॥ ১ ॥

দারকীবাসিজনপদস্ত তমায়ান্তমবেক্ষ্য ভগবন্তমনাদিপুরুষং পুরুষোজমন্ অবনিভারাবতারণায়াংশেন
মানুষরপ্রধারিণং প্রণিপত্যাহ, ভগবন্! ভগবন্তময়ং
কুনং দ্রুষ্ট্রমায়াত্যাদিত্যঃ। ইত্যাকর্ণ্য প্রহম্য চ তানাহ
ভগবান্, নায়মাদিত্যঃ, সত্রাজিতোহয়মাদিত্য-দত্তং
স্যমন্তকাখ্যং মহামণিং বিভাদত্রোপায়াতি। তদেনং
বিশ্রনাঃ পশ্যত, ইত্যুক্তান্তে যয়ঃ 11 ১২ ॥

সত্রাজিত সেই দিব্য মণিরত্ব প্রার্থনা করিলেন। দিবাকরও তাঁহাকে সেই মণিরত্ব প্রদান করিয়া আকাশে স্বস্থানে আরুঢ় হইলেন। ' সত্রাজিতও সেই নির্মাল মণিরত্ব কণ্ঠে ধারণ করাতে তেজোদারা স্থা্যের ন্যায় সমুদায় দিক্ বিদিক্ সমু-দ্যাসিত করিয়া দারকায় প্রবেশ করিলেন। '

ছারকাবাদী জনগণ, তাঁহাকে আসিতে দেখিয়া, পৃথিবীর ভার অবতারণের নিমিক্ত অংশছারা মনুষারূপধারী অনাদি পুরুষ ভগবান্ পুরুষোজ্ঞার নিকট উপস্থিত হইয়া প্রণিপাত পূর্বাক কহিল, ভগবন্! আমরা বোধ করি, ভাক্ষর আপনাকে দর্শন করিবার নিমিক্ত ঐ আগমন করিতেছেন। ভগবান্ কৃষণ, এই কথা শুনিয়া ঈষৎ হাস্য পূর্বাক কহিলেন, ইনি ভাক্ষর নহেন। ইনি স্তাজিত। ইনি ভাক্ষরদক্ত সামন্তক নামে মহামণি স চ তং স্যমন্তকাখ্য**ং মহামণিমাত্মনিবেশনে** চক্রে॥ ১৩॥

প্রতিদিনঞ্ তন্মণিরত্বপ্রবরমষ্টো \* কণকভারান্ অবতি॥ ১৪॥

তৎপ্রভাবান্ত সকলস্যৈর রাষ্ট্রস্যোপসর্গা অনাত্র্যি-ব্যালাগ্রিচৌরদুর্ভিক্ষাদিভয়ং ন ভবতি ॥ ১৫॥

অচ্যুতো ইপি তত্ত্বমুগ্র সেনস্য ভূপতের্বোগ্যমেত-দিতি লিপ্সাঞ্চক্রে, গোত্রভেদভরাচ্চ শক্তোইপি ম জহার॥ ১৬॥

ধারণ করিয়া এখানে জাগমন করিতেছেন। জতএব তোমরা নিঃশক্ষ হৃদয়ে ইঁছাকে দর্শন কর। ক্ষের এই কথা শুনিয়া ছারকাবাদীরা (স্ব স্ব স্থানে) প্রস্থান করিল। ১০ সত্রাজিতও সেই স্যমন্তক নামে মহামণি স্বগৃহে স্থাপন করিলেন। ১০ এই প্রধান মণিরত্ন, প্রতিদিন অই ভার স্থবর্ণ প্রস্থান করিতে। ১০ বিশেষতঃ সেই স্যমন্তক মণি প্রভাবে সমুদায় রাজ্যমধ্যে রোগ, আনার্ষ্টি, সর্পাদিভয়, অগ্নিভয়, চৌরভয় বা দুর্ভিক্ষাদি ভয় কিছুই থাকিল না। ১০ সেই রত্ন রাজা উগ্রসেনের বোগ্য, এই বিবেচনা করিয়া কৃষ্ণ, তাহা গ্রহণ করিতে অভিলামী হইলেন কিছু জ্ঞাভিবিরোধ ভয়ে সামর্থ্য থাকিতেও বলপুর্বক গ্রহণ করিলেন না। ১০ সত্রাজিতও বিবেচনা করিলেন যে,

<sup>•</sup> তব্দিরত্নটে<del>।</del> ইতি পাঠান্তরম্।

পাঁচ কুচে এক মাসা, বোল মাসায় এক স্থবর্ণ। কর্ম বা ভোলা, চারি কর্মে এক পল, একণত পলে এক ভূলা, বিংশতি ভুলায় এক ভার। সামস্কক মণি এই-ক্লপ তাওঁ ভার স্থবর্গ প্রাস্থব করিছ। ১৪

স্ত্রাজ্ঞিতো ২পাচ্যতো মামেতৎ যাচিষ্যতীত্যবগত-রত্নলোভঃ\* স্বভাত্তে প্রসেনায় ভদ্রত্বং দত্তবান্† ॥১৭॥

তচ্চ শুচিনা প্রিয়্মান্মশেষস্থবর্ণ প্রাবাদিকং গুণমুৎ-পাদয়তি, অন্যথা যএব ধারয়তি তমেব হন্তীতি। অসা-বিপি প্রসেনঃ স্যমন্তকেন কণ্ঠাসক্তেনাশ্বমারুয়াটব্যাং স্থায়ামগচ্ছৎ ॥ তত্র চ সিংহাৎ বধমবাপ। সাশ্বঞ্চ তং নিহত্য সিংহোৎপ্যমলমণিরত্নমাস্যাতোণাদায় গন্তমু-দ্যতঃ ঋক্ষাধিপতিনা জাম্বতা দৃষ্টো ঘাতিতশ্চ। জাম্ব-বানপ্যমলং তম্মণিরত্নমাদায় স্ববিলং প্রবিষ্কেশ্যর ক্ষায়ন্তায় চ বালকায় ক্রীড়নম্ অকরোৎ ॥ ১৮॥

কৃষ্ণ আমার নিকট ইহা যাচ্ঞা করিবেন। কারণ তিনি বুঝিতে পারিয়াছিলেন যে, ঐ রত্বের প্রতি কৃষ্ণের লোভ জন্মিয়াছে! (তখন তিনি অগতা) সীয় ভ্রাতা প্রামেনকে সেই রত্ব দান করিলেন। <sup>১০</sup> শুচি হইয়া সেই রত্ব ধারণ করিলে তাহা সুবর্ণ প্রায়ের কুশলাদি সম্পাদন করে, ভাহার অন্যথা হইলে যে ব্যক্তি ধারণ করে, তাহারই বিনা-শের কারণ হয়। (এই কারণে প্রমেন বিন্ট হইলেন।)

একদা প্রসেন, সেই সামস্তক মণি কণ্ঠে ধারণ করিয়া অংশ আরোহণ পূর্বক মৃগয়ার্থ অরণ্যে প্রবেশ করিলেন। সেখানে একটী সিংহ তাঁহার প্রাণ সংহার করিল। সিংহ, অংশর সহিত প্রসেনকে নিহত করিয়া মুখাগ্রহারা সেই অমল মণিরত্ব গ্রহণপূর্বক গমন করিতেছে, এমত সময়, ক্ষরাক কাম্বান্

যাচরিব্রভীভ্রেগভরদ্বলোভ ইভি পাঠাভর্ম।

<sup>া</sup> ভদ্রমনদং ইতি চ পৃথকু পাঠিঃ।

অনাগচ্ছতি চ তি সান্ প্রদেনে, ক্ষো মণিরত্বমতিল লিষিতবান্, ন চ প্রাপ্তবান্, ফুনমেতদস্য কর্মা, নান্যেন প্রদেনো হন্যত ইত্যাখিল এব যদুলোকঃ \* পরম্পার্থ কর্ণাকর্গ্যথয় । । ১১ ॥

বিদিতলোকাপবাদর্ত্তান্তশ্চ ভগবান্ যদুসৈন্য-পরি-বারঃ প্রসেনাশ্বপদ্বীমন্ত্রসার, দদর্শ চাশ্বন্যতং প্র-সেনং নিহতং সিংহেন। অধিলজনপদ্মধ্যে সিংহপদ-দর্শনক্তপরিশুদ্ধিঃ সিংহপদ্মনুস্সার। ২০।

তাহাকে অবলোকন করিয়া বিনাশ করিল এবং সেই স্থানির্থা মণিরত্ব গ্রহণপূর্বক গর্ত্তে প্রবিষ্ট হইল। জাম্ববানের স্থকুমারক নামে একটা (সুকুমার) কুমার ছিল। জাম্ববান্ ঐ মণিরত্ব সেই বালকের ক্রীড়নক করিয়া দিল। ১৮

(মৃগয়ার্থ অরণ্যে প্রবিষ্ট) প্রসেন যখন প্রত্যাগত হইলেন
না, তখন সমুদায় যদুবংশীয় লোক পরকার এইরপ কাণাকাণি
করিতে লাগিল যে, রুফ এই মণিরত্বের অভিলাবী ছিলেন,
পান নাই, ইহাতে নিশ্চয় বোধ হইতেছে যে, ইহা তাঁহারই
কর্ম। অন্য লোক প্রদেশকে বিনাশ করিয়াছে, এমত বোধ হয়
না। ১০ তগবান্ কৃষণ, যখন লোকাপবাদের রুভাস্ত অবগত হইলেন, তখন তিনি, যদুসৈন্যে পরিবৃত্ত হইয়া (পুরচিছাতুসারে)
প্রসেনের অংশর পথ অনুসরণ করিতে লাগিলেন। পরে দেখিতে
পাইলেন যে, অশ্বসমেত প্রসেন সিংহ কর্ম্ক নিহত হইয়া পতিত
রহিয়াছেন। তিনি সমুদায় লোকমধ্যে সিংহের পদ্চিত্র দেখাইয়া

নুন্দে গ্ৰদ্য কর্ণ্যতংখিলবতুলোক ইতি বসকিরক্ষিত পুস্কক্ষ্য প্রি:।
ক্রিক্সিক—ক্রিক্সিক্ত, ধ্বলান।। ১৮

ঋক্ষবিনিহতঞ্চ দিংহমপ্যশেপ ভূমিভাগে দৃষ্ট্রণ তত্ত ত তত্ত্বপোরবাদৃক্ষস্যাপি পদান্যর্থযো\*। গিরি-তটে চ সকলমেব যদুদৈন্যমবস্থাপ্য তৎপদার্সারী ঋক্ষ-বিলং প্রবিবেশ। অর্দ্ধবিষ্টশ্চ ধাত্ত্যাঃ সুকুমারক-মুল্লাপয়ন্ত্যা বাণীং শুপ্রাব॥২১॥

সিংহঃ প্রদেনমবধীৎ সিংহো জাম্বতা হতঃ। স্কুমারক! মা রোদীন্তব ছেম স্যমন্তকঃ॥ ২২॥ ইত্যাকর্ণ্য লক্ধ-স্যমন্তকোদন্তোহন্তঃপ্রবিষ্টঃ † কুমার-

কৃষ্ণ এই বাক্য প্রবণ করিয়া সামস্তকের সংবাদ অবগত হইলেন এবং তিনি সেই বিবরমধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া দেখিতে

<sup>•</sup> পদাস্থ্যপথয়ে ইতি কেচিৎ পঠন্তি।

<sup>🕈</sup> नज्रन।मखरकांश्यः श्रविके हेडि शार्टी म नमीशीमः।

. 12

ক্ৰীড়নকীক্তঞ্চ ধাত্ৰীহন্তে তেজোভিৰ্জ্জাত্বল্যমানং স্যম-ন্তকং দদৰ্শ ॥ ২৩॥

তঞ্চ স্যমন্তকাভিলাষচক্ষমপূর্বেং পুরুষমাগতম– বেক্ষ্য ধাত্রী ত্রাহি ত্রাহীভি ব্যাজহার॥ ২৪॥

তদার্ত্তনাদশ্রবণানন্তরঞ্চামর্যপূর্ণক্ষরঃ স জায়বান্ আজগাস, তয়েশ্চ পরস্পারং মুধ্যভোর্দরোমুদ্ধমেক-বিংশতিদিনান্যভবং ৷ তে চ যদুদৈনিকান্তত্ত সপ্তাই-দিনানি তম্মিজুন্তিমুদীক্ষ্যমাণান্তস্থঃ ৷ অনিজুমমাণে চ মধ্রিপৌ অসাববশ্যমত্র বিলেহত্যন্তনাশ্মাপ্তো ভবিষ্য-ত্যন্যথা তস্য কথ্যেতাবন্তি দিনানি শক্রজ্যে হ্যাক্ষেপো

পাইলেন যে, সেই সামন্তক মণি কুমারের ক্রীড়নের নিমিন্ত ধাত্রীহন্তে (বিনাস্ত রহিয়াছে) এবং তাহা চতুর্দিকে দীপ্তি বিস্তার করিতেছে। ১০ ধাত্রী, সেই অন্তুইপুর্য্য-পুরুষকে সমাগত, ও সামন্তক মণির প্রতি সাভিলাব-ন্তুষ্টি দেখিয়া রক্ষা কর রক্ষা কর, বলিয়া চীৎকার করিতে লাগিল। ১০ জাম্ববান, ধাত্রীর সেই আর্ত্তনাদ শ্রবণ করিবামাত্র অমর্বপূর্ণহৃদয় হইয়া সেই স্থানে আগমন করিল।

অনস্তর ক্ষণ ও জাম্বানের পরদশর দদ্ধ যুদ্ধ আরম্ভ হইল।
উভয়ের এই দদ্ধেদ্ধ একবিংশতি দিবস অভীত হইয়া গেল।
এ দিকে যদুদৈনোরা (গর্ভ হইতে) ক্ষেত্র নিদ্ধ মন প্রতীক্ষার
গ । ৮ দিন সেই স্থানে অবস্থান করিল। যথন মধুসুদ্দন সাভ
আট দিনের মধ্যেও নিদ্ধান্ত হইলেন না, তখন যাদ্বদৈনাগণ
বিবেচনা করিল যে, ক্ষ্ণ নিশ্চয়ই এই গর্ভে জীবন ইছারাইয়াছেন। তিনি জীবিত থাকিলে শক্রম্ম করিতে তাঁহার এত

ভবতীতি ক্লতাধ্যবসায়া দারকামাগতা∗ হতঃ ক্লফ ইতি কথ্যামাসুঃ ॥ ২৫ ॥

তদ্বান্ধবাশ্চ তৎকালোচিতমখিলমুপরতক্রিয়াকলা-পং চক্রুঃ ॥ ২৬॥

তত্র চাস্য যুধ্যমানস্যাতিশ্রদ্ধাদত্তবিশিষ্টপাত্রোপ-যুক্তান্নতোয়াদিনা ক্রঞ্চ্য বলপ্রাণপুষ্টিরভূৎ ॥২৭॥

ইরতস্যান্দিনমতিগুরুপুরুষভিদ্যমান স্যাতিনিষ্ঠুর-প্রহারপীড়িতাখিলাবয়বস্য † নিরাহারতয়া বলহানিঃ। নির্জিভন্চ ভগবতা জাম্বান্ প্রণিপত্যাহ, অস্তরস্তর্যক্ষ-গন্ধর্কাক্ষসাদিভিরপ্যখিলৈর্ভগবান্ ন জেতুং শক্যঃ,

দিন অতীত হইবে কেন? সেনাগণ এইরূপ কুতনিশ্চয় হইয়া দারকায় প্রত্যাগত হইল এবং কহিল যে, কৃষ্ণ জীবন বিসর্জন করিয়াছেন। <sup>২°</sup> কৃষ্ণের বান্ধ্রনগণ সকলেই তৎকালোচিত প্রেত-কৃত্যাদি সমুদায় কিয়াকলাপ সম্পাদন করিল। <sup>২°</sup> বিশিষ্ট উপযুক্ত পাত্রে অতিশ্রদ্ধাপুর্যক অম্মন্ত্রল প্রভাগ প্রদান করাতে যুদ্ধে ব্যাপৃত কৃষ্ণের বল ও প্রাণের পুষ্টি হইতে লাগিল। <sup>২°</sup> কাম্বান্ অতিবলবান্ পুরুষকর্ত্বক অনুক্ষণ প্রহত হইতেছিল, স্ত্রাং কৃষ্ণের অতিশয় নির্দয় প্রহারে তাহার সমুদায় অব্যব প্রশীত্তিত হওয়াতে এবং আহার করিতে না পাওয়াতে হীনবল হইয়া পড়িল! ভগবান্ কৃষ্ণ তাহাকে পরাক্ষয় করিলেন।

অনন্তর জাম্বান্ (পরাজিত হইয়া) প্রণিপাত পূর্বক কহিল, সম্দায় দেব দানব যক গন্ধর রাক্ষ্য প্রভৃতি (প্রবল প্রাণীরা

<sup>•</sup> ল'বন মাগভা ইণ্ডি বা পাঠ:।

ণ প্রহারপাতপ্রিপ্রিভিভালিশ্বের্ন্ন ইতি বা পঠনীয়ম।

কিমুতাবনিগোচরৈর পোবীর্য্যৈর রাবয়বভূতৈ क । তির্গান্থান্য নুক্তিভিঃ কিং পুনর স্মদ্ধির বশ্যং ভগবতো২স্মৎসামিনো নারায়ণ্য্য সকল জগৎপরায়ণ্য্যাংশেন
ভগবতা ভবিতব্যমিত্যক্তঃ ॥ ২৮ ॥

তব্যৈ ভগবানখিলমবনিভারাবতারমাচচক্ষে ॥২৯॥ প্রীত্যাঞ্জিতকরতলম্পর্শনেন † চৈনমপগতযুদ্ধথেদং চকার॥ ৩০॥

স চ প্রণিপত্যৈনং পুনরপি প্রসাদ্য জায়বতীং নাম কন্যাং গৃহাগমনার্য্যভূতাং গ্রাহয়ামাস॥ ৩১॥

কেহই) আপনাকে পরাজয় করিতে পারে না। ঈত্তশ স্থলে পৃথিবীস্থ অপ্প বল মনুষ্যাকৃতি তির্ম্যক্ষানির অনুকারী আমরা (যে আপনাকে পরাজয় করিতে পারিব, তাহা নিতাস্ত অসম্ভব। আমার বোধ হয়, যিনি আমার প্রভু, যিনি সমুদায় জগতের এক মাত্র গতি, আপনি সেই ভগবান্ নারায়ণের অংশ অবশ্যই হইবেন। য়ক্ষরাজ এই কথা বলিলে ২৮ ভগবান্ কৃষ্ণ তাহার নিকট, পৃথিবী ভারাক্রান্ত হওয়াতে তিনি যে অংশদারা অবতীর্ন ইইয়াছেন, তৎসমুদায় আদ্যোপাস্ত কহিলেন। ২০ তথন জাম্বান্ প্রীতিপূর্ণ করতল স্পর্শদারা ক্ষেত্র সংগ্রামকনিত ক্লেশ দুর করিল। ২০

পরে জাষবান্ প্রণিপাত পূর্মক কৃষ্ণকে পুনর্মার প্রসন্ন করিয়া। \*

<sup>\*</sup> মরৈর্মরাবয়বভূতৈশ্চ ইতি বা পাঠঃ।

<sup>🛧</sup> প্ৰীভাজাঞ্জিভকবভলস্পাৰ্শেম ইভি বা পঠাডাম ।

স্যমন্তক্ষণিমপ্যদে প্রিণিপত্য তথ্যৈ প্রদদে । অচ্যতোহপ্যতিপ্রণভাৎ তত্মাদ্যাহ্মপি তত্মণিরত্মাত্ম-শোধনায় জ্ঞাহ ॥ ৩২॥

সহ জাম্ববত্যা দ্বারকামাজগাম । ভগবদাগমনোদ্ভূত-হর্ষোৎকর্ষস্য দ্বারকাবাসিজনস্য ক্ষণবলোকনামূক্ষণ-মেবাভিপরিণতবয়সোহপি\* নবযৌবনমিবাভবৎ । আ-নকদুন্দুভিঞ্চ দিফ্যা দিফ্যেতি চ সকল্যাদ্বাঃ স্ত্রিয়শ্চ সভাজয়ামাস্তঃ॥ ৩৩॥

ভগবানপি যথাসুভূতমশেষযাদবসমাজে যথাবদা-চচক্ষে; স্যমন্তকঞ্চ সত্রাজিতায় দন্ধা মিথ্যাভিশস্তি-বিশুদ্ধিমবাপ, জাম্বতীঞ্চাতঃপুরে নিবেশয়ামাস ৷

অনস্তর পুনর্বার প্রণাম করিয়া সামস্তক নামক মণি সমর্পণ করিল।
তান্তল প্রণত ব্যক্তির নিকট সেই মণিরত্ব গ্রহণ করা অনুচিত
বোধ হইলেও কৃষ্ণ, কেবল আত্মকলকাপনোদনের নিমিন্তই
তাহা গ্রহণ করিলেন। তং পরে তিনি কাল্যবতীর সহিত একত্র
হইয়া ছারকায় প্রত্যাগত হইলেন। তগবান্ কৃষ্ণের আগমনে
ছারকারামী জনগণের এতদূর হর্ষোচ্চেক হইল যে, কৃষ্ণ দর্শন
কালে অতির্দ্ধ ব্যক্তিও সূতন যুবার ন্যায় বল ধারণ করিল। গ
সমুদায় বাদবগণ ও স্ত্রীগণ বসুদেবের নিকট উপস্থিত হইয়া
আনন্দ প্রকাশ করিতে লাগিল। তং ভগবান্ কৃষ্ণও যাহা যাহা
ঘটিয়াছিল, তৎসমুদায় আত্মপুর্বিক যাদবসমাজে বর্ণন করিল।
তেন। তিনি স্ক্রাজিতকে সামস্তক মণি প্রদান করিয়া মিগ্যা

কুশাবলোকনাৎ তৎক্ষণ্যেবাতিপরিণভবয়লোহপি ইতি কেটিং পঠন্তি

সত্রাজিতো ২পি ময়াস্যাভূত্যলিনমারোপিতমিতি জাত-সংগ্রাসঃ স্বস্কুতাং সত্যভাষাং ভগবতে ভার্য্যাং দদৌ ॥ ৩৪॥

তাঞ্চাক্তর-ক্তবর্ম-শতধন্ব-প্রমুখা যাদবাঃ পূর্বাং বর-য়ামাস্তঃ । ততন্ত ৎপ্রদানাদবজ্ঞাতমাত্মানং মন্যমানাঃ সত্রাজিতে বৈরামুবদ্ধং চক্রুঃ । অক্রুর-ক্তবর্ম-প্রমুখাশ্চ শতধন্বান্যুচুঃ, অরম্ভিদুরাত্মা সত্রাজিতো যোহস্মাভি-র্ভবতা চাভ্যর্থিতোহপ্যাত্মজামস্মান্ ভবন্তং চাবিগণ্য্য ক্ষায় দত্তবান্ । তদলমনেন জীবভা । ঘাত্যিত্মিনং

কলক হইতে মুক্ত হইলেন এবং জাম্ববতীকে অন্তঃপুরে রাখিয়াদিলেন।

সত্রাজ্বত, ভগবান্ কৃষ্ণের উপর অভ্তপ্র কলক আরোপিত করিয়াছিলেন বলিয়া সাতিশয় ভীত হইয়া তাঁহাকে
সভ্যভামা নামী কন্যা সম্প্রদান করিলেন। তা অক্রুর, কৃতবর্মা, শতধন্বা প্রভৃতি যাদবগণ পূর্বে এই সভ্যভামাকে বিবাহ
করিবার নিমিন্ত প্রার্থনা করিয়াছিলেন। অধুনা ঐ কন্যা কৃষ্ণকে
সম্প্রদান করাতে তাঁহারা আপনাদিগকে অপমানিত বোধ করিয়া
সত্রাজিতের প্রতি বৈরাস্থানে প্রবৃত্ত হইলেন। অক্রুর কৃতবর্মা প্রভৃতি যাদবগণ শতধন্বাকে কহিলেন, এই সত্রাজিত
যার পর নাই দুরালা। তুমি ও আমরা ইহার নিকট কন্যা
প্রার্থনা করিয়াছিলাম কিন্তু এই দুরালা তোমাকে ও আমাদিগকে
অবজ্ঞা করিয়া কৃষ্ণকে কন্যা দান করিল। অভ্যাব এ ব্যক্তিকে
জীবিত রাথিবাব প্রয়োজন নাই। তুমি কি নিমিন্ত ইহাকে

তন্মহারত্নং ত্বয়া কিং ন গৃহতে ? বয়মপ্যভ্যুপপৎস্যামঃ, যদ্যচ্যুতস্তবাপি\* বৈরানুবন্ধং করিষ্যতীতি ॥৩৫॥

এবমুক্তস্তথেত্যসাবপ্যাহ। জতুগৃহদগ্ধানাঞ্চ পাণ্ড্-নন্দনানাং বিদিতপ্রমার্থোইপি ভগবান্, দুর্য্যোধন-প্রযত্নশৈধিল্যার্থং কুল্যকরণায় † বারণাবতং গভঃ॥৬৬

গতে চ তিমান্ স্থধের সত্রাজিতং শতধরা জঘান,
মণিরত্নঞ্চাদদে ৷ পিতৃবধামর্যপূর্ণা চ সত্যভামা শীত্রং
স্যান্দনমার্টা বারণাবতং গত্বা, ভগবতেইহং প্রতিপাদিতৈতি অক্ষান্তিমতা শতধরনা অম্বৎপিতা ব্যাপা-

বিনাশ করিয়া সেই মহারত্ব গ্রহণ করিতেছ না? যদি ক্ষণ্ড ভোমার সহিত শব্দুতা করেন, তথাপি আমরা ভোমার সাহায্য করিব। °° শতধন্ব। এই বাক্য শ্রবণ করিয়া ভাহাতে সন্মতি প্রদান করিলেন।

ভগবান্ কৃষ্ণ, যদিও এই পরামর্শ অবগত হইয়াছিলেন তথাপি, পাশুবগণ জতুগৃহে দক্ষ হইয়াছেন (এই বার্ত্তা প্রচানিত হওয়াতে) দুর্যোধন আর তাহাদের (অল্বেশণ বিষয়ে) যত্ত্ব না করে. এই জভিপ্রায়ে কুলোচিত কার্য্য (প্রেভক্ত্য) করিবার জন্য বারণাবতে গাত্রা করিলেন। °° কৃষ্ণ বারণাবতে গমন করিলে শতধন্য প্রস্তু সত্রাজিতকে বিনাশ করিয়া সেই মণিরত্ব গ্রহণ করিলেন। সত্যভাষা, পিতৃবধ হেতু অমর্যান্থিতা হইয়া তৎক্ষণাৎ রথে আরে।হণ পূর্বক বারণাবতে উপস্থিত হইয়া ক্ষকেক কহিলেন যে, পিতা আনাকে আপনকার হস্তে সমর্পণ করি-

<sup>\*</sup> गमाहाउद्याभात ইতাপি প'ঠ:।

<sup>•</sup> कृत्यं निमञ्चयद्भटेनथिनाम् कृत्याकत्वाम् देखि cक्षि भेरेखि।

দিতঃ, তচ্চ সামন্তকমণিরত্বমপশতম্। তদিয়মসাা-বহাসনা\*। তদালোচ্য যদত্র যুক্তং, তৎ ক্রিয়তামিতি ক্ষামাহ॥ ৩৭॥

তয় টেবমুক্তঃ পরিতুষ্টান্তঃকরণোষপি রুষ্ণঃ সত্য-ভাষামমর্যভাত্রলোচনঃ প্রাহ্. সত্যে! মমৈবাবহাসনা! নাহমেতাং ভ্রা দুরাত্মনঃ সহিষ্যে। ন হার্লজ্ম বর-পাদপংভৎক্রভনীড়াশ্রায়ণো বিহন্ধা বধান্তে॥ ৩৯॥

তদলমত্যর্থমমুনাস্মৎপুরতঃ শোকপ্রেরিতবাক্য-পরিকরেণ, ইত্যুক্তা দ্বারকামভ্যেত্য বলদেবমেকান্তে

য়াছেন, বলিয়া শতধন্ব। সহু করিতে না পারিয়া আমার পিতাকে বিনাশ করিয়াছে এবং ভাঁহার সেই সামস্তক নামক মণি-রুত্রও অপহরণ করিয়া লইয়াছে। একণে শতধন্বা হইতে এই ভাঁহার পরাভব হইল, ইহা বিবেচনা করিয়া এ বিষয়ে যাহা করিয়া ভাহাকর। <sup>৩)</sup>

কৃষ্ণ এই কথা শুনিয়া বদিও মনে মনে পরিভূট হইয়াছিলেন ভথাপি (কৃত্রিম) অমর্বভরে লোচনম্বয় ভামুবর্ণ করিয়া সভ্যভাষাকে কহিলেন, সভ্যে! (ইহা ভোমার পিভার পরাভব কি ?) ইহা ভ আমারই পরাভব হইভেছে। আমি কখনই সেই দুরাজার কৃত এই পরাভব সম্ম করিব না। তরুবরকে লজ্জ্বন না করিয়া ভদাশ্রিভ নীভৃত্বিভ পক্ষীকে কখনই বিনাশ করিভে পারা যায় না। ত্র অত্রব আমার নিকট ভোমার নিভাস্ত পারা যায় না। ত্র অত্রব আমার নিকট ভোমার নিভাস্ত পোকসূচক বাক্য বিস্তার করিবার আবেশ্যক নাই। বাসুদেব,

বাস্থদেবঃ প্রাছ, মৃগয়াগতং প্রসেনমটব্যাং মৃগপভিজ্যান। সত্রাজিতোইপাধুনা শতধ্বনা নিধনং প্রা-পিতঃ। তদুভয়বিনাশাৎ তক্ষণিরত্বমাবাভ্যাং সামান্যং ভবিষ্যতি॥ ৪০॥

তদুত্তিষ্ঠ, আরুহ্যতাং রথঃ, শতধর্নিধনায়োদ্যমং
কুরু,ইত্যভিহিতস্তথেতি সমন্বীন্দিতবান্\*। ক্রতোদেরগো
চ তারুভারপলভ্য শতধন্ধ কৃতবর্মাণমুপেত্য পার্ফিপ্রণকর্মনিমিত্তমতোদয়ৎ †। আহ চৈনং ক্রতবর্মা, নাহং
বলভদ্রবাস্থদেবাভাাং সহ বিরোধায়ালম্, ইত্যক্তশ্চা-

সত্যভাষাকে এই কথা বলিয়া দারকায় আগমন পূর্বক বিজন প্রদেশে বলদেবকে কহিলেন, প্রদেন যখনস্গগার্থ অটবীতে গমন করিয়াছিল, তখন সিংহ তাহাকে সংহার করে। একণে সত্রাজিতও শতধন্ধা হইতে বিলয় প্রাপ্ত হইলেন। এই দুই জনের পরলোক প্রাপ্তি হেতু অধুনা সেই মণিরত্ন আমাদের দুই জনেরই হইবে। <sup>৪°</sup> অতএব উথিত হও, রণে আরোহণ কর, শতধন্ধাকে বিনাশ করিবার নিমিক্ত উদ্যোগী হও।

বলদেব ক্ষের এই কথা শ্রবণ করিয়া তথাস্ত বলিয়া স্বীকার করিলেন। বলদেব ও কৃষ্ণ সংগ্রামার্থ উদ্যুক্ত হইলে শতধন্ম। তাহা অবগত হইয়া ক্ষতবর্মার নিকট উপস্থিত হইলেন এবং যুদ্ধে সাহায্য করিবার নিমিন্ত অনুরোধ করিলেন। কৃতবর্মা তাঁহাকে কহিলেন, আমি, বলদেব ও কৃষ্ণ উভয়ের সহিত বিবাদ করিতে সমর্থ হইব না। কৃতবর্মা এই কথা বলিলে

<sup>•</sup> সমলি চিছত ব'ন্ইতি বত সন্দেহঃ পাঠঃ। † অচোদয়ং ইতি পাঠাক্তরন্ঃ

ক্রুমটোদয়ৎ। আই চাদাবপি, ন হি কশ্চিৎ ভগবতা পাদপ্রহারপরিকম্পিভদ্ধান্তয়েণ অস্করবরবনিতা-বৈধব্য-কারিণা প্রবলরিপুচ্জাপ্রতিহতচক্রেণ চক্রিণা, মদমুদিত-নয়নাবলোকিতারিবলবিশাতনেন\* অতিগুরুবৈরিবার-ণাকর্ষণাবিদ্ধৃতমহিমোরুসীরেণ সীরিণা চ সহ সকল-জ্বাম্যানামমরবরাণামপি যোলুং সমর্থঃ, কিমুতাহ্মু। তদন্তঃ শরণমভিলষ্যতায়্॥ ৪১॥

ইত্যক্তঃ শতধনুরাহ, যদ্যস্মৎপরিত্রাণাদমর্থৎ ভবা-নাত্মানমবগচ্ছভি, তদয়মস্মন্মণিঃ সংগৃহ্য রক্ষ্যতাম্।

শতধনা অক্রকেও সেইরপ কহিলেন। অক্র উদ্ধর করি-লেন, যিনি পাদ্বিক্ষেপদ্বারা ত্রিভ্বন কম্পিত করিয়াছিলেন, যিনি প্রধান প্রধান অসুরগণের বনিতাদিগের বৈধব্য বিধান করিয়াছিল, যাহার চক্র প্রবল রিপুচক্রেও প্রতিহত হয় না, তাদৃশ চক্রী ভগবান্ কৃষ্ণের সহিত এবং যিনি মদ-( নেসা-) দ্বারা মুদিত নয়নে কটাক্ষ নিক্ষেপ মাত্রেই শক্রসেনা সংহার করেন, অতিপ্রবল শক্রগণরূপ হন্তিসমূহ আকর্ষণদ্বারা মাহার মহিমা প্রচারিত হইয়াছে, তাদৃশ মহাহলই যাঁহার মুদ্ধান্ত, ঈদৃশ হলধরের সহিত সমুদায় জগতের পুজনীয় প্রধান প্রধান দেব-গণের মধ্যেও কেই সংগ্রাম করিতে সমর্থ হন না, আমার কথা কি বলিব? অতএব তুমি অন্য কাহারো শরণাপন্ন হইতে চেক্টা কর। ৪০

শতধন্বা এই কথা শ্রবণ করিয়া কহিলেন, যদি তুমি এরূপ বোধ কর যে, আমাকে রক্ষা করিতে সমর্থ হইবে না, তাহা

মদমুদিওনয় বেলাকিত!বেরলবিশাভনেন ইতে কোঁচং পঠাও

ইত্যুক্তঃ কো২প্যাহ, যদ্যন্তায়ামপ্যবন্থায়াং ন কল্মৈ-চিদ্ধবান্ কথয়িষ্যতি, তদহমেনং এহীষ্যামি। তথেত্যুক্তে অক্রুরস্তন্মণিরত্নং জ্ঞাহ॥ ৪২॥

শতধন্তরপ্যতুলবেগাং শতযোজনবাহিনীং বড়বা-মারুহ্যাপক্রান্তঃ। শৈব্য-স্থতীব-মেঘপুষ্প-বলাহকাশ্ব-চতু্টয়য়ুক্তরপাবস্থিতে বলদেববাস্থদেবে তমনুক্রা-তৌ॥ ৪৩॥

সা চ বড়বা শতখোজনপ্রমাণং মার্গমতীত্য † পুনরপি

হইলে তুমি এই মণিরত্ব গ্রহণ করিয়া রক্ষা কর। শতধন্বরে এই কথা শুনিয়া অক্রুর কহিলেন, যদি তোমার চরম অবস্থা উপস্থিত হয়, তথাপি যদি তুমি কাহারো নিকট প্রকাশ না কর, তাহা হইলে আমি এই মণিরত্ব গ্রহণ করিতে পারি। শতধন্বা তথাস্ত বলিয়া স্বীকার করিলে অক্রুর সেই মণিরত্ব গ্রহণ করিলেন। ৪২

অনন্তর শতধন্বা, (এক দিবদের মধ্যে) শতযোজন-গামিনী অসীম-বেগশালিনী ঘোটকীতে আরোহণপূর্মক পলায়নার্থ নিক্ষান্ত হইলেন। এ দিকে বলদেব ও বাস্থদের উভয়ে, শৈরা, স্থারির, মেঘপুত্রা ও বলাহক নামে অশ্ব চতুইয় যুক্ত রথে আরোহণ করিয়া শতধন্বার পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধারমান হইলেন। "" শতধন্বার অশ্ব, শত যোজন প্রমাণ পথ অতিক্রম করিয়া পুন-বর্মে চালিত হওয়াতে মিথিলান্তিত আরিগাৈকদেশে প্রাণত্যাগ করিল। শতধন্থ সেই বড়বাকে পরিত্যাগ করিয়া পদদারাই

ভদয়নক্ষরণিং সংগ্রুরক্তামেবমুক্ত ইভ্যাপি পাঠঃ।

<sup>🕇</sup> যোজনশত এমাণং মাগমভী চা ইতি প'ঠ' স্বর্।

বাহ্যমানা মিথিলাবনোদেশে প্রাণান্ত্রসভর্জ। শতধন্ত্র-রপি তাৎ পরিত্যজ্য পদাভিরেবাদ্রবং ॥ ৪৪ ॥

ক্রফোহপি বলভদ্রমাহ, তাবদত্ত্রৈব স্যন্দনে ভবতা স্থেয়ন। অহমেনমধ্যাচারং পদাতিরেব পদাতিমন্থ-গম্য \* যাবদ্ ঘাতয়ামি। অত্র হি ভূভাগে দৃষ্টদোষা হয়া নৈতেহশ্বা ভবতেমং ভূমিভাগমুল্লজ্ঞ্য নেয়াঃ॥ ৪৫॥

তথেতু জ্বো বলভজো রথ এব তছো। ক্লফোইপি দিক্রোশমাত্রং ভূমিভাগমরুস্ত্য দূরস্থ স্যৈব চক্রং ক্লিপ্তা শতধর্মঃ শিরশ্চিচ্ছেদ। তচ্ছরীরাম্বরাদিয়ু চ বহুপ্রকারমন্বিয়ন্ত্রপি স্যমন্তকং মণিং নাবাপ যদা, তদো-পগম্য বলভদ্রমাহ, র্থৈবাস্মাতির্ঘাভিতঃ শতধর্ন প্রাপ্ত-

ধাবনান হইলেন। <sup>88</sup> তথন কৃষ্ণ বলরামকে কহিলেন, তুমি এই স্থানেই এই রথে অবস্থান কর। আমি পদচারী হইয়া ঐ পদাতি অধমাচার শতধন্বার পশ্চাৎ গমন পূর্বক উহাকে সংহার করিয়া আদি। অখগণ এই ভূমিভাগে অনিউছটনা দর্শন করিয়াছে মুভরাং এই ভূমিভাগ অভিক্রম করিয়া ইহাদিগকে লইয়া যাওয়া ভোমার উচিত নহে। <sup>86</sup> বলদেব তথাস্ত বলিয়া রথোপরি অবস্থান করিতে লাগিলেন। কৃষণ, ক্রোশন্বয়াত্র পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া দূর হইতেই চক্র নিক্ষেপ পূর্বক শতধন্বার মস্তক্ছেদন, করিলেন। পরে ভিনি উহার শরীর ও বস্তাদিতে ভন্ন তল করিয়া অন্থেণ করিলেন, কিন্তু সামস্তক মণি প্রাপ্ত হইলেন না। পরে ভিনি প্রতিনির্ভ্ত হইয়া বলদেবকে কহিলেন, আমরা শতধনুকে রথা বিনাশ

<sup>\*</sup> অধ্যাচারং পদাভিন্মসুগদ্য ইতি বা পাঠ:।

মথিলজগৎসারভূতং তন্মণিরত্নম্। ইত্যাকর্ণ্য উদ্ভূত-কোপো বলদেবো বাস্থদেবমাহ, ধিক্ ত্বাং যন্ত্বমর্থ-লিপ্সঃ! এতচ্চ তে ভ্রাকৃত্বান্মর্বয়ে †, তদয়ং পদ্থাঃ, স্বেচ্ছয়া গম্যতাম্, ন মে দারকয়া, ন ত্বয়া, ন বন্ধুভিঃ কার্যম্। অলমেভির্মমাগ্রতোহলীকশপথৈঃ। ইত্যা-কিপ্য তং তথা প্রসাদ্যমানোহপি: ন তত্থে, বিদেহ-পুরীং প্রবিবেশ॥ ৪৬॥

জনকশ্চার্যাপূর্ব্বকমেবৈনং গৃহং প্রবেশয়ামান। স

করিলাম। ইহার নিকট নিধিল জগতের সার সেই মণিরত্ন প্রাপ্ত হইলাম না।

বলদেব এই কথা শ্রবণ পূর্মক কোপাবিষ্ট হইয়া কৃষ্ণকে কহিলেন, তুমি এরপ অর্থ-লোভী! ভোমাকে ধিক্! তুমি ভাই বলিয়া আমি ভোমার এ বিষয় ক্ষমা করিলাম। এই পথ রহিয়াছে, স্ফোনুসারে চলিয়া যাও। আমার দারকায় প্রয়োজন নাই, ভোমার মত ভ্রাতায় প্রয়োজন নাই, আমার বন্ধুবান্ধবেও আব-শাক নাই। আর আমার নিকট ভোমার মিথ্যা শপথ করিবার প্রয়োজন কি? বলদেব, এই কথা বলিয়া কৃষ্ণকে তিরন্ধার করিয়া (প্রস্থান করিলেন।) কৃষ্ণ অনেক অনুনয় বিনয় করিতে লাগিলেন, তথাপি বলদেব দাঁড়াইলেন না। পরে তিনি বিদেহ নগরীতে প্রবেশ করিজেলা। " রাজা জনক অর্থা প্রদান পূর্মক তাঁহাকে স্থভবনে প্রবেশ করাইলেন। তিনি সেই জনক গৃহে

ভলহারবং সামস্কাধাম্ইতি বা পাঠাম্।

<sup>†</sup> আতৃত্বাদহং মর্থে ইতি পাঠাত্রম্।

<sup>‡</sup> কথাঞ্ছ প্রসাদ্যোগেশ হল্প ইভাপি পাঠঃ।

তত্ত্বিক তত্ত্ব। বাস্তদেবোষপি দ্বারকামাজগাম। যাবচ্চজনকরাজগৃহে বলভদ্যেহ্বতত্ত্বে, তাবৎ ধার্ত্ত-রাঞ্জী দুর্য্যোধনস্তৎসকাশাদাদাশিকামশিক্ষত \*॥ ৪৭॥

বর্ষত্র যাতে চ বজ্র গেন প্রভৃতি ভির্যাদবৈর্ন ও দ্রত্বং ক্ষেনা পহাতমিতি ক্ষতাবগতি ভির্কিদেহপুরীং গত্বা বলদেবঃ সংপ্রত্যায় দ্বারকামানীতঃ ॥ ৪৮॥

অক্রো>পুত্রমণিসমুভূতস্বর্ণধ্যানপরস্ততে। য-জ্ঞানীজে †॥ ৪৯॥

সবনগতে হি ক্ষজ্ঞিয়বৈশ্যে নিম্নন্ এক্ষহা ভবতী-ত্যতো দীক্ষাকবচং প্রবিষ্ট এব তত্তো দিষ্টিবর্ষাণি॥৫০

অবস্থান করিতে লাগিলেন। এদিকে বাস্থাদেব দারকায় প্রত্যা-গমন করিলেন। যে সময়, বলদেব জনকরাজগৃহে অবস্থান করেন, সেই সময় ধৃতরাষ্ট্রনয় দুর্য্যোধন তাঁহার নিকট গদাযুদ্ধ শিক্ষা করিতে লাগিল। <sup>৪৭</sup>

এইরপে তিন বৎসর অতীত হইল। পরে বক্ত উগ্রসেন প্রকৃতি যাদবগণ, বিদেহ নগরে গমন পূর্বাক বলদেবের এইরূপ বিশ্বাস জন্মাইয়া দিলেন যে, সেই রত্ন কৃষ্ণ অপহরণ করেন নাই। পরে তাঁহারা বলদেবকে দ্বারকায় আনয়ন করিলেন। °৮

এদিকে অক্রও মণিসমুদ্ধ্ত স্থবর্ণ রাশিদারা কি করিবেন, বিবেচনা করিয়া নিরস্তর যজ্ঞানুষ্ঠান করিতে আরস্ত করিলেন। <sup>১৯</sup> যজ্ঞে দীক্ষিত ক্ষজ্রির ও বৈশ্যকে বিনাশ করিলে ব্রহ্মহত্যা পাতক হয়, এই বিবেচনা করিয়া অক্রুর, দ্বিষ্ঠি বৎসর পর্যাস্ত

<sup>•</sup> আণিক্ষৎ ইতি বহুবঃ পঠিন্তি।

ব ধনাৰপাৰ: সভতং যজ্ঞানীজে ইতি বা পঠাতাম্ !

এবং তম্মণিরত্নপ্রভাবাৎ তত্রোপসর্গদুর্ভিক্ষমরকা-দিকং নাভূৎ \*॥ ৫১॥

অধাকুরপক্ষীরৈর্ভেটেজঃ শক্রত্মে সাত্মতস্য প্রপৌত্রে ব্যাপাদিতে ভোজৈঃ সহাক্র্রো দারকামপহার অপক্রান্তঃ॥ ৫২॥

তদপক্রান্তিদিনাদারত্য তত্রোপসর্গরালানার্ফিমরকাদুপেদ্রবা বভূবুঃ। অথ যাদববলভদ্যোগ্রসেনস্মবেতোহ্যক্রয়দ্ভগবানুরগারিকেতনঃ, কিয়দিদমেকদৈব দ
প্রচুরোপদ্রবাগ্যনমেতদালোচ্যতাম্॥ ৫৩॥

নিরস্তর দীক্ষারূপ কবচে সমারত হইয়া থাকিলেন। °° সে<sup>ন</sup> মণির প্রভাবে স্বারকামধ্যে দূর্ভিক অকাল মৃত্যু প্রভৃতি কোন উপসর্গ ঘটিল না। °°

অনন্তর একদা অক্রেপক্ষীয় ভোজগণ সাত্তের প্রপৌত্র শক্রত্বকে বিনাশ করিল। অক্র (ভয়ক্রমে) ভোজগণের সহিত দারকা পরিত্যাগ করিয়া পলায়ন করিলেন। ° তিনি যে দিবস (দারকা পরিত্যাগ করিয়া দেশান্তরে) গমন করেন, সেই দিন অবধি দারকায় অকালমূত্য অনার্থি ভুজঙ্গন প্রভৃতি হিংস্ল জন্তুগণের দৌরাত্মা প্রভৃতি উপদ্রেশ ঘটিতে আরম্ভ হইল। অনন্তর ভগবান্ কৃষণ, বলদেব উত্তমেন ও সমুদায় যাদবগণের সহিত সমবেত হইয়া মন্ত্রণা করিতে আরম্ভ করিলেন যে, কিজনা এককালে এত অধিক দৈব উপদ্রেব উপস্থিত হইল, ভাহানিরপণ করা যাউক। ° °

५ ५ किकनतको मात्र छैतिकः मानुः हेन्छि भोठो खत्रम ।

<sup>ैं</sup> कि. म १५८वक्टेंबर देशि शाकी छा: अठिख ।

ইত্যক্তে অন্ধকনামা যদুর্দ্ধঃ প্রাহ, অস্যাক্রুরস্য পিতা শ্বফল্কো নাম যত্র যত্রাভূৎ, তত্র তত্র দুর্ভিক্ষ-মরকানার্ফ্যাদিকং চনাভূৎ॥ ৫৪॥

কাশিরাজস্য বিষয়েহত্যস্তানার্ফ্যাং \* শ্বফল্কো-হনীয়ত। ততস্তৎক্ষণাদেব দেবো ববর্ষ ৷ কাশিরাজস্য পত্ন,শ্চ গর্ভে কন্যা পূর্ব্বমাসীৎ॥ ৫৫॥

সাপি পূর্ণেইপি প্রস্থৃতিকালে নৈব নিশ্চক্রাম। এবঞ্চ তদ্য গর্ভদ্য দ্বাদশ বর্ষাণ্যনিষ্কামতো যয়ঃ। কাশিরাজস্ত ভাষাত্মজাং গর্ভস্থামাহ, পুত্রি! কন্মাম জায়দে? নিষ্কুম্যতাম্, আস্যং তে দুই মিচ্ছামি।

এই কপা শুনিয়া অন্ধান নামক যদুর্দ্ধ কহিলেন, অক্রের পিতা শফল্ক, যেখানে যেখানে অবস্থান করিতেন, সেখানে দুর্ভিক্ষ মরক অনার্ষ্টি প্রভৃতি উপদ্রব উপস্থিত হইত না। '' একদা কালিরাজের রাজ্যমধ্যে সাতিশয় অনার্ষ্টি উপস্থিত হইলে শফল্ক সেই স্থানে নীত হইলেন। তিনি কাশিরাজের অধিকার মধ্যে প্রবেশ করিবামাত্র দেবরাজ বর্ষণ করিতে আরম্ভ করিলেন। ইতিপূর্ধে কাশিরাজের পত্নীর গর্ভে একটা কন্যা ক্ষমিয়াছিল। '' গখন প্রদান কাল অতীত হইল, তখনও কন্যা গর্ভ হইতে নিক্ষান্ত হইল না। এইরপে স্বাদশ বৎসার পত হইল, তথাপি কন্যা গ্রন্থত হইল না।

অনন্তর কাশিরাজ, সেই গর্ভস্থিত কন্যাকে কহিলেন, পুত্রি ! কিজন্য প্রসূত হইতেছ নাঃ আমি তোমার মুখ দেখিতে স্বকাঞ্চ মাতরং কিমিতি \* চিরং ক্লেশয়সি ? ইত্যক্তা সা গর্ভত্বৈ ব্যাজহার, তাত! যদ্যেকৈকাং গান্দিনে দিনে বান্ধণেভ্যঃ প্রযক্ত্মি, † তদাহমন্যৈক্রিভির্কার্টের-স্মাদার্ভাৎ তাবদবশ্যং নিষ্ক্মিয়ামীতি। এতচ্চ তদ্বচন-মাকর্ণ্য রাজা ব্রাহ্মণায় দিনে দিনে গাং প্রাদাৎ। সাপি তাবতা কালেন জাতা। ততন্ত্রস্যাঃ পিতা গান্দিনীতি নাম চকার। তাঞ্চ গান্দিনীং কন্যাং শ্বকল্কায়ো-প্রকারিণে ই গৃহাগতায়ার্ঘ্যভূতাং প্রাদাৎ। সা চ গান্দিনী প্রতিদিনং যাবজ্জীবং ব্রাহ্মণায় গাং দত্ত-

ইচ্ছা করি, বহির্গতা হও। তুমি কিজনা তোমার জননীকে এত দিন ক্লেশ দিতেছ? কাশিরাজ এই কথা বলিলে গর্ভস্থ কনা কহিল, পিতঃ! যদি আপনি প্রতিদিন ব্রাহ্মণদিগকে এক একটা গোদান করিতে পারেন, তাহা হইলে আমি আর তিন বৎসর পরে এই গর্ভ হইতে নিঃস্তা হইব।

রাজা এই কথা শুনিয়া ব্রাক্ষণদিগকে প্রতিদিন এক একটা গো দান করিতে আরম্ভ করিলেন। তিন বৎসর অতাত হইলে কন্যা প্রস্থতা হইল। কাশিরাজ, তাহার 'গান্দিনা' এই নাম রাঝিলেন। ইহার পর পরমোপকারী শাকলক তাঁহার গৃহে গমন করিলে তিনি তাঁহাকে সেই গান্দিনী নামা কন্যা অর্ঘাস্করপ প্রদান করিলেন। এই গান্দিনীও যাবজ্জীবন প্রতিদিন ব্যক্ষাকে

এতাঞ্চ মাতরং কিমত্র ইতি বা পাঠ: ।

र बाक्स (बा, आंक्सिन है कि वा श्री बीश्रम।

<sup>💲</sup> पन्त्राम् (खार्गाभकावित्र होछ श्रुष्टकाञ्चम) भाष्टेः

বতী । তদ্যাময়মকূরঃ শ্বফল্কাৎ জড়েত । তদ্যৈবংগুণ-মিথুনাছৎপতিঃ ॥ ৫৬॥

তৎ কথম সিত্রপ ক্রান্তেইত্র মরকদুর্ভিক্ষাদ্যুপজবা ন ভবিষ্যন্তি । তদয়মানীয়তামিতি, অলমত্রাতিগুণবত্য-পরাধাম্বেষণেন ইতি ॥ ৫৭ ॥

যত্ত্ত্বদ্ধন্যান্ধক্ষ্য এতদ্বচন্মাকর্ণ্য কেশবোগ্রসেন-বল-

ভদ্রপরোগ মৈর্যদুভিঃ ক্রভাপরাধতি তিক্ষাভবমভয়ং দত্ত্বা শাফল্কিঃ স্বপুরমানীতঃ। তত্র চাগতএব † তৎস্থ-স্যমন্তক-মণের মুভাবাদনার্ফি-মরক--দুর্ভিক্ষ-ব্যালাদুর্যদেবঃ শাশাম। ক্রফাচ চিন্তরামাস, স্বর্ণপমেতৎ এক একটা গো দান করিয়াছেন। সেই গান্দিনীর গর্ভে শফল্কের উর্নে অক্রুরের জন্ম হইয়াছে, সূত্রাং তাদৃশ (অলোকসামান্য) গুণ সম্পন্ন দম্পতি হইতেই অক্রের উৎপত্তি। তামেই অক্রের ছারকা পরিত্যাগ করিয়া গিয়াছেন। ইছুশ অব্যায় মরক দুর্ভিক্ষপ্রভৃতি উপন্থিত না হইবে কেন? আমার মতে অক্রেকে তানয়ন কর। তাঁহার অসাধারণ শুণ আছে।

কৃষ্ণ বলদেব উথসেন প্রভৃতি যাদবগণ, যদুর্দ্ধ অন্ধকের পূর্ব বাকা প্রবণ করিয়া শক্তকতনয় অক্রের পূর্বকৃত অপরাধ ক্ষমা করিয়া অভয় প্রদান পূর্বক তাঁহাকে দারকায় আনমন করিবামাত্র তল্লিকটন্থিত সামস্তক মণির প্রভাবে অনার্স্তি মরক দুর্ভিক্ষ ও ব্যালাদির উপ-দেব প্রভৃতি সমুদায় উপস্থা নির্ভিত্ত হইল, তথ্ন কৃষ্ণ চিস্তা

( দুর্ভিক্ষাদির ) কারণান্তর অনুসন্ধানে আবশ্যক নাই। \*१

<sup>•</sup> उपरेगावः धर्नामथूनाष्ट्रभातः है जि वा श्रीहः।

<sup>া</sup> হল চা ভ্রমাত এই ই'ত প্রস্তুকাস্করণ্য পাঠি:।

কারণং, যদয়ং গান্দিন্যাং শ্বফল্কেনাক্র্রো জনিতঃ; স্মহাংশ্যায়মনার্**টিদুর্ভিক্ষম**রকাদ্যুপশ্মনকারী প্র-ভাবঃ\*॥ ৫৮॥

তন্ত্রনমন্ত সকাশে স মহামণিঃ স্যুমন্তকাখ্যন্তিষ্ঠতি।
তন্ত হোবং বিধাঃ প্রভাবাঃ প্রায়ন্তে । অয়মপি যজ্ঞাদনতরম্ অন্যৎ ক্রন্ত্রং, তন্মাৎ যজ্ঞান্তরং যজতীতি।
অপেপাপাদানঞ্চান্ত। অসংশয়মত্রাসে বরমণিন্তিষ্ঠতীতি, ক্রভাধ্যবসায়োইন্যৎ প্রয়োজনমুদ্দিশ্য সকলযাদবসমাজমাত্মগেছে এবাচীকর্থ। তত্র চোপবিফেস্থিলেয়ু যাদবেয়ু প্রপ্রেরাজনমুপন্তম্য প্র্বিসিতে চ

করিতে লাগিলেন, অক্রে শ্বফকে হইতে গান্দিনীর গভে জিমিয়াছেন, ইহা সামান্য কারণ এবং এই অনার্ফি দুর্ভিক্ষ দরক প্রভৃতির উপশমনকারী প্রভাব অতীব গুরুতর। "দ্বামান বোধ করি, ইহার নিকট সেই স্যুমস্তক নামে মহামণি আছে। শুনিয়াছি, স্যুমস্তক মণিরই ঈছুল প্রভাব। এই অফ্রের এক যজ্জের পর অন্যু যজ্জ, অন্যু যজ্জের পর অপর একটা যজ্জ, এইরপে নিরস্তর যজ্জানুষ্ঠান করিয়া আসিতেছে। ইহার সম্প্রিও তাছেল অধিক নহে। ইহাতে বোধ হয়, ইহার নিক্ট অবশাই সেই মণিরত্ব আছে, এবিষয়ে কিছুমাত্র সংলয় নাই।

কৃষ্ণ এইরপ কৃতনিশ্য হইয়া কোন একটা প্রয়োজন উপ-লক্ষে আত্মতবনে সমুদায় যাদবগণকে একত্র সমবেত করিলেন। সমুদায় যাদবগণ সেই স্থানে উপবিষ্ট হইলে যে উপলক্ষে সকলকে আহ্বান করা হইয়াছিল, তাহা শেষ হইল। পরে

<sup>\*</sup> भक्तिकृत्यम्बद्धिः देवस्याची खेलावः अति वश्वः प्रोति ।

তি সিন্ প্রদক্ষণিতপরিহাদকথামজূরেণ সহ কৃত্ব। জনা-দিনস্তমজূরমাহ॥ ৫১॥

দানপতে! জানীম এব বয়ং যথা শভধন্বনা\* অথিলজগৎসারভূতং স্যুমন্তকরত্বং ভবতঃ সকাশে সমর্পিতম্। তদেতদ্রাফ্রোপকারকং ভবতঃ সকাশে ভিষ্ঠতীতি
তিষ্ঠতু, সর্ব্বেএব বয়ং তৎপ্রভাবফলভুজঃ; কিন্তেষ
বলভদ্রোংসানাশক্ষিত্রান্। তদস্যৎপ্রীতয়ে দর্শয়,
ইত্যভিহিতঃ সরত্বঃ সোহচিন্তয়ৎ। কিমত্রাম্রষ্ঠয়ম্?
অন্যথা চেৎ ত্রবীম্যহং, তৎ কেবলাম্রভিরোধানমন্নিষ্যন্তো রত্বমেতে দক্ষ্যন্তীতি, অতোহনেষণং ন
ক্ষেম্মিতি † সংচিন্ত্য তম্থিলজগৎকারণভূতং নারায়ণ-

কৃষ্ণ, প্রসঙ্গ ক্রমে অকুরের সহিত নানাপ্রকার পরিহাস কথা কহিয়া তাঁহাকে কহিলেন, " দানপতে! শতধনু যে সেই নিধিল জগতের শার্ভ্রমণ স্যুমস্তক মণি ভোষার নিকট সমর্পণ করিয়াছিল, তাহা আমরা জ্ঞাত আছি। সেই মণি রাজ্যের উপকারী। তাহা ভোষার নিকটেই আছে, থারুক্। আমরা সকলেই তৎপ্রভাব-জনিত ফল ভোগ করিতেছি, কিন্তু এই বলদেব আমার প্রতি সন্দেহ করিয়াছিলেন। অত্রব আমার সন্তোষের নিমিক্ত তুমি সেই মণি একবার দেখাও।

কৃষ্ণ যখন এই কথা কহিলেন, তথন সেই রত্ন অক্রুরের নিকটেই ছিল! তিনি চিস্তা করিতে লাগিলেন, এক্ষণে কি করি? যদি মিথ্যা কথা কহি, তাহা হইলে এক্ষণে সেই মণি কেবল বস্তারত আছে, ইহারা বস্ত্র অনুষ্ধ করিলেই দেখিতে

<sup>•</sup> শুদ্ৰনা ভদিদম্ইতি কচিৎ পাঠঃ।

र अकार्खा है अक्षार न क्ष्मिमिड हेडि वा शाठाम् ।

মাহাক্রঃ; ভগবন্। মমৈতৎ স্যমন্তকমণিরত্নং শত-ধরুষা সমপিতিম্॥ ৬০॥

অপগতে চ তিমান্ অদ্য শ্বঃ প্রশ্বো বা ভগবান্
নাং যাচিষ্যভীতি ক্তমভিরতিক্ছে নৈতাবন্তং কালমধারয়ম্ \* অস্য চ ধারণক্রেশেনাহ্মশেবোপভোগেঘদক্ষিমানসো ন বেদ্মি স্মুখকলামপি॥ ৬১॥

এতাবন্মাত্রমশেষরাস্ট্রোপকারি ধার্য়িতুং ন শক্নো-ভীতি মাং ভগবান্ মংস্যত ইত্যাত্মনা ন চোদিত্র্॥৬২

তদিদং স্যমন্তকরত্বং গৃহ্যতাম্, ইচ্ছয়া যস্যাভিন্
মতং তস্য সমর্প্যতাম্। ততঃ সোহধরবস্ত্রনিগোপিতাতিলঘুকনকসমুদ্যাকং প্রকটীক্লতবান্॥ ৬৩॥

পাইবে। পরস্কু (বস্ত্র বা গৃহ) অনুষণ আমার মঙ্গল জনক নহে। অক্রুর এইরপ পর্য্যালোচনা করিয়া অথিল জগতের কারণ স্বরূপ নারায়ণকে কহিলেন, ভ্রগবন্! শতধনু আমার নিকট এই স্যুমস্তক মণি সমূর্পণ করিয়াছিল। °° যথন শতধনুর মৃত্যু হইল তথন, আপনি অদ্য কল্য বা পরশ্ব এক সময় চাহিবেন, এই মনে করিয়া অতিকটে এত কাল রক্ষা করিয়াছি। এই মণি ধারণে এতদূর ক্লেশ যে, আমি সমুদায় ভোগেই অনাসক্ত-চিত্ত (ও এককালে বঞ্চিত) হইয়া আছি স্কুত্রাং আমার আত্মসুখের লেশমাত্রও নাই। ৬০ পাছে আপনি মনে করেন যে, অক্রুর সমুদায় রাজ্যের উপকারী এই মণি ধারণ করিতেও পারিল না, এই আশক্ষায় আমি স্বয়ং সম্পণি করি নাই। ৬০ এই সেই স্যুমস্তক মণি, গ্রহণ করন। একণে স্বেচ্ছা-

<sup>\*</sup> শাচিষ্যভীতি এভাবস্থং **কালমভিত্তজু**ল ধাৰ্য়ামি ইভি বা পঠতে মৃ !

ততক্ষ নিষ্ণাম্য স্যমন্তক্মণিং তত্র যদুস্মাক্ষেমুমোচ। মুক্তমাত্রে চ তেনাতিকান্ত্যা তদখিলমান্তানমুদ্যোতি-তম্॥ ৬৪॥

অথাহাক্রুরঃ, স এষ মণির্যঃ শতধন্বনাম্মাকং সমপিতিঃ, যস্যায়ং, স এনং গৃহ্ণান্থিতি। তম্মণিরত্নমালোক্য
সর্বযাদবানাং সাধু সাধিতি বিস্মিতমনসাং \* বাচোহক্রায়ন্ত। তমালোক্য মমায়মচ্যুতেনৈব সামান্যঃ সমন্বীপ্রিতঃ † ইতি বলভদ্রঃ সম্পুর্হোহ্ভবৎ॥ ৬৫॥

নুসারে যাঁহাকে অভিকৃতি হয়, ভাঁহার নিকট সমর্পণ করুন।
অক্রুর এই কথা বলিয়া পরিধেয় বসনে লুকায়িত অভিলঘু
স্থবর্ণময় কোটা বাহির করিলেন। °° অনস্তর সেই কোটার
মধ্য হইতে স্যমন্তক মণি বহিন্ধৃত করিয়া সেই যাদব সমাজে
বিস্তীর্ণ করিয়া রাখিলেন। সেই রত্নমালা বিস্তীর্ণ করিবামাত্র
সাতিশয় কাস্তিদারা সেই সমুদায় সভামগুপ উজ্জ্বল হইল। °°

অনস্তর অক্র কহিলেন, এই সেই সামস্তক মণি। শতধনু
ইহা আমার নিকট সমর্পণ করিয়াছিল। ইহা বাঁহার বস্তু
তিনি এক্ষণে গ্রহণ করন। বাদবগণ ভাহা দেখিয়া বিষয়াবিষ্ট হইলেন। চতুর্দিক্ হইতে কেবল সাগু সাধু এই বাকা
ক্রত হইতে লাগিল। বলদেব সেই মণিরত্ন দেখিয়া স্পৃহান্তি
হইলেন (ও ভাবিতে লাগিলেন,) পূর্বে কৃষ্ণ অ্কীকার করিয়াছিলেন যে, এই মণি আমাদের উভয়ের সাধারণ সম্পৃত্তি

অতিবিশ্মিতবচসাম্ইতি কৈন্চিং পঠাতে।
 কমবিদ্হিত ইতি বহুর পুস্ককের্ দৃশ্যতে।

মনৈবেদং পিতৃধনমিতাতীব চ সত্যভামাপি স্পৃহয়াঞ্চকার। বল-সত্যাননাবলোকনাৎ ক্লঞ্চো২প্যা-ত্মানং চক্রান্তরাবস্থিতমিব মেনে॥৬৬॥

সকলযাদবসমক্ষঞ্জাক্রুরমাহ, এতদ্ধি মণিরত্নমাত্ম-শোধনারৈষাং যদূনাং দর্শিতম। এতচ্চ মম বলভদ্রস্য চ সামান্যং, পিতৃধনঞ্চিতৎ সত্যভাষায়া নান্যস্য ॥৬৭॥

এতচ সর্বকালং শুচিনা ব্রহ্মচর্যাগুণবতা\* ধ্রিয়-মানমশেষরাষ্ট্রস্যোপকারকম্, অশুচিনা ধ্রিয়মাণমাধার-মেব হন্তি॥ ৬৮॥

অতোহ্হমদ্য বোড় শিস্ত্রীসহস্রপরিগ্রহাদসমর্থে। ধারণে ॥ ৬৯॥

হইবে। " সত্যভামা ভাবিলেন যে, ইহা আমার পিতৃধন, মৃতরাং তিনি মণির প্রতি সাতিশয় সপ্,হাবতী হইলেন। কৃষ্ণ, বলদেবের ও সত্যভামার মুখ দেখিয়া আপনাকে চক্রাস্তরে পতিতের ন্যায় বিবেচনা করিতে লাগিলেন। ""

অনস্তর কৃষ্ণ, সমুদায় যাদবগণের সমক্ষেই অক্রুরকে কহি-লেন, আমি আত্মকলক কালনের নিমিন্তই এই মণিরত্ব সমস্ত য'দবগণের সমক্ষে দেখাইতে কহিলাম। (আমি অঙ্গীকার করিয়াছিলাম) ইহা আমার ও বলদেবের সাধারণ সম্পত্তি (হইবে।)
পরস্ত ইহা সত্যভামার পৈতৃক ধন। অন্য ব্যক্তির ইহাতে
অধিকার নাই। তিনিন্তর শুচি হইয়া ব্রদ্ধার্য্য অবলম্বন পূর্মক
এই মণিরত্ব ধরেণ করিলে সমুদায় রাজ্যের মঙ্গল হয়। অশুচি
হইয়া ধারণ করিলে যে ধারণ করে তাহাকেই বিন্ট করিয়া
থাকে। তিনি উদ্ল অবস্থায় আমি ইহা ধারণ করিতে সমর্থ

<sup>•</sup> णिमा बम्करर्गाम b देशांत्र किह मोहि ।

কথকৈতৎ সত্যভাষা সীকরোতু। আর্ব্যেপ বলভডেনাপি মদিরাপানাদ্যশেষোপভোগপরিত্যাগঃ কথং
কার্যাঃ। তদয়ং\* যদুলোকোইয়ং বলভডোইহং সত্যা চ
ত্বাং দানপতে! প্রার্থামঃ, এতদ্ভবানের ধারয়তুং
সমর্যঃ। তৃৎস্থগাস্য রাষ্ট্রস্যোপকারকং, তদ্ভবানশেষরাষ্ট্রোপকারনিমিত্তমেতৎ পূর্ববং ধারয়তু! ত্রমান্যথা
ন বক্তব্যমিতুাকে দানপতিঃ তথেত্যুক্ত্বা জ্ঞাহ।
তন্মহামনিরত্বং ততঃ প্রভৃতি চাক্রুরঃ প্রকটেনবাতীব
তেজসা জাজ্ব্যমানেনাজ্বকগাসক্তেনাদিত্য ইবাংশুমালী চচার॥ ৭০॥

হইব না, কারণ আমার ষোড়শ সহস্র পত্নী আছে। ত সত্যভামাও (ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন পূর্মক) ইহা ধারণ করিতে কিরপে
সন্মতা হইবেন। আর্য্য বলদেবও কি (ইহা ধারণ করিবার
উদ্দেশে) সুরাপান প্রভৃতি সমুদার উপভোগ পরিত্যাগ করিতে
পারিবেন? অতএব অন্য চেক্টায় আবশ্যকতা নাই। দানপতে!
এই যাদবগণ, এই বলভ্জ, এই সক্ত্যভামা, এই আমি, আমরা
সকলে তোমাকে অনুরোধ করিতেছি, রাজ্যের মঙ্গলের নিমিক্ত
এই রত্মালা তুমিই পূর্মবিৎ ধারণ কর। তুমিই ইহা ধারণ
করিতে সমর্থ। ইহা তোমার নিকট থাকিলে সমুদায় রাজ্যের
কুশল হইবে। তুমি এবিষয় অস্বীকার করিও না।

কৃষ্ণ এই কথা বলিলে অক্রের তথান্ত বলিয়া সেই মহারত্ব গ্রহণ করিলেন। সেই দিন অবধি অক্রে, সাতিশয় তেজঃ-প্ঞাবারা জাজ্লামান সেই মণিরত্ব প্রকাশ্যরূপে কণ্ঠে ধারণ করিয়া দিবাকরের ন্যায় কিরণজাল বিস্তার পূর্বাক বিচরণ করিতেন। "

<sup>\*</sup> छपलम इंडि इहिंद भारे: ।

ইভ্যেতাং ভগবতে। মিধ্যাভিশস্তিক্ষালনাং যঃ স্মরতি, ন তদ্য কদাচিদণ্পাপি মিধ্যাভিশস্তির্ভবতি, অব্যাহতেন্দ্রিশ্চাখিলপাপমোক্ষমবাপ্লোতি॥ ৭১॥

## ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে চতুথে ২° শে ত্রয়োদশো২ধ্যায়ঃ 1

বে ব্যক্তি, ভগবানু কৃষ্ণের এই মিথ্যা কলঙ্ক কালন বিবরণ স্মরণ করে, তাহার উপর কথন কিছুমাত্রও মিথ্যা কলঙ্ক আরো-পিত হয় না। তাহার ইক্রিয় সম্দায় অব্যাহত থাকে। পরি-শেষে সে ব্যক্তি নিখিল পাপপুঞ্জ হইতে মুক্ত হয়। ত

> বিক্লুপুরাণ, চতুর্থ অংশ ত্রয়োদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

# विक्षुश्रवागम्।

চতুর্থো২ংশঃ

চতুর্দ্দশাধ্যায়ঃ।

### পরাশর উবাচ।

অন্যত্তি জার কার্মান করে। তন্তাপি সত্যকঃ, সত্যকাৎ সাত্যকিঃ, যুমুধাননামা, ততোপাসকঃ† তৎ-পুত্রশ্চ তূণিঃ,‡ তূণেযু গন্ধর ইতি শৈনেয়াঃ॥ ১॥

অন্মিত্রস্থৈবাদ্বয়ে পৃশ্নিঃ,\* তস্মাচ্চ শ্বফল্কঃ। তৎ-প্রভাবঃ কথিত এব। শ্বফল্কস্থ কনীয়াংশ্চিত্রকো নামা-

পরাশর কহিলেন। অনমিত্রের অনুজের (পুত্রের) নাম
শিনি। শিনির পুত্র সভাক, সভাকের পুত্র সাভাকি, সাভাকির
একটা নাম মুমুধান। মুমুধান হইতে অসঙ্গ, (অংশগ) অসঙ্গ
হইতে তূলি (ক্রুণি) ভূণি হইতে মুগন্ধর উৎপন্ন হইলেন।
ইঁহারা শিনির বংশীয়।

অনমিত্রের আর একটা পুত্র হইয়াছিল। তাহার নাম পৃথি। পৃথির পুত্রের নাম শ্বফল্ক। শ্বকল্কের প্রভাব পূর্বেই বর্ণন

<sup>•</sup> অন্মিত্রস্যাত্মজঃ ইতি পাঠাপ্তর্ম্ ।

<sup>া</sup> তত্তাপ্রশান ইভি বা পঠাতাম ।

<sup>ু</sup> ত পুরশ্চ জ্বিঃ ইতি, তা নিঃ ইতি বা পঠনীয়ম।

<sup>•</sup> অন্যঃ ব্যুষ্ণঃ ইতি কেচিৎ প? खि।

ভবৎ ভাতা। শ্বফলকাদক্রো গান্দিন্যাম্ অভবং।
তথোপমদ্গু--স্দর-বিশারি-মেজয়--গিরিক্ষলোপক্তলশক্রত্ম--বিমর্দন-ধর্মধ্ক্-দৃষ্টশর্ম--গন্ধমোজাবাহ-প্রতিবাহাখ্যাঃ\* পুত্রাঃ, স্থতারাখ্যা চ কন্যা। দেববান্ উপদেবক্ষ
অক্রপুত্রো। পৃথু-বিপৃথু-প্রমুখাঃ চিত্রকন্ত পুত্রা
বহবোহভবন্॥ ২॥

কুকুর-ভদ্ধমান-শুচিকম্বল-বর্থিবাধ্যাঃ তথা অন্ধকস্ম চত্ত্বারঃ পুর্ব্রাঃ॥ ৩॥

কুকুরাৎ ধৃষ্টঃ, † তস্মাচ্চ কপোতরোমা, ততশ্চ বিলোমা, তস্মাদপি তুমুরুসথা ভবসংজ্ঞকশ্চন্দনোদক-

করিয়াছি। শ্বক্তেকর কনিষ্ঠ ভ্রাতার নাম চিত্রক। শ্বক্তক হইতে গান্দিনীর গর্ভে অক্রের জম হয়। এতদ্বাতীত উপ্মদ্ধ্র, মৃদর, (মদ্ধ্য) বিশারি, মেজয়, গিরিক্ষল্র, উপক্ষল্র, শত্রুল, বিমর্দ্দন, (অরিমর্দ্দন) ধর্মপূক্, ছফীশন্মা, গন্ধক্ষোজ, অবাহ ও প্রতিবাহ নামে অনেক্ষুলি পুত্র জন্মিয়াছিল। ইঁহার একটা কন্যা হইয়াছিল, তাহার নাম স্থতারা। অক্রের দুইটা পুত্র জন্মে, তাহাদের নাম দেববান্ ও উপদেব। চিত্রকের অনেক-শুলি পুত্র হইয়াছিল। ভাহাদের নাম পুণু বিপুথু প্রভৃতি। ব

সোত্বতনয়) অন্ধকের চারিটা পুত্র উৎপন্ন হয়। তাহ:-দের নাম—কুকুর, ভব্ধমান, শুচিকপল ও বর্হিষ। ° কুকুরের পুত্র পৃষ্ট, (রিষ্টবা রুষ্টি) ধুষ্টের পুত্র কপোতরোমা, কপোত-

মুদ্ধ ইন্ড ক্র মদ্পুরিতি, বিময়্পন ইন্ডার তারিম্পন ইন্ডি, দৃষ্ঠপথ ইন্ডারে শৃদিক্ষা ইতি নামান্ত্রণ পুস্তক স্থারে লাভাতে।

<sup>\*</sup> বিশ্ব হলি, ব্রক্তাবতি ৮ ব্রক্তসং নামান্তর: পুস্থকান্তবে দুশ্যতে ।

দুন্দুভিঃ। তভশ্চভিজিৎ, ততঃ পুনৰ্বস্থঃ, তস্থাপ্যা-হুকঃপুত্ৰঃ, আছিকী কন্যাভূৎ॥৪॥

আত্কন্স দেবকোগ্রসেনে ছি পুজ্রে। দেববারপদেবশ্চ স্থাদেবা দেবরক্ষিতো দেবকন্সাপি চত্ত্বারঃ পুজাঃ।
তেষাঞ্চ রকদেবা উপদেবা দেবরক্ষিতা জ্রীদেবা শান্তিকোন সহদেবা দেবকী চ সপ্ত ভগিন্যঃ ৷ তাশ্চ সর্ব্বা এব
বস্থাদেব উপযেমে। উগ্রসেনস্থাপি কংস-ন্যথাধস্থাম-কন্ধ-শঙ্কু-সভূমি-রাষ্ট্রপাল-যুদ্ধমুক্তি-ভূক্তিমৎ-সংজ্ঞাঃ
পুজাঃ; কংসা-কংসবতী-স্থভনু-রাষ্ট্রপালী-কন্ধী চোগ্রদেনতন্ত্রজাঃ॥ ৫॥

রোমার পুত্র বিলোমা, বিলোমা হইতে তুষ্টুরুর সধা ভব উৎপন্ন হইলেন। "চন্দনোদক দুন্দুভি" এই উপাধিদারা ইনি বিখ্যাত ছিলেন। ভবের পুত্র অভিজিৎ, অভিজিতের পুত্র পুনর্বসূ, পুনর্যস্থ হইতে আছক নামে পুত্র ও আছকী নামে কন্যা উৎপন্ন হইয়াছিল। "

আহুকের দুইটা পুত্র হয়। তাহাদের লাম দেবক ও উগ্র-দেন। দেবকের চারি পুত্র। তাহাদের নাম দেববান্, উপদেব, মুদেব ও দেবরক্ষিত। এতদ্বাতীত দেবকের সাতটা কন্যা হইয়াছিল। এই কন্যাদিবের নাম—রকদেবা, উপদেবা, দেব-রক্ষিতা, জ্ঞীদেবা, শান্তিদেবা, সহদেবা ও দেবকী। বস্থদেব এই সাত ভাগনীকেই বিবাহ করেন। উগ্রসেনের অনেকগুলি পুত্র হইয়াছিল। তাহাদের নাম—কংস, ন্যথোধ, স্থনাম, কক্ক, শক্ক, সভূমি, রাইপাল, যুক্তমুষ্টি ও তুষ্টিমান্। উগ্রসেনের কন্যাদিবরের নাম কংসা, কংস্বতী, স্থতনু, রাইপালী ও ক্ষী।

ভজমানাচ্চ বিদূর্ধঃ পু্জোইভবং। বিদূর্ধাং শৃরঃ, শূরাং শমী, শমিনঃ প্রতিক্ষত্রঃ, তস্মাৎ স্বয়স্তোজঃ, ভতশ্চ হৃদিকঃ॥ ৬॥

ততশ্চ রুতবর্মা, তক্মাৎ শতধন্ত দেবনী চু বাদ্যা বভূবঃ॥१ দেবনী চূষ্দ্য শ্রঃ, শ্রদ্যাপি মারিষ। নাম পত্ন্য-ভবৎ॥ ৮॥

তস্যাঞ্চাদৌ দশ পুত্রানজনয়ৎ বস্থদেবপূর্বান্। বস্থদেবস্য জাতমাত্রস্যৈর এতদ্পৃত্যে ভগবদংশাবতার-. মব্যাহতদৃষ্ট্য। পশুদ্ভিদ্বেবিঃ দিব্যা আনকা দুন্দুভয়শ্চ বাদিতাঃ॥ ৯॥

ততন্ত দৈবানকদুন্দু ভিসংজ্ঞানবাপ। তদ্যাপি দেব- ভাগ-দেবশ্রবোহনাধৃষ্টি \* করুদ্ধক-বৎসবালক-স্ঞ্জয়-

ভদ্ধনানের পুত্র বিদূর্থ, বিদূর্থ হইতে শূর, শূর হ
শামী, শামা হইতে প্রতিক্ষল, প্রতিক্ষল ইইতে স্বয়ন্তাক, সং
স্থোক হইতে হাদিক, তিনিক হইতে ক্তবর্মা, কতবর্মা হইতে
শাতধনু, দেবমীচুৰ প্রত্রের নাম শূর। শূরের পত্নীর নাম মারিষা।
দ্বেনমীচুৰ হইতে মারিষার গর্ভে দশ্চী পুত্র উৎপন্ন হইল। তাহা
দের নাম বস্থদের প্রত্রের নাম শূর। সূদ্বের পত্নীর নাম মারিষা।
দের নাম বস্থদের প্রত্রের নাম শূর। শূরের পত্নীর নাম মারিষা।
দের নাম বস্থদের প্রত্রে বিশ্বার গর্ভে দশ্চী পুত্র উৎপন্ন হইল। তাহা
দের নাম বস্থদের প্রত্তি বিশ্বান কর্ম পরিগ্রহ করিবামাত্র,
দেবতারা দিবা দৃষ্টিতে দেখিলেন যে, তাঁহার গৃহে ভগবান্
দ্বিষ্ণু অংশ দারা অবতীর্ন হইবেন, স্কুতরাং তাঁহার। দিব্য
স্থানক পেটহ) ও দুন্দুভি (ভেরা) বাজাইতে লাগিলেন। এই
কারণে বসুদের আনকদ্বন্ধুভি নাম প্রাপ্ত হইয়াছেন।

বস্থুদেবের অপর নয় ভ্রাভার নাম দেবভাগ, দেবশ্রাণাঃ, অনা-১

অনায়্টিরিতায় য়য়৾৵ ইতি পৃথক্ পাঠ: ।

শ্যাম-শমীক-গণ্ডুম-সংজ্ঞা নব জাতরো বভূবুঃ, পৃধা ক্রুতদেবা ক্রুতনীর্ত্তিঃ ক্রুত্রেবা রাজাধিদেবী চ বস্থ-দেবাদীনাং পঞ্চ ভগিন্যোহভবন্। শ্রুস্ত চ কুন্তিভো-জনামা স্থাভবং । ভব্ম চাপুরায় পৃথামাত্মজাং বিধিনা শ্রোহদদং। তাঞ্চ পাণ্ডুরুবাহ ৷ তস্থাঞ্চ ধর্মা-নিল-শক্র-মুধিষ্ঠির-ভীমার্জ্জু নাখ্যান্ত্রয়ঃ পুরাঃ সমুং-পাদিভাঃ। প্র্মন্ত্রায়াশ্চ ভগবতা ভাষতা কর্ণাখ্যঃ কানীনঃ পুরোইজন্যত ॥ ১০॥

তস্থাশ্চ সপত্নী মাজী নামাভবং। তস্থাঞ্চ নাসত্য-আভ্যাং নকুল-সহদেবৌ পাত্থোঃ পুত্রো জনিতো।

ধৃটি, করুদ্ধক, বৎসবালক, স্প্রেয়, শ্যাম, শমীক, ও গগুৰ। ই হাদের পাঁচটা ভগিনী ছিল। ঐ ভগিনীগণের নাম—পৃথা, জ্বাদেবা, জ্বাক্তিবির্ভি, ক্ষাত্র্বা ও রাজাধিদেবী।

শূরের কুন্তিভোজ নামে এক সধা ছিলেন। কুন্তিভোজের পত্র হয় নাই। শূর, এই অপুত্র কুন্তিভোজকে (দন্তক-) বিধা-নানুসারে পৃথানায়ী কন্যা প্রদান করিলেন। পাঞ্ এই পৃথাকে বিবাহ করেন।

ধর্ম, বায়ু ও ইক্র হইতে এই পৃথার গর্ভে মুধিন্ঠির ভীম ও আর্জুন নামক তিনটী কুমার উৎপন্ন হয়। ইহার পূর্বে অনুঢ়া-বস্থায় ভগবান্ দিবাকর হইতে কর্ন নামে একটী কানীন পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল। পৃথার সপত্নীর নাম মাদ্রী। অস্থিনী-কুমারযুগল, এই মাদ্রীর গর্ভে নকুল ও সহদেব নামে পাঞ্র অপর দুইটী পুত্র উৎপাদন করেন।

গ্ৰস্য চ কুন্তিন্মি দখা, ইতি পুস্তকাল্ভবদ্য পাঠঃ।

শ্রুতপ্রবসমপি চেদিরাজো দমঘোষনামা উপ-যেমে। তদ্যাং শিশুপালম্ উৎপাদয়ামাদ। দ হি পূর্ব্ব-মপ্যনাচারবিক্রমদম্পাশ্লো‡ দৈত্যাদি-পুরুষো হিরণ্যকশি-পুরভূৎ॥ ১১॥

যশ্চ ভগবতা সকললোকগুরুণা ঘাতিতঃ পুন-

র্কশর্মা নামক কার্ম (পৃথার ভগিনী) আচতদেবাকে বিবাহ করেন। এই অন্তদেবার গর্ভে দন্তবক্র নামে মহাস্কর জন্ম পরি-গ্রহ করিয়াছিল। কৈকেয়রাজ অন্তকীর্জির পাণিগ্রহণ করিয়া-ছিলেন। এই অন্তকীর্জির গর্ব্জে সন্তর্দ্ধন প্রভৃতি পঞ্চ কৈকেয় উৎপন্ন হইয়াছিল। রাজাধিদেবীর গর্ব্জে অবন্তিদেশীয় বিন্দ ও অনুবিন্দ জন্ম পরিগ্রহ করেন।

চেদিরাজ দনঘোষ, শ্রুতশ্রনাকে বিবাহ করিয়াছিলেন। এই দমঘোষ হইতে শ্রুতশ্বার গর্ত্তে শিশুপালের জন্ম হয়। এই শিশুপাল পূর্যজন্ম অনাচারী বিক্রমসম্পন্ন হিরণ্যকশিপু নামক দৈতাদিগের আদিপুরুষ ছিল। '' সকল, লোকশুরু ভগবান্ বিষ্ণু তাহার জীবন বিনাশ করিয়াছিলেন। এই হিরণ্যকশিপু

<sup>•</sup> কার্মঃ ক্রম্দেশীয়ো বাজা। কারুম ইভি বা পঠ্যভাম্।

<sup>া</sup> দস্তবক্ষে নাম ইতি পাঠান্তরম্। মহাভারতেহপ্যেবং পাঠান্তরং দৃশ্যতে। ুস হি পুরুষ্দার্বিজ্ঞানস সাম ইতি কেচিং পঠান্ত।

রপ্যক্ষতবীর্যদেশির্য্যক্ষৎপরাক্তমগুণঃ সমাক্রান্তসকল-তৈলোক্যেশ্বর প্রতাপো দশাননোহতবৎ ॥ ১২ ॥

বছকালোপভুক্ত--ভগবৎসকাশাদেবাপ্ত--শরীর-পাতোদ্ভব-পুণ্যফলো ২থ \* ভগবতৈব রাঘবরূপিণা গোহপি নিধনমুপনীতঃ চেদিরাজ-দমঘোষ-পুত্রঃ শিশুপালনামাভবৎ॥ ১৩॥

পিশুপালত্বে চ ভগবতো ভূভারাবতারণারাবতীর্ণাংশস্য পুগুরীকনয়নাখ্যস্য উপরি দ্বেষারুবন্ধমতিতরাং চকার। ভগবতা চনিধনমুপনীতঃ, তত্ত্রৈব পরমাত্মভূতে মনসস্তদৈকাগ্রতয়া † তত্ত্রৈব সাযুজ্যমবাপ ॥১৪॥

পুনর্বার রাবণ হইয়া জন্ম পরিগ্রহ করিল। তাহার শৌর্যা বীর্যা পরাক্রম প্রভৃতি সম্দায় সম্পত্তি অথগুনীয় হইল। এই রাবণ, ত্তিলোকনাথ দেবরাজের সমুদায় প্রতাপ অধিকার করিল। ১২ পুনঃপুনঃ ভগবান্ হইতে তাহার শরীর পাত হওাতে তজ্জানিত পুণ্য-ফলে পুনর্বার সেই রাবণ রামরূপী ভগবান্ কর্ত্বকই নিহত হইল। অনন্তর রাবণ পরজ্মে চেদিরাজ দমঘোষের পুত্ররূপে জন্ম পরিগ্রহ করিয়া শিশুপাল এই নাম ধারণ করিল। ১৯ এই শিশুপালও ভূভার হরণের নিমিন্ত অবতীর্ণ ভগবান্ পুশুরীকাক্ষের অংশ কৃষ্ণের প্রতি সাতিশয় বিদ্বেভাব প্রকাশ করিতে লাগিল। ভগবান্ও তাহাকে বিন্তি করিলেন। সেই প্রমাত্ম-স্ক্রপ কৃষ্ণে তাহার মনের একাগ্রতা থাকাতে সে ওঁ হাতে লীন ও

<sup>\*</sup> ভুক্ততোগ-ভগৰৎ-স্কাশাৰাপ্ত-শরীরপাতোদ্ত্র-পুণ্ফলো সভোগাত্ত ইতি কচিৎ পঠি: 1

<sup>🕈</sup> মনস একাগ্ৰত্য়া ইতি বা প'ঠ:।

ভগবান্ হি প্রসন্ধো যথাভিলষিতং দদাতি, অপ্র-সন্নোহপি নিম্নু দিব্যমরূপমং স্থানং প্রয়ফ্তি ॥ ১৫॥

## ইতি এ বিষ্ণুপুরাণে চতুর্থে ২° শে চতুর্দিশো২ধ্যায়ঃ ।

মুক্ত হইল। <sup>১৪</sup> (ইহার কারণ এই যে) ভগবান্ যদি প্রসন্ন হন, তাহা হইলে অভিলম্বিত বস্তু প্রদান করিয়া থাকেন, যদি অপ্রন্ন হইয়া বিনাশ করেন, তাহা হইলেও সেই বিদ্বেষীকে দিবা অনুপ্র লোকে প্রেরণ করেন। <sup>১৫</sup>

বিষ্ণুপুরাণ, চতুর্থাংশ, চতুর্দ্দশ অধ্যায় সমাপ্ত।

## বিষ্পুরাণম্ ৷

চতুর্থো২ংশঃ।

शक्षमभाशांगः।

#### মৈত্রেয় উবাচ।

হিরণ্যকশিপুত্ব চ রাবণত্বে চ বিশ্বনা ।

অবাপ নিহতো ভোগান্ অপ্রাপ্যানমরৈরপি ॥
ন লয়ং তত্র তেনৈব নিহতঃ স কথং পুনঃ ।
সম্প্রাপ্তঃ শিশুপালত্বে সায়ুজ্যং শাশ্বতে হরৌ ॥
এতদিছাম্যহং শ্রোভুং সর্ব্বধর্মভূতাং বর ।
কৌতূহলপরেণৈতৎ পৃষ্টো মে বক্তুমর্হসি ॥ ১॥

মৈত্রেয় কহিলেন। হিরণ্যকশিপু ও রাবণ, বিষণু কর্তৃক নিহত হইয়া (পর জন্মে) বিবিধ ঐশ্ব্যা ও বিবিধ ভোগ্য বস্তু লাভ করিয়াছিল। তাহারা বিষণু কর্তৃক নিহত হইয়াও কিজন্য তাহাতে লয় প্রাপ্ত হইল না? এবং তাহারা যখন শিশুপাল হইয়াছিল, তখন সেই শাশ্বত হরিতে লীন হইল, ইহার কারণ কি? ধার্মিকশ্রেষ্ঠ! আমি এ বিষয় শ্রবণ করিতে বাসনাকরি। আমি কৌতুহলাক্রান্ত হইয়া জিজ্ঞাসা করিতেছি; আপনি আমার নিকট বলুন।

#### পরাশর উবাচ।

দৈত্যেশ্বরস্য তু বধায়াখিললোকে বিপত্তি স্থিতি-বিনাশ-কারিণা পূর্ব্বতরুং গৃহ্নতা\* নৃসিংহরপ্নাবিচ্চ্-তম্। তত্র হিরণ্যকশিপোর্বিষ্ণুরয়মিত্যেবং ন মনস্যভূৎ॥২

নিরতিশয়-পুণ্যজাত-সম্ভূতমেতৎ সত্ত্বমিতি রজো-ডেকপ্রেরিতৈকার্থমতিস্তদ্ভাবনাযোগাৎ ততোহবাপ্ত-বধহৈতুকীং নিরতিশয়ামেবাখিল-ত্রৈলোক্যাধিক্য-ধারিণীং দশাননত্ত্ব ভোগসংপদমবাপ ॥ ৩ ॥

নাতস্ত্রিন্ অনাদিনিধনে পরব্রশ্ভূতে ভগবত্যনা-লম্মীক্তে মনসম্ভত্ত লয়ম্ †॥ ৪॥

পরাশর কহিলেন। নিখিল লোকের ক্টি-স্থিতি-প্রলয়-কারী (ভগবান্ বিষণু ) যখন দৈত্যেশর হিরণ্যকশিপুর বিনাশের নিমিস্ত অভূতপূর্ব মূর্ত্তি অবলম্বন করেন, তখন তিনি স্থাসিংহরণ ধারণ করিয়াছিলেন। সেই স্থাসংহের প্রতি হিরণ্যকশিপুর এরপ বোধ জন্মে নাই যে, ইনি বিষণু । এনে মনে করিয়াছিল, এই অপূর্ব্ব প্রাণী, সাতিশয় পুণ্যপুঞ্জে সমুৎপন্ন হইয়াছে। তাহার অস্তঃকরণ রক্ষেম্ভণ শ্বারা এইরূপ একাশ্র হত্তয়াতে সে সেই পুণ্যপুঞ্জময়) স্থাসিংহ মূর্ত্তি ভাবনা করিতে করিতে তাঁহা হইছে বিনাশ প্রাপ্ত হইল। হিরণ্যকশিপু, এই কারণেই (পর জন্মে) দশানন নামক রাক্ষসরূপে জন্ম পরিশ্রহ করিয়াও ত্রৈলোক্যের একাধিপত্য এবং নিরতিশয় ভোগসম্পত্তি লাভ করিল। স্তৃত্যু-কালে তাহার অস্তঃকরণ, অনাদি অনন্ত ভগবান্ পরম ব্রন্ধকে

পুক্ত সুগ্ৰহণং কুক্তা ইতি বা পঠাতাম্।

र मनभक्षमा नग्रम् हेलि वा शाक्षम्।

দশাননত্বেহপ্যনন্ধপরাধীনয় জানকী-সমাসক্তচেত-সোদাসরথিরপথারিণঃ তজপদর্শনমেবাসীৎ, নায়ম-চ্যুত ইত্যাসক্তির্বিপদ্যভোহন্তঃকরণস্য মানুষবুদ্ধিরেব কেবলমভূৎ। ৫॥

পুনরচ্যুত-বিনিপাতমাত্রফলমথিল-ভূমগুল-শ্লাঘ্য-চেদিরাজকুলজন্মাব্যাহতং চৈশ্বর্যং শিশুপালত্বে চ অবাপ॥৬॥

তত্র স্থিলান্যের ভগবন্নামকারণান্যভবন্। ততশ্চ তৎকারণক্ষতানাং তেষামশোষাণানেরাচ্যুতনামামনবর-

অবলম্বন বা চিন্তা করে নাই, এই কারণে তাঁহাতে সে লয় প্রাপ্ত হইতে পারে নাই।

হিরণ্টকশিপু যখন দশানন রূপে জম পরিপ্রাহ করিল, তখন তাহার হৃদয় জনকতনয়ার প্রতি আসজ্ঞ ও অনক্ষ-পরতন্ত্র ছিল। তখন রামরূপধারী ভগবান্কে দর্শন করিয়া তাহার অন্তঃকরণে কেবল মনুষাবুদ্ধিই জন্মিয়াছিল। যখন তাহার মৃত্যু হয়, তখন তাহার এরপ দৃঢ় সংক্ষার ছিল যে, ইনি অচ্যুত্ত নহেন, ইনি মনুষা। যখন রাবণ ভগবান্ অচ্যুতের হস্তে বিনিহত হইল, তখন দে দেই একমাত্র অচ্যুত হস্তে মৃত্যু-জনিত পুণ্যবলে লিখিল ভূমগুল মধ্যে শ্লাখ্য চেদিরাজকুলে জন্ম ও অব্যাহত ঐশ্ব্যা লাভ করিয়া শিশুপাল নামে বিখ্যাত হইল। এই জন্মে ভগবানের নাম উচ্চারণ করিবার তাহার অনেকশ্রুলি কারণ ঘটিয়াছিল। আনেক জন্মে কৃষ্ণের প্রতি বিদ্বেষ ভাব থাকাতে ঐ শিশুপাল সম্ভর্জন কালে যখন ঐ ভগবানের নিন্দা করিতে লাগিল, তখন

<sup>\*</sup> বিপদ্যভোহপান্ত:করণসা ইতি বা পঠি:।

তমনেকজন্ম-সংবর্দ্ধিত-বিদ্বেষান্ত্বন্ধি-চিত্তে। বিনিন্দন্ সন্তর্জনাদিয়ু উচ্চারণমকরোৎ॥ १॥

তচ্চ রূপমূৎফুল্ল-পদ্মলাক্ষমভ্যুজ্জল-পীতবস্ত্র-ধার্য্যনলকিরীট-কেয়ুর-কটকোপশোভিতমুদারপীবর-চতু-র্কান্ত শঙ্খ-চক্র-গদাসি-ধরম্ অতিপ্রোচ্-বৈরাত্মভাবাৎ∗ অটন-ভোজন-স্থানাসন-শয়নাদিষবস্থান্তবেয়ু নৈবাপ্যযাব-স্যাত্মচেতসঃ॥৮॥

ততন্ত্রেবাকোশে মূচারয়ন্ তমেব হৃদয়ে ধারয়-রাত্মবধায় ভগবদন্ত-চক্রাংশুমালোজ্বনমক্ষয়তেজঃ-স্বরূপং প্রমত্রক্ষস্রপ্রশাস্তরাগদ্বোদিদোবং † ভগ-বন্তমদ্রাক্ষীৎ ॥ ১॥

অনবরত তত্ত্বংকারণে তাঁহার সমুদায় নাম উচ্চারণ করিয়াছিল। অতীব প্রগাঢ় বৈরাত্বন্ধ হেতু গমন ভোচন স্থান উপবেশন শয়ন প্রভৃতি সমুদায় অবস্থাতেই অনন্যচন্ত্র শিশুপালের চিন্ত হইতে সেই প্রফুল্ল অমল-কমলদল-সদৃশ-লোচনমুগল-মুশোভিত অত্যুজ্ল পীতবসনধারী স্থাবিমল-কিরীট-কেয়ুর-কটক প্রভৃতি ভূষণে বিভূষিত উদার পীবর বাহুচতুট্য দ্বারা শহ্ম চক্র গদা খড়নধারী ক্ষমুর্ত্তি ক্লণমাত্রও অন্তর্হিত হয় নাই। শিশুপাল যখন আক্রেশ পূর্বক পুনঃপুন কৃষ্ণ নাম উচ্চারণ করিতে লাগিল ও তজ্জন্য যখন কৃষ্ণমূর্ত্তি তাহার হৃদয়ে ক্লাগন্ধক থাকিল, সেই সময় ভগবান্ কৃষ্ণ তাহার বিনাশের নিমিন্ত চক্র নিক্ষেপ করিলেন। পরে শিশুপাল, সেই চক্রের কিরণাবলী দ্বারা সমুজ্জ্বল অক্ষয় তেক্তঃশ্বরূপ পরম-

<sup>\*</sup> অভিপ্ররূদ-বৈরামুভাবাৎ ইভাপি পাঠ:।

<sup>ে</sup> অপণভরাণছেধাদিদোধ ইতি বছরু পুস্তকেরু দৃশ্যতে।

তাবচ্চ ভগবচ্চক্রেণাশু ব্যাপাদিতঃ। তেন তৎ-সারণ-দগ্ধাথিলাঘসঞ্চয়ে। ভগবতৈবান্তমুপনীতঃ তান্ম-মেব লয়মুপ্যযোঁ। এতৎ তবাথিলং ময়াভিহিতম্। ভগবানিহ কীর্তিতঃ\* সংস্মৃতশ্চ দ্বেষানুবন্ধেনাপ্যথিল-স্থরাস্থরাদি-দুর্লভং ফলং প্রযান্থতি, কিমুভ সম্যক্ ভক্তি-মতাম্॥১০॥

বস্থদেবস্যানকদুন্দুভেঃ পৌরবী-রোহিণী-মদিরা-ভজা-দেবকী-প্রমুখা-বহ্ব্যঃ পজু্যোহভবন্॥ ১১॥

ব্রহ্মস্বরূপ রাগদ্বোদি দোষ পরিশূন্য ভগবান্কে দেখিতে পাইল। এই সময়েই শিশুপাল ভগবানের চক্র দারা দেহ পরিত্যাগ করিল। যে ক্ষণে ভগবান্ কুষ্ণের স্মরণ দারা তাহার সমুদায় পাপপুঞ্জ ক্ষয় হইল, সেই ক্ষণেই ভগবান্ ভাহার মন্তক ছেদন করেন। এই কারণেই শিশুপাল পরম ব্রহ্ম ক্ষণে লয়প্রাপ্ত হইয়াছে।

এই তোমার নিকট সমুদায় কহিলাম। যদি কোন ব্যক্তি বিষেষ পূর্মক ভগবান্ বিষণ,কে স্মরণ করে বা তাঁহার নাম কীর্ত্তন করে, তাহা হইলেও তিনি তাহাকে সমুদায় স্থ্যাসুরের দুর্লভ মোক্ষরেপ ফল প্রদান করিয়া থাকেন। কোন ব্যক্তি উন্তম ভক্তি-যুক্ত হইয়া তাঁহার নাম কীর্ত্তন ও তাঁহাকে স্মরণ করিলে যে মুক্তি লাভ করে, এ কথা বলা বাহলা মাত্র। ১°

আনকদুন্দুভি বস্থদেবের অনেকশুলি পত্নী ছিলেন। তাঁহাদের নাম—পৌরবী অর্থাৎ পুরুবংশসম্ভূতা রোহিণী, মদিরা, ভদ্রা,

<sup>\*</sup> অয়ং হি ভগবান কীৰ্ত্তিত ইতি ৰা পাঠাম

বলভদ্রশারণ-শঠ-দুর্মদাদীন্ পুত্রান্ রোহিণ্যামানকহন্দুভিরুৎপাদয়ামাস। বলভদ্রোহপি রেবত্যাং নিশঠোল্মুকৌ পুত্রাবজনয়ৎ। মার্ফি-মার্মিচ্ছিশি-শিশুসত্যমৃতি-প্রমুখাঃ \* শারণস্যাত্মজাঃ। ভদ্রাখ-ভদ্রবাহুদুর্দ্ম ভূতাদ্যা রোহিণ্যাঃ কুলজাঃ॥ ১২॥

নন্দোপনন্দক্তকাদ্যা মদিরায়াস্তনয়াঃ। ভদ্রায়াশ্চা-পনিধি-গদাদ্যাঃ। বৈশালা চ কৌশিকমেকমজনয়দানক-দুন্দভিঃ। দেবক্যামপি কীর্ত্তিমৎ-স্ক্রেণোদাপি-ভদ্রসেন-ঋজুদাস-ভদ্রদেহাখ্যাঃ † ষট্পুত্রা জজ্ঞিরে॥ ১৩॥

দেবকী প্রভৃতি। ' আনকদুন্ত হইতে, রোহিণীর গর্ভে বলভদ্র, শারণ, শঠ, দুর্মদ প্রভৃতি পুত্র উৎপন্ন হইল। বলভদ্র
হইতে রেবতীর গর্ভে দুই পুত্র জম পরিগ্রহ করিয়াছিল। তাহাদের নাম—নিশঠ ও উল্মুক। শারণের অনেকগুলি পুত্র হইয়াছিল; তাহাদের নাম—মার্ফি, মার্ষিমান্, শিশী, শিশু ও সত্যধৃতি। ভদ্রাশ্ব, ভদ্রবাহু, দুর্দ্দম (দুর্গম)ও ভূত প্রভৃতি ই হারা
রোহিণীর বংশে উৎপন্ন। ' মদিরার পুত্রগণের নাম—নন্দ উপনন্দ ক্রতক প্রভৃতি। ভদ্রার পুত্রগণের নাম—উপনিধি গদ
প্রভৃতি। বসুদেবের বৈশাল্যা নান্নী পদ্ধী, একটীমাত্র প্রত্র প্রস্বব
করিয়াছিলেন। আনকদুন্তি হইতে দেবকীর গর্ভে প্রথম ছয়টী

প্রস্থৃতি শব্দ থাকাতে পিপ্তার ও কোষীনর, এই ছুই জন লক্ষিত ইইতেছেন। রোহিণীর বংশে উৎপন অর্থাৎ রোহিণীর গভজাত ওরিবংশে কথিত আচে, রোহিণীর দশ্টী পুত্র। ভাহাদের নাম — বলভদ্র, শারণ, শঠ, ছুগ্মদ, ভদ্রাম্য, ভদ্র-বাহ্য, ছুর্দ্দে, ভুত, পিপ্তার ও কোষীনর।১২

মাটে ইত্যন্ত মধি ইতি, শিশি ইত্যন্ত দিশি ইতি কৈশিং পঠাতে
 ত দ্ৰুতে ইত্যন্ত ভদ্ৰবে ইতি বা পঠাতাম্।

তাংক সর্বানের কংসো ঘাতিত্বান্। অনন্তরঞ্চ সপ্তমং গর্ভমর্দ্ধরাত্রে ভগবৎপ্রহিতা যোগনিদ্রা রোহিণ্যা জঠরমপক্ষ্য নীত্বতী॥ ১৪॥

कर्मनाष्ठामावित्र मक्सर्यनाथामवात्र ॥ ১৫॥

ততঃ সকলজগন্মহাতরুমুলভূতো ভূতাতীত-ভবিয্যাদি-সকলস্ত্রাস্তর-মুনি-মন্তর্জ-মনসামপ্য-\* গোচরোহজভবপ্রমুথৈরনলপ্রমুথৈশ্চ প্রণম্যাবনিভারাবতারণায়
প্রসাদিভো ভগবাননাদিমধ্যো দেবকীগর্ভে সমবততার
বাস্তদেবঃ॥ ১৬॥

পুত্র উংপন্ন হইয়াছিল। তাহাদের নাম—কীর্ত্তিমান্, স্থবেণ, উদাপি, ভত্রদেন, ঋজুদান ও ভত্রদেহ। ' কংন এই ছয়টী পুত্রকেই বিনাশ করিয়াছিল। অনস্তর একদা অন্ধরাত্র সময়ে ভগবৎ-প্রেরিতা যোগনিজা দেবকীর সপ্তম গর্ভ আকর্ষণ করিয়া রোহিণীর জঠরে স্থাপন করিলেন। ' এই সম্বর্ধণ অর্থাৎ আকর্ষণ হেতু বলভদ্র সম্বর্ধণ নাম প্রাপ্ত হইয়াছেন। '

অনন্তর যিনি নিখিল ব্রহ্মাণ্ড রূপ মহারক্ষের মূলস্বরূপ, দেব অন্তর মুনি মনুষ্য প্রভৃতি অতীত বর্ত্তমান ভবিষা সমুদায় জীব-গণেরও যিনি মনের অগোচর, যাঁহার আদি মধ্য অন্ত কিছুই বিনির্গয় হয় না, সেই ভগবান্ বিষ্ণুর নিকট ব্রহ্মা অগ্নি প্রভৃতি দেবগণ উপস্থিত হইয়া প্রণিপাত পূর্বক প্রসন্ন করিয়া ভূভার অবতারণের নিমিত্ত (প্রার্থনা করিলে) তিনি দেবকী গর্ভে অব-

কংস যথন দেবকীগভসভাত পুরুগণকে বিনাশ করে, তথন তাংগদের নাম-করণ হয় নাই, সুতরাং ইহারা পুর্ব জানের নামেতেই বিধাত। ১৯ \*খুনিজনসন্সাপি ইতি পাঠো ম এামাণিকঃ।

তৎপ্রসাদবিবর্দ্ধিতমানাভিমানা চ যোগনিদ্রা নন্দ-গোপপত্মা যশোদায়া গর্ভমধিষ্ঠিতবতী ॥ ১৭॥

\* স্থাসরাদিত্য চক্রাদি এইমব্যালা দিভয়ং স্থভ-মানসমখিলনে বৈতৎ জগদপাস্তাধর্মমভবৎ তস্মিং শ্চ পুগুরীকনয়নে জায়মানে॥ ১৮॥

জাতেন চ তেনাখিলমেবৈতৎ সন্মার্গবর্ত্তি জগদ-ক্রিয়ত। ভগবতো২প্যত্র মর্ত্তালোকেহবতীর্ণদ্য বোড়শ-সহস্রাণ্যেকোত্তরশতাধিকানি স্ত্রীণামভবন্। তাসাঞ্চ রুক্মিণী-সত্যভামা-জাম্বতী-জালহাদিনী-প্রমুখ। অফৌ পত্ন্যঃ প্রধানাঃ। তাসু চাফীয়ুতানি লক্ষঞ্চ পুত্রাণাৎ ভগবানখিলমূর্ত্তিরনাদিমানজনয়ৎ॥১৯॥

তীর্ণ হইলেন ৷ ১৯ অনস্তর ভগবানের প্রাসাদে যোগনিদ্রার সন্মান ও মহিমা বন্ধিত হইলে ঐ যোগনিদ্রা নন্দগোপপত্নী যশোদার গর্জে অধিষ্ঠান করিলেন ৷ ১১

পরে ভগবান্ পুঞ্রীকনয়ন, যখন জয় পরিগ্রহ করেন, তৎকালে চক্র সূর্য্য প্রভৃতি সমুদায় গ্রহণ স্থপ্রমার হইল, হিংপ্র জন্তুর
ভয় থাকিল না, সমুদায় জগতের অধন্ম নিরাকৃত হইল, সকলেই
স্থান্থ কাককেই স্থাগিবন্তী করিয়াছিলেন। এই মর্ত্য লোকে
ভগবান্ অবতীর্ণ ইইয়া বোড়শ সহস্র এক শত একটী দার পরিগ্রহ করেন। এই সকল পত্নীর মধ্যে ক্রিফানী, সত্যভামা, জান্ত্রবতী, জালহাসিনী প্রভৃতি আটটী রমণীই প্রধান। অথিলমুর্ত্তি

<sup>•</sup> সুপ্রসংমত্যস। পুরুষ তদারভঃ ইড:ধিকঃ পাঠঃ।

তেষাঞ্চ প্রদূর্ম-চারুদেঞ্চ-\* সাম্বাদয়ন্ত্রয়োদশ প্রধানাঃ । প্রদূর্মে। হি রুক্মিণস্তনয়াং ককুদতীং নামোপযেমে। তস্যামস্যানিরুদ্ধো জজ্ঞে। অনিরুদ্ধো-হপি রুক্মিণ এব পোত্রীং স্থভদাং নামোপযেমে। তস্যামস্য বজোহভবৎ। বজুস্য প্রতিবাহুঃ, তম্যাপি স্থচারুঃ । এবমনেকশতসাহত্রপুরুষসঙ্গস্য † যদুকুলস্য পুরুষসংখ্যা বর্ষশতৈরপি জ্ঞাতুং ন শক্যতে । যতো হি শ্লোকাবত্র চরিতাথোঁ॥ ২০॥

ভিস্ৰঃ কোট্যঃ সহস্ৰাণাম্টাশীতিশতানি চ।

ভগকান্ অনাদি কৃষণ, এই সকল পত্নীতে এক লক্ষ অশীতি সহস্ৰ পুত্ৰ উৎপাদন করিয়াছিলেন। ১৯ এই সমস্ত পুত্ৰগণের মধ্যে প্রদুয়ের, চারুদেষণ, সাম্ব প্রভৃতি ত্রয়োদশ পুত্রই প্রধান।

প্রদাস, রাজা রুক্সীর কন্য। ককুছতীকে বিবাহ করিলেন। পরে ঐ ককুছতীর গর্প্তে প্রদাস হইতে অনিরুদ্ধ করে পদ্মিগ্রহ করেন। অনিরুদ্ধ রুইতে সুক্রিয়ার পৌত্রী স্বভ্রাকে বিবাহ করিয়ারছিলেন। অনিরুদ্ধ হইতে সুভ্রার গর্ভে বজ্রনামক পুত্র উৎপন্ন হইল। বজ্রের পুত্র প্রতিবাহ, প্রতিবাহুর পুত্র সুচারু। যদুক্লে এইরূপ অনেক শত সহস্র পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল। ইঁহং-দের সংখ্যা ও নাম শত বৎসরেও পরিজ্ঞাত হইতে পারা যায় না। এ স্থলে দুইটীমাত্র শ্লোক পাঠ করিলেই অভিপ্রায় সিদ্ধ হইবে। ব্যা ক্রি

यमूतरणीय क्रमांतर्गालत अञ्जिलकांत निमिष्ठ एय मकल शृहां विद्या

<sup>\*</sup> চারুদেশ ইতি পাঠান্তরম্।

<sup>+</sup> পুক্ষসখ্যস্য ইতি প্রামানিকঃ পাঠঃ

কুমারাণাং গৃগচার্যাশ্চাপ্যোগ্যাস্থ্র যে রভাঃ(১)॥২১
সন্থ্যানং যাদবানাং কঃ করিষ্যতি মহাজুনাম্।
যত্রাযুতানামযুতং লক্ষেণাস্তে শতাধিক্য্(১)॥২২॥
দেবাস্থ্রহতা যে তু দৈতেয়াঃ স্থমহাবলাঃ।
তে চোৎপন্না মনুষ্যের জনোপ্যবকারিণঃ॥২৩॥
তেবাযুৎসাদনার্থায় ভুবি দেবো যদোঃ কুলে।
ভারতীর্ণঃ কুলশতং যত্রকাভ্যধিকং দ্বিজ্ঞ॥২৪॥
বিফুস্থেষাং প্রমাণে চ প্রভুত্বে চ ব্যবস্থিতঃ।
নিদেশস্থায়িনস্তম্য বভূবঃ সর্ব্যাদবাঃ॥২৫॥

গৃহে নিযুক্ত ছিলেন. তাঁহাদেরই সন্থ্যা তিন কোট অফাশীতি লক্ষ । ঈদ্বশ স্থলে কোন্ ব্যক্তি মহাত্মা যদুবংশীয়দিগের সংখ্যা করিতে সমর্থ ইইবে । ১০ এই বংশে এক পদ্ম দশ কোটি এক শত পুরুষই বর্ত্তমান ছিল। মহাবল পরাক্রান্ত যে সকল দৈত্য দেবাস্থর সংগ্রামে বিনফ হইয়াছিল, তাহারা মনুষালোকে উৎপন্ন হইয়া সকলের প্রতি অভ্যাচার করিতে ভারত্ত করে।১১ দেব বিষণু ঐ মনুষ্যরূপী দৈত্যদিগকে উৎসন্ন করিবার নিমিন্ত পৃথিবীতে যদুকুলে অবতীর্ণ হইলেন। এই যদুবংশীয় সমুদ্দায় ব্যক্তিই বিষণুকে মান্য করিত এবং বিষণুই ঐ বংশের সকলের প্রভা যাদ্বর্গণ সকলেই ক্ষের আজ্ঞানুবন্তী হইয়া থাকিত।১৪

य वाक्ति এই त्रक्षितश्मीय वीत्रशंतात उँ६ पक्ति निवदन मर्सम्।

<sup>\*</sup> চাপ্রোগ্যান্ত পাবলা ইতি কচিৎ পাঠঃ।

<sup>া</sup> লক্ষণান্তে সদান্তক ইতি কেচিৎ পঠান্ত।

প্রস্থাতং র্ফিবীরাণাং যঃ শৃণোতি নরঃ সদা ৷ স সর্বাপাতকৈমুক্তাে বিষ্ণুলোকং প্রপদ্যতে ৷২৬॥

# ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থেই°\শে পঞ্চশোহধ্যায়ঃ৷

শ্রাণ করিবেন, তিনি সম্দায় পাপ হইতে নির্মুক্ত হইয়া বিষ্ণু-লোক প্রাপ্ত হইবেন। ২৫

> বিফুপুরাণ, চতুর্থ অংশ, পঞ্চদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

## विक्यूत्रावम्।

চতুর্থোঽংশঃ 1

ষে ডুশো ২ ধ্যায়ঃ।

#### পরাশর উবাচ।

ইত্যেষ সমাসতত্তে কথিতঃ; তুর্কাসোর্কংশমব-ধারয়॥ ১॥

তুর্ব্বসোর্বহিরাত্মজঃ, বহের্গোভারঃ, ততশ্চ ত্রৈশায়ঃ, তমাচ্চ করন্ধমঃ, তমাদিপি মরুতঃ, \* সোহ-নপত্যোহভবৎ । ততশ্চ পৌরবং হুয়ান্তং পুক্রমকণ্পায়ৎ।

পরাশর কহিলেন। এই তোমার নিকট সংক্ষেপে (যদুবংশ) কীর্ত্তন করিলাম। এক্ষণে তুর্বস্থার বংশ বর্ণন করিতেছি, আংবণ কর।

তুর্গয়র প্রত বহিন, বহুরে প্রত গোভার, গোভারর প্রত তৈশাস, (তৈশার) তৈশাসের প্রত করন্ধন, করন্ধনের প্রত মরুস্ত। মরুস্তের সন্তান না হওয়াতে তিনি দুয়ান্ত নামক পুরু-

<sup>\*</sup> মক্লন্ত নিঃসন্তাম হওয়াতে তুআন্তকে শতক পুত্র গ্রহণ করিয়াছিলেন। এই খ্যোক দারা অসুমিত হইভেছে, যযাতি তুর্লসূকে রাজ্যানর্থিরপ শাপ দিয়। এইরপ শাপও দিয়াছিলেন যে, তোমার বংশ থাকিবে না। ২

এবং যযাতিশাপাৎ ভদ্ধংশঃ পৌরবং বংশমাশ্রিত-বান্ ॥ ২॥

## ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে চতুথে ২° শে যোড়শোহধ্যায়ঃ।

বংশীয় রাজকুমারকে পুত্র কণ্পনা করিলেন। যথাতির শাপ হেতু তুর্মমূর বংশ এইরূপে পুরুবংশ আশ্রয় করিয়াছে।

> বিফুপুরাণ, চতুর্থ অংশ, ষোড়শ অধ্যায় সমাপ্ত।

বিষ্পুরাণম।
চতুর্থো২ংশঃ।
সপ্তদশোহধায়ঃ।

#### পরাশর উবাচ।

ক্রহ্যাস্ত তনয়ো বজুঃ॥ ১॥

ততঃ সেতুং, সেতুপুত্র আরদ্ধান্ নাম,\* তদাত্মজো গান্ধারঃ, ততো ধর্মঃ, ধর্মাৎ ধৃতঃ, ধৃতাৎ দুর্গমঃ, ততঃ প্রচেতাঃ, প্রচেত্রঃ পুত্রশতম্ অধর্মবহুলানাং মুচ্ছানামুদীচ্যাদীনামাধিপত্যমকরোৎ ॥ ২ ॥

## ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থেই ° শে সন্তদশোহধ্যায়ঃ

পরাশর কহিলেন। জিন্থের পুত্র বক্তা বক্তর পুত্র সেপু, সেতুর পুত্র আরম্বান্ (আনদ্ধ বা আরম্বান্) আরম্বানের পুত্র গান্ধার, গান্ধারের পুত্র ধর্মা, ধর্ম হইতে গ্লত, গ্লত হইতে দুর্গা, দুর্গান হইতে প্রচেতাঃ উৎপন্ন হইলেন। প্রচেতার এক শতপুত্র হইয়াছিল। ইহারা সকলেই উদীচ্য প্রভৃতি দেশে অধর্মানিরত লেছে জাতির উপর রাজত্ব করিতে লাগিল। \*

विक्पूर्तान, ठजूर्यारम, मश्रमम ज्यामा ममाश्र।

<sup>\*</sup> আনদা ইতি তা একান্ ইতিচ আরবান্ ইত্যা নামান্তরং পুত্তকান্তরে লতাতে।
ক্রামান্তির পাপ অনুসারে প্রচেতার পুত্রেরা শ্লেছে দেশে রাজন করিয়া স্লেছ-সংস্থা স্লেছ ইইয়াছিল। ব

### विक्शूश्रवावम्।

চতুর্থোঽংশঃ ৷

অফ্টাদশে†২ধ্যায়ঃ।

#### পরাশর উবাচ।

যথাতেশ্চতুর্থন্য পুত্রন্য অনোঃ সভানর-চাক্ষ-পরমেক্ষ্-সংজ্ঞান্তয়ঃ পুতা বভূবু:\* ৷ সভানরপুতঃ কালানরঃ, কালানরাৎ স্ঞায়ঃ, স্ঞায়াৎ পুরঞ্জয়ঃ, ত্যাৎ জনমেজয়ঃ, তভো মহামণিঃ.† তস্মাৎ চ মহামনাঃ, তস্মাদপুশৌনর-তিতিক্ষু দৌ পুত্রে উৎপদ্মৌ ৷

পরাশর কহিলেন। যথাতির চতুর্থ পুত্র অনুর তিনটী পুত্র হইক্লছিল। তাহাদের নাম——সভানর, চাকুষ, (চকু) ও পরমেকু। সভানরের পুত্র কালানর, কালানর হইতে সূঞ্জয়, সূঞ্জয় হইতে প্রঞ্জয়, প্রঞ্জয় হইতে জনমেক্রয়, জনমেকর হইতে মহামনি, (মেহশাল) মহামনি হইতে মহামনাঃ উৎপন্ন হই-লোন। মহামনার দুইটা পুত্র জন্মিয়াছিল। তাহাদের নাম

চাক্ষু বেভাৰ চক্রিভি পাঠান্তবম্।
 মহাস্থিতি ট্র মেহলাল ইভি বা পাঠঃ।

উশীনরস্যাপি শিবি-নৃগ-নর-ক্রমি-থর্কাখ্যাঃ\* পঞ্ পুত্রা বভূরঃ। র্ষদর্ভ স্থবীর-কৈকেয়-মদ্রকাশ্চত্ত্বারঃ শিবি-পুত্রাঃ তিতিক্ষোক্ষদ্রথঃ পুত্রোহভূৎ। ততে হেমঃ, হেমাৎ স্থতপাঃ, তক্ষাদ্বলিঃ, যদ্য ক্ষেত্রে দীর্ঘত্রমা অঙ্গ-বঙ্গ-কলিন্দ স্থল-পুঞ্বিয়ং বালেয়ং ক্ষত্রমজন্যত ॥ ১॥

উশীনর ও তিতিক্ষু। উশীনর হইতে পাঁচটা পুত উৎপন্ন হয়। তাহাদের নাম—শিবি, নৃগ, নর, (বল) কুমিটিও থকা (দারুবা দরুবা দার্কাবা দকা)। শিবির চারিটী পুত্র হইয়াছিল। তাহাদের নাম—ব্রুষদর্ভ, সুবীর, (শরীর) কৈকেয় ও মদ্রক।

তিতিকুর একটা পুত্র উৎপন্ন হইল। তাহার নাম—উদদ্রণ (রুষদ্রণ)। উষদ্রণের পুত্র হেম, হেমের পুত্র স্থাচপাঃ, সূত্রপা হইতে বলি উৎপন্ন হইলেন। এই বলির ক্ষেত্রে দীর্ঘত্রমা, পাঁচটী ক্ষল্লিয়কুমার উৎপাদন করিলেন। এই ক্ষল্লিয়বালকেরা (বলির ক্ষেত্রে উৎপন্ন বলিয়া) সকলেই বালেয় নামে বিখ্যাত হইলেন। দ ইঁহাদের নাম — জন্ম, বন্ধ, কলিন্ধ, সুদ্ধা ও পুঞ্ ।

মর ইভাত্রে বল ইভি, খার্ম ইভাত্রে দাফি, দফে, দালি, দফা ইভি চ পুশুকাভারেষু নামাভারম।

<sup>া</sup> পুৰীৰ ইন্তাত্ত শৰীর ইতি প'ঠাস্তবন্।

১।বলির ক্ষেত্রে অর্থাৎ তৎপদ্ধীর গভে। ক্ষেত্র শক্ষ প্রয়োগ করিবার তাৎপর্যা এই গে. গদিও প্রকীয় বীজে সন্তান হইল তথাপি ক্ষেত্র বলির অধিকৃত বলিবা সন্তান বলিবই অধিকৃত হইল স্ত্রাং তাহাবা বালেয় নামে বিস্যাত হয়। পুন্সকালে সন্তান না হইলে কোন বিশিপ্ত বাক্ষণকে কিজিৎ ধন দিয়া তদ্মারা সন্তান তৎপাদন ক্ষিত্ৰ স্থান নহ্বার বিভিন্ত হিলে। তথি দান ক্রাতে বীজ ক্রা করা সিদ্ধা হইত।

তন্নামসন্ততিসংজ্ঞাশ্চ পঞ্চ বিষয়া বভূবুঃ ॥২॥
অক্সন্তঃ পারঃ, \* ততে। দিবিরথঃ,† তস্মাৎ ধর্মরথঃ, ততঃ চিত্ররথঃ। রোমপাদসংজ্ঞো যস্ত পুত্রো
দশরথো জজে। যসৈ অজপুত্রো দশরথঃ শান্তাং
নাম কন্যামনপত্যায় দুহিতৃত্বে যুযোজ ॥৩॥

রোমপাদাচ্চ তুরক্ষঃ, তস্মাচ্চ পৃথুলাক্ষঃ, তত-শ্চম্পঃ। যশ্চম্পাং নিবেশয়ামাস॥ ৪॥

অঞ্জের বংশীয়ের। অঞ্চ নামে, বঙ্গের বংশীয়ের। বঙ্গ নামে, কলিজের বংশীয়ের। কলিজ নামে, স্থাজের বংশীয়ের। স্থাজ নামে এবং পুণ্ডের বংশীয়ের। পুঞ্ নামে বিশ্রুত হইল। পরে ইঁহা-দের নামানুসারে ইঁহাদের অধিকৃত পাঁচটী দেশ ঐ অঞ্চ, বঙ্গ, কলিজ, সুক্ষ ও পুঞ্ নামে বিখ্যাত হইয়াছে।

অঙ্গের পুত্র পার, (পালন) পার হইতে দিবিরথ, (দিব্যরথ)
দিবিরথ হইতে ধর্মারথ, ধর্মারথ হইতে চিত্ররথ, চিত্ররথ
হইতে রোমপাদ উৎপন্ন হইলেন। রোমপাদের আরি একটী নাম
দশরথ। দশরথের পুত্র উৎপন্ন হয় নাই। অজ রাজার তনয়
দশরথ এই দশরথকে অপুত্র দেখিয়া শাস্তা নান্নী স্বীয় তনয়াকে
তাঁহ্যুর পুত্রিকা করিয়া দিলেন।

## পার ইত্যক্র পালন ইতি বা পঠনীয়য়্। † দিব্রথ ইতি নামান্তরম্।

এইরতে পাপ্তু প্রভরাক্ত প্রভাতির উংপত্তি ইইরাছে। তংকা এর লোকে ইহা ধন্দ বলিয়াই মান্য কবিত। এমন কি নিঃসন্তান ব্যক্তি সঞ্চানাথ আন্ধানকে নিযুক্ত না করিলে পাপস্পান হইত। পরভারাম যখন সমুদার ক্ষজিয় সংহার করিয়াছিলেন, তখন ক্ষজিপ্রারা আন্ধান সংসত্য সন্তান প্রস্থাৰ করাতে পুন্নার ক্ষজিয়াদিলের আবিভাব হল । চম্পদ্য হর্ষাক্ষঃ, ততো ভদ্রথঃ, রহদ্রথঃ, রহৎকর্মা চ। রহৎ-কর্মণশ্চ রহদ্ধান্তঃ, তত্মাদ্ রহম্মনাঃ, ততো জয়দ্রথঃ। জয়দ্রস্ত্রাক্ষ্রালস্ভান্তরালস্ভ্ত্যাং পত্যাং\* বিজয়ং নাম পুত্রমজীজন্ৎ ॥৫॥

বিজয়শ্চ ধৃতিং পুত্রমবাপ। তন্তাপি ধৃতব্রতঃ পুত্রে, ২-ভূৎ। ধৃতব্রতাৎ স্তুর্ত্রেন্দ্রা, সত্যকর্মণস্ত অধিরথঃ। যোহদো গঙ্গাং গতে। মঞ্চুবাগতং পৃথাপবিদ্ধং কর্ণং পুত্রমবাপ॥ ৬॥

রোমপাদের দিতীয় পুত্রের নাম ত্রক। ত্রকের পুত্র পুথুলাক্ষ, পৃথুলাক্ষ হইতে চম্প উৎপন্ন হইলেন। এই চম্প চম্পা
নান্নী নগরী স্থাপন করিয়াছিলেন। চম্পের পুত্র হর্যাক্ষ, হর্যাক্ষ
হইতে ভদ্রেরণ, ভদ্রেরণ হইতে রহদ্রেণ, রহদ্রেণ হইত্বে রহন্দর্মা,
রহন্দর্মা হইতে রহন্দ্রাকু, রহন্দ্রাকু হইতে রহন্দনা, রহন্দনা হইতে
কন্দ্রেপ, (ক্রন্দ্রেপ হইতে ব্রক্ষকর, ব্রক্ষকর হইতে তালজন্ম)
উৎপন্ন হইলেন। এই কন্দ্রেপ (বা তালকন্ম) ব্রাক্ষণও ক্ষত্রিয়ের
মধ্যবন্ধী সূত্রকাতীয়া পত্নীতে বিক্রম নামক পুত্র উৎপাদন
করিয়াছিলেন। বি

(সূত জাতীয়) বিজয়ের একটা পুত্র হইল। তাহার নাম ধৃতি। ধৃতির পুত্র ধৃতব্রত, ধৃতব্রত হইতে সত্যকর্মা, সত্যকর্মা চইতে অধিরপ উৎপন্ন হইলেন। এই অধিরপ, একদা গঙ্গায় অবতীর্শ হইয়া মঞ্জুবার মধ্যাহিত একটী কুমার প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। কর্ণাদৃষ্পেন ইত্যেতে অঙ্গাঃ ॥१॥ অতশ্চ পুরোর্কংশং গ্রোতুম্বর্সীতি ॥৮॥

## ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থে ২° শে অফাদশো২ধ্যায়ঃ।

এই কুমার কুন্তীর অপবিদ্ধ পুত্র\*। ইহার নাম কর্ন করের পুত্র রুষসেন। ইঁহারা অক্সের বংশীয়। অতঃপর পুত্রুর বংশাবলী শ্রেবণ কর।

> বিফুপুরাণ, চতুর্থ অংশ, অফীদশ অধাায় সমাপ্ত।

। মঞ্ বা——পেটক। মাতা কলকভয়ে বা অন্য কারবে প্রবাব করিয়াই বে
সন্তানকে পরিত্যান করে, ত'হার নাম অপবিদ্ধ পুত্র।

विक्शूत्रवागम् ।

চতুর্থো ২ংশঃ।

ঊনবিংশোহধ্যায়ঃ

#### পরাশর উবাচ।

পুরোর্জনমেজয়ঃ পুত্রং, তস্যাপি প্রচিষান্, প্রচিষ্তঃ
প্রবীরঃ,\* তস্মান্সনমুঃ, মনস্যোশ্চাভয়দঃ,† তস্যাপি
সুদুয়ঃ, ততা বহুগবঃ, তস্য সম্পাতিঃ, সম্পাতেরহম্পাতিঃ, ততো রোজাশ্বঃ । শতেয়ৣঃ,-ক্তেয়ৣঃ,কন্মেয়ৣঃ,-ছণ্ডিলেয়ৣঃ,-ধতেয়ৣঃ,-জলেয়ৣঃ,--ছলেয়ৣঃ,--সন্ততেয়ৣঃ,-ধনেয়ৣঃ,-বনেয়ৣঃ,-নামানো ‡ রোজাশ্বস্য দশাসুলা বভূবুঃ॥ ১॥

পরাশর কহিলেন। পুরুর পুত্র জনমেজয়, জনমেজয়ের পুত্র প্রচিম্বান্, প্রচিম্বানের পুত্র প্রবীর, প্রবীর হইতে সনম্বা, সনম্বা হইতে অভয়দ, অভয়দ হইতে স্থলায়, সুদ্ায় হইতে বহুগব, বহুগব হইতে সম্পাতি, সম্পাতি হইতে অহম্পাতি, অহম্পাতি হইতে রোজাম্ব উৎপক্ষ হইলেন। রোজাম্বের দশটী পুত্র

<sup>•</sup> প্রচিষান, প্রচিষত: প্রবীর ইভি পাঠান্তরম্।

ተ মনস্যোশ্চ ভবুদ ইতি বা পঠনীয়ন্।

<sup>।</sup> প্ৰেয়ুরিভাত বৃত্তেয়ু রিভি, ধ্নেয়ুরিভাত ধর্মেয়ুরিভি, ব্নেয়ুরিভাত ব্রেয়ুরিভি পাঠাভ্রমু।

#### हर्जुर्भाश्यः। ३२ का

ঋতেয়ো-রন্তিনারঃ পুরোংভূৎ। তংক্ষ অপ্রান্থ ধ্বাধ্য রন্তিনারঃ পুরানবাপ। অপ্রতিরপাৎ কণুঃ, ভত্যাপি মেধাতিথিঃ। যতঃ কাণুায়না দিলা বভূবুঃ। তংগোরৈনিলঃ, ততোঃ পুরান্তাদ্যাশ্চত্মারঃ পুরা বভূবুঃ। দুমন্তাদ্যক্ষকবর্তী ভরতোংভবৎ। যমাম-হতুদেবিঃ শ্লোকো গীয়তে।

মাতা ভক্তা পিতৃঃ পুরো যেন জাতঃ স এব সঃ। ভরস্ব পুরুং দুয়ান্ত! মাবমংছাঃ শকুন্তলাম্॥ ২।

উৎপন্ন ইইয়াছিল। তাহাদের নাম—ঋতেয়ু, কৃতেয়ু, কক্ষেপু,
স্থানিল, গ্রেডয়ু, (রতেয়ু) জলেয়ু, স্থানেয়ু, সন্ততেয়ু,
গনেয়ু, (ধর্মেয়ু) ও বনেয়ু, (রমেয়ু)। ঋতেয়ুর একটী
পুত্র হইয়াছিল, তাহার নাম রন্তিনার। রন্তিনারের তিনটী
পুত্র ক্ষে। তাহাদের নাম—ডংয়ু, অপ্রতিরপ ও এব।
অপ্রতিরপের পুত্র কণু, কণু হইতে নেধাতিপি উৎপন্ন হইলেন।
এই নেধাতিপি হইতেই কাণুয়ন গোত্রীয় ব্রাদ্ধণগণ উৎপন্ন
হইয়াছেন।

তংশ্বর পুত্র ইলিন (ঐলিন)। ইলিন হইতে দুয়ান্ত প্রভৃতি চারিটী পুত্র উৎপ্র হইয়াছিল। দুয়ান্তের পুত্রের নাম ভরত। ভরত, রাজচক্রবর্তী হইয়াছিলেন। (দুয়ান্ত গর্ভবতী শহুস্তলাকে

<sup>\*</sup> ইলিনণ্ট তংলোঃ পুজো বছুব। ইলিনণ্ট ইতি বা পাঠঃ।

। এই মেধাতিথি ঋগ্মেদ তাব্য, মসুভাব্য ও অন্যান্য অনেকঞ্চলি ধর্মনাদ্ধ করিয়াহিলেন। ইনি বদিও ক্ষান্তিয় বংশে উৎপন্ন, তথাপি কর্মান্ত্রসারে ই হার বংশীর সকলেই উত্তম বান্ধণ হইয়াছেন। বর্জমান সময়ে প্রীমুক্ত অমুনারার্থ তর্কপঞ্চানন প্রভৃতি কএক জন অবিভীয় পণ্ডিতও এই বংশে জন্ম পরিপ্রহ্ করিয়াছেন।

विस्थूत्राग्य ।

**ठजूर्शिश्यः**।

खेनविश्टमार्थाग्रः।

#### পরাশর উবাচ।

পুরোর্জনমেজয়ঃ পুত্রঃ, ত্রস্যাপি প্রচিয়ান্, প্রচিয়তঃ
প্রবীরঃ,\* তস্মায়নসূঃ, মনস্যোশ্চাভয়দঃ,† তস্যাপি
সুদুয়য়ঃ, ততো বহুগবঃ, তস্য সম্পাতিঃ, সম্পাতেরহ
ম্পাতিঃ, ততো রোজায়ঃ ৷ ঋতেয়ৣঃ,-রুতেয়ৣঃ,কল্ময়ৣঃ,-ছণ্ডিলেয়ৣঃ,-য়তেয়ৣঃ,-জল্ময়ৢঃ,--ছলয়ৣঃ,--সন্ততেয়ৣঃ,-ধনেয়ৣঃ,-বনেয়ৣঃ,-নামানো ‡ রোজায়স্য দশায়ুলা বভূবুঃ॥ ১॥

পরাশর কহিলেন। পুরুর পুত্র জনমেজয়, জনমেজয়ের পুত্র
প্রচিম্বানের পুত্র প্রবীর, প্রবীর হইতে মনয়া, মনয়া
হইতে অভয়দ, অভয়দ হইতে য়দায়, সৃদায় হইতে বহুগব,
বহুগব হইতে সম্পাতি, সম্পাতি হইতে অহম্পাতি, অহম্পাতি
হইতে রোজাশ উৎপত্র হইলেন। রোজাশের দশটী পুত্র

<sup>•</sup> প্রচিষান, প্রচিষত: প্রবীর ইভি পাঠান্তরম্।

ተ মনল্যোশ্চ ভবুদ ইভি বা পঠনীয়ম্।

<sup>।</sup> প্রতেমুরিভাত্র ব্রভেয়ু রিভি, ধ্রেয়ুরিভাত্র ধর্মেয়ুরিভি, ব্রেয়ুরিভাত্র ব্যেয়ুরিভি পাঠাভ্রম।

#### हर्जुर्थार**भ**ः। >> जा

ঋতেয়ো-রন্তিনারঃ পুরোহভূৎ। তংক্ষম্ অপ্রান্থং প্রবঞ্চ রন্তিনারঃ পুরানবাপ। অপ্রতিরপাৎ কণুঃ, তত্তাপি মেধাতিথিঃ। যতঃ কাণুারনা দিজা বভূরুঃ। তংগোরৈনিলঃ, ততোঃ পুরান্তাদ্যাশ্চত্তারঃ পুরা বভূরুঃ। দুমন্তাচ্চক্রবর্তী ভরতোহভবৎ। যমামহেতুর্দেবৈঃ শ্লোকো গীয়তে।

মাতা ভক্রা পিতুঃ পুরো যেন জাতঃ স এব সঃ । ভরস্ব পুরুং দুয়ান্ত ! মাবমং ছাঃ শকুন্তলাম্ ॥ ২ ।

উৎপন্ন হইয়াছিল। তাহাদের নাম—ঋতেয়ু, কৃতেয়ু, ককেয়ু,
স্থালেয়ু, গৃতেয়ু, (রতেয়ু) জলেয়ু, স্থালেয়ু, সন্তাতয়ু,
ধনেয়ু, (ধর্মেয়ু) ও বনেয়ু, (রমেয়ু)। ঋতেয়ুর একটী
পুত্র হইয়াছিল, তাহার নাম রন্তিনার। রন্তিনারের তিনটী
পুত্র জন্ম। তাহাদের নাম—তংশ্ব, অপ্রতিরপ ও ধ্রুব।
অপ্রতিরপের পুত্র কণু, কণু হইতে মেধাতিপি উৎপন্ন হইলেন।
এই মেধাতিপি হইতেই কাণুয়ন গোত্রীয় ব্রাদ্ধণণণ উৎপন্ন
হইয়াছেন।

তংশ্বর পুত্র ইলিন (ঐলিন)। ইলিন হইতে দুয়ান্ত প্রভৃতি চারিটী পুত্র উৎপন্ন হইরাছিল। দুয়ান্তের পুত্রের নাম ভরত। ভরত, রাজচক্রবর্ত্তী হইরাছিলেন। ( দুয়ান্ত গর্ভবর্তী শক্তলাকে

<sup>\*</sup> ইলিনণ্ড তংলোঃ পুত্রো বছুব। ইলিনগ্য ইতি বা পাঠঃ।

> । এই মেণাভিথি ঋণ্ডেদ ভাষ্য, মসুভাষ্য ও অন্যান্য অনেকগুলি ধর্মণাল্ল নহকীয় এছ প্রেণয়ন করিয়াছিলেন। ইনি বলিও ক্লিয়ে বংশে উৎপন্ন, তথাপি ক্র্যান্ত্র্যান্তর
ই হার বংশীয় সকলেই উত্তম ব্রাহ্মণ হইয়াছেন। বর্ত্ত্বমান সময়ে জীমুক্ত জন্মনারান্ত্রথ তর্কপঞ্চানন প্রভৃতি কএক জন অবিভীন্ন পণ্ডিতও এই বংশে জন্ম পরিপ্রত্ব করিয়াছেন।

রেভোধাঃ পুত্র উন্নয়তি নরদেব ! যমক্ষয়াৎ । ত্থাক্ত ধাতা গর্ভক্ত সত্যমাহ শকুন্তলা ॥ ৩ ॥ ভরতক্ত চ পত্নীনাং যে নব পুত্রা বভূরুনৈতে মমারু রূপাঃ পুত্রাঃ ইত্যভিহিতাক্তমাতরে। জন্মঃ পরিত্যাগ-ভয়াৎ ॥ ৪ ॥

পরিত্যাগ করাতে আকাশবাণীতে ) দেবগণ যে প্লোক পাঠ করিয়াছিলেন, তাহা হইতেই (সেই গর্জসন্তুত কুমারের ) ভরত এই
নাম হইয়াছে। (প্লোকার্থ বিগা)—মাতা ভন্তা স্বরূপ অর্থাৎ
চর্মময় আধারবিশেষ। পুত্র পিতারই অধিকৃত। যিনি পুত্র
উৎপাদন করেন, তিনিই পুত্ররূপে আবিভূতি হন। অতএব
দুরুত্ত! পুত্রের ভরণ (প্রতিপালন) কর। শকুন্তলাকে অবজ্ঞা
করিও না।

নরনাথ ! ঔরস পুত্র, পিতাকে যমালয় হইতে দেবলোকে প্রেরণ করে। তুমি এই শকুন্তলাতে গর্ডাধান করিয়াছ। শকুন্তলা সত্য বাকাই বলিতেছে।

ভরতের পদ্মীদিণের গর্জে নয়্টা পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল। (সভ্রাট্ ভরত পুত্র দর্শন করিয়া) বলিয়াছিলেন যে, ইহারা আষার অসুরূপ হয় নাই। রাজসহিবীরা এই কথা শুনিয়া, পাছে

२। हितवश्य कथिक च्यांटि, यथिकिथित अक्टी कमा। हेरेग्नाहिन। औ कमात माम हेना। छल्क चीत त्रानरतत अर्थांकी अहे हेनांटक विवाह कितलम। हेना माती हहेत्रांश विवायिकी अ बच्चवानिमी हित्सम। हैमि मित्रक विवाह कितलम। वायु-भूताय अ मश्या भूताय कथिक च्यांटि या, वर्षात कमात माम हेनिमा। छल्क् हेनिमाटक विवाह करतम। छल्क्च हहेटक हेनिमात गर्ट्स य नद्याम छल्मा हहेग्राहिन, छाहांत माम हेनिम। निश्चित अमाटन च्यांटिम भूक्य हेनिम अहे मारमत प्रतिवर्ट्स अहिन, अहेन्न त्रांशित हहेग्राहि। १

ততোহস্ত পুত্রজন্মনি বিতপে পুত্রার্থিনো মরং ভোম-যাজিনো দীর্ঘতমদা পার্ফ্যপান্ত-রহস্পতি-রীর্যাদূতপ্য-পত্নী-মনতা-সমুৎপন্নো ভরদাব্দাধ্যঃ \* পুত্রো মরুন্তি-দ্তিঃ ॥ ৫॥

ত্য্যাপি নামনির্বাচনশোকঃ পঠাতে॥ ৬॥

রাজা (ব্যভিচারাশকায় তাঁহাদিগকে) পরিত্যাগ করেন, এই ভয়ে দেই কুমারদিগকে বিনক্ট করিয়াছিলেন। এইরূপে সমাট ভরতের পুরোৎপত্তি নিক্ষল হওয়াতে তিনি পুরাধী হইয়া মরুৎভাম বাগ করিতে আরম্ভ করিলেন। উত্তথ্যপত্তী মমতার গর্ভন্তি দীঘ্তমা কর্ত্ত্ব পদহারা রহ্মপতির বীর্যা নিঃমারিত হওয়াতে (ভূমিতে) ভরদাল নামে যে পুর উৎপন্ন হইয়াছিল, মেই পুর আনিয়া মরুদ্দাণ, সমুট্কে প্রদান করিলেন। এইলে ঐ ভরদাল নামের ব্যুৎপাদক। এইটা স্লোক পঠিত হইয়াথাকে। (যথা) —

#### # खतवांबार्या। मात्र हेंखि वस्तृ भूक्षरक्रू भेठारख।

৬। ব্যুৎপাদক অৰ্থাৎ যাহা ভারা তরভাজ এই মামের ব্যুৎপত্তি ( শক্ষার্থ ) অবগভ হুটতে পারা যায়। ৬

<sup>ে।</sup> বৃহস্পতির জ্যেষ্ঠ জাতার মাম উত্যথা। উত্থোরপদ্মীর মাম মমতা। এক দিল বৃহস্পতি কামাভিত্ত হইরা বল পুর্বাক মমতার ধর্ম মই করিলেন। এই সময় মমতা গর্ভবতী ছিলেন। বে সময় রেড: বলন হয়, সে স ময় গর্ভস্থ বালক বিবেচনা করিল যে, এই গর্ভে আর একটী সন্ধান উৎপন্ন হইলে আমার স্থানসন্ধাচ ও কই হইবে। গর্ভস্থ বালক এইরপ পর্বাগোচনা করিরা পদাঘাত হারা সেই শুক্ত গর্ভ হইতে অপসারিতাকরিল। শুক্র নি: হত হইরা তৃমিতে নিপতিত হইল। মহর্ষি বৃহস্পতির বীর্যা ত বার্গ হইবার নহে; প্রত্তরাং সেই তৃমিতেই একটি অপুর্বা কুমার উৎপন্ন হইল। তখন বৃহস্পতি কোপাবিপ্ত হইরা গর্ভস্থ বালককে শাপ প্রশাম করিলেন বে, তৃমি জনান্ধ হইবে। এই শাপে সেই গর্ভস্থ খিবকুমার দীর্ঘভ্যা নামে বিশ্যান্ত আন্ধ্র হুর্যাছিলেন। ব

মূঢ়ে ! ভর দ্বাজ্ঞামং ভর দ্বাজং বৃহস্পতে ! ।
বাতো যদুক্ত্বা পিতরো ভরদ্বাজন্ততন্ত্বয়ন্ ॥৭॥ ইতি ।
ভরদ্বাজন্ত তস্য বিতথে পুত্রজন্মনি মরুদ্ধিত্বঃ,
ততো বিতথসংজ্ঞামবাপ ॥ ৮ ॥

বিতথস্য ভবমন্যঃ পুরোহভূৎ । বৃহৎক্ষজ্র-মহা-বীর্য্য-নর -গর্গাল্যাভবমন্ত্যপুর্কাঃ। নরস্য সংক্ষতিঃ, সংক্ষতে-ক্ষচিরধী-রন্তিদেবো†। গর্গাচ্ছিনিঃ, ততো

(মমতা কহিলেন) রহক্পতে! দ্বিতীয় ব্যক্তি হইতে উৎপন্ন এই শিশুকে তুমি পালন কর। (রহক্পতি কহিলেন) মুঢ়ে! এই বালক, তুমি ও আমি, দুই জন হইতেই উৎপন্ন হইয়াছে। ইহাকে তুমিই ভরণ পোষণ কর। পিতা ও মাতা (রহক্পতি ও মমতা) পরক্ষার এই কথা বলিয়া (মস্তানকে পরিত্যাগ পূর্মক) চলিয়া গেলেন। ইহাতেই সেই বালক ভরদ্বাদ্ধ নামে বিখ্যাত হইয়াছে।

ভরতের পুরোৎপত্তি বিতথ হওয়াতে মরুদ্রাণ, ঐ ভরদাজকে আনিয়া তাঁহার পুত্র করিয়া দিলেন। এই নিমিস্তই ঐ ভরদাজ বিতথ নামে বিখ্যাত হন। বিতথের একটা পুত্র হইল, তাহার নাম ভবস্মত্যু (ভুমন্য)। ভবস্মন্যুর অনেকগুলি পুত্র হইয়াছিল। তাহাদের নাম বৃহৎক্ষত্র, মহাবীর্য্য, নর, গর্গ প্রভৃতি।

নরের একটা পুত্র হইল, তাহার নাম সংকৃতি। সংকৃতির দুইটা পুত্র জন্মে। তাহাদের নাম—ক্লচিরধী (শুকুধি) ও রস্তিদেব।

<sup>\*</sup> ভূমস্থা: পুত্রোংভূৎ ইতি কচিং পাঠ: । । শুরুধী-রন্ধিদেবে ইতি বা পাঠ: ।।

গার্গ্যঃ শৈন্যাঃ ক্ষত্রোপেতা দ্বিকাতয়ো বভূরুঃ\* ॥১॥

মহাবীর্য্যাদুরুক্ষয়ো নাম প্রবোহভূৎ। তস্য ত্র্যারুণপুকরিণো কপিলশ্চ, পুত্ররমভূৎ। তচ্চ ত্রিতয়মপি
পশ্চাদিপ্রতামপ্রকাম। রহৎক্ষজ্রস্য স্থহোত্তঃ, স্থহোত্রাৎ হস্তী। য ইদং হস্তিনাপুরমারোপয়ামাস। অক্ষমীঢ়দিমীঢ়-পুরুমীঢ়াস্তরো হস্তিনস্তনয়াঃ।‡ অক্ষমীঢ়াৎ কণঃ,
কণ্যাৎ মেধাতিথি যতঃ কাণায়না দিক্ষা ॥১০॥

গর্গের পুত্র শিনি। এই শিনি হইতে গার্গ্য ও শৈন্য নামে বিখ্যাত ক্ষত্রোপেত ব্রাহ্মণগণ উৎপন্ন হইরাছেন।

মহাবীর্য্য হইতে উরুক্ষয় নামে একটা পুত্র উৎপন্ন হইল। উরুক্ষয়ের তিনটী পুত্র জমে; ভাহাদের নাম ত্রয়ারুণ, পুন্ধরী (পুন্ধরিণ্য) ও কপিল (কপি)। এই ভিন পুত্রই পরে ব্রাহ্মণ হইয়াছিলেন।

রহৎক্ষজের পুত্র মহোত্র, মহোত্র হইডে হস্তী উৎপন্ন হইয়াছিলেন। এই হস্তীই হস্তিনাপুর নামে নগর স্থাপন করেন।
হস্তীর ডিনটী পুত্র উৎপন্ন হইল। ঐ পুত্রত্তায়ের নাম অজমীচ,
দিনীচ ও পুরুমীচ (পুরমীচ)। অজমীচের পুত্র কণু, কণু হইডে
মেধাতিথি উৎপন্ন হইয়াছিলেন। এই মেধাতিথির বংশীয়েরাও

<sup>\*</sup> শিমিরিভাত্র শিলিরিভি, শৈনা। ইভাত্র শৈলা। ইভি পাঠাভান্ছ।

<sup>†</sup> ত্রয্যারুণ-পুক্ষরিশ্যে ইতি বা পঠি:।

<sup>†</sup> পুরুষী চ ইত্যত্র পুরুষী চ ইতি পাঠা স্বরষ্ ১

গাগ্য অৰ্থাৎ গগ্ৰহণীয় ৷ বৈশ্য অৰ্থাৎ নিমির ৰংশে সমূৎপন্ন ৷ ক্ষেত্ৰাপেড বান্ধণ অৰ্থাৎ যাঁহারা ক্ষিয়ে হইয়াও কোন কারণৰণতঃ বান্ধণ হইরাছেন ৷ ৯

অজমী চৃদ্যানাঃ পুরো বৃহদিষুঃ, বৃহদিষোর হিছসুঃ \*,
ত ত শ্চ বৃহৎকর্মা, ত সাৎ জয় দ্রখঃ। ততে হিপি বিশ্বজিৎ, তত শ্চ দেনজিছে। ফ্রচিরাশ্ব-কাশ্য-দৃচ্ধন্ন-র্বহদহন্ম-সংজ্ঞাঃ দেনজিতঃ পুরাঃ। ফ্রচিরাশ্বতঃ পৃধুদেনঃ,
ত সাৎ পারঃ, পারাৎ নীপঃ। ত দ্যৈকশতং পুরাণাম,
তেষাং প্রধানঃ কাম্পিল্যাধিপতিঃ সমরঃ॥ ১১॥

কাণ্যান নামে বিখ্যাত ব্রাহ্মণ হইয়াছেন। ত অক্সীটের সার একটা পুত্রের নাম ব্রুদিয়া ব্রুদিয়র একটা পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল, তাহার নাম ব্রুদ্ধে। ব্রুদ্ধের পুত্র ব্রুৎকর্মা, ব্রুৎকর্মা হইতে জয়দ্রথ, জয়দ্রথ হইতে বিশ্বজিৎ, বিশ্বজিৎ হইতে সেনজিৎ উৎপন্ন হইলেন। সেনজিতের অনেকগুলি পুত্র হইয়াছিল, তাহাদের নাম—ক্লচিরাশ্ব, কাশ্য, ভুচ্ধনুং, বংস ও হনু।

রুচিরাখের পুত্র পৃথুদেন, পৃথুদেনের পুত্র পার, পারের পুত্র নীপ, নীপের এক শত পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল। এই এক শত পুত্রের মধ্যে কান্সিল্য নগরের অধিপতি সমরই সর্ব্বপ্রধান। ১১

<sup>\*</sup> বৃহত্তপুরিতি কচিং পাঠঃ।

২০। কেচ কেছ বলেন, হন্তিমাপুর এক্ষণে বিল্পী ও পরিক্ষিণ গড় মামে বিখ্যাত হইয়াছে। পরস্কু ইহার এক বিংশতি অধ্যায়ে কথিত হইয়াছে যে, পরিক্ষিতের বংশীয় রালা স্চক্ষুর অধিকার কালে হন্তিমাপুর গলার গর্ভস্থ হওয়াতে স্চক্ষু, কেইণাদ্বী নগরীতে রালধানী স্থাপন করেন। এক্ষণেও দিল্লীর সমীপবন্তী গলার গর্ভে প্রাচীন নগরের ধ্বংসাবশেষ প্রাপ্ত হওয়া ঘাইভেছে। ইহাতে হন্তিমা পুর যে গলার গর্ভে গিয়াছে, ভাহাই সপ্রসাধ হইতেছে। ২০

১। অৰ্মীচ ইইতে আৰুমীর ইইরাছে।

সমরস্যাঁপি পার-সম্পার-সদশাক্তরঃ পুতাঃ। পারাৎ পৃথুঃ, পৃথোঃ স্ক্রক্তিঃ, স্কুতের্বিভাঙ্গঃ, ততশ্চার্হঃ। স চ শুকদুহিতরং কীর্ত্তিং নামোপ্যেমে॥ ১২॥

অনুহাৎ ব্রহ্মদত্তঃ, ততো বিশ্বক্সেনঃ, তস্যোদক-সেনঃ, ততো ভল্লাটঃ, তদ্যাত্মজো দিমীঢ়ঃ, দিমীঢ়দ্য যবীনর-সংজ্ঞঃ, তদ্যাপি ধৃতিমান্, ততঃ সত্যধৃতিঃ, ততশ্চ দৃঢ়নেমিঃ, তসাচ্চ স্থপাশ্বঃ, ততঃ স্থাতিঃ, ততশ্চ সম্মতিমান্, সম্বতিমতঃ ক্লতোইভূৎ। যং হিরণ্য-

সমরের তিনটী পুত্র উৎপন্ন হইল। এই পুত্রত্তরের নাম— পার, সম্পার ও সদম। পারের পুত্র পৃথু, পৃথু হইতে ছ্কৃতি, সুকৃতি হইতে বিভাজ, বিভাজ হইতে অনুহ উৎপন্ন হইলেন। এই অনুহ, শুকের কন্যা কীর্ত্তিকে বিবাহ করিয়াছিলেন। ১২

অসংহের পাত্র ব্রহ্মদন্ত ব্রহ্মদন্ত হইতে বিশ্বক্ষেন, বিশ্বক্ষেন হইতে উদক্ষেন, উদক্ষেন হইতে জলাট, ভলাট হইতে দিনীত, দিনীত হইতে যবীনর, যবীনর হইতে ধৃতিমান, ধৃতিমান্ হইতে সভ্যধৃতি, সভাধৃতি হইতে দৃত্নেমি, দৃত্নেমি হইতে স্থপাশ্র্কি, স্থাভি হইতে স্থাভি, সল্ভিমান্ হইতে স্থাভি, সল্ভিমান্ হইতে স্থাভি, সল্ভিমান্ হইতে কৃত্নামে পাত্র উৎপন্ন হইনাছিল। হির্ণানাভ, ইহাকে

১২। বায়ু পুরাণে কথিত আছে বে, পরাণর-পুর বাদে হইতে অরণীতে ওকদের
উংপন্ন হইরাছিলেন। ওকের তাগিনীর নাম পীবরী। ওক হইতে বেদবাদ-ছুহিতা
পীবরীর গর্ভে পাঁচটা পুত্র ও একটা কন্যা উংপন্ন হয়। পুত্রগণের নাম কৃষ্ক,
গ্রেপ্তরু, শস্তু, ভুরিফত ও জন্ম। কন্যাটীর নাম কার্তিমতী। কার্তিমতী
বোগিনী ও যোগমাতা ছিলেন। রাজা অন্তহ এই কার্তিমতীকে বিবাহ করেন।
ই হাব গর্ভে বন্ধান্তর জন্ম হয়। হ্বিবংশেও প্রায় অবিক্স এইরূপ ক্ষিত আছে।

না**ভো যোগমধ্যাপয়ামাস। যশ্চতুর্বিংশভিং প্রা**চ্য-সামগানাং চকার সংহিভাঃ॥ ১৩॥

কৃতাচ্চোগ্রায়ুধঃ। যেন প্রাচুর্য্যেণ নীপক্ষয়ঃ কৃতঃ

উথায়ধাৎ ক্ষেম্যঃ, তস্মাৎ স্থবীরঃ, তদ্য নৃপঞ্জয়ঃ, ততো বহুরধঃ। ইত্যেতে পোরবাঃ। অজমীচৃদ্য নীলিনী নাম পত্নী। তদ্যাং নীলদংজ্ঞঃ পুরোহভবৎ। তস্মা-দিপি শান্তিঃ, শান্তেঃ স্থশান্তিঃ, স্থশান্তেঃ পুরুজান্তঃ, \* ততক্ষক্ষঃ, ততো হর্যাশ্বঃ, তন্মাৎ মুদ্দাল-স্ঞ্জয় রহদিয়ু-প্রবীর-কাম্পিল্যাঃ। পঞ্চানামেতেষাং বিষয়াণাং রক্ষণা-

যোগাভ্যাস করাইয়াছিলেন। এই কৃত, প্রাচ্যসামগদিগের চতু-র্বিংশতি সংহিতা প্রণয়ন করিয়াছিলেন। ১°

কৃতের পুত্র উথায়ুধ। এই উথায়ুধ নীপবংশীয় ক্ষাত্রিয়াগকে প্রায় নিমূল করিয়াছিলেন। ° উথায়ুধের পুত্র ক্ষেমা, ক্ষেমা হইতে সুবীর, স্থাীর হইতে স্থপঞ্জয়, স্থপঞ্জয় হইতে বহুরথ, উৎপন্ন হইয়াছিলেন। ইঁহারা পুরুবংশীয় রাজা।

অক্সনী ঢ়ের আর এক পত্নীর নাম নীলিনী। অক্সনী চু ইতেনীলিনীর গর্ডে যে পুত্র কম পরিগ্রহ করিয়াছিল, তাহার নাম নীল। নীলের পুত্র শান্তি, শান্তি হইতে স্থাশান্তি, সুশান্তি হইতে পুরুজানু, (পুরজানু) পুরুজানু হইতে চুকু, চকু হইতে হুর্যাশ্ব উৎপন্ন হইলেন। হুর্যাশ্বের পাচটী পুত্র। তাঁহাদের নাম—— মুদাল, ক্প্পেয়, রহদিয়ু, প্রবীর ও কাল্পিল্য। হুর্যাশ্ব বিলয়াছিলন বে, আমার এই পাঁচটী পুত্র, আমার রাজ্যের অন্তর্গত পাঁচটী

<sup>\*</sup>পুরস্বাস্থারভি পুস্তকান্তরস্য পাঠঃ।

য়ালমেতে মংপুত্রাঃ, ইতি পিত্রাভিহিতাঃ, অতত্তে পাঞ্চালাঃ॥১৫॥

মুদালাক মৌদাল্যাঃ ক্ষজোপেতা দ্বিজাতয়ো
বভূবুঃ। মুদালাৎ রদ্ধাঃ, \* রদ্ধাং দিবোদাদো
হহল্যা চ মিথুনমভূৎ। শরদ্বতোহহল্যায়াং শতানন্দো
হভবৎ। শতানন্দাং সত্যগ্রতিঃ ধরুর্বেদান্তগো জভ্তে।
সত্যগ্রতেপ্ত বরাপ্সরসমূর্বেশীং দৃষ্টা রেভঃ ক্ষমং শরন্তার্থ প্রাত্য ১৬॥

তচ্চ দ্বিধাগতমপত্যদ্বয়ং কুমারঃ কন্যকা চ অভবৎ। স্থায়ামুপাগতঃ শান্তনুদ্ ফ্রী রূপয়া জ্ঞাহ॥ ১৭॥

দেশ শাসন করিতে সমর্থ হইবে। হ্যার্য এই কথা বলিয়াছিলেন, বলিয়া উনহার রাজ্য ও তৎপুত্রেরা পাঞ্চাল নামে বিখ্যাত হইয়াছে।' মুদ্দাল হইতে মৌদ্দালা গোত্রীয় ব্রাহ্মণগণ উৎপদ্ধ হন। ইঁহারা ক্ষত্রিয়ের অংশ। মুদ্দালের পুত্র বন্ধর্ম (রুদ্ধে বা বন্ধু ) বন্ধ হইতে দিবোদাস ও অহল্যা, এই ছইটা পুত্র ও কন্যার উৎপত্ত হইয়াছিল। শর্দান্ হইতে অহল্যার গর্ভে শতানন্দ উৎপদ্ধ হইয়াছেন। শতানন্দের পুত্রের নাম সভ্যধৃতি। এই সভ্যধৃতি ধনুর্বেদে পারদর্শী ছিলেন। তিনি একদা উর্মাণী নামী প্রধান অক্সরাকে দর্শন করিয়া (মদন-পরতন্ত্র হইলেন।) তখন তাহার রেতঃ স্থালিত হইরা শরন্তম্বে পতিত হইল। ' তাহা দুই ভাগ ইয়া পড়াতে দুইটী সন্তান জন্মিল। একটী কুমার ও একটী কুমারী।

এই সময় রাজা শান্তনু সৃগয়ায় গমন করিয়াছিলেন। তিনি

বন্ধ ইতি বন্ধু খ ইতি বা পাঠান্তরম্।

ততঃ স কুমারঃ রূপঃ, কন্যা চাশ্বপায়ে। জননী রূপী

ডোণপত্যতবং। দিবোদাসন্য মিত্রয়ৣঃ, মিত্রয়োশ্চ্যবনো নাম রাজা, চ্যবনাং স্থদানঃ, ততঃ সোদানঃ সহদেবঃ, তস্যাপি সোমকঃ, ততো জন্তঃ শতপুত্রজ্যেষ্ঠাহতবং। তেষাং যবীয়ান্ প্রতঃ, প্রতাৎ ক্রপদঃ,
তস্মাৎ ধ্র্যদুরঃ, তস্মাৎ ধ্র্যকেতুঃ। অজমীচ্স্যান্য
ক্ষেনামা পুত্রাহতুং। ক্ষকাং সংবরণঃ, সংবরণাং
কুরুঃ। য ইদং ধর্মক্ষেত্রং কুরুক্ষেত্রং চকার॥ ১৮॥

ঐ পত্র ও কনাকে অবলোকন করিয়া কুপাপরতন্ত্র হৃদয়ে উভয়কে গ্রহণ করিলেন। <sup>১৭</sup> (রাজা কুপাপুর্বক গ্রহণ করিয়াছিলেন, বলিয়া) পতের নাম কুপ ও কনার নাম কুপী হইল। এই কুপীই পরে ডোণের পত্নী হন ও অশ্বখামাকে প্রস্নব করেন।

দিবোদাদের প্ত মিত্রর, মিত্ররু হইতে চাবন নামক রাজা উৎপন্ন হইলেন। চাবনের প্ত সুদাস, স্থাদের প্ত সৌদাস বা সহদেব, সহদেব হইতে সোমক উৎপন্ন হইয়াছিলেন। সোম-কের একশত পুত্র হইয়াছিল। জ্যোষ্ঠের নাম জন্তু ও কনিষ্ঠের নাম প্রত। প্রতের পুত্র ক্রপদ, ক্রপদ হইতে ধৃউদ্ান্ন, ধৃউদ্ান্ন হইতে ধৃউক্তে উৎপন্ন হইলেন।

অক্সীটের আর একটী পুত্র হইয়াছিল ি তাহার নাম ঋক।
ঋক হইতে সংবরণ, সংবরণ হইতে কুরু উৎপন্ন হইয়াছিলেন।
এই কুরু, স্থায় নাম অনুসারে কুরুক্তেত্র স্থাপন করেন। পরে
(দেব প্রসাদে) ইহা ধর্মক্ষেত্র ও কুরুক্তেত্র নামে বিখ্যাত
হইয়াছে। ১৮

স্থার জহু পরিকিৎ-প্রমুখাঃ কুরোঃ পুত্রা বভূরুঃ।
স্থার্থঃ স্থারেঃ, তস্মাৎ চ্যবনঃ, চ্যবনাৎ রুতকঃ,
ততশ্চোপরিচরে। বস্তঃ। বৃহদ্রথ প্রত্যাপ্র কুশায়মাবেল মৎস্য-প্রমুখা বসোঃ পুত্রাঃ সপ্তাজায়ন্ত। বৃহদ্রথাৎ
কুশাগ্রঃ, তস্মাদ্যভঃ, ততঃ পুষ্পার্বান, তস্মাৎ
সত্যধৃতঃ, তস্মাৎ স্থায়া, তস্য চ জন্তঃ। বৃহদ্রথাচ্চান্যঃ শকলদ্ব্যুজন্ম। জর্মা সন্ধিতো জরাসন্ধো
নাম। তস্মাৎ সহদেবঃ, ততঃ সোমাপিঃ \*

কুরুর অনেকশুলি পুত্র ইইরাছিল। তাহাদের নাম—স্থানুং, জাহু, পরিক্ষিৎ প্রভৃতি। স্থানুর পুত্র সুহোত্র, স্থাহাত্র হইতে চাবন, চাবন হইতে কৃতক, কৃতক হইতে উপরিচর বস্তু উৎপন্ন হইয়াছিল। উপরিচর বস্তুর সাতটী পুত্র উৎপন্ন হইয়াছিল। তাহাদের নাম—রহজ্প, প্রভাগ্র, কুশাস্থ, মাবেল্ল, মৎদ্য প্রভৃতি।

রহদ্রথের পুত্র কুশাগ্র, কুশাগ্র হইতে ঋষত, ঋষত হইতে পুজাবান্, পুজাবান্ হইতে সত্যগ্রত, সত্যগ্রত হইতে সুপন্ধা, স্থান্বা হইতে জন্ত উৎপন্ন হইলেন। রহদ্রথের জার একটা পুত্র হইয়াছিল, তাহার নাম জরাসদ্ধা। জরাসদ্ধার যথন জন্ম হয়, তথন দ্বিশুগু কুমার প্রসূত হইয়াছিল। পরে জরানান্নী রাক্ষনী এই শুগুর্মের সন্ধি (সন্ধান) অর্থাৎ সংযোগ করিয়া দেয়। এই জন্যই তাহার নাম জরাসন্ধ হইয়াছে।

ज्यां मत्क्षत পूज महामत, महामत हरेट मांगाणि, मांगाणि

ততঃ শ্রুতশ্রাং। ইত্যেতে মাগধা ভূভ্তঃ ॥ ১৯॥
ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে, চতুর্থেইংশে উনবিংশভিতমো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

হইতে শ্রুতশ্বার উৎপত্তি হইয়াছিল। ই হারা মগধ দেশের রাজা ছিলেন। "

বিষ্ণুপুরাণ, চতুর্থ অংশ, উনবিংশতিতম অধ্যায় সমাপ্ত।

১৯। রাজা বসু কঠোর তপস্যা করিতে আরম্ভ করিলে দেবরাজ ভীত হইয়া ভাঁহার নিকট আগমন পুর্কাক সাজ্মা করিয়া ভাঁহাকে তপস্যা হইতে নির্ত্ত করিলেন এবং কল্পরক্ষের কুস্লম ছারা এথিত এক ছড়। মালা দিয়া কহিলেন, ইহা ধারণ করিলে ভোমার শরীরে কোন অক্স বিদ্ধা হইবে না। পরে দিয়া ফটিক-ময় বিমান দিয়া কহিলেন, তুমি ময়্য় হইয়াও এই দিয় বিমানে আরেহণ পুর্কাক আকালপথে পরিভ্রমণ করিবে। তুমি, উপরি বিচরণ করাতে উপরিচর নাসে বিধ্যাত হইবে। মহাভারত, আদি। বিষ্ণুপুরাণম।

চতুর্থোহংশঃ।

विश्टणां ३ धांग्रः।

#### পরাশর উবাচ ৷

পরিক্ষিতে। জনমেজয়-শ্রুতদেনোগ্রসেন-ভীম-সেনাশ্চস্থারঃ পুত্রাঃ॥ ১॥

জহোস্ত সুরথো নামাত্মজো বভূব ॥ ২॥

তস্য বিদূর্থঃ, বিদূর্থস্য সার্বভৌমঃ, সার্বভৌমাৎ জয়সেনঃ, তস্মাৎ আরাবী, ততশ্চ অযুতায়ুঃ, অযুতায়ো-রক্রোধনঃ, তস্মাৎ দেবাতিথিঃ, ততশ্চ ঋক্ষোহন্যঃ ॥৩॥ ঋক্ষাৎ ভীমসেনঃ, ততশ্চ দিলীপঃ, দিলীপাৎ

পরাশর কহিলেন। (কুরুকুমার) পরিক্ষিতের চারিটী পুত্র। তাঁহাদের নাম—জনমেজয়, শুতদেন, উগ্রসেন ও তীমসেন।

(কুরুকুমার) জহু,র একটা পুত্র হইল। তাহার নাম
দ্বরথ। ই স্থরথের পুত্র বিদ্রথ, বিদ্রথের পুত্র সার্কভৌম,
সার্কভৌম হইতে জয়সেন, জয়সেন হইতে আরাবী, আরাবী হইতে
অযুতায়, অযুতায় হইতে অক্রোধন, অক্রোধন হইতে দেবাভিথি,
দেবাভিথি হইতে দিতীয় ঋক, ইতে প্রতীপ উৎপন্ন হইলেন। প্রতী-

প্রতীপঃ, তদ্যাপি দেবাপি-শান্তমু বাহ্লীক সংজ্ঞান্তরঃ
পুরো বভূবঃ । দেবাপি বাল্য এবারণ্যং বিবেশ ॥ ৪ ॥
শান্তনুরবনীপতিরভবৎ \* । অয়ঞ্চ তদ্য শোকঃ
পৃথিবাং গীয়তে॥

যং যং করাভ্যাং স্পৃশতি জীর্ণং যৌবনমেতি সঃ।
শান্তিঞ্চাপ্রোতি যেনাগ্রাং কর্মণা তেন শান্তরঃ ।৫॥
তক্ষ শান্তনো-রাষ্ট্রে দ্বাদশ বর্ষাণি দেবো ন

ততশ্চ অশেষরাষ্ট্রবিনাশমবেক্ষ্যাসৌ রাজা ত্রাহ্মণান্ অপৃচ্ছৎ, ভোঃ! কস্মাৎ অস্মিন্ রাষ্ট্রে দেবো ন বর্ষতি?

পের তিনটা পুত্র জন্মিয়াছিল। তাহাদের নাম—দেবাপি, শান্তনু ও বাহ্লীক। দেবাপি বাল্যাবস্থাতেই বন গমন করি-লেন। শান্তনু ভূপতি হইলেন। ই হার বিষয়ে অদ্যাপি একটা শ্লোক পঠিত হইয়া থাকে। শ্বাপা—

রাজা শান্তনু, যে যে জীর্থ ব্যক্তিকে হস্তদার। স্পুর্শ করিয়া-ছিলেন, সেই সেই ব্যক্তিই যৌগনপ্রাপ্ত হইয়াছিল। তাঁহা হইতে লোকে প্রধান শান্তি অর্থাৎ যৌগন প্রাপ্তিরূপ কল্যান লাভ করিয়াছিল, বলিয়া তিনি শান্তনু নামে বিখ্যাত হইয়া-ছেন। ব

এই শাস্তমুর রাজ্যে দেবরাজ দ্বাদশ বর্ষ বর্ষণ করিলেন না। "
যথন এই রাজা দেখিলেন যে, সমুদায় রাজ্য নষ্ট ছইতেছে,
তথন তিনি ব্রাহ্মণদিগকে জিজ্ঞাসা করিলেন, দেবরাজ কিজ্ঞা

<sup>•</sup> नाक्यस मरीभारनार छवर हेडि भागा बन्ग्।

কো মমাপরাধঃ ? ইতি। তে তম্ উচুঃ অগ্রন্ধন্ত তেইহের্মবনিস্থ্য। ভুজ্যতে, পরিবেতা ত্বম্, ইত্যুক্তঃ স পুনস্তান্ অপৃচ্ছৎ, কিং ময়া বিধেরমিতি। তে তম্ উচুঃ,
যাবৎ দেবাপির্ন পতনাদিভিদোবৈরভিভূয়তে, তাবৎ
তদ্যাহং রাজ.২, তদলমেতেন তলৈ দীয়তাম্,
ইতুংক্তে তদ্য মন্ত্রিপ্রবরেণ অশ্বাদারিণা তত্রারণ্যে
তপস্থিনে\* বেদবাদ-বিরোধ-বক্তারঃ প্রয়োজিতাঃ ॥ ৭ ॥

এই রাজ্যে রষ্টি করিতেছেন না । আমার কি অপরাধ হইয়াছে ? ব্রাক্ষণণা তাঁহাকে কহিলেন, ন্যায়াসুসারে ভোমার জ্যেষ্ঠ ব্রাতার প্রাপ্তা এই রাক্ষ্য তুমি ভোগ করিতেছ, অতএব তুমি পরিবেস্তা।\* ব্রাক্ষণোরা এই কথা বলিলে শাস্তমু পুনর্বার ক্সিজ্ঞাসা করিলেন যে, এক্ষণে আমার কি কর্ত্তবা ? ব্রাক্ষণোরা কহিলেন, যে পর্যাস্ত দেবাপি পতিত হওয়া প্রভৃতি কোন দোষে অভিভূত না হন, সে পর্যাস্ত এই রাজ্য তাঁহারই প্রাপ্য। অতএব এ রাজ্যে তোমার অধিকার নাই, তুমি ইহা তাঁহাকেই প্রদান কর। ব্রাক্ষণেরা এইরূপ কহিলে শাস্তমুর প্রধান মন্ত্রী অক্ষানারী, বেদবাদের বিক্ষরণাদী কতকগুলি লোককে সেই অরণ্যে তপন্থী দেবাপির নিকট প্রেরণ করিলেন। তাহারা অতি সরল-হৃদ্য রাজকুমারের

#### \* ভত্রারণ্যে তপদ্দিনঃ ইতি বা পঠনীয়ম্ ।•

<sup>1।</sup> দোৰ গুমা জ্যেষ্ঠ আতা বৰ্জমান থাকিতে যদি কমিষ্ঠ আতা অপ্তে বিবাহ করে, তাহা হইলে ঐ কমিষ্ঠকে পরিবেতা, জ্যেষ্ঠকে পরিবিন্ন ও ঐ বিবাহের মাম পরিবিতি বা পরিবেদন বলে। এরপে বিবাহে বর কন্যা পুরোহিত প্রভৃতি দকলেই পাণী ও নিরম্নামী হন। 1

তৈরপি অতিখাজুমতের্মহীপতিপুত্রস্য বুদ্ধির্বেদ-বিরোধ-মার্গানুসারিণ্যক্রিয়ত \*।। ৮।।

রাজা চ শান্তমুর্দ্বিজবচনোৎপন্ন-পরিবেদন-শোক-ন্তান্ আকাণান্ অপ্রণীক্ষত্য অপ্রজরাজ্যপ্রদানায় অরণ্যং জগাম। তদাশ্রমন্ উপগতাশ্চ তমবনীপতি-পুত্রং দেবাপিমুপতস্থুঃ। তে ত্রাহ্মণা বেদবাদান্তন্দ্রানি বচাংসি রাজ্যমপ্রজেন কর্ত্ত্যমিত্যুর্থবন্তি তম্ উচুঃ। অসাবপি বেদবাদবিরোধি-মুক্তিদ্বিতমনেক-প্রকারং তানাহ। ততন্তে ত্রাহ্মণাঃ শান্তমুম্ উচুঃ, আগচ্ছ ভো রাজন্! অলমত্রাতিনির্বন্ধেন, প্রশান্ত প্রাসাবনার্ফিদোষঃ, পতিতোহয়মনাদি-কাল-মহিত-বেদবচন-দূষণোচ্চারণাৎ। পতিতে চ অপ্রজে নৈব পরিবেদ্যং ভবতি, ইত্যুক্তঃ শান্তমুং স্বপুরুষ্ আগত্য রীজ্যমকরোৎ। বেদবাদ-বিরোধি-বচনোচ্চারণ-দূষিতে চ জ্যেন্তাইবিন্দ্রাহ্মন্ আগত্য

মনকে বেদবিরুদ্ধ পথে পরিচালিত করিল। দ এ দিকে রাজা শাস্ত্র, ব্রাহ্মণ-বাক্যানুসারে পরিবেদন-জনিত শোকে অনুতপ্ত-হৃদয় হইয়া সেই সকল ব্রাহ্মণকে সমভিব্যাহারে লইয়া জ্যেষ্ঠ ভ্রাতাকে রাজ্য প্রত্যুপনি করিবার নিমিস্ত অরণ্যে গমন করিলেন। অনস্তর তাঁহারা রাজকুমার দেবাপির আশ্রমে প্রবিষ্ট হইয়া তাঁহার নিকট উপস্থিত হইলেন। ব্রাহ্মণেরা, জ্যেষ্ঠেরই রাজ্য

ৰেখবাদ-বিরোধমার্গান্তসারিণ্যক্রিয়ত ইভি বা পাঠ।য়ৄ।

<sup>+ (</sup>कार्ष्टश्रेर्यमम् (मराज्यकाशिमनाम्माज्यका हेजि व। भेरेमीयम् ।

ববর্ষ ভগবান্ পর্জন্যঃ। বাহ্লীক্স্য সোমদ্ভঃ পু্ত্রো-২ভূব ॥ ৯॥

সোমদত্তস্যাপি ভূরি-ভূরিপ্রবঃ-শলসংজ্ঞান্তরঃ\* পুরাঃ।শান্তনোরপ্যমরনদ্যাং গঙ্গায়ামুদারকীর্তিরশেষ-শাস্তার্থবিদ্ ভীষ্মঃ পুরো২ভূৎ। সত্যবত্যাঞ্চ চিত্রাক্দ-

শাসন করা কর্ত্তব্য, এই বিষয়ক বেদবাক্য বলিতে আরম্ভ করিলেন। দেবাপিও বেদবাদ বিরুদ্ধ যুক্তি-বহিভূতি অনেকপ্রকার কথা কহিতে লাগিলেন।

অনস্তর ব্রাহ্মণগণ শাস্তকুকে কহিলেন, মহারাজ! প্রস্তাগমন কর, এ বিষয়ে নির্বন্ধাতিশয়ে প্রয়োজন নাই। সেই অনার্কির
কারণস্বরূপ দোষ তিরোহিত হইয়াছে। চিরকাল পূজিত ও
সমানিত যে বেদবাকা, তাহার প্রতি দোষারোপ করাতে ইনি
পতিত হইয়াছেন। জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা যদি পতিত হয়, তাহা
হইলে পরিবেদন-জন্য দোষ ঘটে না। ব্রাহ্মণেরা এইরূপ আদেশ
করিলে শাস্তকু, স্বীয় রাজধানীতে প্রত্যাগত হইয়া রাজ্য শাসন
করিতে লাগিলেন। বেদবাদ-বিরুদ্ধ-বচনোচ্চারণ বলতঃ পতিত
জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা দেবাপি বর্ত্তমান থাকিতেও (রাজনিংহাসনার্কা
শাস্তকুর রাজ্যে) নিখিল শস্তোৎপাদনের নিমিত্ত ভগবান্ পর্জন্য
জল বর্ষণ করিতে লাগিলেন।

বাহ্লীকের একটা পুত্র হইল, তাহার নাম সোদদন্ত। সোমদন্তের তিনটা পুত্র হইল। তাহাদের নাম—ভূরি, ভূরিশ্রবা ও শল (শহু)। শাস্তমু হইতে স্থরনদী গঙ্গার গর্ভে অশেব-শাস্ত্রজ্ঞ উদারকীর্ত্তি ভীয়া জন্ম পরিগ্রহ করিলেন। শাস্তমু, সতাবতী নামী মহিষীতে আব দুইটা কুমার উৎপাদন করিয়া—

ननः मश्काखाः देखि वा भिविष्यम् ।

বিচিত্রবীর্য্যে পুরাবজনয়ৎ শান্তরঃ । চিত্রাঙ্গদন্ত বাল এব চিত্রাঙ্গদেন গন্ধর্কেণাছবে বিনিহতঃ। বিচিত্রবী-র্য্যোইপি কাশিরাজতনয়ে অম্বিকায়ালিকে উপযেমে। তদুপভোগাদিখেদাক যক্ষাণা গৃহীতঃ পঞ্জুমগামং। সত্যবতী নিয়োগাক মৎপুত্রঃ ক্ষাইদপায়নো মাজু-র্কাচনমনতিক্রমণীয়ম্ ইতি বিচিত্রবীর্যক্ষেত্রে ধৃতরাষ্ট্র-পাত্তু তৎপ্রহিত-ভুজিষ্যায়াঞ্চ বিদুরমুৎপাদয়ামাস॥১০॥

ধৃতরাষ্ট্রোইপি দুর্য্যোধন-দুঃশাসনাদি-প্রধানং\* পুত্র-শতং (গান্ধার্য্যাম্) উৎপাদয়াস। পাণ্ডোরপারণ্যে

ছিলেন। ঐ কুমারদ্বরের নাম — চিত্রাঙ্গদ ও বিচিত্রবীর্য্য। চিত্রাক্ষদ বাস্তাবস্থাতেই চিত্রাঙ্গদ নামক গন্ধর্ম কর্ত্বক সংখ্রামে বিনিহত
হইয়াছিলেন। নিচিত্রবীর্য্য, কাশিরাজের দুইটী কন্যা বিবাহ করিলেন। এই দুইটী কন্যার নাম – অস্থিকা ও অম্বালিকা। বিচিত্রবীর্য্য অপরিমিত রূপে ঐ দুই রাজকন্যা উপভোগ করাতে যক্ষা
সোগে আক্রান্ত হইয়া পঞ্জ প্রাপ্ত হইলেন।

জনস্তর মদীয় প্র ক্ষটেদপায়ন, সতাবতীর নিয়োগানুসারে, মাতৃবাক্য জনতিক্রমণীয় বিবেচনা করিয়া ঐ বিচিত্রবীর্য্যের ক্ষেত্রে ধৃতরাক্র, ও পাশু, এই দুইটা কুমার উৎপাদন করিয়া। ছিলেন এবং তিনি বিচিত্রবীর্য্যের পত্নী কর্তৃক প্রেরিত দাসীর গর্মেন্ড জার একটা পুত্র উৎপাদন করেন। এই পুত্রের নাম বিদুর।

ধৃতরাক্টের একশত পত্ত হইল। তাহাদের নাম—দুর্ঘোধন দুঃশাসন প্রভৃতি। অরণামধ্যে দুগের শাপদারা পাঞ্র

ছঃশাসনাদি ইভি বা পাঠঃ 1

स्राभारभाभहर-अजननमार्था अ श्वा-वां मु-भटेक मू शि-कित-जीम रमनार्ज्य नाः कृ छार, नकून-महरमर्ग ह जित-जीम रमनार्ज्य शिक्ष भूजाः ममूरभामि छाः। एवस् एमे भगाः भक्ष भूजा वज्रुः। यूथि कितार श्रे कि विद्याः, जीम रमनार स्व रमामः, व्य क्वी विंत ज्ज्ञानार, भाज-नीरका नकूनार, व्य क्वी महरम्यार। जारत ह भाज्य नामाञ्चाः। जम्यथा, यो स्था यूथि कितार एम्वकर भूजम्यान। हि जिसा चर्छा रक्कार जीमरमनार भ्रजम्यान। कामी ह जीमरमनारम्य मर्ज्य थाल-भ्रवान। महरम्याक विज्ञा स्व रहां कर नाम भूजर शाल-

সন্তানোৎপাদিকা শক্তি রহিত হওয়াতে তদীয় প্রথম মহিষীতে ধর্ম বায়ু ও মহেন্দ্র হইতে যুধিষ্ঠির, ভীমসেন ও অর্জ্জুনের উৎপত্তি হইল। পরে তাঁহার দিতীয় মহিষী মাদ্রীর গর্ভে অধিনীকুমারযুগল হইতে নকুল ও সহদেব জন্ম পরিশ্রহ করি-লেন। এই রূপে পাঞ্চুর পাঁচটী পুত্র উৎপন্ন হন।

এই পঞ্চ পাশুব হইতে ডৌপদীর গর্ভে পাঁচটী কুমার জন্ম পরিগ্রহ করিয়াছিলেন। তমধ্যে মুধিন্টির হইতে প্রতিবিদ্ধা, ভীমনেন হইতে সুত্সোম, অব্দুন হইতে শ্রুতকীর্ত্তি, নকুল হইতে শতানীক. সহদেব হইতে শ্রুতকর্মা উৎপন্ন হন। এতদ্যতীত পাশুবদিগের আর কএকটী পুত্র হইয়াছিল। যথা—যুধিন্টির হইতে যৌধেনীর গর্ভে দেবক নামে পুত্র উৎপন্ন হয়। ভীমসেন হইতে হিড়িম্বার গর্ভে ঘটোৎকচ উৎপন্ন হইয়াছিল। ঐ ভীম-দেন হইতে কাশীর গর্ভে স্ক্রেগ নামে পুত্র জন্ম পরিগ্রহ করে।

<sup>•</sup> প্রজননাদামর্থন্য ইতি পাঠান্তরম্ ।

বতী। করেণ্মত্যাঞ্চ \* নকুলো হপি নির্মিত্রমজীজনং । আর্জুনস্থাপুলেপ্রাং নাগকন্যায়ামিরাবান নাম পুত্রোই-ভূং। মণিপুরপতি-পুত্রাঞ্চণ পুত্রিকাধর্মেণ বক্রবাহনং নাম পুত্রমজীজনং॥ ১১॥

স্কুভদ্রাঞ্চার্ডকত্ত্বেংপি যোৎসাবতিবল-পরাক্রম-সমস্তারাতিরথ-বিজেতা সোহভিমন্মরজায়ত। অভি-মন্যোরতরায়াং পরিক্ষীণেয়ু কুরুত্বশ্বশাম-প্রযুক্ত-

সহঁদেব হইতে বিজয়ার গর্ভে স্থহোত্র নামে কুমার উৎপন্ন হয়।
নকুল হইতে করেণুমতীর গর্ভে নিরমিত্র নামে পুত্র জন্মে। অজ্জুন
হইতে উল্পী নান্নী নাগকনার গর্ভে ইরাবান্ নামে সন্তান
জন্মিছিল। এই অজ্জুনি, মণিপুর-পতির কন্যার গর্ভে পুত্রিকাধর্মানুসারে বক্রবাহন নামে পুত্র উৎপাদন করিয়াছিলেন। ''
এই অর্জুন হইতে স্থভদ্রার গর্ভে অভিমন্যুর জন্ম হইয়াছিল।
এই অভিমন্যু বাল্যাবস্থাতেই মহাবল পরাক্রান্ত মহারথ বিপক্ষগণকে পরাজয় করিয়াছিলেন।

কুরুকুল কয় হইলে অভিমন্য-সহবাস-সন্তুত উত্তরার গর্ডে

করেণুমত্যাম্ ইতি কেচিং পঠন্তি।
 গমনিপুরপতিপুর্যাম্ ইত্যম্যে পঠতি।

э>। বে কম্যার পিড। এরপ সংকল্প করিয়া রাখে যে, আমার পুত্র মাই, এই ক্ষ্যাই আমার পুত্রস্থারপা, এই ক্ষ্যার গর্ভে যে সন্ধান হটবে, সে আমার ঔরস পুত্রের সদৃশ হইবে, সেই ক্ষ্যার মাম পুত্রিকা। পুত্রিকার পুত্র হইলে জন্মণাভার পিগু দান করিতে পারে না, বিষয়াধিকারীও হয় না। সে ভাহার মাতুলের সদৃশ হইরা মাভামহের প্রাদ্ধ করে ও মাভামহেরই ধনাধিকারী হয়। এই রূপে হত পুত্রের নাম পুত্রিকাপুত্র॥ ১০

বন্ধান্ত্রেণ গর্ভএব ভস্মীক্ততো ভগবতঃ সকল-স্থরাস্থর-বন্দি ত-চর্ণযুগলস্থাত্মেচ্ছাকারণ- মানুষরূপ-ধারিণোই-মুভাবাৎ পুনর্জ্জীবিতমবাপ্য পরিক্ষিৎ জজ্ঞে॥ ১২॥

যোহয়ং সাম্প্রতমেতজুমগুলমখণ্ডিতায়তি ধর্মেণ পালয়ভীতি।

### ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুথে ২° শে বি° শোহধায়ঃ 1

পরিক্ষিতের জন্ম হইল। এই পরিক্ষিৎ, অশ্বর্থামা কর্ত্ক প্রযুক্ত ব্রহ্মান্ত হারা গর্ভমধ্যেই ভদ্মীকৃত হইয়াছিলেন। পরে সমুদায় দেবগণ ও দৈত্যগণ যাঁহার চরণযুগল বন্দনা করেন, যিনি স্বেচ্ছানুসারে, মানবদেহ ধারণ করিয়াছেন, সেই ভগবানের অনুগ্রহে পুনজ্জীবিত হন। ১২ এই পরিক্ষিৎ এক্ষণে ধর্মানুসারে অধ্ঞাভূমঞ্জল অথাপ্তিত প্রভাবে শাসন করিতেছেন। ১০

> বিষ্ণুপুরাণ, চতুর্থ অংশ, বিংশ অধ্যায় সমাপ্ত।

বিষ্ণুপুরাধম্। চতুর্থো২ংশঃ।

একবিংশোহধাাग्रः।

### পরাশর উবাচ ৷

অতঃপরং ভবিষ্যানহং ভূমিপালান কীর্ত্তিয়িষো। যোহয়ং সাম্প্রভাষবনীপতিঃ, তস্থাপি জনমেজয়-শ্রুত-দেনোগ্রামেন-ভীমদেনাঃ পুত্রাশ্জ্বারো ভবিষ্যন্তি॥১॥

তস্থাপরঃ শতানীকো ভবিষ্যতি। যোহসৌ যাজ্ঞব-ক্ষ্যাৎ বেদমধীত্য ক্লপাদস্ত্রাণ্যবাপ্য বিষয়বিরক্তচিত্ত-বৃত্তিশ্চ শোনকোপদেশাদাত্ম-বিজ্ঞানপ্রবণঃ পরং নির্বা-ণমাপ্যাতি॥ ২॥

অতঃপর আমি ভবিষা রাজগণের বিষয় বর্ণন করিতে প্রস্তুত্ব করিছান। একণে যিনি রাজসিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত আছেন, তাঁহার চারিটী পুত্র হইবে। এপুত্র চতুইতার নাম—জনমেজয়, শুক্তসেন, উপ্রসেন ও ভীমসেন। কনমেজয়ের যে পুত্র হইবে, তাহার নাম শতানীক। শতানীক, যাজ্ঞবল্কা হইতে বেদ অধ্যয়ন পুর্বাক ক্পের নিকট অস্ত্র শিক্ষা করিয়া পরিশেষে বিষয় হইতে বিরক্তিন্ত হইবেন। পরে ইনি শৌনকের উপদেশাক্সারে আস্থা-তত্ত্বজ্ঞান লাভ করিয়া নির্বাণ মুক্তি প্রাপ্ত হইবেন। ব

<sup>&</sup>gt;। এकविश्न अक्षारिय (क्षमक शर्याच छांबी कूक्रवश्न कीर्क्डिंड इहेटल्डाइ |>

শতানীকাদশ্বনেধদতো ভবিতা, তন্মাদপ্যধিসীমকৃষ্ণঃ, অধিদীমক্ষণ নিচকুঃ \*। যো গল্পপাহতে
হক্তিনাপুরে কৌশাস্থাং নিবৎস্ততি। তন্সাপুয়ঞ্চঃ পুত্রো
ভবিতা। উফাচ্চিত্ররথঃ, ততঃ শুচিরথঃ, তন্মাৎ বৃষ্ণিমান্ † ততঃ স্বযেণঃ, তন্মাদিপি স্থনীথঃ, স্থনীথাদৃচঃ,
ততো নৃচকুঃ, তন্সাপি স্থাবলঃ, তন্মাৎ পরিপ্লবঃ‡
ততশ্চ স্থনয়ঃ, ততো মেধারী, মেধাবিনো নৃপঞ্জয়ঃ,
ততো মৃদুঃ, তন্মাৎ তিথাঃ, তিথাৎ বৃহদ্রথঃ, তন্মাৎ
বস্থানঃ, ততোহপ্যপরঃ শতানীকঃ॥৩॥

, শতানীক হইতে অধ্যেধদন্তের জন্ম হইবে। অধ্যেধদত্তের পুত্র অধিনীমকৃষ্ণ, অধিনীমকৃষ্ণ হইতে নিচকু (নিচকু)
উৎপন্ন হইবেন। (নিচকুর অধিকার কালে প্রাচীন রাজধানী
হস্তিনাপুর গঙ্গার গর্ভন্থ হইবে।) হস্তিনাপুর গঙ্গার গর্ভন্থ
হইলে এই নিচকু কোশাদ্বী নগরীতে বাস করিবেন।

নিচকু হইতে উষণ, উষণ হইতে চিত্ররণ, চিত্ররণ হইতে শুচিরণ, শুচিরণ হইতে রুষ্ণিমান্, (রুষ্টিমান্ বা রুক্মিমান্) রুষ্ণিমান্ হইতে সুবেণ, স্থাবল হইতে স্থাবল, (সুখীবল) মুখাবল হইতে পরিপ্লাব, পরিপ্লাব হইতে স্থাবল, (সুখীবল) মুখাবল হইতে পরিপ্লাব, পরিপ্লাব হইতে স্থাবল, হইতে মেধারী, মেধারী হইতে গুপঞ্জয়, গুপঞ্জয় হইতে মৃদ্, মৃদু হইতে তিথা, তিগা হইতে রুহতেথ, রুহতেথ হইতে বস্থান, বসুদান

<sup>#</sup> নিচক্রা; ইতি পাঠান্তরম্।

<sup>†</sup> র্টিমান, ইভি র্সিমান্ ইভি বা পৃথক্ পাঠ:।

<sup>†</sup> उन्नांशि ज्ञ्चीरनः, जन्मीर श्रिक्ष के इंडि वा श्रेश्डाम्।

তসাচ্চ উদয়নঃ, উদয়নাদহীনরঃ, ততশ্চ খণ্ডপাণিঃ \*
ততো নির্মিত্রঃ, তসাচ্চ ক্ষেমকঃ। ততায়ং শ্লোকঃ।—
ত্রন্ধক্তন্য যো যোনিবংশো রাজর্ষিসংক্তঃ।
ক্ষেমকং প্রাপ্য রাজানং স সংস্থাং প্রাপ্যাতে কলো ॥॥॥

### ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থেই°১শে একবি°১শোহ্ধ্যায়ঃ।

হইতে দিতীয় শতানীক, " শতানীক হইতে উদয়ন, উদয়ন হইতে অহীনর, অহীনর হইতে খণ্ডপানি, খণ্ডপানি হইতে নিরমিত্র, নিরমিত্র হইতে ক্ষেমক উৎপন্ন হইবেন। ক্ষেমকের বিষয়ে একটী শ্লোক পঠিত হইয়া থাকে। যথা—

যে বংশ, ব্রাহ্মণ ও ক্ষজিয়গণের উৎপাদক, রাজর্ষিগণ কর্তৃক যে বংশ অলক্ষত হইয়াছে, সেই বিতীর্ণ কুরুবংশ কলিকালে ক্ষেমক নামক রাজাতেই পরিসমাপ্ত হইবে ৷ \*

> বিষ্ণুপুরাণ, চতুর্থ অংশ, একবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত ৷

🛊 দপ্তপাৰি: ইভি ব। পঠমীয়ম্ ।

৩। কেই কেই বলেন, প্রাচীন রাজধানী ইন্তিনা পুর এক্সণে দিল্লী ও পরিক্ষিণ-গড় নামে বিখ্যাত ইইয়াছে। পারস্তু দিল্লীর নিকটবন্তা গলার গর্ডে এক্ষণে প্রাচীন নগরের ধ্বংসাবনের প্রাপ্ত ইয়া বাইতেছে। ইহাছারা অনুনিত ইইতেছে বে, ইন্তিনাপুর অন্যাপি গলার গর্ডেই নিহিত আছে। ৩ বিষ্পুরাণম্।

চতুর্থোহংশঃ ৷

षाविश्टणां ३ था ग्रह ।

#### পরাশর উবাচ।

অতশ্চেক্ষাকবো ভবিষ্যাঃ পার্থিবাঃ কথ্যন্তে। বৃহ-দলস্য পুত্রো বৃহৎক্ষণঃ\*॥ ১॥

তসাদ গুরুকেপঃ, † ততো বৎসঃ, বৎসাৎ বৎসবৃাহঃ, তভঃ প্রতিব্যোমঃ, তস্তাপি দিবাকরঃ, তস্মাৎ
সহদেবঃ॥২॥

ভতে বৃহদখঃ, তৎস্বর্তাররথঃ,তন্তাপি সুপ্রতীকঃ,‡

পরাশর কহিলেন। অতঃপর ইক্ষাকুবংশীয় ভাবী ভূপালয়াণের বিবরণ বলিতে প্রস্তুত হইলাম। রহদ্বলের প্রত্রের নাম
ব্রহৎক্ষণ, বহৎক্ষণ হইতে গুরুকেপ, গুরুকেপ হইতে বৎস,
বৎস হইতে বৎসবাহ, বৎসবাহ হইতে প্রতিব্যোম, প্রতিব্যোম
হইতে দিবাকর, দিবাকর হইতে সহদেব, সহদেব হইতে রহদশ্ব, রহদশ্ব হইতে ভাতুরণ, ভাতুরণ হইতে মুপ্রতীক, মুপ্রতীক

 <sup>\*</sup> রহংকর্ণ ইত্যাপি পঠন্তি।

 † তন্মাং উক্লক্ত্য ইতি বা পাঠাম্।
 তন্যাপি সুপ্রতীতাম্বঃ, তন্যাপি সুপ্রতীক ইতি কৃচিৎ পাঠঃ।

ততো মরুদেবঃ, "মরুদেবাৎ সুনক্ষত্রঃ, তুসাৎ কিমুরঃ, কিমুরাদন্তরিক্ষঃ, তুসাৎ সুবর্ণঃ, তৃত্তশ্চ অমিত্রজিৎ, তৃত্তশ্চ রহদ্রাজঃ, তুস্যাপি ধর্মী, ধর্মিণঃ ক্লতজ্ঞয়ঃ, কৃতপ্রয়াদ্রণপ্র্য়ঃ, রণপ্রয়াৎ সপ্ত্রয়ঃ, তুসাৎ শাক্যঃ,
শাক্যাৎ ক্রুদ্ধোদনঃ\* তুসাৎ রাতুলঃ, তৃত্তঃ প্রসেনজিৎ, তৃত্তশ্চ কুদ্রকঃ, † তৃতঃ কুণ্ডকঃ, তুসাদিপি সুর্থঃ,
তৃত্তশ্চ সুদ্রকঃ, † তৃতঃ কুণ্ডকঃ, তুসাদিপি সুর্থঃ,
তৃত্তশ্চ সুমিত্রোহন্যঃ, ইত্যেতে চেক্ষ্বাক্রো রহদ্বলামুয়াঃ । অত্রামূরংশ-শ্লোকঃ।

ইক্ষাকুণাময়ং বংশঃ স্থমিত্রান্তো ভবিষ্যতি ।

হইতে সরুদেন, মরুদেন হইতে স্থানক্ষত্র, সুনক্ষত্র হইতে কিম্নর, কিম্নর হইতে অন্তরিক্ষ, অন্তরিক্ষ হইতে সুনর্ন, ক্রুবর্ন হইতে অমিত্রজিৎ, অমিত্রজিৎ হইতে রহদ্রোজ, রহদ্রোজ, হইতে ধর্মী, ধর্মী হইতে কৃতপ্পয়, কৃতপ্পয় হইতে রণপ্পয়, রণপ্পয় হইতে সপ্পয়, মপ্পয় হইতে শাক্য, শাক্য হইতে ক্রেজাদন, (ক্রোজাদন) ক্রুজোদন হইতে রাতুল, রাতুল হইতে প্রদানজিৎ, প্রসেনজিৎ হইতে ক্রুজেক, ক্রুজেক হইতে স্থান, সূর্ব হইতে ক্রিডীয় স্থামিত্র উৎনিশ্ব ক্রিবরা এই সকল ইক্রাক্রংশীয় রাজা রহজ্বের সন্তান। এই বংশ বিষয়ে একটী স্লোক আছে। যথা—ইক্রাক্রংশ,

ক্রুছোদন ইভাঐন ক্রোকাদন ইভি পাঠাভরম্।

t क्ष्मावकः हिंछ व। शहेनीयम् ।

যতন্তং প্রাপ্য রাজানং স সংস্থাং প্রাপ্স্যতে কলৌ॥৩॥

# ইতি জীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থে ২° শে দ্বাবি° শোহধায়ঃ 1

রাজা স্থমিত্র পর্যান্ত বিন্তীর্ণ হইবে; কারণ কলিমুগে উক্ত রাজা হইতেই এই বংশের শেষ হয়।

> বিষ্ণুপুরাণ, চতুর্থ অংশ, দ্বাবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত।

### বিষ্পুরাণম্।

চতুর্থোইংশঃ।

व्याविश्यांक्शांबः।

#### পরাশর উবাচ।

মাগধানাং বাহতিথানাং ভবিষ্যাণামতুক্রমং কথ-য়ামি॥ ১॥

অত হি বংশে মহাবলা জরাদল্প-প্রধানা বভুবুঃ ॥২॥
জরাদল্পতাৎ সহদেবাৎ দোমাপিঃ, তথাৎ
ক্ষতবান্, তদ্যাপায়তায়ুঃ, ততশ্চ নির্মিত্রঃ, তত্তনয়ঃ স্কল্লঃ, তথাদিপি রহৎকর্মা, ততশ্চ দেনজিৎ,
তথাচ্চ ক্রডঞ্জাঃ, ততে। বিধাঃ, তদ্য চ পুলঃ
শুচিনামা ভবিষ্যতি। তদ্যাপি ক্ষেমাঃ, ততশ্চ স্ত্রতঃ,

পরাশর কহিলেন। মগধ-দেশীয় রহদ্রথবংশোৎপন্ন ভবিষ্যা রাজগণের বিবরণ বলিতেছি। এই বংশে জরাসন্ধ প্রভৃতি মহাবল রাজগণ-জন্মপরিগ্রহ করিয়াছিলেন। জরাসন্ধের পুত্র সহদদেব, সহদেব হইতে সোমাপি, সোমাপি হইতে শ্রুতবান, শ্রুতবান্ হইতে অযুতায়ু, অযুতায়ু হইতে নির্মিত্র, নির্মিত্র হইতে স্কুল্ল হইতে রহৎকর্মা, রহৎকর্মা হইতে সেনজিৎ, সেনজিৎ হইতে শ্রুতপ্রয়, শ্রুতপ্রয় হইতে বিপ্র, বিপ্রাহতে গুচি, গুচি হইতে ক্ষেম্য, ক্ষেম্য হইতে স্কুত্রত,

স্বতাৎ ধর্মঃ, ততঃ স্থামঃ\*, ততো দৃঢ়সেনঃ, ততঃ স্থাতিঃ, তশাৎ স্ববলঃ, তস্য স্থনীতো ভবিতা। ততঃ সত্যজিং, সত্যজিতো বিশ্বজিৎ, তস্যাপি রিপু-জ্বয়ঃ পুত্রঃ, ইত্যেতে বার্ছজ্বণ ভূপতয়ো বর্ষসহ্জ্র-মেকং ভবিষ্যন্তি॥৩॥

# ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থেণ্\শে ত্রয়োবিণ্\শোহধ্যায়: 1

সুবত হইতে ধর্ম, ধর্ম হইতে স্থশ্য, (শুশ্রুম) সুশ্রম হইতে দিল্লেন, দূল্দেন হইতে সুমতি, সুমতি হইতে সুবল, সুবল হইতে সুনীত, স্থনীত হইতে সত্যজিৎ, সত্যজিৎ হইতে রিপু-প্রে উৎপন্ন হইবেন। এই রহদ্রথবংশীয় রাজগণ এক সহস্রবংশর রাজস্ব করিবেন।

. বিষ্ণুবুরাণ, চতুর্থাংশ, ত্রয়োবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত।

<sup>🕈</sup> সুখ্রম ইত্যত্ত শুশ্রুম ইতি, সুখ্রবা ইতি চ পুস্তকাশ্বরুস্য পাঠ:

## विक्यूत्रानम् ।

চতুর্থোঽংশঃ ৷

চতুর্বিংশো২ধ্যায়:।

### পরাশর উবাচ।

যোহয়ং রিপুঞ্জয়ো নাম বার্ছদ্রোইন্ত্যঃ, তদ্য স্থানকো নামামাত্যো ভবিষ্যতি \*॥ ১॥

স চৈনং স্বামিনং হত্বা স্বপুত্ৰং প্রদ্যোতনামানম \* অভিবেক্ষ্যতি। ত্যাপি পালকনামা পুত্রে। ভবিতা। ততক বিশাখযূপঃ, তৎপুত্রো জনকঃ, তদ্য চ নন্দি-বর্দ্ধনঃ, ইত্যেতে অফব্রিংশদুত্তরম্দশতং পঞ্চ প্রদ্যোতাঃ পৃথিবীং ভোক্ষ্যন্তি॥ ২॥

পরাশর কহিলেন। রহজথবংশীয় শেষ রাজা রিপঞ্জয়ের স্থানিক নামে এক মন্ত্রী হইবেন। তিনি ঐ প্রভু রিপুঞ্জয়কে বিনাশ করিয়া প্রদ্যোত নামক স্বীয় পুত্রকে সেই রাজ্যে সভি-ষিক্ত করিবেন। প্রদ্যোতের একটী পুত্র হইবে, তাহার নাম পালক। পালকের পুত্র বিশাখযূপ, তৎপুত্র জানক, জানক হইতে

স্থানিক ইভাত্র সুনীক ইভাপি পাঠে। লভাতে ।

<sup>†</sup> প্রদ্যোভন-নামান্মিতি প্রাচীনপুস্তকের দৃশ্যতে।

১। কলিকালে চক্রবংশ বর্ণন করিয়া চক্রবংশর পদ্ধবস্থরপ ভবিষ্য র্হম্রথবংশ কার্ত্তিত হউতেছে।১

ততক শিশুনাগঃ, তৎপুক্রশ্চ কাকবর্ণো ভবিতা।
তৎপুক্রঃ ক্ষেমধর্মা, তদ্যাপি ক্ষক্রোজাঃ, তৎপুর্ক্তো
বিদ্মিদারঃ, ততকাজাতশক্রঃ, তত্মাচ্চ দর্ভকঃ, দর্ভকাচোদয়াশ্বঃ, তত্মাদপি নন্দিবর্দ্ধনঃ,\* ততো মহানন্দী।
ইত্যেতে শৌশুনাগা দশ ভূমিপালাস্ত্রীণি বর্ষশতানি
দ্বিষ্টাধিকানি ভবিষান্তি॥ ৩॥

মগনন্দিস্তঃ শূদাগর্ভোদ্তবোহতিলুকো মহাপদ্মো নন্দঃ পরশুরাম ইবাপরোহখিলক্ষত্রান্তকারী ভবিতা ॥৪ ততঃ প্রভৃতি শূদ্রা ভূমিপালা ভবিষ্যন্তি, স

নন্দিবৰ্জন উৎপন্ন হইবেন। প্রদ্যোত-বংশীয় এই পাঁচ জন রাজা, একশত অষ্টত্রিংশৎ বৎসর পৃথিবী ভোগ করিবেন।

অতঃপর শিশুনাগ (রাজ্মিংহাসনে আরোহণ করিবেন।)
শিশুনাগের পুত্র কাকবর্ন, কাকবর্নের পুত্র ক্ষেমধর্মার পুত্র
ক্ষজ্রোজাঃ, ক্ষজ্রোজার পুত্র বিদ্মিনার, বিদ্মিনারের পুত্র অজাতশক্ত,
অজাতশক্ত হইতে দর্ভক, দর্ভক হইতে উদয়ায়, উদয়ায় হইতে
নন্দিবর্জন, নন্দিবর্জন হইতে মহানন্দী উৎপন্ন হইবেন। শিশুনাগ–
বংশীয় এই দশ জন ভূপতি তিন শত বিষষ্টি বংসর রাজত্ব
করিবেন। মহানন্দী হইতে শ্রেজাতীয় কামিনীর গর্ভে একটী
পুত্র উৎপন্ন হইবেন, তাহার নাম মহাপদ্ম ও নন্দ। এই নন্দ্
অত্যন্ত লুক্ক হইবেন। পরগুরাম যেরূপ সমুদায় ক্ষত্রিয়কুল ক্ষয়
করিবেন। এই সময় অবধি (ভারত ভূমিতে) শুত্র রাজা

<sup>\*</sup> নন্দৰৰ্জন ইতি বা প'ঠ।ম্।

চৈকচ্ছত্রামসুলজ্বিত-শাসনো মহাপদ্মঃ পৃথিবীং ভো-ক্ষ্যতি ॥৫॥

তস্যাপ্যকৌ স্কুতাঃ সুমাত্যাদ্যা ভবিতারঃ \*। তস্য চ মহাপদ্মস্যানু পৃথিবীং ভোক্ষ্যতি। মহাপদ্মঃ, তং-পুত্রাশ্চ একং বর্ষশতমবনীপতয়ো ভবিষ্যতি। নবৈব তান্নন্দান কোটিল্যো ব্রাহ্মণঃ সমুদ্ধরিষ্যতি॥১॥

তেষামভাবে মোর্য্যাশ্চ পৃথিবীং ভোক্ষ্যন্তি। কোটিল্য এব চক্সগুপ্তং রাজ্যেইভিষেক্ষ্যতি॥१॥ তস্যাপি পুত্রো বিন্দুসারে। ভবিষ্যতি। তস্যাপি

সিংহাসনার হইবে। উক্ত মহাপদ্ম সম্রাট্ হইয়। সমুদায় পৃথিবী ভোগ করিবেন। তাঁহার আজ্ঞা কুত্রাপি প্রতিহত হইবে না। ° এই নন্দের অটটী পুত্র উৎপন্ন হইবে। এই প্রতাণের নাম স্থমাতা . প্রভৃতি। এই অফ সন্তান, নন্দের পশ্চাৎ পৃথিবী–ভোগ করিবেন। নন্দ ও অফ সংখ্যা নন্দপুত্রগণ, একশত বংসর রাজত্ব করি— বেন। পরে কোটিল্য নামক এক ব্রাহ্মণ, এই নন্দকে ও তৎপুত্র—্দু গণকে সমুলে উন্মূলন করিবেন। °

নন্দবংশের পর মৌর্যাগণ পৃথিবীর অধিপতি ছইবেন। উক্ত কৌটিলাই মেঁর্যা চক্রগুপ্তকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিবেন। চক্রগুপ্তের, ত একটা পুত্র ছইবে, তাহার নাম বিন্দুসার। বিন্দুসার ছইতে,

ক্রমাত্যাল্যা ইতার ক্রমত্যাল্যা ইতি বা পঠনায়ম্।
 । নদের উপপদ্মীর মাম মুরা। এই মুরা হইতেই মের্যি ও মের্টরেয় নাম

ইটয়াছে। এই মুরার গর্ভে চল্রাভাভের জল হটয়াছিল।

অশোকবর্দ্ধনঃ, ততঃ সুষশাঃ -, ততো দশরথঃ, ততঃ সঙ্গতঃ, ততঃ শালিশুকঃ†. তত্মাৎ সোমশর্মা, তত্মাৎ শতধ্যা, তদ্যাপ্যসু বৃহত্তথনামা ভবিতা। এবং মৌর্যা দশ ভূপতয়ো ভবিষ্যন্তি অফশতং সপ্তব্তিংশদুতরম্। তেষামন্তে পৃথিবীং শুকা ভোক্যন্তি ॥৮॥

ততঃ পুষ্পমিত্রঃ সেনাপতিঃ স্বামিনং হত্বা রাজ্যং করিষ্যতি ॥৯॥

অন্যাত্মকোইমিমিত্রঃ, ভসাৎ স্থকোষ্ঠঃ, ততো বহু-মিত্রঃ, তসাদপ্যাত্র কঃ, ততঃ পুলিন্দকঃ, ততো খোষ-বসুঃ, তসাদপি বজুমিত্রঃ, ততো ভাগবতঃ ॥১০॥

অশোকবর্ত্তন, তলোকবর্ত্তন হইতে স্থালা, স্থালা হইতে দলরপ, দলরপ হইতে সঙ্গত, সঙ্গত হইতে লালিশুক (লালিশুক) লালিশুক হইতে সঙ্গতা সেইতে সভ্গতা লালিশুক হৈতে সোমলন্দ্রা সেশমলন্দ্রা হইতে শতধন্ধা, শতধন্ধা হইতে রহজেপ, উৎপন্ন হইবেন। মৌরেরবংশীয় এই দল জন রাজা একলত সপ্তত্তিংলং বংসর রাজত্ব করিবেন। অতঃপর শুক্তাণ পৃথিবীতে রাজা হইবেন। দ্বিরের বংশীর লেষ রাজা রহত্ত্রেরে) সেনাপতির নাম পুলারিত্র। পুলামিত্র আপনার ও,জুকে বিনাল করিয়া রাজ্য করিবেন। পুলামিত্রের পুত্র ছার্মিত্র, অগ্রিমিত্রের পুত্র স্থাজেক, স্থাজেকি, সুজ্যেষ্ঠ হইতে বন্ধমিত্র, বন্ধমিত্র হুইতে আর্জেক, আর্জেক হইতে পুলিক্ষক, পুলিক্ষক

৮। পুर्णामळ ७ जनरः नीरवा एक नत्म अधिहित हहेवा थारकन । ।

<sup>&</sup>gt;। কালিদাস মালবিকামিমিত্রে লিখিয়াছেন, পুপামিত্র স্বরং রাজ্য করেন নাই। তিনি র্হস্রথকে বিনাপ করিয়া খীর পুত্র অমিমিত্রকে সেই রাজ্য অভিবিক্ত করিয়াছিলেন।>

তস্মাৎ দেবভূতিঃ, ইতোতে দশ শুদা দাদশো-ভরং বর্ষশতং পৃথিবীং ভোক্ষান্তি। ততঃ কণুবনষা ভূর্যাস্যতি॥ ১১॥

দেবভূতিন্ত শুঙ্গরাজানং ব্যসনিনং, তব্যৈবামাত্যঃ
কণ্যে বস্থদেবনামা নিপাত্য স্বয়মবনীং ভোক্তা। তং'
পুজো ভূমিমিত্রঃ, তদ্যাপি নারায়ণঃ, নারায়ণদ্য স্থশর্মা,
এতে কাণ্যানাশ্চন্তারঃ, পঞ্চন্তারিংশহর্ষাণি ভূপতয়ো
ভবিষ্যন্তি। স্থশর্মাণং কণুঞ্চ ভূত্যো বলাৎ শিপ্রকনামা
হলা অন্ধ্রজাতীয়ো বস্থাৎ ভোক্ষ্যতি। ততশ্চ ক্ষনামা তদ্ভাতা ভূপতির্ভাবী। তদ্য শ্রীশান্তকর্ণিঃ,

হুইতে ঘোষবস্থা, ঘোষবদু হুইতে বজ্ঞনিত্র, বজ্ঞনিত্র হুইতে ভাগবত, ত ভাগবত হুইতে দেবভূতি উৎপন্ন হুইবেন।
এই দশক্ষন শুলু রাজা একশত দাদশ বৎসর রাজত্ব করিবেন।
অনস্তর পৃথিবী কণুনামক রাজগণের হুত্তগত হুইবে। শুলুরাকা
দেবভূতির মন্ত্রির নাম বস্থদেব। বস্থদেব কণুবংশীয়া তিনি শুলুনবংশীয়া তিনি শুলুনবংশীয়া রাজা দেবভূতিকে বাসনাসক্ত দেখিয়া, বিনাশ করিয়া স্বাং পৃথিবী ভোগ করিবেন। বস্থদেবের পুত্রের নাম ভূমিমিত্র। ভূমিমিত্রের পুত্র নারায়ণ, নারায়ণের পুত্র স্থশর্মা, এই চারি জন কাণায়ন, পঞ্চচত্তারিংশৎ বৎসর রাজ্য করিবেন। কাণুয়ন বংশীয় শেব রাজা স্থান্মার শিপ্রক নামে একটা ভূত্য ছিল। এই শিপ্রক অক্স্তান্তীয়। এই শিপ্রক বলপূর্বক স্থশর্মাকে বিনাশ করিয়া পৃথিবীপতি হুইবেন। তৎপরে কৃষ্ণের পুত্র জ্ঞান্তকর্নি, জ্ঞান্তকর্নির ভাগ্নবর্নির

<sup>&</sup>gt;२ । **लाज** क्षे - - डेल!क्षि । > ३

তদাপি পূর্ণেৎসন্তঃ, তৎপুক্ত লাতকর্ণিঃ, \* তথাচ্চ লয়েদরঃ, তথাৎ দিবিলকঃ,† ততো মেঘস্বাতিঃ, ততঃ পঢ়ুমান্,‡ ততশ্চ অরিষ্টকর্মা, ততো হালঃ, হালাৎ পতলকঃ, ততঃ প্রবিল্লদেনঃ,শ ততঃ স্থুন্দরঃ শাতক্ণী, তথাৎ চকোরঃ শাতকণী গ ১২॥

ততঃ শিবস্বাতিঃ, ততক গোমতীপুত্রঃ, তৎপুত্রঃ
পুলিমান, তস্যাপি শাতকণী শিবজীঃ, ততঃ শিবক্ষঃ,
তসাৎ যজ্ঞ জীঃ, ৷ ততো বিজয়ঃ, ততঃ চন্দ্্রজীঃ, তস্যাপি
পুলোমার্চিঃ, এবমেতে তিংশৎ, চত্বার্য্যকশতানি ষট্-

প্তা পূর্বেশিষ্ট্রক, পূর্বেশিষ্ট্রর পুত্র শাতকর্বি, শাতকর্বির পুত্র লাষোদর, লাষোদরের পুত্র দিবিলক, দিবিলকের পুত্র মেঘস্থাতি, মেঘস্থাতির পুত্র পোচুমান্, (পোটুমান্) পোচুমানের পুত্র অরিষ্ট-কর্মা, অরিষ্টকর্মার পুত্র হাল, হালের পুত্র পজ্তলক, পজ্তলকের পুত্র প্রবিল্লনেন, প্রবিল্লনেনের পুত্র সুন্দর শাতকর্ণীর পুত্র চকোর শাতকর্ণী, ক্র চকোর পাতকর্ণী, ক্র চকোর পুত্র লোকস্থাতি, শিবস্বাতির পুত্র গোমতীপুত্রর পুত্র গোমতীপুত্রর পুত্র গিবক্ষরের পুত্র লিবক্ষরে, লিবক্সজের পুত্র জক্তন্তী, জক্তন্তীর পুত্র বিজয়, বিজয়ের পুত্র চক্রন্তীর স্ত্র জক্তন্তী, জক্তন্তীর পুত্র বিজয়, বিজয়ের পুত্র চক্রন্তীর স্ত্র জক্তন্তী, জক্তন্তির পুত্র বিজয়, বিজয়ের পুত্র চক্রন্তির, চক্রন্তির

<sup>•</sup> শান্তকর্ণিরিভি পাঠান্তরম্।

र जन्मा विवीमिक इंडि वा श्रेमीयम् ।

<sup>ৈ</sup>ততঃ পটুমান্ ইতি কেচিৎ পঠিছি।

बा श्वविनादमम इंडादमा भवेडि ।

६ শাতকণী ইত্যত্ত্ৰ শান্তকণী ইতি পুস্তকান্তরে দৃশ্যতে।

<sup>॥</sup> তন্দাং যক্তধীঃ ইতি পান্চাত্যঃ পাঠঃ।

পঞ্চাশদ্ধিকানি পৃধিবীং ভোক্ষ্যন্তি অন্ধৃত্ত্যাঃ। সপ্তাভীরা দশ গর্দভিলাঃ + ভূভুকো ভবিষ্যন্তি॥১৩॥

ততঃ বোড়শ শকা ভূভুজো ভবিতারঃ। ততশ্চ আফৌ যবনাঃ, চতুর্দ্দশ তুথারাঃ, † মুগুণ্চ ত্রেরাদশ, একাদশ মৌনাঃ, এতে পৃথিবীং ত্রেরাদশ বর্ষশতানি নবনবভাধিকানি ভোক্ষ্যন্তি॥ ১৪॥

ততক্ষ পোরা একাদশ ভূপতয়োহকশতানি ত্রীণি মহীং ভোক্যন্তি॥ ১৫॥

তেরু চ্ছন্নেরু কৈলকিলা যবনা ভূপতরো ভবিষ্যন্তি। মূর্দ্ধাভিষিক্তন্তেষাং বিশ্বাশক্তিঃ॥ ১৬॥

পুত্র পুলোমার্চি, অন্ধৃভ্ত্য নামে বিখ্যাত এই ত্রিশ জন রাজ্য চারি শত পঞ্চাশৎ বৎসর রাজ্য ভোগ করিবেন।

অতঃপর আভীরবংশীয় সাত জন, গর্দাভিল বংশীয় দশ জন রাজা হইবেন। ১০ তৎপরে শকবংশীয় কোল জন রাজা রাজ্য শাসন করিবেন।

তৎপরে আট জন ববন জাতীয়, চতুর্দশ ব্যক্তি তৃথার জাতীয়, ব্রয়োদশ ব্যক্তি মুখ্ত জাতীয়, একাদশ ব্যক্তি মৌনজাতীয় রাজা হইবেন। ই হারা ব্রয়োদশ শত নব নব্তি ১৬৯৯ বৎসর পৃথিবী-ভোগ করিবেন। " অনন্তর পৌরজাতীয় একাদশ সংখ্য রাজা তিন শত বৎসর রাজ্যে প্রতিষ্ঠিত থাকিবেন। "

পৌরগণ কর্ম ভারতবর্ষ ব্যাপ্ত হইলে কৈলকিলা নগরীকাত

ক্যৰ্কভিদা ইভি বা পঠাভাগ্। † ডুখারা ইভাত্র ডুখারা ইভি কেচিং পঠিভ ততঃ পুরঞ্জয়ঃ, ততো রামচন্দ্রঃ, তস্মাৎ ধর্মঃ, ধর্মাৎ
বরাকঃ, রুতনন্দনঃ, স্থানন্দিঃ, \* নন্দিয়া। শিশুকপ্রবীরো চ, এতে বর্ষশতং ষড়্বর্ষানি ভবিষ্যন্তি। ততঃ
তৎপুল্রাঃ ত্রমোদশৈব, বাহ্লীকাশ্চ ত্রয়ঃ, ততঃ পুশ্ননিত্র-পঢ় নিত্র-পদ্মান্তান্ত্রমো † দশ মেকলাশ্চ সপ্তকোশলারন্ত নবৈব ভূপতয়ো ভবিষ্যন্তি। নৈষ্ধান্ত
তাবন্ত এব ভূপতয়ো ভবিষ্যন্তি॥ ১৭॥

মাগধায়াং বিশ্বক্টিকসং জ্বোহন্যান্ বর্ণান্ করি-ষ্যতি। কৈবর্ত্ত-কঢ়ু-পুলিন্দ-ব্রাহ্মণ্যান্ ‡ রাজ্যে স্থাপরি-য্বনগণ রাজা হইবেন। এই য্বনগণের মধ্যে যিনি সম্টি হই-বেন, তাঁহার নাম বিদ্যাশক্তি।

বিদ্ধাপজির পুত্র পুরপ্তার, পুরপ্তার হইতে রাসচন্দ্র, রাসচন্দ্র হইতে ধর্মা, ধর্ম হইতে বরাঙ্গ, বরাঙ্গ হইতে কৃতনন্দন, কৃতনন্দন হইতে সুবিনন্দি, স্থবিনন্দি হইতে নন্দিবশা, নন্দিবশা হইতে শিশুক, শিশুক হইতে প্রবীর উৎপন্ন হইবেন। এই নেয় জন রাজা) এক শত ছয় বৎসর রাজ্য ভোগ করিবেন। জনস্তর এতদংশীয় ত্রয়োদশ ব্যক্তি, পরে বাজ্জীকবংশীয় তিন জন, তৎপরে পুষ্পানিত্র, পাঢ়ুমিত্র (পাটুমিত্র) ও পার্মামত্র, এই তিন ব্যক্তি, তৎপরে মেকল দেশজাত দশ জন, তৎপরে সপ্তকোশলাদেশ-জাত নয় জন রাজা হইবেন। ইহার পর নিষধদেশীয় নয়জন রাজ্য শাসন করিবেন। ১০

শিক্তনন্দিরিভি বাপাঠঃ।
 † পচুইভাত্র কচুইভি.বাপঠনীয়য়ৄ।
 ‡ কচুইভার পচুইভি পাঠাভরম।

যাত্যুৎসাদ্যা**খিলকজ্জাতিম্৷ নব নাগাঃ পদ্যা**বত্যাৎ কান্তিপুর্য্যাং, মথুরায়ামসুগঙ্গাপ্রয়াগং মাগধা গুপ্তাশ্চ ভোক্ষ, তি ৷ কোশলোডু (প্রাড়ক-) তাত্রলিপ্তান্ সমুদ্র-তটপুরীঞ্চ দেবরক্ষিতো রক্ষিয়তি। কলিছ-মাহিষিক-मार्ट्य-(ভोगा ७३१९ (ভाका, खि। रेनशान-रेनिशिय क কালতোয়ান জনপদান মণিধারবংশা \* ভোক্ষান্তি। জ্ঞীর†জ্য-(বৈরাজ-) মূষিক জনপদান্ কনকাহ্বয়া ভো-সৌরাষ্ট্রাবন্তি-শূদানর্ক্ দ-মরুভূমি-বিষয়াংশ্চ বাত্যা দ্বিজাভীর-শূদ্রাদ্যাঃ ভোক্ষ্যন্তি। সিম্মুত্ট-দাৰ্কী-কোৰকী চক্ৰভাগা-কাশ্মীরবিষয়ান্ ব্রাত্যা মুক্ষা-সঙ্কর জাতির হৃষ্টি করিবেন। তিনি নিখিল ক্ষল্রিয়জাতি অর্থাৎ ক্ষত্রিয়বীর্ষ্যে উৎপন্ন বিবিধ জাতি উৎসন্ধ করিয়া কৈবর্ত্ত পঢ়ু (কচু) প্রলিন্দ লাভীয় ব্রাভা ব্রাক্ষণদিগকে রাজ্যে প্রভিষ্ঠিত করি-বেন ৷ তৎপরে নাগবংশীয় নয় জন ভূপতি পদ্মার সন্নিহিত দেশ ও कांखिश्रतीटक, मांगभवरणीटग्रता मधुनाटक धवर श्रुश्वनरणीटग्रता नामा-সন্নিহিত দেশ ও প্রায়াগে রাজত্ব করিবেন। কোশল, উড়, তাম-লিপ্ত ও সমুদ্রতট-সমিহিত দেশসমুদায়ে দেবরকিত রাজা इटेर्रिन। कलिक, माहिषिक ও मर्टिख शर्मा - मिहिरेड प्रभीप রাজগণ, পর্বতের গুহা আত্রয় করিবেন। মণিধারবংশীয় ভূপাল-श्रं, टेनवोम दम्म, टेनिशियक दम्म उ कोलाट्योग्रदम्मत अधिश्वि ছইবেন। কনক নামে বিখ্যাত রাজগণ, জ্রীরাজ্য ( তৈরাজ্য ) ও মুষিক রাক্ষ্যে আধিপত্য করিবেন। ব্রাত্য ব্রাহ্মণ, আভীর, শূদ্র প্রভৃতি হীনবংশীয় ভূপালগণ, সৌরাষ্ট্র অবস্তি শুদ্র অনর্দ্ মরুভূমি প্রভৃতি দেশ-সমুদায়ের শাসনকর্ত্য হইবেন। ব্রাভ্য রেচ্ছ

मिन्यामनश्या इंडि भागे छत्रम् ।

দয়ঃ শূড়াঃ ভোক্ষ্যন্তি । এতে চ তুল্য কালাঃ সর্বে পৃথিব্যাং ভূভূতো ভবিষ্যন্তি । অপ্পথ্য সাদাঃ রহৎ-কোপাঃ সর্বকালমন্তাধর্ম ক্রয়ঃ স্ত্রী-কাল-গো-বধক-ভারঃ পরস্থাদান-ক্রচয়োহপ্প সারাঃ উদিতান্তমিত প্রায়াঃ স্বপোয়ুষো মহেচছা অত্যপ্রধ্যাশ্চ ভবিষ্যন্তি ॥ ১৮ ॥

তৈশ্চ বিমিশ্র। জনপদান্তচ্ছী নবর্তিনো রাজাশ্রয়-শুয়িনো মুক্তাশ্চার্যাশ্চ বিপ্রয়িয়েণ বর্ত্তমানাঃ প্রজাঃ ক্ষপয়িষ্যতি॥ ১৯॥

ততশ্চানুদিনমন্পান্পহ্াসাদ্যবচ্ছেদাৎ ধর্মার্থয়ো-র্জগতঃ সংক্ষেপো ভবিষ্যতি \*॥২০॥

শুদ্র প্রভৃতি ইতর-জাতীয় ভূপালগণ, দিক্ষুতট, দার্লী, কোর্মী চক্রতাগা ও কাশ্মীর-দেশে রাজ্য ভোগ করিবেন।

শেষোক্ত এই সকল ভূপাল এবং যাঁহারা ইহাঁদের সমকালীন রাজা তাঁহারা লোকের প্রতি অপ্প প্রসন্ন হইবেন। তাঁহাদের কোধ অতীব ভীষণ হইবে। তাঁহারা সর্মদাই অন্তত ব্যবহারে ও অধর্মে রত থাকিবেন এবং স্ত্রী বালক ও গো বধ করিতে কুণ্ঠিত হইবেন না। তাঁহারা প্রধন গ্রহণে বিলক্ষণ তৎপর হইবেন। তাঁহাদের সার অতীব অপ্প হইবে। তাঁহারা উদিত হইরাই অস্তমিতপ্রায় হইবেন। তাঁহাদের প্রমায়ু স্বম্প হইবে। তাঁহারা মহতী ইচ্ছা করিবেন। তাঁহাদের ধর্মা অতি অক্প হইবে।

ইহাঁরা যে যে দেশের রাজা, তন্তংদেশীয় জনগণও ইহাঁদের স্বভাব প্রাপ্ত হইবেন। রাজার আশ্রয়ে কখন স্লেচ্জাতি প্রবল, কখন বা আর্যাজাতি প্রবল হইয়া (আধিপতা বিস্তার জনা) প্রজা-ক্ষয় করিবেন। ' স্থানস্তর এই জগতে ধর্ম ও অর্থের দিন দিন

বংক্রো ভবিষ্ঠীতি বা পাঠাওরম্।

ততশ্ব প্রাভিজনহেতুর্দ্দনম্বাশেষ-ধর্মহেতু-রভিক্ষচিরের দাস্পত্যসম্বন্ধহেতুরন্তমের ব্যবহার-জয়হেতুঃ স্ত্রীত্মবোপভোগহেতুঃ রত্নভাশ্রভাগিতৈর পৃথিবীহেতুর ক্ষন্থত্তমের বিপ্রত্বহেতুঃ লিক্ষারণমেবাশ্রমহেতুরন্যায় এব রভিহেতুঃ ॥২২॥

দে বিল্যমেবার্ডিহেতুর্জয়গর্ভোচ্চারণমেব পাত্তি-ত্যহেতুঃ॥২৩॥

দানমেব ধর্মহেতুঃ আত্যতৈব সাধুত্বহেতুঃ ॥২৪॥
স্থানমেব প্রসাধনহেতুঃ স্বীকরণং বিবাহহেতুঃ সদ্ধেশধার্থ্যেব পাত্রং দূরায়াতনোদকমেব তীর্থমিত্যেবমনেকদোষোত্তরে ভূমগুলে সর্ধাবর্ণেষেব যো যো বলবানু

ক্রাস হইরা নিতান্ত স্থানতা হইবে। ' তথন ধনই কেলিনা-জনক, কর্থই ধার্মিকভার পরিচায়ক, অভিক্রচিই দাম্পতা-সম্বন্ধের প্রয়োজক, মিগ্যাই ন্যবহারাধিকরণে জরহেতু, কামিনীই ভোগ্য বস্তু, রতাত্র লোহ প্রভৃতির সন্তাই উত্তম ভূমিত্বের কারণ, যজ্ঞোপবীত ধারণই ব্রাহ্মণজ্বের হেতু, চিহু ধারণই আশ্রম ধর্মের লক্ষণ, এবং অন্যায়াচরণই জীবিকা-নির্বাহের উপায় স্বরূপ হইবে। ২২

সে সময় দুর্বলতাই জীবিকাভাবের হেতু, ভর প্রদর্শনিই পাণ্ডি-ত্যের হেতু, ' দানই ধর্মের কারণ, ধনাচ্যতাই সাধুতার হেতু, ' স্থানই প্রসাধনের হেতু, স্বীকারই দাম্পত্য প্রয়োজক, সুবেশ-ধারী ব্যক্তিই সংপাত্ত ও দূর্ভিত জলই তীর্থ হইবে !

এইরপে ভূমগুলে বহুল দোৰ বন্ধমূল হইলে যে কাতির মুধ্যে যিনি প্রবল ছইবেন, তিনিই রাক্যভোগ করিবেন। রাজগণ



স ভূপতির্ভবিষ্যতি ৷ এবং চাতিলুক্ক-করভারাসহাঃ শৈলা-নামন্তরা দোণীঃ প্রজাঃ সংগ্রেষ্যন্তি, মধু-শাক-মুল-ফল-পত্র-পুজ্পাহারাশ্চ ভবিষ্যন্তি। তরু বল্কল-চীর-প্রাবর-ণাশ্চ তিবত্তপ্ৰাঃ শীতবাতাতপ্ৰৰ্যমহা ভবিষ্যন্তি ৷ ন চ কশ্চিৎ ত্রয়োবিংশতি-বর্ষাণ জীবিষ্যতি। অন-वत्र हो व कि वृह्य का का भाषा है कि वार के विकास का नि ক্ষয়ু পৈষ্যতি ॥২৫॥

শ্রোত সার্ভ-ধর্মে বিপ্লবমত্যন্তমুপগতে ক্ষীণপ্রায়ে চ কলাবশেষ জগৎত্রফুল্চরাচরগুরোরাদিময়দ্যান্তময়স্ত সর্কময়স্য ব্রহ্মময়স্যাত্মস্বরূপিণে ভগবতে বাস্তুদেব-महारणाः मञ्चलवां म- अश्वानवाञ्चल- विक्षणामा शृत् अर्थे-

সাতিশয় লুক হইবে বলিয়া প্রজাগণ বিবিধ করের ভার সহ করিতে না পারিয়া পর্বতের অধিত্যকা আঞায় করিবে। ভাহারা ফল মূল শাক পুষ্প পত্ত মধু প্রভৃতি আহার করিয়া জীবন ধারণ করিবে। ছিল্ল বস্ত্র বা বল্কল তাহাদের বসন ছইবে। তাহারা শীত বাত আতপ রৃষ্টি প্রভৃতি সহ করিবে। তাহাদের অনেক সন্তান হইবে কিন্তু কেহ ত্রয়ে:বিংশতি বং-সরও জীবিত থাকিবে না। এইরপে যথন কলিযুগের শেষ हहेग्रा अफित, ज्थन अधिकाश्म मनुशाहे विगरे हहेता। "

এইরূপে যখন শ্রোত ও স্মার্ত সমুদায় থর্ম বিলুপ্তপ্রায় হইবে ও यथन कलियुश (भव इहेग्र. आंशिर्त, उ९काल, विनि निवित्त জগতের ক্টিকর্ন্তা যিনি স্থাবর জঙ্গম সকলেরই শুরু, যিনি আ'দিময়, (যিনি সকলের আদি কারণ স্বরূপ) যিনি অস্তময় ( যিনি সকলের সংহারকর্ত্ত। ) যিনি সর্বায়র ( যিনি সর্বাভূতের শুণর্দ্ধি-সমন্বিতঃ কল্কিরপী, জগত্যত্রাবতীর্য্য সকলম্মেচ্ছ-দস্মদুষ্টাচরণচেতসামশেষাণামপরিচ্ছিন্ন-মাহাত্ম্য শক্তিঃ ক্ষয়ং করিষ্যতি ॥২৬॥

স্বধর্মের চাথিলং জগৎ সংস্থাপত্নিষ্যতীতি। অনন্ত-রঞ্চাশেষ-কলেরবসানে প্রবৃদ্ধানাং ভেষামেব জনপদা-নামমলক্ষটিক-বিশুদ্ধা মৃত্যেগ ভবিষ্যন্তি ॥২৭॥

তেষাঞ্চ বীজভূতানামশেষমনুষ্যাণাং পরিণতানা-মপি তৎকালক্কতানামপত্যপ্রস্তির্ভবিষ্যতি ॥২৮॥

তানি চ তদপত্যানি ক্লত্যুগধর্মাতুসারীণি ভবিষ্য-ন্তীতি ॥২৯॥

অন্তরাত্মা) যিনি ব্রহ্মসরূপ, যিনি জীবস্বরূপ, সেই বাস্থ্যদেবের সংশাকল্ফি, অনিমা লঘিমা প্রভৃতি অই ঐশ্ব্যা সম্পন হইয়া এই ভূতলে সম্ভল নামক গ্রামবাসী বিষ্ণুয়ুশা নামে বিখ্যাত প্রধান ব্রাহ্মণের গৃহে অবতীর্ন হইয়া সমুদায় লেছে, সমুদায় দুটাচারীদিগকে সংহার করিবেন। তাঁহার শক্তি ও মাহাত্মা কোথাও প্রতিহত বা পরিছিল্ল হইবে না। ২০

এই কৰিক, সমুদায় লোককেই স্ব স্ব ধর্মে স্থাপন করিবেন।
এইরপে যখন নিঃশেষরপে কলিমুগের অবসান হইবে, তথন
অবশিষ্ট মানবগণ (মোহনিম্রার অবসানে) প্রবুদ্ধের ন্যায়
হইবে। তৎকালে তাহাদের বুদ্ধি নির্মাল স্ফটিকের ন্যায় বিশুদ্ধ
হইয়া উঠিবে। ২০ এই সময় বীজস্বরূপ যে সকল মনুষ্য জীবিত
থাকিবেন, তঁ:হারা যদিও পরিণতবয়ক্ষ, তথাপি তৎকালে
তঁ:হাদের যে সকল সন্তান হইবে, তাহারা সেই সময়ের উপযুক্ত
হইয়া উঠিবে। ২০ এ সকল সন্তান স্তান স্বত্যযুগের ধর্মানুসারী হইবে। ২০

#### অত্যোচ্যতে।

যদা চল্দ্রদ সূর্য্যান্ট তথা তিষ্য-রহস্পৃতী।
একরাশো সমেষান্তি ভবিষাতি তদা রুত্তম্ ॥৩০॥
অতীতা বর্ত্তমানান্ট তথৈবানাগতান্ট যে ।
এতে বংশেষু ভূপালাঃ কথিতা মুনিসত্তম ॥৩১॥
যাবৎ পরিক্ষিতো জন্ম যাবন্ধনাভিষেচনম্।
এতদ্বর্ষসহজ্ঞন্ত জ্ঞেরং পঞ্চদশোত্তরম্ ॥৩২॥
সপ্তর্থীণাঞ্চ যৌ পুর্বে দৃস্যেতে উদিতো দিবি।
তয়োস্ত মধ্যনক্ষত্রং দৃশ্যতে যৎ সমং নিশি ।
তেন সপ্তর্থরো যুক্তান্তিষ্ঠন্ত্যকশতং নৃণাম্ ॥৩৩॥
তে তু পারিক্ষিতে কালে মঘাস্বাসন্ দ্বিজোত্তম।

এ বিষয়ে একটা শ্লোক আছে। যথা—যে সময় চক্স, স্ব্যা ও বৃহদ্পতি, এক রাশিতে থাকিয়া পুষা নক্ষত্রে মিলিভ হইবেন, সেই সময় সভ্য যুগের আবির্ভিব হইবে। °°

মহর্বে! চত্রবংশ সূর্য্বংশ প্রভৃতি বংশে যে সকল রাজা উংপন্ন হইয়াছিলেন, বা হইয়াছেন অথবা হইবেন, তাঁহাদের সকলের বিবরণ কীর্ত্তন করিলাম। ° রাজা পরিক্রিতের জন্ম অবধি, নন্দের রাজ্যাভিষেক পর্যন্ত, এই ১০১৫ এক সহস্র পঞ্চ-দশ বৎসর (বিশুদ্ধ ক্ষজ্মিয় জাতিই রাজ্য শাসন করিবেন।) ° ১

সপ্তর্ষিমগুলের পূর্ম দিকে যে দুইটা নক্ষত্র দেখিতে পাওয়া যায় (ভাহাদের নাম পুলহ ও ক্রতু।) এই দুই নক্ষত্রকে (অধিনী প্রভৃতি) যে কোন নক্ষত্রে অবস্থান করিতে দেখা যায়, সেই ক্লক্ষত্রেই সপ্তর্ষিশুল সৌর একশত বৎসর অবস্থান করেন। °° তদা প্রতশ্চ কলিছ দিশাকশতাত্মকঃ ॥৩৪॥
যদৈব ভগবছিকোরংশো যাতো দিবং ছিল।
বস্তদেবকুলোক্ত্ তস্তদৈব কলিরাগতঃ ॥৩৫॥
যাবৎ স পাদপদ্মাভ্যাং পদ্পর্শেমাং বস্তম্বরাম্।
তাবৎ পৃথীপরিষকে সমর্থো নাভবৎ কলিঃ ॥৩৬॥
গতে সনাতনস্যাংশে বিক্ষোন্তত্ত্ব ভুবো দিবম্।
তত্যাক সামুজো রাজ্যং ধর্মপুলো যুধিষ্ঠিরঃ ॥৩৭॥
বিপরীতানি দৃষ্ঠা চ নিমিত্তানি স পাগুবঃ।
যাতে ক্ষে চকারাথ সোহভিষেকং পরিক্ষিতঃ॥৩৮
প্রাস্যন্তি যদা চৈতে পূর্বোষাঢ়াং মহর্ষয়ঃ।

ৰিজবর! রাজা পরিক্ষিতের রাজত্ব সময়ে সপ্তর্ষিত্রল মঘা নক্ষত্রে ছিল। তাহার দাদশ শত বংসর পূর্বে কলি প্রবন্ধ হইয়াছে। (এই দাদশ শত বংসর কলির সক্ষ্যা বলিয়া কথিত হইয়া থাকে।) °°

ব্রহ্মন্! যাদবকুলে সমুৎপন্ন ভগবান্ বিফুর অংশ কৃষ্ণ, যে
সময় স্থর্গে আরোহণ করিলেন, সেই সময় অবধি কলির প্রাদ্দ ভাব হইয়াছে। ত (ভগবান্ ক্ষেত্রের আবির্ভাবের সময় যদিও । কলিযুগ প্রব্রন্ত হইয়াছিল, তথাপি) তিনি যে সময় পর্যন্ত পাদপত্ম ভারা পৃথিবী কার্শ করিয়াছিলেন, সে সময় পুর্যান্ত কলি, পৃথিবীতে বন্ধমূল হইতে পারে নাই। ত সনাভন বিষ্ণুর অংশ কৃষ্ণ, ভূলোক হইতে দেবলোকে গমন করিলে ধর্মপুত্র সুধিন্তির, কনিষ্ঠ আহৃবর্ণের সহিত রাজ্য পরিভাগি করিয়া-ছিলেন। ত কৃষ্ণ স্থর্গে গমন করিলে ঐ পাঞ্চুনক্ষন যুধিন্তির, (দুর্নি-মিন্ত ও) সমুদায় বিপরীত লক্ষণ দেখিয়া রাজকুমার পরিক্ষিতকে . তদা নন্দাৎ প্রভূত্যে কলির দিং গমিষ্যতি॥৩৯॥

যিন্দান্ ক্ষাে দিবং যাতস্তান্মন্নেব তদাহনি ।
প্রতিপন্নং কলিয়ুগং তক্ত সংখ্যাং নিবােধ মে॥৪০॥
ক্রীণি লক্ষাণি বর্ষাণাং দিজ মান্ত্রসংখ্যায়।
যাইকৈব সহস্রাণি ভবিষ্যত্যেষ বৈ কলিঃ॥৪১॥
শতানি তানি দিব্যানি সপ্ত পঞ্চ চ সংখ্যায় ।
নিঃশেষেণ তত্ত্বন্মিন্ ভবিষ্যতি পুনঃ ক্রতম্ ॥৬২॥
বাক্ষাণাঃ ক্ষজিয়া বৈশ্যাঃ শৃদাশ্চ দিজসত্ম ।
যুগে যুগে মহাত্মানঃ সমতীতাঃ সহস্রশঃ॥৪৩॥
বহুত্মান্মধেয়ানাং পরিসংখ্যা কুলে কুলে ।

রাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন। তি যে সময় এই সপ্তর্ষিমপ্তল পূর্বা–
বাঢ়া নক্ষত্রে গমন করিবে, সেই সময় নক্ষ সিংহাসনে আরোহণ
করিবেন, সেই সময় অবধি কলি রুদ্ধি প্রাপ্ত হইবে। তি যে সময়
যে দিবস কৃষ্ণ, স্বর্গারোহণ করিলেন, সেই সময় সেই দিবসই
কলির প্রাদ্ধি দৃষ্ট হইয়াছে। এক্ষণে কলিযুগের বৎসরসংখ্যা
বলিতেছি, প্রাণ কর। তি

ব্রহ্মন্! (সন্ধাণি সন্ধাংশ সমেত) এই কলিযুগ মনুষ্যদিগের তিন লক্ষ ষষ্টি সহস্র বৎসর পর্যান্ত স্থান্নী হইবে। ° দিব্য বৎসর অনুসারে ইহার পরিমাণ দাদেশ শত বৎসর। এই কাল সম্পূর্ণ-রূপে অতীত হইলে পুনর্ঝার সত্যযুগের আবির্ভাবন্দিইবে। ° ২

ছিল শ্রেষ্ঠ ! যুগে যুগে সহস্র সহস্র মহাত্মা ব্রাহ্মণ, ক্ষতিয়, বৈশ্য ও শূদ্র, অতীত হইয়াছে। "ত তাঁহাদের মধ্যে যে যে ব্যক্তি যে যে বংশে জন্ম পরিশ্রহ করিয়াছিলেন, তাঁহাদের নাম ও সন্ধ্যা পুনরুক্ত-বছত্বাতু ন ময়া পরিকীর্ত্তিতা ॥৪৪॥
দেবাপিঃ পৌরবো রাজা মরুশ্চেক্ষ্বাকুবংশভঃ ।
মহাযোগবলোপেতৌ \* কলাপগ্রামসংশ্রমৌ ॥৪৫॥
রুতে যুগ ইহাগত্য ক্ষত্রপ্রাবর্ত্তকা হি তৌ ।
ভবিষ্যতো মনোর্কংশে বীজভূতো ব্যবস্থিতৌ ॥৪৬॥
এতেন ক্রমযোগেন মনুপুলুর্ক্রেম্বরা ।
রুত্তেভাদিসংজ্ঞানি যুগানি ত্রীণি ভুজ্যতে ॥৪৭॥
কলো তু বীজভূতান্তে কেচিৎ তিষ্ঠন্তি ভূতলে ।
যথৈব দেবাপি মরু সাম্পতং সমবস্থিতো ॥৪৮॥

কীর্ত্তন করিতে হইলে অনেক বাহুল্য হয় ও অনেক পুনরুক্তি হইয়া পড়ে, এই জন্য আমি তৎসমুদায় কীর্ত্তন করিলাম না। ""

পুরু বংশীয় রাজা দেবাপি এবং ইক্ষ্বাকু বংশীয় রাজা মরু,
ইহঁারা দুইজন মহাযোগ বলে কলাপ গ্রামে অবস্থান করিনেছেন। <sup>৪</sup> যথন সভাযুগ আরম্ভ হইবে, তখন তাঁহারা নগরীতে
আসিয়া ক্ষল্রিয়বংশের প্রবর্ত্তক হইবেন। এই দুই জন রাজা, ভাবী
মনুবংশের বীজস্বরূপ রহিয়াছেন। <sup>৪৬</sup> মনুপুত্রগণ, এইরূপ ক্রম
অনুসারে সভা ত্রেভা দ্বাপর, এই তিন যুগেই পৃথিবী ভোগ
করিয়া আসিতেছেন। <sup>৪৭</sup> সম্প্রতি যেমন দেবাপি ও মরু যোগ
অবলম্বন করিয়া লবস্থান করিতেছেন, সেইরূপে এতদংশীয়
কোন কোন রাজা কলিকালো (ভাবী সভাযুগের) বীজ স্বরূপ
হইয়া ভূতলে অবস্থান করেন। <sup>৪৮</sup>

এই ভোষার নিকট রাজগণের বংশ সংক্ষেপে কীর্ত্তন করিলাম।

मोद्रारयोगवरनारभरको ইতি পাঠান্তরম্।

এব ভূদেশতো \* বংশন্তবৈজি ভূভুলাং ময়া ।
নিথিলো গদিতুং শক্যো নৈব জন্মশতৈরপি ॥৪৯॥
এতে চান্যে চ ভূপালা থৈরত ক্ষিতিমগুলে ॥
কৃতং মমত্বং মোহাকৈনিত্যেহনিত্যকলেবরৈঃ ॥৫০
কথং মমেয়মচলা মৎপুক্তস্ত কথং মহী ।
মদংশস্তেতি চিন্তার্তা জগুরুত্তমিমে নৃপাঃ ॥৫১॥
তেভ্যঃ পূর্ব্বতরাশ্চান্যে তেভ্যন্তেভ্যন্তথাপরে ।
ভবিষ্যাশ্চৈব যাস্যন্তি তেষামন্যে চ যেহপার ॥৫২॥
বিলোক্যাত্মজ্বোদ্যোগ-যাত্রাব্যগ্রান্ নরাধিপান্।

সমুদায় বিভারিত রূপে কীর্ত্তন করিতে হইলে শত জন্মেও সমাপ্তি হয় না। ° উল্লিখিত সমুদায় ভূপতিগণ ও অনুলিখিত অনাবা সমুদায় ভূপতিগণ, স্বয়ং ক্লাধ্বংসী দেহ ধায়ণ করিয়াও মোহাদ্ধ হইয়া কল্পান্তভায়ী এই পৃথিবী মঞ্জলে অতীব মমতা প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন। ° এই পৃথিবী কিরূপে আমার, আমার পুত্রের ও আমার বংশীয়দিগের সম্বন্ধে অচলা হইয়া থাকিবে, এইরূপ চিন্তা করিতে করিতেই এই সমন্তরাজা বিলয় প্রাপ্ত হইয়াত্রেন, গাঁহারা তাঁহাদের ও তাঁহাদের পূর্বেরাজ্য ভোগ করিয়াছেন, গাঁহারা তাঁহাদের ও তাঁহাদের পুর্বেরাজ্য ভোগ করিয়াছেন, এবং যে সকল রাজা ভবিষ্য কালে পৃথিবী শাসন করিবেন, যে সকল রাজা উক্ত ভবিষ্য রাজগণের পরেও রাজা হইবেন, তাঁহারাও এরূপ চিন্তা করিতে করিতে মানবলীলা সংবরণ করিবেন। ° ২

বসুন্ধরা শরৎকালে ভূপালগণকে আপন আপন জয়ের নিমিস্ত

<sup>\*</sup> এय : प्रमाण देखि वा श्रेमीसम् ।

পুষ্পথাহালৈঃ শরদি হসতীব বস্তুদ্ধরা ॥৫৩॥ মৈত্রেয় পৃথিবী–গীতা-শ্লোকাশ্চাত্র নিবোধ তান্। যানাহ ধর্মপ্রজিনে জনকায়াসিতো মনিঃ॥৫৪॥ পৃথিবু;বাচ।

কথমেষ নরেন্দ্রাণাং মোহো বুদ্ধিমতামপি ।
যেন কেনসধর্মাণোহপ্যতিবিশ্বস্তচেতসঃ ॥৫৫॥
পূর্ব্বমাত্মদ্বয়ং রুত্বা জেতুমিচ্ছন্তি মন্ত্রিণঃ।
ততে ভূত্যাংশ্চ পৌরাংশ্চ জিগীষন্তে তথারিপূন্॥৫৬
ক্রমেণানেন জেষ্যামো বয়ং পৃথীং সসাগরাম্।
ইত্যাসক্তধিয়ো স্তুং ন পশ্যন্ত্যবিদূরগম্॥ ৫৭॥

উদ্যোগ ও যুদ্ধবাত্রায় ব্যগ্র দেখিয়া পুষ্পবিকাস দ্বারা যেন হাস্যই করিয়া থাকে। °° মৈত্রেয়! এ ছলে পূথিবী-গীতার কএটী শ্লোক বলিতেছি. প্রবণ কর। মহর্ষি অসিত, ধর্মপরায়ণ ক্লাকের নিকট এই সমস্ত শ্লোক কীর্ত্তন করিয়াছিলেন। °°

পৃথিবী কহিলেন। রাজগণ বুদ্ধিমান্ ইইয়াও কিজনা ঈস্তুশ মোহে অভিভূত হন যে, তাঁহারা জল-বুদ্দের ন্যায় ক্ষণধংসী হইয়াও (আপনাদিগকে চিরজীবীর ন্যায়) বিশ্বাস করেন। ৫৫ তাঁহারা প্রথমতঃ আত্মজয় করিয়া মন্ত্রিগণকে জয় করিতে ইচ্ছা করেন। পরে ক্রমশঃ ভৃত্যগণকে পৌরগণকে ও পরিশেষে শক্ত-গণকে জয় করিতে অভিলাষ করিয়া থাকেন। ৫৫ তাঁহারা বিবেচনা করেন, আমরা এই রীতিক্রমে ক্রমে ক্রমে স্সাগরা বস্থজ্বা পরাজয় করিব। তাঁহাদের অস্তঃকরণ নিরস্তর এইরপ চিন্তায় আসজ্জ থাকাতে তাঁহারা জানিতে পারেন না যে, মৃত্যু

সমুদ্রবিরণং যাতি মন্মগুলমধো বশম্ ।
কিয়দাত্মজাদেতমু জিরাত্মজারে ফলম্ ॥ ৫৮॥
তিংস্জ্য পূর্বজা যাতা যাং নাদার গতঃ পিতা ।
তাং মমেতি বিমূদ্ত্বাৎ জেতুমিচ্ছ ন্তি পার্থিবাঃ ॥৫৯॥
মংক্তে পিতৃপুত্রাণাং ভ্রাতৃণাঞ্চাপি বিএছাঃ † ।
জায়ন্তেইত্যন্তমোহেন মমতাধ্তচেত্সাম্ ‡ ॥৬০॥

পৃথী মমেয়ং সকলা মমৈষ। মমান্ত্রস্যাপি চ সাশ্বতেয়ম্।

তাঁহাদের নিকটবর্জী হইতেছে। " আত্মজয় হইতে যদি ক্রমশ সমুদ্রাবরণা পৃথিবী বশতাপন্ন হয়, তাহা হইলে ত ইহা সামান্য ফল লাভ হইল, কারণ আত্মজয়ের অপর ফল পরম-পুরুষার্থ মুক্তি। (যোগীর ন্যায় আত্মজয় করিয়া অনিত্য বিষয় স্পৃহা থাকাতে আত্মজয়ের প্রধান ফল পরম পুরুষার্থ মুক্তিতে বঞ্চিত হওয়া সামান্য নির্কোধের কর্মনহে।) "

পূর্বাপুরুষণণ যে পৃথিবী পরিত্যাগ করিয়া গিয়াছেন, পিতাও যাহা লইয়া যাইতে সমর্থ হন নাই, রাজগণ মূঢ়তা হেতু সেই পৃথিবীকেই জয় করিতে ইচ্ছা করেন ও আমার আমার বলিয়া অভিমান করিয়া থাকেন। " আমার অর্থাৎ এই পৃথিবীর নিমিন্ত পিতার সহিত, পুত্রের সহিত ও আভ্গণের সহিত মহাবিরোধ উপস্থিত হয়। ইহার কারণ সাতিশয় মোহ ও মমতা ভিন্ন আমার কিছুই লক্ষিত হয় না। "

যে যে রাজা এই পৃথিবীতে কিছুকাল রাজ্য ভোগ করিয়া

<sup>\*</sup> উৎস্কা পুর্বকাতা যাং যাং নালার গতঃ পিতা ইতাপি পাঠঃ।

<sup>া</sup> আতৃণাং চাভিবিগ্ৰহাঃ, ইভি বা পাঠঃ।

रं भगवा मृख दहल जाम् इं जि अवेगी सम्।

যো যো হতো হ্য বস্থ রাজা
কুবুদ্ধিরাদীদিভি তস্য তস্য ॥ ৬১ ॥
দৃষ্ট্বা মমত্বাদৃতচিত্তমেকং \*
বিহায় মাং মৃত্যুপথং ব্রজন্তম্ ।
তস্যাস্থাস্থ কথং মমত্বং
হৃদ্যাস্পাদং মংপ্রভবং করোতি ॥ ৬২ ॥
পৃথ্বী মনৈষাশু পরিতাজৈনাং
বদন্তি যে দূতমুথৈঃ স্বশক্রম্ ।
নরাধিপান্তেষু মমাতিহাসঃ
পুনশ্চ মুঢ়েষু দ্য়াভ্যুপৈতি ॥৬৩॥

পশ্চাৎ কাল কবলে পতিত হইয়াছেন, তাঁহাদের সকলেরই এইরূপ দুর্বুদ্ধি হইয়াছিল যে, এই পৃথিবী আমারই অধিকৃত,
ইহাতে অন্য কাহারে। অধিকার নাই এবং ইহা আমারই বংশীয়দিগের হতে দ্বিত্রর রূপে নিহিত থাকিবে। " এক ব্যক্তি
আমার জন্য মমতাকৃত-হাদয় হইয়া পশ্চাৎ আমাকে (পৃথিবীকে)
পরিত্যাগ পূর্বক মৃত্যুমুখে পতিত হইতেছে, ইহা দেখিয়াও
তবংশীয় অপর ব্যক্তির হাদয়ে অস্মৎসন্ধ্রীয় মমতা কিপ্রকারে
স্থানপ্রাপ্ত হয়, (বুঝিতে পারি না।) " যে সকল মৃঢ় ভূপতি,
দূত-মুখ্যারা বিপক্ষ ভূপতিকে এই কথা বলে যে, এই পৃথিবী
আমারই অধিকৃত, তুমি শীঘু ইহা পরিত্যাগ কর, তাহাদের
কথায় আমার হাস্যের উদয় হয় এবং তাহাদের প্রতি দ্য়াও
উদিত হইয়া থাকে। ""

<sup>🕈</sup> মগৰাপ্ত চিত্তখেকণ্ ইভি বা পঠনীরং।

#### পরাশর উবাচ।

ইতেতে ধরণীগীতা-শ্লোকা মৈত্রেয় ! বৈঃ আইছেঃ।
মনত্বং বিলয়ং যাতি তাপনান্তং যথা হিনম্ ॥৬৪॥
ইত্যেষ কথিতঃ সম্যঙ্মনোর্বংশো ময়া তব।
যত্র ছিতিপ্রর্ত্তম্য বিফোরংশাংশকা নৃপাঃ,॥৬৫॥
শৃণ্যাদ্য ইমং ভক্ত্যা মনুবংশমনুক্রমাৎ।
তদ্য পাপমশেষং বৈ প্রণশ্যত্যমলাত্মনঃ। ৬৬॥
ধনধানার্দ্ধিমতুলাং প্রাপ্রোভ্যমলাত্মনঃ। ৬৬॥
শেশ্ব্রমখিলং বংশং প্রশন্তং শশিস্থ্যিয়োঃ॥৬৭॥
ইক্ষাকুজকু মান্ধাত্-সগরাবিক্ষিতান্ রঘূন্।
যযাতি-নত্রাদ্যাংশ্চ জ্ঞাত্বা নিষ্ঠামুপাগতান্।

পরাশর কহিলেন। মৈত্রেয়! এই সমুদায় ধরণী-গীতার শ্লোক (তোমার নিকট কীর্ত্তন করিলাম।) ইহা শ্রুবণ করিলে, উফ বস্তুর উপর নিহিত হিমের ন্যায়, সমুদায় মমতা দূর হইয়া যায়। ৬৫ এই আমি তোমার নিকট সমুদায় মনুবংশ কীর্ত্তন করিলাম। এই বংশে যে সকল রাজা জন্মপরিশ্রহ করিয়া— ছিলেন, তাঁহারা পালন কার্য্যে প্রেক্ত বিফ্র অংশ স্করপ। ৬৫

যিনি ভজিপূর্বক আনুপূর্বিক এই মনুবংশ শ্রাণ করেন, তাঁহার অন্তঃকরণ নির্মাল হয় ও তাঁহার সমুদায় পাপপুঞ্জ কর হইয়া থাকে। " প্রাণস্ত সূর্য্যবংশ ও চক্রবংশ সমুদায় শ্রাবণ করিলে মানবগণ অব্যাহতে জ্ঞিয় হইয়া ধন ধান্য প্রভৃতি অতুল ঐশ্র্য্যের অধীশ্বর হয়। "

ইক্ষুক্, জহু, মাস্কাতা, সগর, অণিক্ষিত, রঘু, যথাতি, এত্ব প্রভৃতি রাজগণ সকলেই কালকবলে পতিত ইইয়াছেন। এই মহাবলান্ মহাবীগ্যাননন্তধনসঞ্চান্।
কৃতান্ কালেন বলিনা কথাশেষান্ নরাধিপান্।
শ্রুলা ন পুজ্রদারাদৌ গৃহক্ষেত্রাদিকে তথা
দ্রব্যাদৌ চ কৃতপ্রস্তো মমত্বং কুরুতে নরঃ॥৬৯॥

ভপ্তং তপো যৈঃ পুরুষপ্রবীরেরুদান্ততির্বর্ষগণাননেকান।
ইন্টাশ্চ যজ্ঞা বলিনোইতিবীর্যাঃ
রুতান্ত কালেন কথাবশেষাঃ ॥৭০॥
পৃথুঃ সমস্তান্ প্রচার লোকান্
অব্যাহতো যোইরিবিদারি-চক্রঃ।
সকালবাতাভিহতো বিন্টঃ
ক্রিপ্তং যথা শালুমলিতুলম্যো ॥৭১॥

সকল রাজা মহাবল ও মহাবীর্য ছিলেন। ইঁহারা অসঙ্য ধনসঞ্য করেন। বলবান্ কাল, এই সকল রাজাকেও নামমাত্রাবশেষ করিয়াছে। জ্ঞানবান্ ব্যক্তি এই সকল রাজার বিবরণ শ্রেবণ করিয়া ও জ্ঞাত হইয়া জ্ঞীপুত্র প্রভৃতিতে, পরিজনবর্গে এবং ক্ষেত্র প্রভৃতি দ্রব্য সমুদায়ে মমতা করেননা।

যে কল মহাপুরুষ, উর্জুবাহু হইয়া বছবৎসর পর্যান্ত তপোত্র-ঠান করিয়াছিলেন, যাঁহারা বছসঙ্য যজের অনুঠান করিয়া-ছেন, অভিশয় বলবান্ অভিশয় বীর্যাশালী সেই সমস্ত ব্যক্তিও কালক্রমে নাম-মাত্রাঝশেষ হইয়াছেন। ত যাঁহার চক্র শক্রগণকে বিদারিভ করিত, যিনি অব্যাঘাতে সমুদায় লোকে বিচরণ করিতেন, সেই পৃথুও, যেমন অগ্নিতে নিক্ষিপ্ত যঃ কার্ত্তবীর্য্যো বুভুজে সমস্তান্
দ্বীপান্ সমাক্রম্য হতারিচক্রঃ।
কথাপ্রসঙ্গে অভিধীয়মানঃ
স এব সঙ্কপ্প-বিকপ্পেহেতুঃ॥ ৭২॥
দশাননাবিক্ষিতরাঘবাণানৈশ্ব্যামুদ্ধাসিতদিঙ্ মুখানাম্।
ভস্মাপি জাভং ন কথং ক্ষণেন
জ্রুজপাতেন ধিগন্তকস্য॥ ২৩॥
কথাশরীরত্বমবাপ যদৈ
মান্ধাত্নামা ভুবি চক্রবর্ত্তা।

শাল্নিলি-জুলা নউ হয়, তাহার ন্যায় কা**ল্**রপ প্রনদ্ধারণ অভিহত হইয়া বিন**উ** হইয়াছেন।<sup>৭১</sup>

যে কার্ত্ত নির্মা অর্জুন, সমুদায় দীপ আক্রমণ পূর্বক শক্রমণ্ডলী সংহার করিয়া রাজ্য ভোগ করিয়াছিলেন, একণে কথা
প্রসঙ্গে তাঁহার নাম কীর্ত্তিত হইলে তিনি সঙ্কণপ ও বিকল্পের
ক্রেত্ত্বন অর্থাৎ কেহ কেহ প্রত্যায় করেন যে, কার্ত্তবীর্যা নামে
ক্রেক্সন রাজা ছিলেন, কেহ বা বলেন যে, কার্ত্তবীর্যা নামে কোন
ভূপতি ছিলেন কি না > সন্দেহস্থল। দি দুগুল উদ্বাসিত
প্রভৃতি ভূপালগণ, যে অতুল ঐশ্ব্যদারা দিঙাগুল উদ্বাসিত
করিয়াছিলেন, সেই ঐশ্ব্যতি, কালের জ্রভঙ্গদারা অল্পকালমধ্যেই
ভন্মীভূত হইয়া গিয়াছে অত্রব (ক্রণবিধংসী ইন্তল) ঐশ্ব্য্যা
ধিক্। প্রতি পুথিবীতে মাদ্ধাতা নামে যে সম্বাট্ ছিলেন,
ক্রেক্সণে তাঁহার ক্রেকল কথামাক্র অবশিক্ট রহিয়াছে। পরস্ক কোন্

শ্রুত্বাপি তং কোহপি করোতি সাধুশ্ব্যুত্বসাত্মন্যপি সন্দচেতাঃ ॥৭৪॥
ভগীরখাদ্যাঃ সগরঃ ককুৎস্থাে
দশাননাে রাঘবলক্ষাণাে চ।

যুধিষ্ঠিরাদ্যাশ্চ বভূবুরেতে
সত্যং ন মিখ্যা ক সু তে ন বিদ্যঃ॥৭৫॥
যে সাম্পুতং যে চ নূপা ভবিষ্যাঃ।
যে তে তথান্যে চ তথাভিধেয়াঃ
সর্বে ভবিষ্যন্তি যথৈব পূর্বে ॥৭৬॥
এতদ্বিদ্যা ন নরেণ কার্যাং
সমত্মাত্মন্যপি পণ্ডিতেন।

সাধু ন্যক্তি এক্ষণে ঈছণ মন্দমতি আছেন যে, ঐ মান্ধাতার উপা-খ্যান শ্রেণ করিয়া স্ত্রীপুত্রাদির প্রতি, এমন কি আপনারও প্রতি, মমতা প্রকাশ করিতে পারেন। <sup>১৪</sup>

ভগীরথ, সগর, করুৎস্থ, দশানন, রাম, লক্ষ্মণ যুধি জির প্রভৃতি অনকেই মহীপতি হইয়াছিলেন, সত্য, এ কথা মিগ্যা নহে, কিন্তু জাঁহারা যে এক্ষণে কোথায়, তাহা আমরা কিছুই জানি না। । । বিদ্ধান্দের জাঁহারা যে এক্ষণে কোথায়, তাহা আমরা কিছুই জানি না। । । বিদ্ধান্দের গুলি বিশ্ব বাজা এক্ষণে রাজা শাসন করিতেছেন, যাঁহারা পরে পৃথিবীর রাজা হইবেন, এবং যে সকল রাজার নাম উল্লিখিত হয় নাই, সেই সকল মহাবীর্য্য ভূপতিগণও সকলেই কালক্রেম পূর্ব্য ভূপতিগণের ন্যায় নামমাত্রাবশেষ হইবেন। । ৩ এই সমুদার বিষয় জ্ঞাত হইলে পঞ্জিত ব্যক্তি, পুত্র কন্যা ক্ষেত্র

তিষ্ঠন্ত তাবত্তনয়াপ্মনাদ্যাঃ
ক্ষেত্রাদয়ো যে তু শরীরতোহন্যে ।৭৭॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণে চতুর্থে হ্ণশে

চতুর্বিণিশোহধ্যায়ঃ ।।

সমাপ্তশ্চায়ং চতুর্থোইংশ

্ প্রভৃতি বাহ্য বস্তুর প্রতি মমতা প্রকাশ করা দূরে থাকুক, আপনার অন্ত্রতিও মমতা করেন না। <sup>১১</sup>

> বিষ্ণুপুরাণ চতুর্থ অংশ চতুর্বিংশ অধ্যায় সমাপ্ত।

> > চতুর্থ অংশ সমাগু

# বিষ্ণুপুরাণ্টীকা।

# চতুর্ধোহংশঃ।

#### श्रथमां भागः ।

তত্র তাবং "অদিতির্গ্রনাই দক্ষনা দুহিতা তাং দেবা অমুকায়ন্ত" ইত্যাদি-শুভিনিজাং বংশামুপ্রমানিং, ব্রহ্মণ্টেডি। দক্ষরা
অদিতিঃ, কন্যেতি শেবঃ। নাজাগনেদিইেজি, নাজাগনা পিজা
নেদিই ইত্যাধঃ। কচিমেদিইটোর দিইঃ ইত্যাপি সংজ্ঞা। ৫।
ইন্টিং পুত্রোৎপজ্ঞে পূর্বনেব চকার। বথাই বায়ুঃ "অকরোৎ পুত্রকামস্ত মনুরিন্টিং প্রজ্ঞাপতিঃ। অমুৎপ্রেছ্ নবস্থ পুত্রেভিত্র
হবত।" ইতি। ৬। স্ব্রায়ন্য প্রথমং কন্যাদ্ধাৎ রাজ্যান্ত স্ক্
ক্রিয়াহ, তত্র তন্মিন্ কর্মণি মনুপদ্যা ক্রার্থং প্রাধিত্রনা
হহাতুরপচারাৎ কন্যান্ত্রপর্নাদপহতে বিক্রিপা কাডে স্কি

-

কনাজৃৎ। অপকৃতেরিতি পাঠে অপকৃতাৎ হোমাজেতোরিত্যর্থঃ ॥१॥ ঈশ্বরকোপাদিভি, মহাদেবঃ কিল ইলারতে পার্রত্যা
মূহ রমনাণঃ কেনচিলিনিজেনাশপৎ, যোহশ্মিন্ বনে প্রবেক্যাতি, স যোবিস্কৃথিব্যতীতি। স্ব্যুস্তত্তং শাপমনানন্ তত্ত
প্রবিক্তো বোবিশ্বভূবেতি । ৮ । তত্তাং জিয়াং পুর্রবসমূৎপাদ্রামানেত্যতঃ সূর্ব্যবংশ্ঞব চক্রবংশসমূদ্ধবঃ স্চিতঃ ॥ ৯॥

ভিশাংশ লাভত পরমর্বিভির্গবান্ যথাবদিউঃ, ব্যবহারত ইট্যা-पिषयः वस्तुक्षिण्ययः । >० । जीशृक्षक्षां शृक्षः जीषा-षिठार्थः । ১२ । প्रथमानि ताकानिर्घः धनकामार, श्रेय ইতি ৷ বলিষ্ঠেন গোরকণে নিৰুক্তো রাত্রো ব্রকে প্রবিটং বাাঘুং कियां मृद्ध ध्वाहार गार क्यांत्रिक श्ववना मक्षः मृख्यमवाल-ভাर्यः । ১७॥ अञ शांठेक्या न विविक्तिष्ठः, मृहीकरोहनार्गात्रनां-পাসা পূৰ্ব্বৰ্ণাদিতাত আহ, ককুৰাদিতি I ১৪ I নেদিউপুৱো> নাভাগে। বৈশাভাংশভা। "নাভাগে। দিউপুতোহনাঃ কর্মণা বৈশ্যভাং গভঃ" ইতি শুকোক্তেঃ। ১৫। তদ্য চ পুত্ৰোৎপত্তে-क्रजनमार्यव देवनाच्याखा ७२श्वमा छम्मनमा कविवयप्र অবিক্রম্বের। অতএব 🚁 ভদম্বন্য यक्षमा भश्तेष्ट्राङ । **अ**विष्क्रात्रव क्रिविकिमिकालि नाम ॥ १७॥ व्यमानाद मात्रभारतनाजिङ्खा इच्छा वद्भरवजार्थः। मक्राजा प्रतीः श्रीद्वेशवर - स्त्राहिश्रीद्वरम्काः । ५१ । অভিভানং विष्मयः। विवारः विवि छवर शृक्षिवार प्रवृक्षावारः। गास्तर्वर गस-

<sup>•</sup> বহাবের: কিল ইলাব্তে পার্কাড়া সহ রবদানঃ (আসীং)। তল। তবং ক্রই ব্ আগতীন সুনীন্ আলিকা (ভবানা) কুপিতরা সলক্ষমন্থীরত। অথ তেলু তরোরজ্ঞাসলং কৃষ্টা গহলা-নির্ঘাতের তবানীমনুসরুন্ (তবঃ) কোপাং শাপনাং, অভংগরং বোধনিন্ বনে প্রবেক্যতি, সংখাবিদ্ তবিবাতি ইতি। প্রবং বিত্তে কলাটিং বৃপরাসক্তঃ সুব্যাত্তং শাপন্তানন্ তক্ত প্রবিত্তে। বোহিত্ বতুৰ ইতি পাঠাত্তর ॥৮॥

-

ৰ্ফাণাং কৰ্ম গীতম । গান্ধারমিতি পাঠে গান্ধার্মাসবছলম্ ॥ ২০ ॥ वरमा मार्गाः वज् ब-मधाम-शासामाधानिकवन्त्रिनवर्षिकाया एक्वार भतिवर्रेखेतीवर्खेदेनब्रान्टक्ड्यार यूगामार भतिहासियमा **छव**ि তথা অনেক্যুগণরিত্ততি তিওঁমণি তৎ খৃণুন্ মুর্ভুমিব নেত্র देजार्थः। পরিবর্জীতি পাঠে গান্ধর্মবিশেষণীর । ২১। অবন তশিরাঃ 🧷 চিন্তব্যিবাবন তমুখঃ। অবন তশিরসমিতি পাঠে বৈৰভবিশেৰণম্। ২২। অস্য রৈবত্স্য মনোরষ্টাবিংশভিত্তমং চতুরু গং গভপ্রায়ম্ ॥২৩॥ ্ একাকিনা দেয়নিতাত হেতুমাহ, ভবত ইতি। ২৪। কন্যায়া বরা-ভাবাদুৎপর্মাধ্য: । २৫। পূর্বং চিন্তিতেভোহব্যেভোহপার-মেব বরঃ শ্রেষ্ঠ ইতি বদন্ বলদেবার কন্যাং দেহীত্যাহ, ন হাদি-त्रशास्त्रिकि नम्बिः। श्रवंत्रक्यामार ने विकृः विकार चाररमना-বতীর্ণ ইত্যাইমেনাশ্বরঃ। আদিমধ্যাপ্তাঞ্জানহেতৃঃ কারণভদা সর্ব-গতস্য সক্লপং তদ্ধুং পরং স্থাবস্ অসাধারণং ধর্মসারং বলম্।২৬॥
বিভূতেরবভারক্রপায়াঃ পরিণামস্ সস্তাববিকারীস্ কালো न (इजू: । अब (इजू: अबस्मिडि । २१ । विमाहाजमा व्यमानानेहरे उका श्रजारुकिरता पुरुः। त्वांशाकास्त्राही स्वाह मधा है যন্মাৎ স্থিতিহৈতৃঃ প্রারো বিশাব্যো ভূডঃ ৷ ২৮ # 🖰

তহি কিং পরষপুরবো ন ক্টাাদিকতা কিছু ভবলাদরএব ইতাত আহ, মজপদিতি। অনপ্তবৰ্ণঃ শেবমূৰ্তিঃ ।২৯। শকাদী-ত্যাদিশকাথ হিতিহেতবো জেলাঃ। পক্ষহাভূতরপেগলি পাল-কল্পাহ, পাকারেতি সার্ভেন । ৬০। তহি কিং অল্পাদরভাতো ভিন্না ইত্যাশকা অউদিনিস্নাস ক্লাদিভিং নহাতেদেনাহ, বঃ ভল্পত ইতি বাভ্যাম । বিশ্বাস্থানে বিশ্বসা অন্তবারী সংক্রিরতে চঁ। অস্যু অট্যাদিত্ররসা ক্ল্যাদিত্রগ্লসা চ যঃ পৃথক্ ভ্রুচজেপাঃ। পৃথক্ বসোতি পাঠে ক্লাহে পৃথক্তিয়া লাক্টাভ্রেঃ। ৬২। অন্তিন্ লগত্যাজিতঃ এতহাপ্য হিতঃ। "তথ্যকুল তদেবাসুপ্রাকিশং " ক্ষেন সমুত্রাৎ বাদশবোজনপরিমিতাং ভূমিং ইহীত্বা বিশ্বকর্মবারা অন্যথানির্মিতভাৎ। সীরধ্বজায় হলিনে। ৩৭॥

ইতি প্রীবিফুপুরাণটীকার্যাং প্রীধরস্বামিরুতায়াং চতুর্থাংশে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

# দিতীয়াধ্যায়ঃ।

ধৃটাদিমনুপ্রাণাং বংশাংশুক্ররিতানি চ। বিতীয়ে তৎপ্রনঙ্গের সোত্র্যাখ্যানমুক্তবান্। বৈবজ্স প্রাতৃশতমধ্যে বিস্তাবৎ কোহপি রাজা নাত্র্বদিত্যাশক্ষ্যাহ, বাবচ্চেতি। পুণ্যজনসংজ্ঞা ইতি বিশেবণং বোপালাল্ডং রাক্ষ্যজাতিবিশেবপরং বা। । এতে ক্ষপ্রপূতাঃ ক্ষিয়া প্রজ্ঞার রকীতরস্য প্রবরা গোলাল্ডাঃ ক্ষ্প্রপূতাঃ ক্ষিয়া প্রজ্ঞার রকীতরস্য ভার্যায়ামসিরসা লাভভাৎ। তথাপি তয়োব্রাগাং পুনরন্ধিরসা ভার্যায়ামসিরসা লাভভাৎ। তথাপি তয়োব্রাগাং পুনরন্ধিরসা ভার্যায়ামসিরসা লাভভাৎ। তথাপি তয়োব্রাগাং পুনরন্ধিরসা বাক্ষ্যামনিক্রজিপুর্বহৎ তস্য বংশমাহ। ক্ষুত্র কুর্বতঃ মনোম্বিভিঃ প্রশ্বহৎ তস্য বংশমাহ। ক্ষুত্র কুর্বতঃ মনোম্বিভঃ প্রশ্বহৎ তস্য বংশমাহ। ক্ষুত্র কুর্বতঃ মনোম্বিভঃ বিশ্বমাহ বজ্মাহ, স চেতি। তিৎপাদ্য ক্ষিমাদিকং বিনা স্বয়ং মৃগান, হল্বেভার্যঃ । ৫ ॥ এবং শশাদেশংক্ষমিতি গুরুণোক্তঃ পশাদ্সংজ্ঞাম্বাপেত্যস্বয়ঃ । ৬ ॥

পরঞ্জয়এব ককুইস্বসংজ্ঞানবাপেতি বজুমিতিহাসমাহ, ইদঞ্চেত্রাদিনা সংজ্ঞানবাপেতান্তেন। ইদঞ্চান্যথ তল্য নামেতি শেবঃ ॥৭॥ সকলং জগদেব পর্থ শ্রেষ্ঠম অইনমাশ্রেরা বল্য নারারপদ্য সর্বাত্ত-বামিছাও তদর্থ তিনিস্ক্রের ॥ ৮॥ অবতীর্য্য প্রবিশ্য কার্য্যঃ অবশাং বিধেরঃ উদ্যোগো মুদ্ধারতো বেন পর্প্রেরন স্ত থাবিধ্য

কার্য্যঃ সম্পাদ্যঃ ॥ ৯ ॥ সাহায়কং সাহায্যম্ । ১০॥ বাদুং তথেতাত্বীক্সিত্ম অনুমত্মিতার্থঃ ॥ ১১ ॥ বিপলুটা দক্ষার্গা ১২ ॥ মধ্যরাত্তে
নির্ভায়াং সমাপ্তায়াম্ । ১৬ । স্ব্রেখাংশ্য নোখাপয়ামাস, শয়ানং
ন প্রবোধয়েদিতি নিষেধাল্য ॥ ১৪ ॥ অত্তৈতৎকলসত্ত্ব জলে পীতেঁত
সতি ॥ ১৫ ॥ মুনীনাং প্রভাবাদের ন মমার ॥ ১৬॥ কং ধাসাতি ?
পাতবান্তনাভাবাং ॥ ১৭ ॥ যাবদিতি । সাকপ্পে মেরোঃ সর্বাজ্য উদয়ান্তমনোপল্লিতং সর্বাং মান্ধাতঃ ক্লেত্রমধিষ্ঠেয়দেশ
উচ্যতে ॥ ১৮ ॥

माञ्चा कन्यावश्मार चन्ने ज्ञान छा निर्मा का अथमर वक्रूर त्नी-ভরিচরিতমুচ্যতে, বহব্চ ইত্যাদিনা। ্ছাদশাব্দরপং কালং ব্যাপ্য ।১৯॥ ললিতং কীড়ামুখন্ ॥২০॥ নির্কেষ্ট্রনাম উদ্বোদ্কোমঃ। মা প্র-नग्र विভाशकीः धनग्रज्य माकार्यीः ॥२२॥ अर्थिजनात्न या नीका সঙ্কাপঃ তত্ত্ব কুতং ব্ৰতম্ অধি বৈমুখ্যাভাবরূপং বেন কুলেন তৎ ॥ २७॥ यम् यन्त्रां शार्थन जिल्ला म्याह्य महा उन्तान् यम् जिल्ला थर তস্মাদ্বিভেমি, তস্মাৎ স্বমেকাং কন্যাং প্রসমেক্ত্যস্বয়ঃ 🛚 ২৪॥ 🕈 ৰস্মৈ करिया हिम्त्रणार का कना। दिया जम् यमि द्वार का करिया मारि, তर्हि किং न नक्तः ? नाजाजातः किः मारि ? किसुमाकर लार्डः म्यादम्ब । यहा छर्डि प्रश्नीकृष्ट् नं शक्त्यम्बदनात्रथशूत्रवटमव » खत महान् लांख देखार्थः। न नरकांक शार्तिः मा कना। किश न नका ? लेकरविक मिकविद्यास्त्राः॥ २०॥ व्यक्तांशास्त्राचांत्रस्य प्रमानकः इस्कार्यनिकानि। अवद मर्हिखा असूना बांका अवसविधिक्र ইতাম্বঃ॥২৬॥ তত্র প্রতীকারং বিচিন্তা স্বয়ুক্ত হ, এবদিতি ৷২৭॥ क्रुनारिक्ष प्रमा तक्कार वर्षधाः इक्षा १८०॥ छ० छन्। इनगद्यान्य वर्ष देव्हाशार शतिश्वानर व्याजिकृतार नाहर कतियां में कि व्यक्ति জাত্য, ইত্যাকর্ণোতীতি শবঃ ইত্রাসীকৃত্য, ইত্যাকর্ণোতি कांकांकिरशांलकरमू अवव रवांकाः। ध्वमदाश्रां अवर श्रवंमहर শ্বিনিতি সংরম্ভক্রিয়া অক্সমুমিকা ভয়া। ২৯॥

Ġ

তামেবাহ, অলং ভগিন্য ইতি ছাভাগি। কটাহমন্য পদ্ধীতি
শেষঃ। উপশম্ং ব্রহ্ম, এতদর্থং যত্ত্বং মা কুরু ইতার্থঃ॥ ৩০॥ বিহনামে বিহংসি বিঘাতং কিং কুরুবে। কলিঃ কলহঃ॥ ৬১॥ অতিহার্দ্ধাৎ স্নেহাৎ। কন্যানামেবং পত্যর্থং কলহোহমুচিত ইতি বিন্দুমূর্ত্তিরাচই। ৬২॥ সোপবনাঃ উপবন্দহিতাঃ, পরিচ্ছদাঃ ভোগোপকরণানি॥ ৬৬॥ তচ্চ বিশিই প্রামাদরূপং কার্যাং তথৈবাসুক্তিং
দাশিতবান্॥ ৬৪। আসাঞ্চক্রে অবহিত্তবান্॥ ৩৫॥ আগতা অতিথয়ঃ অনুগতভ্তাদয়ত্ব তান্॥ ৬৬॥ ক্রুরন্ত্যাংংও মালা যস্যাভাগ্॥ ৬৭॥

প্রত্যে যা সেহজেন যানি নয়নামূনি তান্যের গর্ভে যয়োন্তাল ছলে নয়নে যাসা সঃ। প্রব্জন্মহাস্থার্ডনয়ন ইতি পাঠে প্রব্জন্মহেনামূগর্ভে নয়নে যাসা ইতি বিশ্রহঃ॥ ৬৮॥ প্রোৎফুলানি যানি প্রানি তদাকরভুতা জলাশরান্ত। ভোগো ভক্ষাদের পভোগোহন কলেপনাদেঃ॥ ৬৯॥ পরিভোষো দুহিতুগাং স্থেন, যোগৈশর্যোণ চ বিসায়ঃ, তয়োনির্ভিরেণ বিবশং হাদ্যং যাসা সঃ। কৃত্য পূজা নেন সঃ। অব্রগীৎ স্কৃতিরপাঞ্চ পুরামকরোদিতার্থঃ॥ ৪০॥ কিয়দেত্থ ইত্যাহ্যগ্রহিত্য গ্রহিত্য সংভাব্যত ইত্যাহ্য। ৪১॥

ভত্ত তেরু পুত্রের ॥ ৪২॥ স্থ্রুকীকৃষ্টান্ত্রেষাই, অপ্যাত ইতি।
অনুদিনং কালস্য সংপজিরাধিকাং ভস্যাত্ত্তিরপুরর্ভনং যত্ত মনোরথে তমবেত্য জ্ঞানা অচিন্তর্যথ এতহক্ষাদাণন্॥ ৪৩॥ প্রসূতা
কাভাপত্যাঃ। তেবাঞ্চ স্থতা ছটাঃ। তস্য পৌত্রবর্ণস্য তনর—
প্রসূতির অপত্যক্র ॥ ৪৫॥ মহত্যো বিধিৎসা ইতি কৃত্যেক্রঃ
॥ ৪৮॥ একশরীরক্ষ দুংশং দুঃশহেতুঃ॥ ৪৯॥ এবাদ্ ক্ষিত্রস্য
ভপ্রেরিং বিশ্বঃ। মুন্তিরা বঞ্চিতঃ॥ ৫১॥ আর্টো কাতঃ
বোগঃ স্বাধির্যা সং॥ ৫২॥

ইদানীং পরিপ্রহ্থাহগৃহীতবুদ্ধিরশি জনস্য পরিজনস্য দু:বৈশদু:থী যথাহং ন ভবিতা তথা চরিছে ৫৩॥ অভিপ্রমাণং মহ-শং

তাং মহীয়াংসং প্রমাণং জ্ঞাপকষতিক্রম্য বর্ত্তমানং স্থপ্রকাশত্বালিতি বা। সিতম্ বৃদ্ধং জীবক্রপেণ, অসিতঞ্চ তদ্বিপরীত্রমীস্থর-ক্রপেণ ॥ ৫৪ ॥ অশেহোজসি সর্বাজতো অব্যক্তং প্রধানং বিকশন্তং মহদাদি তে তুরুপাধির্য্য তার্মন্ ভূমোইতবায় পুনর্জন্মাতাবায় ॥৫৫॥ যাদাদন্থ কিঞ্লোতি ত্যাপ্রমং শরণদেমি গছামি ॥ ৫৬॥

ইতি ঐবিষ্ণুপুরাণটিকারাং **এধরস্বামিরতারাং** চতুর্থাংশে দিতীয়োহধ্যারঃ সমাপ্তঃ।

# जृजीदशाश्यागः ।

তৃতীয়ে সোতরেঃ সিজিন্দালাত্তনয়ালয়ঃ। বর্ণতে সগরস্যাপি
চরিতং রিপুযাতিনঃ॥ পরিপকা রাগাদিহীনা মনোইজির্যস্থা সঃ
ভিকুর্যতিরতবং ॥১॥ ভগবতাশেবকর্দ্মকলাপমাসল্প সমর্প্য অচ্যতপদমবাপেতি সম্বন্ধঃ। পরবতাং পরম্ "ইক্রিয়েনাঃ পরা হার্ছা
অর্থেভান্চ পরং মনঃ। মনসন্ত প্রার্হির ক্রেরাল্পা মহান্ পরঃ।
মহতঃ পরমব্যজনব্যজাৎ পুরুষঃ পরঃ। পুরুষার পরং কিঞ্ছিৎ
সাক্ষি সা পরাণ্ডিঃ॥" ইত্যুক্ত্যা পরবভামিক্রিয়াদীনাং পরমান্তরমিতার্থঃ॥ ২॥ রাজবংশগুরুবে উক্তর্নোভিন্নিভ্র্যা—
সঙ্গতিম্ অপাকরোতি, ইত্যেভদিতি॥৩॥ অভ্রঃ অভঃপরম্॥ ৪॥
অন্ধরীবন্য যুবনাশগুপিভামহ্সনামা, বভ্যে হরিভালারিভা অভ্নির্বাদ্বির আজিন
রসো ছিলা হরিভগোক্রপ্রবাঃ। অথ হরিভানামার্বির আজিন
স্বান্থরীবন্যুবনাশ্বন্টেভি প্রবির্গাচাৎ॥ ৫॥

ইদানীং মান্ধাতৃতনয়স্য প্রুকুৎসস্য বংশং বজুং কথাং প্র-ত্তীতি, রসাতল ইত্যাদিক বরং দদুর্ভান্তেন। মুনেঃ কণাণ- পদ্মাঃ প্রাশ্চিত্রসেদাদাাঃ। অপহতানি প্রধানরত্বানি আধিপত্যক্ষ বেবাং তানাক্রিয়ন্ত ॥ ৬ ॥ তৈর্জগবান্ স্তুত ইতি শেষঃ।
অর্থাৎ তেবাং ন্তব্র্রেশনেন উন্মীলিতে উদ্ভিন্নে পুঞ্জনীকে ইন নয়নে
যদা। জলশয়নঃ ক্রীরাজিশায়ী। ঐকপদাপাঠে, জলশয়নরূপা
যা নিদ্রো তদ্যা অবদানাৎ। অবদানে ইতি বা পাঠঃ। বিবৃদ্ধঃ
সন্। অপি কিং গদ্ধর্বেভাগ যদ্ভয়ং তদুপশমমেষ্ট্রতি, প্রণিপত্য
তৈরভিহিতো ভগবান্ মান্ধাতৃঃ পুরুকৃৎসঃ পুত্রন্তমহমনুপ্রবিশা
গদ্ধনিনুপশমং নির্যামীত্যাহেতান্বরঃ। নয়তেরিড়াগ্য আর্থঃ।
নেষ্যামীতি বা পাঠঃ॥ १॥

নশ্মদাং সভাগনীং পুরুক্ৎসম্য ভার্যাম্। "নর্মদা ভ্রাতৃভিদ্ধন্ত। পরকুৎসায় যোরগৈঃ। ভয়া রমাতলং নীতো ভুজগেল্পপ্রযুজ্যা।" ইতি গুকোন্ডেঃ। ৮॥ আপ্যায়িত আত্মা দেহো বীর্যাঞ্চ বলং বস্যা সং॥৯॥ অত্র চ নামগ্রহণপ্রকারে পুনর্মাদে ত্যাদি অছি নিশি বা উচ্চার্যাম্ গর্ভগৃহে অন্যত্র বা অন্ধকারে প্রবেশে বাপি সর্বৈদিশ্যতে॥১০॥ ক্রতান্ত্র্যারণং নশ্মদাশ্যরণপূর্কাং আনাদি ভুঞ্জানম্য। ১১॥ পুরুক্ৎসম্য মন্ততিং বক্ষান্ ভদুপযুক্তং বরদানমাহ, পুরুক্ৎসায়েতি॥১২॥

অপ্রোক্ষিতভক্ষণ-শুরুধেনু-বধ-পিত্রাজ্ঞালজ্ঞ্ব-রূপৈত্রিভিঃ শক্ষ্ভিরিব হাদি বাধাহেত্ভিজ্ঞিল্ক সংজ্ঞামবাপ। তথাচ হরিবংশে
"পিতৃশ্চাপরিভোবেশ গুরোর্দ্যেগ্র্টাবধেন চ। অপ্রোক্ষিতোপযে!গাচ্চ ত্রিবিধন্তে বাতিক্রমঃ। এবং ত্রীণ্যন্ত শক্ষ্নি তানি দৃষ্ট্যা
মহায়শাঃ। ত্রিশক্ষ্রিভি হোবাচ ত্রিশক্ত্রন সন্মৃতঃ।" ইভি।
পরিণীয়মানবিপ্রক্নাহরণাৎ ক্রুক্তেন পিত্রা শপ্তশ্চাপ্তাস্পাগভক্ত। বিশামিত্রকল্রাপত্যপোষণার্থিং কল্রাদিপোষণনিমিন্তং
সাক্ষাৎ চাপ্তালপ্রতিগ্রহপরিহারায় বন্যন্ত্রোধে বটরক্ষে
ববস্ক । ১৩। তৎ শ্রুষা পরিতৃত্ত্বন স্থানারোপিড্রিশেল্ডঃ। ১৪।
অন্তর্নদ্রা গর্ভিগ্যাঃ। ১৫।

#### ८ व्याः । ८ व्यक्षांत्रः

গরো বিষম্। ব্লভাবাজ্জরায়া হেতোঃ।১৬। চক্রবর্তীতি আশংসায়াং নিদ্ধারিকেশিঃ। সাহসেহবিচারিতকর্মনি। অধ্যবসায়িনী
নিশ্চয়বতী ॥১৭। তৎকুলশুরুং সগরকুলশুরুম্ ॥ ১৮। অনুস্তৈরসুগতিঃ। অনুস্তিরিতি পাঠে, অনু পশ্চাৎ দেহত্যাগলক্ষণমরণবন্তিরলং ত্বয়া পুনর্হ তৈরলমিতার্থঃ ॥ ১৯। জীবন্মৃতত্বং বিব্রবোতি, এতে চেতি। "যঃ স্বর্ধাৎে পরিভ্রতী। বিপ্রৈশ্চের
বহিন্ধৃতঃ। স জীবনের লোকেহিন্মন্ মৃত ইতাভিধীয়তে॥"
ইতিস্তঃ। ২০। অস্থালিতম্ অপ্রতিহতং চক্রং সৈন্যমাজ্ঞা বা
যন্ত সঃ॥ ২৭॥

ইতি ঐবিফুপুরাণটিকায়াং ঐধরস্বামিরুতায়াং চতুর্থে২ংশে তৃতীয়োহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

# চতুথে १३ शायः।

কলিঃ সাগরান্ বস্তি-সহস্রাণি যথাদহৎ। সোদাসরক্ষোভাবক্চ
তথা তুর্যাহনুরর্ণতে ॥ কশ্যপদূহিতেতি । কশ্যপস্থ নরীচিপুত্রস্য
্বিনতাতনরায়া ইতাথে বক্ষামাণদ্ধং ॥ ১॥ সমাধিনা চিক্তিকাথ্যোণ
॥ ২ ॥ অপরন্তো দুর্ভঃ, অতীতবাল্যো গতবালদ্যঃ।. তত্ত্ব
বাল্যে অতীতেহপি তদেব দুইং চরিতং যস্য তন্ ॥ ৪ ॥ অনুচক্ত্রুঃ
অনুস্তাঃ ॥ ৫ ॥ অপধন্তা নিরাক্ষতাঃ যজ্ঞাদয়ঃ সন্মার্গাঃ
যদিন্ তথাভূতে জগতি সতি। তদর্ধং যজ্ঞাদিলোপর্পমর্থন্। ৬॥
ভগবন্নিত্যাদিনা আর্ত্রস্কপক্ষনম্ ॥ ৭ ॥

অধিষ্ঠিতং সংরক্ষিতম্ ॥৮॥ ততোহনস্তরং তন্তনরাঃ সগরতনরাঃ । অতিনির্বান্ধনের পুরচিত্রানুসারেণ বন্ধবাতলং বিবিশুরিতি পূর্ব্বোজ-ঠিস্যব বিশতের্বচনবিপরিণামেনাম্বরঃ। তেবালৈইককো বোজনং

Ť

বোজনমেকৈবং যোজনং চথান গর্জঞ্চনার ইত্যর্থঃ। চখু রিতি পাঠে ডজনয়া ভূবন্তলং চখু রিভ্যেকং বাকাম্। ডত্ত্রেমন্তামাহ। একৈবঃ অর্থাৎ ডেমামের যোজনং যোজনং চথানে ড্যান্ডাম্ম ॥৯॥ অপস্থানে অপগতমেয়ে ॥১০॥ ঈষং পরিবর্ত্তিতং তির্যাক্তৃতং যদেকং লোচনং ডেন কিঞ্চিং বিলোকিতাঃ সস্তো বিনেশুঃ॥১১॥ কপিলেন নিমিক্তেন যথ আদেহজং ডেজক্তেন দক্ষম ॥১২॥ হে পুত্র! ডব পৌত্রো গঙ্গামান্যিয়াভীতি ইড়াগমশ্ছান্দমঃ। ভূবমিতি ভ্রাথাদূক্তম্ ॥১৩॥ ব্রহ্মদশুঃ অচিরাথ বিনক্ষ্যভীতি কপিলোকো ব্রহ্মণাপো ব্রাহ্মণবধোদ্যমো বা, ডছলেন হতানাং পিতৃণাং পিতৃব্যাণাং স্বর্গায় স্বর্গভোগায় তথপ্রাপ্তিহেতুং বরং স্বর্গং বব্রে॥১৪॥

অভিসন্ধিপূর্বকং স্থানাদ্যপভোগেয়পকারকং স্থাপ্রপাপকমিতি যৎ তৎ কেবলং মাহাত্মামিতি ন, কিন্তু অপেতপ্রাণসা দ মৃতসাখ্যাদি যত্রোৎস্টাং কিন্তং সংস্টাং বা অনভিসংহিতমপি শরীরিণং স্থাং নয়তীতি যথ তদপি মাহাত্মামিত্যুক্ত ইতান্থয়ঃ। হাস্য গঙ্গাজলস্য সম্বন্ধি ভূপভিতমস্থাদি ইতি বা ॥ ১৫ ॥ সাগরং সগরস্থতৈঃ ধানাথ বন্ধিতম্ অভএবাত্মকপ্রীত্যা পুত্রত্বে কল্পয়া-মাস স্থাপায়ামান, তন্মিন্ পুত্রবৃদ্ধিং কৃতবান্ ইতার্থঃ ॥১৬॥ ভাগী-রণী সংজ্ঞা বস্যান্তাৰ্ ॥ ১৭ ॥ নলস্য সহারঃ স্থা অক্ষত্ত্বয়ঙ্গঃ , দ্যুতাদৌ গণনানিপুরঃ ॥ ১৮ ॥

মিত্রং বশিষ্ঠং প্রতিশপ্তাং সমর্থোহণি সহতে দা, তেন মিত্রসহ
নামা ॥১৯॥ তেনৈৰ কল্মাৰপাদসংজ্ঞাং বক্তৃং কথাং প্রক্রেতি,
বোহসাবিতি ॥২০॥ অপন্তাং নিম্বাম্॥২১॥ তয়োর্ব্যাঘ্রোঃ ॥২২॥
অতিকরালং দল্ভরং বদনং বস্যা ম: ॥২৩॥ প্রতিক্রিয়াং বৈরনিবাত্তনম্ ॥২৪॥ পরিনিষ্ঠিতঃ সমাপিতো বজ্ঞো বেন তামিন্
নিষ্ঠান্তে সতি ॥২৫॥ অসাবিশি রাজাশি॥২৬॥

व्यव नत्रभारतम त्मामूना मञ्जूरा वृक्तिः, ताक्रतमा ভবिषामी-

.

তার্থঃ। বুদ্ধিপদং বিনা লোলুপেতি পাঠে সম্পৃহতেতার্থঃ। ২৭॥
তেন রাজ্ঞা মাংসভোজনার্থং ভগবতৈবাভিহিতোহন্দ্রীভূয়কঃ।
মরৈবাভিহিতমিতি, কিঞ্চ কিমিতি সম্ভ্রমাৎ সমাধাে তথাে ॥ ২৮॥
সমাধিজ্ঞানেনাবগতার্থঃ, রাক্ষসকৃতমেবৈতৎ নাস্যাপরাধ ইজি
জ্ঞাতার্থঃ, এতেমাংসভোজনং দাদশাকং ভবতু ইতি নাত্যন্তং ন
যাবজ্জীবমিতার্থঃ॥ ২৯॥ ভগবানক্ষান্তাাদি—লোপপত্তিবচনেন মদযন্তা৷ প্রাদিতঃ তচ্ছাপাত্ম বশিষ্ঠশাপার্থং যন্তঃ
শাস্বকার্থং নার্ব্যাম অস্ক্রকার্থং নাকাশে চ চিক্ষেপ কিন্তু তেন
অস্কুনা স্থপাদে সিষেচ॥ ৩০॥ ক্রোধশ্তেন ক্রোধা্মিতপ্রেন
দক্ষা চ্ছায়া কান্তিঃ যয়েঃ। কল্যাবতাং কৃষ্ণপাঞ্ভাম্॥ ৬১॥

রাক্ষনভাবমুপেত্য অতএব ষঠে ষঠে কালে ভৃতীয়দিনান্তে ॥৩২॥
ইদানীং তদাৈব রাজ্ঞ ঔরসপুত্রাভাবং বজুং কথাং প্রস্তৌতি,
।একদেত্যাদিনা স্ত্রীমস্তোগং তত্যাকেত্যস্তেন ॥৩৩॥ দম্পত্যোঃ
প্রধাবিতয়োঃ পলায়িতয়োর্মধ্যে ব্রাহ্মণং কথাহ ॥ ৬৪॥ স্ত্রীধর্মোদৈপুনং তৎসুখাভিজ্ঞঃ ॥৩৫॥ অস্তং মৃত্যুম ॥৩৬॥ বাদশাক্ষপর্যায়ে তং ব্রাহ্মণ্যঃ শাপং পত্নী স্মায়য়ামান ॥৩৭॥

অস্থলিতগতিনা দেববিমানেন লিঘিষ্টণোই তিলীঘুগতিঃ সন্
মর্ত্রালোকয়পেতা ব্রাক্ষণপ্রিয়ন্তাদিনা ধর্মেণ ভগবৎ প্রাপ্তিং
,প্রার্থ্যন্ সমাধে যততে স্বোত্যাহ, যথেত্যাদিনা বাহ্বদেবাখ্যে
যুযোজেত্যন্তেন। প্রাপ্রেয়ং প্রাপ্ত্রাষ্থাত ॥ মুহূর্ত্তং জীবিতং
প্রাপ্য জ্ঞান্ত্রা বাদুদেবঃ সর্কমিতি জ্ঞানেন। যন্ত্রা দানং সমর্পনং
খন্তনমিতি বা প্রবিলাপনমিতি যাবৎ তেনাভিসংহিতা বিষয়ীকৃতান্ত্রয়ো লোকা বিক্ষো প্রবিলাপিতা ইত্যর্থঃ ॥ ৩৯ ॥ অ্যাসীৎ
প্রাপ্তঃ ॥ ৪০ ॥ তাড়কাদ্যুপাখ্যানঞ্চ রামায়ণপ্রসিদ্ধন্ ॥ ৪১ ॥
বীর্যাং পরাক্রম এব শুল্কং মুল্যং বস্যান্তাং সীতাং লেভে ॥ ৪২ ॥
কেতৃভূতং বিনাশকং, বীর্যাং প্রভাবঃ, বলং শক্তিঃ। অপান্তো
বীর্যাবলনিমিক্টোইবলেপো মদো যস্য তম্ ॥ ৪১ ॥ জ্ঞাণিতো

রাজ্যাভিলাবোহ ভিলয়মাণং রাজ্যং বেন। ত্রাভ্ভার্যাভ্যাং লক্ষণ-সীতাভ্যাং সমস্বিতঃ ॥ ৪৪ ॥ অপহতকলস্কামপি অপগতখেদাম্। রামচরিতসহভাবেন লক্ষণচরিতমপ্যক্তমেবেভি পৃথক্ নোক্তম ॥ ৪৫ ॥ অভুলবলপরাক্রমৈর্যানি বিক্রমণানি চরিতানি তৈঃ ॥ ৪৬ ॥ প্রস্থাক্তঃ তদ্য মরোঃ ॥ ৪৭ ॥

ইতি জীবিষ্ণুপুরাণটীকারাং জীধরস্বামি-ক্তারাং
চতুর্ধেহংশে চতুর্থাহধ্যায়ঃ।

## शक्राश्या १ था यः ।

विभिष्ठेमा निरमः नामारक्षरभाजः भत्रमभत्रम्। ताळ्खरेमाव বংশোহপি পঞ্চমে তু প্রপঞ্চাতে।। নিমিরেব বিদেহ ইতি সংজ্ঞাৎ, \* বক্তৃং ৰুধাং প্রস্তৌতি, ইক্ষুকুতনয়ো যোহসাবিত্যাদিন। নিমেবং চক্রিভাস্তেন। >। ভদনস্তরমাগতঃ তবাপি ঋত্বিক্ভবিষ্যামি। ভাবৎ প্রতিপাল্যভাং প্রতীক্ষ্যভামিতি বলিষ্ঠেনোক্তে নিমিনা চ বলিষ্ঠভন্নাৎ ধর্ম্মবিলম্বানৌচিত্যাক্ত বলিষ্ঠঃ কিমপি নোক্তঃ ॥২॥ মৌনং সম্মতিলক্ষণমিতি যুক্ত্যৈর সমন্বীক্ষতমনুমতমিতি মন্ত্রা তত্র গড়া যাগমকরোৎ ॥ ৩ ॥ মামপ্রত্যাখারেতি পূর্বং মহন্তরে প্রভান্তরমদক্ত্রেব। যদা ইক্রযাগাৎ মামনি বার্টিয়ব এতৎ কর্মান্তরং नित्मधान कृषि उ श्रवं १ श्रवं कर्षा वृद्ध । अ अ द कर्षा खत । मन कूर छे य १ গৌতমায় সমর্পিতম্ কর্মণি অন্তরমণ্পস্যাবকাশে। দন্ত ইতি বার্থঃ। শীঘদেহপাতভয়াদিদং কর্ম আরক্ষমভাতে৷ বিদেহ এব ভবতু ইতি শাপং দদৌ ॥ ৪॥ মাম, অসংভাব্যেতি মাথ বিনৈব গৌতমদার। কিমিত্তি কর্ম কৃত্যিতি মাং প্রতালুজ্বেতার্থঃ ॥ ৫ ॥ তেজি বীর্ব্যে তেজে লিক্পরীরঞ্জে ইতি পাঠে স এবার্থঃ ৷ পশ্চাদু-স্ততো বীৰ্যাপ্ৰপাতো বীৰ্যাচ্যুতিৰ্যবোশুভূশয়োঃ॥ ७॥

মৃতস্য দেহধারণং যজ্ঞসমাপ্তিং বংশপ্রারন্তিং চোদিশোতি বজুং দেহধারণপ্রকারমাহ, নিমেরিতি॥ १ ॥ ছন্দিতঃ বরার্থমিছাং কারিতঃ॥৮॥ আসাম, অবস্থিতিং কারিতঃ॥৯॥ তৎপুত্রস্য সংজ্ঞাত্রয়ং তদ্বংশপ্রাক্তিং চ বক্তুমাহ, অপ্রস্যেতি ॥১০॥ জননার্থ মৃতদেহজ্ঞননাৎ ॥১১॥ সন্তিষ্ঠতে সমাপ্তিং যাতীত্যর্থঃ॥১৩॥ আত্রবিদ্যাশ্রাণ আত্রবিদঃ॥১৪॥

ইতি ঐবিষ্পুরাণিটাকায়াং ঐধরস্বামিকতায়াং চতুর্থে২ংশে পঞ্চমাধ্যায়ঃ।

# यदशार्थायः।

সূত্যবংশপ্রসঙ্গেন সোমবংশস্তদন্তরে। ঐলোহপি বর্ণাতে বঙে ত্রেতাগ্নির্যেন নির্মিতঃ ॥ ১॥ অতিশন্তিং বলং সামর্থ্যং, পরাক্রমঃ শৌর্যাং, দ্যুতি: কাস্তিঃ, শীলমাচারঃ, চেক্টা, দানভোগাদিলীলা। অতিবলাদিভির্যুক্তঃ, শুণা গান্তীর্যাদয়ঃ, অভিশুণান্থিতঃ চ অলঙ্গুতঃ ॥ ৪॥ ভগবন্ধারায়ণস্য নাভিসরোজনী নাভিত্রদঃ তত্র জাতং যদজ্ঞং তদেব যোনিঃ কারণং যদ্য তস্য জগৎস্রক্ট্যুর্স্কাণঃ পুত্র ইত্যস্বয়ঃ। সোমস্য তারায়াং বুধঃ পুত্র ইতি সোপাখ্যানমাহ, তঞ্চ ভগবানিত্যাদিনা লজ্জাজড়মাহ সোমস্যেত্যক্তেন ॥ ৫ ॥ তৎপ্রভাবাদত্যুৎকৃষ্টানামোষধ্যাদীনামাধিপত্যং সর্বাধিষ্ঠাতৃত্বাচ্চ এনং সোমং মদ আবিবেশ ॥ ৬ ॥ মদ এবাবলেপো দোষস্তমাহ ॥ ৭॥ পাফি গ্রাহঃ সহায়ঃ ॥ ৮ ॥ সকাশাৎ সমীপত উপলক্ষা বিদ্যা যেন সঃ ॥ ৯ ॥ যতো যত্র । রহস্পতেরপি সকলদেবসৈন্যং সহায়েণ যদ্য দাক্রেণ্ডিত্ব হিছে । তারকাময় ইতি নামনিক্র ইতি । ১১ ॥

দেবাস্থ্রাহবকোতেণ কুরুৎ সোদ্বেগং হাদরং যস্য ভজ্জাণ ॥১২॥ অন্ত: প্রস্বাং গর্ভিণীম ॥ ১৩ ॥ পতিব্রতা পত্যঃ ছন্দানুসারিণী, সোমেন বলাদাহিতৎ গর্ভমুৎসমর্ক্ত। ইবীকাস্তম্বে মুঞ্জচ্ছে 🛭 ১৪ 🛭 আচিকেপ অভিভূতবান্ ॥১৫॥ মাতা ভস্তা পিতৃঃ পুত্র ইত্যাদি-বুচনাৎ পিতৃরেব পুত্রঃ মাতৈব পুত্রজনকং বেন্তি চেত্যতোৎস্য কঃ পিতেতি তারামেব পঞাছুরিতি॥১৬॥ মন্থরবচনা অতিবিল্পিত-বাক্ ॥ ১৭ ॥ আত্মজ ঔরদঃ ॥ ১৮ ॥ স্ফুরস্তী উচ্চুদিতয়ে বি-কসিতযোরমলয়োঃ কপোলয়োর্গগুয়োঃ কাস্তির্বস্য সঃ 🛚 ১৯ 🛭 বুধ यथा श्रुक्तत्वमः জनग्रामाम उथा প্রাণেবোক্তম. म পুরুরবা উর্মশ্যাং ষটু পুত্রান্ জনয়ামাস ইতি বক্ত ং কণামাহ। পুরুরবাস্থিত্যাদিনা যাবৎ সমাপ্তি, অতিরূপং স্বং ধনং যস্যাস্তি তম্ উर्वाणी प्रपर्भ देखान्त्र ॥ २०॥ मानर शर्वमश्रहात्र উপতত्ত অভ-জৎ ॥२১॥ কান্তিঃ শোভা, সৌকুমার্য্যৎ মার্দ্রং, লাবণ্যমঙ্গস্থল হত্বং. ৰিলাসঃ অঙ্গচেষ্টামু তাৎকালিকো বিশেষঃ, অতিশয়িতাঃ স্বিমান-धिकौक्रजाः मकनामाकञ्जीनाः कास्त्रामात्रा श्रुना यया जाम्॥ २२ ॥ এবমুভয়ং তথ মিপুনরপেং তত্মনক্ষম্ অন্যোন্যাসক্তচিত্তমভূৎ। তদেবাহ, নাস্তান্যমিন্ দৃষ্টির্যস্য, পরিত্যক্তং সমস্তমন্যৎ প্রয়োজনং যেন তথ ॥২৩॥ প্রাগলভ্যাদসংকোচাৎ ॥ ২৪ ॥ লজ্জ্যা অবখণ্ডিতং वाक्तांवाकः निथिनः वा गथा मार्गिवः थार । नक्कांथिकिर्मिक পাঠে তু স্পটোহর্থঃ ॥ ২৫ ॥ শাপাবসানে যদি গন্ধর্ম। মাং নেতৃ-মিচ্ছত্তি তদা সময়ভঙ্কাপরাধমারোপ্য গমিষ্যামীতি সময়ং করোতি, ভবত্বেবসিতি ৷ ২৬ ৷ পুত্ররবদা, আখ্যাহি সময়মিতি পৃষ্টা উক্তা भकी ममग्रमत्त्रीए ॥ २१ ॥ छेत्रगत्का (मयः ॥ २৮ ॥ शक्करियः ममग्रह्मन उर्समा। निर्भार मर्मग्रज्ञाह, विना हार्स्वरणाजामिना जरकर्गातिवा-भक्रास्टि**डास्टिन । २৯॥ भग्न**|छा|भाष्ट्यनिकहे। ९॥ ७०॥ गमतन হেতুঃ, অপরভোহপগতঃ স্ময়ঃ স্থিতিহেতুর্যসাঃ সা॥ ৩১॥

প্রনর্কশীসঙ্গদায়ঃপ্রভৃতিপুরোৎপদ্ভিং তলোকপ্রাপ্ত্রাপা-

\*

য়াগ্রিঞ্ বক্তু মাহ, কুরুকেত ইত্যাদিনা যাবদধ্যায়সমাপ্তি ! অস্তোজ-यूटक मत्रनिक्टर। कार्य ! जिर्छ, मनिम विषय एचारत ! निर्मारत ! वर्षा वाश्विमार्थर जिले। यदा वर्षा जिले, महत्वर कुर्विछार्थः। ইত্যাদ্যনেক প্রকারং সূক্তমিতিপদং বেদস্কুত্বসূচনার্থম্। অস্-ক্তমিতি পাঠে উন্মন্ত প্রলপিতমিত্যর্থঃ। এতেন " হয়ে জায়ে মনসি তিষ্ঠ ঘোরে বচসি মিশ্রাণবাবহৈ তু" ইত্যাদ্যকীদশর্চে তয়েঃ সংবাদাত্মকে ঋগেদোক্তসূক্তে পুত্ররবসে৷ বাক্যানি সৃচিতানি ॥ ৩৩॥ আহ চোর্মশীত্যনেনোর্মশ্যাঃ ''প্রতিবচনানি ''পুরুরবো मा मृथा माळावरमा मा जा इकारमा जानवा वाम छक्कन्। न देव স্ত্রৈণানি সখ্যানি সন্তি শালা বুকাণাং হৃদয়ান্যেততা" ইত্যাদীনি স্থচিতানি। অন্তর্মত্রী গর্জিণ্যহমিদানীং মৎসম্ভোগাসম্ভবাদ-কান্তে ত্রা আগন্তব্যমিত্যাদ্যক্তেন সামা প্রহটঃ সন স্পুর-। মাজগাম। পুরুষোৎকর্ষ উৎকৃষ্টঃ পুরুষ ইত্যর্থঃ ॥ ৩৪ ॥ সর্ব্ব-কালমিতি স্পৃহা সকলা ভবেদিত্যর্থঃ। আসেয়তি পাঠে আস্যা ন্থিতিঃ। মনুষ্যলোকে তথাসম্ভবাৎ স্বৰ্গএবায়মানীয়তামিতি ভাবঃ॥ ७৫ ॥ आशुबर आशुर्वामानम्. এकारमटेककार निणाम्। अवर বারংবারং পঞ্পুত্রোৎপস্তয়ে গর্ভ্রমবাপ। কেচিন্তু চতস্ভরক্স-রোভিঃ স্ববিভৃতিভিঃ সহ স্বয়ঞ্চ প্রত্রোৎপদ্ধয়ে গর্ভমবাপেতি ব্যাচ-ক্ষতে॥ ৩৬॥ অসাৎপ্রীত্যা তুভাং মর্কে বরদা ইত্যন্তরঃ॥ ৩৭॥ নানাদ্মাক্ষিতাবদি রাজা চাহেতাম্বরঃ। অনাদ্প্রাপ্যং নাস্তীতাত্ত হেতৃঃ। বিজিতেত্যাদি ইত্যক্তে ইত্যত্তেতি শব্দঃ পূর্বাপরয়োঃ সন্ত্বধ্যতে ॥৩৮॥ উৰ্মণীলোকপ্ৰাপ্তিক অগ্নিহোত্তসাধ্যেতাগ্লি-স্থালীং দদুঃ ॥৩৯॥ আশ্লায়ানুসারী বেদবিধৌ দস্তচিক্তঃ গার্হপত্যাহ্ব-নীয়দক্ষিণাথিরপেণাথিং তিধা কৃত্বা মনোরথমুদ্দিশা কৃত্বা 180 1 শমীগর্ভাশ্বথমথনাদ্থিত এবাগ্লিরগ্লিহোত্রোপযুক্ত ইতি দর্শয়লাহ, অন্তরটব্যামিতি। যদ্যপাগ্নিং ত্রিধা কৃত্বা উর্বলীলোক মুদ্দিশ্য যজেখা \* ইত্যেবং গন্ধবৈদ্যক্তং ন বিষমুক্ষণীতি তথাপি মোছবলাৎ পুরু-

রবা উর্বাশীয়মিত্যবর্গতা ইদানীমচিন্তয়দিত্যর্থঃ ॥ ৪১ ॥ শমীগর্জং শমাণ গর্জে স্থিতমিত্যর্থঃ ॥ ৪২ ॥ এবদেব যথা চিন্তিভনেব স্থপুর—মুপগতোহরণীং চকার ॥৪৩॥ গায়ত্রাক্ষরসম্থান্যস্থানি ব্যাপ্যারণিরভবদিতি গায়ত্রীং পঠতা তদক্ষরসংখ্যাকাঙ্গুলপ্রমাণা অরণিঃকাম্যেতি ভাবঃ ॥ ৪৪ ॥ ইহ হোমে অভিসংহিতবান্ কামিতবান্ । স্বাধিবিধিনাইয়্যুৎপাদনেন ॥ ৪৫ ॥ ত্রেতা অগ্নিতয়ম্॥ ৪৬ ॥

ইতি ঐবিষ্ণুপুরাণটিকায়াং ঐধরস্বামিরুতায়াং চতুর্থেহংশে ষঠোহধ্যায়ঃ।

#### मश्रदमार्थायः।

আদাবমাবসোবংশঃ সপ্তমেহলগতরোচাতে। তত্র জল্বাদিরাজর্মিদি হিত্রান্তার্গবাে হরিঃ। তদ্য পুররবদঃ ষট্ পুত্রা অতবন্। ১। অথবনং জত্ত্বং দুমোচ। ততো দূহিতৃত্বে অনয়ই ইত্যধ্যাহারেণ যোজনীয়ন্। অমূর্ত্রন্যামাবদর ইত্যত্র সন্ধিরার্বঃ॥ ৩॥ আত্মনা স্বয়মেবেক্তঃ পুত্রমগত্তহা ৪॥ তদেবাহ, গাধিরিতি। কন্যায়াঃ শুলুকং মূল্যম্॥ ৬॥ বতনাপি ঋচীকেন অশ্বতীর্ধং কান্যকুল্পে গঙ্গা-প্রদেশবিশেষঃ, তত্রোহপন্নং জাত্ম, তেন পথোক্ষাতমিতি বা উপলভ্য প্রাপ্যাপ ॥ তহপ্রমাদিতঃ সত্যবত্যা প্রসাদিতঃ তত্মাত্রে সত্যবত্যা মাত্রে দাতুং ক্ষ্রবরপুত্রোহপন্তয়ে তদর্ধম্॥ ৮॥ এব ভবত্যা অয়মপরস্কুনাত্রোপ্যাক্তা ভক্ষণীয় ইত্যুক্তা কুশা-দ্যর্থং বনং যথো॥ ৯॥ আত্মনো জায়ায়া ভাত্ত্বিয়ে সর্কোনাতীরান্ততা ভবতি। মন মহাং হি যন্মাহা । ১০॥ কিয়হপ্রয়োধ্নারিত শেষঃ। ইত্যুক্তা স্বাঞ্

."

মাতৃচরু: ভুক্তবতীতি জেয়য়ৄ॥ ১২॥ সতাবতীয়ৃষিরপশ্যৎ, রৌজ্র-রপামিতি শেষঃ॥১৩॥ মাত্রে সৎকৃতঃ। মাতৃসৎক ইতি পাঠে মাতৃঃ সন্মাত্রসম্বাতার্থঃ। স্বার্থেলঃ। মুনিরপ্যান্থ, এবমস্থিতি ॥ ১৫॥ আস্থা বৈ জায়তে পুত্র ইতি ন্যায়াৎ মুনিররণাচ্চ পুত্রে চরুফ্লাল্লাবের, ন চেৎ পুত্রের পৌত্রেম্বিতি ন্যায়াচ্চ তৎক্লং পৌত্রে জাত্তাবেন, ন চেৎ পুত্রের পৌত্রেম্বিতি ন্যায়াচ্চ তৎক্লং পৌত্রে জাত্তাবেন, ন চেৎ পুত্রের পৌত্রেম্বিত লাহ্রাছেবঃ শুনঃশেষঃ পিতৃবিক্রীডো নরমেধে হরিশ্চক্রপরীবর্তেন কৃতপশুভাবোহিপি স্তাত্রেদি বির্মিনামিত্রমা দক্তঃ প্রো দেবরাত্রামা পুত্রোহ্ ভবদিত্যর্থঃ॥ ১৬॥ তত্তানা মধুক্ষাদেয়ঃ পুত্রা ঔরসা বভূবঃ॥ ১৭॥ এবং ভার্গবস্থা শুনঃশেক্ষা কৌশক্ষােরাজ্বং দেবরাতপ্রবর্ত্তাহ বহুনি কৌশক্ষােরাণি শ্বর্ত্তরের বৈবাহানি ন তু সমানপ্রবরের প্রতি তার গোত্রাহানি ন তু সমানপ্রবরের প্রতি প্রত্রেম্বিত প্রবরেষ্ক্ররতি । তাবং সমানগোত্রস্বমান্ত্র্যু ক্রিরাহ্র্যাণ্ড ॥ ১৮॥ ইতি শ্রেকারােকেঃ॥ ১৮॥

# ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণটীকায়াং শ্রীধরস্বামিক্লতায়াং চতুর্থেইংশে সপ্তমোহধ্যায়ঃ ৷

## व्यक्षरमार्थायुः।

আ যুবঃ পঞ্পত্তের ক্ষত্রর্দ্ধন্য সন্ততিঃ। অপশা প্রোক্তাইনে

যত্র জাতে। ধন্মন্তরিহ রিঃ । চাতুর্ধন্য প্রবর্তিয়িত। তদ্বংশে চত্বারে।
বর্ণা অভবরিত্যর্থিঃ । ১ ॥

সংসিদ্ধানি মর্তাধর্মারহিতানি কার্য্যকরণানি দেহে শ্রিয়াণি যস্য সঃ। সকলসম্ভূতির সর্বের্জন্ম অশেষজ্ঞানবিৎ সকল-শাস্ত্রজঃ॥২॥ অতীতসম্ভূতীে কীরাদ্ধের্জমনি॥৩॥ সইধেতি। অইপ্রকারমায়ুর্বেদং করিষাদি। অইটাক্ষমিতি বা পাঠঃ। তদুক্তং "কায়বালগ্রহাহদ্ধা চ শলাং দংক্রং জরা বিষম্। অইটাবক্সানি তস্যাকৃতিকিৎসা যেয়ু সংশ্বিতা।" করা "শলাং, শলাকা, ভূত-বিদ্যা, কায়গুদ্ধিত অক্সং তন্ত্রং, রসায়নং, বাজীকরণং, কুমার-তন্ত্রম্," ইতাইটা ॥৪॥ প্রতর্দ্দনসৈব শত্রুজিৎ বৎস ইত্যাদ্যাশত প্রস্থা সংজ্ঞা নির্বৃত্তি, তেন চেত্যাদিনা প্রথিত ইত্যান্তেন ॥ ৫॥ তেন দিবোদাসেনাত্মপুত্রঃ প্রতর্দ্দনঃ বৎস বৎসেত্যুপলালনেনাভিহিত-ত্তাে বৎসসংজ্ঞাংভবৎ ॥৬॥ কুলয়নামানং কুং পৃথিবীং বলমতি বেইয়ভীতি পরিবর্ত্তনেনাক্রা ভ্রমতীতি তথা তম্মান্ত্রমণ্ড ইতি কুবলয়াশ্বসংজ্ঞা ইতি॥ ৭॥ ষট্ ষ্টিসহ্ল্রবৎসরং যাবদলকাদ্দরোন নুবা তাবৎ কালং চালকাদ্দন্যা মেদিনীং ন চ বুভূজে ইত্যন্থয়ঃ॥ ৮॥ ভার্গভূমেঃ সকাশাচ্ছাতুর্বেণ্যপ্রকৃত্তি । ৯॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুরাণিটাকায়াৎ শ্রীধরস্বামিক্নতায়াৎ চতুর্থেংশেশইউমোইধ্যায়ঃ।

#### नव्दमाइशायः।

রজে: প্রশতকৈ আহ পাতিতং বর্গতে পদাৎ। রস্তেইনপ্তাো
নবমে ক্ষল্লরজান্মঃ পুনঃ॥ আয়ুঃপুরাসা ক্ষল্লরজানা বংশমুজ্বা
তদ্যুত্রজের্বংশমাহ, রজেরিতি। রজেঃ পুরশুতপঞ্চন্য প্রা
নাতবল্লিতি বকুং কথাং প্রভেতি, দেবাস্থরেতি॥১॥ ন বয়মনাথা
ভবানিক্র ইতাদানীং বিদ্যামঃ, সিজে কার্যোহনাথা প্রকাদমিক্রং
করিষ্যামঃ কিন্তু সর্বাদ্যাক্ষিক্রঃ প্রজ্ঞাদ ইত্যুক্ত্বা নির্গতের সমন্ত্রীক্ষিত্রসমুষ্ত্রম্ ॥২॥ ভয়ব্রাণ্দানাদিতি ''অল্লাভা ভয়ব্রাভা কন্যাদাভা তথেব চ। জনিতা চোপনেতা চ পঞ্চৈতে পিতরঃ শ্রুতাঃ॥'
ইত্যুক্তেঃ। ভবানিতি পদার্ভিবা শুভেদাৎ॥ ও॥ অনেক্রিধানি

চাটুনি প্রিয়াণি বাক্যানি গর্জে ষদ্যাঃ দা প্রণতিঃ বৈরিপক্ষাদ্পি বৈরিপক্ষিত্রস্যাপি অনভিক্রমণীয়া বৈরিণা প্রণয়ঃ দুক্তমনুমন্তব্যং, কিং পুনর্জনান্ত ভাবঃ ॥৪॥ পিতৃশ্চ স্বং পুত্রাণাং ভবতীতি আহু লাজানিক্রস্থাত্মপিতৃঃ পুত্রস্থাপন্নমিক্রং যাচিত্রস্তঃ ॥৫॥ বছতিথে দীর্ঘকালে অপকৃতং তৈলোক্যং যজ্জভাগশ্চ বদ্য দঃ ॥৬॥ কিমকর্ত্রবাং কর্ত্রুমণকাং স্যাদিতি যোজ্যম্, রথৈব স্ববুদ্ধা স্বলা কৈবাং কৃতং ময়ি জ্ঞাপিতে উপায়েন রজিরেব স্বর্গাৎ পাতিতঃ স্যাদিতি ভাবঃ॥৭॥ পুর্কার ক্ষত্রেরদ্ধার য়ুঃ-পুত্রদা বংশ উক্তঃ, তদার বংশাস্তরমাহ, ক্ষত্রর্দ্ধায় য়াবংশ স্বাধি ॥৮॥

ইতি ঐবিফুপুরাণটীকায়াং শ্রীধরস্বামিক্কতায়াং চতুথেঁইংশে নবমোহধ্যায়ঃ।

#### प्रभावशायः।

দশমে নাহ্বসাথি যথাতের্বংশ উচাতে। উদ্দীতেনেই সর্বেষাং
বৈর্ফামুপজায়তে। উপথেমে দেবযানীং ব্রাক্ষেণ শর্মিষ্ঠাং গান্ধর্বেথেতাবধ্যম্। ১। জনুবংশো বংশমনুগতঃ শ্লোক ইতার্থঃ। ২।
কাব্যশাপাদিতি। শর্মিষ্ঠায়াং দাস্যাং যথাতিনা পুত্রোৎপাদনং
দেবযান্যা কথিতং অজ্বা জ্ব্দ্দা শুক্রন্য শাপাদকালে জ্বাং
যথাতিরবাপ। ৩। প্রসম্প্রক্রেবচনাদিতি পুনঃ প্রসম্প্রক্রসা
যন্ত্রপাপ, ত্রিন্ ক্রাং সংক্রাম্যিষ্যাস, ত্রিন্ হুণ্সতি, তদীয়ং
যৌবনঞ্চ আক্সাসীতি, তন্মাজ্বরাং সংক্রাম্যিত্মর্থাদ্যোবনঞ্চাদাভুং
যদুমুবাচ। বয়সা যৌবনেন। ৫। চচার বুভুজে। ৬। বিশ্বাচা অক্সা
রসা। ৭। উপভোগতস্ত্রাসনাতঃ। অতির্ম্যান্ বিষয়ান্ অতীব
মেনে অতিশ্বেনাভিল্যভির্বানিত্যর্থঃ। ৮। তভ্চ নির্বেদাং

কামনির্জ্ঞিকারমাছ, ন জাজিত্যাদিনা যাবৎসমাপ্তি। কৃষ্ণবত্ম গ অগ্নিঃ॥৯॥ যদিতি ভৃষ্ণাপুর্জেরশক্যতয়া দু:খ্যেতৃত্বাৎ দোষ-ছাষ্টিং কুর্মন্ তাং ত্যজেদিতি ভারঃ॥১০॥

তহি বিষয়ত্যাগে কথং সুখপ্রাপ্তিস্তরাহ, যদা সর্বভূতের বিষয়ের ভাবং শুগাধ্যাসং পাপকং রাগাদিজনকং ন কুরুতে কিন্তু ভেষু ভৌতিকত্বেন সমদৃষ্টিস্তদা, ঈপ্সিতালাভজন্যদুঃখাভাবাৎ সর্বাদিশঃ স্থখন্যাঃ, দুঃখাভাবে স্থাত্বোপচারাৎ ॥১১॥ নকু সাদ্স্তাজেতি চেৎ । সত্যাং দুর্মাতিভিদু স্যাজামপি দোষদৃষ্টিপরশ্চেৎ ত্যকুং শারোতীভ্যাহ, যা দুস্তাজেতি। স্থানাভিপুর্যাত ইতি পুর্বাজস্যান্ত্বাদঃ ॥১২॥ দোষদৃষ্টিং দর্শান্ ভৃষ্ণায়াঃ কাল-ভোহপি দুষ্পূর্তামাহ, জীর্যান্তীতি দ্বাসাম্॥১৩॥ পুর্বাজং নিগময়ন্ কর্ত্রগ্রধাব্যাতি, তক্ষাদিতি। এতাং ভৃষ্ণাম্॥১৪॥ মগুলিনঃ খগুদেশাধিপান্॥১৫॥

ইতি জীবিফুপুরাণসীকায়াং জীবিস্থামিকতায়াং চতুর্থেইংশে দশমোইধায়ঃ।

## একাদ**েশা ২ ধ**গায়:।

ইতঃ পঞ্চতিরধ্যারৈর্যদোর্বংশো নিরূপ্যতে। মত্রাস্থ্যসূরাদাব্যা হরিরাবিরভূৎ স্থান্ ॥ একাদশেহজ্জুনন্তত কার্ত্তবির্যাহনুর্ব্যতে। যোগেনেশ্বর্যানস্তে:২নে রামেণ বিনিপাতিতঃ ॥ অংশেনেতি। লীলাগৃহীতমৃত্যপহিত্ত্বাদংশ ইবাংশন্তেন স্থ্যমেপেণাবততার ॥১॥ স্থান্ত নিরাকৃতি ব্রন্ধের। নরাকৃতীতি বা পাঠঃ ॥ ২ ॥ অন্টত্রবা তা চ তত্রাজ্যেইতবদি ভাত্রভৌতকালা ন বিদক্ষিতাঃ যত ইদানীম্পি ভ্রাম।খ্যানেন ত্রবাপ্রাপ্তে:। "অন্টত্রবাতা হৈব তব নামাতিত কীর্ত্তনাৎ" ইতি কুর্মোজেঃ ॥ মাহিষ্মত্যাং পূর্যাং দিখিজয়ার্থ-মানতো রাবণস্তেনার্জ্জুনেন বন্ধু স্থনগরৈকান্তে স্থাপিত ইতান্বয়ঃ। কথস্তুতেন? নর্মদাজলাবগাহনক্রীড়ায়াং যদ্মিপানমতিপানং তেন যো মদো মন্ততা তদাকুলেন। এবং হি হরিবংশে জলক্রীড়া-সক্ষার্জ্জুন—বাহুসহস্তবন্ধনার্মদাপ্রতিস্রোতঃ প্রসরাপ্লুতস্পিনিরো রাবণঃ তদভিত্বায় প্রর্জ্বোংজ্জুনেন বন্ধু স্বনগরে স্থাপিত ইতি।

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণটীকায়াং শ্রীধরস্বামিক্রতায়াৎ চতুর্থেহংশে একাদশোহধ্যায়ঃ।

#### मापटमा : भगवः।

দ্বাদশে ক্রেক্ট্রপংজ্ঞস্য যদুপ্ত্রস্য সন্ততি:। বংশকৃদ্বলিতে যত্ত্ব জ্যামঘঃ স্ত্রীজিতাপ্রনীঃ। চতুর্দ্ধশ মহান্তি রক্তানি যস্য সঃ। রক্তানি চাত্র স্বস্ত্রকাতিশ্রেষ্ঠানি ধর্মসংহিতোক্তানি "চক্রং রখো মনিঃ খড়রশ্চম্প্রকৃষ্ণ পঞ্চমন্। কেতুর্নিধিশ্চ সন্তৈব প্রাণহীনানি চক্ষতে। ভার্য্যা পুরোহি তশ্চিব সেনানী রগকৃচ্চ যঃ। পদ্ধ্যশ্বৌ কলভাশ্বেভি প্রাণিনঃ সপ্ত কীর্ত্তিভাঃ চতুর্দ্ধশেতি রক্তানি সর্বেধ্যক্রবর্ত্তিনাম্"॥১

জ্যামঘদ্য বন্ধ্যাপতেঃ অপুত্রদ্য ভার্য্যবশান্ত্রের পুত্রপ্রদ্যাদীদিতি বক্ষান্ কথামাহ, অত্তাদ্যাপীতি থাবৎসমাপ্তি। অধিষ্ঠানং
নিবাদম্ ॥ ৩ ॥ লোলঞ্জলম্ আয়তঞ্দীর্ঘং লোচনমুগলং যদ্য
কন্যারত্রদ্য তথা আকুলবিলাপঞ্চ ভবিধুবং বন্ধুবিমুক্তঞ্চ।
অনুরাগস্যান্থতোহধীনোহস্তরাত্র্যা মনো যদ্য দঃ ॥ ৫ ॥ উদ্বানি
প্রিণ্যামি ॥ ৬ ॥ শৈব্যয়াহ্মনুজ্ঞাতঃ দমুদ্বামীতি নিশ্চিত্ত্বাথ
শৌব্যানুজ্ঞাভাবে কন্যারত্বদ্যা স্মুবাত্ত্রেপ্যদোষঃ ॥ ৭ ॥ অধিষ্ঠানদারং
পুরদারম্ ॥ ৮ ॥ ঈষদুদ্ভামর্থেণ ক্ষুব্রধ্রপল্লবা যদ্যাঃ । জন্যবলাচিত্র্যবিচারিত্রুক্ষরব্দনং যেন দঃ ॥ ১ ॥ নাহং প্রসূত্যপত্য-

বতী, অন্যাচ পুত্ৰেণ বিশিষ্টা তে পত্নী নাভবং। কতমেন স্থতেন নিমিন্তেন সুষাসম্বন্ধেন উপাধিনা বাচ্যা ? অপি তুন কেনাপীত্যা-ক্ষেপঃ I : ০ II আত্মনি রাজ্যি শৈব্যায়া ঈর্ব্যাকোপাভ্যাং কলু-ৰিতং ক্ষুভিতং যদ্ধচনং ভেন মুৰিতো বিবেকো যদ্য তম্ভয়। मूक्रकम् व्यमञ्चावि डार्थमिन गव्हानः उद्भविद्यातार्थम् ॥১১॥ मूर्यार नववधः निक्रिभिजा कल्लिन। १५॥ अनस्रतकः टेनवा। गर्ज-মবাপেত)ল্বয়ঃ। তত্র হেতুঃ, অভিশুদ্ধা যে লগ্নহোরাংশকাবয়বা-ন্তের্জং তথান্তি। অস্ত-দেবতয়োক্তম্কিন্তেন সহকৃতো যঃ শৈন্যারাজাভ্যাং পুত্রজন্মাত্মকঃ আলাপস্তম্য শুণাৎ সাদ্ধণ্যাৎ। অস্তদেবতাখ্য। কাচিদেনতা হি শুভাশুভবচনং তথান্তিতি व्यक्तामत्त्र, उक्त दाणीनाम्रन्त्या नाभर, ब्राट्णतक्तर दशदा, द्राट्णन-বমো ভাগো২ংশকঃ, অবয়বঃ দাদশাদিঃ, এতেযু শুভেষু উক্তং কৃতঞ্চাবশ্যং ভবতীত্যর্থঃ ॥১৩॥ ন চ বিদর্ত্তঃ কণং জ্যেষ্ঠামুপযেমে ? ক্যাস্থ্য সুৰায়াঃ সভাাঃ পুত্ৰা ॥১৫॥ সভ্তা এতে বক্ষামাণান্তৰংশ্যাঃ সাত্তহাঃ ॥ ১৬ ॥

ইতি ঐতিক্পুরাণটীকায়াং এথিরস্বামিরতায়াং চতুর্থেইংশে দ্বাদশোইধ্যায়ঃ।

#### ত্রয়োদশোহধ্যায়ঃ।

ত্রোদশে জ্যামঘদ্য সন্ততে সন্ত্রান্ত্রঃ। সামস্তক্স্য চাথ্যানং প্রসঙ্গাদকুবর্ণাতে। সন্ত্রস্য ভজিনাদ্যঃ সপ্ত পুত্রা বভূরু:॥১॥
তিক্সোত্রাঃ তেবাং নিম্যাদীনাং বৈমাত্রাঃ সাপড্রাঃ॥২॥ তদ্য
বভ্রেঃ চকারাক্ষেবার্ধস্যাপি স্লোকো যশে গীয়তে॥৩॥ দুরাৎ,

দূরে দ্বিং যথা শৃনুমঃ অন্তিকাৎ, সমীপে স্থিতমপি প্রত্যক্ষতরা তথৈব পশ্যামঃ, ন ততঃ কিঞ্চিদপি ভ্যানম্। অতো বক্তমন্ব্যাণাং মধ্যে শ্রেষ্ঠা দেবার্থস্ত দেবৈঃ সম ইতি ॥ ৪ ॥ বল্রোর্চ্দেবার্ধাদপি তাভ্যামুক্দিউমার্বেণ প্রুষাস্তংশিষ্যাঃ ক্রমেণ ষট্ ষ্ট্যাদরোহ—
মৃত্তং প্রাপ্তাঃ। বক্তদেবার্ধাবিতি পাঠে বক্তং দেবর্ধপ্রাসাদ্য ইতি শেষঃ। স এবার্থঃ॥ ৫ ॥ মৃত্তিকাবতং নাম পুরং তত্র স্থিতা স্থা। মার্ত্তিকাবতাঃ॥ ৬ ॥ রফেঃ স্থমিত্রম্বাজিতৌ প্রাবিত্যপঃ। ততঃ স্থমিত্রাৎ ॥ ৭ ॥ সত্রাজিতঃ প্রসঙ্গানমাহ, তস্যেত্যাদিনা যাবৎসমাপ্তি॥ ৮ ॥ যগাবিশেষমুপলক্ষ্যামি তথা কুর্কিতি প্রথমং বরপ্রার্থনা॥ ৯ ॥

স্ধিফ্যং স্থান্ম, অমলেন মণিরত্নেন মণ্ডান্তমেন সনাথকণ্ঠতয়া অলফুত্তকপ্তয়া ॥ ১১॥ বিশ্রকাঃ নিঃশঙ্কাঃ ॥ ১২ ॥ বৈজানিবে-্ শনে স্বগৃহে চক্রে স্থাপয়ামাস ॥ ১৩ ॥ মণিরত্নের মণ্যুক্তমের প্রবরং শ্রেষ্ঠং কনকস্রাবকস্বাধ। ভারপ্রমাণং গণিতশাস্ত্রোক্তম্ "মাৰো দশাদ্ধি গুঞ্জঃ বোড়শমাসে নিগদ্যতে কর্ষঃ। স সুবর্গত স্থ বৈতিত্ত-রেব পলং চতুর্ভিশ্চ। তুলা পলশতং প্রোক্তং ভারঃ ম্যাদ্বিংশতি-স্তল।' ইতি ॥১৪॥ উপদর্গো রোগাদিঃ ॥ ১৫ ॥ তত্ত্রবরলকং শুভদ-মপি ভগবল্লিপ্সাভঙ্গাৎ বহুর-র্থপ্রদং জাতমিতি বজ্বাহ, অচ্যু-ভোহপীতি ॥:৬॥ কৃষ্ণস্যাবগতো রত্নে লোভো যেন সঃ ॥১৭॥ ्की-ভূনং ক্রীড়াসাধনম্ ॥১৮॥ কর্বাকর্বি কর্বে কর্বে। কর্ব্যাইতি পাঠে কর্ণ পরম্পার্য ই তার্থঃ॥১৯॥ সিংহপদদ শনেন কৃত। পরিশুদ্ধিয়সা সঃ। मिश्टितित প্রদেনো হতো न कृष्किति जनशाम खाउँ चौद। তথাপি মণিরত্বলোভাৎ সিংহপদমনুসদার ৷ ২০ ৷ উল্লাপয়স্ত্যা আকাঞ্জাজনকং বচনমুল্লাপনং তৎ কুর্বস্তাঃ॥২১॥ তদেবাহ, সিংহঃ প্রদেনম্ ইতি I22I লক্ক: সামন্তকস্যোদন্তে বাৰ্ত্তা যেন সং I শর্মসমন্তকোহন্তরিতি পাঠে জ্ঞাতঃ সামন্তকঃ যেন সঃ,অন্তঃপ্রবিষ্ট ুইত্যর্থঃ। জাজলামানম্ভিপ্রকাশমানম্॥ ২৩ । তং কৃষ্ণং সাম্নতক-

স্যাভিলাবসূচকং চক্ষুর্যস্য তম্॥২৪॥ তল্পিজঃ ক্ষেনির্গমম্। ব্যা-কেপে। বিলম্বঃ। ক্তাধাবসায়াঃ ক্তনি চয়া:॥২৫॥ উপরতক্রিয়া-কলাপং মৃতক্রিয়াসমূহং আদ্ধোদিকম্॥ ২৬॥ বলপ্রাপপ্তিরভূ-দিতি প্রসঙ্গাৎ প্রান্ধেশংসা উক্তা। তন্মাদবশ্যং প্রাদ্ধাদিকং কর্ত্তব্যমিতি ভাবঃ ॥ ২৭ ॥ কিমুতাবনিগোচরৈর্মানুষ্টেয়ন্ততাপি নরা-ণামবয়বভূতিত ক্ষভূতিতঃ ক্রীড়াসাধনৈর মাদিলৈ গ্রেড্র ন শক্য ইতি ' কিং পুনর্ব ক্রব্যমিত্যর্থঃ ॥ ২৮॥ অবনের্ডারস্যাবতারো যন্মাৎ তমা-জানমথিলং জন্মাদিসহিতম আচচকে আখ্যাতবান্ । যদা ভারাব– **छातर कृ**ठर कतियामानकाथा। ज्वान् ॥ २৯॥ यथा जिलामिस्सर-যুক্তকরেণ মর্দ্ধয়ন্ আন্তস্য অমমপনয়তি কশ্চিৎ তথা প্রীত্যাঞ্জিতং मुक्ति उर यूक्त यद कत्र उत्तर जमा न्यू मेरिन देन न र का खुरखर विशेष-যুদ্ধশানং চকারেত্যর্থঃ ॥ ৩০ ॥ কন্যাং প্রাহ্যামাস দক্তবান্ ॥ ৬১ ॥ অ স্থাধনায় লক্ষ্মপি মণিং কচিল্লিধায়াগত ইতি দুর্জ্জনবচন-নিবারণায় 🖟 ৩২ 🛭 দিউটা দিউটা ভদ্রেং ভদ্রম্ ইত্যানস্কোপুক্ষং 🖟 ৬৩ প্রসঙ্গাগত-সামন্তকাখ্যান-জাম্বর্তাবিশাহবৎ, সত্যভাষাবিবাহমাহ. সত্রাজিতোহপীতি। অভূতমলিনং মিথ্যাদুর্যশ: ॥৩৪॥ ক্ষে মিথ্যা-দোষ রোপে ফলং বজুমাহ। তাঞ্চেত্যাদিনা মণিরত্নমপত্তমিত্য-স্তেন। অভ্যুপপৎস্যামঃ সাহায্যৎ করিষ্যাম: । যদি বৈরানুবন্ধমপ্য-চ্যুতঃ করিব্যতীতাঙ্গীকৃতত্বাদ্চ্যুত্তবলভদ্রাভ্যামুভাভ্যাৎ বৈরানু-বল্পে সাহায্যাকরণেহপি ন দোষ ইতি ভাবঃ ॥ ৩৫ ॥ কুফ্ট স্যান্যর্ত্ত গ্যনং বিন। সত্র'জিতবধাসম্ভবাৎ তৎপ্রসঙ্গাহ, জতুগৃহেতি। সর্বজ্ঞে'হপি কৃষ্ণঃ কুল্যার্থমাগভশ্চেন্তহি পাশুবা মৃতা এবেতি मूर्याधिनमा उपायमापियञ्जरेमथिलार्थर कूरलाहिउकत्वांत्र वातवा-ৰতং হস্তিনাপুরং গত ইত্যর্ধঃ॥ ৩৬॥

ইদানীমর্থনিমিস্তান্ বহুননর্থান্ বক্ষান্ ক্ষণসা পুনরপি মিথা। ভিযোগসঙ্গমাহ, পিতৃবধামর্বে ভাাদিনা মারকং মাভূদিভাস্তেন। অসা এতৎকর্ত্বাবহাসনা পরিভবঃ॥৩৭॥ পরিভূফীস্তঃকরণোহপি ু

ইতাসায়িং ভাবঃ। মদাজালজনফলমেতাছশমেব। তস্য চা-পুত্রদ্য তত্মণিরত্রং সভ্যভামায়া এবেতি মম মদ্বিদ্বিণী অব-হাসনা। সত্রাজিতস্য বধে কথং ভগরতোহবহাসনেত্যত আহ, অনুলজ্যোতি ৷ অত্র পাদপস্থানে ভগবান, পক্ষিস্থানে সত্রা-জিতঃ ॥৩৯॥ আবাভ্যামাবয়োঃ ॥৪০॥ ভগবতা চক্রিণা ক্লেন, সীরিণা \* বলভদ্রেণ চ সহামরবরাণাং মধ্যে কন্চিদ্যোদ্ধ্র সমর্থঃ, ইত্য-স্বয়ঃ। ত্রিবিক্রমাবতারে পাদপ্রহারেণ পরিকম্পিতং জগজয়ং যেন। প্রবলরিপুচক্রেমু শক্রদৈনােমপ্রতিহতং চক্রং যস্য তেন চক্রিণা, নীরিণা চ কিন্তুতেন? মদম্দিতনয়নাভ্যাং বিলোকিতেনৈব অরিবলং বিনাশয়তীতি তথা তেন, অতিগুরবো মহাস্তো বৈরিণ এব বারণাঃ তেষামাকর্ণনোনিক্ষ,তো মহিমা যেন তথাবিধঃ উরুমহান্ সীরো হলমদ্যাস্তীতি তথাভূতেন ॥ ৪১ ॥ সামস্তকমণিন্যাসে বিদিতে ভগবান্ জ্ঞাস্যতি, সত্রাজিতবধে অক্রম্যাপি সাহায্যমন্তীতি, 🕈 তন্মাভূদিত্যক্তং, যদ্যস্তায়ামপীতি॥ ৪২॥ অতুলবেগাম্ অতি-সমর্থাম্ ॥ ৪৩ ॥ বাহ্যানা বহ্নায় প্রের্যানা ॥ ৪৪ ॥ লোকে হি সর্বস্য সর্বত ধনার্থমবিশ্বাস ইতি দর্শয়িতৃং সর্বজ্ঞোহপি ভগবান্ বলদেবং প্রতি পুনরাহ, অত্তৈবেতি । ৪৫ । তং জীকুফমাকিপা তিরস্কৃত্য ॥৪৬॥ প্রাসঙ্গিক মাহ, যাবচেতি। অশিক্ষত শিক্ষামূ ৺<sup>৳</sup>অকরোৎ ∥৪৭∥ তদেবং সর্বাক্তয়োঃ **ঐাকৃষ্ণবলভত্র**য়োঃ মণ্যথে भेलशां निकर ভक्त मांकृतमा ह छाचा दूस्थाय मग्र श्रामानश धमानाय अनुर्भागार्थियात्राक्तम् । वना जानामानामारः, वर्षवायाजि । সংপ্রত্যায় শপথাদিন। বিশ্বাস্য ॥৪৮॥ সুবর্ণধ্যানপরঃ এতা-বদ্ভিঃ সুবর্বিঃ কিং ক্রিয়ত ইতি বিচারপরঃ ॥ ৪৯॥ সবনগড়ো मीकिटो | eo | मतरका जनमाती | es | अथ तामामीन १ करक সামস্তকাপহারশকানিরাসং বজুমাহ, অথাক্রেড্যাদিনা যাব-ুদধ্যায়দমাপ্তি॥ ৫২॥ উরগারিকেতনো গরুড়ধকঃ। যদ্যত ইদং

প্রত্রাপদ্রবিগ্ননম্ এতলিমিন্ত্রালোচ্যতামিত্যর্থঃ ॥ ৫৩ ॥ শ্বক্ষণান্দিন্যোশিহাত্যোজিন্তৎপুদ্রাক্রমহিমজ্ঞাপনার্থা ॥ ৫৪॥ গর্জে কন্যা পূর্বমাসীদিতি নিশ্চয়ো জ্যেতিঃশাস্ত্রাদিনা॥ ৫৫॥ এবং পূর্ব্বোজ্ঞা গুণা যস্য মিথুনস্য তন্মাৎ ॥ ৫৬ ॥ ইতি পূর্ব্বোজ্জন গুণা যস্য মিথুনস্য তন্মাৎ ॥ ৫৬ ॥ ইতি পূর্ব্বোজ্জন প্রকারেণাতি গুণবত্যক ব্রে ইতো নিক্ষান্তত্ত্বা নিমিন্তে সতি অপরনিমিন্তান্মরণেনালং ব্যর্থমিত্যর্থঃ ॥ ৫৭ ॥ কৃষ্ণান্দিন্ত্রামানেত্যত্বো ভগবতন্ত্রস্য সর্বজ্ঞন্য তহপরামর্বেণ মণিসন্তাবনং লোকর্ত্তানুসরণনাত্রং ন তন্ত্বতঃ, অন্যথা সমন্তমঙ্গলমূর্ত্বে ভগবতি ক্ষে সতি তদ্রিক্টার্শনিস্পি দূর্ঘটমিতি । তথাই শুক: "ইত্যক্ষোপদিশন্ত্যকে বিন্যুত্য প্রাপ্তদাহত্য । মুনিবাসনিবাসে কিং ঘটেতারিক্টার্শনিম্॥" ইতি । তন্মান্তেলোকানুসরণং পর প্রত্যায়েন স্থাপবাদ্পরিহার – পর্মেবেতি ॥ ৫৮ ॥

অল্পোপাদানং স্থল্পজীবিকাদ্রবাম্ ৷ অন্যৎ প্রয়োজনং বিবাহাদিকমুদ্দিশা সমাজং সমুদায়মচীকরৎ কার্য়ামাস ৷৷ ৫৮ ৷৷ যদর্থং যাদবাঃ সমাত্রভান্তদুপন্যস্য যুক্তমযুক্তং বেতি পৃষ্ট্যা ৷৷৫৯৷ দানপতে! ইতি সম্বোধনং সাকৃত্রম্ ৷৷৬০৷৷ ধারণোপক্রেশেন ক্লেশহেতু—নিয়মেন ৷ ভোগেরু অসঙ্গি মানসং যস্য সোহহং স্বস্থপ্য কলাং লেশমপি ন বেদ্মি ৷৷৬১৷৷ তর্হি কিমিতি ময়ি নোক্তং? তত্রাহ, এতাবমাত্রং স্থপমপি অশেষরাক্ষোপকারকমপি অয়ং ধার্য়তুং ন শক্ষোতীত্যশক্তং মাং ভবান্ মংস্যতে ইতি ভিয়া আত্মনা ময়্যাত্রতাং নোদিতঞ্চ ৷ অন্যাশেষরাষ্ট্রেতি পাঠেইস্য রাজ্ঞঃ উপ্রসেন—স্বোত্র্র্যার্গ ৷৷ ৬২ ৷৷ কনকসম্পাকং স্থবর্ণসংপুটক্ম্ ৷৷ ৬১ ৷৷ আত্মনং সভা ৷৷ ৬৪ ৷৷

মন বলভদ্রসাক্ষনা সহ অয়ং মণিঃ সামান্যঃ সাধারণ ইতি অচ্যু-ভেন রুফেনৈব সমস্থিচ্ছিতঃ স্বীরুত ইতি হেতোঃ সস্পৃহে ২ ভবৎ। ইচ্ছের্লিঙ্গধাতোঃ ক্তঃ ॥৬৫॥ চক্রয়োরস্তরাবন্থি ত্যিব সংশয়িত্য।— আনং মেনে। গোচক্রাস্তরেতি পাঠে শক্টচক্রবলীবর্দ্ধাস্তর্গতমি- বেত্যর্থঃ ॥৬৬॥ নান্যস্য এত জ্রয়ভিন্নস্য ॥৬৭॥ ততঃ কিমত আহ, এতদিতি। আধারং ধারকমেব হস্তি ॥ ৬৮॥ ধোড়শজ্রীসহস্রপরিগ্রহাদিতি ব্রহ্মচর্যাং নৈব ঘটত ইতি কথনার্থং হেতুঃ ॥ ৬৯॥ ততঃ
প্রভৃতি প্রকটেনেতি বলভদ্রসত্যভাষাদ্যভাত্যভাবাৎ। ভক্তে
আক্রুরে ভগবতা স্থাপিতমিতি লোকভয়াচ্চ মণিং গুপুং ভগবদসুমত্মবোধারয়ৎ। ইদানীমভিশন্তিপরিহারায় স্বয়নেব কেবলং
প্রক্টীকৃত্মক্রেরা ধৃত্বানিত্যর্থঃ॥ ৭০॥

মিগ্যাভিশক্তিকালনাং মিথ্যাভিশাপনিবর্ত্তনোপায়ভূতং হরিল্চরিতং যঃ সারতি, তস্য মিথ্যাভিশাপোন ভবতি । কৃষ্ণেন সভজে মিণি: স্থাপিত ইতি কৃষ্ণাভিযোগপরিহারায় পূর্বাং শুপ্তং দধার, অনেনিবাভি প্রায়েণ শতধন্তনা মণ্ডো সমর্প্যমাণে যদ্যন্তাবস্থায়ামিপি নান্যায় কথ্যসি তহ্যাদাস্যামীভূযবাচ, ন তু সর্বাজ্ঞ-কৃষ্ণবার, যজ্ঞকবচ-ধারণঞ্চ যাদবভয়াদেব ন তু কৃষ্ণভয়াং, অন্যথা মণিনা সহ সভাপ্রবেশো ন ঘটতে। অতোহক্রে মহাভাগবতে মণি-ক্ষণ্ হাদিকপানমভিমন্দমিভূয়েপক্ষণীয়মিতি ভাবঃ ॥৭১॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণটীকায়াৎ শ্রীধরস্বামিক্তায়াৎ চতুর্থেহংশে ত্রয়োদশোহধ্যায়ঃ 1

# ठञ्जल्ला २ था यः।

ক্রমাগতা রফিবংশাঃ শৈনেয়াদ্যাশ্চতুর্দ্ধশে। বর্ণান্তে শিশুপালস্য সাযুজ্ঞাত্র স্থচাতে ॥ সত্বত্যা সপ্তমঃ প্রো রফিত্তৎপুলো অন-মিত্রশিনী। তত্রানমিত্রস্য নিম্নতঃ তস্য প্রদোন-স্ত্রাজিতাবিত্যেকো বংশ উক্তঃ। তত্র প্রসঙ্গাগত-স্যাস্ত্রকোদাহরণমুক্তম্, ইদানীমন-মিত্রাবুজস্যান্যস্য শিনের্কংশ উচ্যতে। অন্মিত্রস্যান্ত্রজ ইত্যা- দিনা ইতি শৈনেয়া ইত্যন্তেন। শিনের্বংশঃ শৈনেয়াঃ ॥১॥ প্রশ্চান-মিত্রস্য বংশান্তরমাহ, অনমিত্রস্যেত্যাদিনা বহবোহতবল্লিত্যন্তেন। চিত্রক্স্য শ্বকক্স্যানুজ্স্য পৃথুপ্রমুখাঃ পুরাঃ॥২॥ অন্ধ্রুম্য সাত্তপুত্রস্য কুকুরাদ্যঃ পুরাঃ॥৬॥

তত্র কুক্রস্য বংশমাহ, কুকুরাদিত্যাদিনা উপ্রসেনতনুজা ইত্যান্তেন। ভবসংজ্ঞলৈব উপনাম চন্দনোদকদুন্দুভিরিতি ॥ ৪ ॥ তরু—
জাঃ কন্যাঃ ॥ ৫ ॥ ভজমানস্য সাত্তপুক্রস্য ক্রমিককণর্ফ্য ইত্যেকো
বংশ উক্তঃ, ইদানীং তলৈয়েব বংশাস্তরমাহ, ভজমানাদিত্যাদিনা
যাবদধ্যায়সমাপ্তি ॥ ৬ ॥ হাদিকাৎ কৃত্বর্ম-শতধনু-দেবমীচুষাদ্যাঃ
পুক্রা বভূবুঃ। দেববাহ দ্যা ইতি পাঠে তু দেবপদেন দেবমীচুষ
ইত্যেবোক্তঃ ॥ ৭ ॥ দেবমীচুষ্স্য পুক্রো যঃ শূরস্তস্য মারিষা নাম
পদ্মভূদি তার্থঃ ॥৮॥ আনকাঃ পটহাঃ দুন্দুভ্যো ভের্যাঃ ॥৯॥ কানীনঃ
কন্যকাবস্থায়াং জাতঃ ॥ ১০ ॥

অনাচারঃ স্বপুত্রাদিদ্বেষঃ, বিক্রমঃ শোর্যাং, তাভ্যাং সম্পন্নঃ ॥১১
অক্ষতাঃ পূর্বা বীর্যাদিশুলা যস্য সং। বীর্যাং-বলং, শোর্যামুৎসাহঃ,
পরাক্রমঃ প্রভাবঃ, সমাক্রাস্তাঃ বৈলোকোশ্বরা যেন তথাভূতঃ প্রভাবো যস্য সং॥ ১২॥ বহুকালমুপভূক্তং ভগবৎসকাশাদেবাপ্তশরীরপাতোদ্ভব-পুণ্যকলং যেন সং॥ ১৩॥ অবাস্তরাম্ব্যভ্যান্ত্র
শব্দ্যা পুনরুজির্ন দোষায়॥১৪॥ ভগবদ্দেষাদ্পি সাযুক্তামুপপাদয়তি, ভগবান্ হীতি। দিব্যস্থেইপারুপ্যস্থানং তথা প্রয়ন্ত্বতীতি॥১৫॥

ইতি ঐবিষ্ণুরাণটিকায়াং ঐধরস্বামিরুতায়াং চতুর্থে২ংশে চতুর্দ্দেশে২ধ্যায়ঃ।

#### शक्षम् । भारती स्वार्थः

হরের্জ্জনিঃ পঞ্চদশে সংখ্যানুজিশ্চ যাদনে। সাযুক্যং শিশুপালস্য সোপপজ্ঞিকমুচ্যতে। বিষ্ণুনৈব নিহতত্বাৎ প্রাগ্জন্মন্যেব
কিং ন মুক্ত ইতি, হিরণ্যকশিপুত্ব ইত্যাদিপ্রশার্থঃ। ১ । বস্তশক্ত্যাভগবন্নামকীর্ত্তনধ্যানাদিনা ক্ষীণকল্মস্য তৎসাক্ষাৎকারেবৈগবান্যমা
মপি মোক্ষঃ, ততঃ শিশুপালত্বে চ তৎসম্ভবাৎ স মুক্তো নাতঃ
প্রাগিত্যন্তরার্থঃ। সনকাদ্যনুগ্রহাৎ তৃতীয়জন্মন্যেবাবশ্যং ভাবিত্বাল্মোক্ষ্যা তত্ত্বিব তজ্জেত্সম্ভবমাহ, দৈত্যেশ্বরস্যেত্যাদিনা কিম্ত্র
সম্যক্ ভক্তিমতামিত্যন্তেন ॥ ২ ॥ রজোন্তেকেতি সন্ধ্রিরার্থঃ। নিরভিশ্যপ্রেণ্যত্যাদিরূপা রক্তম উল্লেকেণ প্রেরিতা একাপ্রা ভ্যাত্রবিষয়িনী মতির্যন্য সং। ভদ্ভাবনাক্রপাৎ যোগাৎ তত্তাহ্বাপ্তবধ এব
হেতুর্ঘস্যান্তামথিলত্ত্রলোক্যমধ্যে আধিক্যধারিণীমতিশয়িতাং
ভোগসম্পদ্যবাপেত্যন্তর্যঃ। ৩ ॥

অতস্থান্ মনসোহনালম্বীক্তেইবিষয়ীক্তে পরব্রন্ধভূতে তদা
লয়ং সাযুজ্যং নাবাপেত্যনুষক্ষঃ ॥ ৪ ॥ দশাননত্ত্বপি অস্য দাশরথির পদর্শনমের পূর্বমাসীৎ। বিপদ্যমানস্য চ তস্যাস্তঃকরণে
মানুষবুদ্ধিরেবাভূৎ, নায়মচ্যুত ইত্যাসজির্নিক্ষয়েইভূদিতার্থঃ ॥ ৫ ॥

""অচ্যুতবিনিপাতনমাত্রাৎ ফলং শ্রেষ্ঠং জন্ম ঐপ্রয়াঞ্চাব্যাহতং কেবলমভূদিতি ॥ ৬ ॥ তদন্তে চ মোক্ষং সহেতুক্সাহ, তত্র জিত্যাদিনা
লয়মুপ্যথাবিত্যন্তেন। তত্র শিশুপালত্বে অচ্যুতনামামুক্ষার্ণমকরেখদিতি সম্বন্ধঃ। কিং বিশিক্ষানাং ভগবন্ধামকারণানি কেশিকংস্বধ্বচক্রধারণাদীনি যান্যভবন্ তৈঃ কারণৈঃ প্রস্তুতিনিমিন্তঃ ক্রতানাং
সঙ্কেতিতানাং কেশ্ব–কংসধংসি-চক্রপাণি–প্রভৃতীনাং সংতর্জ্বনং
বাক্তাড়নং, তদনেন ভগবন্ধামকীর্ত্রনার্জ্বক্তা ॥ ৭ ॥

সাকারধ্যাননিষ্ঠামাহ, তচ্চ রূপমিতি। তদ্রপমটনাদিযু আত্মনঃ

শিশুপালস্য চেত্রসো নৈবাপ্যথাবিত্যন্তরঃ। আত্মনো বুজেশ্চেত-সশ্চ নৈবাপ্যথাবিতি চার্থঃ ॥৮॥ তত্ত্বচ কীর্ত্তনধ্যানাভ্যাং শুদ্ধান্তঃ-করণ্স্য মোক্ষহেতৃ-সাক্ষাৎকারমাহ, তত ইতি। আক্রোশেঘাক্ষে-পোক্তির ভগবতা অন্তং ক্ষিপ্তং যথ চক্রং ত্স্যাংশুমালাভিক্ত-জ্বলম্॥৯॥ শিশুপালমুক্তিং নিগ্ময়তি, এতদিতি। স্থরাদি-দুল্ভং ফলং মুক্তিরপম্॥১০॥

শিশুপাল-জন্ম প্রসঙ্গানতং সমাপ্য প্রকৃতবংশমাহ, বস্থুদেবসোতি।
পৌরবী পুরুবংশোদ্ভবৈতি রোহিণ্যা বিশেষণম, অতএব পৌরবা।
ন পৃণগুংশকীর্ত্তনমু ॥ ১১ ॥ রোহিণ্যাঃ প্রাধান্যেন বলভদ্রাদীন্
বংশানুক্তা অন্যানপি বংশানাহ, ভদ্রাশ্বেতি। আদ্যাশব্দেন পিশুরিকোষীনরয়োগ্রহণম্। অত্র পৌরব্যা ইতি পাঠেহপি রোহিণীনামা ইত্যর্থঃ। এতেষামেব রোহিণ্যান্তনয়া দশেতি হরিবংশে গ্রহগাং। কুলজা বংশাঃ॥ ১২ ॥ কীর্ত্তিমদাদীনাং প্রাণ্ড্রম্বর কীর্ত্তনমকৃতনামামেব তেষাং কংসেন হননাং॥ ১৬ ॥ রোহিণ্যান্তনয়্ম সতো দেবকীপুত্রত্বং বলদেবস্য সমর্থয়িতুমাহ, অনন্তরক্ষেতি। দেবকীজ্বরাদাক্ষ্য রোহিণীজ্বরং নীতবতী ॥১৪॥ অনেনোপাধিনা সম্বর্গসংজ্ঞাং নির্ব্বক্তি, কর্ষণাচ্চেতি॥ ১৫॥

সকলং জগদেব মহাতক্ষন্তস্য মূলভূতঃ, ভূতা বর্ত্তমানাঃ অতীতাল ভবিষ্যন্তল আদিশকাৎ তন্তলোকবর্ত্তিনা মহান্তল্চ সকলা যে স্থবাস্থবাদয়ন্তেষাং মনসামপাগোচরঃ। অক্তাবো ব্রহ্মা তৎ প্রমুখিরীশ্বাবভারক্তিপঃ অনলপ্রমুখিঃ দেবৈশ্চ প্রসাদিতো বাসুদেবো দেবকীগর্ভে সমবভভার ইতাশ্বয়ঃ ॥ ১৬ ॥ মানঃ সন্মানঃ, অভিমানো মহিমা, তৎপ্রসাদেন বর্দ্ধিতো ভৌ ষস্যাঃ সা যোগ-নিদ্রো বশোদাগর্ভ্তমধিন্তিত্বতী প্রাপ্তঃ ॥ ১৭ ॥

তিশান্ জায়মানে মুপ্রসন্ধানিতাচক্রাদিগ্রহমিত্যাদি-বিশেষণেন বিশিষ্টং জগদভবদিত্যন্ত্রঃ ॥১৮॥ আমু সর্বাম্ক অষ্টাযুতানি শক্ষ-ঞ্চেতি ৷ এতেন ক্ষেণ্যাদীনাম্টপনত্নীং দশ দশ পুতা জ্ঞেয়াঃ। অন্যানাং যথাসন্তবং পুত্রা জ্বোঃ। অনাদিমানাদিমন্তিমঃ ॥ ১৯॥ চরিতার্থো যথার্থো ॥ ২০॥ অফালীতিলক্ষ্যাধিক-কোটিত্রমপরি-মিতাশ্চাপযোগ্যায় চাপশিক্ষামু গৃহস্থিতা আচার্য্যাঃ শিক্ষকাঃ। এক আচার্য্যো বসূন্ পাঠয়তীত্যতঃ শিষ্যা অধিকাঃ কৃতবিদ্যা বালাশ্চ ততোহধিকা ইত্যতো যাদ্বা অসম্খ্যাতা ইত্যর্থঃ॥ ২১॥

যত্র যদুকুলে সম্বানম অযুতানাং লক্ষেণ সহাযুতং দশোন্তরং শত কোটিঃ তদপি শতাধিকমান্তে অধিকসা জ্ঞাতুমশক্য—
বাৎ সম্বানং নাস্তীতি ভাবঃ । অযুতলক্ষেণান্তে সদাহক ইতি
পাঠে আহুক উপ্রসেনপিতা অযুতানামযুত্ঞ তেন দশোন্তরকোটিমিতেন বিশিষ্ট আন্ত ইত্যর্থঃ ॥২২॥ যাদবানামসম্বাদ্ধে দুর্জ্জয়েরে চ
হেতুমাহ, দেবাস্থরেতি। দেবাস্থরসংপ্রামে দেবৈর্হতা ইত্যর্থঃ ॥২৩॥
একাভাধিকং কুলশতং র্ফি-মধু-সান্তনেত্যাদিভেদেন ॥ ২৪॥
প্রমাণে কার্য্যাকার্য্যনিয়মে প্রভুত্বে পালকত্বে চ নিদেশস্থায়নঃ
বচনস্থা বভূবুঃ। বর্ধুরিতি পাঠে পুত্রপৌত্রঃ র্দ্ধিং প্রাপ্তার্থঃ ॥২৫॥
ইত্যর্থঃ ॥২৫॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণদীকায়াং শ্রীধরস্বামিক্নতায়াৎ চতুর্থেইংশে পঞ্চদশোইধ্যায়ঃ।

#### ষোড়শোহধ্যায়ঃ।

যোড়শে তুর্বসোর্বংশো মরুদ্ধান্তোহনুর্ন্যতে। যযাতিশাপাৎ দুয়া-ন্তং পৌরবং যঃ সমান্থিতঃ ॥ এষ যদোর্বংশঃ এবং যদুবংশং বিস্ত-রমভিধায় তদনুজন্য তুর্বসোর্বংশমাহ, তুর্বসোরিতি যাবৎসমান্তি। যযাতিশাপাদিতি। অতা যদাপি রাজ্যানহ দ্বরূপ এব শাপঃ প্রতী-

٠,۶

য়তে তথাপি তুর্মুং প্রতি রিশিয়া সম্তত্যুচ্ছেদলক্ষণঃ শাপো২পীত এব জায়তে ॥ ২

ইতি **শ্রীবিষ্পুরাণটাকায়াং গ্রীধরস্বামি**ক্নতায়াং চতুর্থেইংশে যোড়শোইধ্যায়ঃ।

#### मञ्जदमार्थायः।

ক্রছোঃ সপ্তদশে বংশঃ সংক্ষেপাদন্বর্ণ্যতে। স্লেচ্ছানাং য উদীচ্যানামাধিপত্যমথাকরোৎ। জ্যেষ্ঠানুক্রমবশাৎ তুর্বস্থকনিষ্ঠম্য শর্মিষ্ঠাপুত্রম্য ক্রহ্যের্কিংশমাহ, ক্রহ্যেরিতি॥১॥ স্লেচ্ছানামিতি স্লেচ্ছাধিপত্যকথনাদ্যেযাতিশাপপরিণ্যােশ স্লেচ্ছতাবঃ স্চিতঃ॥২

ইতি ঐবিফুপুরাণটীকায়াৎ ঐধরস্বানিক্তায়াৎ চতুর্থেহংশে সপ্তদশোহধ্যায়ঃ।

#### অফ্টাদশোহধ্যায়

অষ্টাদশেহবুজস্যানোকংশঃ সমসুবর্ণিতঃ। প্রাতিলোম্যাৎ সমুৎপত্তেযোহসৌ সূভস্মাগতঃ॥ বলেঃক্ষেত্রে ভার্য্যায়াং জাত-স্থাৎ বালেয়ম্॥১॥

তন্নামেতি তেষামঞ্চানাং নামানি যাসাং সন্থতীনাং তাসাং সংজ্ঞা যেষাং তে বিষয়া দেশা বভুবুং ॥ ২ ॥ ততশ্চিত্রগ ইতি যস্য পুত্রো রোমপাদসংজ্ঞাে দশরণাে জজ্ঞে যথ্যৈ অজপুত্রো দশরণঃ স্থকনাাং দুহিত্তে যুযোজ, দস্তবানিত্যর্থঃ ॥ ৩ ॥ চম্পাং পুরীম ॥ ৪ ॥ প্রাতিলােম্যেন ব্রহ্মক্তর্যােরস্তরালে সক্ষরে সম্ভৃতির্জ্ম যস্যাস্তস্যাং সূতায়ানিত্যর্থঃ । "ব্রাক্ষণাং ক্ষ্তিয়াৎ জাতঃ সূতঃ' ইতি শা,তেঃ অতো মাভ্বদর্শসঙ্কর। ইতি বচনাদিজয়ঃ সূত এব, অভক্ত কর্নোহপি ভদংশ্যত্বাৎ সূত্রত্বন খ্যাতঃ Icl

মঞ্যাগতং কার্চপিঞ্চরন্থং পৃথ্যা কুন্তা। অপবিদ্ধং কন্যাব-স্থায়াং জাতত্ত্বাৎ লজ্জ্বয়া পরিত্যক্তং কর্নং পুত্রমবাপ। 'মাতাপিছ-ভ্যায়ৎস্কীং তয়োরন্যতরেণ বা। যং পুত্রং পরিগৃত্বীয়াদপবিদ্ধঃ স উচাতে" ইতি স্মৃতেঃ॥ ৬॥ ইত্যেতে অঙ্গাঃ অঙ্গবংশ্যাঃ॥ १

ইতি ঐবিফুপুরাণটীকায়াং **এধরস্বামিরুতা**য়াং চতুর্থেহংশে অফাদশোহধ্যায়ঃ।

# উনবিংশোহধ্যায়ঃ।

ভনবিংশে ক্রমপ্রাপ্তঃ পুরোবংশো নির্মপ্যতে। দুয়ুতাদ্যত্ত ভরতো যনামা ভারতান্তিন ॥ ঋতেয়ুরিত্যাদিশকাঃ প্রথমৈকবচনাস্তানুকরণান্যেতানি নামানি বেবামাত্মকানাং তে ইত্যেতে রোদ্রাম্যাত্মকাই ইতি পাঠঃ হুগমঃ ॥>॥ দুয়ুন্তো মৃগ্যার্থমরণ্যং গতো বিশ্বামিত্রান্মেনকায়াং কাতাং শকুন্তলাং নাম কন্যাং কণুন্ত শ্রেম স্তুট্টা গান্ধর্বেণ বিবাহেন সঙ্গমা গর্ভমাধায় স্বপুরং গতঃ সর্বং বিস্মার। তাঞ্চ জাতপুত্রাং কণুপ্রহিতেন শিব্যোণানীতাং ম্মৃত্যাপি লোকাপবাদভয়াদস্বীকুর্বন্তং দুয়ুন্তং প্রতি দেবৈর্গান্তোহয়ং শ্লোকঃ, মাতেতি। ভন্তা চর্মপুটকং, তৎস্থানীয়া মাতা বীর্যাধারমাত্রং কিছ্ পুত্রঃ তদংশভূত-বীর্যোপাদানত্বাৎ, আত্মা বৈ জায়তে পুত্র ইতি বচনাচ্চ। অতঃ পুত্রং ভরস্থ বিভৃহি, শকুন্তলাঞ্চ নির্মেবাং মাবনংস্থা ইতি ভরতনামনিক্রজিরপি ॥২॥ কিঞ্চ রেভোধাঃ রেভ্সাধীয়তে বিধীয়তে রেভোধাঃ কর্মণ্যহন্। ঔরসঃ পুত্রোহয়মক্ষরাৎ নরকাৎ তত্তম্থ পিতরম্ উময়তি উর্জং স্বর্গং নয়তি। যথা রেভোণ

ধাং রেডংসেক্তা তং-পুত্রম্ উন্নয়তি। ততঃ কিন্ । অত আহি, জং
জ্বা ভরতক্ষ রেতোধাঃ রেডংসেকা ইতি সত্যমেবাহ, অতে। ভরস্বেতার্থঃ। নামনিরুক্তির পৈকার্থপরজাৎ স্লোক ইত্যুক্বচন্মবিরুক্তম্য্যা

নৈতে পুত্রা মমানুরূপা মংসদৃশা ভবস্তীতি ভরতেনোজান্তেবাং মাতরোহ্ সংপুত্র মাতৃত্বেন বেণমাতরমঙ্গ ইবান্মান্ পরিভাজ্য বনং বাস্থাতীতি পরিভাগভয়াৎ তান্ পুত্রান্ জন্ম মাতিতবভাঃ ॥৪॥ বিভণে বার্থে সভি। দীর্ঘতমসভি। অত্রেয়ং কথা, রহক্পতের গ্রন্থা উত্থাস্য মমভাখ্যায়াং ভার্যায়াং রহক্পতিঃ কামাভিভূতো রেভাহ্ হজ্ঞ । ভচ্চ গর্ভং প্রবিশং গর্ভস্থিতেন স্থানসুক্ষোচভয়াৎ পার্ম্যালাভেনাপাস্তং বহিঃ পভিভমপি অমোঘবীর্য্যভয়া ভ্রন্নাজনামা পুত্রোহ্ভবং। গর্ভস্থাত রহক্পতিনা শপ্তোহ্ভবং। গর্ভস্থাত রহক্পতিনা শপ্তোহ্ভবং। স্তর্মাজনামনিক্ষাভবং। স্বর্মাজাপিত্রোর্ম্বিরাদ্রূপঃ প্রোকো দেবৈঃ পঠিতঃ ॥৬॥

মুদ্ে! মমতে! বাজং বাভ্যামাবাভ্যাং কাতমিমং পুত্রং ভর পুরাণ, এবং ক্রবন্তং বহস্পতিং মমতাহ, হে বহস্পতে! স্মেবেমং বাজং ভর, ইতি পরস্পরমুজ্যা পরিত্যক্ষা পিতরো মমতা-বহস্পতী যদ্যব্যাৎ যাতৌ, ততঃ ভরবাক্ষপক্ষোজ্ভেরবাক্ষসংজ্ঞোহভূদি—ত্যর্থঃ। যাতৌ যদ্গুখাদিতি পাঠে বিবদমানাবিত্যধ্যাহার্য্যম্ ॥৭॥ ভরবাক্ষিয়াব ভরতপুত্রস্বদশায়াং বিতথনায়ো নিরুক্তিমাহ, ভর্বাক্ষেতি। পিতৃভ্যিং গতে সতি মরুদ্ভিত্তিখি মরুৎস্তোম্বাগত্তিস্তস্য বিতথে পুত্রজ্মনি যতো দক্তস্ততো বিতথসংজ্ঞান্মবাপেত্যর্থঃ ॥৮॥

ততভাত্যাং গার্গাঃ সৈন্যাশ্চ গর্গবংশ্যন্তাচ্ছিনিবংশ্যন্তাচ্চ সমাখ্যাতাঃ ক্ষত্রিয়া এব কেন্চিৎ কারণেন ব্রাহ্মণাশ্চ বভূবুঃ॥৯॥ অজ্পীঢ়্স্য কণুব্দিরেকো বংশঃ, ব্রহ্দিস্থাদিরপরো বংশঃ, নীলাদি— রপরঃ ক্ষ্মাদিশ্চাপরঃ॥১০॥ কাম্পিন্তং নগরং ত্স্যাধিপতিঃ॥১১॥ Ş

শুকস্য ব্যাসপুত্রস্য দুহিতরং, হরিবংশে তথৈব দর্শনাং। তথো-জন্ম "পরাশরকুলোৎপন্নঃ শুকো নাম মহাযশাঃ।" ব্যাসাদরণ্যাং সম্ভূতো বিধৃয়োহ গ্রিরিব জ্বলন্। স তস্যাং পিতৃকন্যায়াং পীবর্যাং জনবিব্যতি। ক্লমং গৌরপ্রভুং শস্তুং তথা ভূরিক্রতং জয়ম্। কন্যাং কীর্জিমতীং ষষ্ঠীং যোগিনীং যোগমাতরম্ ॥ ব্রহ্মদন্তস্য জননীং সহিষীমনুহস্য চ ॥" ইতি। বায় পুরাণেহশীদ্দেব বচঃ॥১২॥ বঃ কৃতশ্চতৃর্বিংশতিং সংহিতাশ্চকার ॥১৬॥

নীপাঃ ক্ষজিয়বিশেষাস্তেষাং ক্ষয়: ক্তঃ। পঞ্চানাং বিষয়াপাং
মদীয়ানাং দেশানাম্ ॥১৫॥ শরন্ধতো গৌতমাৎ ক্ষয়ং শ্বলিতম্ ।
ক্ষেত্রাপেতা দিজাতয় ইতি, ক্ষজিয়া এব সন্তঃ কেনচিং কারণেন
ব্রাহ্মণা বভূবুরিতার্থ: ॥১৬॥ কৃপয়েতি নাম নির্ক্তার্থম ॥১৭॥
ক্রণা স্বেনাপলক্ষিতং ক্ষেত্রং দেবপ্রসাদাক্ষ্মকারণং ক্ষেত্রং
চকার ॥১৮॥ সকলদ্মরূপং জন্ম যস্য জরয়া রাক্ষ্যা সন্ধিতো
যোজিতঃ ॥১৯॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণটীকারাং শ্রীধরস্বামিরভারাং
চতুর্থেহংশে উনবিংশোহধ্যায়ঃ।

# वि°रणा>भगगः।

বিংশে তু কুরুপুত্রাণাং বংশানাহ পরাশর:। যত্র স্থপুত্রসস্তানধৃতরাফাদিসস্তাতঃ । কুরোঃ পুত্রাণাং মধ্যে স্থধনুষো বংশ উদ্ধঃ,
ইদানীং কুরুপুত্রস্যৈব পরিক্ষিতো বংশ উচ্যতে, পরিক্ষিত ইতি ॥১॥
কুরুপুত্রস্যৈব জহোর্বংশনাহ,জহোরিতি ।২॥ পূর্ব্বোজাৎ অজনী ঢ়পুত্রাম্বক্ষাদন্যঃ ॥৩॥ দেবাপের্বংশো নাভবদিত্যাশয়েনাহ, দেবা—
পিরিতি ॥৪॥ যং যং জন্তং স্পৃশতি, স স যৌবনমেতি, শান্তিফা—
প্রোতি। এতাবতা যৌবনাদিরপং শং কল্যাণং তনোতীতি শান্তর্কু-

নামনিরুক্তিরুক্তেতি জ্ঞেয়ম্ । এ প্রস্থাৎ পরিবেদনদোৰদাহ, তদ্যেত্যাদিনী ন ববর্ষ ভগবান্ পর্ক্তন্য ইত্যন্তেন । ৬॥

অশ্বনারিণা অশ্বনার স্বানের তপস্থিবেশধারিণঃ প্রান্ত্রিলাঃ ॥৭॥ অতি-ক্ষমুদতেঃ যথাক্ষতার্থপ্রাহিণঃ ॥৮॥ শাস্তনো-ক্ষংশমতিবিস্তরেণাথ্যে বক্ষান্ প্রথমং বাহ্লীকরংশমাহ,বাহ্লীকস্যেতি ॥৯॥ মম পরাশরমা পুল্লঃ মৎপুক্রঃ ভুজিষাায়াং দাস্যাম্ ॥১০॥ মিলপুরং নাম নগরং তৎপতেঃ পুর্যাং পুরিকাধর্মেণ "অস্যাং বো কায়তে পুত্রঃ ম মে পুরো ভবেদিতি" কন্যাদাতুর্বাগ্রেনে ॥১১॥ পরিক্ষীণের কুরুম্ভিত ভগবতস্তক্রেকণে পরিক্ষিমামনিরুক্তো চ হেতুঃ। আন্মেছামাত্র-কারণেন মাত্ররূপং ধর্তুং শীলং যস্য ত্সা পুনক্ষী বিভ্রমবাপ্য পরিক্ষিৎ যজে ॥১২॥

সাক্সত্রনিতানের পরিক্ষিত্রাকাকাল এব পরাশরনৈত্রেয়-সংবাদ ইতি গমাতে। অথপ্তিতা আয়তিঃ প্রভাবো যত্র তদ্যথা স্যাদিতি ক্রিয়া বিশেষণং স্যাৎ প্রভাবেহপি চায়তিরিতামরঃ। আয়তিক্সন্তরক্ষণ ধনাদিসম্পথ, সা অথপ্তিতা যত্র তদ্যথা স্যাদিতি বা ॥১৩॥

ইতি ঐবিফুপুরাণটীকায়াৎ ঐধরন্থামিরতায়াৎ চতুর্থেইংশে বিংশোইধ্যায়ঃ ৷

#### একবি°\শো>ধ্যায়: 1

একবিংশে পুরোর্কংশো ভবিষ্য উপবর্ণ্যতে। ক্ষেকং প্রাণ্য ২ঃ
সংস্থাং কলাবুপগমিষ্যতি ॥ কুরুপুত্র-পরিক্ষিত ইবাদ্যাপি জনমেজয়াদি-সংজ্ঞা এব চড়ারঃ পুত্রাঃ ॥১॥ তদ্য জনমেজয়দ্য। আত্মবিজ্ঞানপ্রবণতৎপরঃ ॥২॥ পূর্ব্বোজাজ্ঞানমেজয়পুত্রাদপরঃ শতানীকঃ ॥৩॥ ব্রহ্মণঃ ব্রাহ্মণ্যা, ক্ষুদ্রদ্য ক্ষুদ্রিদ্যা চ বোনিঃ কারণং

ক্ষজিরের কৈশ্চিজ্বপোবিশেষাৎ ব্রাহ্মণ্যং লক্ষমিতি পূর্বং তথোক্তত্বাৎ। সংস্থাং সমাপ্তিম্ ॥৪॥

ইতি জীবিষ্ণুপুরাণটীকায়াং জীধরস্বামিক্তায়াং চতুর্থেহংশে একবিংশোহধ্যায়ঃ।

### षावि रामा ३ था यः।

সোমবংশে ভবিষ্যাণাং রাজ্ঞামত প্রসঙ্গতঃ । দ্বাবিংশে সূর্য্য-বংশানাং ভবিষ্যো বংশ উচ্যতে ॥ রহদ্বদ্যোতি, চতুর্থেইধ্যায়ে অর্জ্জুনতনয়েনাভিমন্যানা ভারতে যুদ্ধে ক্ষয়মনীয়তেতাত দার্শিত-স্তান্যভার্থঃ ॥ ১ ॥ যত্র যত্র নামাং বৈলক্ষণ্যং ছুশাতে তত্র কম্পান্যুণাদি–ভেদেন ব্যবস্থাপনীয়ম্ ॥ ২॥

ইতি ঐবিষ্পুরাণিটকায়াং গ্রীধরস্বামিক্নতায়াং চতুর্থেইংশে দ্বাবিংশোহধ্যায়ঃ।

### <u>ज्राविश्लाङ्कायः।</u>

বার্ত্রপানাং বংশেহপি ভবিষ্যানবদন্তপান্। অস্ত্যোরপুঞ্জের।
"যত্র তদস্তে প্রাভবৎ কলিঃ॥ সোম-সূর্য্যবংশয়োভ বিষ্যান্ ত্রপাকুজ্বা সোমবংশ-পল্লবভূতানাং বার্ত্রপানাং ভবিষ্যানাহ, মাগধানামিতি। তত্র চ সঙ্গত্যথং কীর্ত্তিতানামপি জ্বরাসন্ধানীনামনুবাদিং কুর্ময়য়ুতায়ৣঃপ্রভৃতীন্ ভবিষ্যানাহ, অত্র হীত্যাদিনা যাবৎসমাপ্তি॥২॥ বার্ত্রপা ব্রত্ত্রপবংশোদ্ভবাঃ॥৩॥

ইতি ঐবিফুপুরাণটীকায়াং **প্রাধর**স্বামিরুতায়াং চতুর্থেহংশে ত্রয়েবিংশোহধ্যায়ঃ।

# চতুৰিংশোহধ্যায়ঃ ৷

চতুর্বিংশে কলের্ক্সমন্থ্য ক্ষুদ্রান্তথা স্থপাঃ। ভূমেগীতাবশিক্ষা চ বৈরাগ্যায় নিরূপিতাঃ॥ ইদানীস্ত তহংশ্যানের ভূভুলঃ
কালেনাপ্পন্পার্কান্ মলীমসান্ দয়্যপ্রায়াংশ্চাহ, যোহয়মিভ্যাদিনা সর্বে পৃথিব্যাং ভূভুলো ভবিষ্যন্তীভান্তেন ॥১॥ প্রদ্যোতাঃ
প্রদোভনামানঃ। অত্র চ রাজ্ঞাং ডক্রাক্ষ্যানাং বর্ষসন্থ্যা আফ্রাদ্যপত্র প্রদর্শনেন বৈরাগ্যার্থা ॥২॥ বৈশন্তনাগাঃ শিশুনাগাপভ্যানি ॥৩॥ মহাপত্ম ইতি। কোটিঃ শতশুণং পত্মং, পত্মশতশুণং
থর্মং, ডদ্দশগুণং পুনঃ নিথর্মং, ভদ্দশগুণং মহাপত্মনিহেষ্যতে,
ইত্যুক্তেন্তাবহুসন্থাক্ষ্য বিদ্যাস্থা ধনস্য বা স্বামী মহাপত্মো নন্দঃ
॥৪॥ একমের ছত্রে যাসাং ভাষ্ ॥৫॥ নন্দান্ নন্দ-ভহুপ্তাংশ্চ
তিল্যঃ কোটিল্যপ্রধানঃ বাহুস্যায়ন-বিষ্কৃপ্তাদি-পর্যায়শ্চানক্যঃ
সমুক্ষ্যিক্রাতি উন্প্রিয়্যতি ॥৬॥

চৰ্দ্ধি দ্বপ্তথা নন্দ্দিয়ৰ পত্নান্তর্ম্য মুরাসংজ্ঞ্যা পুত্রং মৌর্যাণাং প্রথম জিন্ম ॥ ৭॥ শুলাঃ শুল্প সজ্ঞাঃ ॥ ৮॥ তানেবাহ, পুষ্পমিত্র ইতি, পুষ্পমিত্র শুলানাং প্রথম: ॥ ৯॥ অনমিত্রাদ্যো নব এবং শুলাদি লা ৯০॥ কণুন্ কণুনংজ্ঞ্জ্যপান্ ভূর্যাসাতি প্রাপ্তাতি। ততঃ কণুণ নেষা ভূর্যাসাতি ॥ ১১ ॥ কণুন্ কথং ভূর্যাসাতি ২ তত্রাহ, দেবভূতি মিতি। শাতকর্ণী ত্যুপনাম ॥ ১২॥ এতে স্বন্ধৃ ভ্যান্তিংশ দিত্যালয়ঃ ॥ ১৩॥ আভীরাদ্যা মৌনান্তা একোনাশীতি রাজান একোন চতুর্দ্দশ-শতবর্ষানি পৃথিবীং ভোক্ষান্তি ॥ ১৪॥ ততক্ষ পৌরান্ত্রীণাক্ষ শতানি ভোক্ষান্তি। কচিৎ পৌরা ইতাত্র পুনর্মোনা ইতি পাঠঃ তদা আভীরাদিমধ্যগণিতানামপি মৌনানাং ব্যতিরেকেণ পূর্ব রাজ্যবর্ষসঞ্যা, ইয়ন্ত ততঃ পৃথগেব মৌনানাং রাজ্যবর্ষশতত্র্য সংখ্যতি জ্যেষ্ ॥ ১৫॥

क्लिकिना नगंत्री उब ख्याः देकनकिनाः, रख्याः यूक्ताः

বিহ কে! মুখাঃ। বিদ্ধাপজির্ম্নিভিষিক্ত ইতি পাঠে ক্লিয়মুখা
ইত্যর্থ: ॥১৬॥ তেষাং বিদ্ধাপজ্যাদীনাং যথাযথং ত্রয়োদশ পুত্রাঃ,
বাহ্লীকাশ্চ ত্রয়ঃ, পুষ্পামিত্রাদয়স্তরো দশ মেকলা মেকলদেশজাঃ,
সপ্তকোশলায়াং নবৈব নৈযধাস্তাবন্তঃ নবৈব ভূপতয়ো ভবিষান্তি।
মেকলাদিদেশানাং মধ্যে ত্বপ্রিদ্ধা দেশাস্তক্তেশেশীয়া জ্রেয়ঃ॥১৭॥
ইক্লিজ্রাতিং ক্লেলাং মধ্যে ত্বপিদ্ধা উগ্রসূতাদিরপাম্। এতে তত্তস্তৎপুত্রা ইত্যায়ভ্য শূদ্রা ইত্যন্তান্তল্ভাকালাঃ খণ্ডমগুলপতয়োহপাভাসাদত্বাদিবিশিষ্টা ভূভ্তো ভবিষ্যন্তীত্যন্তয়ঃ॥১৮॥

রাজাশ্রেরণ শুরাণো বলিনঃ ন তু ধর্মেণ, স্লেচ্ছাশ্টার্যাশ্ট বিপর্যারেগ স্লেচ্ছা মধ্যে আর্য্যাশ্টান্তে ইত্যেতজ্ঞপেণ ॥১৯॥ জগতি ধর্মস্যানুদিনং জ্ঞাসাদর্থসা চ ব্যবচ্ছেদাৎ সঙ্ক্ষয়ো ভবিষ্যতি ॥২০॥
রক্ষ ভামু ভাগিতা রক্ষভূত-ভামু দিমস্বুনেব পৃথিবীহেতুরুক্তমভূমি্বে কারণং নতু পুণ্যতীর্থাদিমস্বুন্। উন্নভামুমস্তেতি পাঠে উন্নতে
পিরিভটাদাবমুমস্বুন্॥২১॥ রক্তিঃ জীবিকা ॥২২॥ ভয়গর্ভেচারণং
ভয়োপদর্শন পুর্বকমুচ্চারণম্ ॥২৩॥ দানমেব ধর্মহেত্ঃ, নতু যাগাদিঃ।
আটিতব সাধুত্হেতুঃ ॥২৪॥

বীকরণমেন বিবাহহেতুর্ন তু স্মৃত্যাদ্যক্ত-বিধিপ্রকার:। সদ্বেশধারী দান্তিক:। কলিযুগে ক্ষয়মশেষং যাতি সতি জনঃ ক্ষয়মূপৈষ্তীত্য-ব্যঃ॥২৫॥ এবং কলেরস্তে কল্কারতারেণ সভ্যয়গপ্রস্তিয়াহ, প্রৌত্ত-বার্ত্তে ভাদিনা। আদিময়স্য সর্বকারণক্রপন্যান্তয়স্য নিষেধাবধি-ভূতন্য, অতএব সর্বময়স্য নিধিলকার্য্যময়স্য। ততো বিকারাদি-প্রাপ্তাবাহ, ব্রহ্মময়স্য। অইপ্রণক্তিসমন্তিতঃ। "অনিমা লাঘিমা প্রাপ্তিঃ প্রাকামং বশিতা তথা। যত্র কামাবসায়িত্বং মহিমেতি গুণাইকম্" ইতি প্রোক্ত-শ্রুকঃ। অন্যে ব্রন্থা গুণাইকং বদন্তি। "অনিমা মহিমা চৈব লঘিমা গরিমা তথা। ইশিত্বং বশিত্বং প্রাকাম্যং কাম্যেব চেতি ॥২৬॥

প্রবুদ্ধানামিত্যনেন সত্ত্বধণোক্তেকো দর্শিতঃ। তেন কালেন ক্লডা-

নামাহিতশক্তীনামিতার্থঃ ॥২৭॥ তৎকাল কড়েতি পাঠে প্রসূতের্বিশেষণম্ ॥২৮॥ কালসভাবাদেব কৃত্যুগধর্মামুসারীণি. ॥২৯॥
এতৎ সর্বাং কমিন্ যোগে ভবিষ্যভীত্যপেক্ষায়ামাহ, অক্রোচ্যত
ইতি। তিষ্যঃ পুষাঃ, চন্দ্রার্ক্রহক্পতীনাং তিষ্যযোগে কৃতং সত্যযুগং ভবিষ্যতি। যদ্যপি প্রতিদ্বাদশাব্দং কর্কটন্থে রহক্পতৌ ক্রমাবাস্যায়াং ত্রয়ানাং পুষ্যক্ষেণ যোগঃ স্যাৎ তথাপ্যেকরাশৌ সমেষ্যভীতি সহপ্রবেশোজের্নাতিপ্রস্কঃ॥৩০॥

উক্তং রাজবংশং নিগময়তি, অতীতা ইতি 1 অনাগতা ভূপালান্চ
উক্তাঃ॥৩১॥ অনাগতঃ ক্ষজিরবংশঃ কিয়ৎকালং স্থাস্যতীত্যপে—
ক্ষায়ামাহ, যাবদিতি। পঞ্চদশোন্তরসহস্রবর্ষপর্য্যন্তং শুদ্ধঃ ক্ষজিনবংশঃ স্থাস্যতি, অনন্তরং নদ্দেন সর্বক্ষজিয়নাশাদিত্যর্থঃ॥৩২॥
কলেঃ প্রবৃত্তিং বৃদ্ধিক বজুং তৎকাললক্ষণমাহ, সপ্তর্বাণামিতি।
প্রাগ্রং শকটাকারং তারাসপ্তকং সপ্তর্বিমগুলং, তত্ত্ব পূর্বত
ক্ষাকারেংগ্রমধ্যমূলের মরীচি-সভার্য্যবিদিন্তাক্ষরসং, ততঃ পশ্চিমে
খটাকারে তারাচতুক্ষে ঐশানায়ের-নৈশ্পতি-বায়ব্য-কোণেঘত্তিপুলন্ত্য-পুলহ-ক্রতবো যথাক্রমং তত্ত্ব যৌ পূর্বে। প্রথমোদিতৌ
পুলহ-ক্রত্রের দৃশ্যেতে, তয়োন্তৎপূর্বয়োশ্চ মধ্যে সমং দক্ষিণোক্তররেখায়াং সমদেশাবস্থিতং যদস্বিন্যাদিনক্ষত্রেম্বন্যতমনক্ষত্রং
দৃশ্যতে, তেন তথৈব যুক্তা নৃণামক্ষণতং তিষ্ঠিতি ॥৩৬॥

কাললক্ষণমুক্তা কলিপ্রবৃত্তিমাহ, ত ইতি। তদা সন্ধ্যাসন্ধ্যাংশাভ্যাং সহ বাদশাক্ষণতাত্মক: কলিঃ পূর্বসন্ধ্যা পূর্বং সন্ধান্ধপেণ
প্রবৃত্তাহিপি সন্ধ্যারপ্রসভিক্ষ্য ত্মেন রূপেণ প্রবৃত্ত: প্রকর্মারপেন কলেক কার্ট্যান্ত, যদৈবেতি বাভ্যাম, ॥৩০॥ পৃথীপরিষ্থান্ধ ভূমেঃ পরিভবে সমর্থ ইত্যাক্তেঃ পূর্বমণি কলিঃ প্রবিষ্ট ইতি গম্যতে ॥৬৬॥সাক্ষাৎ কলিপ্রবেশে তু মুধিন্ধিরাদিভিঃ স্বর্মকাং
পরিত্যক্তমিত্যাহ, গত ইতি বাভ্যাম ॥ ৩৭॥ কলেঃ প্রবৃত্তিমুক্তা
বৃত্তিমান্তান্তি ইতি ॥৩৮॥ পূর্বেশিক্ষ্যের কলিপ্রবেশকাল- শস্দ্য তৎসম্থানাহ, যদিলিভি ক্রিভিঃ |৪০| ক্রীণীতি সন্ধা-সন্ধাংশাভাং বিনেতি জেয়ন্ |৪১|

দিব্যানি দিব্যস্থায়া স্থ্যাতানি সপ্তপঞ্স্থায়া দাদশাক-শতানীতার্ধঃ। নিঃশেষেণ তশ্মিন্গতে সতীতি শেষঃ। কুতং কুত-युगम् ॥८२॥ बांकार्गा निवरणः कांक्ययवरणण मकनः किमिणि त्याकः, ্রিকাত আহ, ব্রাহ্মণা ইতি দ্বান্তাম ॥৪৩॥ কুলে কুলেহবান্তরকুলের নামধেয়ানাং পরিসম্বাা বছড়াৎ স্মাননামভয়া পৌনকুক্ত্যাচ্চ নেকা ।।৪৪॥ মহাপদ্মাধ্যনন্দাৎ ক্ষতিয়াণাং নাখেছপি পুনঃ প্রব-खिमार, प्रविश्विति बीखाम् ॥८०॥ क्या अवर्खको ভविषाउः, यरजा मरनार्कारण साममृत्रावरणकारण वीकजूरजी वावज्ञराजी ।।85॥ কলেঃ সন্ধ্যায়ামেৰ ক্জিয়সত্ত্বাৎ ত্ৰীণি যুগানি ভুজাত ইত্যক্তমূ ।।৪৭॥ দেবাপি-মরুবদন্যত্রাপি কলৌ ব্রাহ্মণাদীনাং বীকভূতানাং खि जिमांक, करली खि जि ॥8৮॥ वश्मकथनमा देवबारवा जार अर्यामाक, ু এতে চেতি। ভূমগুলে নিভ্যে কণ্পাস্তস্থায়নি ভদপেক্ষয়া অনি-ত্যানি অন্থিরাণি কলেবরাণি যেবাং তথাভূতৈরপি মমতং কৃতম্। eo॥ মোহাল্পদেবাহ, কথং মমেয়মিতি দ্বাভ্যাযু ৷e১॥ তেভাক্তভাঃ প্রবাতরা ইত্যনেনাতীতানাং মোহানবস্থা দর্শিতা, এবং ভবিষ্যা इত्যনাগতানাং মোহানবস্থা ॥৫२॥ এতদেব পৃথিবীগীতৈঃ প্রপঞ্চ-য়তি, কথমেষা ইতি নবভিঃ। ফেনধর্মাণঃ ক্ষণভঙ্গুরা ইতার্থঃ ॥৫৫॥

পূর্বমাত্মজয়মিতি অজিতেক্সিয়াণাং মিক্সিত্তা দিজয়াভাবাৎ

॥৫৬॥ কিইঞ্বং সর্মমাত্মবাশীকৃর্বতাং মম ভুনো মণ্ডলং বশং যাতি।

য়দ্যপি তথাপ্যাত্মনামিক্সিয়াদীনাং জয়াৎ জাতমেতদ্নিতাং রাজাং
ক্রিদ্রতাপ্পম্। যম্মাদাত্মজয়ে সতি মুজ্রিরতান্তং কলম্॥৫৮॥

অনিতাত্মেবাহ, উৎসজ্যেতি পুর্জাঃ প্রেষামিতি বা পাঠঃ॥৫৯॥
রাজ্যে পিত্রাদিবৈরম্পি দোষ্মাহ, মহক্ত্রিতি॥৬০॥

কিঞ্চ ময়ি রাজ্ঞাং সমত্ত্ববুদ্ধির্ব গৈবেত্যাহ, পৃথী মমেতি। অত্র ময়ি যো যো রাজা মৃতো বভূব, তম্য তথৈবেয়ং কুরুদ্ধিরাসীৎ, ততঃ পারমার্থিককলাভাবাৎ। অন্যত্ত্তে পাঠে মৃতঃ স খ্নাত্ত রাজা বভুব, তন্তাপি বাসনাবশাদিয়দেব কুবুদ্ধি: সংসারপ্রদাসীত্যর্থঃ ৪৬১॥ কিঞ্চেনং চিত্রমিত্যাহ, স্তক্ট্তে। সার মমত্বাদৃত্তিদ্ধং সম্ভ-মেব মৃতং স্তুটা তদন্বয়হ্ন্য হদি মৎপ্রভাবং মহিবয়ং মমত্বং কথ-মাস্পাদং করোতীতি ॥৬২॥

অপিচ এতেহতিশোচ্যা ইত্যাহ, পৃথীতি। তেরু মম হাসো, ভবতি, মুচ্ছাৎ দয়াভুটপতি মমেতি শেষ: ॥৬৬॥ চতুর্থাংশস্য শ্রবণকলমাহ, শৃনুয়াদিতি। মনুবংশস্থানাং পুণ্যকীন্ত্রীনাং শ্রবণাধ পাপক্ষয়ো ধনাদির্দ্ধিশ্চ ভবতি ॥৬৬॥ নিষ্ঠাং নাশম্। তাত্তশানামপি নাশানুসন্ধানাৎ মমতানির্দ্ধিশ্চ ভবতীতার্থ: ॥৬৮॥ ন চ তেষাং তপঃপ্রভাবাদ্যভাবাৎ কপাবশেষদ্মিত্যাহ, তপ্তমিতি ॥৭০॥ তানেবাহ, পৃথুবিতি ছাভ্যাম ॥৭১॥

সঙ্গণ বিকলপয়ে। কেবাঞ্চিৎ সক্ষণসা তথেতি প্রত্যাস্য, কেবাঞ্চিন্ধিকলপা কিমানীয় বেতি সন্দেহ্ন্য হেত্নি মিন্তং সক্ষণসা মনসো বিকলপহেত্য় ॥৭২॥ উদ্ভাসিতানি দিঙ্মুখানি থৈঃ। উদ্ভাসিতদিগিতানমিতি পাঠে, ঐশ্ব্যাবিশেষণম্। তেষাং রাবণান্দীনা মৈশ্ব্যাম্ অন্তক্ষা জভঙ্গপাতেন কথং ভন্ম ন' কাতং ৷ কিন্তুৰ্কী কাতমেব, তন্মানৈ শ্ব্যাং ধিক্। যদা কাঠং দক্ষমপি ভন্মা ভবতি। বিশ্ববিধি তুল্লাপি ন কাতং কিঞ্চিদ্বশিষ্টমপি কথং ন কাতং, তন্মাৎ ধিক্॥৭৩॥ আন্মন্তহ্লারাম্পদে দেহেইপি কিং প্নঃ পুত্তনদাবাদে ॥৭৪॥ ভগীরথাদ্যাঃ সত্যং কাতাঃ কিন্তু ক তেইতি ন বিল্লঃ, কালেনাদর্শনং নীতাই ভার্থঃ। অত্র রাঘ্বাদীনাং গ্রহণং লোকস্থাট্টা বৈরাগ্যার্থম ॥৭৫॥ তথান্যেইকুক্তান্তণাভিধেমাঃ কথানমাত্রাবশেষা ভবিষান্তীত্র্যাহ্যান্তিক্ত্র, মমত্বং সুত্রাং ন কার্যামিশ্বভার্থঃ ॥৭৭॥

ইতি শ্রীবিষ্ণুপুরাণটীকায়াং শ্রীধরস্বামিরতায়াং ্ চতুর্থাংশে চতুর্ব্বিংশো২ধ্যায়ঃ।

ममाञ्चा (हरू: हर्ज्या १ मणीका ।